दूर दल में अब भी मेक्डानोल्ड की भरमार है। इस लिए मजदूर दल भी जापान का मुकाबला करने की हिम्मत नही करेगा। उस वक्त तक ससार की राजनीति में विशेष कर इटली, जर्मनी तथा जापान के पारस्परिक सबध जो रहेंगे, उन्ही पर जावा सुमात्रा के भाग्य का फैसला होगा।

आशा तो यही है कि जिस तरह ३–४ साल तक जापान सुस्ताते हुए अपनी शक्ति का संचयन करेगा, उसी तरह इटली और जर्मनी भी अपने को और मजबूत करेंगे। और जिस वक्त जापान दक्षिण-पश्चिम की ओर अपनी वाहिनियो को भेजेगा, उसी वक्त इटली-जर्मनी की सेनाएँ भी भूमध्य-सागर और अफ्रीका की तरफ दौड़ेंगी। उस वक्त तक अगरेजों की राजनीतिक उलझनें इतनी बढ़ जायेंगी कि हालैंडवालों की वह मदद कर सकेंगे, यह सभव नही। इस घटना को हम आज से ५–६ वर्ष बाद की बात मान लेते है। उसके २ या ३ साल बाद जापान सीधा ब्रिटिश साम्राज्य पर हमला करेगा। उसका लक्ष्य होगा आस्ट्रेलिया—जिस एक के मिल जाने से उसे अपनी बढती जन-सख्या के बसाने के लिए आवश्यक उपनिवेश का सवाल हल हो जायगा। उसका सारा दुःख दरिद्र ही मिट जायगा। लेकिन आस्ट्रेलिया पर हमला करते वक्त जापान का ध्यान हिन्दुस्तान पर भी रहेगा।

इन परिस्थितियो का हिन्दुस्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा, इसके लिए भी कुछ कह देना जरूरी है। भूमध्य सागर मे अपने प्रभाव को कम और हिन्दुस्तान की उत्तरी-पूर्वी सीमा पर जापान को डटे देख कर इंगलैंड को अपनी नीति मे परिवर्तन करना पड़ेगा। अभी तो सात-आठ सौ मील की पश्चिमोत्तर सीमा को मजबूत करने के लिए ही हिन्दुस्तान की आमदनी का आधा निकल जाता है। फिर जब लदाख से ले कर सारे उत्तरी हिमालय और आसाम और बर्मा की सीमा की रक्षा का प्रश्न आवेगा, तो हिन्दुस्तान की सारी की सारी आमदनी भी उस खर्च के लिए पर्याप्त न होगी। जापान मे आदमी, युद्ध का सामान, मशीन तथा दूसरी चीजे बहुत सस्ती है। वह

आसानी से हिमालय के उत्तर अपने कितने ही सैनिक और वैमानिक अड्डे क़ायम कर लेगा। और फिर अंगरेज़ों को टेहरी से ले कर सदिया तक अर्थात् युक्त प्रान्त, विहार, उत्तर-बंगाल और आसाम के सभी उत्तरी जिलों में हवाई जहाज़ों और फ़ौजी छावनियों का इन्तज़ाम करना पड़ेगा। इस खर्च को निकालने के लिए अंगरेज़ हिन्दुस्तान में कोई तजवीज़ जरूर करेंगे। लेकिन वह हिन्दुस्तान के वूते से इतनी वाहर की चीज़ होगी कि वे हिन्दुस्तान की सूखी हड्डियों से अधिक दिनों तक खून निकालने का प्रयत्न न करेंगे। फिर क्या करेंगे? हिन्दुस्तान की रक्षा और ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के लिए वह फिर हिन्दुस्तान के पूंजी-वादियों—काँग्रेस के नरमदलियों—से समझौता करना चाहेंगे। चाहेंगे कि हिन्दुस्तान को अपनी प्राकृतिक सम्पत्ति को और अधिक विकसित करने का मौक़ा दिया जाय, जिसमें वह और अधिक धन-जन को सैनिक कामों पर खर्च कर सके। इसके लिए अंगरेज़ दूर तक जायेंगे और इस प्रकार चीन और भूमध्यसागर की ओर से अंगरेज़ों पर संकट आने पर हिन्दुस्तान को फ़ायदा ही फ़ायदा है। चीनी युद्ध के समाप्त हो जाने पर जापान का खतरा अभी ५–७ साल की वात है। और तव तक अपने को और हमें भी वेवसी की हालत में नहीं छोड़ सकते। आस्ट्रेलिया के वचाने में हिन्दुस्तान अंगरेज़ों की क्या मदद दे सकेगा, यह तो हिन्दुस्तानी नौ-सेना के ऊपर निर्भर है, जिसके नाम पर अभी तो वड़ा शून्य रखा हुआ है।

इतना कहने से यह स्पष्ट है कि भारतीय राष्ट्र की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति हमारे अधिक अनुकूल होती जा रही है। नेविल् चेम्बरलेन जैसे नेताओं को पैदा करने की हिम्मत ज़रा माता ब्रिटानिया कुछ दिन करे, और फिर सब ओर चिर शान्ति का आयोजन होने लगेगा। उन भारतीय सम्पादकों और पत्रकारों पर झुंझलाहट आती है जो इंगलैंड के पद-पद पर दवने, युद्ध से कावा काटने, पर वरस पड़ते हैं। क्या उनको इतनी भी वुद्धि नहीं है कि इंगलैंड का दवना और कावा काटना ही हिन्दुस्तान के

लिए आशा का सन्देश लाता है? शायद यह काले साहब लोग अपने कंधे पर इंगलैंड की राष्ट्रीय जिम्मेवारी को भी वहन करना अपना धर्म समझते हैं। नही तो अगरेजों की विपता से उन्हें क्या मतलब। हिन्दुस्तान की विपता में जब वे हमारे काम नही आये, तो उनकी विपता में हम आँसू बहाने क्यो जायें?

*** ***

सोवियत् के अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व का वर्णन करते हुए हम प्रकरणान्तर में चले गये, तो भी हमारे विषय का उससे सम्बन्ध है। हमने इसके द्वारा सोवियत् के पूर्वी भाग की राजनीति पर कुछ प्रकाश डाला। सोवियत् की पश्चिमी सीमा पर भी पूर्व की अपेक्षा कम खतरा नहीं है। रुमानिया, पोलैंड, लियुवानिया, लतविया, इस्तोनिया और फिनलैंड सोवियत् के बाहर सीमान्त राज्य हैं। पोलैंड इनमें सब से अधिक शक्तिशाली है और उसपर हिटलर का वरद हस्त भी है। रुमानिया में अभी कुछ दिनो तक गोगा की फासिस्ट सरकार स्थापित हो गई थी। लेकिन सोवियत् की धमकी के कारण रुमानिया के राजा को अकल आ गई और गोगा को हटना पडा। लेकिन इटली और जर्मनी का षड्यन्त्र रुमानिया में बराबर जारी है। लियुवानिया को युद्ध-घोषणा दे कर अभी हाल ही में पोलैंड ने घुटना टेकने के लिए मजबूर किया है। फिनलैंड, इस्तोनिया, लतविया, दूसरे बाल्तिक तटवर्ती राज्यो के पूँजीवादियों का भी ध्यान बर्लिन की ओर आकर्षित हुआ है और वहां बराबर जर्मन षड्यन्त्र के जाल बिछाये जा रहे हैं।

इतना कहने से स्पष्ट मालूम होगा कि सोवियत् की पश्चिमी सीमा पर जितना उसे खतरा है, उतना पूर्वी सीमा पर भी नहीं है। जर्मनी अगर हमला नहीं कर रहा है, और कुछ दिन और रुका रहेगा तो सिर्फ इसीलिए कि वह समझता है कि सोवियत् के पास अस्त्र-शस्त्र की अपार राशि है। उसकी सेना सुदृढ और सुरक्षित है। किसी फ़ासिस्ट देश को सोवियत्

पर हमला करने के पहले १०० वार सोचना पड़ेगा कि उनको कैसे आदमियों से मुक़ावला करना है। सोवियत् को सिर्फ़ अपना भरोसा है। उसकी लड़ाई में फ़्रांस, इंगलैंड या अमेरिका मदद करने आवेंगे, इसकी कोई संभावना नहीं है। लेकिन अकेले सोवियत् के पास भी १८ करोड़ का जन-दल है, जिसकी पीठ पर विशाल कारख़ाने और असंख्य प्राकृतिक सम्पत्ति मौजूद हैं। इस प्रकार वह अपने भरोसे पर सभी फ़ासिस्ट देशों से एक साथ लड़ सकता है।

***　　　　***

१९१७ से ही दुनिया भर के पूँजीवादी देश और उनके शक्तिशाली पत्र सोवियत् के ख़िलाफ़ प्रचार कर रहे हैं। ऐसे तो पश्चिमी पत्रकारों के यहाँ अपने मतलव के लिए झूठ वोलना धर्म समझा जाता है; लेकिन सोवियत् के वारे में तो इसे वह परम धर्म समझते हैं। हिन्दुस्तान में आनेवाली सभी ख़वरें रूटर जैसी पूँजीवादी कंपनियों द्वारा आती हैं। इन पत्रकार संस्थाओं ने अपने एजेंट रीगा और दूसरी जगहों में रख छोड़े हैं। रीगा में तो सोवियत् के ख़िलाफ़ झूठ गढ़ने की एक वड़ी फ़ैक्टरी है। दुनिया भर के पूँजीवादी देशों के संवाददाता यहीं पर रहते हैं। और यहीं से दुनिया भर के कोने कोने में एक ही तरह की गढ़ी हुई झूठी ख़वरें भेजी जाती हैं। लाल क्रान्ति के समय से ही और १९२० के वाद विशेष तौर से इस झूठ के प्रसार का वड़े पैमाने पर आयोजन किया गया है। उसी वक़्त से दिन प्रतिदिन, मास प्रतिमास, वर्ष प्रतिवर्ष, इस प्रकार की ख़वरें भेजी जाती थीं, जिससे मालूम हो कि सोवियत् सरकार आज टूटनेवाली है और कल टूटनेवाली है। २० साल के क़रीव हो गये, और उन्हीं वातों को वे नित्य नये नये रूप में देते जा रहे हैं। वे निराश होने की ज़रूरत नहीं समझते; क्योंकि उन्हें मालूम है कि हमारी ही भेजी ख़वरों को दुनिया झख मार कर पढ़ेगी।

भयंकर षड्यंत्र के लिए १० आदमी पकड़े जाते हैं। रीगा वाले संवाद-

दाता दुनिया भर में तार खटखटाते हैं—सोवियत् का दिन समीप है, स्तालिन् की तानाशाही एक दो दिन की मेहमान है। तारीफ तो यह है कि छः महीने पहले जिन पकड़े जानेवाले लोगों की खबर छपी थी, ६ महीने बाद उन्ही नामों को फिर दोबारा पकडे जानेवालो की सूची मे लिया जाता है। अखबार पढ़नेवाले सभी नामों को तो याद नही रखते। उनको मालूम होता है कि फिर नये लोगों को पकड़ा गया। इस प्रकार जून १९३७ में पकड़े जानेवाले आदमियों ने पिछले ६ महीने मे कई बार सवाद-दाताओ को नई खबर भेजने का अवसर दिया है।

यदि बुखारिन् या रादेक् अपने कसूरो को खुली अदालत में और रेडियो के समुख स्वीकार करते है, तो पूँजीवादी पत्र झट से कह उठते है—'उनसे मार मार कर कहलवाया जा रहा है'। रेडियो पर बोलते वक्त उसको मारा पीटा जाता हो और बोलनेवाला उसी तरह जरा भी स्वर को विकृत किए घटे आध घटे बोल रहा हो, इस बात को अक्ल रखने वाले लोग नहीं मान सकते। इस लिए दूसरा झूठ गढ़ा गया—'बोलशेविको ने एक ऐसी दवा ईजाद की है जो लोगो की मति बदल देती है'। ऐसी दवा का आविष्कार विज्ञान से तो नही हो सकता। और जादू-टोने पर बोलशेविको को विश्वास नहीं। लोगो को एक ही तरह की बातें बार बार और बरसों तक सुनाई जाती है, तो उनके मन मे भ्रम पड़ना आसान बात है।

बुखारिन् घटा भर तक अपने अपराधो की स्वीकृति के बारे में बोलता है, और सारी दुनिया मे रेडियो द्वारा उसका ब्राडकास्ट होता है। उस समय जादू-मत्र, मतफेरनी दवाई और मारपीट की बात को छोड कर आप अपने दिमाग पर थोडा ज़ोर डाले तो मालूम होगा कि बुखारिन् का अपराध स्वीकार कोई आश्चर्य की बात नही है। बुखारिन् उन आदमियो मे से है, जिसने अपनी जिन्दगी का सारा भाग लाल क्रान्ति के आवाहन और सफलता में खर्च किया। पीछे अपनी अहम्मन्यता, व्यर्थ के विचारो की उड़ान, और क्रियात्मक आर्थिक योजनाओ पर बार बार प्रहार करने से साम्यवादी

दल की आँखों से वह गिर गया। उसने देखा कि लीडरी मेरे हाथ से चली जा रही है। शिक्षित व्यक्ति जब वैयक्तिक अभिमान और स्वार्थ के लिए निराश होता है तो वह अक़्ल खोकर और गिरकर नीचता की पराकाष्ठा तक पहुँच जाता है। बुखारिन् जैसे लोगों ने देखा—पार्टी में उसकी बात कोई सुननेवाला नहीं है, देश में उसके प्रति घृणा फैली हुई है। लेखनी और भाषण का उपयोग वह अपने मतलब के लिए नहीं कर सकता। तब उसको खयाल आया—आर्थिक योजनाओं और यंत्रों के अधिक प्रचार ने असन्तुष्ट व्यक्ति के हाथ में भी काफ़ी ताक़त छोड़ रखी है। कारखाने का बायलर खराब कर दो और ४००० आदमी १० दिन के लिए बेकार हो जायँ। खानों के पंप को खराब कर दो और सारी खान पानी से भर जाय। हज़ारों आदमी बेकार हो कर घर बैठ जायँगे। रेल के सिगनल में ज़रा खराबी कर दो, गाड़ियाँ लड़ जायँ। इन सब से वह लोगों में आतंक और नेताओं के प्रति अविश्वास प्रकट करने में सफल हो सकते हैं।

बुखारिन् जैसे लोगों ने ऐसा ही किया। पकड़े गये, गवाही से कसूर साबित हुआ, जेल की एकान्त कोठरी में वह अपने पिछले जीवन पर विचार करने लगे—"कैसे जिस आदर्श के लिए अपने जीवन का इतना बड़ा समय उन्होंने दिया? कैसे उन निराशा के दिनों में अपनी जान को हथेली पर रख कर वे घूमा करते थे? कैसे उनकी ही तरह हज़ारों औरों ने अपने जीवन अर्पण किये? कितने ही साइबेरिया के जेलों और फाँसी के तख़्तों पर अपने प्राण को विसर्जित कर चुके। उनकी कुर्बानियाँ व्यर्थ नहीं गईं। आदर्श का ठोस रूप सोवियत् सरकार की शकल में सामने आया। यह सब देखकर क्या हमारे लिए यह लज्जा की बात नहीं कि वैयक्तिक महत्त्वाकांक्षा के लिए हमने अपने आदर्श के इस साकार रूप को तोड़ना चाहा! अपने आदर्श के दुश्मनों फ़ासिस्ट राज्यों तक से हम अपने इस हीन कार्य में मदद लेने से भी बाज़ नहीं आये। ओह! यह घोर पतन!"

और तब बुखारिन् आकर न्यायालय में कहता है—

"दस बार भी यदि मैं गोली से उड़ाया जाऊँ तो मैं उसका पात्र हूँ।"

असल बात यह है। लेकिन पूँजीवादी पत्रकार लोगों को उलटा-पुलटा समझा कर सोवियत्-शासन को कमज़ोर साबित करना पसन्द करते हैं।

दूसरे मुल्कों में प्रचार किया जाता है—स्तालिन् खून का प्यासा है। उसको इस तरह चित्रित किया जाता है, मानों वह बड़ा स्वार्थी है, बड़ा महत्त्वाकांक्षी है, दया और मानवता उसमें छू तक नहीं गई है। लेकिन सोवियत् जनता के लिए स्तालिन् क्या है? वह गांधी जी से भी सौगुना ज्यादा अपने देश-वासियों के प्रेम और श्रद्धा का पात्र है। सोवियत् के हर स्त्री-पुरुष की रगों में बिजली दौड़ जाती है, जब वह तवारिश स्तालिन् का नाम सुनते हैं। क्योंकि वह जानते हैं, सोवियत् का आज का आर्थिक वैभव स्तालिन् के पथ-प्रदर्शन से हुआ है। खेती को पचायती बनाना, पच-वार्षिक योजनाओं को सफल करना, स्तालिन् का काम था। स्तालिन् किसी दूर भविष्य के स्वर्ग का प्रलोभन उनके सामने नहीं रखता। बल्कि वह इसी संसार में स्वर्ग रच कर दिखला रहा है। और इस पर यदि सोवियत् जनता उसे अपना इष्ट देव मान कर पूजती है, तो इसमें अस्वाभाविक क्या बात है! वीर-पूजा मनुष्य के स्वभाव में है। और वह पूजा हमेशा होती भी रहेगी। स्तालिन् को ज़ोर-ज़बर्दस्ती से अपनी बात मनवाने की कोई ज़रूरत नहीं।

***　　　***

भारत से सोवियत् भूमि बहुत दूर नहीं है। बनारस से २०) से कम में ही पेशावर पहुँचा जा सकता है। वहाँ से ३०) में काबुल होते हुए सोवियत् सीमा—वक्षुनट (आमू दरिया) पर पहुँच सकते हैं। लेकिन सोवियत् यात्रियों के लिए यह रास्ता जाते वक्त ठीक नहीं है, क्योंकि सोवियत् के भीतर यात्रा का प्रबन्ध सोवियत् की यात्रा-प्रबंधक समिति इन्तूरिस्त करती है, किंतु उसकी शाखा काबुल में नहीं है। सब से नज़दीक इन्तूरिस्त कार्या-

लय तेहरान में है। बनारस से तेहरान तक जाने में ७५) के क़रीब खर्च पड़ेगा। वहाँ से कास्पियन तट पर अवस्थित पह्लवी बन्दर पर १०) में पहुँचा जा सकता है। वीज़ा का इन्तज़ाम तेहरान में इन्तूरिस्त की मार्फ़त करवाना होगा। सोवियत् में हर जगह १ पौंड या १४) रोज़ पर इन्तूरिस्त द्वारा घूमने का इन्तज़ाम हो सकता है। इसी में खाना, रेल का किराया और दुभाषिये के साथ ३ घंटे रोज़ के घूमने का खर्च भी शामिल है। अगर आदमी एक महीने सोवियत् में घूम कर मास्को, ताशकन्द, तिर्मिज़, (अफ़ग़ानिस्तान सरहद पर) के रास्ते लौटे तो ४२५) में अफ़ग़ानिस्तान की सीमा में पहुँच जायगा। और वहाँ से ५०) में बनारस। ५६०) में यह सारी यात्रा समाप्त हो जायगी। यदि यात्री अकेला जाने की जगह ४ आदमी के दल के रूप में जाय तो उसको कई बातों का सुभीता रहेगा। यदि इन यात्रियों में एक व्यक्ति फ़ारसी भी जानता हो तो ईरान, मध्य एशिया और अफ़ग़ानिस्तान में उसे बहुत सुभीता रहेगा।

राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

प्रथम खंड

(सोवियत्-भूमि में)

द्वितीय खंड

(अफ़ग़ानिस्तान में)

चित्र-सूची

चित्र | पृष्ठ

चित्र — पृष्ठ

चित्र पृष्ठ

सोवियत्-भूमि

१—लेनिनग्राद् को[1]

आज (१२ नवम्बर) हवा बिलकुल नहीं चल रही थी। कास्पियन समुद्र में लहरों का नाम न था। वह छोटा शान्त जलाशय सा मालूम होता था। ९ बजे पश्चिमी तट के नंगे पहाड़ दिखाई दे रहे थे। इन पहाड़ों के नीचे आबादी मुश्किल से कहीं देख पड़ती थी। कुछ और चलने पर दाहिनी तरफ एक छोटा सा पहाडी द्वीप दिखाई पड़ा। ऊपर कुछ सफेद मकान, नीचे कुछ छोटी बस्तियाँ तथा समुद्र-तट पर कितनी ही नौकाएँ थीं। स्थान सैनिक-महत्त्व का जान पड़ता था। १० बजे हमें बाकू शहर और उसकी बगल में दूर तक फैले तैल-क्षेत्र के कूप-वृक्ष दिखाई पड़ने लगे। जहाज़ को घूम कर जाना था। इससे तट तक पहुँचने में काफी देर लगी। बंदर की सीमा में हम ११ बजे ही पहुँच गए। समुद्र-जल पर मीलों तक मिट्टी के तेल की तह पड़ी हुई थी, जिस पर इन्द्र-धनुष के सभी रंग चित्र विचित्र रूप में दिखाई पड़ते थे। साँस लेने में मिट्टी के तेल की ही गन्ध नाक में आती थी। किनारे तक पहुँचने में पौने १२ बज गए। भार-वाहकों ने सामान उतारा और हम कस्टम-आफिस में पहुँच गए। यात्रियों की संख्या ३० से अधिक न होगी जिनमें से १५–१६ तो जर्मनी जाने वाले ईरानी छात्र थे। इन्तूरिस्त का आदमी वहाँ पहुँचा हुआ था। भारतीय स्कालर का नाम सुनकर उसने बड़ी नम्रता दिखलाई। यद्यपि हमारे बक्सों की

---

[1] पहिले का यात्रांश "ईरान" में देखिये।

तलाशी राई-रत्ती कर के हुई, तो भी कस्टम के अधिकारी बड़ी नम्रता प्रदर्शित कर रहे थे। मेरी ताल-पत्र की पुस्तकों के पन्ने गिन कर पास-पोर्ट पर चढ़ा दिए गए, जिसमें कि लौटते वक़्त उन्हें साथ ले जाने में कोई दिक़्क़त न हो। फ़ोटो के केमरे का नंबर भी दर्ज कर दिया गया। इसी तरह सफ़री-चेक भी लिख लिए गए। कस्टम से छुट्टी पाकर मोटर द्वारा हम इन्तू-रिस्त होटल में पहुँचाए गए।

हमने समझा था कि पिछली बार के होटल में ही जाना पड़ेगा। लेकिन यह तो एक नई इमारत थी, जो कि पिछले ही साल बन कर तैयार हुई थी। यह समुद्र-तट के क़रीब एक चारमहल का प्रासाद है। ७६ कमरे हैं। आराम, सफ़ाई और सजाने में कमाल किया गया है। हमें ४९३ नंबर के कमरे में जगह मिली। भीतर २ मेज, ३ कुर्सियाँ, १ आयनेदार अलमारी, एक पलंग, कई बिजली के लैम्प, सुंदर पर्दे, तथा बात करने के लिए दूरी-फूंक (टेलीफ़ोन) लगा था। कमरे के साथ ही स्नानगृह था। हमने टिकट के साथ इन्तूरिस्त को रेल-यात्रा सहित प्रतिदिन एक पौंड दिया था। यूरोप में तो १ पौंड रोज ऐसे कमरे का किराया ही लग जाता। और यहाँ उस १ पौंड (१३ रुपये) में न सिर्फ़ रेल और होटल का किराया ही शामिल है, बल्कि तीन वक़्त का सुन्दर और नफ़ीस भोजन तथा दुभाषिया के साथ मोटर पर तीन घंटे की सैर भी शामिल है। भोजनालय बहुत सुंदर था और भोजन के लिए कहना ही क्या? बहुत कम आदमी अपच से बच पाते होंगे! खाना खा कर थोड़ा विश्राम किया गया और फिर ५ बजे घूमने निकले। तेल साफ़ करने का शोधनखाना (Refinery), पार्क आदि का मोटर पर चक्कर लगाया। ढाई साल पहले बाकू को हम देख भी चुके थे, इस लिए उतनी दिलचस्पी भी न थी, दूसरे समय भी कम था। हाँ, यह हमने जरूर फ़र्क़ देखा कि कितनी ही विशाल और भव्य नई गृह-श्रेणियाँ सड़कों के किनारे खड़ी हो गई हैं। पहले इन जगहों पर छोटे छोटे मकान थे। क्रान्ति का बीसवाँ वार्षिकोत्सव ५ दिन पहले गुजर चुका था।

लेकिन अब भी कितनी जगह लाल ध्वजाएँ और कपड़ों पर लंबे लंबे लेख टँगे हुए थे। पार्क-कुल्तूर (सांस्कृतिक उद्यान) की तरफ जाते वक्त लाल-सेना के कुछ नए मकान देखे।

यूरोप जाने वाले लोग रात ही को चले गए। मास्को की गाड़ी दूसरे दिन (१३ नवम्बर को) दोपहर को जाने वाली थी। १० बजे हमने होटल छोड़ा। सोवियत् रेलों में यात्रियों के टिकट पर ट्रेन के साथ गाडी और सीट का नंबर भी लिखा रहता है। गाड़ी में सीट खाली न हो, और तब भी पैसा लेकर आपके लिए टिकट काट दिया जाय, इसका वहाँ रवाज नहीं। हमें उस दिन तीसरे दर्जे की सातवी गाडी मे १६ नम्बर की सीट मिली। हर एक कंपार्टमेंट में दो नीचे दो ऊपर सीटें थीं। एक पूरी बेंच एक आदमी के लिए रिजर्व थी। सीटो को गाडी की चौड़ाई मे रखा गया था, और बगल से ट्रेन से ओर-छोर तक जाने का रास्ता था। हर एक डिब्बे के दोनो तरफ पाखाना और मुँह धोने का स्थान था। हर एक डिब्बे में दो दो कंडक्टर थे, जिनका काम था, मुसाफिर के पहुँचते ही टिकट ले लेना और उसकी सीट दिखला देना। अगर मुसाफिर ने पैसा दिया हो तो उसकी बेंच पर तकिया और बिछौना लगा देगा। चाय की ज़रूरत हो, तो सस्ती चाय लाकर दे देना। दो दो, तीन तीन घंटे पर कोठरी, गली, और पाखाने का साफ करना भी उसी का काम है। टिकटों को रखने के लिए उसके पास चमड़े का एक बेग था, जिसमें गाडी के सभी खानों के सीट के नंबर छोटे छोटे खानों पर लगे हुए थे। वह मुसाफिरो के टिकटो को इन्हीं खानों में रख देता था। हमें जगह नीचे मिली थी। हमारे सामने एक लाल सैनिक बैठा हुआ था जो तुर्क मालूम होता था। सारे डब्बे मे हमारे सिवा कोई परदेशी न था, और अंगरेज़ी जानने वाला तो सारी ट्रेन में हमें कोई दिखलाई न पड़ा।

पिछली बार दो साल पहले हम रात को इधर से गुजरे थे। और मखच्-कला के आस पास की सूखी भूमि और नंगी पहाड़ियों को देख कर हमने समझा था कि बाकू तक ऐसा ही होगा। किन्तु यहाँ तो चारों ओर

माई सवा सौ मील पर प्रगट हो गई; एक नहीं आठ आठ ज्वाला के रूप में। कहीं भारतीय हिन्दू जनता इस चमत्कार को देखती, तो जो मेला चारों तरफ़ लगता, उसके सामने कुंभ भी तुच्छ होता। लेकिन इन नास्तिकों के मुल्क में ज्वाला-माई की क्या क़द्र! वह तो कह देंगे—यह तो पेट्रोल की भूमि है। जमीन से कहीं कहीं ग्रेस फूट निकलती है; और उसी में घर्षण से आग लग जाती है। इसमें कोई दैवी चमत्कार नहीं।

वहीं एक नया मुसाफिर तवारिश् (=कामरेड या साथी) अली के रूप में हमारे कपार्टमेंट में सवार हुआ। थोडी हीं देर में वह लाल सैनिक का चिरपरिचित सा जान पडने लगा। तवारिश् अली ने अपने कोल्खोज़ की बनी अंगूरी शराब की बोतल निकाली और लाल सैनिक ने कोड़े की शक्ल में पका कर गुथा हुआ सूअर का मांस। मुझे भी शामिल होने के लिए दावत दी गई। मैंने तो पेट भरा होने का बहाना कर के जान छुड़ाई। दोनों बहादुरों ने मास के साथ खूब प्याले पर प्याले उँडेले। मै सोच रहा था, अभी कल तक ये लोग मुसलमान थे और शायद पचीसों पीढ़ियों से चले आ रहे थे; और आज इनको हराम-हलाल का कुछ खयाल नहीं। इनके मृत पुरखा कब्र में बैठे क्या कहते होंगे!

बराबर आसमान बादलों से घिरा ही रहा। जब तब वर्षा भी होती देख पड़ी। पतझड़ का मौसम इधर अक्तूबर-नवम्बर में होता है और उस समय वर्षा बहुत हुआ करती है। जाडे में सर्दी के मारे यह पानी की वर्षा वर्फ के रूप में परिणत हो जाती है। मेरी राय में दोन नदी—जो कफ़्क़ाश् और उक्रइन् की सीमा है—वहीं एसिया और यूरोप की भी सीमा है। पिछली यात्रा में मैंने देखा था कि यहीं से हिन्दुस्तानी गायों की नसल शुरू होती है। यहीं से तवे और तन्दूर की रोटी मिलती है। यहीं से हिन्दुस्तानी जूतों जैसे जूते शुरू होते हैं। और यहीं से स्त्रियों में पंजाब-जैसा घाघरा भी दिखाई देता है। इसमें शक नहीं कि जिस तेज़ी के साथ यूरोपीय वेश-भूषा और खानपान की चीज़ों का जोर से प्रसार हो रहा है, उसके कारण

पिछली तीन चीजें बहुत दिनों तक इस भेद-भाव को क़ायम रखने में समर्थ न हो सकेंगी।

स्टेशनों पर मिट्टी के तेल का कीचड़ उछलता सा मालूम होता था। और नई नई इमारतें तो तूफ़ानी वेग सी उठती चली आ रही हैं।

मेरा रूसी भाषा का ज्ञान नहीं के बराबर था। गाड़ी के साथियों में मेरी भाषा समझ सकने वाला कोई न था; तो भी मुझे अकेलापन अनुभव नहीं हो रहा था। मैं अपने चंद परिचित शब्दों तथा 'रूसी स्वयं-शिक्षक' के सहारे साथियों से बात चीत करता रहता था। साथियों में एक महिला अन्ना इवानोव्ना कुद्रेश्चेवा थीं। वह लेनिन्ग्राद् की एक रोमनी (जिप्सी) थियेटर की गायिका नटी थीं। उनका पिता रोमनी था और माँ रूसी। रोमनी लोग मुसलमानों के राज्य स्थापित होने से दो तीन शताब्दी पहले भारत से पश्चिम की ओर निकले थे। रोमनी शब्द डोमनी का अपभ्रंश है। अर्थात् हमारे यहाँ के चलते-फिरते रहने वाले खाना-बदोश डोम या नट तथा यूरोप के रोमनी या जिप्सी एक ही जाति से हैं। शताब्दियों से ठंडे मुल्क में रहने तथा रक्त-सम्मिश्रण के कारण रोमनी यूरोपियन जैसे मालूम होते हैं। विद्वानों ने अन्वेषण कर पता लगाया है कि रोमनी भाषा हिन्दी भाषा की बहन है। इस नाते तवारिश् अन्ना से रोमनी भाषा के जानने के लिए मेरी जिज्ञासा बहुत अधिक जाग्रत हो उठी थी। लेकिन माँ के रूसी होने के कारण उन्हें रोमनी भाषा मालूम न थी। रूसी भाषा में रोमनी को सिगांस्की कहते हैं। तवारिश् (साथी) अन्ना भी लेनिन्ग्राद् जा रही थीं; इसलिए हमें रूसी भाषा सिखलाने की ओर उनका खास तौर से ध्यान था। रोमनी स्त्रियों का सौन्दर्य यूरोप में बहुत मशहूर है। अन्ना की अवस्था अब ४६—४७ वर्ष की थी, लेकिन इसमें शक नहीं कि यौवनावस्था में वह पीतर्-बुर्ग की श्रेष्ठ सुंदरियों में रही होंगी।

दोन् नदी को पार कर हम रोस्तोव् नगर के साथ साथ उक्रइन्-सोवियत्-साम्यवादी-प्रजातंत्र में दाख़िल हुए। शाम को उक्रइन् के

एक बड़े शहर खर्कोफ् को पार किया। पहले यही उक्रइन् की राजधानी थी। अब वह प्राचीन नगर कियेफ में चली गई है। खर्कोफ की आबादी १० लाख से ऊपर है।

छोटे छोटे स्टेशन तो इधर दीखते ही नहीं, सभी स्टेशनो की इमारतें बड़ी बड़ी है। और मुसाफिर-खाना, भोजनालय तथा दूसरे कमरों में कांच की दोहरी खिड़कियाँ और दोहरे दरवाजे लगे हुए हैं। इन्हें आग जला कर या गर्म पानी के नल को ले जाकर बराबर गर्म रखा जाता है। १४ तारीख की शाम तक जमीन पर न हमें बर्फ का दर्शन हो रहा था, न रेलवे लाइन के आसपास देवदारों के वृक्ष ही दिखाई पड़ते थे। १५ नवम्बर को हम रूस में पहुँच गये। सवेरे से ही हमें योल्का (देवदार) और बिर्योज़ा (भोजपत्र) के वन दिखलाई पड़ने लगे। दूर तक बर्फ की सफेद चादर जमीन पर बिछी हुई देख पड़ती थी। जमीन यहाँ ऊँची नीची है। मकानों की छतें और दीवारों का कुछ भाग भी बर्फ से ढँका दिखाई पड़ता था। इधर के गाँवों के भी मकान कुछ और अधिक अच्छे ढग के दिखाई पड़ते थे।

हमारे किराये मे भोजन भी शामिल था। टिकट के साथ भोजन का भी टिकट मिला हुआ था। ट्रेन के बीच में एक भोजन-गाड़ी लगी हुई थी जहाँ जा कर इच्छानुसार हम भोजन कर सकते थे। पैसा देने की जगह हमें एक टिकट फाड कर दे देना पड़ता था। वैसे एक बार के भोजन में आठ-दस रूबल (१ रूबल=सात आने) से कम खर्च नहीं होता था। दो बार के भोजन और सवेरे के नाश्ते में २० रूबल से कम खर्च नहीं पड़ता। अर्थात् प्रतिदिन पौने नौ रुपये। देश के बाहर इन्तूरिस्त द्वारा भोजन और यात्रा का प्रबन्ध करा लेने मे यात्री को बहुत नफा रहता है।

४ बजे के बाद ही अंधेरा मालूम होने लगता था। १० बजे रात को (१५ नवम्बर) हम मास्को पहुँचे। इन्तूरिस्त का आदमी स्टेशन पर आया हुआ था। फाटक से निकलते वक्त देखा, लोगों का सामान तुलवाया

२—लेनिन्ग्राद् नगर

वैसे लेनिन्ग्राद् मास्को के इतना पुराना शहर नहीं है। प्रथम पीतर्—जिसने कि पश्चिमी यूरोप की उन्नति—राजनीतिक, सैनिक और आर्थिक उन्नति—को देख कर उसकी नक़ल करना आरंभ किया—ने १७०३ ई० में समुद्र के पास नेवा नदी के किनारे पीतर्-वुर्ग के नाम से यह शहर वसाया था। पहले यह जहाज का वन्दरगाह और वाहर के मुल्कों से यातायात सम्वन्ध स्थापित करने के लिए वनाया गया था। लेकिन १७१४ में जव राजधानी भी मास्को से उठ कर पीतर्-वुर्ग में आ गई तो इस नगर का महत्त्व वहुत वढ़ गया, और यही रूस का राजनैतिक और सांस्कृतिक केन्द्र हो गया। १८४० के वाद कल-कारखानों की स्थापना ज़्यादा होने लगी। तव से यह औद्योगिक केन्द्र भी वन गया। १७१४ से १९१८ तक—२०४ साल तक पीतर्-वुर्ग रूस की राजधानी रहा। इस लिए इसका महत्त्व वहुत ज़्यादा था। दिन पर दिन तरक्की होती गई। ज़ारों, राजकुमारों तथा दूसरे अमीरों ने करोड़ों रुपये लगा कर वड़े वड़े महल खड़े किये। शहर की स्थापना के वक़्त पहले ही से योजना वना ली गई थी। इस लिए नगर वहुत सुन्दर वना। वाल्तिक् समुद्र के किनारे होने के कारण इसकी औद्योगिक प्रगति का ज़्यादा होना आवश्यक था। यहीं से जहाज़ माल लेकर दूसरे मुल्कों को जाया करते थे। पीतर्-वुर्ग वहुत सी राजनैतिक हलचलों का केन्द्र रहा है। पीतर्-वुर्ग वह अखाड़ा था जिसमें वड़े महत्त्व की राजनैतिक घटनाएँ घटीं। १८२५ में अलेक्सन्द्र प्रथम के शासन काल में ज़ार की निरंकुशता के खिलाफ़ धनिक ज़मींदारों ने वग़ावत की। इसे दिसम्वरी विद्रोह कहते हैं। तव से लेकर १९१७ तक कई उपद्रव और विद्रोह हुए, जिनमें १९०५ की क्रान्ति तथा १९१७ की प्रथम और द्वितीय क्रान्ति (लाल क्रान्ति) वहुत महत्वपूर्ण

हैं। १६०५ मे पहले पहल मजदूरों ने अपने हक के लिए हथियार उठाया। जब कि जार निकोला ने आवेदन-पत्र लेने के लिए गोलियों से उनका स्वागत किया। पेत्रो-ग्राद् ही, (महायुद्ध से पूर्व) का पीतर-बुर्ग, इस क्रान्ति का केन्द्र रहा। १६१७ की ७ नवबर को यही पर बोलशेविको ने पूँजीवाद का शासन हमेशा के लिए खतम कर समाजवादी सरकार की स्थापना की। यही लेनिन् ने आदिम सरकारी खरीते निकाले थे। यद्यपि १६१८ में अधिक सुरक्षित और केन्द्रीय समझ कर राजधानी लेनिन्ग्राद् से उठ कर मास्को चली गई, लेकिन लेनिन्ग्राद् अब भी सोवियत् उद्योग और संस्कृति का केन्द्र बना ही हुआ है। १६२४ मे सोवियतों की कांग्रेस ने शहर का नाम बदल कर अपने महान् नेता लेनिन्—जो कि कुछ ही पहले मर चुका था—के नाम पर लेनिन्ग्राद् रक्खा। लेनिन्ग्राद् की हर एक सड़क, हर एक गली अपना अलग अलग इतिहास रखती है। कही पुश्किन्, और लेर्मेन्तोफ्, टाल्स्टाय्, और चेखोफ् की स्मृतियाँ पड़ी हुई है और कही सैंकड़ों हंसते हँसते फांसी पर लटकने वाले क्रान्तिकारी युवको की जीवन-दायिनी जीवनियाँ अंकित है।

लेनिन्ग्राद् को प्रथम पीतर ने अपना सारा ऐश्वर्य लगाकर बनाना आरंभ किया था और दो शताब्दियों तक जहाँ एक ओर रूसी साम्राज्य की अपार सम्पत्ति इसका निर्माण करने के लिए मौजूद थी, वहाँ रुपये को पानी की तरह बहा कर यूरोप के चोटी के इंजीनियर और कलाकार, इस काम मे लगाये गये थे। मीलो तक चले गये यहाँ के अनेको पुराने प्रासाद और धनिको के घर अपने स्थापत्य की विचित्रता और सौन्दर्य के लिए म्यूज़ियम से मालूम होते हैं। सड़कें, उद्यान, चौक, सब मे बड़ी शाहखर्ची और सुरुचि का परिचय दिया गया है। नेवा नदी और उसकी अनेक नहरों के जाल के कारण इसे उत्तर का वेनिस् कहते हैं।

प्रथम पीतर ने १७०३ मे लेनिन्ग्राद् की स्थापना की, यह हम कह चुके हैं। उन्नीसवी सदी के आरम्भ मे पीतर्-बुर्ग राजनैतिक और सांस्कृतिक

केन्द्र स्थान ही नहीं था, बल्कि वह यूरोप के बड़े बड़े व्यापारिक केन्द्रों में समझा जाता था।

आज भी लेनिन्ग्राद् का महत्त्व इसी से मालूम हो सकता है कि यहाँ कई वैज्ञानिक प्रतिष्ठान (इन्स्तीत्यूत्) और संस्थाएँ हैं। १९३३ में सोवियत् की सारी औद्योगिक उपज का १४ सैकड़ा यहाँ तैयार हुआ था। लेनिन्-

उरित्स्की चौक (पृष्ठ १३)
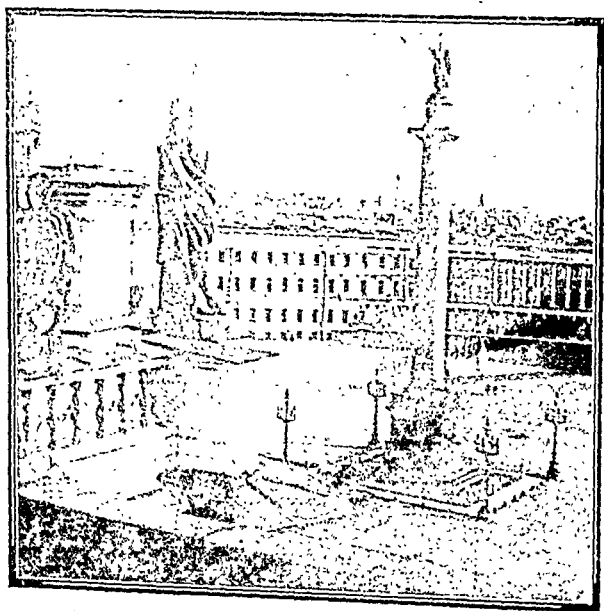
ग्राद् का घेरा १२१ किलोमीतर (८० मील से ज़्यादा) है। और इस तरह घेरे में दुनिया के शहरों में उसका नंवर तीसरा है। अव्वल लन्दन और दूसरा न्यूयार्क। १९३२ में जनसंख्या ३० लाख थी और लाल क्रान्ति के

बाद जनसंख्या का डेढ़ गुना के करीब बढ़ना बतलाता है कि क्रान्ति ने लेनिन्ग्राद् को उन्नत करने में सहायता की है।

लेनिन्ग्राद् का उरित्स्की चौक संसार का सबसे बड़ा चौक है। यद्यपि देखने वाले को वह बहुत छोटा मालूम होता है। और उसकी वजह यह है, कि आस पास की सभी इमारतें बहुत ऊँची हैं। और तुलना करने में आदमी की नजर गलती खा जाती है। चौक के बीच में संगखारे का एक विशाल स्तम्भ है। यह संसार का सब से बड़ा पाषाण-स्तम्भ है। ऊँचाई ५० मीतर (१५० फीट से अधिक) और वजन २२४ टन है। यह सारा खभा एक पत्थर का है। आस पास की इमारतों की विशालता के कारण यह भी देखने में छोटा मालूम होता है। स्तम्भ के ऊपर एक देवदूत (फरिश्ता) की भावपूर्ण मूर्ति है। नेपोलियन् के पराजय के उपलक्ष्य में जार अलेक्सन्द्र ने इसे बनवाया था। शिल्पी था मोत्फेरां।

उत्सवों के समय शहर के बड़े बड़े जलूस आकर यहीं इकट्ठे होते हैं और उस वक्त सर्चलाइट की तेज रोशनी और लाउड-स्पीकर की वजह से यह लाखों की जमा हुई भीड़ दर्शक पर अद्भुत प्रभाव डालती है। चौक के चारों तरफ की इमारतों को बनाने में ऐसा खयाल रखा गया है कि जिसमें सब मिल कर स्थान पर एक खास सौन्दर्य पैदा करें।

चौक के एक तरफ शरद्-प्रासाद है। जार इसी में रहा करता था। इसे १७६२ में शिल्पी रास्त्रेली ने बनाया था। इसमें १००० कमरे और हाल हैं। १९४५ खिड़कियाँ और १७८६ दरवाजे हैं। प्रासाद की छत ८ एकड़ जमीन घेरती है। जार के वैयक्तिक कमरों की सजावट को अब भी वैसे ही कायम रखा गया है। इसके कितने ही हालों में क्रान्ति-संग्रहालय है, जिसके देखने के लिए हर साल १० लाख दर्शक आते हैं। शरद्-प्रासाद का कुछ भाग एर्मिताज (Hermitage) म्यूजियम है जो कि दुनिया के कला-संग्रहालयों में बहुत ऊँचा स्थान रखता है। इसका मुकाबला लन्दन का ब्रिटिश म्यूजियम और पैरिस के लूव्रे ही कर सकते हैं।

शरद्-प्रासाद के सामने एक अर्द्ध-वृत्ताकार बहुत विशाल इमारत है, इसे शिल्पी रोसी ने १८२८ में बनाया था। लंबाई ५३० मीतर है (१७००
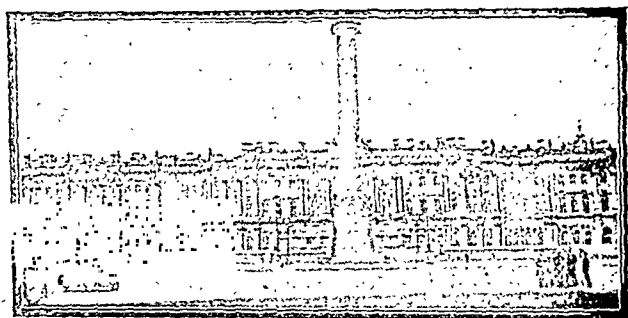
शरद्-प्रासाद

फीट के करीब) और इस प्रकार फ्रांस के वेर्साई प्रासाद से थोड़ी ही कम है।

९ जनवरी १९०५ तक शरद्-प्रासाद ज़ार का निवासस्थान रहा। उसी दिन (खूनी रविवार के दिन) मज़दूर अपना आवेदन-पत्र लेकर जलूस के साथ ज़ार की सेवा में आ रहे थे और यहीं रहते हुए ज़ार ने विशाल चौक में खड़ी जनता के ऊपर गोली चलवाई थी। यह वही ज़ार निकोला (द्वितीय) था, जिसे १९१८ में उसी तरह परिवार सहित जनता की गोलियों का शिकार बनना पड़ा। १९०५ में यद्यपि ज़ार अपार क्रूरता द्वारा जनता को दबाने में सफल हुआ, लेकिन फिर उसे शरद्-प्रासाद में रहने की हिम्मत न हुई; यद्यपि महल के भीतर के चहबच्चों में शरीर रक्षा के लिए ३ पूरी पलटनें और एक शरीर-रक्षक सेना मौजूद थी। वह इस प्रासाद को छोड़ कर **चार्स्कोयसेलो** (ज़ार का गाँव)—जिसे आज कल **देत्स्कोये सेलो** (बच्चों का गाँव) कहते हैं—के महल में चला गया। १२ साल बाद फिर

पुराने चौक मे बन्दूकों की आवाज हुई। अब की बार भी वे ही कमकर थे, लेकिन अब वे आवेदन-पत्र लेकर किसी जार को देने नहीं आये थे। जार तो

शरद्-प्रासाद का द्वार

आठ महीने पहले ही गद्दी से उतारा जा चुका था। हाँ, शरद्-प्रासाद में रहने वाले धनियों और जमींदारों से अधिकार छीनने के लिए वे बन्दूकों के साथ आये थे। धनिकों की सरकार ने पूरी मोर्चाबन्दी कर रखी थी, लेकिन ७ नवंबर को मजदूरों ने जार के प्रासाद को दखल ही नहीं कर लिया बल्कि उस के साथ साथ शासन मजदूर-सरकार के हाथ में चला गया।

शरद्-प्रासाद की एक तरफ़ विशाल उरित्स्की चौक है, और दूसरी तरफ़ नेवा नदी। नदी का किनारा सगखारे से बँधा हुआ है। प्रासाद की बग़ल से जानेवाली सड़क पर पुल है, जिसके उस पार लेनिन्ग्राद् का विश्वविद्यालय तथा दूसरी शिक्षण-संस्थाएँ हैं। जाडे के दिनों में नेवा जम जाती है और ऊपर बर्फ पड़ कर उसे विशाल कर्पूर-राशि सी बना

देती है। पुराने ज़माने में जाड़े के दिनों में नेवा पर गाड़ियाँ और दूसरे यान चला करते थे। अठारहवीं सदी में रानी एनी ने नदी के ऊपर बर्फ़
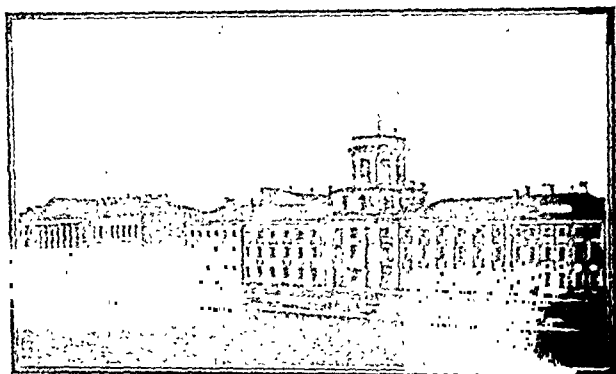
विश्वविद्यालय (लेनिन्ग्राद्) (पृ० २४)

का महल बनवाया था, जिसे बर्फ़ की ही मूर्तियों और आभूषणों से सुसज्जित किया गया था। रानी के कुछ 'मूर्ख' (विदूषक) बन्द हो कर यहीं ठंडे हो गये थे।

शरद्-प्रासाद् की बग़ल में पुल की तरफ़ जानेवाली सड़क को पार करने
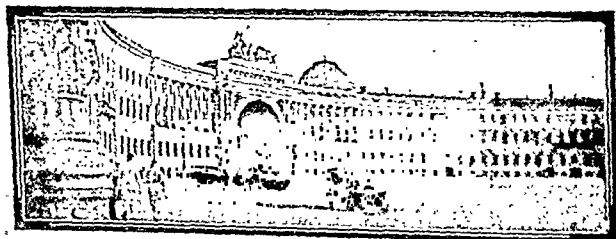
शरद्-प्रासाद के सन्मुख (पृ० १५)

पर नौसैनिक-संग्रहालय की विशाल इमारत है। इसे १८२३ में शिल्पी जखारोफ् ने बनाया था। यह ४४० मीतर (प्राय. १४०० फीट) लंबी इमारत है। बीच में सोने का सुन्दर गन्धोला बहुत दूर से दिखलाई पड़ता है। यह ६० मीतर (प्रायः ३०० फीट) ऊँचा है। उसके ऊपर एक सोने का जहाज़ है, जो देखने में यद्यपि छोटा मालूम होता है, लेकिन है १३ फुट के करीब (४ मीतर)।

पहले इस इमारत को जहाज बनाने के डक के वास्ते तैयार किया गया था। इमारत के भीतर जहाज बनते थे और फिर एक खास नहर से नेवा में उतारे जाते थे। यही जगह है जहाँ पर प्रथम पीतर ने अपना ५० तोपो वाला जहाज़ बनवाया था। आजकल इस इमारत में नौसैनिक-संग्रहालय है।

नौसैनिक-संग्रहालय की एक तरफ नेवा नदी है और दूसरी तरफ़ उद्यान। उद्यान के छोर से लेनिन्ग्राद् की सब से बड़ी सडक नेव्स्की—आजकल २५ अक्तूबर एवेन्यू—आरंभ होती है। यह सड़क ४, ५ किलोमीतर (६ मील से ऊपर) लम्बी है। इसी सडक पर होतेल्-यूरोपा के पास कजान्स्की-सबोर् मशहूर गिर्जा है। इसे १८११ में शिल्पी वोरोनिखिन् ने अपने मालिक ग्राफ़(कौंट) स्त्रोगानोफ् के लिए बनाया था। सामने की तरफ इसके १४४ विशाल स्तंभ— जो अर्द्ध वृत्ताकार बराडे में खडे किये गये है— इमारत की शोभा को और बढा देते हैं। और इनकी ही विशालता की वजह से इमारत उतनी बड़ी मालूम नहीं होती, जितनी वह है। बाहर बगीचे के ढले लोहे के कठघरे भी बड़े सुन्दर हैं। बाग में ग्राफ् स्त्रोगानोफ् की मूर्ति है। लेकिन उसकी आत्मा स्वर्ग में बैठी बैठी क्या कहती होगी, जब वह देखती होगी कि ईसा और उसकी माता को प्रसन्न करने के लिए गरीबों का लाखो मन खून चूस कर जिस इमारत को उसने बनवाया था, उसे अब धर्म-विरोधी (धर्म-इतिहास) म्यूज़ियम के रूप में बदल दिया गया है; और उसके भीतर जा कर आदमी यही ख्याल लेकर लौटता है कि धर्म के समान झूठ और धोखा तो पतित से पतित व्यक्ति भी नहीं कर सकता।

अक्तूबर-एवेन्यू द्वारा कज़ान्स्की गिर्जे से और आगे चलने पर फोन्तन्का नदी पर अवस्थित आनिच्किन् पुल आता है। इस पुल के ऊपर मूर्ति-शिल्पी
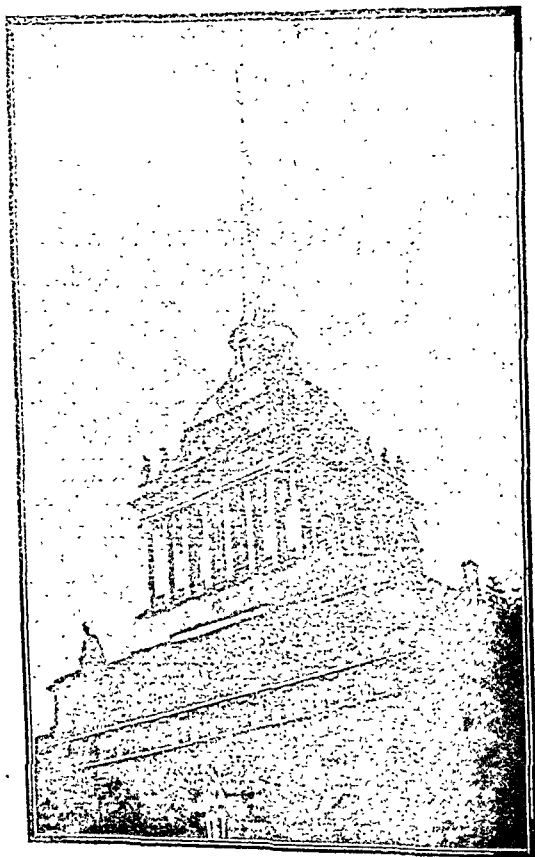
नौसैनिक-संग्रहालय (लेनिन्ग्राद्)

क्लोत् के बनाये पीतल के ४ अद्‌भुत घोड़े हैं। शिल्पी ने अश्वजाति के

सिकन्दर और घोड़ा (लेनिनग्राद) (पृष्ठ १८)

सौन्दर्य और शक्ति को निचोड़ कर उनमें रख दिया है। घोड़ों के पास विजयी

सिकन्दर की मूर्ति उनका दमन करती हुई दिखाई गई है।

लेनिनग्राद् का अक्षांश ६२° है जिसके कारण फरवरी में यहाँ श्वेत-रात्रि होती है। उस समय ध्रुव के पीछे छिपे सूरज की चमक इतनी अधिक पहुँचती है कि सारी रात कुछ मिनटों को छोड़ कर बिना दीपक के सहारे आदमी अखबार पढ़ सकता है।

अक्तूबर एवेन्यू वोस्तानियाँ-चौक में जाकर समाप्त होता है। यहीं मास्को जानेवाले रेलवे का स्टेशन है। वोस्तानियाँ का अर्थ है विद्रोह। १९१७ की प्रथम क्रान्ति—मार्च (फ़रवरी) में हुई थी—का सूत्रपात यहीं हुआ था। एक कसाक सिपाही ने एक पुलीस अफसर को यहीं मारा था। और उसके बाद विद्रोह मच गया। चौक में ज़ार अलेखन्द्र तृतीय की मूर्ति है।

मार्शल बुद्योनी (पृष्ठ २०८)

नौसेना-म्यूजियम के पास नेवा नदी से कुछ हट कर प्रथम पीतर की घोड़े पर चढ़ी मूर्ति है। इस मूर्ति को कलाकार फल्कोनेत् ने बनाया था। घोड़ा अपने पिछले पैर पर खड़ा है। मूर्ति अत्यन्त भावपूर्ण है। इस विशाल मूर्ति को खड़ा करने के लिए संग-खारे की चट्टान की चट्टान समुद्र के तट से यहाँ लाई गई। चट्टान इतनी भारी थी कि ४०० आदमी रोज खींचने में लगे रहे, तब १ वर्ष में इस

जगह ला सकें। वह प्रतिदिन २०० मीतर (७०० फीट के करीब) से अधिक नहीं खींच सकते थे। चट्टान इतनी बड़ी थी कि उसकी दरारों में वृक्ष उगे हुए थे।

इस मूर्ति के पास ही सिनेट का विशाल चौक है। १४ दिसंबर १८२५ में दिसम्बरी विद्रोह यहीं हुआ था। उस वक्त प्रगतिशील धनी जमींदारों
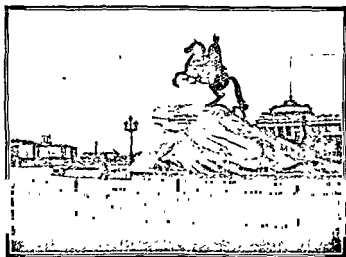
प्रथम पीतर की मूर्ति

ने भड़का कर शरीर-रक्षकों को ज़ार निकोला प्रथम के खिलाफ लड़ाना चाहा था। विद्रोहियों पर तोपें चलाई गई थीं। उनके पाँच नेता फाँसी चढ़ा दिये गये। एक सौ से ज्यादा रईसों को या तो पदच्युत कर दिया गया अथवा विदेश या सिबेरिया में निर्वासित कर दिया गया। बड़ी निर्दयता के साथ इस विद्रोह का दमन हुआ था।

इसाइकी (आइज़क्)-गिर्जा इसी चौक में खड़ा है। शिल्पी मोत्-फेर्रां ने ४० (१८१७ से १८५७ ई०) साल में इसे बनाया था। १०

हज़ार मज़दूर रोज़ काम करते थे। उस समय मज़दूरी और, सामान दोनों के सस्ता रहते भी २ करोड़ ५० लाख रूबल इस पर ख़र्च आया था। मुख्य गन्वोला (गुम्बद) ३०० फ़ीट ऊँचा है और सामने से चौड़ाई ३०० फ़ीट है। (इससे एक लट्टू लटकता है जो कि अपने हिलने की चाल से पृथ्वी की गति को बतलाता है।) इस गिर्जे के भीतर ४२ फ़ीट ऊँचे ११२ संगखारे के विशाल स्तंभ हैं। रोम के अलेक्सान्द्र और ट्रोजन खंभों को छोड़ कर संसार में दूसरे इतने ऊँचे स्तंभ नहीं हैं। एक एक खंभे का वजन १०० टन है। गिर्जे के भीतर १२००० आदमी बैठ सकते हैं। संगमर्मर, संगमूसा तथा दूसरे प्रकार के कितने ही क़ीमती पत्थर इसमें लगाये गये हैं। छत पर जाने से सारा लेनिन्ग्राद् शहर दिखलाई पड़ता है।

नेवा-तट

इसाइकी गिरजे के पीछे की ओर वोरोफ्स्की चौक है। यहाँ ज़ार निकोला प्रथम की अश्वारूढ़ मूर्ति है। यह भी शिल्पी क्लोत् की बनाई हुई

है। इसमें घोड़ा पिछले पैरों पर खड़ा है। मूर्ति के पास में अस्तोरिया होटल की विशाल इमारत है। इस चौक से करीब ही पावलोव्स्की बैरक है। यहाँ पहले जार के शरीर-रक्षक रहते थे। जार पावल (प्रथम) चुन कर नीली आँखों और लंबी नाकों वाले जवानों को ही शरीर-रक्षक बना कर रखता था। १८१८ में यह इमारत बनी थी। आजकल इसमें बिजली के पावर-स्टेशन के केन्द्रीय प्रबंध का दफ्तर है। मोयिका नदी पार करने पर रूसी-म्यूजियम की सुन्दर इमारत मिलती है। इसके पास के बाग के दरवाजे के करीब रक्त-मन्दिर है। यह उस जगह बनाया

इसाइकी-सबोर और अस्तोरिया होटल (लेनिन्ग्राद्) (पृष्ठ २१)

गया है, जहाँ जार अलेक्सेन्द्र द्वितीय क्रान्तिकारियों के बम का शिकार हुआ था। जार का शरीर चिथड़े चिथड़े हो कर उड़ गया था। सिर्फ फर्श

हज़ार मज़दूर रोज़ काम करते थे। उस समय मज़दूरी और,सामान दोनों के सस्ता रहते भी २ करोड़ ६० लाख रूबल इस पर खर्च आया था। मुख्य गम्बोज (गुम्बद) ३०० फ़ीट ऊँचा है और सामने से चौड़ाई ३०० फ़ीट है। (इसमे एक लट्टू लटकता है जो कि अपने हिलने की चाल से पृथ्वी की गति को बतलाता है।) इस गिर्जे के भीतर ४५ फ़ीट ऊँचे ११२ संगखारे के विशाल स्तंभ हैं। रोम के अम्फिसंत्र और होसेन खंभों को छोड़ कर संसार में दूसरे इतने ऊँचे स्तंभ नहीं हैं। एक एक खंभे का वज़न १०० टन है। गिर्जे के भीतर १२००० आदमी बैठ सकते हैं। संगमर्मर, संगमूसा तथा दूसरे प्रकार के कितने ही क़ीमती पत्थर इसमें लगाये गये हैं। छत पर जाने से सारा लेनिनग्राद् शहर दिखलाई पड़ता है।

नेवा-तट

इसाइकी गिरजे के पीछे की ओर वोरोफस्की चौक है। यहाँ ज़ार निकोला प्रथम की अश्वारूढ़ मूर्ति है। यह भी शिल्पी क्लोत् की बनाई हुई

है। इसमें घोड़ा पिछले पैरों पर खड़ा है। मूर्ति के पास में अस्तोरिया होटल की विशाल इमारत है। इस चौक से करीब ही पावलोव्स्की बैरक है। यहाँ पहले जार के शरीर-रक्षक रहते थे। जार पावल (प्रथम) चुन कर नीली आँखों और लंबी नाकों वाले जवानों को ही शरीर-रक्षक बना कर रखता था। १८१८ में यह इमारत बनी थी। आजकल इसमें बिजली के पावर-स्टेशन के केन्द्रीय प्रबंध का दफ्तर है। मोयिका नदी पार करने पर रूसी-म्यूजियम की सुन्दर इमारत मिलती है। इसके पास के बाग के दरवाजे के करीब रक्त-मन्दिर है। यह उस जगह बनाया

इसाइकी-सबोर और अस्तोरिया होटल (लेनिन्ग्राद्) (पृष्ठ २१)

गया है, जहाँ जार अलेक्सेन्द्र द्वितीय क्रान्तिकारियों के बम का शिकार हुआ था। जार का शरीर चिथड़े चिथड़े ही कर उड़ गया था। सिर्फ फर्श

के पत्थर और बाँध के कठघरे पर खून लगा हुआ था। इन्हीं को मन्दिर के भीतर रखा गया है।

इंजीनियरिंग-प्रासाद दूसरी बड़ी इमारत है। यहीं पर पावल प्रथम अपने पुत्र अलेखन्द्र प्रथम की आज्ञा से दरबारियों द्वारा मारा गया था। इस प्रासाद को शिल्पी ब्रेन ने १७३४ में जार की आज्ञा से बनाया था। हत्या के डर के मारे जार ने प्रासाद को खाई से घिरवाया था।

प्रथम पीतर ने अपना पहला महल ग्रीष्म-उद्यान (क्रान्ति-चौक के पास) १७१८ में बनवाया था। शिल्पी का नाम था त्रेसर्नी। इस महल के भीतर पीतर के वक्त के असबाब और सजावट अभी तक मौजूद हैं।

शरद्-प्रासाद के पास वाले पुल को पार करने पर विश्वविद्यालय और दूसरी शिक्षण-संस्थाएँ मिलती हैं। यहाँ पंखदार दो ऊँचे मीनार हैं, जो नेवा
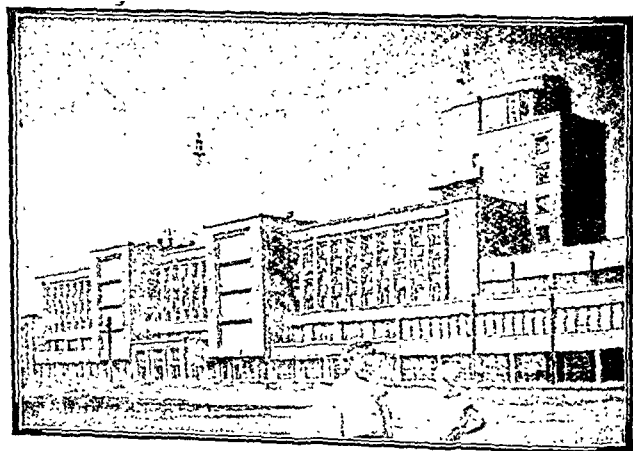
सांस्कृतिक-भवन (लेनिन्ग्राद्) (पृ० २९)

की एक शाखा के किनारे खड़े हैं। इससे थोड़ा आगे जाने पर सार्वजनिक

पुस्तकालय है। पुस्तकों की सख्या ५५ लाख से ऊपर है, जिनमे २½ लाख हस्तलिखित है। लेनिन्ग्राद् समुद्र और छोटी छोटी कितनी ही नदियों के किनारे बसा है। क्रासूने-जोरी (रक्त-उपा) सडक से जाने पर आदमी पेत्रो-पाव्लोव्स्की किले मे पहुँचता है। 'समानता-पुल' की बाई तरफ नेवा नदी के तट पर यह किला अवस्थित है। नगर के निर्माण के साथ साथ इसका भी निर्माण १७०३ में हुआ था। पहले ही से राजनैतिक कैदी इसमे रखे जाते थे। सब से पहला कैदी था पीतर प्रथम का लडका अलेक्सन्द्र। उसके बाद की दो शताब्दियों मे सैकडो क्रान्तिकारी इसमे रखे गये। सीड-वाले अधेरे भुंइघरो में रख कर इन कैदियो के ऊपर बडा अत्याचार किया जाता था। बहुतेरे उनमें से मर जाते थे या पागल हो जाते थे। किले मे वह जगह है, जहाँ फाँसी दी जाती थी। इस तरह मरे हुओ की सिर्फ सख्या भर मालूम हो पाती थी।

मार्शल ब्लूखेर (पृष्ठ १०२)

दिसबरी-विद्रोह (१८-२५) से लेकर नरोदो-वोल्त्सी (जनता की इच्छा, उन्नीसवी शताब्दी का उत्तरार्द्ध) तक के राजनैतिक कैदी यही रखे जाते थे। गोर्की यही कैद किया गया था। लेनिन् का बडा भाई अलेक्सन्द्र उल्यानोव् फाँसी पर चढाने के पहले इसी किले में रखा गया था। किले के बीच मे पेत्रो-

पावलोव्स्की गिर्जा [illegible] १७७३ में [illegible] मेसर्नी ने बनाया था। प्रथम पीतर से [illegible] अलेक्सन्द्र तृतीय (अन्तिम ज़ार से पहले का) तक सारे ज़ार यहीं दफ़नाये गये हैं। गिर्जे का मन्थोला १२२½ मीतर है और इसके ऊपर एक पर-धार फरिश्ते की मूर्ति, जिसके पंख साढ़े आठ मीतर (९ गज के करीब) लंबे हैं।

इस क़िले की दाहिनी ओर क्रान्तिचौक है, जिसके सामने एक छोटा सा मकान है, जिसमें अन्तिम ज़ार निकोला का कृपापात्र एक अभिनेता वशेसिन्स्की रहता था। फरवरी १९१७ की क्रान्ति के बाद ही इस घर में बोलशेविक पार्टी की केन्द्रीय समिति का कार्यालय चला आया। विदेश से आने पर स्टेशन से सीधे लेनिन् यहाँ आये और रोज मकान के सिंहपंजर (उभड़ी हुई बड़ी खिड़की Balcony) पर खड़े हो कर व्याख्यान दिया करते थे, जिसके सुनने के लिए मजदूर और सैनिक हज़ारों की तादाद में जमा हुआ करते थे।

विद्रोह-संगठन का कार्यकारी मंडल भी यहीं रहता था। आजकल इस मकान में वृद्ध-बोलशेविक-सभा का कार्यालय है।

मार्शल येगोरोफ़

इसी चौक में एक लंबी चौड़ी नई इमारत बनी है। यह भूतपूर्व राजनैतिक कैदियों का समान-गृह (कम्यून्-गृह) है। पास ही में

प्रथम पीतर का दोमिक (कुटिया) है, जिसमें पीतर्-बुर्ग बसने के वक्त पीतर एक साल रहा था। कुटिया को उसी हालत में रखा गया है।
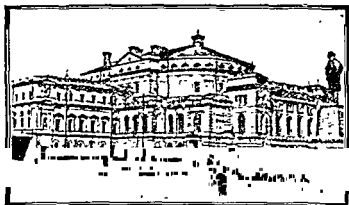
मारिइन्स्की-थिएटर (लेनिन्ग्राद्)

जार के हाथ के कितने ही औजार और सामान भी रखे गये हैं। कुटिया की रक्षा के लिए उसके ऊपर पत्थर का मकान बना दिया गया है।

*** ***

क्रान्ति के बाद लेनिन्ग्राद् मे भारी परिवर्तन हुआ है। शहर के केन्द्रीय स्थानो और सुन्दर सड़कों पर थोड़े से धनी लोगों के रहने के मकान थे। बाकी सभी जनता—मजदूर—लकड़ी के छोटे छोटे घरौंदो में शहर के बाहर फैक्टरियों के पास रहा करती थी। क्रान्ति के बाद जो मकानो का नव-निर्माण हुआ है, उसने उन घरौदो का पता नही छोडा। अब वहाँ चार चार पाँच पाँच तल्ले की बडी बड़ी इमारतें है। पानी के नल, बिजली और पाखाने के पंप का इतजाम है। हर जगह क्लब, स्कूल, बाग बगीचे हैं।

*** ***
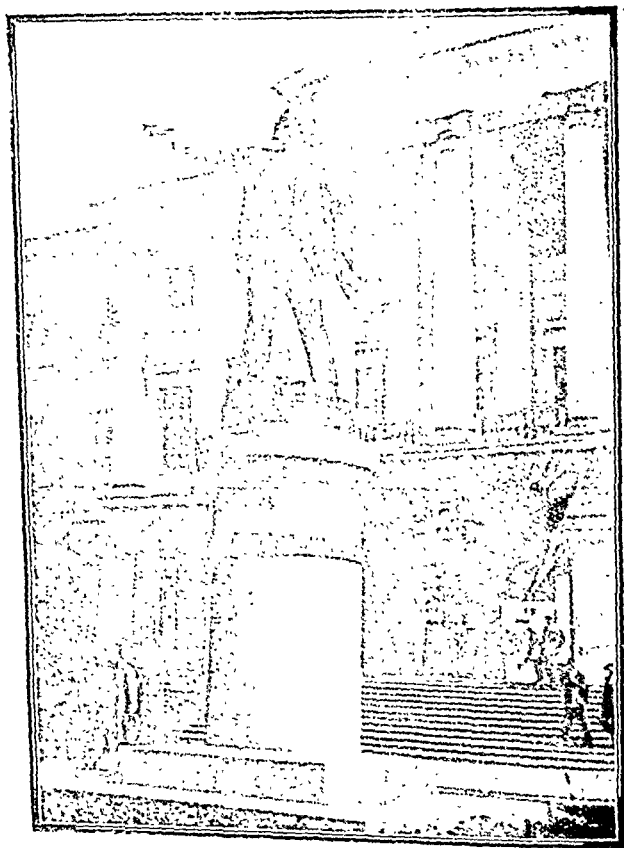
फ़िन्लैंड-स्टेशन (लेनिन्ग्राद्) पर लेनिन् की मूर्ति

लेनिन्ग्राद् का फ़िन्लैंड-स्टेशन एक ऐतिहासिक स्थान है। विदेश से लौट कर आने पर लेनिन् इसी स्टेशन पर उतरे थे; और यहीं मज़दूरों और सैनिकों के सामने उन्होंने अपना पहला व्याख्यान दिया था। व्याख्यान

की समाप्ति पर उन्होंने कहा था—

"चिरजीव, सार्वभौम समाजवादी क्रान्ति !"

स्टेशन के चौक में लेनिन् की एक सुन्दर मूर्ति स्थापित है। उसके नीचे लेनिन् के उक्त वाक्य उत्कीर्ण है।

पश्चिमी यूरोप के जाने वाले मुसाफिरो को लेनिन्ग्राद् के वर्साबा स्टेशन से जाना पड़ता है। इससे आगे बाल्तिक् स्टेशन है। जहाँ से बिजली की रेल पीतर्-होफ को जाती है। यहाँ हड़ताल-चौक है। यहीं नाव्स्कीं विजय-मेहराब है, जिसे नैपोलियन के विरुद्ध विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में १८३४ में बनवाया गया था। शिल्पी का नाम था स्तासोफ्। चौक के पास की बाकी इमारते हाल में बनी है। मेहराब की बाईं ओर नाव्स्कीं ज़िले का गोर्की-सस्कृति-भवन है। सारी इमारत सीमेंट और लोहे की है। यह लाल पुतिलोफ् फैक्टरी के कमकरो की प्रेरणा से बनाई गई है और सारा खर्च उन्होंने ही दिया है। जिस जगह यह इमारत खड़ी है, वहाँ पहले एक शराब की भट्ठी थी, जहाँ मज़दूर हफ्ते की कमाई एक दिन में पी जाते थे।

नाव्स्कीं मेहराब की दूसरी तरफ़ विशाल क्रीडा-क्षेत्र है। इसीके पास नाव्स्कीं का भोजनालय है। इस इमारत के एक ओर हर तरह की चीजों के बडे बडे क्रय-भडार है और बाकी हिस्से में भोजन-शालाएँ और विश्रामगृह। इस भोजन-शाला में १ लाख ६० हजार परोसे प्रतिदिन तैयार होते है और सारे ज़िले के कमकर यहाँ का खाना खाते है। अन्य सार्वजनिक भोजनालयो की तरह यहाँ भी सब काम मशीनो मे होता है। लेनिन्ग्राद् के सभी भोजनालयो मे ४ साल पहले प्रतिवर्ष ७० करोड परोसे तैयार होते थे।

लेनिन्ग्राद् मे निरक्षरता बिलकुल नही है। हर एक विद्यार्थी को ६ साल की नि.शुल्क अनिवार्य शिक्षा मिलती है। भिन्न भिन्न जातियो को उनकी अपनी भाषा मे शिक्षा दी जाती है।

लेनिन्ग्राद् के [illegible] स्थानों में स्मोल्नी भी एक है। स्मोल्नी [illegible]जों को [illegible] १७३५ में [illegible]। इसके पास स्मोल्नी [illegible] लड़कियाँ पढ़ा करती थीं। [illegible] विशाल इमारत है। इसमें पहले [illegible] हेड क्वार्टर यहीं लाल क्रान्ति के समय सैनिक क्रान्ति[illegible]
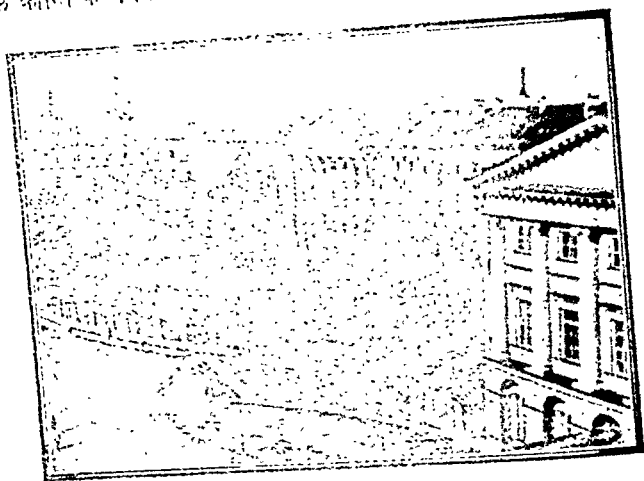
स्मोल्नी

पर था। समिति रात-दिन क्रान्ति के संचालन का काम करती थी। ८ नवम्बर १९१७ ई० से नई स्थापित सोवियत् सरकार का मंत्रिमंडल यहीं चला आया। द्वितीय सोवियत्-कांग्रेस की वह रात वाली ऐतिहासिक वैठक यहीं हुई थी, जिसमें सोवियत्-शासन-स्थापना की घोषणा की गई थी। २८० नंवर के कमरे में अव भी लिखने की एक मेज़, एक सोफ़ा, एक चारपाई पड़ी है। इसी कमरे में रह कर क्रान्ति के प्रथम दिनों में लेनिन् काम करते थे।

३—लेनिन्ग्राद् में दो मास

१७ नवबर को जल-पान के बाद हमने डाक्टर श्चेर्बास्की को फोन किया। गिर जाने से उनके पैर में चोट आ गई थी, और डाक्टरो ने प्लास्तर लगा कर उन्हें चारपाई पर लिटा दिया था। आचार्य श्चेर्बास्की ने न आ सकने के लिए अफसोस प्रकट किया। मैंने सात बजे शाम को स्वयं आने की सूचना दी। पता और ट्राम का नवर लिख लिया और पथ-प्रदर्शक के बिना ही ७ नम्बर की ट्राम पकड कर चल पडा। यह मालूम था कि लेनिन्ग्राद् में कही के लिए भी एक बार ट्राम पर चढ़ने का १५ कोपेक् (१ रूबल=१०० कोपेक्=सात आना) लगता है। ट्राम पर बैठ जाने पर टिकट बेचनेवाली महिला से मैंने स्थान के बारे में पूछा। सयोग से उसी ट्राम में एक वृद्धा जा रही थी, जो डाक्टर श्चेर्बास्की से परिचित थी, और जिन्हें जाना भी उनके मकान के पास था। उन्होंने मुझे अजनबी और भाषा से अल्प-परिचित जान कर वहाँ तक पहुँचा देने का वचन दिया। ट्राम 'नेव्स्की प्रासपेक्टस' (अक्तूबर सड़क) नामक लेनिन्ग्राद् की प्रधान सडक से होती हुई, जार के 'शरद्-प्रासाद' की बगल से नेवा नदी को पार कर विश्वविद्यालय-क्षेत्र में घुसी। नदी के तट ही तट दूर तक जा कर एक जगह उतर पड़े और फिर थोडा चल कर वृद्धा ने मुझे आचार्य श्चेर्बास्की के मकान पर पहुँचा दिया। इस प्रकार बिना किसी दिक्कत के में आचार्य श्चेर्बास्की के निवास-स्थान पर पहुँच गया। वे दूसरी मंजिल में रहते थे। घंटी बजाने पर एक वृद्धा आ उपस्थित हुई। उन्होंने 'दोब्रे वेचेरा' (सुसायम्) कह कर अभिवादन किया। मैंने भी लड़खड़ाती जबान से 'दोब्रे वेचेरा' किसी तरह कह कर सिर झुका दिया। वृद्धा मेरे आने की सूचना देने गई। उस वक्त मेरे दिल में तरह तरह के खयाल उठ रहे

थे। यद्यपि मैंने अब तक डाक्टर श्चेर्वात्स्की ([illegible]) का दर्शन नहीं कर पाया था, लेकिन १० वर्ष पहले से ही मैं उनकी कृतियों और उनके अगाध पांडित्य से परिचित था। जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान् स्वर्गीय डाक्टर ल्युडर्स ने पूछने पर सन् १९२७ ई० में मुझ से कहा था कि यूरोप में भारतीय दर्शन के सब से बड़े विद्वान् डाक्टर श्चेर्वात्स्की हैं। प्रोफेसर सिल्वेन् लेवी के मुख से भी मैं कितनी ही बार उनकी तारीफ सुन चुका था। उनकी कितनी ही गंभीर कृतियों को पढ़ कर मैं स्वयं उनके पांडित्य का कायल था। भारत छोड़ने के थोड़े ही दिन पहले जैन विद्वान् पंडित सुखलाल से भेंट हुई थी। संस्कृत के प्रमाण-शास्त्र का उनका अध्ययन बहुत ऊँचा है। उन्होंने हाल में ही डाक्टर श्चेर्वास्की के 'बुद्धिस्ट लॉजिक' (बौद्ध न्याय) को पढ़वा कर सुना था, और वे उनकी विद्वत्ता से इतने प्रभावान्वित हुए थे कि कह रहे थे—इस ग्रन्थ का पठन-पाठन काशी के न्यायाचार्य के अन्तिम खंड में आवश्यक कर देना चाहिये। ऐसे ग्रन्थ के पढ़े बिना आदमी की आँखें ही नहीं खुल सकतीं कि भारतीय दर्शन का विकास क्रमशः कैसे होता चला आया है। आचार्य श्चेर्वास्की से मेरा पत्र-व्यवहार सन् १९३२ से होने लगा था और उससे हम दोनों में बहुत घनिष्टता स्थापित हो गई थी। तो भी मैं उनके आकार प्रकार के बारे में अनभिज्ञ था। मैं यह

आचार्य श्चेर्वास्त्वा

जानता था कि वे वृद्ध हैं, लेकिन वह लम्बे हैं या ठिगने, मोटे हैं या पतले, प्रसन्न-मुख हैं या मुहर्रमी सूरत वाले, मिलनसार हैं या एकान्तता-प्रिय। मैं यह भी सुन चुका था कि क्रान्ति से पहले वे एक बड़े जमीदार थे और उनका परिवार खानदानी पदवीधारी था। रूसी जमीदारो के बारे में मैंने काफी कहानियाँ पढ़ी थी और मालूम था कि वे ठाटबाट में हमारे राजाओ महाराजाओ के कान काटते थे। डाक्टर श्चेर्वात्स्की इसी श्रेणी के जमीदार थे। पर क्रान्ति ने उस श्रेणी को खतम कर दिया। श्चेर्वात्स्की का वह वैभव, वह महल, वे नौकर-चाकर सब अतीत की बात हो गये। लेकिन अब भी उनका पद उनकी विद्या के कारण बहुत ऊँचा है। वे स०स०स०र० (साम्यवादी-सोवियत्-संघ-रिपब्लिक) विज्ञान-एकेडेमी के मेम्बर हैं। इस संस्था की सदस्य-संख्या सारे १८ करोड़ सोवियत्-निवासियों में १०० से भी कम हैं। इस प्रकार आज भी प्रतिष्ठा और सम्मान में वे पहले से छोटा दर्जा नही रखते।

मुझे अपने विचारो मे डूबने का ज्यादा मौका नही मिला कि वृद्धा ने आकर जर्मन भाषा में—'बिते' कह कर हाथ से 'पधारिए' का इशारा किया। मैं बैठक के कमरे में दाखिल हुआ। एक अच्छा सजा कमरा था। नीचे कालीन बिछी थी। कई गद्दीदार कुर्सियाँ और एक मेज़ रखी थी। दीवारो पर कितने ही सुन्दर चित्र लटक रहे थे। एक निगाह से यह सब देख कर मुझे बगल की कोठरी में घुसना पडा। यही उनका शयन-कक्ष था। कोठरी छोटी थी। एक तरफ दो-तीन अलमारियो मे किताबें भरी थी, जिनमे दर्शन-संबंधी संस्कृत की पुस्तकें सैकड़ों की सख्या में थीं। दीवार के सहारे जो मेज़ रखी थी उस पर भी किताबें थीं। एक तरफ चारपाई थी। खाली जगह में तीन चार कुर्सियाँ पड़ी थीं। आचार्य ने लेटे ही लेटे हाथ जोड़ "स्वागतं, आगम्यतां, इदं आसनम्" कह कर मुस्कराते हुए पास पडी हुई कुर्सी पर बैठने के लिए कहा। खडे न हो सकने के लिए और इसके लिए भी शोक प्रकट किया कि वे स्टेशन तक नही आ सके। उनके मुख को देखने

से यह नहीं मालूम होता था कि उनका जन्म १९ सितंबर १८६२ को हुआ था। ७१ क्या देखने में तो वे ५५–५६ साल के मालूम होते थे। लम्बा

आचार्य श्चेर्वात्स्क्वा, प्रो० दत्त तथा भारतीय भाषाओं के दूसरे अध्यापक

हट्टा-कट्टा शरीर है। दाढ़ी-मूँछ नदारद, सिर भी घुटा। उस भव्य गौर मुख पर निरन्तर झलकती हँसी की रेखा जहाँ एक ओर दर्शक पर अत्यन्त प्रभाव डालती है, वहाँ उसके संकोच को भी दूर कर देती है।

यात्रा के सम्बन्ध में कुशल-प्रश्न हुए। फिर तिब्बत में के सम्बन्ध में कुछ बातें हुईं। मैंने अपनी सम्पादित कुछ पुस्त फिर मार्च में न आकर इतनी देर से क्यों आये—पूछा। सूचना को न पाने तथा पीछे डाक्टर जायसवाल की बीमारी की बात कही। जायसवाल की मृत्यु से उन्हें भी अफ़सोस पूछा—'कितने दिनों तक रहने का विचार है!' इसके बारे यात्मक रूप से तो मैं कोई जवाब न दे सकता था। पता

मेरे रहने आदि का भार अपने ऊपर लिया है। भाषा की दिक्कत हल करने के लिए विश्वविद्यालय के सस्कृत (तृतीय वर्ष) के एक तरुण विद्यार्थी श्री रवीनोविच् दिये गये हैं, वे अंगरेजी भी जानते थे। मोटर के लिए भी आज्ञा दे दी गई।

सोवियत् ने अपने देश मे सातवें दिन एतवार की छुट्टी हटा कर छठा दिन छुट्टी का रखा है, शेष ५ दिन काम के हैं। हर मास की छठी, बारहवी, अठारहवी, चौबीसवी और महीने की अन्तिम् (२८, २९, ३० या ३१) तारीखें छुट्टी के लिए निश्चित है। अगला दिन छुट्टी का था।
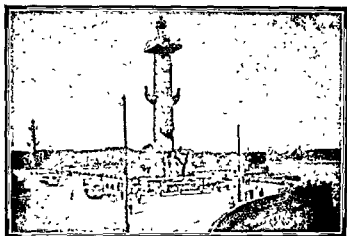
पंखदार-स्तम्भ (लेनिनग्राद्) (पृष्ठ २४)

रवीनोविच् महाशय १० ही बजे आ गये थे। एक बजे 'अमिताज् म्यूजियम' देखने गये। जिस मकान मे यह म्यूजियम अवस्थित है, वह पहले जार का 'शरद्-प्रासाद' था। प्रासाद का कुछ हिस्सा के बाद सन् १९१८ मे सग्रहालय के रूप मे परिणत कर दिया ग

'अर्मिताज् म्यूज़ियम्' इतना विस्तृत है कि उसे देखने के लिए कई दिन चाहिए। हमने सिर्फ पूर्वी विभाग देखना चाहा। चीनी-तुर्किस्तान से प्राप्त मूर्तियों, भित्ति-चित्रों, काष्ठ की तख़्तियों, वस्त्रों और बर्तनों का बहुत सुन्दर संग्रह यहाँ है। चीज़ों के नाम लिख कर बहुत सुन्दर ढंग से सजाया गया है। एक जगह तुंगुत्-मंगोल-साम्राज्य की प्राचीन वस्तुएँ संग्रह की गई हैं। यहाँ के चित्र-पट तिब्बत की तेरहवीं-चौदहवीं सदी के चित्रों से बहुत मिलते हैं। सोवियत् तुर्किस्तान की खुदाई से निकली चीज़ों में यवन-बाख्तरी कला की वस्तुएँ विशेषतया उल्लेखनीय हैं। ईरानी कला का जितना सुंदर संग्रह यहाँ है, उतना सुन्दर संग्रह संसार में कहीं नहीं है। अखामनशी, पार्थिव और सासानी काल की समुन्नत कला के अनेक नमूने यहाँ मौजूद
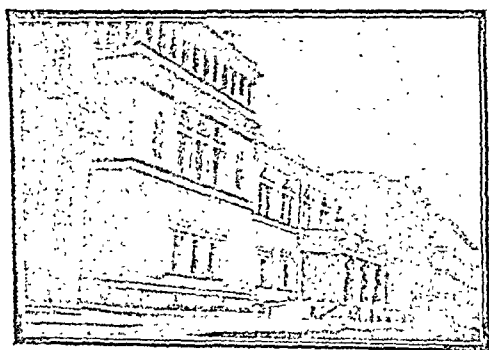
अर्मिताज्-संग्रहालय (लेनिन्ग्राद्)

है। कला की जो वस्तुएँ इस्लाम के आने पर ईरान में नष्ट कर दी गई थीं उनके बहुत से उत्कृष्ट नमूने सौदागरों ने ले जाकर ईरान की उत्तरी सीमा के बाहर बसने वाले काफ़िरों के हाथ बेच दिये थे। रूस ईसाई होने पर भी मूर्ति-पूजा का विरोधी नहीं था। इस प्रकार वे वस्तुएँ रूसियों के हाथ में पड़ कर सुरक्षित रह गईं। आज ईरानी राष्ट्रीयता के लिए अर्मिताज्

का यह ईरानी-विभाग तीर्थ सा बन रहा है। दो साल पूर्व इस विभाग की खास तौर से प्रदर्शनी की गई थी। उसमें शामिल होने के लिए ईरान के शाह ने अपने वज़ीर तथा दूसरे विद्वानों को भेजा था।

मगोल-विभाग में ईसा की पहली सदी की भी चीजें इकट्ठी की गई हैं। मिश्री और आसुरी (असीरियन) विभाग का संग्रह यद्यपि पेरिस और लन्दन का मुकाबिला नही कर सकता, तो भी उनके बाद इसीका नबर है। सोवियत् के संग्रहालयों को सब से बडा सुभीता यह हुआ कि और देशो में ऐसी चीजों का एक बहुत काफी महत्त्वपूर्ण भाग वैयक्तिक सम्पत्ति होकर लोगो के घरों में बन्द रहता है, और उत्तराधिकारी के अयोग्य होने से कुछ नष्ट-भ्रष्ट और तितर-बितर भी हो जाता है। सोवियत् देश मे वैयक्तिक सम्पत्ति के उठा देने पर अमीरो के निजी संग्रह भी इन संग्रहालयो मे चले आये हैं। ये चीज़ें इतने अधिक परिमाण में एकाएक आ गईं कि सोवियत्-प्रजातंत्र ही इनकी रक्षा का प्रबंध आसानी से कर सकता था। उसने 'शरद्-प्रासाद' जैसे कितने ही महलो को संग्रहालय के रूप मे परिणत कर दिया और आवश्यकतानुसार कितने ही नये मकान बनवाये।

इन विभागो को देखकर हम उन कमरो की ओर गये, जहाँ बहुमूल्य वस्तुओ का संग्रह बडी कडी हिफाजत के साथ रखा गया है। बडे बडे ताले और रिवाल्वरधारी पुरुष ही यहाँ नही रखे गये है बल्कि बिना खास तौर से इजाज़त लिए हर किसी का भीतर जाना निषिद्ध है। हमारे देखने के लिए इजाज़त ले ली गई थी। भीतर काफी आदमियो के देखने से भी मालूम होता था, कि लोगो के देखने के मार्ग मे खाहमख्वाह रोडा नही अटकाया जाता। आज्ञापत्र को देखकर दरवान ने मोटा ताला खोला, और रविनोविच्, मैं तथा संग्रहालय के पथ-प्रदर्शक भीतर गये। एक कमरे में काला-सागर-तटवर्ती दक्षिणी रूस की खुदाई में मिले सिथियन लोगो के नाना प्रकार के सोने के आभूषण आदि रखे थे। इनका समय ईसा-पूर्व पाँचवी-छठी सदी तक जाता है। सोने की यह विशाल राशि सिथियन सरदारों और

राजाओं की क़ब्र के भीतर से निकली थीं। पास के कुछ दूसरे कमरों में पुराने जार और ज़ारिनों के आभूषण, घड़ी, छड़ी तथा और चीजें रखी गई हैं। एक जगह प्रतापी केथराइन की सोने की मूठ लगी छड़ी है। उसी मूठ में सोने की घड़ी भी है। सरसरी तौर से पश्चिमी कला-विभाग के कुछ कमरों को भी देखा। पुनर्जागरण काल के वहुत से प्रतिभाशाली योरोपीय चित्रकारों के मूल चित्रों का यहाँ वहुत भारी संग्रह है। हमें वह कमरा भी दिखाया गया, जहाँ करेन्स्की का मंत्रि-मंडल लाल-क्रान्ति के समय नवम्बर १६१७ में पकड़ा गया था।
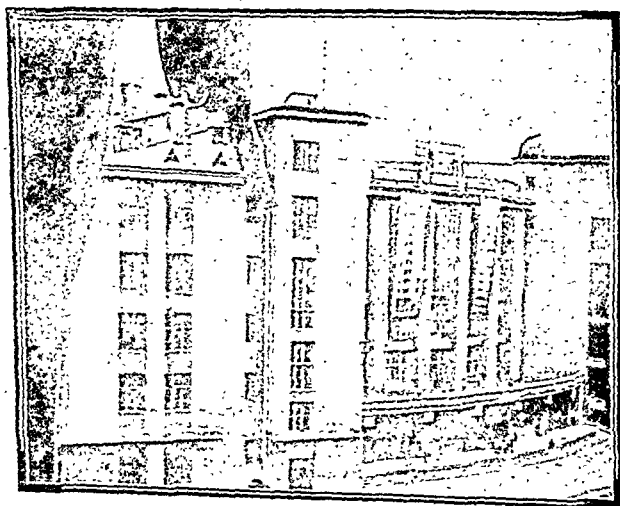
सांस्कृतिक-प्रासाद (लेनिन्ग्राद्)

'शरद्-प्रासाद' खुद भी एक वहुत सुंदर इमारत है। नेवा नदी के दूसरे तट से इसकी लंबी पंक्ति, विशाल भित्ति और छत पर वनी सुन्दर पाषाण-मूर्त्तियाँ वहुत ही सुन्दर मालूम होती हैं। लाल क्रान्ति के नेताओं

का यह काम भी कम प्रशंसनीय नहीं था जो इतनी लड़ाई और गोलाबारी के समय भी उन्होंने इसका पूरा ध्यान रखा कि कला के उत्कृष्ट नमूनों का संहार न होने पाये। ज़ार के महल के भिन्न भिन्न भागों में बहुत सी संगमर्मर की तथा दूसरी मूर्तियाँ रखी हुई थीं।

वहाँ से हम प्रोफेसरों के भोजनालय में गये। यह विशाल भवन पहले किसी राजकुमार का प्रासाद था। सीढ़ी, दीवारें, छत सभी को अलङ्कृत करने के लिए खुले दिल से धन खर्च किया गया है। भोजन-भवन राजकुमार का वही प्राचीन भोजनागार है। इसकी दीवारों पर रूस के किसी पुराने महान् चित्रकार-द्वारा चित्र अंकित हुआ है। पहले यहाँ नाना वाद्यों की मधुर ध्वनि के साथ राजकुमार और राजकुमारियाँ सुआच्छादित सुअलंकृत परिचारक और परिचारिकाओं द्वारा लाये गये नाना प्रकार के व्यंजनों को बहुमूल्य तश्तरियों और पान-पात्रों में ग्रहण करते रहे होंगे। आज उन्हीं जगहों पर किसानों और मज़दूरों की सन्तानें आधुनिक विश्वविद्यालय के ये प्रोफेसर भोजन कर रहे हैं। उस समय इन नीच कुलियों को क्या इस प्रकार पढ़ कर विश्वविद्यालय की कुर्सी तक पहुँचने का मौका भी मिलता? और एक-आध किसी तरह पहुँच भी जाते, तो क्या वे इस बेतकल्लुफी से राजकुमारों के दस्तरख्वान पर आसन जमा सकते?

वहाँ से हम कज़ान्स्की-सबोर नामक विशाल गिर्जाघर में गये। कई गिर्जों को बन्द देख कर मैंने रबिनोविच् महाशय से पूछा—क्या यहाँ कोई ऐसा गिर्जा घर नहीं है जिसमें लोग अब भी पूजा के लिए इकट्ठे होते हों? उन्होंने ले जाकर पास के एक पोलिश् गिर्जा को दिखलाया। इसका हाल भी काफी बड़ा है। सुन्दर मूर्तियाँ हैं। लेकिन देखा, १४-१५ औरतें जिनमें सबसे कम उम्रवाली भी पचास वर्ष से ऊपर पहुँच चुकी थी—घुटना टेके प्रार्थना कर रही हैं। उस विशाल गिर्जे के एक कोने में बैठी इन १५ मूर्तियों का घुटना टेकना पूजा नहीं उसके लिए एक उपहास की बात थी। मैंने गिर्जे के कारिन्दे से गिर्जे के बारे में पूछा। उसने कहा—

देख नहीं रहे हैं। यही चन्द बुढ़िया बैठी हुई हैं। कहाँ पहिले श्रद्धालुओं से यह सारा हाल खचाखच भरा रहता था। गिर्जे के लिए पैसा इतना कम मिल रहा है कि जाड़ों में इससे गर्म करने के लिए कोयला ख़रीदना भी
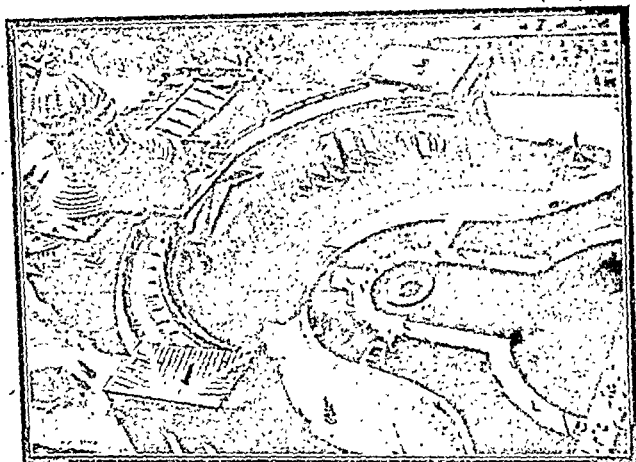
कज़ान्स्की-सवोर (लेनिन्ग्राद्) (पृष्ठ १७)

मुश्किल हो रहा है। और यदि गर्म करना छोड़ दिया जाय, तो ठंड में मरने के लिए ये १५ बुढ़िया भी यहाँ न आवें। रूस में धर्मों का भविष्य क्या होगा इसका पता हमें इस उदाहरण से खूब लग गया।

हफ़्ते भर रहने के बाद निश्चित हो गया कि जाड़े के दिनों में लेनि ग्राद् में सूर्य को मुँह दिखाने के लिए शाप है। कभी कभी कुछ हिम-व भी हो रही थी, लेकिन रास्ते में अभी वह बहुत दिखलाई नहीं पड़ती। २२ नवम्बर से हमने नित्य 'प्राच्य-प्रतिष्ठान' (Oriental Instit

में जाना निश्चय किया। पुस्तकालय से 'वार्तिकालंकार' के तिब्बती अनुवाद को निकाल कर संस्कृत से मिलाना ही प्रधान काम था। 'होतेल्-यूरोपा' से दो मील से ऊपर जाना पड़ता था। कुछ दिन तक हम ने मोटर का इस्तेमाल किया, लेकिन फिर रविनोविच् के कहते रहने पर भी उसे छोड़ ट्राम से जाना ही ठीक समझा। रात बड़ी होने से ९ बजे नींद खुलती थी और जलपान करते करते ११-११॥ बज जाते थे। इसी लिए जल्दी के लिए जाते वक्त हम ट्राम से चले जाते और लौटने वक्त व्यायाम के ख्याल से पैदल ही आते थे। २७ नवम्बर को रास्ते में कुछ विशेष बर्फ दिखाई पड़ने लगी और २८ को तो वह जम कर सख्त हो गई थी। बर्फ पर इतनी चिकनाहट थी कि हम एक जगह गिर पड़े। आस
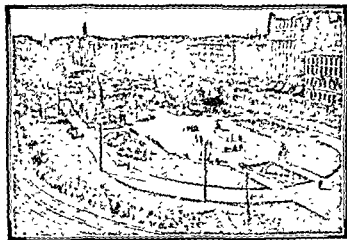
तुर्गनियेफ़-चौक

पास नजदीक कोई था नहीं। हम कपड़े की बर्फ़ झाड़ कर झटपट खड़े हो गये। दो दिन बाद हमारे इन्दो-तिब्बती विभाग की सेक्रेटरी तवारिश्

लोला (हेलेना) कजारोव्स्का भी इसी तरह बर्फ़ से बिछल कर गिरीं। उन्हें कुछ चोट भी आई थी। उनके ज़िक्र करने पर यार लोगों ने कहना शुरू किया—'काले वारिधाराणां अपतितया न शक्यते स्थातुं"। कजारोव्स्का महाशया जर्मन और फ्रेंच ही अच्छी नहीं जानती हैं, बल्कि तिब्बती और मंगोल भाषाओं की भी पंडिता हैं। अंगरेजी भी पढ़-समझ लेती हैं। उन्होंने तिब्बती-रूसी-भाषा का एक कोष लिखा है। मैंने उन्हें परामर्श दिया कि इसमें संस्कृत को भी शामिल कर लें। उन्होंने संस्कृत विशेष तौर से नहीं पढ़ी है। मैंने उनके लिए कहानी के रूप में संस्कृत के कुछ पाठ भी तैयार किए। यद्यपि माध्यम के अभाव से कुछ दिक्कत हो रही थी, तो भी हमें एक दूसरे की बात समझने के लिए दिमाग़ पर काफ़ी जोर देना पड़ता था, जो कि भाषा सीखने के लिए बड़ी उपयोगी बात है। मैंने अपने पाठों में ऐसे ही शब्दों को ज्यादा इस्तेमाल करना शुरू किया, जो संस्कृत और रूसी दोनों भाषाओं में समान पाये जाते हैं। जैसे—एतत् (एतोत्), तत् (तोत्), भ्राता (ब्रात्), माता (मात्), दुहिता (दोच्), उद (वद=पानी), अग्नि (ओगोन्), नभ (नेबो), हिम (ज़िम), दम (दोम्), गव्यादनीय (गव्याद्न्या), चपक (चशक=प्याला)। ऐसे समान शब्दों को देखकर उन्हें आश्चर्य भी होता था। चपक के बारे में तो उनका सन्देह तबतक दूर नहीं हुआ, जबतक पढ़ते वक्त एक पुरानी छपी संस्कृत पुस्तक में उन्होंने इस शब्द को देख नहीं लिया।

*** ***

कुछ दिनों के बाद आचार्य श्चेर्वास्की का प्लास्तर उखाड़ दिया गया और वे कमरे में ज़रा ज़रा चलने लगे। एक दिन मैं वहाँ ऐसे वक्त में गया जब वे विद्यार्थियों को पढ़ा रहे थे। ५ विद्यार्थियों में दो छात्र और एक छात्रा उपस्थित थे। दो छात्रायें उस दिन हाज़िर नहीं थीं। दशकुमार-चरित का पाठ वहाँ चल रहा था, जहाँ काममंजरी वेश्या के नेत्रों की नील कमल से उपमा दी गई थी। विद्यार्थियों को सन्देह हो रहा

या कि सिर्फ कमल न कह कर नील कमल क्यों कहा गया। मुझ से पूछने पर मैंने कहा—काममजरी की आँखें नीली रही होगी। झट प्रश्न हुआ—क्या भारत में नीली आँखोवाले आदमी रहते थे? मैंने कहा—पाली ग्रन्थों मे बुद्ध की आँखें नीली कही गई हैं। और पिंगल या भूरे केशों का होना तो सस्कृत में बहुत पाया जाता है। व्याकरण महाभाष्यकार पतंजलि ब्राह्मणो को 'पिंगल-केश' कहता है। मुमकिन है, उस समय कुछ नीली आँखो वाले स्त्री-पुरुष रहे हो।

जेर्जिन्स्की

एक दिन एक दूसरे विद्वान् ने भी पूछा—'श्यामा का अर्थ क्या है? काली तो नहीं'? मैंने उन्हें आप्टे की सस्कृत-डिक्शनरी देखने को कहा। वहाँ उसके अर्थ मे काली होने का नाम तक न था। श्यामा से वहाँ मतलब था षोडशी तरुण-सुन्दरी से। तब मैंने अपनी व्याख्या उनके सामने रक्खी। भारत के पुराने आर्य वैसे ही गौर थे, जैसे आजकल के यूरोपीय। उनके बाल भी भूरे और आँखें नीली थी जैसी कि आजकल पामीर के नज़दीक काफिरस्तान (नूरिस्तान) के लोगो में पाई जाती है। उनमें अगर कोई काले बालो वाली तरुणी होती थी तो उसे श्यामा कहते थे; और भूरे बालोंवाली को पिंगला। अब भी जहाँ-तहाँ सस्कृत साहित्य मे किसी किसी स्त्री का नाम पिंगला मिल जाता है। लेकिन पिंगला और श्यामा का परस्पर तथा बालों
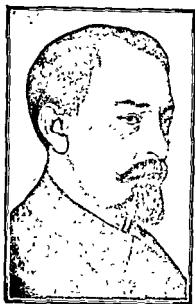
से कोई सम्वन्ध था, इसे पीछे के लोग भूल गये। इसी लिए श्यामा का अर्थ करने में वे शरीर का रंग श्याम नहीं लेना चाहते और शब्दार्थ में श्यामता को निरर्थक समझते हैं।

संस्कृत तथा भारत की दूसरी भाषाओं के विद्यार्थियों और अध्यापकों के देखने से मुझे मालूम हुआ कि यहाँ के लोगों का पूर्वी भाषाओं का ज्ञान अँगरेज़, फ़ांसीसी, और जर्मन लोगों के ज्ञान से कहीं बढ़ कर है।

एक दिन एक मित्र ने एक भारतीय अध्यापक तवारिश् दत्त का जिक्र किया। मुझे एक भारतीय का नाम मालूम होने पर उनसे मिलने की बड़ी उत्सुकता हुई, और मैं उसी दिन उनसे मिलने गया। दत्त महाशय का पूरा नाम है, प्रमथनाथ दत्त। वंग-भंग के बाद जो विकट आन्दोलन हुआ और उसके बाद जो कितने ही भारतीय हिन्दुस्तान से बाहर चले गये, दत्त महाशय उन्हीं में से एक थे। बहुत साल तक वह यूरोप और अमेरिका तथा पीछे तुर्की और ईरान में रहे। वहीं उन्होंने अपना नाम दाऊद अली रख लिया। लड़ाई के पिछले दिनों में तथा १९२१ तक वे ईरान में रहे। वह फ़ारसी, तुर्की जानते हैं और हिन्दी-उर्दू का उच्चारण ऐसा करते हैं कि कोई कह नहीं सकता कि वह बंगाली हैं। लेनिन्ग्राद् में वह हिन्दी, उर्दू और बंगला के अध्यापक
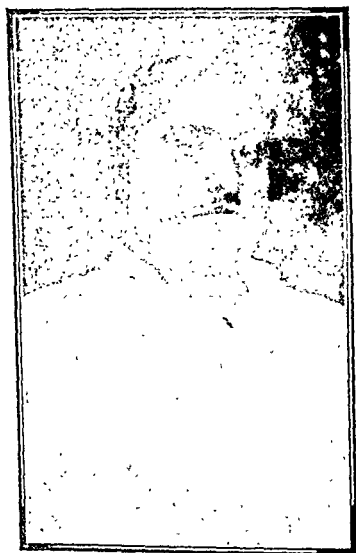
प्रो० प्रमथनाथ दत्त (लेनिन्ग्राद्)

हैं। सूफ़ी अम्बाप्रसाद और सरदार अजीत सिंह भी उस वक्त ईरान में ही थे, जब कि ये ईरान में थे। अम्बा प्रसाद से इनकी अधिक घनिष्टता थी। बतलाते थे—सूफ़ी ने शीराज़ में एक मदरसा खोल रखा था। ईरानी लोग उनको बहुत मानते थे। लड़ाई के वक्त शीराज़ के ज़मींदार ने राजनीतिक भारतीयों को पकड़ लिया। जब सूफ़ी अम्बाप्रसाद को अँगरेज़ों के आने की खबर मिली, और ख़याल आया कि उक्त ज़मींदार उन्हें अँगरेज़ों के हाथ में दे देगा, तो उन्होंने ज़हर खाकर आत्महत्या कर ली। मुरादाबाद के सूफ़ी अम्बाप्रसाद भारतीय क्रान्ति के प्रथम ज्योति जगानेवालों में थे। उन्होंने अपनी ज़बान और क़लम से क्रान्ति का सन्देश लोगों तक पहुँचाने का प्रयत्न किया, और जब समझा कि अब भारत में रह कर सिवा जेल में बंद रहने के और कुछ नहीं कर सकते, तो 'खुश रहो अहले वतन हम तो सफ़र करते हैं,' कहकर हसरत भरी निगाह से अपनी मातृभूमि को देखते निकल गये। दत्त महाशय ने कितने ही भारतीय क्रान्तिकारियों को विदेशों में अपनी लाश छोड़ते देखा है, इसीलिए उन्हें विश्वास नहीं होता कि वह फिर कभी अपनी मातृभूमि का दर्शन कर सकेंगे। वह बड़े ही सरल और प्रेमी जीव हैं। उनके अकृत्रिम व्यवहार ने मुझे बहुत अधिक आकर्षित किया। कहते थे—'मातृभूमि के पुनर्दर्शन का सौभाग्य अब कहाँ मिलेगा? लेकिन आप के देह से उसी भूमि की सुगन्धि आ रही है'।

मैंने कहा—'भारत की अवस्था बड़े ज़ोरों से बदल रही है और मुझे विश्वास है कि आपको भारत जाने के लिए मौका मिल सकेगा।'

दत्त महाशय १९२१ में यहाँ आये और तब से रूस ही में हैं। उनकी उमर ५५ के आस पास होगी। दस वर्ष हुए वह कहीं गिर पड़े और उनकी एक टाँग (दाहिनी टाँग) का घुटना उखड़ गया। तब से बेचारे सिर्फ़ पाखी के सहारे कमरे के भीतर थोड़ा बहुत चल फिर सकते हैं। दत्त महाशय की धर्मपत्नी—जिनको पति ने नूरजहाँ नाम दे रखा है—एक रूसी महिला है। वह अपने पति की बड़ी सहायता करती है। अँगरेज़ी जानने

के कारण मुझे बड़ा सुभीता था। वैसे भी वह हँसमुख हैं और हमारा तो भाभी का नाता था। उनको बड़ा आश्चर्य हुआ, जब उन्होंने सुना कि संस्कृत में भी रूसी भाषा का शब्द 'देवर' ही पति के छोटे भाई के लिए इस्तेमाल होता है। एक दिन उनकी बड़ी बहन भी वहाँ बैठी हुई थीं। मैंने मजाक में कहा—'भाभी, तुम्हारी बड़ी बहन तुम से ज़्यादा सुन्दरी है।' उन्होंने झट उत्तर दिया—'विवाह से पहले दस तरुण मेरे पाणिग्रहण के उम्मेदवार थे। लेकिन मेरी बहन के लिए सिर्फ़ एक।' इस जवाब से सचमुच देवर को हार माननी पड़ी।

श्रीमती दत्ता (लेनिन्ग्राद्)

* * * * * *

दिसम्बर के प्रथम हफ़्ते में रहने का स्थायी प्रबंध निश्चित सा मालूम पड़ता था और एक पखवाड़े में मित्रों और परिचितों की संख्या काफ़ी बढ़ चुकी थी। इसी वक़्त हमारे दिमाग़ में तरह तरह के खयाल पैदा होने लगे। कभी खयाल आता—क्या अपना जीवन मुर्दों के लिए अर्पण कर देना उचित है? पुरानी तवारीख और पुराने बुजुर्गों की किताबें तथा तत्संबंधी खोज आखिर मुर्दों की ही चीजें हैं। इस खोज के करनेवाले बहुत आसानी से मिल सकते हैं। साम्यवादी क्रान्ति के इतिहास और क्रान्ति के रंगमंच

पर खेलनेवाले पात्रों की जीवनियो को पढ़ कर मुझे अपने वर्तमान मार्ग पर घृणा होने लगी। खयाल आने लगा—चीन या स्पेन के युद्ध-क्षेत्र में जाकर क्यों न काम किया जाय? यद्यपि वहाँ तक पहुँचने में कई बाधाएँ थीं, लेकिन उन बाधाओं ने मुझे उधर जाने से नही रोका। मुझे खयाल आता था—कौन सी युद्ध-विद्या में जानता हूँ, जिससे कि मैं वहाँ साम्यवादी क्रान्तिकारियो को लाभ पहुँचा सकूँगा। भाषा आदि की अनभिज्ञता तो मुझे उन पर बोझ बना देगी। फिर खयाल आया—क्या मुझे अपने काम के लिए स्वदेश में क्षेत्र नही है? वहाँ मैं अपनी लेखनी और वचन दोनों से अच्छी तरह कार्य कर सकता हूँ। भारत की गरीब जनता का उद्धार साम्यवाद ही से हो सकता है; और साम्यवाद का ठीक ठीक ज्ञान और उसका सन्देश सर्व-साधारण तक जब तक नही पहुँच जाता, तब तक किसी भावी क्रान्ति में लोग दृढतापूर्वक कैसे लड़ सकते

मर्कलोफ़्

हैं? इसमें शक नही कि दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में—जब इस प्रकार के खयालों के तूफानो का तांता बँधा हुआ था—में किसी एक निर्णय पर नही पहुँच सका; तो भी बारह वर्ष से जो रास्ता मैंने पकडा था, और जिसके लिए ही मैं रूस तक पहुँचा था, उसके प्रति अवहेलना जरूर हो गई। इसीने आगे मुझे अपना रास्ता निश्चित करने में मदद दी।

पहली दिसम्बर को सर्दी की वृद्धि साफ़ मालूम हुई। होटल का हमारा कमरा खौलते पानी के नलो से गर्म किया गया था, इसलिए अपने कमरे

के अन्दर पतली मलमल पहन कर भी बैठ सकते थे, और हिन्दुस्तान में आ कर सच्चाई के साथ डींग मार सकते थे, कि मैं नदी और समुद्र जमा देने वाली लेनिन्ग्राद् की सर्दी में भी पतली मलमल पहन कर बैठा रहता था। लेकिन अब बाहर जाने पर आटे-चावल का भाव मालूम होने लगा। कानों में ही नहीं, चमड़े के दस्ताने के भीतर रहने पर भी हाथों में सर्दी पहुँचने लगी। दो दिसम्बर को नेवा नदी जहाँ तहाँ जमी दिखाई पड़ी, और ७ दिसम्बर तक तो वह बिलकुल जम गई।

***   ***

अभी तक मैं वहाँ रहने का ख़याल रखता था। होटल में यद्यपि जब तब कोई मित्र चला आता था, और इन्स्टीटयूट् में भी अपने काम के बाद कभी कभी कुछ बात करने का मौक़ा मिल जाता था, लेकिन रूसी भाषा के शीघ्र परिचय के लिए रूसी बोलनेवाले सहवासियों की बड़ी आवश्यकता थी। हमारे आस पास की कोठरियों में जो रहने वाले मेहमान आते थे, वे दो एक दिन से ज़्यादा नहीं ठहरते थे। फिर उनसे परिचय प्राप्त कर वार्तालाप करने का अवसर कहाँ से मिलता ? मैंने भाभी दत्ता से इसके बारे में कहा। वह किसी दूसरी जगह क़मरा भी ढूँढ़ने लगीं। एक दिन उन्हें रास्ते में एक स्त्री मिल गई। बातचीत चलने पर मालूम हुआ कि वह अपने मकान का आधा हिस्सा देने के लिए तैयार है। भाभी ने मुझसे कहा और यह भी बतलाया कि स्त्री बूढ़ी और एक प्रेस में स्याही लगाने का कोई काम करती है, एक साधारण मज़दूर श्रेणी की स्त्री है। मैंने सोचा—सोवियत् मज़दूर के जीवन को नज़दीक से देखने का यह अच्छा अवसर होगा, लेकिन साथ साथ मुझे यह भी मालूम था कि एक विदेशी पंडित का ऐसी जगह में रहना खटक भी सकता है। ख़ैर, मैंने भाभी को कहा—'देखने में क्या हरज है। चलें, घर को तो देख लें।' पहले तो दो तीन ट्रामों को बदलने की बात जब देखी, तभी मालूम हो गया, कि वह हमारे

बूते का काम नही। फिर यह भी पता लगा कि ट्राम द्वारा इंस्टीट्यूट जाने मे एक घटे से कम न लगेगा। आखिर हम लोग उस अर्द्ध-जरती महिला के घर पर पहुँचे।

सारा इलाका मजदूरों का था। लेकिन इन मजदूरों के मकानो को, पूँजीवादी देशों के मजदूरों की बस्ती से नही मुकाबिला किया जा सकता। यहाँ छोटे छोटे गन्दे और घने घरौंदो की जगह चौड़ी सडक पर दो-दो तीन-तीन तल्ले के ऊँचे मकान खड़े थे। महिला की कोठरी दूसरे तल्ले पर थी। दो कोठरियों का एक सम्मिलित द्वारबन्द बड़ा बरामदा या आँगन था। रसोई बनाने के लिए एक कोठरी अलग थी। रहने की कोठरी नही, बल्कि बरामदा और रसोईघर भी गर्म किये हुए थे। रहने की कोठरी में एक मेज और दो अलमारियाँ थीं। एक तरफ एक पलग था और दूसरी तरफ एक लम्बा सोफा। तीन चार कुर्सियाँ भी पड़ी थी। सड़क की तरफ कांच के दोहरे किवाडों वाला जँगला था। छत के अलावा मेज़ पर रखने के लिए भी बिजली का लैम्प था। महिला ने बतलाया, उनके पास खाना खाने-बनाने के सभी बर्तन मौजूद है। उन्हे दस बजे काम पर चला जाना होता है और ५ बजे लौटना पडता है। सवेरे और शाम का नाश्ता और भोजन भी वह बना कर दे सकती है। यदि मुझे एक ही कोठरी मे दूसरी स्त्री के साथ रहने मे सकोच हो तो इसके लिए कहा—दोनों में से एक पलग ले लेगा और दूसरा सोफा। बीच में एक जीन का पर्दा डाल कर कमरे को दो हिस्सो में विभाजित कर लिया जायगा। मैंने हँसते हुए भाभी से कहा—'यदि दिल साफ है, तो इन पर्दों की क्या ज़रूरत ? और यदि दिल साफ नही, तो पर्दे कर ही क्या सकते है ?' भाभी ने भी हँसते हुए कहा—'शायद इन श्रीमती का चेहरा ही अच्छा पर्दे का काम दे देगा।' खैर, देवर-भौजाई दोनों को क्या निर्णय करना है, यह तो पहले ही मालूम हो चुका था, लेकिन हमने महिला को निराश नही करना चाहा। उनसे तारीफ करते हुए हमने उनका निर्णय जानना चाहा। महिला ने कहा कि मैं अपने मुहल्ले के मकानों के अधिकारी

से पूछ कर कल जवाब दूँगी। अधिकारी जब सुनेगा कि आनेवाला आदमी एक विदेशी स्कालर है, तो क्या सम्मति देगा, इसे हम अच्छी तरह जानते थे। और इसीलिए निश्चिन्त थे कि 'नहीं' महिला की तरफ ही से होगा।

सारे मकान का किराया रसोईघर के साथ १७ रूबल (=७।≡)) मासिक था। इसी में रसोई, खाना, पाखाना, बराण्डा और कोठरी के भीतर के बिजली के लैम्प तथा घर गर्म करने का खर्च भी शामिल था। ऐसे मकान का किराया कलकत्ता-बम्बई में ३०) महीने से कम नहीं होता। उक्त स्त्री का मासिक वेतन १५० रूबल के क़रीब था। उसे देख कर हमें मालूम हो गया कि सोवियत्-शासन ने श्रमिकों की अवस्था को कितना उन्नत कर दिया है। मासिक वेतन और घर की निश्चिन्तता सिर्फ काम लगने के वक़्त ही नहीं है। बेकारी तो सोवियत् देश में स्वप्न हो गई है। हर एक योग्य शरीरवाले आदमी के लिए काम मौजूद है। शरीर से अयोग्य या बीमार हो जाने पर भरण-पोषण का प्रबंध सरकार करती है। कल की चिन्ता वहाँ के लोगों को परेशान नहीं करती।

* * *　　　　　　* * *

१२ दिसम्बर पहुँचते पहुँचते सर्दी ने अपना रूप दिखाना शुरू किया। अब हमें पोस्तीन का कनटोप, दस्ताना और ओवरकोट पहनना ज़रूरी जान पड़ा। चमड़े का कोट और पतलून पहनने में हमने दो चार दिन और आनाकानी की; क्योंकि अभी उनके पहननेवाले हमारे इन्स्टीट्यूट में दिखाई नहीं पड़ते थे। लेकिन जब देखा, कि सर्दी चर्बी और मांस को चीर कर सीधी हड्डियों तक पहुँच रही है, तो वैसा करना ही पड़ा।

३१ दिसम्बर को नव-वर्षोत्सव होनेवाला था। लोग देवदार की हरी हरी डालियाँ और खिलौने ख़रीद कर ले जा रहे थे। ३० की रात को लड़के शरद्-बाबा का त्योहार मनाते हैं। यूरोप के अन्य देशों में यह त्योहार क्रिस्मस् बाबा के नाम से पचीस दिसम्बर ही को हो जाता है, लेकिन

सोवियत्-जनता ने ईश्वर और उसके पुत्र को जवाब दे दिया है—इसीलिए २५ दिसम्बर की जगह ३०–३१ को उत्सव मनाया जाता है। दत्त महाशय के घर भार्या की बड़ी बहन आई हुई थी। वह मास्को में एक पुस्तकालय-में काम करती है और महीने की छुट्टी ले कर अपने लड़के अर्काशा के साथ अपनी बहन के यहाँ ठहरी हुई थी। अर्काशा साढ़े छ वर्ष का बच्चा है। तो भी उसके स्वास्थ्य और डील-डौल को देख कर हिन्दुस्तान में उसे ९ वर्ष से कम का कोई नहीं कह सकता। अभी अक्षर सीखने के लिए उसे छै महीने की और देरी है; लेकिन माँ की तरह उसे भी कविता-पाठ का बड़ा शौक है। माँ से सुन कर पुश्किन् की बहुत सी कविताएँ उसने कंठ कर रखी है। मैं जब कभी वहाँ जाता, तो वह चाद्या (चाचा) के पास आ कर बैठ जाता था। अपने वाचालपन से वह चाद्या को कुछ शब्द सीखने को मजबूर करता था। जब उसे कहा जाता, कि कोई कविता या व्याख्यान सुनाओ तो कहीं से फेल्ट की हैट ढूंढ कर सिर पर रख एक कुर्सी पर खड़ा हो जाता। फिर तीन चार व्यक्तियों की उस भारी-भरकम सभा की ओर दाहने, बाएँ और सामने टोपी उतार कर सिर झुकाता और बड़े जोश के साथ कविता-पाठ या व्याख्यान झाड़ने लगता। व्याख्यान में विषय के अनुसार स्वर के चढ़ाव-उतार का वह पूरा खयाल रखता था। व्याख्यान समाप्त होने के बाद श्रोतृ-मंडली को शांतिपूर्वक सुनने के लिए धन्यवाद दे कुर्सी से उतर आता था।

मैं पूछता था—'अर्काशा, इन्दुस् देश चलोगे?' कहता—'हाँ, और मौसी को लेकर'। मैं कहता—'हाँ, मौसा और मौसी दोनों भारत चलेंगे और उसी समय तुम्हें भी चलना होगा।' एक दिन अर्काशा कागज पर रंगीन पेंसिल से कुछ लकीरें खींच रहा था। मैंने पूछा—'क्या करते हो?' उत्तर मिला—'तसवीर बनाता हूँ।' 'ले आओ तो!' 'ठहरिए! पूरी करके दिखलाता हूँ।' फिर अर्काशा ने अपनी तसवीर ले आकर हमारे सामने रख दी। ऊपर की ओर उसने हँसुआ-हथौड़ा से अलंकृत एक हवाई जहाज बनाया था, और नीचे कुछ सिपाहियों को। व्याख्या करते हुए

हा—"यह हमारी सोवियत् का हवाई जहाज है और यह फासिस्ट सिपाही ड़े हैं। उनके ऊपर सोवियत् विमान बम फेंक रहा है।"

श्रीमती दत्ता (बहन और अर्काशा के साथ)

३० की रात को बच्चों का महोत्सव था। इसलिए अर्काशा ने एक देवदार की हरी शाखा को सवेरे ही से खूब सजाना शुरू किया। चाचा के उपस्थित रहने के लिए खास तौर से आग्रह था। रात को पहुँचने

पर देखा, देवदार की टहनी-टहनी पर नारंगी, कागज की गुड़ियाँ, पन्नी के लट्टू तथा पचीसो जलती मोमबत्तियाँ टाँगी हुई हैं। वृक्ष के नीचे वर्फ जैसे कागज का लवादा ओढे शरद् बाबा डंडे के सहारे खड़े है। आज अर्काशा मेहमानों के स्वागत में लगा था। उसकी एक सहेली लड़की भी वहाँ बैठी हुई थी। *लड़की की माँ और अर्काशा की माँ तथा मौसी के अतिरिक्त दो तीन दूसरे मेहमान और मेहमानिनें बैठी हुई थी।* अर्काशा ने आज लोगों को एक खास तौर से जोशीला व्याख्यान सुनाया। प्यानो पर कुछ गीत गाये गये। वैसे अर्काशा की सहेली बोलती चालती नही थी और जब लोगो ने गूँगी कह कर ताना दिया, तो उसने भी प्यानो पर दो चार हाथ चलाये। दर्शक-मडली ने अर्काशा को नाचने के लिए उत्तेजित किया। वैसे अर्काशा का नाचने की ओर ज्यादा झुकाव नही है, तो भी वह मेहमानो को खुश करने के लिए तैयार था; लेकिन क्या करता, वहाँ जोडी पूरी करने के लिए उसकी सहेली तैयार न थी। लड़को के लिए कुछ भेट तथा मिठाई और चायपान के साथ उत्सव समाप्त किया गया।

३१ की मध्यरात्रि को नये वर्ष का उत्सव मनाया गया। नव-वर्ष के उत्सव के लिए सभी जगह छुट्टी थी। नाच-घरो में रात भर स्त्री-पुरुष नाचते रहे। हमारे होटल मे भी नाच का विशेष रूप से आयोजन हुआ था। और मुझे भी निमत्रणपत्र आया था। इसके पहले एक दिन मेरे एक दोस्त ने मुझे नाचने के लिए बुलाया। जब मैंने कहा कि मुझे नाचना नहीं आता, तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उनकी समझ में नहीं आता था, कि मेरे ऐसा बहुमुखी आदमी नृत्य-कला से कैसे वंचित रह गया। उन्होने पूछा—आपने क्यों नाचना नही सीखा? मैंने कहा—मैं एक बहुत गरीब किसान के घर में पैदा हुआ था। नृत्य और सगीत का सीखना अमीरों और धनिकों के ही लिए सुलभ है। गरीब किसान के बच्चे के भाग्य में वह कहाँ बदे हैं। मेरे दोस्त, मेरे मजाक को नही समझ रहे थे। उन्होंने कहा—'तो मैं आपको नाचना सिखाऊँगा।'

मैंने पूछा—'कब से और कैसे?'

उन्होंने कहा—'मैं किसी जोड़ीदारिन सुन्दरी को ठीक कर नाचने का पाठ शुरू कराऊँगा।' ख़ैरियत हुई कि गुरु से भी अधिक चेले की सुस्ती के कारण नव-वर्ष से पहले नृत्य का एक भी पाठ समाप्त नहीं हो सका, और नृत्य मंडली में शामिल होने की नौबत नहीं आई।

* * * * * *

३१ दिसम्बर तक हमारा भारत लौटना निश्चित हो चुका था। उस दिन और पहिली तारीख को भी तातील होने से हम निर्गमन के वीजा के लिए आवेदनपत्र नहीं दे सके। दो तारीख़ को मैंने इन्स्टीट्यूट के सेक्रेटरी को वीज़ा आदि के प्रबंध के लिए कहा। उन्होंने फोन द्वारा वीज़ा-अधिकारी को इसके लिए आदेश कर दिया।

हमारे विभाग की सेक्रेटरी तवारिश् कज़ारोव्स्का इन्स्टीट्यूट से ट्राम द्वारा घंटे भर के रास्ते पर कारखाने के मज़दूरों के मुहल्ले में रहती थीं। मैं उस मुहल्ले को ख़ास तौर से देखने के लिए एक दिन उनके साथ वहाँ पहुँचा। चार चार, पाँच पाँच तल्ले के ईंट, सीमेंट और लोहे के इन भव्य प्रासादों को देख कर कौन कह सकता है कि वे मज़दूरों के घर हैं। वस्तुतः मज़दूर शब्द का जो अर्थ पूँजीवादी देशों में है, वही अर्थ सोवियत्-भूमि में नहीं होता। सोवियत् का श्रमिक अपने देश का मालिक है। वह सिर को उन्नत और छाती को तान कर चलता है। कहीं उसको नत-मस्तक और अपमानित नहीं होना पड़ता। वल्कि सोवियत् के सभी श्रेणी के मनुष्यों में उसका स्थान सबसे ऊँचा है। तवारिश् कज़ारोव्स्का जिस मकान में रहती थीं, वहाँ तीन कमरों के लिए एक कोठरी, रसोई और हाथ धोने के लिए थी। बीच में एक कोठरी बन्द आँगन का काम देती थी। रहने का कमरा उस सत्रह रूबल मासिकवाले कमरे से ज़्यादा लम्बा-चौड़ा था। छत और दीवारों को फूल-पत्ती के चित्रों से सजाया गया था। कमरे के भीतर दो मेज़, तीन

अलमारियाँ, चार कुर्सियाँ और एक पलंग पड़ा हुआ था। भीतर बिजली के तीन लैम्प लगे हुए थे। लोला कव्रारोव्स्का एक सुशिक्षित बुद्धि-जीवी महिला हैं; इसलिए उनके कमरे में कोई खास बात की गई हो, यह बात न थी। उनके आस पास और ऊपर नीचेवाले तल्लों के सभी कमरे इसी नमूने के थे। लोला को छोड़ कर बाकी सभी रहनेवाले स्त्री-पुरुष पास के कारखानों के मजदूर थे। तवारिश् (कामरेड) लोला के साथ में मुहल्ले के स्कूल को देखने गया। सीमेंट की सुन्दर स्वच्छ इन दो तल्ले की भव्य इमारतों को देख कर कोई कह नहीं सकता, कि यह प्राइमरी स्कूल है। दो तरफ स्कूल के कमरों की पाँती है, और बीच में रसोईघर और भोजनशाला। हर एक बच्चे को दोपहर का भोजन स्कूल से मिलता है, इसीलिए हर स्कूल के साथ रसोई और भोजनशाला होती है। वोलीं-बाल फुटबाल तथा दूसरी तरह के खेलों के लिए स्कूल के सामने और पिछवाड़े मैदान पड़ा हुआ है। आजकल यह बर्फ से ढँका हुआ था और उसपर लड़के स्केटिंग कर रहे थे। गर्मी के दिनों में बर्फ के पिघल जाने पर यहाँ हरी हरी घास उग आयेगी। और उस वक्त लड़के हरे क्रीडाक्षेत्र में फुटबाल या दूसरे गर्मी के खेल खेलते दीख पड़ेंगे। स्कूल के बाद हमने मुहल्ले के क्लब और सिनेमाघर को भी देखा। दूसरे मुल्क में तो इन मकानों पर ही लाख डेढ़ लाख खर्च हो जाते। पूँजीवादी देशों के मजदूर क्या ऐसे मकानों का स्वप्न भी देख सकते हैं? सोवियत्-जन-नायक समझते हैं कि खेल-कूद तथा मनबहलाव के दूसरे साधन (नृत्य, संगीत, स्वाध्याय आदि) मनुष्य के स्वास्थ्य और दिल लगाकर काम करने की योग्यता सम्पादन करने के लिए उतने ही आवश्यक हैं जितनी कि काम करके थके आदमी के लिए निद्रा, और इसीलिए हर जगह इन चीजों का पूरा प्रबंध किया गया है।

* * *

६ जनवरी तक हम निश्चिन्त हो प्रतीक्षा कर रहे थे कि वीजा अब

आ जाता है; लेकिन उस दिन फोन करने पर वीज़ा-कार्यालय ने सूचित किया—'कोई परवा नहीं, पन्द्रह तारीख़ तक आप रह सकते हैं'।

मैंने कहा—'मैं जाने के लिए तैयार बैठा हूं और सोच रहा था कि वीज़ा अब आ जायगा और आप कह रहे हैं—कोई परवा नहीं, १५ तारीख़ तक आप और ठहर सकते हैं?'

जवाब मिला—'वीज़ा लेने के लिए तो छपे फार्म पर आवेदनपत्र देना होता है। आपने कब आवेदनपत्र दिया? हमने तो समझा कि आप कुछ दिन और रहना चाहते हैं।'

ख़ैर बहुत कहना सुनना बेफ़ायदा था। जा कर हम वीज़ा के लिए आवेदनपत्र दे आये और आवेदनपत्र के ख़ाने में यह भी भर दिया, कि तेर्मिज़् के रास्ते हम अफ़ग़ानिस्तान जाना चाहते हैं।

१२ जनवरी को स्मोल्नी देखने गये। यही वह स्थान है, जहाँ बैठ कर लेनिन् ने लाल-क्रान्ति का आरंभ किया और क्रान्ति-युद्ध के आरंभिक दिनों में यहीं संचालन-केन्द्र रहा। अब भी वह कमरा मौज़ूद है, जहाँ रहकर, लेनिन् रात दिन क्रान्ति की सफलता में चिन्तित रहा करते थे। क्रान्ति के पहले रूस के राजा-बाबुओं और सेठ-साहूकारों की लड़कियों का यह विद्यालय था। पहले पहल इस इमारत और पास के पाँच सुन्दर गिर्जाघरों को सम्राज्ञी कैथराइन ने ईसाई साधुनियों के लिए बनाया था। लेकिन पीछे यह इमारत विद्यालय के रूप में परिणत कर दी गई। ये गिर्जा पत्थर के बड़े सुन्दर बने हुए हैं। लेकिन इनसे भी सुन्दर सुन्दर गिर्जे लेनिन्ग्राद् में अपने भाग्य के लिए झंख रहे हैं; फिर इनकी परवा कौन करे। वर्षों से मरम्मत न होने से कितने ही शीशे और दरवाजे टूटफूट गये हैं। बड़े गिर्जे के हाल को कुछ दिनों तक सिनेमाघर बनाया गया था। यदि वह बेचारा सिनेमाघर ही रहता, तो भी उसकी मरम्मत और देख-भाल रहती, और जीवित रहने का भरोसा होता। अब तो जैसी अवस्था है, उससे मालूम होता है, कि धीरे धीरे इसे धराशायी होना पड़ेगा।

स्मोल्नी को दिखलाने में तवारिश् कजारोव्स्का ने मेरी सहायता की थी। मेरे लिए क्रान्ति का यह प्रथम संचालन-केन्द्र एक बड़ा तीर्थ था। दर-असल मैं वहाँ वैसे ही भावपूर्ण हृदय से गया था, जैसे १९३२ में लन्दन में कार्ल मार्क्स की समाधि पर फूल चढ़ाने। कार्ल मार्क्स ने यदि दीर्घ-चिन्तना के बाद संसार के दलितों को विज्ञान-सम्मत मौलिक साम्यवाद का सन्देश दिया, तो लेनिन् ने उस वैज्ञानिक साम्यवाद को धरती की ठोस चीज बनाने के लिए असाधारण कौशलपूर्वक लाल-क्रान्ति की अभूतपूर्व सफलता में कृतकार्यता प्राप्त की। साम्यवाद के सम्बन्ध में लेनिन् का स्थान मार्क्स से कम नहीं है।

तवारिश् कजारोव्स्का बहुत प्रतिभाशालिनी महिला हैं। उनके पिता जारशाही के वक्त फौजी अफसरों के विद्यालय में गणित के अध्यापक थे; और उस स्थान में भी क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार करते थे। क्रान्ति के समय वह उसमें सम्मिलित हो गए। उनके तीन बेटों में दो लाल-सेना के अफसर हैं। तीसरा पढ़ रहा है। लोला कजारोव्स्का क्रान्ति के समय काफी सयानी थी और उन्हें जारशाही के अत्याचार और मजदूरों की हीन दशा का पूरा स्मरण है। यद्यपि उस समय उनके घर में दाई और नौकर चाकर थे, तथा अब उनको अपना काम खुद करना पड़ता है। लेकिन उस समय के जीवन से आज के जीवन ही को वह अच्छा पसन्द करेंगी। वह एक तीक्ष्णबुद्धिसम्पन्न महिला ही नहीं हैं, बल्कि उनका स्वभाव बहुत मधुर और ज्ञान-पिपासा बहुत तीव्र है। उन्होंने बहुत शौक से संस्कृत पढ़ना शुरू किया था, और मुझे रूसी सीखने में मदद दे रही थी। लेकिन अकस्मात् जो दूसरा निश्चय करना पड़ा, उससे उन्हें जरूर बहुत अफसोस हुआ। उन्होंने चलते वक्त कोई वाक्य लिखने के लिए कहा। मुझे उस वक्त नैषध का यह श्लोकखंड याद आ गया—

"स्मरणीया वयं वय."

आ जाता है; लेकिन उस दिन फोन करने पर वीज़ा-कार्यालय ने सूचित किया—'कोई परवा नहीं, पन्द्रह तारीख़ तक आप रह सकते हैं'।

मैंने कहा—'मैं जाने के लिए तैयार बैठा हूँ और सोच रहा था कि वीज़ा अब आ जायगा और आप कह रहे हैं—कोई परवा नहीं, १५ तारीख़ तक आप और ठहर सकते हैं?'

जवाब मिला—'वीज़ा लेने के लिए तो छपे फार्म पर आवेदनपत्र देना होता है। आपने कब आवेदनपत्र दिया? हमने तो समझा कि आप कुछ दिन और रहना चाहते हैं।'

और बहुत कहना सुनना बेफ़ायदा था। जा कर हम वीज़ा के लिए आवेदनपत्र दे आये और आवेदनपत्र के ख़ाने में यह भी भर दिया, कि तेर्मिज़् के रास्ते हम अफ़ग़ानिस्तान जाना चाहते हैं।

१२ जनवरी को स्मोल्नी देखने गये। यही वह स्थान है, जहाँ बैठ कर लेनिन् ने लाल-क्रान्ति का आरंभ किया और क्रान्ति-युद्ध के आरंभिक दिनों में यहीं संचालन-केन्द्र रहा। अब भी वह कमरा मौजूद है, जहाँ रहकर, लेनिन् रात दिन क्रान्ति की सफलता में चिन्तित रहा करते थे। क्रान्ति के पहले रूस के राजा-बाबुओं और सेठ-साहूकारों की लड़कियों का यह विद्यालय था। पहले पहल इस इमारत और पास के पाँच सुन्दर गिर्जाघरों को सम्राज्ञी कैथराइन ने ईसाई साधुनियों के लिए बनाया था। लेकिन पीछे यह इमारत विद्यालय के रूप में परिणत कर दी गई। ये गिर्जा पत्थर के बड़े सुन्दर बने हुए हैं। लेकिन इनसे भी सुन्दर सुन्दर गिर्जे लेनिन्ग्राद् में अपने भाग्य के लिए झंख रहे हैं; फिर इनकी परवा कौन करे। वर्षों से मरम्मत न होने से कितने ही शीशे और दरवाजे टूटफूट गये हैं। बड़े गिर्जे के हाल को कुछ दिनों तक सिनेमाघर बनाया गया था। यदि वह बेचारा सिनेमाघर ही रहता, तो भी उसकी मरम्मत और देख-भाल रहती, और जीवित रहने का भरोसा होता। अब तो जैसी अवस्था है, उससे मालूम होता है, कि धीरे धीरे इसे धराशायी होना पड़ेगा।

स्मोल्नी को दिखलाने में तवारिश् कजारोव्स्का ने मेरी सहायता की थी। मेरे लिए क्रान्ति का यह प्रथम सचालन-केन्द्र एक बड़ा तीर्थ था। दर-असल में वहां वैसे ही भावपूर्ण हृदय से गया था, जैसे १९३२ में लन्दन में कार्ल मार्क्स की समाधि पर फूल चढ़ाने। कार्ल मार्क्स ने यदि दीर्घ-चिन्तना के बाद संसार के दलितों को विज्ञान-सम्मत मौलिक साम्यवाद का सन्देश दिया, तो लेनिन् ने उस वैज्ञानिक साम्यवाद को धरती की ठोस चीज़ बनाने के लिए असाधारण कौशलपूर्वक लाल-क्रान्ति की अभूतपूर्व सफलता से कृतकार्यता प्राप्त की। साम्यवाद के सम्बन्ध में लेनिन् का स्थान मार्क्स से कम नहीं है।

तवारिश् कजारोव्स्का बहुत प्रतिभाशालिनी महिला हैं। उनके पिता ज़ारशाही के वक्त फौजी अफसरों के विद्यालय में गणित के अध्यापक थे; और उस स्थान से भी क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार करते थे। क्रान्ति के समय वह उसमें सम्मिलित हो गए। उनके तीन बेटों में दो लाल-सेना के अफसर हैं। तीसरा पढ़ रहा है। लोला कजारोव्स्का क्रान्ति के समय काफी सयानी थीं और उन्हें ज़ारशाही के अत्याचार और मजदूरों की हीन दशा का पूरा स्मरण है। यद्यपि उस समय उनके घर में दाई और नौकर चाकर थे, तथा अब उनको अपना काम खुद करना पड़ता है। लेकिन उस समय के जीवन से आज के जीवन ही को वह अच्छा पसन्द करेंगी। वह एक तीक्ष्णबुद्धिसम्पन्न महिला ही नहीं हैं, बल्कि उनका स्वभाव बहुत मधुर और ज्ञान-पिपासा बहुत तीव्र है। उन्होंने बहुत शौक से संस्कृत पढ़ना शुरू किया था, और मुझे रूसी सीखने में मदद दे रही थीं। लेकिन अकस्मात् जो दूसरा निश्चय करना पड़ा, उससे उन्हें जरूर बहुत अफसोस हुआ। उन्होंने चलते वक्त कोई वाक्य लिखने के लिए कहा। मुझे उस वक्त नैषध का यह श्लोकखंड याद आ गया—

"स्मरणीया वयं वयः"

४—सोवियत्-संघ की सम्पत्ति

सोवियत्-संघ पृथ्वी के स्थलभाग का छठा हिस्सा है। संसार में क्षेत्र-फल के लिहाज़ से इतना बड़ा राष्ट्र कोई नहीं है। अगर भारत और चीन जैसे परतंत्र और अर्द्ध-परतंत्र देशों को अलग कर दिया जाय, तो दुनिया में जनसंख्या के लिहाज़ से भी वह सब से बड़ा देश है। इसका क्षेत्रफल २ करोड़ १३ लाख वर्ग किलोमीतर (८२ लाख वर्गमील) है। सीमा का घेरा ६५ हज़ार किलोमीतर जिसमें $\frac{२}{३}$ समुद्र तट और $\frac{१}{३}$ खुश्की है। सोवियत्-संघ संयुक्त-राज्य अमेरिका से ढाई गुना और जर्मनी से ४० गुना-भारत (१५६३२६२ वर्गमील) से ७ गुना, युक्त प्रदेश से ३२ गुना बड़ा है। इसकी लम्बाई पूर्व पश्चिम २६° देशान्तर से १९०° देशान्तर तक और चौड़ाई उत्तर दक्षिण ३५° अक्षांश से ७७·३७° अक्षांश है। यदि एक रेल गाड़ी ६०० मील रोज़ के हिसाब से चले तो उसकी पूर्वी सीमा से पश्चिमी सीमा तक पहुँचने में १० दिन लगेंगे। सोवियत् की पूर्वी सीमा पर पश्चिमी सीमा की अपेक्षा सूर्य ९ घंटा पहले उगता है। ब्रिटिश साम्राज्य आकार में सोवियत् की अपेक्षा बड़ा है लेकिन वह लगातार पृथ्वी के एक हिस्से में फैला नहीं है; और आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से वह वैसा ठोस राष्ट्र नहीं है, जैसा कि सोवियत्-संघ।

सोवियत्-संघ में ११ संघ प्रजातंत्र हैं जिनके सब के अधिकार बराबर हैं। सोवियत्-संघ खेती के लिहाज़ से दुनिया में अव्वल है—आबाद भूमि २ अरब २३ करोड़ ९० लाख हेक्टर (हे०=२$\frac{१}{२}$ एकड़) है, जिसमें २ करोड़ एकड़ बाग़-बग़ीचे हैं।

कोयले का ज़ख़ीरा १६ खरब ५४ अरब टन हैं जो कि संसार का $\frac{१}{५}$, है। संयुक्त-राज्य अमेरिका में ८० अरब टन कोयले का ज़ख़ीरा है।

खनिज-द्रव्य सोवियत् की भूमि मे ३ नील ५५ खरब ५७ अरब टन है; जो कि दुनिया के जखीरे का ५४·८०° है। और इस प्रकार खनिज मे सोवियत् का स्थान प्रथम है।

लोहे का जखीरा १० अरब ६१ करोड २० लाख टन है जो कि संसार का ५२ फी सदी है और इसमे भी सोवियत् का नम्बर अव्वल है। मगानीज़ का ¾ सोवियत् में है। सोने की उपज में सोवियत् का नंबर दूसरा है। और तृतीय पच-वार्षिक योजना के समाप्त होने तक वह सयुक्त-राज्य अमेरिका से आगे बढ़ जायगा।

एपिटाइट (खाद) का जखीरा २ अरब टन सोवियत् के पास है। फास्फोरस् (खाद) ६० सैकडा सोवियत्-भूमि में है। पोटाश १८ अरब ३७ करोड़ टन इसके पास है। ऊपर जो हिसाब लगाया गया है, वह सोवियत् की सारी भूमि की पैमाइश का परिणाम नही है। अभी तक ३५ सैकड़ा भूमि ही का भूगर्भ-शास्त्रीय नाप हो चुका है। ६५ सैकडे का नाप हो रहा है। सब मिलाने पर सोवियत प्रजातत्र ऊपर के लिखे सभी खनिज पदार्थों के जखीरे में अव्वल हो जायगा।

समूरी चर्म तथा दूसरी पोस्तीन १९३५ ई० मे १ अरब ७४ करोड़ ६० लाख रूबल अर्थात् प्राय: ८० करोड़ रुपये का तैयार हुआ है।

उसी साल १ करोड़ ३५ लाख ४० हज़ार टन मछली निकाली गई।

जनसंख्या

१ जनवरी १९३३ की जन-गणना के अनुसार सोवियत्-सघ में साढे सोलह करोड आदमी बसते थे जिनमे ४६ सैकडा लोग १९१७ की क्रान्ति के बाद पैदा हुए। ज़ारशाही के ज़माने में प्रति वर्ष १००० पर ४४ पैदा होते थे और २७ मरते थे। इस प्रकार हर साल हज़ार पर १७ की वृद्धि थी। सोवियत्-शासन ने एक तरफ बीमारियो की चिकित्सा और स्वास्थ्यरक्षा की ओर ध्यान दिया और दूसरी ओर लोगों की गरीबी और भुखमरी को

दूर किया। इसके कारण इस वक्त हर साल प्रति हज़ार २४, यानी दसवें साल २४ सैकड़ा या प्राय: १/४ की वृद्धि हो रही है। हिन्दुस्तान में १९२१ से १९३१ के १० वर्षों में तो १/१६ ही की बढ़ती हुई थी। हर साल सोवियत-संघ में ३० लाख आदमी बढ़ रहे हैं। १९३८ के शुरू में वहाँ की आबादी १८ करोड़ से कम नहीं है। यूरोपीय देशों में जनसंख्या प्रति वर्ष प्रति हज़ार ५ सैकड़ा ही बढ़ती है।

सोवियत् जनसंख्या संसार की जनसंख्या का १/१२ है। आबादी प्रति वर्ग-किलोमीतर ८ है। लेनिन्ग्राद्, कज़ान्, सारातोफ़्, रस्तोव्-दोन ये इलाके सब से ज़्यादा घने बसे हुए हैं और वहाँ आबादी प्रति वर्ग-किलोमीतर ४० पड़ती है।

खेती

खेती की ज़मीन का परिमाण निम्न प्रकार था—

सन्	एकड़	लाख
१९१३	२६,२५	,,
१९२०	२३,१७	,,
१९२८	२८,२५	,,
१९३७	३४,७५	,,

जिनमें कपास की उपज निम्न प्रकार थी—

सन्	एकड़	हज़ार
१९१३	१४,७०	,,
१९२०	२,४५	,,
१९२८	२४,३०	,,
१९३७	५२,२५	,,

खेती के लिए इस्तेमाल होनेवाली मशीनों और ट्रैक्टरों आदि की उन्नति भी इसी प्रकार शीघ्रता से हुई; और १९३७ के अन्त में ४॥ लाख ट्रैक्टर,

१ लाख २० हज़ार कम्बाइन् और ५६१२ मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन थे। कृषि के लिए बिजली के स्टेशन निम्न प्रकार थे—

१९२८ ई०	१९३४ ई०	१९३५ ई०
६५४	१८७४	२७७४

वैज्ञानिक खाद का प्रयोग निम्न प्रकार हुआ—

१९३२ ई०	१९३६ ई०	१९३७ ई०
११११ हज़ार टन	३०८३ हज़ार टन	४७२८ हज़ार टन

सोव्-खोज—१९३६ में सोवियत्-संघ में ४१३७ सोव्खोज़ (सरकारी खेती) १२७० लाख एकड भूमि जोतते थे। इनमें २१२७ हज़ार व्यक्ति काम करते थे। उनके पास १,८७,००० ट्रैक्टर, ८४,७०० कंबाइन्, ५०१४ हज़ार ढोर, ४०६० हज़ार सुअर, १०६९६ हज़ार भेड़-बकरी थीं। उन्होंने १०लाख बुशल् (१ बुशल्=१६ सेर) या ४ लाख मन अनाज पैदा किया।

चावल सोवियत् के बहुत कम भागों में पैदा होता था। इधर चावल की खेती में भी बहुत तरक्की हुई है। लिसेंको की बीज-संस्कार प्रक्रिया ने—जिससे कि फसल दो हफ़्ते पहले तैयार हो जाती है—चावल की फसल का क्षेत्र ठंढी जगहों तक पहुँचा दिया है। १९३७ में प्रति एकड ३८ बुशल् (१४ मन ८ सेर) चावल की औसत रही, जो कि युद्ध के पहले की औसत से दूनी है।

स्थान	कुल एकड़	बुशल् प्रति एकड़
क्रासोदर	६२,५००	६७ (२६ मन ३२ सेर)
वोरोशिलोफ् (चेर्नियास्कें) दुमिग्रोफ्		८० (३२ मन)
रोस्तोफ्		९० (कुछ मे १२०=४८ मन)

कोल्-खोज—१९३७ में सोवियत् के कोल्खोज़ों (पचायती खेती) में एक लाख ट्रैक्टर-ड्राइवर, ७० हज़ार शोफर, दो लाख कम्बाइन्-मिस्त्री

और २० लाख दूसरे कमकर थे। ५५ हज़ार कोलखोज़ों में अपने क्लब थे और उनमें ३८ हज़ार वाचनालय थे। १९३६ में ८० हज़ार कोलखोज़ों में ३५ लाख बच्चों के लिए बच्चाखाने का इन्तज़ाम था।

आय-व्यय

१९३७ में सोवियत्-संघ की आय ९८ अरब ६ करोड़ ९५ लाख रूबल (प्राय: ४८ अरब रुपये) और व्यय ९७ अरब ११ करोड़ ९५ लाख रूबल (प्राय: ४७ अरब रुपया) था। इसमें टैक्स से आय २ अरब ६४ करोड़ ५० लाख और उद्योग से ८३ अरब आय हुई।

आय के मार्ग १९१३ ई० से १९३७ ई० में निम्न प्रकार से बढ़े हैं—

	१९१३ ई०	१९३७ ई०
आय	१००	४१०
इंजीनियरिंग	१००	२८००
खेती की मशीन	०	५६१७
स्वास्थ्य-व्यय	१००	५१८८
विद्यार्थी-संख्या	१००	४७०
पुस्तक-प्रकाशन	१००	६६४

भिन्न भिन्न चीज़ों की उपज १९१३ से १९३७ तक किस प्रकार बढ़ी है, उसका लेखा यहाँ दिया जाता है।—

	१९१३	१९२८	१९३२	१९३७
बिजली (किलो-वाट् घंटा)	१९४५	५००७	१३५४०	४०५००

	१९१३ ई०	१९२७–२८ ई०	१९३२ ई०	१९३६ ई०
पेट्रोल (करोड़ टन)	९२३४१	११७४९२०	२२३१८७०	२९१३९३०
कोयला (क० ट०)	२९११७००	३५५१०००	६४६६४००	१५०१५०००

	'१३ ई०	'२७-२८ ई०	'३२ ई०	१९३६ ई०
कच्चा लोहा (हज़ार टन)	४२१६	३२८२	६१६१	१४३९८
फ़ौलाद (हज़ार टन)	४२३१	४२५०	५९२७	१६३२५
ताँबा (टन)	८८०६००	२७८८१००		

	१९१३ ई०	१९३६ ई०
ताँबा (सिल्)	३११०० टन	१००००० टन
ताँबे का तार	१६७०० टन	८६३०० टन
ताँबा (केबिल)	०	२८४१०० टन

	१९३२ ई०	१९३७ ई०
जूता	८२० लाख जोड़ा	१९०० लाख जोड़ा
	प्रथम पच-वार्षिक	द्वितीय पच-वार्षिक
सर्वजनोपयोगी माल	७·८ अरब (रूबल)	१९·५ अरब (रूबल)

	१९२७ ई०	१९३६ ई०	१९३७ ई०
मछली (लाख क्वाटर)	९५	१६२	१८०

१९२७ में मछली की पैदावार में सोवियत् का नंबर पाँचवाँ था। १९३६ में ससार में दूसरा नबर हुआ। सारे सोवियत् में खाने के लायक ३१०-प्रकार की मछलियाँ मारी जाती हैं, जिनमें १९ जीवित ही एक जगह से दूसरी जगह भेजी जाती हैं।

टिन मे बन्द खाद्य, फल और दूध की भी माँग इधर बहुत बढ गई हैं, और इसके लिए सोवियत् ने बड़े बड़े कारखाने खोल रखे हैं। यहाँ उनका कुछ हिसाब दिया जाता है—

	१९३६	१९३७
खाद्य (टिन)	११ अरब	१४
फल (टिन)	२९६० लाख	

	१९३२	१९३४	१९३५	१९३६
दूध (लाख टन)	८०	८६	१३०	२५४

	१९३२	१९३३	१९३४	१९३५	१९३६
मक्खन (टन)	७१६००	१२८०००	१३८०००	१५८०००	२०००००

	१९३३	१९३६	१९३७
पनीर (हज़ार क्वार्ट)	३०००	२५०००	३४०००

१९३३ मे सोवियत् चीनी पैदा करने में तीसरे नंबर पर था। १९३५ में संसार में अव्वल हो गया।

	१९३३	१९३६	१९३७
चीनी (लाख टन) ..	१९	२०	४०

क्रान्ति मे पहले रूस में चाय बहुत कम पैदा होती थी। अधिकांश चाय बाहर के देशों मे आती थी। पंच-वार्षिक-योजनाओं में इसकी ओर विशेष ध्यान दिया गया; और उसका परिणाम निम्न प्रकार मे देखा जाता है।

	क्रान्ति मे पूर्व	१९३५	१९३७
चाय (कारखाने)	५	२८	३९
चाय (टन) ..	१३०	..	१६,०००

सिगरेट सोवियत् में बहुत पीया जाता है। अमेरिका—जहाँ कि हरएक औरत सिगरेट पीना अपना फ़र्ज़ समझती है—सिगरेट बनाने में अव्वल है। यद्यपि १९३६ में सोवियत् ने ८९ अरब सिगरेट बनाये, तो भी उसका नंबर अभी दूसरा ही है। और शायद जब तक औरतें मदद देने के लिए मैदान में न आयेंगी, तब तक दूसरा ही रहेगा।

वेतन

सोवियत्-संघ में क्रान्ति के बाद जो आर्थिक उन्नति हुई है, उससे लोगों का औसत वेतन बहुत बढ़ गया है। १९१३ की जुलाई में कारखाने के

उपज से बढ़कर मनुष्य की उपज की देखभाल करना ज़रूरी है। कारखाने का कोई खराब हो गया माल एक ही बार नुकसान पहुँचा सकता है; लेकिन सन्तान की खराबी से तो पीढ़ियाँ खराब होती जायँगी। सन्तान की परवरिश की सारी ज़िम्मेवारी अपने ऊपर मानते हुए भी अभी वह उतना नहीं कर सकी है; तो भी इस क्षेत्र में उसके काम से दुनिया के और देशों का मुक़ावला नहीं किया जा सकता। जन्म पर माँ-बाप को हर बच्चे के लिए ४५ रूवल मिलता था, पीछे ९० रूवल हो गया और इस वक़्त का आँकड़ा हमारे पास नहीं है। लेकिन वह और भी ज़्यादा है। इसके अतिरिक्त प्रसव के वक़्त और उसके वाद भी डाक्टर, नर्स और दवा-दारू का खर्च सरकार देती है। माँ को बच्चा जनने से पहले दो मास और वाद में दो मास (कोल्खोजों में मीयाद आधे मास की है) पूरे वेतन के साथ छुट्टी मिल जाती है। पाँचवें लड़के से माँ-बाप को सरकार विशेष रूप से सहायता देती है। सातवें लड़के से ५ वर्ष तक के

वच्चा-खाना

लिए दो हज़ार रूबल वार्षिक सरकार से मिलता है। और दसवें लड़के से ५००० रूबल वार्षिक। बालकों की मदद में निम्न ३ वर्षों में जिस तरह

बाल-क्रीड़ा

सरकार ने रूबल खर्च किया है, उससे उसकी इस विषय की नीति स्पष्ट हो जाती है—

१६२६	१६३२	१६३६
३२ लाख	१४३२ लाख	७०६० लाख

बच्चों के लिए जो सरकार इतना ध्यान रखती है, उसका सुपरिणाम भी वैसे ही दिखलाई पड़ता है। जर्मनी से मुकाबला करने पर मालूम होगा, कि बच्चों की मृत्यु प्रति १० हज़ार किस परिमाण में है—

	१६३५
जर्मनी	१६.७

उपज से बढ़कर मनुष्य की उपज की देखभाल करना जरूरी है। कारखाने का कोई खराब हो गया माल एक ही बार नुकसान पहुँचा सकता है; लेकिन सन्तान की खराबी से तो पीढ़ियाँ खराब होती जायँगी। सन्तान की परवरिश की सारी जिम्मेवारी अपने ऊपर मानते हुए भी अभी वह उतना नहीं कर सकी है; तो भी इस क्षेत्र में उसके काम से दुनिया के और देशों का मुक़ाबला नहीं किया जा सकता। जन्म पर माँ-बाप को हर बच्चे के लिए ४५ रूबल मिलता था, पीछे ६० रूबल हो गया और इस वक़्त का आँकड़ा हमारे पास नहीं है। लेकिन वह और भी ज्यादा है। इसके अतिरिक्त प्रसव के वक़्त और उसके बाद भी डाक्टर, नर्स और दवा-दारू का खर्च सरकार देती है। माँ को बच्चा जनने से पहले दो मास और बाद में दो मास (कोल्खोजों में मीयाद आधे मास की है) पूरे वेतन के साथ छुट्टी मिल जाती है। पाँचवें लड़के से माँ-बाप को सरकार विशेष रूप से सहायता देती है। सातवें लड़के से ५ वर्ष तक है

बच्चा-खाना

लिए दो हज़ार रूबल वार्षिक सरकार से मिलता है। और दसवें लड़के से ५००० रूबल वार्षिक। बालकों की मदद में निम्न ३ वर्षों में जिस तरह

बाल-क्रीड़ा
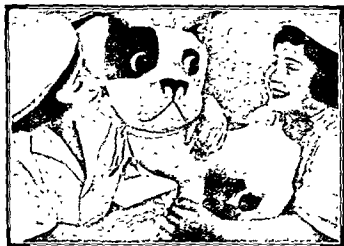
सरकार ने रूबल खर्च किया है, उससे उसकी इस विषय की नीति स्पष्ट हो जाती है—

१९२९	१९३२	१९३६
३२ लाख	१४३२ लाख	७०९० लाख

बच्चों के लिए जो सरकार इतना ध्यान रखती है, उसका सुपरिणाम भी वैसे ही दिखलाई पड़ता है। जर्मनी से मुकाबला करने पर मालूम होगा, कि बच्चों की मृत्यु प्रति १० हज़ार किस परिमाण में है—

			१९३५
जर्मनी	..	..	१९.७

सोवियत्	३·७
उक्रइन्	६·२

मरे पैदा हुए बच्चों की ओर देखने से यह अंक और भी ज्यादा मालूम होता है।

बच्चों में स्तालिन्

	१९३५
जर्मनी ..	४·६ प्रति १० हज़ार
सोवियत् ..	०·७ प्रति १० "

सोवियत्-भूमि में स्वस्थ आदमी को बेकार होने की नौबत नहीं आ सकती। हर एक आदमी के लिए वहाँ काम मौजूद है। वृद्धावस्था, बीमारी या अंगभंग होने के कारण यदि कोई आदमी काम करने के अयोग्य

माता और बच्चा

कसरत के शौकीन

हो जाय, तो उसकी और उसके आश्रितों की परवरिश सरकार के जिम्मे होती है। इस मद में सरकार कितने रूबल खर्च कर रही है; इसे भी देखिए—

१९२४	१९२९	१९३६
१३० करोड़	४४० करोड़	८८० करोड़

१९१७ से १९३६ तक चिकित्सा के लिए जो आयोजन सरकार ने किया है, वह भी ध्यान देने की चीज है।

	१९१७	१९३६
डाक्टर ..	१९,८००	१,००,०००
अस्पताल में चारपाइयाँ	१,७३,६३४	६,१९,८००

शिक्षा

शिक्षा के बारे में सोवियत् सरकार का सबसे अधिक ध्यान है; यह तो इसी से मालूम हो जायगा कि सोवियत् सरकार के बजट का २० सैकड़ा शिक्षा पर खर्च किया जाता है। आजुर्बाइजान में १९१४-१५ में सिर्फ़ ३ सैकड़ा शिक्षा पर खर्च होता था, लेकिन १९३५-३६ में सोवियत् सरकार ने १७·७ सैकड़ा खर्च किया। १९२९-३० में जो भिन्न भिन्न देशों ने शिक्षा पर खर्च किया है, उसे भी देखिए—

भारत (ब्रिटिश) ..	३·३ सैकड़ा
फ़्रांस ..	११·२
आस्ट्रिया ..	११·५
जर्मनी ..	१३·३
इंगलैंड ..	१५·१

शिक्षा की ओर सरकार का जो इतना ध्यान गया है, उससे स्कूलों में छात्रों की संख्या बहुत बढ़ गई है। उसके आँकड़े इस प्रकार हैं—

१९१४	१९३६	१९३७
७८ लाख	२ करोड़ ७४ लाख	३ करोड़ १० लाख

बच्चों की क्रीड़ा

३ करोड़ १० लाख मे ८८ लाख नगरों के विद्यार्थी है, २१२ लाख गाँवो के और १० लाख रेल-कर्मचारियो के।

सिर्फ एक साल १९३६ मे शिक्षको की वेतन-वृद्धि के लिए सरकार ने १ अरब रूबल मजूर किया।

स० स० स० र०-विज्ञान एकेडेमी (अकदमी-नावुक) सोवियत् की सबसे बड़ी वैज्ञानिक सस्था है। जारशाही एकेडेमी की १८ शाखाएँ थी। आज भिन्न भिन्न विषयो की उसकी ८० शाखाएँ है। जिनमें एक ओरियंटल-इस्टीट्यूट भी है। एकेडेमी में काम करनेवाले वैज्ञानिको की सख्या ५० हजार है।

मनुष्य (शरीर और मन) पर विशेष अन्वेषण के लिए गोर्की

इंस्टीट्यूट के नाम से एक बड़ी संस्था मास्को से कुछ मील पर करीव करीव बन चुकी है। इसमें ६५०० कमरे और हज़ारों विद्वानों को अपने अपने विषय के अन्वेषण का काम दिया जायगा।

स्नान के वाद

पुस्तक-प्रकाशन

क्रान्ति के २० सालों (१९१७ से १९३७ ई०) में पुस्तकों के प्रकाशन में वड़े ज़ोर से वृद्धि हुई है। सोवियत् ने इन २० सालों में देशी विदेशी ग्रन्थकारों के ग्रन्थों की कितनीं कितनीं प्रतियाँ छापी हैं, उसके देखने से यही नहीं मालूम होगा कि कौन ग्रन्थकार वहाँ अधिक सर्वप्रिय है; वल्कि यदि वाहर के देशों से मुक़ावला किया जाय, तो ग्रन्थों के परिमाण की प्रचुरता भी मालूम होगी।

गोर्की	..	३१९ लाख
पुश्किन्	..	१९१ ,,

ल्यू तात्स्त्वा (टाल्स्टाय)	..	१४० लाख
चेखोफ	..	११४ ,,
विक्टर ह्यूगो	..	१७ ,,
रोम्यां रोलाँ	..	१४ ,,
अनातोल् फ्रांस	..	१२ ,,
वल्ज़क्	..	१२ ,,
डिकेंस	..	११ ,,
डार्विन	..	१८० हज़ार
आइन्स्टाइन्	..	४८ ,,
हेगेल्	..	४० ,,

_ *_*

ऊपर हम कह चुके हैं कि अभी तक सिर्फ़ ३५॥ सैकड़ा भूमि की ही पैमाइश होने पर भी सोवियत् सरकार संसार में कितनी ही खनिज सम्पत्तियों में अव्वल है। १९३७ की जुलाई में अन्तर्राष्ट्रीय-भूगर्भशास्त्री-कांग्रेस मास्को में हुई थी। उस वक्त ससार के सभी देशों के भूगर्भ-शास्त्रवेत्ता मास्को में एकत्रित हुए थे। सोवियत् विज्ञानवेत्ता एकेडेमीशियन् गुब्किन् ने हिसाब लगाकर बतलाया था कि स०स०स०र० का मिट्टी के तेल का जख़ीरा ६ अरब ३७ करोड़ ६३ लाख टन है, जिसमें ३ अरब ८७ करोड़ ७२ लाख तो काम लगे हुए क्षेत्रों में हैं। इस आंकड़े को सुनकर बहुत से वैज्ञानिकों को सन्देह होगा; यद्यपि इस बात को सभी पूँजीवादी अखबार भी मानते हैं कि तेल में स०स०स०र० का स्थान संसार में सर्व प्रथम है।

कांग्रेस को हुए ५ महीने नहीं बीते थे कि आज़ुर्बाइजान् और दूसरे स्थानों के तेल के जख़ीरे पहले के आंकड़े से भी बहुत अधिक साबित हुए। वैज्ञानिक गुब्किन एक जगह लिखता है—

आइए, हम बाकू के इलाक़े को देखें। कितनी ही बार लोगों ने प्रश्न

उठाया कि अब्शेरोन् प्रायद्वीपवाली खानें—सावुन्ची, रामानी और दूसरे तेल-क्षेत्र—करीब करीब खतम हो चुके हैं। लेकिन अब भी इन जगहों में निकलनेवाले तेल का परिमाण कम नहीं हो रहा है। १९३५ में कुछ भूगर्भशास्त्रियों के अनुसार १९३८ के तेल का जखीरा थोड़े से गहरे स्तरों को छोड़ कर खतम हो जानेवाला था। लेकिन पिछले दो वर्षों के आँकड़े साबित कर रहे हैं कि अब्शेरोन् के तेल-क्षेत्र की सीमा के भीतर ऐसे दूसरे जबर्दस्त जखीरे मौजूद हैं जिनका पहले हमें पता नहीं था—जिरव तैल-क्षेत्र और पेदचार्नी द्वीप में हाल में जो वर्मा चलाया गया है और वहां पर नये जखीरे मिले हैं, उनसे साफ़ पता लगता है कि वहाँ तैल का खजाना घटने की जगह बढ़ा दिखाई पड़ता है।

वीवी-ऐबत् तैल-क्षेत्र को खतम हुआ सा समझा जाता था, लेकिन हाल के वर्मा चलाने से मालूम हुआ कि तेल की कमी खजाने के खतम होने के कारण नहीं थी, बल्कि मशीन की कमजोरी के कारण।

अर्तेम्द्वीप के तेल के बारे में भी हमें विचार बदलने पड़े हैं। वहाँ खुश्की के अलावा समुद्र की तह में तेल निकला है, और उसके निकालने के लिए समुद्र की पेंदी में वर्मा चला कर ट्यूब वेल खड़ा किया गया।

इस प्रकार अब्शेरोन् प्रायद्वीप के तेल का खजाना अब भी कम हुआ नहीं दिखाई पड़ता।

बाकू के दक्षिण-पश्चिम पूतिन्स्क की उपत्यका की बग़ल में तेल की खोज हुई है। मियाजिक् में नये तेल के पता लगाने में बड़ी सफलता मिली है।

बाकू से ६० किलोमीतर (४० मील) दक्षिण-पश्चिम पीर-सागत् में एक नया क्षेत्र मिला है। पहले नम्बर के कुएँ में पहले तेल आया लेकिन पीछे पानी भर आया। जान पड़ने लगा कि पहले की परीक्षा ग़लत थी। लेकिन उसके पास ही २७ नंबर का कुआँ खोदा जाने लगा, तो १००० टन फेंकने वाला चश्मा (गशर) निकल आया; जिसने साबित कर दिया कि तेल वहाँ बहुत परिमाण में है।

आजुर्बाइजान् का तैल-क्षेत्र बहुत पुराना है। उत्तरी काकेदास् में कई नये तैल-क्षेत्र मालूम हुए है; जिनमें ग्रोज्नी, माईकोप् और कूबन् के ज़िले तथा दागिस्तान ज्यादा महत्त्वपूर्ण हैं। ग्रोज्नी क्षेत्र के कुएँ काफी तेल दे रहे हैं। दागिस्तान के तैल-क्षेत्र, काइकेन्त, आर्चासु और इज़्बरबिन् के बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। यहाँ के तैल-कूप बडी सफलता से काम कर रहे हैं। दागिस्तान के मखच्कला प्रदेश में भी ऐसे प्रमाण मिले हैं; जिनसे मालूम होता है कि वह भी अचिर भविष्य में एक अच्छा तैल-क्षेत्र होगा।

इन खोजों से २० मील लम्बा (माईकोप् से उत्तर-पच्छिम की तरफ़ फैला) एक नया तैल-क्षेत्र मिला है। १९३६ में माईकोप् इलाका प्रतिदिन ३००० टन तेल देता था। १९३७ के अन्तिम महीनों में वह प्रतिदिन ५००० टन दे रहा था।

क्रान्ति के पहले सिर्फ काकेदास् तैल का क्षेत्र समझा जाता था। पहली पचवार्षिक योजना में सोवियत्-सघ के पूर्वी भाग (सखालिन्) में एक दूसरा तैल-क्षेत्र मिला। यह क्षेत्र साल-बसाल बढ रहा है। दस साल पहले उराल में तैल की कल्पना भी कोई नहीं करता था; लेकिन अब हालत बदल गई है। १९२९ में चूसोवोल्ग्राद् में तेल निकला; और १९३२ में स्तेर्लीतमक के पास ईशिम्बएफ् में एक नया तैल-क्षेत्र मिल गया। यह तैल-क्षेत्र आजकल प्रति वर्ष १० लाख टन दे रहा है। ऊफा के पश्चिम में तुह्माज़िन्स्की क्षेत्र मिला है, जिसके कुएँ प्रतिदिन १०० टन से १५० टन तक तेल दे रहे हैं।

इससे भी महत्त्वपूर्ण खोज है, ओरेन्बुर्ग प्रान्त के बुगुरुस्लन् के पास एक तैल-क्षेत्र का पाना। क्रास्-नोकम्स्क, सीज्रन् और स्तावोपोल् वोल्गा के किनारे के इन तीन स्थानों मे फैला यह एक नया तैल-क्षेत्र है।

कामा नदी की उपत्यका में भी नये तैल-क्षेत्र का पता लग रहा है। सिउकेयेवो केसमा के दक्षिणी तट पर कज़ान नगर से १०० किलोमीटर (६० मील) नीचे है। यहाँ भी तेल के लक्षण मिल रहे हैं। सभावना तो हो रही

है, कि तेल रूस के केन्द्रीय हिस्सों में भी है, और ताजी खोजें इसको पुष्ट कर रही हैं। उक्रइन् के रोम्नी नगर के पास साष्ट मिट्टी के तेल का पता लगा है। इस प्रकार उक्रइन् भी तेल से खाली नहीं है। तुर्कमानिस्तान और मध्य-एसिया के दूसरे प्रजातंत्रों में भी तेल का पता लग चुका है।

उराल्-एम्बा जिले प्रतिसाल ४ लाख ६६ हजार टन तेल दे रहे हैं।

सोवियत् के तेल का जखीरा बहुत भारी है, इसमें शक नहीं। लेकिन उस का खर्च भी उतना ही अधिक है। ४ लाख ५० हजार ट्रैक्टर (८० लाख घोड़े की शक्ति से भी ज्यादा) और १ लाख २० हजार कंबाइन् जो कि १९३७ के आखिर में सोवियत् के खेतों में लगी थीं, उन्हींके लिए बहुत तेल की जरूरत है। और उनके अतिरिक्त सोवियत्-संघ के मोटर-कारखानों से प्रतिदिन ९०० मोटरकार और ७०० लारियाँ निकलती हैं। जिनके लिए भी तेल की जरूरत है। पिछले साल मास्को (स्तालिन् मोटर-कारखाना), गोर्की (मोलोतोफ्-मोटर-फ़ैक्टरी) के कारखानों का पुनर्निर्माण हुआ है। जिनके कारण और भी मोटरें और लारियाँ बनने लगी हैं। और इसका मतलब है तेल का और खर्च।

मोटर और ट्रैक्टर तक ही काम खतम नहीं हो जाता। सवारी और लड़ाई के हजारों हवाई जहाज तथा टैंक और दूसरी सैनिक मशीनें भी तेल चाहती हैं।

वोल्गा-तैलक्षेत्र—१० दिसंबर १९३७ को एक जबर्दस्त तेल का फौवारा (गशर) वोल्गा के दाहने किनारे स्तव्रोपोल नगर की दूसरी तरफ़ निकला। उसने सिद्ध कर दिया कि वोल्गा का तैल-क्षेत्र भी बहुत भारी है। यह तैल फ़ौवारा ९९० मीटर नीचे से आया है। इसने एक दिन में २५० टन बहुत अच्छे किस्म का पेट्रोल दिया। पहले सिर्फ़ इतना ही कहा जा सकता था कि वोल्गा उपत्यका के किसी भाग में तेल मौजूद है, इस आविष्कार से पता लग गया कि वोल्गा का दक्षिणी किनारा तैल का एक बहुत भारी जखीरा अपने भीतर छिपाये हुए है। यह तैल-क्षेत्र बहुत दूर तक ओरेन्

बुर्ग के बुगुरुस्लन् से ले कर स्तर्लीपोल् तक फैला हुआ है।

१९३८ में ७ या ८ नये ८५०० मीतर (२५ हज़ार फ़ीट से अधिक) गहरे कुएँ खोदे जायँगे। इसके लिए वर्मा और भारी मशीनें वहाँ पहुँच गई हैं। अगले साल वोल्गा के दो दूसरे तैल-क्षेत्र—प्रोस्कुरोवो और ओत्वाज्नी-वोव्रग् में भी इसी तरह के गहरे कुओं के खोदने की योजना तैयार है। इस प्रदेश में जहाँ रेलवे और नदी के स्टीमर के कारण बोझा ढोने का सुभीता है वहाँ केन्द्रीय जगह में होने से और भी अधिक फायदा है।

भूगर्भशास्त्र-संबंधी नई खोजें

१९३७ की खोजों से कई नई खानों का पता लगा है। इस साल सोवियत्-संघ के भिन्न भिन्न भागों में सैकडों अन्वेषक दल भेजे गये थे। इस साल अत्युमिन्स्क प्रान्त के नवो-रोसिस्क इलाके में कोमाइट्स (एक रासायनिक द्रव्य) के २३ बडे बडे ज़खीरों का पता लगा है।

दक्षिणी उराल के उफालेइ इलाके में भी इसका ज़खीरा है।

पिछले साल (१९३७) की खोजों से सोवियत् का कोयले का ज़खीरा, जितना कि पहले समझा जाता था, उससे दूना हो गया। कोमी स्वायत्त-प्रजातंत्र का इन्तोव (स्वायत्त-रिपब्लिक) बहुत भारी कोयला-क्षेत्र है। पेचोरा की घाटी में चोर्लया नदी के किनारे एक और बड़ा कोयले का इलाका मिला है। कज़ाकस्तान के मंग्युस्तउ में नई कोयले की खान निकली है। मध्य-एशिया में एग्नोव का कोयला-क्षेत्र सिद्ध हो गया। किर्गिजिस्तान में कोक्युनगका में भी पिछले साल कोयला मिला है; और वह अच्छी जाति का है। सुदूरपूर्व-प्रदेश में खुंगारि-इस्क कोयला उक्त प्रदेश के उद्योग-धन्धों के बढ़ाने में बडा सहायक सिद्ध होगा।

कज़ाकस्तान के करातऊ इलाके में बडे ऊँचे दर्जे का फोस्फेट मिला है। उसका परिमाण २० करोड टन आँका गया है।

अर्मनी (अर्मेनिया) के चिबुखलिन्स्क स्थान में ताँबे की बड़ी खान

८९ लाख किलोवाट् ताकत के स्टेशन बनाये जाने वाले हैं। उत्तरी अमेरिका में सेंट लारेंस नदी से बिजली पैदा करने की जो योजना है, वह २६ लाख किलोवाट् ताकत की ही है।

अंगारा के सभी बिजली के स्टेशनों के बनाने में कुछ वर्ष लगेंगे; लेकिन पहले स्टेशन बइकाल—जो कि इर्कुत्स्क के पास है—में हाथ लग गया है। इस स्टेशन में ६ लाख किलोवाट् की क्षमता है; और यह हर माल ४ अरब किलोवाट् घंटा बिजली देगा। इस प्रदेश की खनिज और प्राकृतिक सम्पत्ति के साथ इतनी बिजली के मिल जाने पर यह प्रदेश उद्योग का बड़ा केन्द्र बन जायगा।

बइकाल-हाइड्रो-इलेक्ट्रिक-स्टेशन इर्कुत्स्क से प्राय: ५ मील ऊपर अवस्थित है। इस स्टेशन से प्राय: ६० मील पर चेरेम्खोवो में कोयले का बहुत बड़ा जखीरा तथा सेंधा नमक है। कोयला और नमक खोदने के काम में आनेवाली मशीनें इस बिजली से अच्छी तरह चलाई जायेंगी और वहाँ पर खनिज रसायन की तैयारी के लिए भी कारखाने खोले जा सकेंगे। बनावटी रबर बनाने के कारखानों की योजना तैयार हो चुकी है। लोहे की मिश्रित धातुओं को बनाने में बिजली की बड़ी आवश्यकता होती है, और बइकाल का स्टेशन इसके लिए बड़ा काम करेगा। अंगारा की सस्ती बिजली के सहारे हर साल २५ से ५० हजार टन अलमोनियम तैयार करनेवाला कारखाना कायम किया जायगा। अलमोनियम का कच्चा माल उराल से रेल द्वारा भेजा जायगा। अंगारा के निचले हिस्से में भी बोक्साइट—जो आलमोनियम बनाने में काम आता है—का काफी जखीरा मिला है। मंगानीज के कारखाने भी यहाँ संगठित होने वाले हैं। चेरेम्खोवो के इलाके तथा अंगारा के निचले भाग में बड़े ऊँचे दर्जे की मंगानीज मिली है।

बइकाल की बिजली द्वारा चेरेम्खोवो के कोयले से पेट्रोल और तेजाब निकाला जायगा। इस प्रकार इस प्रदेश को दूर से पेट्रोल लाने की जरूरत न होगी।

वड्काल-विद्युत्-स्टेशन का वन्द सिवेरियन रेलवे के क़रीव वन रहा है। यह इतना ऊँचा वनाया जा रहा है, कि इस से नदी का धरातल १०० फ़ीट ऊँचा हो जायगा। इसका असर वड्काल झील के धरातल पर भी पड़ेगा।

झील से नीचे की ओर जाने के लिए जहाज़ों के वास्ते लॉक (अत्यन्त तीक्ष्ण धार को कृत्रिम रूप से शान्त वना कर जहाजों के रास्ते) वनाये जायेंगे। उनके कारण इर्कुत्स्क वड्काल झील का वन्दरगाह वन जायगा।

वड्काल-विद्युत्-स्टेशन के वनाने में उतना ही खर्च आयेगा, जितना कि वोल्गा नदी के रिविन्स्क स्टेशन—जो कि वड़ी तेज़ी से आजकल वन रहा है—पर आयेगा। लेकिन विद्युत्-शक्ति वहाँ से यहाँ चौगुनी पैदा होगी। सोवियत् का सव से वड़ा विद्युत्-स्टेशन द्नीयेपेर् जितनी विजली देता है, वड्काल उससे ड्योढ़ी देगा। स०स०स०र० में अंगारा की विजली सव से सस्ती पड़ेगी। यह प्रदेश मंगोलिया, याकूतिया और सुदूरपूर्व के मध्य में होने से वहुत महत्त्व रखता है। जितने ही यहाँ उद्योग-धन्धे और आवादी वढ़ेगी, उतनी ही सोवियत् की शक्ति सुदूरपूर्व—जिसपर जापान की वड़ी आँख है—में वढ़ेगी। इस प्रकार अंगारा के एक करोड़ वीस लाख अश्व-शक्तियों को विजली के रूप में पकड़ने से सिवेरिया की काया-पलट हो जायगी।

वोल्गा की विजली—लेना (४४२८ किलोमीतर) नदी के वाद वोल्गा (३६९४ किलोमीतर) सोवियत् की सव से वड़ी नदी है। तीसरी पंच-वार्षिक-योजना में वोल्गा नदी पर विजली के स्टेशनों के वनाने की योजना को काम में लाया जाने लगा है। इस विशाल नदी पर १३ स्टेशन वनने जा रहे हैं। इनकी ताक़त १ अरव किलोवाट् होगी। प्रति वर्ष वह १४ अरव किलोवाट् घंटा विजली देंगे जो कि फ़्रांस या इटली की सारी विजली के वरावर है। जो स्टेशन इस वक्त वन रहा है, वह २५ लाख किलोवाट्

ताक़त का है। सारी योजना समाप्त होने पर इससे २५ लाख वर्ग-किलोमीतर या ७ करोड़ आदमियों के निवास की भूमि को दूसरी जगह से प्रकाश और शक्ति लेने की ज़रूरत न होगी, अर्थात् युक्त प्रान्त और बिहार—दोनों
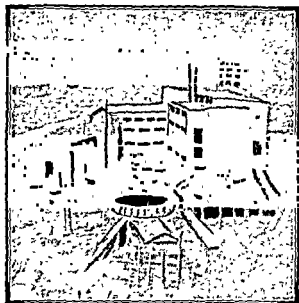
लेना नदी पर पावर-हाउस (पृ० ६५)

को मिलाकर बने प्रदेश के घरों में चिराग़ जलाने, फैक्टरियों के चलाने, ट्रामवे और ट्रैक्टरों तक को काम करने के लिए तेल या कोयला छोड़ सिर्फ़ बिजली से काम लिया जायगा। इतना ही नहीं, वोल्गा मे बिजली पैदा करने के लिए जगह जगह लॉक बना कर जो पानी की तह को ऊँचा किया जायगा, उनसे नहरें निकाल कर ३ करोड़ एकड़ खेत की सिंचाई भी होगी।

द्नियेप्रोपेत्रोव्स्की

प्रथम पंच-वार्षिक-योजना (१९२७–३२ ई०) में यूरोप का यह सब से बड़ा विद्युत् स्टेशन बना था। जिस वक़्त द्नीयेपेर् नदी पर इसके लिए सीमेंट के बाँध बाँधे जाते थे, उस वक़्त यूरोप और अमेरिका के अख़बार मज़ाक उड़ा रहे थे। कह रहे थे—नौसिखिए रूसियों के बूते से यह बाहर की बात है। देखिए, जैसे ही रास्ता रुका, कि पहले ही मर्तबे महानदी काई की तरह इस सारी सीमेंट की दीवारों को बहा ले जायगी। विद्युत् स्टेशन को काम करते ६ साल हो गये; और इन भविष्यत्-वक्ताओं की वाणी सच नहीं निकली। अब वे उतना मज़ाक भी नहीं करते। सोवियत् की बनी हुई मशीनों—हवाई जहाज़, मोटर आदि—ने दुनिया में मज़बूती और उपयोगिता में बहुत ऊँचा स्थान पाया है। द्नीयेपेर् पर बने इस विद्युत्-स्टेशन से जहाँ इतनी अधिक बिजली पैदा होती है, वहाँ लॉक बनाकर स्टीमर को ऊपर-नीचे जाने का रास्ता बना दिया है। पहले जल-प्रपात के कारण काला-सागर के स्टीमर यहीं आकर रुक जाते थे।

* * * * * *

जन्मभूमि-गीत

भूमि सोवियत् सब श्रमिकों की अतिशय प्यारी।
शान्ति समुन्नति की आशा, है अमित दुलारी॥
नहीं देखता देश मही पर कोई उत्तम।
चलते मानो मनुज जहाँ पर मुक्त यहाँ सम॥ टेक॥

मास्को से अतिशय सुदूर पैसिफ़िक् सीमा तक।
मेरु-उदधि से समरकन्द की वर वसुधा तक॥
मनुज विचरता साभिमान निस्सीम अवनि का।
बन कर स्वामी, गिरा दासता कठिन यवनिका॥

सभी ठौर स्वच्छन्द शस्य जीवन-नद कलकल।
बहता ज्यों गम्भीर प्रखर वोल्गा-जल निर्मल॥
मुक्त क्षेत्र हैं सब तरुणों के सभी हमारे।
सभी जगह सम्मानित होते बूढ़े प्यारे॥

फल-सुपूर्ण हैं क्षेत्र जहाँ था ऊसर बंजर।
बसे नगर हैं वहाँ जहाँ थी भूमि बिना नर॥
कहे जीभ अभिमान पूर्ण 'साथी' यह अक्षर।
इससे देते तोड़ सभी अन्त सीमान्तर॥

इससे हैं सब ठौर प्रबल यह संघ हमारा।
लुप्त हुआ संघर्ष बढ़ा निज जन-गण प्यारा॥
साथ साथ तातार यहूदी रूसी सारे।
निर्मित करते शान्ति-सहित सुख-जीवन प्यारे॥

दिन प्रतिदिन सुख-साज हमारा बढ़ता जाता।
है भविष्य जाज्वल्यमान ध्वज सा फहराता॥
हम सा चिन्ता मुक्त नहीं है जगती तल पर।
ऐसा है न विमुक्त प्रेम सुख-हास-प्रभाकर॥

खींचेगा यदि शत्रु हमारे ऊपर प्रहरण।
चाहेगा इस प्रियतम भू पर नाश-प्रसारण॥
दामिनि दमक समान मेघ गर्जन के सम हम।
देंगे उत्तर तीव्र और सुस्पष्ट अनुत्तम॥[1]

---

[1] साहित्यरत्न पंडित श्यामनारायण पांडे शास्त्री कृत पद्यानुवाद।

५—सोवियत्-संघ की जातियाँ[1]

सोवियत् विधान में हर एक जाति को अपनी अपनी उन्नति का रास्ता खुला हुआ है। उसने हर जाति की संस्कृति और भाषा के स्वतंत्र विकास के लिए पूरा पूरा अवसर दिया है। उससे लाभ उठा कर भिन्न भिन्न जातियाँ कितनी दूर तक आगे बढ़ी हैं, इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए जायेंगे।

स०स०स०र० का क्षेत्रफल और जनसंख्या

नाम	राजधानी	क्षेत्रफल (हज़ार वर्ग किलो मीतर)	जनसंख्या (१ जन० १९३३) (हज़ार)
स०स०स०र०[1] ..	मास्को ..	२१,१५३·६	१६५७४८·४
१. र०स०फ०स०र०[2]	,, ..	१९,६३८·६	११३,६५०·९
कोमी जिरियन स्वायत्त-जिला ..	सिक्तिव्कर	३७४·९	२७६·३
करेली स्वा० प्रजातंत्र	पत्रोजवोद्स्क	१४६·८	३७२·१
चुवाश् स्वा० प्र०	चेवोक्सरी ..	१७·९	९५८·५
मरि स्वा० जि०	लोश्कर्-ओला	२३·३	५५०·९
उद्मुर्द स्वा० प्र०	इजेव्स्क	३२·१	८७१·४
बश्किर स्वा० प्र०	ऊफ़ा	१४०·५	२८८९·९

---

[1] संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक्।

[2] रूसी-सोवियत्-फ़ेडरेटेड् (संयुक्त) समाजवादी-रिपब्लिक्।

तातार स्वा० प्र०	कज़ान्	६७·१	२७८४·६
कोमी-पेर्य जातीय० जि०	कुदिम्कर्	२३·१	१६८·०
मोर्दावी स्वा० प्र०	सरन्स्क	२५·५	१४१४·६
वोल्गा जर्मन स्वा० प्र०	एङ्गेल्स	२८·२	५७५·७
कल्मुक् स्वा० जि०	एलिस्ता	७४·२	१८५·४
अदिगेत् स्वा० जि०	मइकोप्	३·०	१७३·४
दागस्तान स्वा० प्र०	मखच्कला	५७·३	६४६·२
कबर्दिनो-बल्कर स्वा० प्र०	नल्चिक्	१२·३	२७८·८
कराचे स्वा० जि०	मिकोयान्-शहर	६·६	१०४·४
उत्तरी ओसेत्स स्वा० जि०	ओर्दजोनिकिद्जे	६·२	२८६·२
चेर्केस् स्वा० जि०	सुलीमोफ	३·३	८०७
चेचेन्-इङ्गुश् स्वा० जि०	ग्रोज्नी	१७·७	६५०·५
किमिया स्वा० प्र०	सिमिफ़ेरो-पोल्	२६·०	७६१·०
४. कज़ाकस्तान स०स०र०	अल्मा-अता	२७४४·५	६७६६·६
कराकल्पक् स्वा० प्र०	तुर्कुल्	१६८·०	३७३·५
५. किर्गिज़स्तान स०स०र०	फ़्रुज़	१६६·७	१३०२·१
ओस्तिअक्-वोगुल् जा० जि०	ओस्तिअक्-ओ-गुल्स्क	७५४·६	१०२·२
नेनेत्ज़ (यमल) जा० जि०	सालेहर्द	४६६·०	२६·५
ओइरोत् स्वा० जि०	ओइरोत्-तुरा	६३·१	१२१·७
तइमुर (दोलेनूनेवत्ज) जा० जि०	दुदिन्का	७४२·६	८·०
एवेन्किस् जा० जि०	तुरिन्स्क	५४१·६	४·६
खकस् स्वा० जि०	अबकन्	४६·६	१७३·३

वुर्यत्-मंगोल स्वा० प्र०	उलन्-उदे	३७६·४	६२०·६
वितिम्-ओले क. मिन् (एवें-न्किस्) जा० जि०	कलकन्	२१६·८	१०·१
याकूत स्वा० प्र०	याकुत्स्क	३०३०·६	३२७·५
कोरियक् जा० जि०	पेन्ज़िस्क	३१०·८	१२·५
चुकोत्स्क जा० जि०	अनादिर	६६०·६	१६·१
यहूदी स्वा० जि०	विरो-विद्‌जान्	३६·८	५०·०
४. उक्रइन् स०स०र०	कियेफ़्	४४३·१	३१६०१·४
मोल्दावी स्वा० प्र०	तिरस्पोल्	८·४	६१५·५
५. वेलो-रूसी स०स०र०	मिन्स्क	१२६·८	५४६६·४
६. आज़ुर्वाइजान् स०स०र०	वाकू	८६·०	२८६१·०
नखिचेवन् स्वा० प्र०	नखिचेवन्	५·४	११७·०
नगोर्नोकरावख् स्वा० जि०	स्तेपनाकेर्त	४·२	१५३·६
७. अर्मनी स०स०र०	एरेवान्	३०·०	११०६·२
८. गुर्जी स०स०र०	त्विलिसि	६६·६	३११०·६
अब्खासी स्वा० प्र०	सुखुमी	८·७	२५६·१
अद्‌जारिस्तान स्वा० प्र०	वातुमी	२·८	१५३·८
दक्षिणी ओसेती स्वा० जि०	स्तालिनिर्	३·७	६५·३
९. उज्वेक् स०स०र०	ताशकन्द	१७२·०	५०४४·३
१०. तुर्कमानस्तान स०स०र०	अश्कावाद	४४३·६	१२६८·६

११. ताजिकस्तान

स०स०र०	स्तालिनाबाद	१४३·६	१३३२·७
गोर्नो-बदख्शां स्वा० जि०	होरोवाग्	६१·१	३५·७

१. रूसी-सोवियत्-फेडेरल-साम्यवादी-रिपब्लिक्—(र०स०फ०स०र०)

क्षेत्रफल और जनसंख्या दोनों के ख़याल से र०स०फ०स०र० सोवियत्-संघ का सब से बड़ा प्रजातंत्र है। सोवियत्-संघ के क्षेत्रफल का ⁴⁄₅ और जनसंख्या का ²⁄₃ इसी में है। र०स०फ०स०र० पश्चिम में बाल्तिक सागर से, पूर्व में प्रशान्त महासागर तथा अलास्का (उत्तरी अमेरिका) तक फैला हुआ है। थोड़े मे दक्षिणी-पश्चिमी भाग को छोड़ कर सारा सोवियत्-यूरोप तथा सिबेरिया और काम्चत्स्का इसी के अन्तर्गत है।

प्रायः सारी तुन्द्रा और सम्पूर्ण जंगल प्रदेश इसी संघ-प्रजातंत्र में है। दक्षिण में र०स०फ०स०र० काले सागर और उत्तरी काकेशस् मे उत्तरी महासागर तक फैला हुआ है।

इसकी भूमि के भीतर अपार खनिज संपत्ति पड़ी हुई है। उराल, क्रिमिया (केर्च) और सिबेरिया (सिवेर) की लोहे की खानें; कज़्नेत्स्क, पूर्व सिबेरिया, उराल और मास्को प्रान्त की कोयले की खानें है। अज़ोफ-कालासागर प्रदेश, उराल, और बशकिरिया के पेट्रोल और मिट्टी के तेल तथा अन्य जगहों पर सोना, प्लेटिनम्, ताम्बा, सीसा और रांगे की खानें मौजूद हैं।

आर्थिक दृष्टि से भी र०स०फ०स०र० सोवियत्-संघ का बहुत महत्त्व-पूर्ण भाग है। इससे ही कृषि और उद्योग की उपज का ७० सैंकड़ा आता है।

सोवियत्-संघ की जनसंख्या का आधे से कुछ अधिक रूसी हैं लेकिन र०स०फ०स०र० की जनसंख्या का ⁴⁄₅ रूसी जाति है। र०स०फ०स०र०

में बहुत सी जातियां बसती हैं; जिनकी भाषा और संस्कृति की रक्षा के लिए १७ स्वायत्त-प्रजातंत्र और ६ स्वायत्त जिले स्थापित किये गये हैं। उनमें शिक्षा और संस्कृति का माध्यम स्थानीय भाषा है। १७ स्वायत्त प्रजातंत्रों और ६ स्वायत्त जिलों का फ़ेडरेशन (समुदाय) होने से इसे र०स० फ़ेडरेटेड् साम्यवादी रिपब्लिक कहते हैं। र०स०फ०स०र० के भिन्न भिन्न भाग अपनी खास खास विशेषता रखते हैं। इसलिए उनका वर्णन पृथक् पृथक् किया जाता है—

१—बिना काली-मिट्टीवाला-प्रदेश—(मास्को, यीजेन्, तुला, इवानोवो, और यरुस्लावी ज़िले) ये ही रूसी राज्य के मूल स्थान हैं और आज भी सारे सोवियत्-संघ का प्रधान उद्योग-केन्द्र यहीं है। इसी प्रदेश में सोवियत्-संघ के उद्योग का ३० सैकड़ा और र०स०फ०स०र० का ४० सैकड़ा केन्द्रित है। खास उद्योग हैं, मशीन बनाना, धातु तैयार करना, कपड़ा और रसायन के कारखाने।

मास्को र०स०फ०स०र० और स०स०स०र० दोनों की सिर्फ़ राजनीतिक और सांस्कृतिक राजधानी ही नहीं है, बल्कि यहीं वे बड़ी बड़ी शिक्षण संस्थाएँ हैं जिनमें सारी सोवियत्-भूमि के विद्यार्थी पढ़ने के लिए आते हैं। इन सब से भी बढ़कर मास्को का महत्त्व है सोवियत्-संघ के आर्थिक केन्द्र होने में। नक़शा में देखने से भी मालूम होगा कि यहीं से सोवियत् यूनियन के चारों कोनों में १० रेलों का जंकशन है।

यहाँ के दूसरे उद्योग-केन्द्र हैं—इवानोवो (कपड़े के कारखाने), यारोस्लाव, ओरेखोवो-जुयेवो और तुला।

इस प्रदेश को कच्चा माल और खाद्य पदार्थ सोवियत्-संघ के दूसरे भागों से मिलता है; और उसके बदले में यहाँ से कलें, रासायनिक पदार्थ, कपड़े और किताबें भेजी जाती हैं।

२—काली-मिट्टीवाला-प्रदेश—जिसमें कुर्स्क, ओरेल्, तम्बोफ़् और व्रोरोनेज जिले शामिल हैं। यह बड़ी उपजाऊ भूमि है। और आबहवा भी

यहाँ उतनी सर्द नहीं है। जारशाही के जमाने में अपनी अद्वितीय दरिद्रता के लिए यह प्रदेश बहुत मशहूर था। जमींदारों और ताल्लुकेदारों का यहाँ बहुत बोल-बाला था। उनका अत्याचार उतना ही ज्यादा था, जितनी ज्यादा कि यहाँ के किसानों की गरीबी। लेकिन अब यह प्रदेश खेती में बहुत उन्नत है। चुकन्दर, सूर्यमुखी, सन और आलू के बड़े बड़े खेत हैं। गेहूँ की खेती खास तौर से होती है। इनके अतिरिक्त यहाँ बहुत से कल-कारखाने भी हैं, जो वोरोनेज्-लिपेत्स्क, कुर्स्क और ब्रयान्स्क नगरों में अवस्थित हैं।

यह प्रदेश अन्य भागों को गेहूँ, चीनी, सन, आलू, वनस्पति तैल और सुअर के मांस के साथ साथ धातु तथा धातु की वस्तुएँ और नकली रबर की चीजें भेजता है।

३—उत्तर-प्रदेश—इसमें लेनिन्ग्राद्, आर्केंङ्गल और वोलोग्दा के जिले तथा करेलिया और कोमी के स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। दक्षिण-पश्चिमी भाग को छोड़कर यह उत्तर-प्रदेश जंगलों से भरा है। यहाँ से लकड़ी बड़े भारी परिमाण में विदेशों में भेजी जाती है। दक्षिण-पश्चिमी भाग (लेनिन्ग्राद्—वोलोग्दा रेल के दक्षिण) को बहुत पुराने समय से जंगल काट-कर खेती के लिए तैयार किया गया था; और प्रागैतिहासिक काल में ही यहाँ मनुष्यों की घनी बस्ती बसी थी। यहाँ सन और दूध देनेवाले पशुओं का पालन खास तौर से किया जाता है।

लेनिन्ग्राद् यहाँ का बड़ा उद्योग-केन्द्र है। साथ ही समुद्र का एक भारी बन्दर है। शताब्दियों तक जार की राजधानी रहा और अब भी शिक्षा और संस्कृति का केन्द्र है।

दूसरे उद्योग-केन्द्र हैं—अर्खङ्गेल्स्क (आर्केंङ्गल), उत्तरी देउना नदी के तट पर अवस्थित है। यहाँ लकड़ी के बहुत से कारखाने हैं, और यहाँ से उसे विदेशों में भेजा जाता है। किरोव्स्क एक बिलकुल नया साम्य-वादी शहर है; और एपेटाइट (रासायनिक वस्तु जो खाद के काम में आती है) का संसार में सब से बड़ा उद्गम स्थान है।

उत्तर-प्रदेश सोवियत् के और भागों को कलें, किताबें, एपेटाइट्, अलोमीनियम्, लकड़ी, सन, मछली और डेरी की चीज़ें (गो-शूकर-मांस, दूध, पनीर, मक्खन आदि) भेजता है।

४—पश्चिम-प्रदेश—जिसमें स्मोलेन्स्क और कलिनिन् ज़िले शामिल हैं।

यहाँ की आवोहवा नम और नर्म है। वहुत कीमती जंगल और नर्म कोयला (पीट) का यहाँ वहुत वड़ा ज़ख़ीरा है। खेती यहाँ का प्रधान व्यवसाय है, लेकिन उसमें भी अधिक मूल्य वाली फ़सल (सन, आलू, तरकारी, आदि) और डेरी की चीज़ें ख़ास तौर से पैदा की जाती हैं। कलिनिन् और स्मोलेन्स्क नगरों में वहुत से कारख़ाने वनाये गये हैं।

सोवियत् के और भागों में यहाँ से सन, मांस, मक्खन, पनीर, लकड़ी, दियासलाई, काग़ज़ और कपड़े भेजे जाते हैं।

५—वोल्गा-क्षेत्र—वोल्गा रूस की सब से वड़ी नदी है। ईसाई धर्म स्वीकार करने से पहले रूसी लोग इसे गंगा की तरह पवित्र मानते थे और 'वोल्गा माई' कहा करते थे। उसी पवित्रता के कारण तव से आज तक लाखों लड़कियों का नाम वोल्गा रखा जाता है। गोर्की से अस्त्राखान् (कास्पियन सागर) तक फैले हुए इस प्रदेश में गेहूँ, तेल, नमक, मछली की खास तौर से अधिक उपज होती है। वोल्गा की धारा से मकान वनाने की लकड़ियों के हज़ारों वेड़े नीचे की ओर वहाये जाते हैं। जिन जिन जगहों पर रेलें नदी को पार करती हैं, वहाँ वहुत से शहर वस गये हैं।

वोल्गा-क्षेत्र को उत्तर से दक्षिण तीन हिस्सों में विभक्त किया जा सकता है। जंगली-वोल्गा, जंगली-पथरीली वोल्गा, पथरीली वोल्गा।

(क) जंगली-वोल्गा—इसमें गोर्की और किरोफ़् के ज़िले तथा उद्-मुर्द और मरि के स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। मास्को से उराल और सिवेरिया की तरफ़ जानेवाले रास्ते इधर ही से गुजरते हैं।

गोर्की जंगली-वोल्गा का सब से वड़ा औद्योगिक केन्द्र है। लेनिन्ग्राद्

से कास्पियन सागर को जानेवाला जल-मार्ग (नेवा और वोल्गा द्वारा) तथा मास्को से उराल को जानेवाला जल-मार्ग (ओका और कामा नदियों द्वारा) इसी जगह से जाता है। पच-वार्षिक-योजनाओं में गोर्की का महत्त्व और भी बढ गया है। लाल सेर्मोवो कारखाने में स्टीमर और रेलवे इंजन बनाये जाते है। यहीं पर मोलोतोफ्-मोटरकार-फैक्टरी है, जो कि यूरोप की सब से बडी मोटर फैक्टरी है। लकड़ी और रसायन के भी कई बडे कारखाने है। यह प्रदेश अपने यहाँ से मशीनें, रासायनिक खाद, लकड़ी, सन और मास तथा दूध की चीज़े भेजता है।

(ख) जगली-पथरीली वोल्गा—जिसमें कुइबिशेफ् का ज़िला तथा तातार, चुवाश् और मोल्दावी स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल है। इसके उत्तरी हिस्से में जंगल ज्यादा है और दक्षिण में वह कम होते गये है। गेहूँ की खेती यहाँ बहुत ज्यादा होती है। उसके अतिरिक्त सन, आलू, सूर्यमुखी भी बोये जाते है। नर्म कोयला, मकान बनाने के पत्थर, मिट्टी का तेल (हाल मे सीज़्रान् में प्राप्त) आदि चीज़ें यहाँ की खानो से निकलती है।

इस इलाके का प्रधान उद्योग-केन्द्र कज़ान् है, जहाँ के तातार खान शताब्दियों तक अपने आस-पास के प्रदेशों पर शासन किया करते थे। कामा नदी इससे थोडे ही ऊपर वोल्गा से मिलती है। कुइबीशेफ् दूसरा उद्योग-केन्द्र है जो कि वोल्गा (समर्स्कायालूका) के घुमाव के पूर्वी कोने पर बसा हुआ है।

इस इलाके की खास उपज है—अनाज, लकडी की चीज़ें, मकान बनाने के पत्थर, मोटर, रेल आदि की मशीनें। यहाँ से दूसरे भागों को अनाज, पशु, सन, लकड़ी, मकान के पत्थर और मशीनें भेजी जाती है।

(ग) पथरीली वोल्गा—इसमें सरातोफ और स्तालिन्ग्राद् के जिले तथा वोल्गा-जर्मन और कल्मुख-स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल है। यहाँ की जमीन पथरीली और आबोहवा खुश्क है। दक्खिन-पूरब कास्पियन के किनारे का भाग रेगिस्तान सा मालूम होता है। अधिकतर इस इलाके

का भाग चरागाहों के काम आता है। सरातोफ़ और स्तालिन्ग्राद् के इलाक़े में गेहूँ, सूर्यमुखी और तरबूज़े बोये जाते हैं। वोल्गा के मुहाने और पास के कास्पियन तट में मछलियाँ कसरत से मिलती हैं। वोल्गा के पूर्व में बहुत सी नमकीन झीलें हैं जहाँ पर नमक की अपरिमित राशि पड़ी हुई है।

पथरीली वोल्गा का सब से बड़ा उद्योग-केन्द्र स्तालिन्ग्राद् है। यहाँ ट्रैक्टर बनाने का बहुत भारी कारखाना है।

दूसरा उद्योग-केन्द्र अस्त्राखान है जो कि वोल्गा के मुहाने पर कास्पियन तट पर बसा हुआ है। यहाँ मछुआही, मछली सुखाकर टीन में बन्द करने और जहाज बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं।

पथरीली वोल्गा इलाक़े से दूसरे भागों को ट्रैक्टर, सीमेंट, मछली, नमक, पशु, अनाज और तरबूज़े भेजे जाते हैं।

६—दक्षिण प्रदेश—इसमें दोन्-ऊपर-रोस्तोव का ज़िला, क्रास्नोदर और ओर्द्जोनीकिद्ज़े के इलाक़े तथा क्रिमिया, कबर्दिनो-बल्कारिया, उत्तर-ओसेतिन्, चेचेन्-इंगुश और दागेस्तान के स्वायत्त-प्रजातंत्र शामिल हैं। यह पूर्व में कास्पियन से पश्चिम में अजोफ़् और काला-सागर तक फैला हुआ है। दक्षिण में काकेशस के प्रजातंत्र हैं। समुद्र की समीपता के कारण आबोहवा शीतोष्ण है।

यह प्रदेश शीतोष्ण आबोहवा के कारण खेती बहुत विकसित है। और यात्रियों के लिए यहाँ बहुत से स्वास्थ्यकेन्द्र बने हुए हैं। लेकिन सब से बड़ी चीज़ यहाँ की खनिज सम्पत्ति है। दोन्बास की कोयले की खानें, केर्च का लोहा, ग्रोज़्नी तथा कूबा-कालासागर क्षेत्र का मिट्टी का तेल और नोवोरोसिस्क की सीमेंट खास महत्त्व रखते हैं।

यहाँ के मुख्य उद्योग-केन्द्र हैं, रोस्तोव् (दोन नदी के ऊपर) में कृषि-संबंधी मशीनों का बहुत भारी कारखाना है। सख़्ती में कोयले की खानें हैं। ग्रोज़्नी, नेफ़्तेगोर्स्क और तुअप्से में मिट्टी का तेल निकलता है। तगन्रोग्

धातु और मशीन के कारखानों के अतिरिक्त उराल् में लकड़ी, कागज और रासायनिक पदार्थों की बहुत सी बड़ी बड़ी फ़ैक्टरियाँ हैं।

उराल् के मुख्य उद्योग-केन्द्र हैं, स्वेर्द्लोव्स्क, चेल्याबिन्स्क, मग्नीतोगोर्स्क, पेर्म, निज़्नीतगिल्, ऊफ़ा और ज़्लतोउस्त।

यहाँ से बाहर जानेवाली चीज़ें हैं—धातु और धातु से बनी चीज़ें, ट्रैक्टर, खान की मशीनें, रेल के डब्बे, लकड़ी, कागज और रासायनिक खाद्य।

८—पश्चिमी सिबेरिया—इसमें ओम्स्क और नोवोसिबिर्स्क के जिले तथा अल्ताई इलाक़ा हैं। यह बहुत लंबा चौड़ा प्रदेश है। सोवियत्-संघ का सब से बड़ा कोयला-क्षेत्र कुज़्नेत्स्क यहीं है। पथरीली अलताई में गेहूँ बहुत पैदा होता है। दक्षिण में बाराबिन्स्क और ईशिम् जंगलों के इलाक़े हैं। तइगा और तुन्द्रा उत्तर में लकड़ी, बारहसिंगा-पालन और मछली के लिए बहुत अच्छे इलाक़े हैं। हजारों वर्षों से इस प्रदेश की प्राकृतिक सम्पत्ति अछूती पड़ी थी और उनमें सोवियत्-शासन के बाद ही से हाथ लगाया गया है।

इस प्रदेश का दक्षिणी भाग सिबेरिया की रेलवे से उत्तर-दक्षिण दो हिस्सों में बँटा है। उत्तर तरफ़ ओब्-इर्तुश् नदी उत्तरी महासागर में मिलती है; और उत्तरी महासागर के स्टीमर इस नदी से बहुत भीतर तक चले आते हैं।

कुज़्नेत्स्क—जो सोवियत् का सब से भारी कोयला-क्षेत्र है—का कोयला पहले सिर्फ़ सिबेरिया की रेलवे के काम भर ही निकाला जाता था; लेकिन अब वह दूसरा दोन्बास् हो गया है। कुज़्नेत्स्क की खानें अब कई गुना ज़्यादा कोयला निकालती हैं। यही कोयला उराल के कारखानों तक जाता है।

कुज़्नेत्स्क में भी एक भारी लोह-फ़ौलाद कारखाना खोला गया है जिसमें अभी ही १० लाख टन लोहा प्रति वर्ष तैयार होने लगा है; आगे उसे और बढ़ाया जा रहा है। सारे सिबेरिया और सुदूर-पूर्व की माँग को यह पूरा करने जा रहा है।

पश्चिमी सिबेरिया अपने यहाँ से लोहा-कोयला, अनाज, मांस, मक्खन और लकड़ी बाहर भेजता है।

६—पूर्वी-सिबेरिया—इसमें क्रास्नोयार्स्क का इलाका, इर्कुत्स्क और चीता के ज़िले तथा बुर्यत्-मंगोल और याकूत-स्वायत्त-प्रजातंत्र हैं। यह बहुत लंबा चौड़ा प्रदेश है, और येनीसेइ की उपत्यका से सुदूर पूर्व प्रदेश तक फैला हुआ है।

पूर्वी सिबेरिया पहाड़ी प्रदेश है। यहाँ पश्चिमी सिबेरिया से भी अधिक सर्दी पड़ती है। इसके ही कारण खेती के लिए यह उतना योग्य स्थान नहीं था; जिसके परिणाम स्वरूप इसमें आबादी बहुत कम है। लेकिन प्रकृति ने इसे उद्योग-संबंधी हर एक सामग्री के लिए बहुत धनी बनाया है।

येनीसेइ, अंगारा और लेना जैसी बड़ी नदियाँ इस प्रदेश में दक्षिण से उत्तर को बहती हैं, और इनसे बिजली की शक्ति इतनी पैदा की जा सकती है कि जिनका मुकाबला और जगह नहीं हो सकता। चेरेम्खोफ, कान्स्क, येनीसेइ और तुगुस्का में भी कोयले के बड़े बड़े जखीरे हैं। जंगल काम की लकड़ियों से भरा है। कीमती पत्थर, सोना तथा दूसरे कीमती धातु और टिन यहाँ बहुत निकलता है।

इस प्रदेश में काम अभी अभी शुरू हुआ है, लेकिन सिबेरियन रेलवे के करीब का देश दक्षिण में, उत्तर में उत्तरी जहाजी मार्ग और कुज्बास् का धातु का उद्योग—इन तीन जगहों में उद्योगीकरण बहुत आगे पहुँच चुका है। पूर्वी सिबेरिया सोना, समूरी चर्म और लकड़ी बहुत अधिक परिमाण में बाहर भेजता है।

याकूतिया

सब

उत्तरी सिबेरिया के सब से ठंडे प्रदेशों में याकूतिया एक है। यह बैकाल झील के पास से उत्तरी महासागर तक फैला हुआ है।

सोवियत् की अन्य जातियों (३,२३,५०० जनें०) की तरह याकूतिया

भी शताब्दियों तक ज़ारशाही के निरंकुश शासन से पीड़ित रही। ज़ार की सरकार की नीति थी, याकूतिया और उसके निवासियों को हर तरह से चूसना। रूसी व्यापारी और कारख़ाने-वाले याकूत सामन्तों (तोइवोन्) की मदद से देश के क़ीमती समूरी चर्म तथा दूसरी चीज़ों को लूट रहे थे। उनके तरीक़ों में एक तरीक़ा था, याकूत तथा दूसरी जातियों (एवेन्की, चुक्चा) में शराब और वोद्का के व्यसन को ज़ोर शोर से फैलाना।

जिस तरह की आर्थिक लूट वहाँ हो रही थी, उससे प्रदेश में रहनेवाली जातियाँ—याकूत, एवेन्की—दरिद्रता की पराकाष्ठा तक पहुँच गई थीं; और उनका सर्वनाश बहुत नज़दीक था। उनमें क्षय रोग का बड़ा ज़ोर था; और पाँच वर्ष के भीतर पैदा हुए बच्चों में १०० में ७० मर जाते थे। पैदाइश से मौत की संख्या अधिक होने के कारण देश का बहुत सा भाग उजाड़ हो गया था।

याकूत लोगों की सांस्कृतिक उन्नति के लिए कुछ भी नहीं किया जात था। अगर लोगों में कभी इस तरह का ख़याल भी आने लगता; तो उ तुरन्त ही बड़ी ज़बर्दस्ती के साथ दबा दिया जाता था। स्कूल वहाँ थे न और जो थे भी, उनमें प्रायः रूसी अफ़सर, व्यापारी और पुरोहितों के लड़ ही पढ़ते थे। याकूत् विद्यार्थियों की संख्या १५ सैकड़ा थी; और वह साधारण याकूत् जनता की सन्तान न हो कर ज़ारशाही के गुलाम धनि और कुलकों के लड़के थे। स्कूल की पढ़ाई सिर्फ़ रूसी भाषा में होती थ दो सैकड़ा से ज़्यादा याकूत पढ़ लिख नहीं सकते थे। याकूत भाषा में स चारपत्र निकालने की सख़्त मनाही थी।

क्रान्ति से पहले याकूतिया कृषिप्रधान देश था। कृषि के साथ पालन और शिकार का काम भी होता था। कल-कारख़ानों का नाम थ था। ३० लाख वर्ग-किलोमीतर भूमि में फैली अनन्त प्राकृतिक सम्पत्ति उपयोग का कोई प्रयत्न नहीं किया गया था। १९१७ में सभी छोटे उद्योग-धन्धों की उपज सिर्फ़ १,५७,००० रूबल थी।

अब

२० वर्ष में जो साम्यवादी निर्माण हुआ है, उसमें पिछड़ी तथा परतंत्र याकूतिया बदल कर एक औद्योगिक साम्यवादी देश बन गई है। चूसने वाली श्रेणियाँ लुप्त हो गईं और वहाँ मनुष्य के श्रम को मनुष्य लूट नहीं सकता। बहुत से नये कल-कारखाने स्थापित हुए हैं। जहाँ पहले देश की आमदनी का जरिया अधिकतर खेती थी, वहाँ अब राष्ट्रीय आय का ६६ सैकड़ा कल-कारखानों से है। उद्योग-धंधे में सारी आमदनी पिछले साल ३ करोड़ ९६ लाख रूबल हुई थी (तुलना कीजिए १९१७ के १,५७,००० रूबल से)। नये नये कल-कारखानों की स्थापना के कारण कारखानों में काम करनेवाले कमकरों की संख्या अब २० हज़ार है।

याकूतिया में सोने की बड़ी बड़ी खानें हैं। सोना पैदा करने में संसार में सोवियत् भूमि का नम्बर दूसरा है; और सोवियत् के सारे सोने का १५ सैकड़ा याकूतिया से आता है। कई कोयले की खानों में काम हो रहा है और अब उत्तरी महासागर तथा सिबेरिया की बड़ी बड़ी नदियों में चलने वाले जहाज़ों को कोयला और जगह से लाने की ज़रूरत नहीं। याकूतिया की भूमि में राँगा संसार भर में सब से ज्यादा है। उसमें भी उसकी खान और कारखाने का काम ज़ोर से चल रहा है। पेट्रोल और मिट्टी के तेल के कुएँ नोर्दविक, अमृगा और तुल्वा में खोदे जा रहे हैं, और तृतीय पंच-वार्षिक योजना में बाहर से तेल मँगाने की ज़रूरत न पड़ेगी।

याकूतिया में देवदार तथा दूसरी तरह की लकड़ियों का बहुत भारी जंगल है। लकड़ी का उद्योग भी बहुत आगे बढ़ रहा है; और याकूतिया [illegible] काम से भी अधिक लकड़ी दे रही है। मकानों, आफिसों और [illegible] इमारतों में लकड़ी के इस्तेमाल में कंजूसी की आवश्यकता नहीं। न[illegible] चलने के लिए पेलेदुये और ओसेत्रोवो में जहाज़ बनाने के बड़े बड़े [illegible] स्थापित हुए हैं।

शिक्षा के प्रचार के साथ साथ याकूतिया में प्रेस का काम बहुत बढ़ गया

है। १६१७ में छपाई पर ३२,३०० रूवल खर्च हुए थे और १६३६ में वह खर्च था ४७,३६,५०० रूवल।

तीसरी पंचवार्षिक योजना में पेट्रोल, सोना, राँगा, कोयला और लकड़ी की उपज को और भी कई गुना वढ़ाने के साथ साथ भोजन-संवंधी उद्योग में वहुत अधिक उन्नति करने की योजना रखी गई है।

कृषि में याकूतिया ने विशेष उन्नति की है। क्रान्ति के वाद सभी खेत किसानों के हाथ में चले गये। फिर पंचायती खेती ने लोगों को काम के लिए और भी उत्साहित कर दिया और वहुत से नये खेत आवाद किये गये। १६१७ में जितना खेत था, वह अव उससे तिगुना हो गया है। याकूत लोग अधिकतर वारहसिंगा आदि पशुओं को पाल कर जीविका कमाते थे। अव उनका सारा ध्यान पंचायती खेती की ओर है। पिछले साल (१६३७) याकूतिया में कोल्खोज़ ६[illegible] सैकड़ा और सोव्खोज़ (सर[illegible] कारी खेती) १८ सैकड़ा थी अव १५ सैकड़ा खेती ही छो[illegible] छोटे किसानों के हाथ में [illegible]

कमकर युवती (याकूतिया)

सोव्खोज़ और कोल्ख[illegible] स्थापना के साथ साथ [illegible] के काम को मशीन से क[illegible] आरंभ हुआ है। १६३[illegible] खेती के यंत्र (जिन में ट्रै[illegible] कंवाइन आदि शामिल [illegible] सिर्फ २,००० थे। १६३६ में उनकी संख्या २८,४४३ हो गई

जगहों में जहाँ अनाज की खेती असंभव समझी जाती है, वहाँ लिसेंको के आविष्कार किये बीज-संस्कार (वेर्नेलाइज़ेशन्) के तरीके से फसल पैदा होने लगी है। उदाहरणार्थ ६२° अक्षांश से उत्तर २६८० एकड़ खेती बोई गई। यह बात सिर्फ याकूतिया के लिए ही आर्थिक महत्त्व नहीं रखती, बल्कि इसका महत्त्व सारे वैज्ञानिक संसार के लिये है।

पशुपालन में भी बहुत उन्नति हुई है। कोल्खोज़ों ने नई तरह की पशु-शालाएँ बनाई हैं; और सांड के चुनाव तथा संकर-क्रिया से पशुओं की जाति में विकास किया जा रहा है।

याकूतिया अब समुद्र के रास्ते उत्तरी रूस से सम्बद्ध है। १९३६ में मास्को आदि कारखानों का बना १५,००० टन माल इस रास्ते याकूतिया आया। याकुत्स्क याकूतिया प्रजातंत्र की राजधानी है। इर्कुत्स्क से याकुत्स्क तक नियमपूर्वक हवाई-यात्रा होती है। याकुत्स्क से याकूतिया का हर इलाका हवाई जहाजों द्वारा सम्बद्ध है। सिबेरिया के रेलवे-स्टेशनों से देश के भीतर तक कितनी ही मोटर-सड़कें बनाई गई हैं।

क्रान्ति के बाद नदी द्वारा माल का यातायात बहुत तेज़ी से बढ़ा है। लेना नदी में, जहाँ १९११ में छोटे छोटे बजरे ३० थ, वहाँ १९३६ में ११३ स्टीमर चल रहे थे। लेना नदी द्वारा १९११ की अपेक्षा १९३६ में सात-गुना ज्यादा माल आया। कोलीमा, इन्दीगिर्का, याना और वील्युइ नामक उत्तरी नदियों में भी बड़े बड़े माल ढोने के लिए तैयार किये गये हैं।

क्रान्ति से पहले याकूत भाषा एक असभ्य भाषा समझी जाती थी। उसका न कोई साहित्य था न लिपि। अब वह रोमन अक्षरों में लिखी जाती है; और स्कूलों की सात वर्ष की पढ़ाई उसी भाषा द्वारा होती है। आरंभिक और हाई स्कूलों के विद्यार्थियों में १२-गुना वृद्धि हुई है। याकूतिया में सात वर्ष की शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य है। अब शिक्षितों की संख्या सैकड़ा ८० है (जनसंख्या ३३०.१ हज़ार); बाकी २० सैकड़ा बूढ़े लोग हैं जो कुछ ही वर्षों के मेहमान हैं।

पिछले २० सालों में याकूत लोगों ने अपने लिए अध्यापक, डाक्टर, इंजीनियर आदि बहुत अधिक तादाद में पैदा किये हैं। वहाँ १२ टेकनिकल स्कूल, तीन फ़ैक्टरी-उम्मेदवार-स्कूल, दो कमकर-तैयारी-स्कूल हैं; जिन में २४३० विद्यार्थी पढ़ते हैं। इनके अतिरिक्त दो ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट हैं। ४०० याकूत विद्यार्थी मास्को, लेनिनग्राद् आदि के विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे हैं।

आर्थिक उन्नति और शिक्षा के प्रचार के साथ साथ अख़बारों, किताबों रेडियो और सिनेमा वग़ैरह की माँग बहुत बढ़ गई है। स्कूली किताबों के अतिरिक्त सैकड़ों दूसरे ग्रन्थ याकूत भाषा में छपे हैं। अब उसमें १८ समाचारपत्र और कितनी ही मासिक पत्रिकाएँ निकलती हैं। कई सौ अध्ययन परिषद्, ग्राम-वाचनालय, कोलख़ोज़्-क्लब, सांस्कृतिक-भवन, प्रजातंत्र के कोने कोने में फैले हुए हैं। एक नाटक-थियेटर, एक कोल्ख़ोज़्-थियेटर, और एक जन-कला-भवन स्थापित हुआ है। याकूतिया में बस्तियाँ बहुत दूर दूर पर बसी हैं। गाँवों के लिए चलते फिरते सिनेमा का प्रबन्ध है। याकुत्स्क नगर के रेडियो-स्टेशन से हर रोज़ अपनी भाषा में ब्राड-कास्टिंग होती है। रेडियो-यंत्र से कोई गाँव खाली नहीं है। याकूत भाषा और संस्कृति की खोज के लिए एक अन्वेषण-पीठ है। कृषि-संबंधी अन्वेषण के लिए एक अलग संस्था है। जल-आकाश-संबंधी अन्वेषण के लिए एक विज्ञानशाला है। जंगल, समूर और खनिज पदार्थों की खोज के लिए एक विद्वत्-परिषद् है। संक्षेप में याकूत जाति और उसकी प्राकृतिक सम्पत्ति का वैज्ञानिक अन्वेषण सुव्यवस्थित रूप से हो रहा है।

स्वास्थ्य-रक्षा पर सोवियत् सरकार का बहुत ध्यान है। १९११ में कुछ थोड़े से चिकित्सालय थे; जिन में १९ डाक्टर काम करते थे। १९३९ में जहाँ अस्पतालों की संख्या १४३ हो गई, डाक्टर अब १९३ हैं।

१९२५–२६ में राष्ट्रीय आय ४३ लाख रूबल थी; लेकिन १९३७ में वह १० करोड़ ७० लाख हो गई। ४ करोड़ ९० लाख रूबल शिक्षा और सांस्कृतिक काम में खर्च किया गया, अर्थात् आदमी पीछे १३९ रूबल (या

६० रुपया)। याकूत जनता ने अपने २० वर्ष की समृद्धि के लिए कृतज्ञता प्रकट करते हुए स्तालिन् को लिखा—

"याकूत जब जंगल में जाता है, तो अपने रास्ते को घास में आग लगा कर प्रकाशित करता है; जिसमें कि उसे लौटने में दिक्कत न हो।

"लेनिन् और स्तालिन् ये दोनो हमारे बड़े प्रकाशित मार्ग है, जिन्होंने हमारे हृदयों को आलोकित किया है। इन्ही प्रकाशित मार्गों द्वारा हम दासता के जंगल, अकाल और दरिद्रता के जंगल से निकल कर सुखमय जीवन के प्रकाशपूर्ण मार्ग पर पहुँचे।"

* * * * * *

१०—सुदूरपूर्व-प्रदेश—यह ब्लादिवोस्तोक् से बेरिंग तक प्रशान्त-महासागर के तट पर फैला प्रदेश है। मास्को से सब से अधिक दूर यही देश पड़ता है। इसके पड़ोस में साम्राज्यवादी जापान है।

उद्योग और आदमी बसाने का काम यहाँ अभी अभी शुरू हुआ है। प्राकृतिक सम्पत्ति इसकी अपरिमित है। सखालिन में कोयला और मिट्टी का तेल निकलता है। दूसरी जगह ताँबा, लोहा, सोना के अतिरिक्त सुन्दर जंगल और बकसरत मछलियाँ हैं। जहाँ सोवियत्-समुद्र में हद से ज्यादा मछलियाँ हैं, वहाँ जापान के पास वाले समुद्र में मछलियाँ अपेक्षाकृत बहुत कम हैं। मछुआही के लिए अक्सर दोनों शक्तियों में झगड़ा रहता है। जापानी लोग सोवियत् समुद्र में बदबूदार तेल के पीपे छोड़ देते हैं, जिसमें मछलियाँ गन्ध से भाग कर उन के समुद्र की ओर चली जाँय।

जारशाही इस प्रदेश को आगे के देशों को विजय करने के खयाल से इस्तेमाल करती थी। यहाँ की प्राकृतिक सम्पत्ति को काम में लाने की ओर उसका खयाल नहीं जाता था। सखालिन् द्वीप को उसने कैदियों के भेजने के लिए काला-पानी बनाया था।

आजकल यहाँ पर बड़े जोरों से नई फैक्टरियाँ और कारखाने बन रहे हैं। जापान की लालच भरी निगाहें इसी प्रदेश की ओर हैं। सोवियत्

सरकार ने यहाँ के सामुद्रिक तटों और स्थल-सीमाओं पर बड़ी जबर्दस्त किलाबन्दी कर रखी है। पनडुब्बी और युद्ध-पोतों की भारी तादाद के अतिरिक्त जंगी विमानों का बहुत बड़ा अड्डा—जिनसे जापान सब से अधिक डरता है और जो उसकी राजधानी से तीन घंटे की ही उड़ान पर हैं—क़ायम किये गये हैं। सुदूर-पूर्व की महासेना का नायक है, सोवियत् का यशस्वी सेनापति मार्शल ब्लूख़ेर। तायगा के जंगल को साफ किया जा रहा है। रेल और सड़कें बनाई जा रही हैं। नये नये नगर आबाद किये जा रहे हैं। मालूम होता है कि यह जनशून्य प्रदेश कुछ ही वर्षों में ख़ूब आबाद हो जायगा।

इस प्रदेश से सोना, कोयला, मिट्टी का तेल, समूरी चर्म, मछली और लकड़ी बाहर जाती है।

*** ***

२—कज़ाकस्तान स०स०र०

सोवियत्-संघ के ग्यारह संघ-प्रजातंत्रों में कज़ाकस्तान-सोवियत्-संघ रिपब्लिक भी एक है। रूसी-संघ-सोवियत्-रिपब्लिक के बाद क्षेत्रफल में दूसरा नंबर इसी का है। यह पश्चिम में कास्पियन से ले कर अल्ताई तक और दक्खिन में ताशकन्द के नज़दीक से ले कर उत्तर में सिबेरिया के तुन्द्रा तक फैला हुआ है। लंबाई इसकी ३००० किलोमीतर और चौड़ाई उत्तर दक्षिण १५०० किलोमीतर है। क्षेत्रफल २८,६०,००० वर्ग किलोमीतर है जो इटली, फ़्रांस, जर्मनी तीनों के बराबर है, तथा हिन्दुस्तान के क्षेत्रफल से भी बड़ा है। कज़ाकस्तान बहुत सूखा देश है, यहाँ पानी की बहुत कमी है। मध्य और पश्चिमी कज़ाकस्तान में वर्षा बहुत कम होती है। सिर-दर्या, उराल, इली और इर्तिश नदियों ने इस प्यासी भूमि की तृषा को कुछ शान्त किया है। भूमि समतल है; जिस में वृक्षों का कहीं नाम नहीं। कहीं कहीं नंगी छोटी छोटी पहाड़ियाँ हैं जिनके पास छोटी छोटी घासें

उगती हैं। वह ऊँटों और भेड़ों को चराने के लिए अच्छी जगहें हैं। यद्यपि कजाकस्तान में पानी की कमी है; लेकिन उसी के साथ साथ खनिज सम्पत्ति से वह मालामाल भी है। यहाँ करागन्दा की कोयले की खानें, पश्चिम में एम्बा नदी के तैलक्षेत्र, जेज्काजान और कोउनरद् की ताँबे की खानें; तथा कितनी ही जगहों पर निकलने वाले राँगे और सीसे इसको बहुत सम्पत्ति शाली बनाते हैं। जन-संख्या सत्तर लाख है। जिसमें ६० सैकड़ा कजाक हैं, बाकी में ३५ सैकड़ा उक्रइनी और रूसी हैं; और वह अधिकतर उत्तरी सीमा—जहाँ कि वर्षा अधिक होती है—तथा दूसरी कृषि-प्रधान जगहों में रहते थे। अब उनमें से कितने ही खानों और कल-कारखानो की जगहों में पहुँच गये हैं। दक्षिणी भाग की बहुत सी जगहों में उजबक भी रहते हैं। इनके अतिरिक्त बुइगुर, युङ्गन, तातार और जर्मन भी कितनी ही सख्या में बसते हैं।

कजाक खानाबदोश जाति थी; जिसे कि जार के साम्राज्य ने जीत कर अपने हाथ में किया। क्रान्ति के समय तक कजाकों का मुख्य पेशा था भेड, ऊँट चराना। उस वक्त तक यहाँ की खानो मे काम नही लगा था। भेड ऊँट तो अपने पैरों पर चल कर बाजारो तक पहुँच सकते थे, लेकिन खनिज पदार्थों को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाने का कोई साधन नही था। क्रान्ति के पहले रेल का एक तरह से बिलकुल अभाव था। ट्रान्स-साइबेरियन रेलवे और ओरेन्बुर्ग-ताशकन्द रेलवे कजाकस्तान के सिर्फ किनारो भर को छूती थी। पहली पंचवार्षिक योजना मे सोवियत् सरकार ने तुर्क-सिबिर की १,००० मील से लंबी रेलवे बना कर ताशकंद को सिबेरिया से मिला दिया। इसके अलावा और भी कई लाइने बनाकर करगन्दा और दूसरे उद्योग-केन्द्रो को मिला दिया। क्रान्ति के पहले जितनी मील रेलवे यहाँ थी, उससे अब २½ गुना बढ गई है। शिक्षा मे कायापलट हुई है। जहाँ पहले मुश्किल से कोई लिख-पढ सकनेवाला कजाक मिलता था, वहाँ अब सिर्फ कुछ बूढ़े बूढ़ियो को छोड कर सभी लिख पढ सकते हैं।

सोवियत् की और कितनी ही भाषाओं की तरह क्रान्ति से पहले कज़ाक-भाषा की न कोई लिपि थी न कोई साहित्य। आज कज़ाक-भाषा साहित्यिक भाषा है और रोमन-लिपि में लिखी जाती है। साधारण स्कूलों में १० लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं। उच्च शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय, तथा खनिज कालेज डाक्टरी और ट्रेनिंग-कालेज १२ से ऊपर हैं। ८५ टेकनिकल हाई स्कूल हैं। कज़ाक-भाषा में आज कल १५७ पत्र-पत्रिकाएँ निकलती हैं। लेखकसंघ के ७० सभासद हैं। २४ थियेटर (जिनमें छः नाटक के) हैं। दो संगीत-शालाएँ, एक ओपेरा, एक मूक-नाटक है। कज़ाक-भाषा में अपने फिल्म हैं; और सैकड़ों सिनेमा-घर जगह जगह फैले हुए हैं।

क्रान्ति से पहले आधे बच्चे पाँच वर्ष से पूर्व ही मर जाते थे। ग़रीबी हाथ धोकर लोगों के पीछे पड़ी थी। आज खान, कल-कारखाना सभी जगह रौनक दीख पड़ती हैं। सारे प्रजातंत्र में खान और कारख़ानों में काम करने वाले श्रमिकों की संख्या आठ लाख है, जिनमें आधे कज़ाक जाति के हैं। पहले जो लोग अपने अपने पशु अलग पाला करते थे, अब उनकी जगह पंचायती पशुपालनक्षेत्र संगठित हुए हैं। सब से बड़े पशुपालनक्षेत्र में एक करोड़ भेड़ें हैं। १९१३ में ५० हज़ार एकड़ में कपास बोई गई थी; पिछले साल कपास की खेती तीन लाख एकड़ भूमि में हुई। यहाँ के खेतों में ३० हज़ार ट्रैक्टर, और बहुत सी कम्बाइन काम कर रही हैं। अल्माअता पहले ३० हज़ार आबादी का एक गुमनाम कस्बा था; अब वह कज़ाकस्तान की राजधानी और दो लाख ३० हज़ार आबादी का एक बड़ा शहर तुर्क-सिबिर रेलवे पर है।

१९२३–२४ में कज़ाकस्तान का राष्ट्रीय आय-व्यय १२ करोड़ ५० लाख रूबल था। १९३२ में वह ७८ करोड़ ५० लाख; और १९३७ में वह दो अरब हो गया।

कज़ाक कोल्ख़ोज़ी किसान बड़ी समृद्ध अवस्था में हैं। १० से १५ सेर अनाज उनको प्रति दिन के काम की आमदनी हुई है। पियानो, मोटर-

साइकिल, बाइसिकिल और रेडियो गाँवों तक में फैल रहे हैं।

पिछले १० सालों में कई बड़े बड़े शहर बस गये हैं, जिनमें सेमी-प्लातिन्स्क डेढ़ लाख, करागन्दा १२०,००० और ग्हूर ५०,००० आबादी के शहर हैं।

पहले की अपेक्षा खेती और पशुपालन में बहुत तरक्की हुई है; लेकिन उससे भी अधिक तरक्की हुई है उद्योग में। जहाँ पहले खेती और पशुपालन से ९३·७ सैकड़ा आमदनी थी, और उद्योग में सिर्फ ६·३; वहाँ अब उद्योग से ५३·२ सैकड़ा आमदनी है।

*** ***

३—किर्गिजस्तान स०स०र०

चीनी तुर्किस्तान से लगा हुआ सोवियत्-संघ का यह संघ-प्रजातन्त्र है। यह ऊँची पहाड़ी जगह है; और उत्तर में छू और तलस् नदियों तथा पश्चिम में फ़र्गाना के उत्तरी पूर्वी हिस्से (जो कि किर्गिजस्तान में है) में ही जमीन अपेक्षाकृत कुछ नीची है।

फर्गाना, छू, तलस् की उपत्यकाएँ खेती के लिये उपयोगी हैं। इन्हीं उपत्यकाओं में किर्गिजस्तान के सभी कल-कारखाने, सभी नगर और अधिकांश जन-संख्या आबाद है। नहरों से सिंचाई का वहाँ अच्छा प्रबन्ध हुआ है। प्रजातंत्र के इन्हीं भागों में रेलें आ गई हैं।

किर्गिजस्तान की जनसंख्या (१३,२०,१००) में ⅔ किर्गिज हैं और बाकी में रूसी, उक्रइनी तथा फर्गाना में कितने ही उजबक भी रहते हैं। उजबक लोगों की तरह किर्गिज भी तुर्की वंश से संबंध रखते हैं, और उन्हीं की तरह इनकी भाषा और साहित्य भी क्रान्ति के बाद ही शिक्षा का माध्यम बन सका है। लिपि रोमन है।

पहले किर्गिज लोग खानाबदोश चरवाहे थे, और एक जगह रहने तथा खेती करने को नीची निगाह से देखते थे। अब उनमें से सब से अधिक

संख्या गाँवों और शहरों में बस गई है। खेती की भूमि पहले से दूनी हो गई है। कारखाने और फ़ैक्टरियाँ स्थापित हुई हैं। मोटर चलने लायक बहुत सी सड़कें बनी हैं। किर्गिज़स्तान अपने यहाँ से कपास दूर के प्रजातंत्रों में भेजता है; और कोयला, पशु, अनाज और चीनी पास के पड़ोसी प्रजातंत्रों में। आवश्यकता से अधिक कोयला और अनाज पैदा करने में मध्य-एशिया के प्रजातंत्रों में इसका नंबर प्रथम है।

प्रधान फसल गेहूँ की है। पहाड़ी ज़िले अपने लिए पर्याप्त अनाज पैदा करते हैं। तियान्-शान् पहाड़ की उपत्यकाएँ धीरे धीरे ढलुआ हुई हैं; और वहाँ काफ़ी पानी है। समुद्र तल से ३,००० मीटर (९७५० फीट) ऊँचे तक खेती आसानी से होती है।

गेहूँ के अतिरिक्त चुकन्दर, कपास और लूसर्न भी पैदा होती है। अनाज के काफ़ी होने पर भी अभी किर्गिज़ लोगों का प्रधान व्यवसाय पशु-पालन है। अच्छे अच्छे चरागाहों के होने के कारण उसके लिए बहुत सुभीता भी है। कल-कारखाने ज़्यादातर अपने यहाँ के कच्चे माल को पक्का करने के लिए स्थापित हैं। इनमें आटे के कारख़ाने, चीनी की फ़ैक्टरी, ऊन धोने और कपास साफ़ करने की गिनियाँ अधिक हैं। फर्गाना की उपत्यका की कोयले की खानें दिन पर दिन उन्नत होती जा रही हैं।

* * * * * *

४—उक्रइन् स०सं०र०

उक्रइन्-संघ-प्रजातंत्र, सोवियत्-संघ की दक्षिण-पश्चिम सीमा और काला-सागर के बीच में अवस्थित है। उक्रइन् का अधिक भाग अत्यन्त उप-जाऊ काली मिट्टी का है। यहाँ की आवहवा नम और शीतोष्ण है; जिस-के कारण कृषि का विकास बहुत हुआ है। अनाज, चुकन्दर, सूर्यमुखी, तथा पशुपालन बहुत सफलता के साथ होता है। इनके अतिरिक्त उक्रइन् में दोन्-बास् की महत्त्वपूर्ण कोयले की खानें तथा क्रीवोइरोग् की लोहे की खानें

है। सोवियत्-संघ में इसको छोड कोई ऐसा प्रदेश नही है; जहाँ बहुत ऊँचे दर्जे का लोह-पत्थर और कोयला पास पास हो। इन दो धातुओं के अतिरिक्त उक्रइन् में मंगानीज, पारा, नमक तथा दूसरे खनिज पदार्थ मौजूद है।

उक्रइन् की नदी दिनयेपेर् यूरोप की सब से बडी नदियों में तीसरा नम्बर—वोल्गा और डेन्यूब दूसरी बडी नदियाँ—रखती है। इसके ऊपरी भाग में जगल अधिक है। बीच में जगली पथरीली जमीन, फिर पथरीली जमीन।

उक्रइन् की जनसंख्या (३,१६,०१,४००) में ८० सैकड़ा उक्रइनी है। इसके बाद १० सैकडा रूमी। यहूदी, पोल, जर्मन, और मोल्दावी दूसरी अल्प-सख्यक जातियाँ हैं। दक्षिण-पश्चिम मे मोल्दावी-स्वायत्त-प्रजातंत्र उक्रइन् के अन्तर्गत है। जनसख्या और आर्थिक दृष्टि से देखने पर उक्रइन् सोवियत् के संघ-प्रजातत्रो मे दूसरे नम्बर पर—अव्वल र०स०फ०स०र०—है।

आर्थिक दृष्टि से उक्रइन् का महत्त्व सोवियत् के लिए और भी अधिक है। *सोवियत्-संघ में लोहे और कोयले के उद्योग का यह सबसे बड़ा केन्द्र है।* मशीनों के कारखाने, मूल रसायन के कारखाने, बिजली के पावर-हाउस, बहुत बडे पैमाने पर यहाँ सगठित किए गये है। अनाज के लिए तो यह सोवियत्-सघ का "ठेक" समझा जाता है। चीनी-आटे आदि के कारखाने भी बहुत है। यही उक्रइन् की प्राकृतिक सम्पत्ति और खेती की समृद्धि है; जिसे देखकर हिटलर के मुँह मे पानी भर आता है। उसकी निगाह हमेशा उक्रइन् के लोहे, कोयले और अनाज की तरफ वैसे ही रहती है; जैसे जापान की आस्ट्रेलिया पर।

उक्रइन् का क्षेत्रफल और जनसख्या सारे सोवियत् के क्षेत्रफल और जनसख्या का १/५ है; लेकिन उपज मे वह सोवियत्-सघ का १/४ अनाज, ३/४ चीनी, आधे मे ज्यादा कोयला, लोहा और नमक पैदा करता है। मशीन बनाने तथा रसायन के उद्योग में १/५ रेलवे में १/६ यहीं है। यहाँ की रेलें सारे सोवियत् की रेलो के माल का १/४ ढोती है।

उक्रइन् के भारी उद्योगो मे हैं—कोयला, लोहा, नमक और दूसरी

धातुओं की खानें; लोहा, फौलाद, रसायन, मशीनरी और बिजली की ताक़त का पैदा करना। १९१३ से मुक़ाबिला करने पर उक्रइन् में लोहे, कोयले की उपज तिगुनी हो गई है। मज़दूर चौगुने बढ़ गये हैं। उपज चौगुने से भी ज़्यादा; और बिजली दस गुना बढ़ी है।

उक्रइन् के उद्योग-केन्द्र हैं, दोन्वास् (दोन् उपत्यका) क्षेत्र में स्तालीनो, वोरोशिलोफ़्ग्राद्, माकेयेव्का, क्रमातोस्क; द्नीयेपेर् उपत्यका में लोहे आदि के ज़ख़ीरों के पास क्रीवोइरोग् और नीकोपोल् हैं। क्रीवोइरोग् और दोन्वास् के बीच में द्नीयेपेर् नदी के किनारे हैं, द्नीयेप्रोपेत्रोव्स्क, द्नीयेप्रोजेर्ज़िन्स्क और ज़ावोरोज़्ये। दोन्वास् और केर्च के लोहे के कारखानों के बीच मारियुपोल् है। उक्रइन् के सब से बड़े शहर हैं—खर्कोफ़्, कियेफ़् और ओदेसा। कियेफ़् राजधानी और पुराना नगर है। उक्रइन् अपने यहाँ से कोयला, धातु, नमक, अनाज, चीनी, भारी मशीनरी, (खान, यातायात और कृषि-संबंधी) बाहर भेजता है; और बदले में मास्को और इवानोवो के कपड़े; मास्को और लेनिन्ग्राद् की बारीक मशीनें, उत्तर से लकड़ी, काकेशस् से मिट्टी का तेल और निचली वोल्गा से मछली लेता है।

*** ***

५—बेलो-रूसिया स०स०र०

यह सोवियत्-संघ के पश्चिमी सीमान्त का प्रदेश पोलैंड के पास अवस्थित है। द्नीना और द्नीयेपेर् नदियाँ इसकी भूमि को सींचती हैं। बाहरी देशों से युद्ध के समय इस प्रजातंत्र का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसीलिए जर्मनी और पोलैंड के आक्रमणों का ख़याल कर उक्रइन् की तरह इसकी सीमा पर भी बहुत जबर्दस्त क़िलेबन्दी की गई है।

बेलो-रूसिया का धरातल दक्षिण की ओर धीरे धीरे ढालुआँ होता गया है। अटलांटिक से आनेवाली हवा का यहाँ की आबहवा पर असर है। सोवियत्-संघ के यूरोपीय भाग के मध्य के प्रदेशों की अपेक्षा यहाँ वर्षा ज़्यादा

होती है। गर्मी भी अपेक्षाकृत कम है, और जाड़ा भी बहुत नहीं है। खास कर उत्तर-पश्चिम के कोने पर, जहाँ कि नदियाँ बहुत जल्द जम जाती हैं। बेलोरूसिया में शाहबलूत, देवदार, मापुल आदि के वृक्ष जंगलों में बहुत पाये जाते हैं। वर्षा की अधिकता के कारण पानी के निकास की कमीवाले स्थानों में दलदलें ज्यादा हैं, जैसा कि दक्षिण-पश्चिम में प्रिप्यात् नदी के किनारे पिन्स्क की विशाल दलदलों के रूप में देखा जाता है। प्रधान खनिज पदार्थ नर्म कोयला है; जो कि ईंधन और खाद दोनों के काम में इस्तेमाल होता है। इनके अतिरिक्त दूसरी चीज मकान बनाने के पत्थर हैं।

प्रजातंत्र की जनसंख्या (५४,६६,४००) में ८० सैकड़ा बेलोरूसी (सफ़ेद रूसी) हैं। रंग में अपेक्षाकृत अधिक गोरा होने के कारण इनको यह नाम मिला है। १० सैकड़ा यहूदी हैं, जो अधिकतर शहरों में रहते हैं। बाकी आबादी रूसी उक्रइनी और पोल् लोगों की है। जारशाही के वक्त में बेलो-रूसिया बहुत पिछड़ा और गरीब देश था, जैसा कि आज भी सरहद पार पोलैंड के अधीन का पश्चिमी बेलो-रूसिया है।

पंचवार्षिक योजनाओं ने आर्थिक, सांस्कृतिक सभी तौर से इसे बहुत आगे बढ़ाया है। पहले ३/४ जनता अनपढ़ थी, लेकिन अब कोई निरक्षर नहीं रह गया। जार की आज्ञा से बेलो-रूसी भाषा का इस्तेमाल मना किया गया था। आज बेलो-रूसी भाषा शिक्षा का माध्यम है। इसी भाषा में २०० समाचार पत्र और हजारों किताबें छपती हैं। बेलो-रूसिया में बीसों ऊँची शिक्षा-संस्थाएँ और कालेज, वैज्ञानिक-अन्वेषणशालाएँ, बेलोरूसी-विज्ञान-एकेडेमी की मार्फत चल रहे हैं।

पंचायती हो जाने के कारण कृषि में जबर्दस्त उन्नति हुई है। १७ लाख एकड़ ज़मीन को दलदलों को सुखा कर खेत और चरागाह के रूप में परिणत किया गया है। खेती की भूमि दो लाख एकड़ से एक करोड़ एकड़ हो गई है। यहाँ की खेती में जानवरों के लिए घास, और आलू, सन, तथा

अनाज खास चीज़ें हैं। डेरी में गायों और सुअरों का पालना ज्यादा है, बल्कि सुअर पालने में तो बेलोरूसिया सारे सोवियत्-संघ में अव्वल है।

यहाँ का उद्योग १९१३ की अपेक्षा १० गुना बढ़ा है; तथा कृषि, काष्ठ और धातु की चीज़ों की तैयारी इसके कारखानों में की जाती है। यहाँ से सुअर का माँस सुअर का बाल, लकड़ी, कागज़, दियासलाई, सीमेंट, काँच और मशीनें बाहर जाती हैं।

*** ***

६—आज़ुर्बाइजान् स०स०र०

काकेशस् के तीन संघ-प्रजातंत्रों [दूसरे दो हैं गुर्जी (जार्जिया) तथा अर्मनी] में एक है। यह कास्पियन समुद्र के पश्चिमी तट से काकेशस् पर्वत माला के भीतर तक चला गया है। कुश और अरख् की नदियाँ इस से बहती हैं। दक्षिण में छोटी काकेशस्-पर्वत-माला इसी के अन्दर है। छोटी काकेशस्-पर्वत-माला के पूर्वी छोर पर नागोर्नी-कराबख नामक स्वायत्त-जिला है। उसकी आबादी अधिकतर अर्मनी लोगों की है; और आज़ु-र्बाइजान् के अन्तर्गत है।

नख़िचेवाम्-स्वायत्त-प्रजातंत्र आज़ुर्बाइजानी तुर्क क़ौम का है।

सारे संघ-प्रजातंत्र की आबादी का $\frac{3}{4}$ आज़ुर्बाइजानी तुर्क हैं। इन के अतिरिक्त अर्मनी, गुर्जी, कुर्द, रूसी, तात्, तालिश् भी बसते हैं। तात् और तालिश् ईरानी जाति से संबंध रखते हैं।

काला-सागर की नम हवा काकेशस् पहाड़ों के कारण आने नहीं पाती इसीलिए आज़ुर्बाइजान् की आबोहवा शुष्क है। निचली भूमि में गर्मी काफ़ी होती है, अतएव मिस्र की तरह यहाँ भी मिस्री कपास बड़ी सफलता के साथ पैदा की जाती है। सिंचाई का अच्छा प्रबन्ध है। इन जगहों पर चावल और लूसरन भी पैदा होती है। पहाड़ी उपत्यकाओं में अंगूर, सेब, आदि मेवों के बग़ीचे तथा रेशम बहुतायत से होता है। दक्षिणी छोर पर

लिकोरन् के करीब—जहाँ कि पहाड समुद्र के तट तक पहुँच गये हैं—चाय, नीबू, नारंगी आदि गर्म मुल्कों की चीजें पैदा होती है। आजुर्बाइजान् में पशुपालन भी काफी होता है।

यह सब होते हुए भी आजुर्बाइजान् का सब से बड़ा धन धरातल की उपज से नहीं, बल्कि उसके हजारों फीट नीचे से आता है। बाकू के करीब अप्शेरोन् प्रायद्वीप है, जो कि संसार का सब से बडा तैल-क्षेत्र है। यही से स०स०र० के लिए आवश्यक तेल और पेट्रोल का अधिक भाग आता है। १९१३ में ७० लाख टन निकलता था, लेकिन १९३६ में दो करोड़ दस लाख टन अर्थात् तिगुनी उपज हुई। बाकू से तेल ले जाने के लिए दो रास्ते बने हुए हैं। एक कास्पियन (कस्पिस्की) समुद्र द्वारा अस्त्राखान् और वहाँ से वोल्गा नदी, फिर वोल्गा-मास्को नहर आदि से स्टीमर द्वारा रूस और दूसरे देशों में जाता है। दूसरा बाकू से पाइपों द्वारा बातूमी बन्दर को, जहाँ से जहाज द्वारा दुनिया के और देशों में (भारत में भी) जाता है।

आजुर्बाइजान् अपने यहाँ से पेट्रोल तथा उससे बनी दूसरी चीजें, कपास, चावल, फल, शराब, रेशम, और मछली सोवियत् के दूसरे भागों मे भेजता है।

* * *   * * *

७—अर्मनी स०स०र०

काकेशस् पर्वतमाला के पश्चिम तरफ यह प्रजातन्त्र अवस्थित है। गुर्जी की तरह इसके भी दक्षिण तुर्की प्रजातन्त्र है; और दक्षिण तरफ यह ईरान की सीमा से मिला हुआ है। गुर्जी इससे उत्तर-पश्चिम और आजुर्बाइजान् उत्तर-पूर्व है। अर्मनी तिब्बत की तरह एक ऊँचे पहाड़ी मैदान पर अवस्थित है। चारों तरफ ऊँची पर्वत-मालाएँ इसे घेरे हुए हैं, जिनके कारन बादल भीतर नहीं पहुँचने पाते; और वर्षा बहुत कम होती है। यहाँ की आबोहवा खुश्क है और अपने अक्षांश की अपेक्षा अधिक सर्द है। वर्षा

की कमी के कारण जंगल नाममात्र हैं। पहाड़ नंगे हैं। भूमि ज्वालामुखी के लावा और राख से बनी होने के कारण बहुत उपजाऊ है। अर्मनी के दक्षिणी किनारे पर बहने वाली अरख़ नदी की उपत्यका खेती के लिए बहुत अनुकूल है।

जनसंख्या (११,०६,२००) का ८५ सैकड़ा अर्मनी लोग हैं। संस्कृति और इतिहास में यह बहुत पुरानी जाति है। एक लाख के करीब अर्मनी सोवियत्-संघ के भिन्न भिन्न प्रजातंत्रों—विशेषकर काकेशस् में रहते हैं। अर्मनी प्रजातंत्र में तुर्क, कुर्द, गुर्जी और रूसी भी रहते हैं।

अर्मनी प्रजातंत्र में कृषि अधिकतर अरख् नदी की उपत्यका और येरे-वान् के ख़लार में होती है। यहाँ नहर की सिंचाई से कपास की खेती और मेवों के बग़ीचे चारों तरफ़ लगे हुए हैं। दूसरी जगहों में अधिकतर पशु-पालन का काम होता है; जिनके लिए पहाड़ों पर जगह जगह चरागाहें हैं। खेती लोगों की आवश्यकता के लिए काफ़ी नहीं।

अर्मेनिया के उद्योग-धंधे में खाद्य, (टिन-बन्द फल, शराब आदि) कपड़े के कारखाने, और ताँबे तथा इमारत के लिए प्रयुक्त होने वाले पत्थरों की खानें हैं।

हाल में बिजली पैदा करने के लिए कितने ही पावर-हाउस (शक्ति गृह) तैयार किये गये हैं। सेवान् झील अरख् की उपत्यका से १००० मीतर (प्राय: ३३०० फीट) ऊँची है। जंगा नदी इस झील का पानी अरख् में ले जाती है। जंगा पर कई पावर-स्टेशन बन चुके हैं; जिनमें कानाकेर एक है। सेवान् झील से जो सस्ती बिजली तैयार होने वाली है, वह अर्मनी के सारे आर्थिक स्वरूप को बदल देगी।

अर्मनी प्रजातंत्र, सोवियत् के अन्य भागों में ताँबा, इमारत के पत्थर, मेवे, ब्रांडी, ऊन और चमड़े भेजता है।

*** ***

८—गुर्जी (जार्जिया) स०स०र०

गुर्जी प्रजातंत्र काकेशस् पर्वत-माला के पश्चिमी भाग में अवस्थित है। उत्तर की तरफ की ठंडी हवा काकेशस् के पहाड़ों के कारण यहाँ नहीं आती; और पश्चिम तरफ़ से काला-सागर की नम और गर्म हवा के आने का रास्ता खुला हुआ है। इसी लिए यहाँ की प्राकृतिक शोभा, वृक्षों और वनस्पतियों से पहाड़ों की हरियाली बड़ी मनोहारिणी है। देश सारा पहाड़ी है। यद्यपि सोवियत्-संघ के क्षेत्रफल का १/६६ हिस्सा ही यह प्रजातंत्र है, लेकिन इसकी भूमि बहुत उपजाऊ है। जहाँ आबादी नहीं है, वहाँ भी हरे भरे बड़े बड़े चरागाह तथा जंगल हैं। ऊपर निरन्तर बर्फ़ से ढके पर्वत-शिखर हैं। खेत और चाय, नारंगी नीबू के बगीचे हर तरफ़ दिखाई देते हैं। यहाँ के जंगलों में बहुत काम की कीमती लकड़ियाँ हैं। इसकी तेज़ चलनेवाली पहाड़ी नदियाँ बिजली पैदा करने के लिए बहुत उपयुक्त हैं, और उनपर कितने ही जल-विद्युत्-पावर-स्टेशन भी बन चुके हैं। त्क्वर्चेली और त्कीबुली में कोयला और शीरक में तेल निकाला जाता है। मगानिज के लिए संसार का सब से बड़ा ढेर चियातुरा यहीं पर है। गर्म और गन्धक के पानी के चश्मे तथा उबलते पंक के सोते यहाँ पर कितने ही हैं; जहाँ बीमार तथा अस्वस्थ लोग चिकित्सा के लिए आया करते हैं।

जन-संख्या (३१,१०,६००) का २/३ गुर्जी लोग हैं, जिनकी सभ्यता बहुत पुरानी और उन्नत है। उनके बाद १/१० अर्मनी हैं। अल्प-संख्यक जातियों में अब्खाज़ी, ओसेतिन्, रूसी, उक्रइनी, यूनानी और यहूदी हैं।

इस संघ-प्रजातंत्र के अन्तर्गत दो स्वायत्त-प्रजातंत्र हैं—एक अब्खाज़ी जिसकी राजधानी सुखुमी है; और दूसरी अद्जार जिसकी राजधानी बातूमी है। इनके अतिरिक्त ओसेतिन् स्वायत्त-ज़िला है, जिसका केन्द्र स्तालिनिर् है।

गुर्जी के मुख्य कृषिप्रधान प्रदेश हैं—

१—नम और गर्मीला काला-सागर का तट, जिस की उपज है—चाय, नीबू, नारंगी, युक्लिप्टस्, कपूर, और अव्खाजिया का अच्छी जाति का तंवाकू (सोवियत् में सिर्फ यहीं तुर्की तंवाकू पैदा होती है)।

२—इमेरेतिया—(केन्द्र में कुतइसी आदि अंगूर और रेशम के लिए मशहूर हैं।)

३—काखेतिया (कुरा नदी की शाखा अल्जानी की उपत्यका) सेव, अंगूर पैदा करती है। अंगूर यहाँ का खास तौर से मशहूर है।

इस प्रजातंत्र के औद्योगिक केन्द्र निम्न शहर हैं—

त्विलिसी (तिफ़्लिस्)—यहाँ कितने ही तरह के कल-कारखाने हैं; जिनमें एक काकेशस् के तीनों संघ-प्रजातंत्रों की आवश्यकता के लिए तेल शराब, रेशम और चाय के काम की मशीनें तैयार करता है।

कुतइसी—यहाँ भोजन, रेशम और रसायन की बहुत सी फ़ैक्टरियाँ हैं। चियातुरा और जेस्तफ़ोनी में मंगानीज़ के निकालने और तैयार करने के कितने ही कारखाने हैं।

बातूमी—मिट्टी के तेल के साफ़ करने तथा भोजन के कारखाने।

सुखुमी—तंवाकू और भोजन के कारखाने।

त्क्विगुली और त्क्वर्चेली में कोयले की बड़ी बड़ी खानें हैं।

सोवियत्-शासन की स्थापना के बाद यहाँ २०० बड़े बड़े कारखाने और फ़ैक्टरियाँ तैयार हुई हैं; और पानी से बिजली पैदा करने के अनेक स्टेशन कायम किये गये हैं। उद्योग-धंधों से गुर्जी को जो आमदनी होती है; वह युद्ध के पहले की आमदनी से नौ गुनी अधिक है।

गुर्जी प्रजातंत्र सोवियत् के दूसरे भागों में मंगानिज, लकड़ी, तंवाकू, चाय, मेवे, रेशम भेजता है।

*** ***

गुर्जी के यहूदी—यहूदियों के ऊपर यूरोप में जुल्म के पहाड़ ढाये जा रहे

है; इसे हम आये दिन देख सुन रहे हैं। जर्मनी में शताब्दियों से बसे हुए यहूदियों पर हिटलर ने क्या क्या अत्याचार किया, यह सभी को मालूम है। आइन्स्टाइन् जैसे संसार के महान् वैज्ञानिक को देश छोड़ कर भागना पड़ा। आस्ट्रिया में हिटलर का कदम पहुँचते ही दुनिया का सर्वोच्च मनोवैज्ञानिक फ़्राउड् भागने पर मजबूर हुआ। क्रान्ति के पहले रूस में भी यहूदियों के साथ बड़ा बुरा वर्ताव होता था; लेकिन अब हालत बिलकुल दूसरी है।

यहाँ हम गुर्जी (जार्जिया) में पहले से बसे हुए अल्प-संख्यक यहूदियों के बारे में एक प्रत्यक्ष-दर्शी के वाक्य उद्धृत कर रहे हैं—

सोवियत्-शासन की स्थापना के पहले जार्जिया के यहूदी शताब्दियों से भयंकर अत्याचार से पीड़ित थे। १८ वीं शताब्दी के आरंभ में—जब कि रूसी ज़ार ने जार्जिया की स्वतन्त्रता का अपहरण किया—यहूदियों की हालत और भी खराब हो गई। यहूदी खेती नहीं कर सकते थे। कारखानों में काम नहीं पा सकते थे। हाई स्कूलों और उच्च शिक्षण-संस्थाओं में उन्हें पढ़ने का अधिकार नहीं था। यहाँ के अधिकांश यहूदी अनपढ़ थे। सब तरफ़ से उनका रास्ता बन्द था। वह फेरी कर के या छोटी छोटी दुकानें रख कर जीविका कमाते थे। १९१७ से २१ तक मेन्शेविकों के हाथ में जार्जिया था; उस वक्त यहूदियों पर कोई भी जुल्म करने से वे बाज नहीं आये। १९२१ में सोवियत्-शासन की स्थापना के बाद यहूदियों का नया जीवन आरंभ हुआ। अब उन्हें हर क्षेत्र में बढ़ने की स्वतंत्रता थी। आज गुर्जी के ३५ हज़ार यहूदी अपने अन्य देश-भाइयों की भाँति ही साम्यवादी नव-निर्माण में लगे हुए हैं।

उन में २० हजार यहूदी कल-कारखानों में काम करते हैं। वोज़्येत् (यहूदी श्रमिकों को खेत पर बसाने वाली सभा) ने ५३ प्रकार की भिन्न-भिन्न दस्तकारियों में यहूदियों को प्रवेश कराने के लिए स्थानीय संस्थाएँ बनाई है। इन दस्तकारियों से १९२४ में २ लाख रूबल की आमदनी हुई थी; और

इस साल ९० लाख की। कुनैसी नगर में यहूदियों की बड़ी तादाद बसती है। उनमें से ९३ सैकड़े आज कारखानों में काम करते हैं, जब कि १९२७ में नौ सैकड़ा ही थे। इन कमकरों में बहुत से प्रसिद्ध तूफ़ानी कमकर और स्तखानोवी श्रमिक हैं। इनमें से कितनों के नाम प्रजातंत्र के सन्मान-फलक (प्रजातंत्र-भवन में टँगा एक तख्ता जिसपर प्रसिद्ध प्रसिद्ध पुरुषों का नाम सन्मान के लिए लिखा रहता है) पर लिखे हुए हैं।

१२ यहूदी-कोल्खोज् संगठित किये गये हैं; जिन में ४००० आदमी काम करते हैं। अपने खेतों में वे चाय, तंबाकू, गेहूँ, अंगूर तथा दूसरे फल पैदा करते हैं। जिन लोगों को खेती में काम करने का कभी मौक़ा नहीं दिया गया, वह अपने कोल्खोज़ों में दूसरों से बाज़ी मार रहे हैं। उदाहरणार्थ वनोस्तुसवा कोल्खोज् को ले लीजिए। इसकी स्थापना १९२७ में हुई थी। आज इसमें ८५ परिवार हैं। पिछले वर्ष यहाँ हर कार्य-दिन पर (कुलखोज् में ख़ास परिमाण में काम करने का एक एक दिन जिसके अनुसार कि कमकरों को मज़दूरी मिलती है) ८ सेर गेहूँ, २ सेर सूर्यमुखी का बीज, (खाने के लिए) १॥ सेर सूर्यमुखी तेल तथा ५॥ रूबल नक़द मिला था। आकोन्खोरीखोली परिवार में ३ बालिग़ व्यक्ति हैं। इन सब ने साल में १०५० दिन काम किये। दूसरा किसान मोशेमामिस्त्वालोफ़् और उसकी स्त्री ने ९२० दिन काम किये। क्रीविलीमेरी नामक एक दूसरे यहूदी कोल्खोज़ी किसान ने एक साल में इतना कमाया था; कि उससे अपने लिए एक घर बनाया, एक गाय और कुछ भेड़ें खरीदीं। अपने घर के बाग़ में २०० मेवों के दरख़्त लगाये; और उसीमें छोटी सी अंगूर की बग़ीची बनाई।

अख़ल्त्सिख् कोल्खोज़् में सिर्फ़ फलों और तरकारी का काम होता है। १९३७ में उसने एक लाख रूबल सिर्फ़ सेब के बेचने से पैदा किये।

गुर्जी प्रजातंत्र-सरकार ने कोल्खिदा की नीची भूमि—जिसे १९३६ में पानी का निकास बना कर सुखाया था—में से २००० एकड़ विदेश

मे आये हुए यहूदियों के लिए देना निश्चित किया है। जार्जिया की भिन्न-भिन्न जगहों मे आये हुए १०८ परिवार अभी ही वहाँ बस गये हैं। यहूदियों को खेती पर लगाने के लिए एक समिति है, जो वोज़्मेत् की सहायता मे यहूदियों को बड़ी मदद दे रही है। समिति बाहर से आए हुए हर एक परिवार को निम्नलिखित चीज़ें देती है—

आवश्यक चीज़ों के साथ एक मकान, और ½ एकड़ घर बगीचों के लिए। उन्होंने एक कोल्खोज् जार्जिया की कम्युनिस्ट पार्टी के मंत्री ल० प० बेरिया के नाम से संगठित किया है। इस कोल्खोज् में एक स्कूल, एक क्लब, कुछ बच्चेखाने और एक अस्पताल स्थापित किया गया है।

कोल्खिदा की नई भूमि पर ५०० परिवार बस चुके हैं। ये लोग सिर्फ मेवों की खेती कर रहे हैं।

स०स०स०र० की सरकार भी गुर्जी के यहूदियों की मदद कर रही है। पिछले दो सालों में खेती और उद्योग-धन्धे में उनकी सहायता के लिए उसने ७० लाख रूबल (३२ लाख रुपये) दिये हैं। १९३८ में ८० लाख और दिये जायेंगे। गुर्जी के यहूदी शिक्षा और संस्कृति मे बहुत तेज़ी से बढ़ रहे हैं। उनमें अब एक भी अनपढ़ नहीं रहा। पढ़ने की अवस्था वाले सभी बच्चे स्कूल जाते हैं। शिक्षा का माध्यम गुर्जी भाषा है; जो कि यहाँ के यहूदियों की मातृभाषा है। जार्जिया के १,००० यहूदी युवक और युवतियाँ मास्को लेनिनग्राद् आदि के विश्वविद्यालयों मे पढ़ती है। गुर्जी के यहूदियों में अब कितने ही कृषि-विशेषज्ञ, डाक्टर, अध्यापक, अर्थशास्त्री, इंजीनियर और लेखक हैं।

*** ***

६—उज़्बकस्तान स०स०र०

मध्य-एशिया मे ताशकन्द से लेकर अफ़ग़ानिस्तान की सरहद वक्षु (आमू-दर्या) नदी तक उज़्बक प्रजातंत्र फैला हुआ है। यह भी सोवियत्

संघ के ११ प्रजातंत्रों में है। इसके उत्तर में कज़ाकस्तान और किर्गिज़स्तान, पूर्व में ताजिकस्तान और पश्चिम में तुर्कमानस्तान है। उज़्बेकस्तान का अधिक हिस्सा पहाड़ों की जड़ या नीची उपत्यका है; जहाँ नहर की सिंचाई की बड़ी गुंजायश है। तुर्कमानस्तान, ताजिकस्तान, किर्गिज़स्तान तीनों को मिला कर नहर की सिंचाई की जितनी जमीन है, उतनी अकेले उज़्बकस्तान में है। फ़र्गाना की उपत्यका मध्य-एशिया की सब से बड़ी उपत्यकाओं में है। बाबर का ख़ान्दान पहले यहीं शासन करता था। ताशकन्द की उपत्यका भी बहुत ज़रख़ेज़ और आबाद है। उज़्बेकस्तान के दक्षिणी हिस्से में समरकन्द, बुख़ारा और ख्वार्ज़म् के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर हैं।

ताशकन्द राजधानी है, जिसकी आबादी आठ लाख के करीब है; और दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। यहाँ रेशमी, ऊनी और सूती कपड़ों के बड़े बड़े कारख़ाने हैं। एक कारख़ाना ट्रैक्टर और मशीन के पुर्जों के लिए भी बनाया गया है। कपड़े के मिलों की मशीनरी बनाने का कारख़ाना बन चुका है। एक नाइट्रेट खाद का कारख़ाना बन रहा ह। चिर्चिक का महान् हाइड्रो-एलेक्ट्रिक-पावर-स्टेशन भी काम करने लगा है।

उज़्बक तुर्कजाति से संबंध रखनवाली एक कौम है। इसमें ईरानी ख़ून का बहुत सम्मिश्रण हुआ है। सोवियत् मध्य-एशिया में जनसंख्या और शिक्षा के लिहाज़ से यह सब से बड़ी क़ौम ह। पहले ही से उज़्बक लोगों की प्रधान जीविका थी, खेती और बाग़बानी। समरकन्द और बुख़ारा के अंगूर तथा सेब अपने स्वाद के लिए संसार में प्रसिद्ध थे। आजकल उज़्बकस्तान की प्रधान खेती है बारीक मिस्री कपास। कितने गाँवों और इलाक़ों में तो कपास छोड़ कर दूसरी खेती होती ही नहीं। उज़्बक लोग कृषिकला में बहुत आगे बढ़े हुए हैं। वे मध्य-एशिया के अन्य प्रजातंत्रों का भी इस विषय में पथप्रदर्शन कर रहे हैं। उज़्बकस्तान में कराकल्पक (वक्षु नदी के निचले भाग में) एक अल्प-संख्यक जाति है; जिसको संस्कृति

और भाषा के खयाल से एक सोवियत्-स्वायत्त-साम्यवादी-प्रजातंत्र के तौर पर संगठित किया गया है।

उज़्बकस्तान मध्य-एशिया के चारों प्रजातंत्रों (दूसरे तीन किर्गिज़स्तान, ताजिकस्तान और तुर्कमानस्तान हैं) में सब से धनी है। सोवियत् मध्य-एशिया की आधी जनसंख्या आधी खेत की भूमि, ३/४ कलकारखाने, १/२ रेलवे और सब से बड़े शहर उज़्बकस्तान ही में हैं। अकेला उज़्बकस्तान, मध्य-एशिया के अन्य तीनों प्रजातंत्रों की सम्मिलित उपज से सात-आठ गुनी अधिक कपास पैदा करता है। ऊन और रेशम पैदा करने में भी यह मध्य-एशिया का सब से बड़ा प्रजातंत्र है।

उज़्बकस्तान में मेवों की पैदाइश बहुत होती है; लेकिन गेहूँ अपने लिए काफी नहीं पैदा कर सकता। इसे वह कज़ाकस्तान किर्गिज़स्तान और पश्चिमी सिबेरिया (तुर्क-सिबिर रेलवे द्वारा) से पाता है।

लड़ाई के पहले से तुलना करने पर उज़्बकस्तान की औद्योगिक उपज छ गुना और कपास की उपज तीन गुना बढ़ गई है।

*** ***

१०—तुर्कमानस्तान स०स०र०

तुर्कमानस्तान में मिस्र की तरह काफी धूप और कम वर्षा होती है। सिंचाई से ही खेती का होना संभव है, और पानी सिर्फ दक्षिणी हिस्सों में ही सुलभ है; जहाँ कि पास के पहाड़ों से नदियाँ आती हैं। पूर्व में वक्षु नदी की उपत्यका भी इसके लिए उपयुक्त है। इन्हीं दक्षिण और पूरब के हिस्सों में प्रायः सारी आबादी है। बाकी प्रजातंत्र में कराकुम् नामक स०स०र० की सब से बड़ी मरुभूमि है, जिसके कुछ हिस्सों से चरागाह का काम लिया जा सकता है। तुर्कमानस्तान का क्षेत्रफल उक्रइन के बराबर है। लेकिन जनसंख्या (१२,६८,६००) में यह उसका [illegible] ही है।

प्रधान आबादी तुर्कमान लोगों की है; जो सारी जनसंख्या की [illegible]

है। वह अभी थोड़े दिनों तक खानाबदोश चरवाहे थे। शहरों में रूसी और अर्मनी भी बसते हैं और गाँवों में कितनी जगह उज़्बक, ताजिक़ और क़राकल्पक दिखाई पड़ते हैं।

तुर्कमानस्तान कपास की खेती करता है। अच्छी जाति के रिसाले के घोड़ों को पैदा करता है; और कराकुला की प्रसिद्ध भेड़ें पोसता है।

औरतें क़ालीन बुनती हैं। खेती के अतिरिक्त पिछले चन्द वर्षों में भोजन-सम्बन्धी वस्तुओं के कारखाने तथा दूसरे हलके उद्योग ज़्यादा बढ़े हैं। कास्पियन समुद्र के चेलेकन द्वीप और नेवित्दाद के पहाड़ों में पेट्रोल निकलने लगा है। कराकुम् से गन्धक निकाली जाती है; और करावोगज्-गुल की खाड़ी (कास्पियन सागर) से मिराविलाइट (रासायनिक कार-खानों के काम का एक कच्चा माल) प्राप्त होता है।

तुर्कमानस्तान अपने यहाँ से कपास, रेशम, कालीन, मिट्टी का तेल और फल दूसरे प्रजातंत्रों को भेजता है।

*** ***

१५ दिसंबर को निर्वाचन के परिणाम की प्रसन्नता में अश्कावाद शहर के कार्लमार्क्स-चौक में २० हज़ार जनता एकत्र हुई थी। सभा ने अपने प्रति-निधि डिपुटी आन्द्रेयेविच् (जो कि अब संघ-सोवियत् के स्पीकर हैं) के पास एक पत्र भेजा था—

"प्रिय अन्द्रेयेविच्,

"तुर्कमानियाँ की जनता हमारी पार्टी के विश्वासपात्र पुत्र साथी स्तालिन् के सहचर-सैनिक तुम्हें, पार्लियामेंट-सदस्य चुने जाने पर बधाई देती है। एकमत से तुम्हें अपना वोट दे कर तुर्कमान जनता हमारे यशस्वी बोल्शेविक पार्टी और जनता के प्रिय नेता साथी स्तालिन् के प्रति अपना विश्वास प्रकट किया।

"अश्कावाद नगर के ५० हज़ार निर्वाचकों की सभा में तुमने यह महत्त्वपूर्ण वाक्य कहे थे—

'साथियो, मैं अपने निर्वाचकों से सिर्फ एक ही बात कहना चाहता हूँ; कि मैं आप के अपने ऊपर विश्वास को महान् सोवियत्-संघ की भलाई और सोवियत् तुर्कमानस्तान की समृद्धि के लिए काम कर के अपने को योग्य साबित करूँगा। और साथी निर्वाचकों, तुमसे यह भी कहता हूँ; कि मैं जरा भी बिना इधर उधर हुए महान् लेनिन् के बताये हुए रास्ते पर साथी स्तालिन् का अनुगमन करते हुए चलूँगा।'

"तुर्कमानियाँ जनता तुम्हारे इन शब्दों को अपने डिपुटी की महाप्रतिज्ञा के तौर पर याद रखेगी। ....

"आगे बढ़े हुए रूसी श्रमिक-श्रेणी की मदद, बोल्शेविक् पार्टी के नेतृत्व, जनता के महान् नेता, साथी स्तालिन् और उनके सहकारियों की सहायता से तुर्कमानिया—जो पहले रूसी जार का एक परतंत्र उपनिवेश और बहुत पिछड़ा हुआ देश था—अब एक समृद्ध साम्यवादी देश बन गया है। सोवियत्-संघ के लोगों की अटूट मित्रता और भ्रातृभाव दिन पर दिन बढ़ता और मजबूत होता जा रहा है। जारशाही की विनाशपूर्ण नीति—एक जाति को दूसरी जाति से लड़ाना—हमेशा के लिए नष्ट की जा चुकी है। जातियों में ऊँच-नीच के भाव और पारस्परिक वैमनस्य भूतकाल की बात हो गई है। तुर्कमान जनता ने अपने कल-कारखानों और कोल्खोज् की खेती में स्तखानोफ्-आन्दोलन को बड़े जोर से आगे बढ़ाया है। उसका अपनी बोल्शेविक् पार्टी और महान् साम्यवादी मातृभूमि के प्रति असीम प्रेम है।

"प्रिय अन्द्रेयेविच्, हम प्रतिज्ञा करते हैं; कि हम हर तरह से अपनी राजनैतिक जागरूकता को और आगे बढ़ायेंगे। लेनिन्-स्तालिन् की महान् पार्टी के हम सच्चे अनुयायी होंगे। स०स०स०र० की जनता के लोगों के पारस्परिक भ्रातृभाव को सुदृढ करेंगे, और तुर्कमानिया के कल-कारखानों और कोल्खोज़ी खेती में स्तखानोफ्-आन्दोलन को और भी आगे बढ़ायेंगे।

"हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम हाथ बन्द कर बैठेंगे नहीं, बल्कि अपनी साम्यवादी जन्मभूमि के हित के लिए काम करेंगे; और अपनी महान्

सोवियत्-भूमि की शक्ति को समुन्नत और सुदृढ़ करेंगे।"

*** ***

११—ताजिकस्तान

११ संघ-प्रजातंत्रों में एक है, और पामीर की ऊँची पर्वतमालाओं में स्थित है; इसी लिए सारी जमीन ऊँची और पहाड़ी है। यहाँ की कोई भी उपत्यका साढ़े तीन हज़ार मीतर (११,३५० फीट) से कम ऊँची नहीं है। पामीर हिमालय पर्वतमाला ही का पश्चिमी छोर है; इस लिए ताजिकस्तान अपने प्राकृतिक दृश्यों में बहुत कुछ ऊपरी हिमालय से मिलता है। भारत से सब से नजदीक का सोवियत् भू-भाग ताजिकस्तान ही है। भारत और ताजिकस्तान की सीमा थोड़ी दूर तक उत्तर की ओर मिलती है, बाक़ी के बीच में अफ़ग़ानिस्तान की एक पतली चिट् डाल दी गई है जो कहीं कहीं चालीस ही मील चौड़ी है। ताजिकस्तान में सोवियत् की तैयारियों को ही देख कर अंग्रेज़ी सरकार ने तीन साल पहले गिल्गिन् का इलाक़ा कश्मीर-राज्य से ले कर अपने हाथ में कर लिया; और वहाँ हवाई अड्डा और फ़ौजी क़िलाबन्दी का इन्तज़ाम किया गया। ताजिकस्तान की पूर्वी सीमा चीनी-तुर्किस्तान (सिङ्-क्याङ्) से मिलती है।

स०स०स०र० का सर्व्वोच्च पर्वतशिखर—स्तालिन्गिरि (७४९५ मीतर[1]=२४,३५९ फीट) और लेनिन्गिरि (७१२७ मीतर=२३,१६३ फीट) यहीं हैं।

वक्षुगंगा (आमू-दरिया) और उसकी बहुत सी शाखाएँ हिसार और वक्षु आदि ताजिकस्तान के हिमाच्छादित पर्वतों से ही निकलती हैं।

ताजिकस्तान का पश्चिम वाला निचला भाग खेती के लिए बहुत उपयोगी है; और यहाँ अच्छी जाति की मिस्री कपास होती है।

---

[1] १मीतर=तीन फ़ीट तीन इंच के क़रीब।

फ़र्गाना की उपत्यका का ऊपरी भाग (लेनिनाबाद के करीब) ताजिकस्तान में है। ताजिकस्तान का दक्षिणी हिस्सा कुछ गर्म और सूखा है; और वहाँ नहर की सिंचाई की जरूरत पड़ती है। पश्चिमी और उत्तरी ढलानों में पानी ज्यादा बरसता है और बिना सिंचाई के ही बहुत सी जमीन में खेती की जाती है।

ताजिकस्तान की आबादी (१३,७२,७००) का ¾ ताजिक् लोगों का है। इनकी भाषा फ़ारसी की एक बोली है, जिसे कि क्रान्ति से पहले लिखने पढ़ने में नहीं उपयुक्त किया जाता था। अब वह साहित्य और शिक्षा के माध्यम की भाषा है; और रोमन लिपि में लिखी जाती है। "ताजिकस्तान-सुर्ख़" राजधानी स्तालिनाबाद से निकलने वाला दैनिक पत्र है। ताजिक वही बहादुर कौम है। सातवीं आठवीं शताब्दी में इन्होंने अरबों को नाकों चने चबवाये। मध्य-एशिया में जिनको काबू में करने में अरबों को सब से ज्यादा दिक्कत हुई, वह यही ताजिक थे। ताजिकस्तान के अलावा १५ लाख के करीब ताजिक अफ़गानिस्तान में बसते हैं, जिनमें से बहुत अधिक तो ताजिकस्तान की सरहद के करीब के अफ़गानी इलाकों में रहते हैं। ताजिक् इन्दो-यूरोपीय वंश के होने से शकल सूरत में रूसियों से ज्यादा मिलते हैं; इसी लिए रूसियों के संग शादी-विवाह करने और पश्चिमी रीति-रिवाज अपनाने में यह बहुत आगे बढ़े हुए हैं। ताजिकस्तान की नदियाँ तेज और पहाड़ी होने के कारण सस्ती बिजली पैदा करने के लिए बहुत उपयुक्त हैं; और सोवियत् सरकार उनसे खूब फायदा उठा रही है।

ताजिक् के बाद इस प्रजातंत्र में बसने वाली दूसरी संख्या में बड़ी जाति उज़बक है। इनकी बस्ती अधिकतर पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में है। पश्चिमी पामीर में एक और ईरानी कौम बसती है, जो भाषा और आकार में ताजिकों से बहुत मिलती जुलती है। ऊपर के ऊँचे पहाड़ी भागों पर किर्गिज़ लोग बसते हैं, जोकि कुछ समय पहले तक खानाबदोश चरवाहे

थे। पामीर खास में गोर्नो-बदख्शाँ नामक एक स्वायत्त-ज़िला है, जिस-की जनसंख्या ४० हज़ार है। क्रान्ति के बाद ताजिकस्तान ने बहुत तरक्की की है। कुछ साल हुए तिर्मिज से एक रेलवे-लाइन राजधानी स्तालिनाबाद (भूतपूर्व दुशाम्बे) तक ले जाई गई है। दुर्गम पहाड़ों पर बहुत सी मोटर की सड़कें बनाई गई हैं। स्तालिनाबाद-ताशकन्द, ओश्-खोरोग् (गोर्नी बदख्शाँ की राजधानी) की सड़कें उन्हीं में से हैं। ताजिकस्तान में कपास के अलावा ऊन, और रेशम भी बहुत पैदा होता है। पेट्रोल और राँगे आदि की खानें निकली हैं; जिनमें काम हो रहा है।

६—लेनिन्

(क्रान्ति-विजेता)

वोल्गा रूस की विशाल और पवित्र नदी है। इस की पवित्रता रूस के ईसाई-धर्म स्वीकार करने से पहले थी। विशालता तब भी थी और अब भी है। यह विशालता उसकी लंबाई चौड़ाई और पानी की गहराई के ही कारण नहीं है, बल्कि यह सदा वीरप्रसविनी रही है। और कैसे वीर? जिन्होंने दलितों के लिए युद्ध किया। पुगाचोफ् यहीं हुआ था, राजिन् यहीं पैदा हुआ था। उन्होंने पीड़ित किसानों के पक्ष में तलवार उठाई थी।

१८७० की २२ अप्रैल को उसी वोल्गा के मध्यवर्ती प्रदेश के सिम्बिर्स्क (वर्तमान उल्यानोफ्) नगर में ब्लादिमिर् इलिच् उल्यानोफ् पैदा हुआ।

ब्लादिमिर् का बाप इल्या निकोलायेविच् उल्यानोफ् सिम्बिर्स्क प्रान्त के प्राइमरी स्कूलों का इन्स्पेक्टर था। उसकी पत्नी मरिया अलेक्सन्द्रोव्ना एक छोटे से सम्भ्रान्त जमींदार की लड़की थी। उसके बाप की जमींदारी कज़ान् प्रान्त में थी। गर्मी के दिन अकसर परिवार के लोग वहाँ बिताया करते थे।

इल्या उल्यानोफ़् के छः बच्चे थे। सब से बड़ा अलेक्सन्द्र था, फिर ब्लादिमिर्, फिर दमित्रि। अन्ना, वोल्गा, मारी, तीनों छोटे बच्चे थे। हमें काम है ब्लादिमिर् से। ब्लादिमिर् के छोटे भाई-बहनों ने भी क्रान्ति के लिए काम किया, लेकिन ब्लादिमिर् की चमक में उनको पहचानना मुश्किल है। हाँ, अलेक्सन्द्र का ब्लादिमिर के जीवन के निर्माण में खास स्थान है। इसलिए उसे छोड़ा नहीं जा सकता।

शताब्दियों से ज़ार का निरंकुश शासन रूस की भूमि पर चलता रहा। जिनको आत्मसम्मान का कोई खयाल न था, जो संसार के सुखदुख,

पीड़ा-अत्याचार को अदृश्य शक्ति के हाथ का खेल समझ कर सन्तोष कर सकते थे, उन्हें ज़ार के अत्याचार के ख़िलाफ़ क्यों शिकायत होती! ज़ार के नीचे बहुत से सामन्त, या ज़मींदार-राजा थे। कितनी ही बार ज़ार के वर्ताव से इनके आत्मसम्मान को ठेस लगी। कभी इन्होंने विद्रोह भी किया, लेकिन विद्रोह का कारण अधिकतर भावुकता पर निर्भर था। वह किसी ठोस आर्थिक भित्ति पर अवस्थित न था। ज़ार को भी इन थोड़े से आदमियों—जिनका स्वार्थ ज़ार के स्वार्थ से बद्ध था, और समाज में भी जिनका स्थान ज़ार के बाद सब से ऊँचा था—को ख़ामख़ाह चिढ़ाने की आवश्यकता न थी। यदि किसी ज़ार ने चिढ़ाया, तो यह उसकी अदूरदर्शिता थी। और यदि कोई चिढ़ा, तो यह भी वैसी ही बात थी।

महान् पीतर् चाहता था कि रूस भी पश्चिमी यूरोप का समकक्ष बने, वह भी उसके ज्ञान-विज्ञान से लाभ उठाये। पीतर से पहले रूस भी एशिया का ही यूरोप के भीतर घुस गया भाग सा मालूम होता था। आज भी रूसियों के वर्ताव में बहुत सी बातें एशिया से मिलती हैं। पीतर् यह भी चाहता था कि उसके यहाँ भी बनियों और व्यापारियों की सत्ता बढ़े और देश अधिक समृद्ध हो। उस वक़्त बनियों का पक्ष लेने का ख़याल लेकर ज़मींदार-राजाओं ने पीतर् का कुछ हल्का सा विरोध किया। पीछे रूस में भी कल-कारख़ाने बढ़े। सम्पत्ति के साथ साथ बनियों की मान-मर्यादा भी कुछ ऊपर चढ़ी; लेकिन ज़मींदारों का प्रभुत्व १९१७ की क्रान्ति तक बना रहा। ज़ार के बाद उन्हीं का स्थान था। बीच में इतना ही हो सका था, कि किसानों के बहुत से विद्रोहों से डर कर उन्हें ख़रीदे दास की अवस्था से कुछ साँस लेने लायक बना दिया गया था।

ज़ार और उसके पिट्ठू ज़मींदार अधिकारियों के ख़िलाफ़ मध्यम श्रेणी के शिक्षकों में कुछ स्वतंत्रता का भाव पैदा होने लगा; जब कि उन्होंने १८ वीं शताब्दी के कितने ही फ़्रेंच और अंग्रेज़ लेखकों के स्वतन्त्रता-संबंधी ग्रन्थ पढ़े। मध्यम श्रेणी में शिक्षा के साथ साथ ज़ार के निरंकुश शासन के

प्रति दुर्भाव भी बढ़ता गया। यह दुर्भाव हम रूस के पुश्किन और लेर्मन्तोफ़ जैसे उच्च कोटि के कवियों में भी पाते हैं। क्रोपत्किन् और ल्यु तालस्त्वा (टाल्स्टाय) भी उसी भाव को आगे बढ़ाते हैं। क्रान्ति वे चाहते थे, और किसके ख़िलाफ़? ज़ार की निरंकुशता के ख़िलाफ। इसमें शक नहीं कि इस निरंकुशता के भीषण रूप को दिखलाने के लिए मजदूरों की सड़ी गली झोंपड़ियाँ, उनके कृश-मलिन गात्र, उनकी दिन-रात की असह्य वेदनाओं को वे चित्रित करते थे। लेकिन वह इनके लिए क्रान्ति नहीं करना चाहते थे। उनकी क्रान्ति का ध्येय था, मध्यम वर्ग को अधिक स्वतंत्र करना—आर्थिक सामाजिक दोनों दृष्टि से। मध्यम वर्ग की स्वतंत्रता में हो सकता है, जाँगर चलाने वालों की हालत में भी कुछ फ़र्क हो, लेकिन निश्चय ही वह १९१७ की क्रान्ति और उसके परिणाम को न पसन्द करते।

हाँ, यह मानना होगा कि १९१७ की क्रान्ति की बुनियाद रखने में राष्ट्रीय विचार के इन क्रान्तिकारियों का भी हाथ था।

जमींदार-सामन्तों के ख़िलाफ़ पश्चिमी यूरोप के बनियों ने आवाज़ उठाई और इसी आवाज़ ने राष्ट्रीयता को जन्म दिया। वे राष्ट्र के नाम पर राजाओं और सामन्तों की मनमानी का विरोध करते थे। उनके पास कारखानों और वाणिज्य की आमदनी से अपार सम्पत्ति आ गई थी। इतनी सम्पत्ति आ गई थी, जिनके सामने वे ज़मींदार-सामन्त कोई हैसियत नहीं रखते थे। राष्ट्र के नाम पर बनियों ने हल्ला मचाना शुरू किया। अपने इस काम में जाँगर चलाने वालों को भी सम्मिलित किया। हाँ, अपने ही स्वार्थ के लिए। इसका फल भी हुआ। राजाओं की निरंकुशता और सामन्तशाही हटी। पश्चिमी यूरोप में राज्यशक्ति अब बनियों के हाथ में जाने लगी। उसी समय जर्मनी में एक विचारक पैदा हुआ—आज हिटलर की जर्मनी उसे जर्मन मानने को तैयार नहीं। इस विचारक के कानों में भी बनियों की राष्ट्रीयता का हल्ला पहुँचा। उसने सोचा, क्या राष्ट्रीयता की पुकार बनिये जाँगर चलाने वालों के हित के लिए कर रहे हैं? उसने वर्षों इसके लिए लगाये।

विदेशों में वह मारा मारा फिरा, कितने ही मुल्कों की ख़ाक छानी। ढेर की ढेर पुस्तकों में रात की रात डूबा रहा। अन्त में उसने देखा, वनिये धोखे-वाज़ हैं। राष्ट्रीयता की पुकार निस्सार है; जहाँ तक जाँगर चलानेवालों का संबंध है। सामन्तशाही के दिनों में और उससे पहले आदमी गाय और घोड़े की तरह दाम पर विकते थे। वनियों ने उनकी यह विक्री छुड़ाई। लेकिन दासता अव भी नहीं छूटी। फ़र्क इतना ही था, कि जारों और सामन्तों की चलती के वक्त गुलाम ख़रीदे जाते थे; लेकिन मालिक पूँजी के डूव जाने के डर से उनके खाने पीने की सुधि लेता था; वैसे ही जैसे कोई अपने घोड़े और वैल की सुधि लेता है। पश्चिमी वनियों ने अभिमान के साथ कहा—हम ने गुलामों को आजाद कर दिया। लेकिन वह आज़ादी कैसी थी? उन्होंने कपड़े के कारख़ाने खोले। लाखों जुलाहे वेकार हो गये। उन्होंने लोहे के कारख़ाने खोले। लाखों लोहार, हाथ पर हाथ धर कर वैठ गये। क्यों? क्योंकि इन कल-कारख़ानों से वनी चीज़ें अधिक सस्ती होती थीं। वाज़ार में महँगी चीज़ें लेने के लिए कोई तैयार नहीं था। वनियों ने वेकारों से कहा—आओ, हमारे कारख़ानों में काम करो। गाँव छोड़ छोड़ कर वेकारी के शिकार वे जाँगर चलानेवाले शहरों में फ़ैक्टरियों के दरवाज़ों पर दौड़ने लगे। कुछ को भीतर आने के लिए इजाज़त मिली और कुछ कल की आशा में वाहर मँडराने लगे। वढ़ई का वसूला छूटा, लोहार का हथौड़ा। जुलाहे का कर्घा छूटा, और धुनिए की धुनकी। वनिये ने उन्हें 'कल' दी। ऐसी कल जिसे सात जन्म की कमाई में भी वह खरीद नहीं सकते। उनके स्वतंत्र पाँख को काट दिया। अव कल के भरोसे उन्हें रहना था। सामन्त-शाही के जमाने का मालिक अपने गुलाम के पेट की ओर खयाल करने के लिए मजवूर था। यह ख्याल कर कि, वीमार होने पर काम का हर्ज होगा। मरने पर उसमें लगी पूँजी डूव जायगी। वनिए के ऊपर कोई पावन्दी न थी। वीमार हो, कारख़ाना छोड़ कर चले जाओ। मर गये, कोना सूना थोड़े ही होगा। एक की जगह १० जो दरवाज़े पर मँडरा रहे हैं।

सारांश—बनिया जिसे दासता से मुक्ति दिलाना बतलाता है, वह है, न नौकर के पेट का खयाल करना, न मरने जीने का। इस दृष्टि से तो वह पुरानी दासता उतनी ख़राब न थी।

ऐसा सोचनेवाला वह विचारक कौन था? कार्ल मार्क्स! उसने बनियों की पोल खोली। उसने बतलाया, बनियों की दयालुता बिलकुल बनावटी है। राष्ट्रीयता अपना मतलब गाँठने के लिए है। बनिया जांगर चलानेवालों को सब से अधिक लूटता है। वह उनके जांगर की कमाई का पूरा बदला न दे कर जो हड़प लेता है, उसी को नफा कहता है। व्यापार-दक्षता, प्रबन्ध-कुशलता—जिसके नाम पर बनिया लाखों का वारा न्यारा करता है, वह सब बेचारे जांगर चलानेवालों के श्रम की लूट का सम्मानित नाम है।

मार्क्स ने विश्लेषण किया। खाली किताबों ही के बल पर नहीं, बल्कि जांगर चलानेवालों की रोज़-बरोज़ की ज़िन्दगी को नज़दीक से देख कर। यही नहीं, उसने बनियों के पहले सामन्तों की दुनिया को भी अपनी दिव्य दृष्टि (बुद्धि) से देखा। उससे भी पहले राजाओं की निरंकुशता को देखा। और भी पहले कबीलों के आपस में लड़ते वक्त प्रभुताशाली योद्धाओं को राजा बनते देखा। उससे भी पहले नग्न आदमियों को पत्थर के हथियारों को ले-कर जंगल के जानवरों पर विजय पाते देखा।

उसने इस मनुष्य के ऐतिहासिक विकास पर गौर किया। इतिहास के विकास की खास स्थिति में विशेष समुदायों की आवश्यकता है। यदि वह समुदाय उस अवस्था में न आवे, तो विकास की परंपरा टूट जायगी। सामन्त न होते तो राजाओं की निरंकुशता नर्म न पड़ती। बनिए न होते, तो सामन्तशाही और राजाओं की मनमानी को धक्का न लगता।

बनियों ने राजनीतिक शक्ति—जो सभी शक्तियों की जननी है—अपने हाथ में ली। जांगर-चलानेवालों को हथियार से बेहथियार किया। पीढ़ियों के घर से बेघर किया। उन को हवा में उड़ता सूखा पत्ता बना दिया। उनकी विपदाएँ अधिक कर दीं। लेकिन उसी बनिये ने इन

अक्रीत दासों के हाथ में मुक्ति के लिए एक हथियार भी दे दिया। छिट-फुट रहनेवाले असंगठित ग्रामीण दरिद्रों को हज़ारों की तादाद में एक जगह जमा कर दिया। एक ही शहर में नहीं, एक छत के नीचे जमा कर दिया।

एक जगह जमा होने पर उन्हें अपनी ताक़त का ज़रा ज़रा भान होने लगा। अत्याचारों को मूक रह कर वर्दाश्त करने को वह अनुचित समझने लगे। मार्क्स ने कहा—"संसार के कमकरों, एक हो जाओ"।

"तुम्हारे पास हारने के लिए है ही क्या? सिवाय पैरों की जंजीर के।"

मार्क्स ने अँधेरे में एक चिराग़ जलाया। पहले कितने प्रश्न करते थे—यह चिराग़ है या भूत की आग?

जैसे जैसे समय बीतता गया, मार्क्स की आग ने जंगल की आग का रूप धारण किया। राष्ट्रीयता के नाम पर लोगों को आह्वान करनेवालों का गला क्षीण होने लगा। जाँगर-चलानेवालों के वास्तविक हित की ओर ध्यान आकर्षित होने लगा।

*** ***

व्लादिमिर् का बड़ा भाई अलेखन्द्र राष्ट्रीय क्रान्ति के युग के अन्त में हुआ था। ज़ार के निरंकुश शासन को उलटने के लिए राष्ट्रीय क्रान्तिकारी सभी तरह का त्याग करने के लिए तैयार थे। क्रोपत्किन् जैसे कितनों ने इस प्रवाह को आगे बढ़ाया।

१ मार्च १८८१ को रूस का ज़ार अलेखन्द्र द्वितीय मार डाला गया। कितने ही लोग पकड़े गये और कितनों को प्राणदंड मिला। लेकिन वह निरंकुशता जिसके दूर करने के लिए ज़ार अलेखन्द्र मारा गया था, अब भी मौजूद थी। इसलिए क्रान्ति का मार्ग रुक नहीं सकता था। १८८७ में फिर तत्कालीन ज़ार अलेखन्द्र तृतीय की हत्या करने की साज़िश कुछ नौजवानों ने की। उनका अगुवा अलेखन्द्र उल्यानोफ़् था। साज़िश करने-वाले असफल रहे। पुलिस ने अलेखन्द्र उल्यानोफ़् और उसके साथियों

को पकड़ लिया। कितने दिनों तक जेल में रखा। आखिर, उसी साल उसे फांसी पर चढ़ा दिया गया।

व्लादिमिर् अभी लड़का था। लेकिन इतना लड़का नहीं था, कि अपने आसपास की घटनाओं को न समझ सकता हो। उसी साल वह हाई स्कूल की पढ़ाई समाप्त करनेवाला था। अलेखन्द्र के फांसी पर चढ़ाने का असर सारे उल्यानोफ् परिवार पर पड़ा। वह पुलीस की निगाह में खटकने लगा। स्कूल के हेडमास्टर (इसे संयोग कहिए, क्रान्ति के वक्त रूस के प्रधान मंत्री तथा लेनिन् के प्रतिद्वन्द्वी करेन्स्की का वह पिता था) ने व्लादिमिर् की बड़ी मदद की; और वह हाई स्कूल की परीक्षा में बैठ सका। व्लादिमिर् असाधारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी था। परीक्षा में अव्वल नंबर का इनाम उसे मिलना ही चाहिए था। व्लादिमिर् कज़ान् के विश्वविद्यालय में पढ़ने लगा। विद्यार्थियों ने कुछ राजनैतिक गड़बड़ की। व्लादिमिर् भी जवाबदेह समझा गया और विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया।

कितनी ही बार पढ़ने के लिए दर्ख्वास्त दी, लेकिन पुलिस ने न रूसी विश्वविद्यालय में ही भर्ती होने दिया, न देश से बाहर जाने की अनुमति ही दी। दो तीन वर्ष इसी में चले गये। उस वक्त इन सारे अन्यायों के साथ साथ फांसी पर लटके अपने भाई अलेखन्द्र की तसवीर उसके सामने रहती थी। हर घंटे, हर मिनट ज़ार और उसके शासन के प्रति अपार घृणा उसके दिल में उत्पन्न होती थी।

दो तीन वर्ष बर्बाद करवा अन्त में १८९० में व्लादिमिर् को बाहर के विद्यार्थी के तौर पर परीक्षा में बैठने की इजाजत मिली। उसने पीतर्बुर्ग (वर्तमान लेनिन्ग्राद्) को परीक्षा के लिए चुना; और १८९१ में विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त की।

उसे बैरिस्ट्री करने की भी इजाज़त मिली। एक साल से अधिक उसने समारा में प्रैक्टिस की।

१८९३ में वह फिर पीतर्बुर्ग चला आया; और वहाँ की अदालत में प्रैक्टिस करने लगा।

व्लादिमिर् जैसा प्रतिभाशाली तरुण परिस्थितियों पर गंभीरता-पूर्वक विचार किये विना नहीं रह सकता था। विशेप कर, जव कि उन परिस्थितियों का फल उसको और उसके परिवार को वड़े कड़वे रूप में भोगना पड़ रहा था। अलेखन्द्र उसका सगा भाई था, उससे उसको वहुत प्रेम भी था। फिर वह आज़ादी के लिए शहीद हुआ था। इस तरह व्लादिमिर् का ध्यान अलेखन्द्र के रास्ते की ओर अधिक आकर्पित होना ही चाहिए। लेकिन राष्ट्रीयता की क्रान्ति के दिन अव समाप्त हो रहे थे। मार्क्स को मरे अभी दस वारह ही साल हुए थे; लेकिन उसकी जलाई आग अव दूर तक फैल गई थी। अलेखन्द्र राष्ट्रीय क्रान्ति के लिए मरा था लेकिन व्लादिमिर् सिर्फ भावुक नहीं था, वह गंभीर विचारक था। उसे मार्क्स का पथ पसन्द आया।

पीतर्बुर्ग में आने के वाद व्लादिमिर् वहुत दिनों तक अपनी प्रैक्टिस नहीं चला सका। थोड़े ही दिनों वाद उसे सव छोड़ कर अपना सारा समय समाजवाद के प्रचार के लिए देना पड़ा।

व्लादिमिर् को पहले पहल १८८८ में मार्क्स के ग्रंथों को पढ़ने का मौक़ा मिला।

१८९१ में जव वह समारा गया, तो वहाँ उसने तरुण शिक्षितों की एक मार्क्सवादी मंडली क़ायम की। पीतर्बुर्ग में दोवारा आने से पहले जो कुछ काम व्लादिमिर् ने किया था, वह अधिकतर समाजवाद के अध्ययन के लिए; लेकिन १८९३ से अव वह समाजवादी क्रान्ति के लिए कटिवद्ध हो गया। पीतर्बुर्ग के कमकरों में भी काम करना शुरू किया। क्रान्ति व्लादिमिर् के लिए क्या थी, इसे एक उसके प्रतिद्वन्द्वी ने इस प्रकार कहा है—"उसके जैसा दूसरा आदमी नहीं मिलेगा, जो कि हर रोज़, २४ घंटा क्रान्ति में तल्लीन रहता हो। जिसे क्रान्ति छोड़ और कोई ख़याल नहीं

आना हो, और जो सोने पर भी क्रान्ति छोड़ दूसरा स्वप्न नहीं देखता हो।"

व्लादिमिर् का कद छोटा था, बाल थोड़े भूरे थे, और समय से पहले ही सिर चंदला हो गया था। उसकी जरा तिर्छी हो गई भौंहें मंगोल रक्त के असर को बतलाती थीं। आँखें चमकीली तथा हास्य से पूर्ण थीं। व्लादिमिर् अपने स्वभाव में बहुत सीधा सादा था। किसी तरह का उसे शौक न था। वह शराब नहीं पीता था; और किसी समय मांस भी नहीं खा रहा था। लेकिन ऐसे परहेज को वह सिद्धान्त के तौर पर नहीं मानता था।

पीतर्बुर्ग मे १८६३ की शरद् ऋतु आने पर व्लादिमिर् ने अपना काम खूब लगन से शुरू किया। यह नगर उस वक्त ज़ार की राजधानी होने से जहाँ राजनैतिक केंद्र था, वहाँ शिक्षा और संस्कृति का भी मुख्य स्थान था। समाजवादियो का भी यहीं अड्डा था। व्लादिमिर् उल्यानोफ् की विद्वत्ता का हल्ला पहले ही से था। समाजवादियों ने उसका दिल से स्वागत किया। एक तरफ़ व्लादिमिर् के मार्क्सवाद के गंभीर ज्ञान का लोगों पर बहुत प्रभाव था, दूसरी ओर कमकरों में उसकी निस्संकोच भाव से मिलने की आदत ने उसे ज्यादा जनप्रिय बना दिया था। १८६४-६५ में व्लादिमिर् ने मार्क्सवाद प्रचार के लिए खूब काम किया। तरुण क्रान्तिकारी इधर बहुत आकर्षित हुए।

१८८७ मे, जबकि व्लादिमिर् को कज़ान् विश्वविद्यालय से निकाला गया था, उसके ऊपर पुलीस की कड़ी निगाह रहती थी। वह विदेश जाना चाहता था, लेकिन पुलीस उसे इजाजत नहीं देती थी। इसी समय एक खतरनाक बीमारी हुई और बाहर जाने के लिए उसे इजाज़त मिल गई। वह स्विट्ज़रलैंड गया। वहाँ पुराने मार्क्सवादी रूसी क्रान्तिकारी प्लेखानोफ् से उसकी मुलाकात हुई। नौजवान व्लादिमिर् का प्लेखानोफ् पर बड़ा असर हुआ। उसने कहा—"यह भविष्य में रूस का रोबेस्पियेर (फ्रांस की राज्यक्रान्ति का नेता) होगा।" रूसी क्रान्तिकारियों से मिल कर सलाह ठहरी कि एक गुप्त समाचारपत्र निकाला जाय। उल्यानोफ् स्विट्ज़र्लैन्ड

से लौटते वक्त इसके लिए आवश्यक सामान लेता आया। पत्र का नाम रखा गया 'कमकरों का काम' ("रवोचेइ-देलो") । दिसंबर १८६५ के आरंभ में ग़ैरकानूनी इस गुप्त पत्र का पहला अंक तैयार हुआ, लेकिन पुलीस की आँखें पहले ही से थीं। उसने छपी कापियाँ और प्रेस के साथ सभी कार्यकर्ताओं को पकड़ लिया।

राजनैतिक अपराधियों को अदालत में सज़ा नहीं दी जाती थी, उनके मुक़दमे का फ़ैसला पुलीस के अध्यक्ष की सम्मति से ज़ार स्वयं करता था। लेनिन् और उसके साथियों को एक साल से अधिक तक हवालात में वन्द रहना पड़ा। हवालात की तकलीफ़ें इतनी भयंकर थीं, कि वहुत कम उनसे जीते वच कर निकलते थे। उल्यानोफ़् का स्वास्थ्य अच्छा और शरीर सुदृढ़ था। शरीर और मन पर वह वहुत संयम रखता था। इसी लिए काल कोठरी ने उसपर वहुत वुरा असर नहीं किया।

एकान्तवास के वक्त भी क्रान्तिकारियों ने ऐसा ढंग खोज निकाला था कि वाहर की वातें उन्हें मालूम होती रहें; और भीतर से वह अपने संदेश वाहर भेज सकें। मई १८६६ में जो वड़ी वड़ी हड़तालें हुई थीं, उनमें उल्यानोफ़् का भी हाथ था। हवालात के समय ही में उसने "रूस में पूँजीवाद का विकास" का वहुत सा हिस्सा लिखा था। और बाकी भाग सिवेरिया में समाप्त हुआ। १८६६ में यह ग्रंथ छपा।

जनवरी १८६७ में उल्यानोफ़् और उसके साथियों का फ़ैसला हुआ। उन्हें तीन वर्ष की सज़ा के रूप में पूर्वी सिवेरिया में निर्वासन का दंड मिला। ऊपरी येनीसेइ के मिनुसिन्स्क ज़िले के शूसेन्स्कोये गाँव में उसे रखा गया; और तीन साल तक (फरवरी १६००) वह वहीं रहा।

पीतर्वुर्ग में काम करते हुए उल्यानोफ़् के साथियों में एक नौजवान लड़की नादेज़्दा कोन्स्तन्तिनोव्ना क्रुप्स्काया भी थी। १८६८ में वह भी सज़ा पाकर वहाँ आ गई और उसी साल जुलाई में दोनों ने शादी कर ली। तव से सारे जीवन भर क्रुप्स्काया अपने पति के काम में सहायक रही। असल

में शादी के भीतर भी क्रान्ति का काम ही कारण था।

शुमेन्स्कोये में उल्यानोफ् का दिमाग़ और कलम बराबर चलती रही। यहीं पहले पहल 'लेनिन्' के नाम से उसने लेख लिखे; और दुनिया ने उसी नाम को जाना और स्वीकार किया।

१६०० के आरंभ में लेनिन् की सज़ा ख़तम हुई और वह प्स्कोफ़् (पीतर् बुर्ग के नातिदूर रूस की पश्चिमी सीमा के पास) में जाकर रहने लगा। सिबेरिया से लौटे हुए क्रान्तिकारियों को उसने संगठित करना शुरू किया। अपने इस काम को साथियों के जिम्मे देकर वह फिर रूस से बाहर निकला। देश में किसी तरह के क्रान्तिकारी पत्र या ग्रंथ का छापना बड़ा मुश्किल था। इसीलिए लेनिन् अब की बाहर निकला। १६०० के अंत में उसने म्यूनिच् (जर्मनी) में 'इस्क्रा' (चिनगारी) नामक पत्र निकाला। पुलीस के तंग करने पर जून १६०२ में 'इस्क्रा' को वह लन्दन ले गया। पत्र और पुस्तिकाएँ छाप कर चोरी से रूस भेजी जाती थीं। अधिकतर यह काम जहाज़ के मल्लाहों द्वारा होता था। लन्दन और पीतर्बुर्ग के बीच आने जाने वाले जहाज़ों की संख्या कम न थी।

अगस्त १६०२ में 'इस्क्रा' के संपादकीय विभाग में एक नया रंगरूट भर्ती हुआ। यह २३ साल का नौजवान था ल्योन् त्रोत्स्की; जो सिबेरिया से भाग कर आया था। उस की कलम जबर्दस्त थी और थोड़े ही दिनों में वह प्रसिद्ध क्रान्तिकारी लेखक हो गया।

१६०३–४ में जनसत्ताक-समाजवादी क्रान्तिकारियों में दो दल हो गये। गर्म दल जिसका नेता लेनिन्, बहुमत में था। इसी लिए उस दल का दूसरा नाम बोल्शेविक (बहुमतीय) हुआ और नर्म दल वाले मेन्शेविक् (अल्पमतीय) कहे गये। १६०४–५ में लेनिन् को मेन्शेविकों के खिलाफ अपनी शक्ति अधिक लगानी पड़ी। मेन्शेविक ऐसे शिक्षित क्रान्तिकारी थे, जो कमकरों के लिए काम तो करते थे, लेकिन क्रान्ति की सफलता के लिए कमकरों पर उनका उतना विश्वास नहीं था, जितना अपने ज्ञान पर। अ-

व्यक्तित्व को वह अधिक महत्त्व देते थे; और उसके खोने के डर से क्रान्ति के खूनी मैदान में आने से हिचकिचाते थे। असल बात यह होने पर भी वह दोष देते थे, कमकरों की असमर्थता या अज्ञान को।

१९०४ में रूस और जापान की लड़ाई हुई। जापान ने रूस को बुरी तरह से हराया। अपने शासकों की शक्ति रूसी कमकरों की नजर में गिर गई। पिसते हुए श्रमिकों को सिर उठाने का साहस हुआ। पहले उन्होंने हड़ताल की, फिर ज़ार—जिसे कि वह छोटा ईश्वर मानते थे—के दया और न्याय पर विश्वास करके निवेदन-पत्र लेकर वे शरद्-प्रासाद (पीतर् बुर्ग) को जा रहे थे। २२ जनवरी १९०५ को एतवार का दिन था; जब कि श्रद्धा-भक्ति से लाये हुए विनतीपत्र को स्वीकार करने की जगह ज़ार ने गोलियाँ चलवाईं। सैकड़ों आदमी मरे। यही वह खूनी एतवार था, जिसने ज़ार के प्रति जनता के बचे खुचे विश्वास को नष्ट कर दिया।

उस वक्त लेनिन् जेनोवा में था। खूनी एतवार की गोलियों ने जनता के जोश को नष्ट नहीं कर पाया। क्रान्ति की लहर जोर से फैलती जा रही थी। नवबंर में लेनिन् को पितर्बुर्ग के क्रान्तिकारियों की सफलता का पता लगा।

विदेश में रहने वाले क्रान्तिकारियों में लेनिन् पहला था जो रूस लौट आया। उसने कई सार्वजनिक सभाओं में व्याख्यान दिया। लेकिन नाम और वेष बदले रहने के कारण पुलीस को पता नहीं लग सका। क्रान्तिकारियों को लेनिन् ने कुछ सहायता भी की, लेकिन इस बारे में वह खुल कर उतना काम नहीं कर सका, जितना कि १९१७ में उसे करने को मिला।

लेनिन् ने पिछले वर्ष युद्ध-विज्ञान का विशेष तौर से अध्ययन किया था। ज़ार के हाथ से तलवार के बल पर अधिकार छीनना था और यह निर्भर करता था अस्त्र-शस्त्र की पर्याप्त मात्रा, योद्धाओं के संगठन तथा ज़ार की सेना में सफलता-पूर्वक अविश्वास के प्रचार पर। यह पहला सशस्त्र विद्रोह था; जो पीतर्बुर्ग—मास्को—जैसे बहुत से शहरों और दूसरी जगहों

में फैला। इस विद्रोह को उतनी आसानी से ज़ारशाही दबा भी न सकी। लेकिन अंत में क्रान्ति असफल रही। ज़ारशाही ने हज़ारों को निर्दयता के साथ तलवार के घाट उतारा।

लेनिन् (पृ० १३३)

इस क्रान्ति में मेन्शेविकों की मदद नाम मात्र थी; और असफलता के बाद उन्होंने उस के लिए अफसोस किया। उनके नेता प्लेखानोफ् ने कहा—"हथियार उठाना भूल थी।" लेनिन् का विचार इस असफलता के बारे में दूसरा ही था। दोषों और कमजोरियों को स्वीकार करते हुए भी उसने कहा—"यह असफलता सफलता से कम मूल्य नहीं रखती। इसने हमें बतला दिया कि क्रांतिकारी कमकरों में लड़ाई की शक्ति और साहस कितना है"। उसका जनता पर पूरा विश्वास था। वह जानता था कि जनता की शक्ति और साहस के स्रोत को ऐसी दर्जनों असफलताएँ सुखा नहीं सकतीं। दो वर्ष का पुराना कड़वा तजर्बा, तत्काल की भूख और जाड़े के सामने उनकी स्मृति से मिट जाता है।

क्रान्ति के वक्त लेनिन् छिप कर रूस में रह रहा था। उसकी असफलता पर पुलीस का ज़ोर बहुत बढ़ गया था। इसलिए लेनिन् का वहाँ रहना खतरे से खाली नहीं था। पहले वह फिन्लैंड चला गया। फिन्लैंड रूस के अधीन रहते हुए भी कुछ स्वायत्त-शासन पा चुका था। लेकिन वहाँ भी

आखिर पुलीस उसके पीछे पड़ी और १९०७ में वह फिर विदेश चला गया।

१९०३ में पार्टी में जो झगड़ा पैदा हुआ था, उसके कारण लेनिन् को बहुत मानसिक चिन्ता हुई थी; और १९०७ से १९१४ तक का समय भी ऐसा ही था। उसके कितने सहयोगी इस निराशा के समय अलग हो गये और इस प्रकार बोल्शेविक पार्टी में निर्बलता आ गई। लेनिन् को छोड़कर जानेवालों में त्रोत्स्की भी था। लेनिन् की कलम और दिमाग़ अब भी उसी तरह से चल रहे थे। वह बराबर लेख और पम्फ्लेट बाहर से भेजा करता था।

लेनिन् बोल्शेविक पार्टी की बिखरी शक्ति को एकत्र करने का बराबर प्रयत्न कर रहा था। चारों ओर निराशा की काली घटाएँ छाई हुई थीं। लेकिन वह लेनिन् को हताश नहीं कर सकती थीं। १९०५ की क्रान्ति के फलस्वरूप ज़ार ने निर्वाचित दूमा (पार्लियामेंट) स्थापित करने का वचन दिया था। १९१२ के चुनाव में कमकरों के प्रतिनिधि होकर आनेवाले दूमा के छहों सदस्य बोल्शेविक थे; और यह लेनिन् के लिए बड़ी विजय की बात थी। १९१२ से १९१४ तक का लेनिन् का काम रूसी क्रान्ति के इतिहास में बड़ा ही महत्त्व-पूर्ण है। विदेश में रहते हुए भी इसी वक्त उसने रूसी कमकरों में समाजवादी ख़याल का ज़बर्दस्त प्रचार और सशस्त्र मुक़ाबले की तैयारी का संगठन किया। यही समय था, जब कि लेनिन् रूसी कमकरों का सर्वमान्य नेता माना जाने लगा। रूस में समाचारपत्र 'प्राव्दा' (सत्य) और दूमा के अन्दर की बोल्शेविक पार्टी उस समय रूस में लेनिन् का मुख थी। बोल्शेविक पार्टी का गुप्त रूप से सब जगह ज़बर्दस्त संगठन था। डरने और हिचकने वाले पिछली निराशा के समय में ख़ुद छँट चुके थे। लेनिन् की हर एक बात को बोल्शेविक-केन्द्रीय-पार्टी पूरा करने के लिए तैयार थी।

इतना होने पर भी दूमा की बोल्शेविक पार्टी का नेता रोमन् मालीनोव्स्की जो लेनिन् और रूस की पार्टी के बीच संबंध रखने का ज़रिया था

खुद जार की ओर का खुफिया था। यह खबर १९१३ में ही फैली हुई थी लेकिन लेनिन् ने इस पर विश्वास नहीं किया। युद्ध के आरंभ होने के बाद सन्देह इतना बढ़ा कि मालीनोव्स्की इस्तीफा देकर गुम हो गया। क्रान्ति के बाद पुलीस के दफ्तर में जो कागज मिले, उनसे यह सिद्ध हो गया कि मालीनोव्स्की सचमुच पुलीस का आदमी था।

युद्ध के बारे में लेनिन् की राय स्पष्ट थी। सच्चे मार्क्सवादी की तरह उसका कहना था—"साम्राज्यवादियों की विजय से कमकरों को कोई फायदा नहीं। इस युद्ध को अपने देश के साम्राज्यवादियों से लड़ने के रूप में परिणत कर देना चाहिए। रूसी समाजवादियों को खास तौर से समझना चाहिए कि जारशाही की हार से श्रमिक-श्रेणी का कोई नुकसान नहीं। कमकरों के लिए यही अच्छा मौका है। बाहर के दबाव और उसके मुकाबले के लिए की गई सैनिक तैयारी के कारण शासकों का बल भीतर वालों के लिए बहुत कमज़ोर हो गया है। इसलिए साम्यवादियों को इस युद्ध को गृह-युद्ध के रूप में परिणत कर देना चाहिए।"

लेनिन् अब रूस की सीमा के नज़दीक रहना चाहता था; इसीलिए वह गेलीसिया में आया। आस्ट्रिया के अधिकारियों ने उसे पकड़ कर जेल में डाल दिया। लेकिन वहाँ के समाजवादी नेता विक्टर एड्लर् ने यह कहकर उसे छुड़वाने में सफलता पाई, कि लेनिन् जारशाही की मदद नहीं कर सकता। युद्ध छिड़ने के बाद पुलीस ने फिर ज़ोर दिखलाना शुरू किया। ड्रमा की बोल्शेविक पार्टी के सभी सभासद् जेल भेज दिये गये। नेताओं में भी अधिकांश या तो सिबेरिया भेज दिये गये, या भाग कर उन्हें विदेश चला जाना पड़ा। ३॥ साल के महायुद्ध के बाद जन-धन के क्षय तथा भीतरी असन्तोष और अव्यवस्था के कारण १९१६ के अन्त में जब परिस्थिति क्रान्ति के अनुकूल मालूम होने लगी, तो उस वक्त कमकर क्रान्तिकारियों का नेतृत्व करने के लिए कोई न रह गया था। लेनिन् का नअल्लुक रूस से उस वक्त टूट सा गया था।

दिसंबर १९१६ तक पहुँचते पहुँचते युद्ध में रूस की दशा बहुत खराब हो गई। हिंडेनवर्ग ने हार पर हार दी और लाखों सैनिक और बहुत सी रूस की भूमि जर्मनों के हाथ में चली गई। रूसी सैनिकों और सेनानायकों दोनों का साहस छूट गया। सिपाही मैदान छोड़ छोड़कर अपने घरों की ओर भाग रहे थे। चारों ओर असन्तोष ही असन्तोष दिखलाई पड़ता था। दूमा के नर्म दलीय लोगों को भी गर्म गर्म बात करने का साहस हो चला था। ज़ारीना ने २४ फ़रवरी को ज़ार के पास पत्र लिखते हुए लिखा—

"मैं चाहती हूँ कि दूमा-वाला करेन्स्की अपने भयंकर व्याख्यानों के लिए फाँसी पर चढ़ा दिया जाय। युद्ध के समय यह जरूरी है। इससे दूसरों को शिक्षा मिलेगी। तुम को सख़्ती से काम लेना चाहिए।"

राजधानी में हड़तालों पर हड़तालें हो रही थीं। ज़ार और ज़ारीना का गुरु साधु रस्पुतिन् मारा जा चुका था। ज़ार ज़ारीना के हाथ की कठ-पुतली था, और ज़ारीना इतना अधिक मिथ्याविश्वास रखनेवाली थी कि वह रस्पुतिन् को ईश्वर की तरह मानती थी। एक बार उसने लिखा था— "अगर वह हमारे पास न होता, तो कभी का हमारा सर्वनाश हो गया होता।"

अन्त में हालत इतनी विगड़ गई कि ज़ार निकोला को (२ मार्च १९१७) सिंहासन से इस्तीफ़ा देना पड़ा। अपनी डायरी में उस दिन निकोला ने यह लिखा—

"आज सवेरे रुस्की आया। उसने रद्ज़ियको के साथ तार पर हु: लम्बी बातचीत मुझे पढ़ कर सुनायी। उसके कहने से मालूम होता है ि पेत्रोग्राद् (लड़ाई में जर्मनों के प्रति जो क्रोध आया, और उसके लिए जर्म: शब्दों से भी द्वेष उत्पन्न हो गया, इसी लिए पीतर्बुर्ग का जर्मन नाम हट कर 'पेत्रोग्राद्' रखा गया) की अवस्था इतनी नाज़ुक है कि राजकीय दू के जनसत्ताक-समाजवादी सदस्यों का (कम्युनिस्ट पार्टी का पूर्व नाम मंत्रिमंडल कुछ नहीं कर सकेगा। क्योंकि जनसत्ताक समाजवादी कमव कमेटी के रूप में इसका विरोध कर रहे हैं। मेरा पदत्याग आवश्यक ं

और मुहरबंद ट्रेन से लौटा। जिस वक्त वह फ़िन्लैंड और रूस की सरहद पर पहुँचा, तो बोल्शेविक् नेताओं ने मिल कर उसे परिस्थिति समझाई। पेत्रोग्राद् स्टेशन पर उसका शाहाना ठाट से स्वागत हुआ। हज़ारों फ़ौजी सिपाही पाँती से सलामी दागने के लिए खड़े थे। सैकड़ों लाल झंडे फहरा रहे थे। लेनिन् ने उस ज़बर्दस्त स्वागत को देखकर समझ लिया कि काम करने की कितनी स्वतंत्रता है और लोगों में कितना उत्साह है। लेनिन् के पेत्रोग्राद् पहुँचने से १ मास बाद त्रोत्स्की भी लौटा। इसके विचारों में भी परिवर्तन हुआ था, और अब वह लेनिन के विचारों के साथ था।

नई सरकार भी धनियों की सरकार थी। ज़ार की निरंकुशता चली गई थी, और उसके हटाने में जनता की शक्ति ने काम किया था। इसी लिए लेखन-भाषण की स्वतंत्रता देना ज़रूरी था। लेकिन अभी किसानों और कमकरों का राज्य कायम होना दूर की बात थी।

लेनिन् के अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के विचार को अधिकांश बोल्शेविक भी मानने को तैयार नहीं थे। लेनिन् का कहना था—'लड़ाई से हमें अपना हाथ एक दम हटा लेना चाहिए।' सहयोगियों का कहना था—'तब तो जर्मन बेधड़क सारे रूस को दख़ल कर लेंगे और हम ज़ारशाही से बच कर जर्मनशाही के हाथ में चले जायेंगे।' नया मंत्रिमंडल मित्र-शक्तियों के साथ मिल कर जर्मनी से लड़ाई जारी रखना चाहता था। लेनिन् को अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का खूब ज्ञान था। उसे मालूम था कि यदि जर्मनी की कुछ अरुचिकर शर्तों को भी हम मान लेंगे तो वह हमारा पीछा और ज़्यादा नहीं करेगा। क्योंकि उसे फ़्रांस और इंगलैंड से भी लड़ना है।

लेनिन् ने कहा—"अब जब कि रूस में भाषण और लेखन की पूर्ण स्वतंत्रता है, तो हमारा सब से पहला काम है, कि शासन को कमकरों और ग़रीब किसानों को हाथ में लेने दें। अस्थायी सरकार को कोई मदद नहीं देनी चाहिए। यह पूंजीवादियों की सरकार साम्राज्यवादी छोड़ और हो ही क्या सकती है?"

उस वक्त शहरों, जिलों के शासन का अधिकार निर्वाचित सोवियतों (पंचायतों) के हाथ में था; जिनमें निम्न मध्यम श्रेणी के व्यक्तियों की प्रधानता थी। लेनिन् ने कहा—सोवियतों को कमकर और किसानों के हाथ में होना चाहिए। जमींदारों की जमींदारी को छीनकर किसानों को देना चाहिए। अलग अलग बैंकों को मिलाकर एक राष्ट्रीय बैंक बना देना चाहिए। समाजवाद की स्थापना तुरन्त नहीं हो सकती, लेकिन राष्ट्र की उपज और उसके वितरण को सोवियतों के हाथ में चला जाना चाहिए। जनसत्ताक-समाजवादी (बोल्शेविक) पार्टी का नाम कम्युनिस्ट (साम्यवादी) के रूप में बदल देना चाहिए कि जिससे मालूम हो कि हम पैरिस की कम्यून् (साम्यवादी समाज) के नमूने पर साम्यवादी राष्ट्र की स्थापना करना चाहते हैं।"

लेनिन् के ये विचार रूस के तत्कालीन राजनैतिकों के ऊपर बम की तरह पड़े। बोल्शेविक नेता तक घबड़ा गये। उन्होंने कहा—"यह शेख-चिल्ली का महल है। वास्तविकता से इसका कोई ताल्लुक नहीं है। लेनिन् ने १० साल तक रूस देखने का मौका नहीं पाया; इसी लिए वाही-तबाही बोल रहे हैं।" कितने लेनिन् को जर्मनों का एजेंट कहते थे; और तरह तरह से उनके ऊपर आक्षेप किये जाते थे। लेकिन लेनिन् को जितना ही अधिक जनता से मिलने का मौका मिल रहा था, उतना ही वह उन्हें अच्छी तरह समझाने में सफल हो रहे थे। ३ महीने लगातार लेनिन् की कलम और ज़बान ज़ोर से चलती रही। बोल्शेविक पार्टी का केन्द्र उस वक्त क्शेसिन्स्की भवन में था। सामने की सड़क पर वह रोज़ व्याख्यान देते थे। और वे व्याख्यान क्या थे, एक एक शब्द दहकते हुए अंगारे थे। हर एक बात के साथ दृढ़ दलील थी और वह इतने सीधे सादे शब्दों में कही जाती थी कि श्रोता के अन्तस्तल में सीधी चली जाती थी। कुछ ही समय में लेनिन् अपनी बातों को मनवाने में समर्थ हुए। कमकरों को तो पहले ही से उनपर विश्वास था, लेकिन अब बोल्शेविक पार्टी के नेता भी उनसे सहमत हुए। वे देख

रहे थे कि अस्थायी सरकार के ज़ोर देने पर भी मैदान छोड़कर सैनिक भागते ही जा रहे हैं। जर्मन फ़ौजें आगे बढ़ती ही जा रही हैं। इसलिए अच्छी शर्त पर जर्मनी से सुलह कर लेने में ही अच्छा है।

जुलाई में अस्थायी मंत्रिमंडल में परिवर्तन होकर करेन्स्की के नेतृत्व में नई सरकार बनी थी। पहले तो वह लेनिन् से विरोध उतना सख़्त नहीं कर रही थी, पर जब उसने देखा कि लेनिन् का पलड़ा भारी है, और उसे जर्मनों का दूत कहने से भी कुछ फ़ायदा नहीं चलता; तो करेन्स्की की सरकार ने खुले तौर से देश-द्रोह का दोषारोपण किया और लेनिन् का जीवन ख़तरे में हो गया। अब फिर लेनिन् को छिपकर काम करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

क्रान्ति-युद्ध का एक चित्र

अभी तक अस्थायी मंत्रिमंडल का काम जहाँ तक भीतर से ताल्लुक था, शान्ति के साथ चल रहा था; लेकिन इसी समय प्रधान सेनापति कोर्निलोफ़् और करेन्स्की में झगड़ा हो गया। सितम्बर के आरंभ में कोर्निलोफ़् ने कई दूसरे सेनापतियों की सहायता से करेन्स्की को अल्टीमेटम् दे दिया; और सेना लेकर पेत्रोग्राद् पर कब्ज़ा करने के लिए चल भी पड़ा। करेन्स्की

अब मजबूर था जनता से मदद लेने के लिए। इस समय कोर्निलोफ् से मुकाबिला करने के लिए सब से आगे बढ़ने वाले थे बोल्शेविक। जनता जानती थी कि वे ही उनके शुभचिन्तक वास्तविक नेता है। करेन्स्की ने अब अपना नया मन्त्रिमडल बनाया। इसमें भी नरम दलीय ही अधिक थे। जिनमे जेनरल वेर्खोव्स्की और एडमिरल वेर्देरेव्स्की भी थे। ये दोनो सैनिक समाजवादी नही थे, तो भी उन्होंने अपने मन्त्रिमडल के साथियो को कहा—सेना और नही लड सकती। लड़ाई वन्द करनी चाहिए। और सेना को मैदान से लौटाना चाहिए। लेकिन मित्र-शक्तियों के पिट्ठू करेन्स्की और उसके साथियों ने मजूर नहीं किया। अब दूसरी क्रान्ति अनिवार्य हो गई।

लेनिन् अब भी छिपे हुए काम कर रहा था। पेत्रोग्राद् के किनारे पर एक कमकर के मकान में वह पहले रहा। फिर फिन्लैड की सीमा के पास एक सुनसान झोपडे में। और अन्त मे हेल्सिङफोर्स (फिन्लैड) की म्युनिसिपलिटी के प्रधान पुलीस-अफसर के घर मे छिपा रहा। यद्यपि करेन्स्की के आदमी उसके पीछे पड़े हुए थे, तो भी लेनिन् ने केन्द्रीय पार्टी और पेत्रोग्राद् की कमेटी मे सबंध कायम रखा था, और उनके संचालन में उसका पूरा हाथ था। तो भी इस वक्त एकान्त में इस प्रकार छिपे रहने के कारण लेनिन् के पास समय था। उसका दिमाग़ चुप बैठने वाला न था। इसी वक्त उसने "राज्य और क्रान्ति" नामक अपना श्रेष्ठ ग्रन्थ लिखा। किताब को वह समाप्त नही कर सका था कि उसी वक्त उसे फिर मैदान में आना पड़ा। अपूर्ण ग्रन्थ के प्रथम सस्करण में उसने टिप्पणी दी थी—"किताब लिखने की जगह पर यह कही सुखद और लाभप्रद है कि आदमी क्रान्ति के तजर्बे से फायदा उठावे।"

*** ***

लेनिन् को जैसे ही मालूम हुआ कि कोर्निलोफ् के षड्यन्त्र ने शान्ति-

पूर्वक सोवियतों के हाथ में शासन शक्ति नहीं आने दी, और उसकी जगह एक बहुत सड़ा-सा गंगा-जमुनी मंत्रिमंडल अधिकारी बना; तो उसने बोल्शेविक् केन्द्रीय समिति को लिखा—"नई सरकार से किसी तरह का सहयोग न किया जाय।" अस्थायी सरकार एक अस्थायी परिषद् बनाना चाहती थी, और उसके ज़रिए करेन्स्की की सरकार को वैध साबित करने का प्रयत्न किया जा रहा था। बोल्शेविक केन्द्रीय समिति ने लेनिन् की बात न मान कर करेन्स्की द्वारा बुलाए जनसत्ताक सम्मेलन में भाग लिया। लेकिन उनको अपनी ग़लती मालूम होते देर न लगी। सरकार ज़मींदारों की ज़मीन को अब भी उन्हें नहीं दे रही थी, जिससे जगह जगह किसानों ने बलवा कर दिया। युद्ध के मैदान से कितने ही सेना के प्रतिनिधि—जिनमें से कुछ ग़ैर समाजवादी अफ़सर भी थे—पेत्रोग्राद् आये। उन्होंने सोवियतों को साफ़ कहा—सेना अब लड़ाई लड़ने के लिए बिलकुल तैयार नहीं है। वह तुरन्त खाइयों को छोड़कर लौटने वाली है। खेत और स्वतंत्रता पा लेने मात्र से वह सन्तुष्ट नहीं होगी यदि युद्ध को बन्द कर सेना को पीछे नहीं लौटाया जाता। शासन-यंत्र टूट रहा था। रेलों का काम बन्द हो रहा था। नगरों में अनाज के बिना अकाल पड़ने का डर था। साथ ही पूँजीपतियों ने अपने कारख़ानों को बन्द कर दिया, जिसके कारण भारी संख्या में कमकर बेकार हो गये। पेत्रोग्राद् के आगे का समुद्र जर्मनों के हाथ में था और पता लगा था, कि नौसेना के बड़े बड़े अफ़सर जर्मनों के हाथ में बिक चुके हैं। इन सब ख़तरों के कारण जनता का विश्वास अब बोल्शेविकों की तरफ़ बढ़ने लगा। सितंबर के अन्त तक चुनावों से पता लग गया कि पेत्रोग्राद्, मास्को तथा कितने ही और प्रान्तीय नगरों की सोवियतों में बोल्शेविकों का बहुमत है। पेत्रोग्राद् सोवियत् ने त्रोत्स्की को अपना सभापति चुना। किसानों की सोवियतों ने भी बोल्शेविक न होने पर भी उन्हींका पक्ष लिया। गवर्नमेंट पार्टी के भीतर भी कितने लोग लेनिन् के साथ सहानुभूति रखने लगे। इसी समय (सितंबर) जर्मन नौसेना में

विद्रोह हुआ और इससे लोगों का और भी विश्वास बढ़ा कि क्रान्ति और भी देशों में होने जा रही है।

लेनिन् ने लगातार कई पत्र केन्द्रीय समिति को लिखे और उसे शीघ्र सशस्त्र विद्रोह करने के लिए तैयार होने को कहा। वह यह भी देख रहा था, कि जितनी ही अशांति और अव्यवस्था बढ़ेगी, उतना ही जनता के ढिलमिल यकीन आदमी निराश होने लगेंगे। उसने कहा—यदि जागिर चलानेवालों ने अपना अधिनायकत्व न स्थापित किया तो बनिये और सेना के अफसर अपना अधिनायकत्व स्थापित करेंगे। सेनानायकों ने जिस ओर से धावा बोला था, उसमें डर होता था कि किसी समय भी पेत्रोग्राद् उनके हाथ में चला जा सकता है। यदि बनिए अपने में क्षमता न देखेंगे, तो वह जर्मनों को भी बुलाने से बाज नहीं आयेंगे; क्योंकि चारों ओर से उनकी सम्पत्ति पर प्रहार हो रहा था। यह और भी हानिकारक होगा, इससे करेन्स्की की पूँजीवादी सरकार को मदद मिलेगी। डर था कहीं बाल्तिक् नौसेना तथा पेत्रोग्राद् के कमकरों की संगठित सशस्त्र शक्ति नष्ट न कर दी जाय।

लेनिन् के बराबर लिखते रहने पर भी पार्टी वाले अभी हिचकिचा ही रहे थे; और १८ अक्तूबर को जाकर उन्होंने लेनिन् की बात मानी। प्रजातंत्र परिषद् से अपने सदस्यों का निकाल लेना सरकार को युद्ध के लिए निमंत्रण देना था। २३ तारीख को अंत में निकल आना निश्चय किया गया; और २६ तारीख को पार्टी ने युद्ध के पक्ष में निर्णय दिया।

यदि लेनिन् के कहे अनुसार यह निर्णय कुछ सप्ताह पहले हुआ होता, तो बहुत संभव है, क्रान्ति उतनी भयंकर न हो पाती। लेकिन इस बीच में विरोधी भी अपने को मजबूत कर रहे थे। यह देर करने में मुख्य कारण था त्रोत्स्की तथा उसी तरह के कुछ और पार्टी के सुशिक्षित। स्वेर्द्लोफ् और स्तालिन् शुरू ही से लेनिन् के पक्ष में थे। मजदूर और नौसैनिक भी हर वक्त धावा बोलने के लिए तैयार थे। त्रोत्स्की इसी लिए देर करना चाहता था कि अब वह पेत्रोग्राद् सोवियत् का सभापति था, जो कि एक

कानूनी शासन-संस्था थी। वह चाहता था, सोवियतों की दूसरी कांग्रेस के उद्घाटन के दिन ७ नवंबर (२५ अक्तूबर) को युद्ध शुरू किया जाय। उसको दिखलाना यह था; कि जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि बोल्शेविकों के साथ हैं। लेनिन् एक दिन की देरी को भी नहीं पसंद करता था। लेकिन त्रोत्स्की के आग्रह और कामेनेफ़् तथा जिनोवियेफ़् के विरोध के कारण ७ नवंबर से पहले काम शुरू नहीं किया जा सका। पार्टी के शिक्षित लोग सरकार की सैनिक शक्ति से डर रहे थे। उनको यह भी डर था कि जल्दी करने से मदद देनेवाली पार्टियाँ कहीं विरुद्ध न हो जायँ।

जब अन्तिम निर्णय हो गया तो युद्ध के संचालन के लिए सैनिक-कार्य-कारिणी-समिति स्थापित हुई। उन्होंने सैनिकों की छावनियों में बड़े ज़ोर से अपने उद्देश्य का प्रचार किया। पेत्रोग्राद् के कमकर कितनी ही हड़-तालों और विद्रोहों को देख चुके थे; इसलिए वह सब से ज्यादा मजबूती से लड़ने को तैयार थे; लेकिन अभी तक उन्होंने बंदूक उठाकर बाक़ायदा लड़ाई लड़ने का कभी अवसर नहीं पाया था। बाल्तिक् के नौसैनिक बोल्शेविकों के पक्ष में थे; लेकिन पेत्रोग्राद् के कमकरों की तरह अपने राजनैतिक उद्देश्य का उन्हें उतना ज्ञान नहीं था। दूसरी छावनियों के बारे में बोल्शेविक इतनी ही आशा रख सकते थे, कि वह उनके विरुद्ध गवर्नमेंट का साथ न देंगे।

असल सवाल था—क्या गवर्नमेंट कसाक् और सैनिक स्कूलियों की इतनी संख्या को विरोधियों के मुक़ाबिले खड़ा कर सकती है; जिसमें कि उनका विरोध बेकार हो।

इस युद्ध में लेनिन् ने सीधा नेतृत्व किया। लेकिन जिस आसानी से और सब से पहले नगर के शक्तिकेन्द्र तार-घर, बिजली-कारख़ाना, बैंक आदि पर कब्ज़ा किया गया, उससे मालूम होता है कि लेनिन् ने १९०५ के तजर्बे से फ़ायदा उठाया था। राजनैतिक और नौसेना-संबंधी दाँव-पेंच का सारा नेतृत्व लेनिन् ने किया। इसमें सन्देह नहीं कि लेनिन् के दिमाग़ के बिना अक्तूबर की क्रान्ति सफल न होती।

७ नवंबर को लड़ाई शुरू हुई। (पुराने रूसी पंचांग के अनुसार उस दिन २५ अक्तूबर था; इसीलिए "लाल क्रान्ति" को अक्तूबर-क्रान्ति

लेनिन् फिन्लैंड स्टेशन (पेत्रोग्राद्) पर (पृ० १४२)

भी कहते है। ३ महीने के बाद १ फरवरी १६१८ से पुराना पचाग छोड़कर

कानूनी शासन-संस्था थी। वह चाहता था, सोवियतों की दूसरी कांग्रेस के उद्घाटन के दिन ७ नवंबर (२५ अक्तूबर) को युद्ध शुरू किया जाय। उसको दिखलाना यह था; कि जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि बोल्शेविकों के साथ हैं। लेनिन् एक दिन की देरी को भी नहीं पसंद करता था। लेकिन त्रोत्स्की के आग्रह और कामेनेफ़् तथा ज़िनोवियेफ़् के विरोध के कारण ७ नवंबर से पहले काम शुरू नहीं किया जा सका। पार्टी के शिक्षित लोग सरकार की सैनिक शक्ति से डर रहे थे। उनको यह भी डर था कि जल्दी करने से मदद देनेवाली पार्टियाँ कहीं विरुद्ध न हो जायँ।

जब अन्तिम निर्णय हो गया तो युद्ध के संचालन के लिए सैनिक-कार्य-कारिणी-समिति स्थापित हुई। उन्होंने सैनिकों की छावनियों में बड़े ज़ोर से अपने उद्देश्य का प्रचार किया। पेत्रोग्राद् के मजदूर कितनी ही हड़-तालों और विद्रोहों को देख चुके थे; इसलिए वह सब से ज्यादा मजबूती से लड़ने को तैयार थे; लेकिन अभी तक उन्होंने बंदूक उठाकर बाक़ायदा लड़ाई लड़ने का कभी अवसर नहीं पाया था। क्रोन्श्तात् के नौसैनिक बोल्शेविकों के पक्ष में थे; लेकिन पेत्रोग्राद् के मजदूरों की तरह अपने राजनैतिक उद्देश्य का उन्हें उतना ज्ञान नहीं था। दूसरी छावनियों के बारे में बोल्शेविक इतनी ही आशा रख सकते थे, कि वह उनके विरुद्ध गवर्नमेंट का साथ न देंगे।

असल सवाल था——क्या गवर्नमेंट कज़ाक् और सैनिक स्कूलियों की इतनी संख्या को विरोधियों के मुक़ाबिले खड़ा कर सकती है; जिसमें कि उनका विरोध बेकार हो।

इस युद्ध में लेनिन् ने सीधा नेतृत्व किया। लेकिन जिस आसानी से और सब से पहले नगर के शक्तिकेन्द्र तार-घर, बिजली-कारख़ाना, बैंक आदि पर कब्जा किया गया, उससे मालूम होता है कि लेनिन् ने १९०५ के तजर्बे से फ़ायदा उठाया था। राजनैतिक और नौसेना-संबंधी का सारा नेतृत्व लेनिन् ने किया। इसमें सन्देह नहीं कि लेनिन् के बिना अक्तूबर की क्रान्ति सफल न होती।

७ नवंबर को लड़ाई शुरू हुई। (पुराने रूसी पंचांग के अनुसार उस दिन २५ अक्तूबर था; इसीलिए "लाल क्रान्ति" को अक्तूबर-क्रान्ति

लेनिन् फिन्लैंड स्टेशन (पेत्रोग्राद्) पर (पृ० १४२)

भी कहते हैं। ३ महीने के बाद १ फरवरी १९१८ से पुराना पचांग छोड़कर

यूरोप में सर्वत्र प्रचलित पंचांग स्वीकार किया गया)। पेत्रोग्राद् के चौरस्ते और सड़कें युद्ध-क्षेत्र बन गईं। बाल्तिक् के नौसैनिक कहीं लड़ रहे थे और कहीं कारखानों के मजदूर—जिनमें औरतें भी थीं—अपने रोज़-मर्रे के कपड़ों में राइफल लेकर दुश्मनों पर धावा बोल रहे थे। और उसी दिन शाम को सोवियतों की दूसरी कांग्रेस के उद्घाटन के समय नई सरकार के शासनारूढ़ होने की घोषणा की गई। कांग्रेस में बोल्शेविकों का बहुत अधिक बहुमत था। घोषणा के समय तक शरद्-प्रासाद को छोड़कर सारी राजधानी सैनिक-क्रान्तिकारिणी-समिति के हाथ में आ गई थी। करेन्स्की संयुक्त-राष्ट्र-अमेरिका के दूतावास की मोटर में बैठ कर भाग गया था। बाकी अस्थायी सरकार के मंत्रिमंडल की उस समय शरद्-प्रासाद में बैठक हो रही थी। कुछ ही घंटों में शरद्-प्रासाद उनके हाथों में था और अस्थायी सरकार के सदस्य बन्दी थे। इस विजय की घोषणा लेनिन् ने खुद कांग्रेस में आकर की। पिछली जुलाई से अब तक यह पहली बार था, जब कि लेनिन् जनता के सामने आया। किस उत्साह और आनंद के साथ लोगों ने उसका स्वागत किया, इसके कहने की अवश्यकता नहीं।

दूसरे दिन नई सरकार स्थापित हुई। लेनिन् सभापति और त्रोत्स्की वैदेशिक सचिव बना। सरकार का नाम रखा गया सोवियत्-जनता-कमीसर (सोवेत् नरोद्निक कोमिसरोफ़् या सोव्-नर्-कोम्)। अस्थायी मंत्रिमंडल के सदस्यों को मंत्री कहा जाता था, इसीलिए उससे भेद करने के लिए कमीसर नाम रखा गया। प्रथम सोव्-नर्-कोम् के सभी सदस्य बोल्शेविक थे। कामेनोफ़्, जिनोवियेफ्, रिकोफ़्, लूनाचार्स्की, रियाजनोफ़् जैसे सर्वोच्च शिक्षित बोल्शेविकों ने लेनिन् को धमकी दी कि यदि वह दूसरी समाजवादी पार्टियों को नहीं लेंगे तो वे सहयोग न देंगे। लेकिन लेनिन् जानता था कि जिस आग को वह सुलगा रहा है, उसमें गंगा-जमुनी मंत्रिमंडल हानिकारक सिद्ध होगा। उसने उनकी बात मानने से इनकार कर दिया। और कहा—जो हमारी योजना को नहीं मानते, उन्हें हम नहीं ले सकते। उसका प्रोग्राम

था—सभी शक्ति सोवियतो के हाथ मे देना, लड़ाई को तुरन्त बन्द करना, रूस के भीतर बसने वाली सभी जातियों को स्वभाग्य-निर्णय का अधिकार देना। भूमि और उद्योग-धंधों को व्यक्तियों के हाथ से छीन कर राष्ट्र के हाथ में देना।

लेनिन् ने अधिकार सँभालने के बाद जो पहला काम किया, वह थी भूमि-संबधी घोषणा। कांग्रेस की दूसरे दिन की बैठक (८ नवंबर) में प्रस्ताव पास हुआ कि सभी गैर किसान ज़मींदारियाँ तथा उनके साथ के पशु और कृषि-संबधी यंत्र आदि ज़ब्त किये जाते हैं, और उनको सँभालने का भार किसानो द्वारा निर्वाचित स्थानीय भूमि-समितियों के हाथ में दिया जाता है।

क्रान्ति-युद्ध (पृ० १५४)

इस प्रस्ताव ने किसान - सोवियतो की कांग्रेस—जो कि कुछ दिन बाद बैठी—को लेनिन् के पक्षमें कर दिया और इस प्रकार उन समाज-वादियों को निराश होना पड़ा, जो किसान सोवियत मे बोल्शेविकों के विरोध की आशा रखते थे।

सोव्-नर्-कोम् ने अपने बोल्शेविक-प्रोग्राम को बड़ी ईमानदारी से पूरा किया। एक सप्ताह के भीतर ही उसने बैंक और उद्योग-धंधों को राष्ट्रीय बना दिया। काफ़ी समय तक नई सरकार ने पूंजीवादियों के साथ नर्मी का बर्ताव किया। इस नर्मी का उन्होंने फ़ायदा उठाना चाहा। कलम-जीवी लोगों जैसे—बैंक-क्लर्क, और टेलीफ़ोन की लड़कियों आदि ने नई सरकार का बाईकाट किया, लेकिन यह कलम-जीवी श्रेणी बड़ी कायर थी। देर तक विरोध के लिए टिक न सकती थी। दिल में हर पूंजीवादी को सोवियत्-शासन से घृणा थी, लेकिन सामने आने की हिम्मत न थी। विरोध करनेवाले थे सेना के बड़े बड़े अफ़सर तथा शासन-विभाग के कुछ अफ़सर। उनके साथ सैनिक स्कूल के तरुण विद्यार्थी थे, जो कि प्रायः सभी धनिकों के लड़के थे।

पेत्रोग्राद् से बाहर भी सोवियत्-शासन के फैलने में उतनी दिक्कत नहीं हुई।

*** ***

सोवियत्-प्रजातंत्र का विधान उस वक्त तक नहीं बना था, और कई महीनों बाद जुलाई १९१८ में पांचवीं सोवियत्-कांग्रेस ने विधान को तैयार किया। उसके बाद सातवीं बोल्शेविक-पार्टी-कांग्रेस हुई जिसमें लेनिन् के प्रस्तावानुसार पार्टी का नाम जनसत्ताक-समाजवादी की जगह कम्युनिस्ट पार्टी (साम्यवादी-दल) रखा गया। 'कम्युनिस्ट' नाम रखने में ख़ास भाव काम कर रहा था। यही नाम उस पार्टी का भी था, जिसे कार्ल मार्क्स ने १८४८ में स्थापित किया था। और इसी नाम को दुनिया के श्रमजीवियों को मिल कर लड़ाई करने के लिए आह्वान करते समय अपनी पुस्तिका 'कम्युनिस्ट घोषणा' में भी इस्तेमाल किया। इसके साथ यह भी ख़याल था, कि कम्युनिज्म या साम्यवाद समाजवाद (सोशलिज्म) से ऊपर की अवस्था है; जब कि जीवन की सामग्री की उपज और उपभोग के बारे में नियम होगा—

हर एक से उसकी योग्यता के अनुसार काम लेना और हर एक को उसकी आवश्यकता के मुताबिक भोग-सामग्री देना। चूंकि लेनिन् यह आदर्श भविष्य के लिए रखना चाहता था, इस लिए भी उसने यह नाम पसन्द किया। १७९२ में फ्रांस में भी पैरिस के कमकरों ने धनिकों का राज्य उठा कर अपना शासन स्थापित किया था और इतिहास में उसे 'पैरिस् कम्यून' कहते हैं। यह ख़याल भी नाम बदलते वक्त लेनिन् के सामने था।

*** ***

शासन सँभालने के समय ही सोवियत् सरकार ने युद्ध बन्द करने का प्रस्ताव स्वीकृत किया था। इसलिए लेनिन् को इसे भी कार्य रूप में परिणत करना था। नई सरकार ने एक शान्ति-घोषणा प्रकाशित की; जिसमें उसने स्वीकार किया कि बिना कब्ज़ा और बिना हरजाना के लिए सुलह करना न्यायानुमोदित सुलह है। लेकिन लड़ाई में जिस तरह घोर नर-संहार हो रहा है, उसको देख कर गवर्नमेंट और भी विचारपूर्ण शर्त पर सुलह करने के लिए तैयार है। वह घोषित करती है कि ज़ारशाही के सभी गुप्त सुलह-नामों को प्रकाशित कर दिया जायगा। ३ महीने के लिए सभी युद्ध-क्षेत्रों में लड़ाई बन्द की जाय और लड़नेवाली सभी शासक और अशासक जातियों का इसके लिए सम्मेलन किया जाय। घोषणा में इंगलैंड, फ्रास, जर्मनी के कमकरों से ख़ास तौर से अपील की गई थी।

मित्र-शक्तियों ने घोषणा का जवाब तक न दिया और सोवियत् सरकार को न स्वीकार करने का निश्चय कर लिया। गवर्नमेंट ने प्रधान सेनापति को लड़ाई बन्द कर के सुलह की बातचीत करने के लिए आज्ञा दी। उसके इनकार करने पर मन्त्रिमंडल ने एक बोल्शेविक क्रिलेंको को प्रधान सेना-पति बनाया। २७ नवम्बर को सरकार ने अपने प्रतिनिधि जर्मनों के पास भेजे। उसी दिन मित्र-शक्तियों को फिर सुलह के लिए दावत दी गई। लेकिन उसका कोई फल नहीं हुआ। ५ दिसंबर को सोवियत् सरकार और

जर्मनी में युद्ध वन्द करने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और १२ दिसंवर को ब्रेस्त-लितोव्स्क में सुलह की वात शुरू हुई।

सुलह की वात में जर्मनों की शर्तें कुछ कड़ी थीं। लेनिन् ने उसे तुरन्त मानने के लिए कहा; क्योंकि वह जानता था, देर का मतलव और भी जगहों से हाथ धोना है। त्रोत्स्की इसे पसन्द न करता था, और एक मर्तवे लेनिन् की वात को वोल्शेविक-केन्द्रीय-समिति ने भी वहुसम्मति से अस्वीकृत कर दिया। उसके पक्ष में सम्मति देनेवालों में स्वेर्द्लोफ़् और स्तालिन् भी थे। लेकिन अन्त में कमेटी ने देखा कि लेनिन् की ही वात उस समय अनुकूल है। लेनिन् ने कहा था—यदि जर्मनों की शर्त हो कि वोल्शेविक सरकार हटा दी जाय, तभी हमें लड़ने के लिए तैयार होना चाहिए। २३ फ़रवरी को केन्द्रीय समिति ने जर्मन शर्तों को मंजूर किया।

*** ***

गृह-युद्ध—(मई १९१८ से नवंवर २० तक) गृह-युद्ध क्रान्ति के ९ महीने वाद आरंभ हुआ। क्रान्ति के वक्त रूस को सव से अधिक खतरा था जर्मनी से। जर्मनी ने यद्यपि रूस के दक्षिणी भाग पर दोन् तक अपना अधिकार किया था, और वहाँ पर वह स्थानीय जनता, धनिकों और ज़मींदारों को सोवियत् शासन के ख़िलाफ़ उभारता भी था। लेकिन उसकी पश्चिमी सीमा पर मित्र-शक्तियों की ओर से वड़ा प्रहार हो रहा था। इसी लिए लुडन्डर्फ चाहता था कि रूस से समझौता कर लिया जाये, जिसमें अपनी सेना को पश्चिमी युद्ध-क्षेत्र पर भेजा जा सके। इसलिए उस वक्त गृह-युद्ध का जोर उतना अधिक वढ़ने नहीं पाया।

सव से कठिन समय सोवियत्-शासन के लिए तव आया, जव जर्मनी परास्त हो गया। उस वक्त मित्र-शक्तियों की सेनायें जहाँ तहाँ युद्ध-क्षेत्र के काम से छुट्टी पा रहीं थीं। इंगलैंड, फ़्रांस, अमेरिका और जापान कोई भी सोवियत्-शक्ति को फूटी आँख से भी देखने को तैयार नहीं था। वे

समझते थे, कि सोवियत्-शक्ति के रूप में सारे पूंजीवादी संसार का एक बड़ा दुश्मन पैदा हो गया। यदि रूस में इस शासन ने सफलता पाई, तो सारी दुनिया के जांगर चलानेवालों की हिम्मत बढ़ जायगी।

सोवियत्-शक्ति जारशाही के सभी हिस्सों में करीब करीब फैल गई थी। लिथुआनिया, लत्विया, एस्थोनिया और फिन्लैंड—जो पहले जार-शाही साम्राज्य के एक भाग थे—की स्वतंत्रता को सोवियत् सरकार ने स्वीकार कर लिया। पोलैंड का भी रूस के मातहत वाला हिस्सा अलग हो गया। काकेशस् और मध्य-एशिया में भी सोवियत्-शासन की बात शुरू हो चुकी थी। इसी समय २६ मई १९१८ को गृह-युद्ध शुरू हुआ। जेको-स्लावक सिपाही—जो व्लादीवोस्तोक् से चलनेवाले थे, और सिबेरिया की रेलवे पर पेंजा से इर्कुत्स्क तक फैले थे—ने सोवियत् के खिलाफ विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह मित्र-शक्तियों की शह से हुआ था। जेक सैनिकों ने सिबेरिया में रेल के किनारे की सभी जगहों से सोवियत्-शासन को उठा दिया। पुराने जमींदारों और धनिकों को पूंजीवादी मित्र-शक्तियों ने दिल खोल कर धन और गोला-बारूद से मदद देना शुरू किया। नवंबर १९१८—जब कि जर्मनी पर मित्र-शक्तियों ने विजय पाई—से सोवियत् शासन के ऊपर और काले बादल मँडराने लगे। अब सवाल था, एक तरफ श्रमजीवियों के अधिनायकत्व का और दूसरी तरफ पूंजीवादियों के अधि-नायकत्व का।

मई १९१८ को मालूम होने लगा कि शहर की जनता को भूखा मरना पड़ेगा। यातायात के रास्ते बंद हो गये थे। रूबल का दाम गिर गया था। किसान अपने अनाज को देना नहीं चाहते थे। इस पर लेनिन् ने बड़े मौके पर पथप्रदर्शन किया। उसने कहा—"अनाज से फायदा उठानेवालों के खिलाफ जबर्दस्त जहाद बोलनी चाहिए। अनाज के व्यक्तिगत व्यापार को बिल्कुल मना कर देना चाहिए। खर्च से अधिक अनाज को निश्चित दर पर गवर्नमेंट को देना चाहिए। अतिरिक्त अनाज को छिपाना दंडनीय

समझना चाहिए। इस अतिरिक्त अनाज को रजिस्टर में दर्ज करना चाहिए और सभी नागरिकों को रोटी बाँटने में न्याय करना चाहिए।"

यह नीति गृह-युद्ध के अन्त तक कायम रही; और अगर इस नीति को न स्थापित किया गया होता तो भूख के मारे जो अव्यवस्था होती, उसके कारण लाल-सेना लड़ नहीं सकती थी। लेकिन साथ ही इस नीति ने वोल्गा और सिबेरिया के बहुत से किसानों को सोवियत् के खिलाफ़ भड़का भी दिया। राज़ी खुशी से वह अपने अनाज को सरकार के हाथ में नहीं देना चाहते थे।

मित्र-शक्तियों ने ज़ेकोस्लावक-सेना (महायुद्ध के पूर्व ज़ेकोस्लावकिया का अधिकांश भाग आस्ट्रिया के अधिकार में था। लेकिन स्लाव जाति के होने से वह रूसियों के अधिक नज़दीक थे। रूस ने जेकोस्लावकिया को आस्ट्रिया के चंगुल से छुड़ाने का आश्वासन दे अपने साथ कर लिया। इन्हीं राष्ट्रीय जेकों की सेना रूस के मित्र के तौर पर सिबेरिया में पहुँची थी) को सोवियत् के खिलाफ़ खड़ा किया। अंग्रेज़ों ने आर्खेङ्गल् (उत्तरी रूस) में अपनी सेनाएँ उतारीं। बाकू के तेलों पर नज़र रखते हुए उन्होंने काकेशस् में षड्यंत्र किया।

राजधानी के भीतर भी असन्तुष्ट होकर कुछ क्रान्ति-विरोधियों ने गड़बड़ मचानी शुरू की। बोल्शेविक नेताओं के मारने का षड्यंत्र रचा जाने लगा। पेत्रोग्राद् की खुफ़िया पुलीस (चेका) का प्रधान उरित्स्की ३० जून को मार डाला गया; और खुद लेनिन् पर एक स्त्री ने पिस्तौल से हमला किया। उसकी एक गोली लेनिन् के फेफड़े में लगी और दूसरी गर्दन से हड्डी को बचाते निकल गई। लेनिन् कमकरों की सभा में व्याख्यान दे कर अपनी मोटर पर चढ़ रहा था, उसी वक्त गोली चलाई गई। लेनिन् ने उस वक्त हद से ज़्यादा हिम्मत दिखलाई। घर की सीढ़ी पर उठा कर ले जाने को स्वीकार नहीं किया और ख़ुद अपने पैरों से चल कर गया। लेकिन घाव साधारण न था। कई दिनों तक वह जीवन और मृत्यु के बीच लटकता रहा। लेकिन अन्त में वह ख़तरे से बाहर हुआ। तो भी उसका

स्वास्थ्य फिर पहले जैसा नही हो सका। जिस वक्त जनता को इसकी खबर लगी, तो उनके शोक और क्रोध का ठिकाना नही था। इस १३ अगस्त की घटना ने दिखला दिया कि रूस की जनता में लेनिन् के लिए क्या स्थान है।

अभी लेनिन् की अवस्था सुधरी नही थी कि मित्र-शक्तियो की मदद से सफेद सेना (सोवियत् विरोधियो की सेना) ने ज़ोर पकडा। सोवियत् शक्ति के लिए उतना खतरनाक वक्त कभी नही आया था जैसा कि १९१९ के जुलाई-अगस्त में था। लेकिन इसके साथ साथ राजनैतिक दृष्टि से बोल्शेविको का पक्ष भीतर की तरफ से मजबूत भी हो गया। लोगो को साफ मालूम होने लगा, कि एक तरफ रूस की स्वतंत्रता का प्रश्न है और दूसरी तरफ विदेशी पूँजीवाद की अधीनता के साथ साथ रूस की स्वतंत्रता का अन्त। इस ख्याल ने बहुतो को सोवियत् की तरफ खीच लिया। सिबेरिया से सफेद सेनापतियों का निकालना एक तरह से वहाँ ही के स्वतंत्रता-प्रेमी निवासियों का काम था।

लेनिन् को एक तरफ भीतर के इस गृह-युद्ध मे विजय पाने की चिन्ता थी और दूसरी तरफ वैदेशिक नीति की ज़िम्मेवारी भी थी। गृह-युद्ध दोनो तरफ से बढता ही गया। एक बार तो देनिकिन् की सेना काकेशस् की तरफ से बढती हुई, मास्को के १०० मील पास तक पहुँच गई थी। उधर सिबेरिया की तरफ से कोल्चक् को भी उसी तरह सफलता मिल रही थी। बोल्शेविको के लिए यही असली परीक्षा का समय था। लेकिन जैसे जैसे समय बीतता जाता था, तजर्बा उन्हें और भी दृढ़ और सचेत बनाता जाता था। इगलैंड, फ्रांस के मजदूरों को यह मालूम होते देर नहीं लगी कि उनकी गवर्नमेंट संसार के एक मात्र मजदूर-राज्य का गला घोंटना चाहती है। इस पर मजदूरों में उत्तेजना फैली। कर्जन जैसे साम्राज्यवादियों ने चाहा था कि जर्मनी के खिलाफ लगी शक्ति को सोवियत् के खिलाफ इस्तेमाल किया जाय; लेकिन उस वक्त इगलैंड के मजदूरो ने सोवियत् के साथ ऐसी सहानुभूति दिखलाई कि ब्रिटिश सरकार को और आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं हुई।

लड़ाई चली ही जा रही थी। उस वक्त अमेरिका ने सोवियत् सरकार और सफ़ेद सेनापतियों के सामने प्रस्ताव रखा कि जो इलाक़ा जिसके पास है, वह उसके पास ही रहे। और वहीं की जनता के ऊपर छोड़ दिया जाय कि वह लाल शासन को पसन्द करती है या सफ़ेद। लेनिन् इसके लिए तैयार था, क्योंकि वह जानता था कि जनता को अधिक दिनों तक सफ़ेद ज़मींदार भ्रम में नहीं डाल सकते। लेकिन सफ़ेद सेनापतियों ने इस योजना को अस्वीकार कर दिया। सुदूर-पूर्व-प्रजातंत्र में जापान के ज़ोर देने के कारण यह समझौता मान लिया गया था, लेकिन वही बात हुई जिसकी लेनिन् आशा रखता था। कुछ ही दिनों में जनता ने सफ़ेद सेनापतियों के राजसी ठाट और हकूमत से तंग आकर उन्हें निकाल बाहर किया।

मार्च १६१६ में लेनिन् के परामर्शानुसार साम्यवादियों का एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। इसी वक्त तृतीय कम्युनिस्ट-इन्टर्नेश्नल् (सारे संसार के साम्यवादियों की सभा) की स्थापना हुई।

लेनिन् ने रूसी साम्राज्य की भीतरी जातियों को स्वभाग्य-निर्णय का अधिकार जो दिया, उससे उस वक्त त्रोत्स्की जैसे कितने ही असन्तुष्ट हुए थे। लेकिन तजर्बे ने बतलाया कि लेनिन् ठीक रास्ते पर था। इस से दो बातों का फ़ायदा हुआ—एक सोवियत् को केन्द्रीय शक्ति की शकल में रूसी साम्राज्यवाद को पुनर्जागृत होने का मौक़ा नहीं मिला और दूसरे उन जातियों के पूंजीवादियों को जातीयता के नाम पर सोवियत्-शक्ति के ख़िलाफ़ लोगों को भड़काने का मौक़ा नहीं मिला। छिपे हुए रूसी साम्राज्य-वाद के लिए जो थोड़ी बहुत गुंजायश रह भी गई थी, वह दिसंबर १६२२ में खतम हो गई; जब कि रूसी सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक में से रूस का नाम ही हटा दिया गया और उसकी जगह संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक नाम रखा गया।

मार्च १६२० में मालूम हो रहा था कि अब गृह-युद्ध खतम होने को है। कोल्चक् और देनिकिन् हार चुके थे और इंग्लैंड अपने हाथ को खींच रहा

था। लेकिन इसी समय फ़ांस आगे बढ़ कर रेंगल् की मदद करने लगा। रेंगल् ने देनिकिन् की बची खुची सेना को क्रिमिया में फिर से संगठित किया। फ़ास की शह पाकर पोलैंड के नये राष्ट्र ने रूस पर हमला कर दिया। रेंगल् दक्षिण से उत्तर को बढ रहा था और मई के अन्त में पिल्सुड्स्की (पोलैंड) ने उक्रइन् पर चढाई शुरू करके कियेफ़् पर कब्जा कर लिया। लेकिन सोवियत् की शक्ति अब बहुत मजबूत हो चुकी थी। ३ वर्ष के युद्ध ने लाल सेना को खूब सगठित और सुदृढ़ बना दिया था। उसने पोलिश् सेना को उक्रइन से ही नहीं भगाया, बल्कि पोलैंड के भीतर भी घुस गई। और चाहती थी, वर्सावा (पोलैंड की राजधानी वार्सा) पर अधिकार कर के सारे पोलैंड को सोवियत्-प्रजातंत्र का रूप दे दे। लेनिन् ने इसे पसन्द नहीं किया, लेकिन दूसरे क्रान्तिकारियों ने अन्तर्राष्ट्रीय क्रान्ति के लिए इसमें अच्छा मौका देखा। इसमें शक नहीं कि यदि लाल सेना ने वर्सावा दखल कर लिया होता और इस प्रकार वह पोलैंड में साम्यवादी सरकार स्थापित करने में सफल हुई होती तो इसका असर पडोसी जर्मनी—जहाँ पर युद्ध के बाद के कई वर्षों तक समाजवाद की शक्ति बढी हुई थी—पर ही नहीं पडता बल्कि सारे संसार पर पड़ता। लेकिन पोलैंड वाले बहुत वर्षों से रूस की पराधीनता का मजा चख चुके थे। बहुत दिनों के बाद आस्ट्रिया, जर्मनी और रूस के बीच टुकडे टुकड़े बँटा हुआ पोलैंड एक राज्य बन सका था। रूस के हमले से उसे फिर खतरा हो गया और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के नाम पर सारी पोलिश् जनता—कमकर भी—एक हो गई और अगस्त १९२० में सोवियत् सेना को वर्सावा में हार खानी पड़ी।

लेनिन् ने यहाँ भी कुछ हद तक दब कर सुलह कर ली। अब लाल-सेना रेंगल् के मुकाबले के लिए छुट्टी पा गई थी और नवंबर १९२० में रेंगल् के पतन के साथ गृह-युद्ध का अन्त हुआ।

नवंबर १९१७ से नवंबर १९२० तक साम्यवादी सरकार को भयंकर युद्धों से गुज़रना पड़ा और इसके लिए युद्ध के समय के साम्यवाद की खास नीति निर्द्धारित करनी पड़ी थी। गृह-युद्ध के समाप्त हो जाने पर अब नष्ट-प्राय उद्योग और त्यक्त-प्राय रेलों के पुनर्निर्माण का ही सवाल नहीं था। बल्कि प्रश्न था, कैसे किसी भी उपाय से लोगों को कुछ सुस्ताने का मौक़ा दिया जाय। मार्च १९२१ में दशम पार्टी कांग्रेस में लेनिन् ने नई-आर्थिक-नीति उसके सामने रखा। इसके जरिए वह चाहता था कि किसानों के विरोध को कम कर के सारी शक्ति औद्योगिक पुनर्निर्माण में लगाई जाय। इस नीति के अनुसार किसानों के लिए लगान निश्चित कर दी गई और उन्हें अतिरिक्त अनाज को जहाँ चाहे वहाँ बेच सकने का अधिकार मिला। इससे वैयक्तिक लाभ को उत्तेजना मिली। व्यापार व्यक्तियों के हाथ में जाने लगा और घर और छोटे छोटे कारखाने तक भी वैयक्तिक सम्पत्ति होने लगे।

नई आर्थिक नीति से लोगों को उतना लाभ नहीं हुआ, क्योंकि उसी साल फसल के खराब होने से अकाल पड़ गया।

मार्च १९२२ की अंतिम पार्टी कांग्रेस थी, जिसमें लेनिन् ने भाग लिया। २७ मार्च का उसका व्याख्यान खास महत्त्व रखता है। साम्यवादियों को कार-बार चलाने का ढंग पूँजीवादियों से सीखना चाहिए; इसके बारे में उसने कहा—"हमारी तरफ़ से कहा जाता है,—पूँजीवादी काम में लगा है। उसका काम लुटेरे की तरह है। वह नफ़ा चाहता है। चाहे जो हो, वह अपने काम को जानता है। लेकिन तुम—तुम एक नये तरीके के लिए कोशिश कर रहे हो। तुम्हें नफ़ा नहीं करना है। साम्यवाद के सिद्धान्त, उच्च आदर्श, तुम्हारे सामने हैं। तुम पवित्र आदमी हो, तुम धर्मात्मा पुरुष हो, तुम स्वर्ग में जाकर रहने लायक़ आदमी हो। लेकिन क्या तुम्हें अपने काम का ढंग मालूम है? हमें झूठा अभिमान नहीं होना चाहिए।.....हमें यह सीधी सादी बात जाननी चाहिए कि एक नये और असाधारणतया

मुश्किल काम को नये तौर पर फिर से सीखना है। अगर एक आरंभ तुम्हें गलत रास्ते पर ले जाता है, तो फिर मे आरंभ करो। उसी काम को दोबारा दस बार करो, लेकिन लक्ष्य पर तुम्हें पहुँचना चाहिए। आत्म-श्लाघी मत बनो। साम्यवादी होने का अभिमान मत करो। . ..."

साम्यवादी पार्टी के बारे में कहते हुए लेनिन् ने कहा—"महान् जन-समुदाय मे समुद्र मे बूँद की तरह हम है। हम तभी शासन कर सकते हैं जब कि जनता के मनोभाव को हम अपने काम मे प्रकट करें।......आज तक जितने भी क्रान्तिकारी दलो ने हार खाई, उसका कारण था कि उन्हें बड़ा अभिमान हो गया। वह देख नही सकते थे कि कहाँ से उनकी शक्ति है; और वे अपनी कमजोरियो को कहने में डरते थे। हम लोगो का पतन नहीं होगा, क्योकि हम अपनी कमजोरियो को कहने मे डरते नही। अपनी कमजोरियों को कैसे हटाया जाय, इसे हम सीखेंगे।"

* * * * * *

१६२२ के आरभ मे लेनिन् का स्वास्थ्य फिर खराब हो गया। इतना खराब हुआ कि उसे काम छोड़ देना पड़ा। मई में लकवा हो गया और दाहिना हाथ और पैर उठ नहीं सकता था। हालत बहुत खतरनाक समझी जाती थी। जुलाई में स्वास्थ्य में कुछ सुधार होने लगा। इस वक्त डाक्टरों ने उसे काम करने से बिलकुल मना कर दिया था। तो भी वह कुछ कर ही लेता था। अक्तूबर मे स्वास्थ्य इतना अच्छा हो गया था कि फिर से काम पर आने की बात प्रकाशित हो गई थी। लेकिन दिसबर में हालत फिर खराब हो गई। अब शासन का काम उसे अपने हाथ से छोड़ देना पड़ा। इस वक्त भी लेनिन् ने कुछ लेख लिखे। उसका सब से अन्तिम लेख था—"सहयोग के ऊपर"। इसमें लेनिन् ने किसान-समस्या पर प्रकाश डाला है, जिसमें आजकल के कोलखोजों का पूर्वाभास मिलता है।

मार्च १६२३ में दोबारा लकवा मारा और अब उसे सब काम छोड़

देना पड़ा। मास्को के पास गोर्की के गाँव वाले घर में ले जाया गया, जहाँ वह अपने जीवन की अन्तिम घड़ियों तक रहा। १६२३ के अन्तिम महीने और जनवरी के पहले सप्ताह कुछ आशा होने लगी थी लेकिन वह दिखलावा था। २१ जनवरी १६२४ को फिर एक-ब-एक बीमारी बढ़ गई। और उसी दिन शाम को ६ बज कर ५० मिनट पर लेनिन् का देहान्त हो गया।

* * *   * * *

२८ जनवरी १६२४ को लेनिन् की मृत्यु के ६ दिन बाद स्तालिन् ने क्रेम्लिन् सैनिक विद्यार्थियों के सामने लेनिन् के ऊपर एक व्याख्यान दिया था—

शाहबाज—पहले पहल मेरा परिचय लेनिन् से १६०३ में हुआ। लेकिन यह प्रत्यक्ष परिचय नहीं था। यह परिचय पत्र-व्यवहार द्वारा स्थापित हुआ था। इसने मेरे दिल पर ऐसी अमिट छाप छोड़ी जो कि कभी मेरे दिल से नहीं हटी........। उस समय मैं साइबेरिया में निर्वासित था। १८६० के अन्त से ही मुझे लेनिन् के कामों का पता था। लेकिन १६०१ में 'इस्क्रा' के प्रकाशन के बाद खास तौर से मुझे विश्वास हो गया कि लेनिन् साधारण आदमी नहीं है। मैं उसे पार्टी का एक नेता मात्र नहीं समझता था, बल्कि उसका निर्माता समझता था.......। जब कभी भी मैं अपनी पार्टी के और नेताओं से लेनिन् की तुलना करता था, तो मुझे मालूम पड़ता था कि प्लेखानोफ़, मर्तोफ़, अक्सेलरोद् और दूसरे लेनिन् के कन्धे ही तक पहुँचते थे। वह नेताओं में से एक नहीं था, बल्कि बहुत उच्च श्रेणी का नेता था। वह पहाड़ी शाहबाज़ था, जो लड़ाई से ज़रा भी डरता नहीं था। उसने साहस के साथ पार्टी को, रूसी क्रान्तिकारी आन्दोलन के अज्ञात पथ पर चलाया। उस समय मेरे दिल पर लेनिन् का ऐसा प्रभाव पड़ा था कि मैंने अपना भाव अपने एक घनिष्ट मित्र—जो कि उस समय लेनिन्

की तरह विदेश में रह रहे थे—को लिखा; और उनसे अपनी राय देने के लिए पूछा। थोड़े समय बाद (१९०३ के अन्त में)—जब कि मैं निर्वासित कर के साइबेरिया भेज दिया गया था—मेरे पास लेनिन् का एक बहुत गंभीर पत्र आया। मालूम हुआ, मित्र ने मेरे पत्र को लेनिन् के पास भेज दिया. . । मुझे बड़ा अफ़सोस आता है कि मैंने लेनिन् के पत्रों को जला दिया, लेकिन उस समय हमारे जैसे छिपे क्रान्तिकारियों के लिए ऐसा करना जरूरी था। उस समय से मेरा लेनिन् के साथ परिचय आरंभ हुआ।

सादगी—पहले पहल मुझे लेनिन् का दर्शन दिसंबर १९०५ में तमेर्फोर्स (फिनलैंड) में बोल्शेविकों के एक सम्मेलन में हुआ। मैं आशा करता था, वहाँ अपनी पार्टी के पहाड़ी शाहबाज को देखने के लिए। महान् पुरुष—राजनीति ही में महान् नहीं, बल्कि शरीर में भी। क्योंकि मैंने लेनिन् का एक अलग ही चित्र कल्पित कर रखा था। वह बड़ा कद्दावर होगा, मोटा-ताजा, और रोबदार होगा। लेकिन मुझे बड़ी निराशा हुई, जब कि उसे एक ऐसा साधारण आदमी देखा; जो औसत ऊँचाई से भी छोटा था और किसी प्रकार भी, हाँ सचमुच किसी प्रकार भी, साधारण आदमी से उससे भेद नहीं किया जा सकता।. . . . . बड़े आदमियों के लिए यह मानी हुई बात है, कि बैठक में वे पीछे आयें, जिसमें कि पहले से जमा हुए लोग बड़ी उत्सुकता के साथ टक लगाये उनके आगमन की प्रतीक्षा करें और बड़े आदमी के आगमन के जरा ही पहले एकत्र जनता कह उठे—'चु. . . . . चुप . . . . वह आ रहा है। मैं समझ रहा था, कि यह पद्धति बहुत आवश्यक है, क्योंकि इससे रोब पड़ता है और गौरव बढ़ता है। लेकिन मेरी निराशा का ठिकाना नहीं था जब मैंने सुना, कि लेनिन् प्रतिनिधियों के आने में भी,पहले पहुँचा हुआ है। और एक कोने में बैठ कर मामूली बातचीत कर रहा है, और कान्फ्रेंस के मामूली प्रतिनिधियों के साथ। मैं इसे तुमसे छिपाना नहीं चाहता कि उस समय एक आवश्यक नियम का इस प्रकार उल्लंघन मैं ठीक नहीं मानता था।

पीछे मेरे तजर्वे ने यह वतलाया कि लेनिन् की यह सादगी और विनम्रता, यह अपने को ज़ाहिर न करने का प्रयत्न या हर समय अपने को प्रधान करके न दिखलाना, अपने ऊँचे पद का प्रदर्शन न करना—यह गुण लेनिन् के सब से मजबूत गुणों में है; जो कि नई जनता के नये लीडर, सीधी सादी और मामूली जनता के नायक के लिए .... वड़ी ताक़त की चीज़ है।

तर्क-शक्ति—उस सम्मेलन में तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं और किसानों की समस्या पर जो व्याख्यान लेनिन् ने दिये थे वे वहुत गंभीर थे। दुर्भाग्य से उनकी रिपोर्ट सुरक्षित नहीं रखी गई। वह इतने जोशीले और अन्तःप्रेरणादायक व्याख्यान थे, जिन्होंने सारे सम्मेलन में जोश और उत्साह भर दिया। साधारण पार्लियामेंटरी वक्ताओं से लेनिन् के व्याख्यानों में कितनी ही विशेषताएँ थीं। उनमें असाधारण आत्मविश्वास की मात्रा होती थी। युक्ति देने में सादगी, और स्पष्टता थी। छोटे छोटे वाक्य सभी के समझने लायक होते थे। अभिनय का अभाव था। गर्जन-तर्जन का नाम न था। ऊँचे ऊँचे वाक्यों और शब्दों के मायाजाल का भी पता न था।

लेकिन लेनिन् के व्याख्यानों की ये विशेषताएँ नहीं थीं, जिन्होंने कि उस समय मुझे अपनी ओर आकर्षित किया। मैं आकर्षित हुआ था, लेनिन् के व्याख्यानों की अकाट्य युक्तियों के कारण। वे थोड़ी रूखी ज़रूर थीं लेकिन श्रोतृ-मंडली पर पूर्णतया प्रभाव डालती थीं; और धीरे धीरे उसमें विद्युत्-संचार करके सारी जनता को अपने हाथ में कर लेती थीं।... ......

मैं समझता हूँ कि लेनिन् के व्याख्यानों की यह विशेषता उसकी वक्तृत्वकला का सब से मजवूत अंश है।

चिड़चिड़ापन नहीं—दूसरी वार लेनिन् को मैंने पार्टी के स्टाक्होलम कांग्रेस में १९०६ में देखा। सब लोग जानते हैं कि इस कांग्रेस में वोल्शेविक अल्पमत में थे और उनकी हार हुई थी। यह पहली वार था, जब कि मैंने लेनिन् को पराजित के रूप में देखा। लेनिन् उन नेताओं की तरह नहीं था,

जो कि हार जाने पर चिड़चिड़ा जाते हैं और ज़िद पर उतर आते हैं। इस के विरुद्ध हार ने लेनिन् के भीतर और साहस भर दिया था। उसने उसके अनुयायियों को नई लड़ाइयों और भविष्य की विजय के लिए उत्साहित किया। ....

गर्व नहीं---उसके बाद मैंने लेनिन् को लदन में १९०७ में देखा। बोल्शेविक यहाँ विजयी हुए थे। मैंने वहाँ लेनिन् को पहले पहल विजेता के रूप में देखा। आमतौर से 'जय' नेताओं के दिमाग को फेर देती हैं। उनमें गर्व और गरूर भर देती है। प्राय ऐसे समय में वह अपने जय का प्रदर्शन करते हैं..........। लेकिन लेनिन् इस तरह के नेताओं में से नहीं था। इसके विरुद्ध बल्कि ऐसी ही विजय के बाद लेनिन् और भी जागरूक, और भी सजग हो जाता था। मुझे याद है, लेनिन् किस तरह दिल से प्रतिनिधियों को समझा रहा था---'पहली बात है कि विजय में फूल मत जाओ। गर्व मत करो। दूसरी बात है विजय को स्थायी बनाओ। तीसरी बात है, विरोधियों को पीस दो क्योंकि, वह सिर्फ पराजित हुए हैं, वह पूरी तरह पिसे नहीं हैं।'. ....'जय का गर्व न करना लेनिन् के स्वभाव की यह खास विशेषता थी; जो कि ध्यान-पूर्वक शत्रुओं की शक्तियों को तौलने और पार्टी पर अचानक प्रहार होने से बचाने में लेनिन् की सहायता करती थी।

सिद्धान्तवादी---पार्टी के नेता को अपनी पार्टी के बहुमत की राय को बहुमूल्य समझना चाहिए। बहुमत एक ऐसी शक्ति है, जिसका ध्यान नेता को हमेशा सामने रखना चाहिए। लेनिन् इस बात को किसी भी दूसरे पार्टी-नेता से कम नहीं समझता था। लेकिन लेनिन् ने कभी भी अपने को बहुमत का दास बनाना पसन्द नहीं किया। विशेषकर जब कि बहुमत के लिए किसी सिद्धान्त का आधार नहीं। हमारी पार्टी के इतिहास में ऐसे समय आये हैं, जब कि बहुमत या पार्टी का तत्कालीन लाभ जॉगर चलाने वालों के मूलहित के विरुद्ध हुआ। ऐसे अवसरों पर लेनिन् बिना हिच-

किचाये दृढ़ता-पूर्वक पार्टी के बहुमत के ख़िलाफ़ सिद्धान्त की ओर रहा। ऐसी अवस्थाओं में अकेला होने का भी उसने डर नहीं किया। वह समझता था, जैसा कि वह कहा करता था—'सिद्धान्त पर अवलंबित नीति ही ठीक नीति है'। ....

जनता में विश्वास—पार्टियों के नेता और सिद्धान्तवादी, जो जातियों का इतिहास जानते हैं, जिन्होंने आदि से अंत तक क्रान्तियों का इतिहास पढ़ा है; वे कभी कभी एक बुरी बीमारी से पीड़ित होते हैं। यह बीमारी है, जनता से भय खाना। जनता की रचनात्मक योग्यता में विश्वास न करना। कभी कभी इसी कारण से लीडर लोग जनता—जो यद्यपि क्रान्तियों के इतिहास की जानकारी में उतनी दक्ष नहीं है, लेकिन पुराने को तोड़ना और नये का बनाना उसीके हाथ में है—के सामने बड़प्पन का ढोंग दिखलाते हैं। ....। जनता बहुत अधिक तोड़ न डाले। नर्स (दाई) की तरह वह चाहते हैं, कि जनता को किताबों से सिखलाये, लेकिन वे खुद जनता से सीखना नहीं चाहते। यह है इस प्रकार के बड़प्पन के भाव को दिखलाने का कारण।

लेनिन् ऐसे नेताओं से बिलकुल उलटी तबीयत का था। मैं किसी भी ऐसे दूसरे क्रान्तिकारी को नहीं जानता, जिसे जाँगर चलानेवालों की रचनात्मक शक्ति और अपनी श्रेणी की अन्तर्दृष्टि की क्रान्तिकारी क्षमता पर इतना विश्वास हो। ....मुझे याद है, लेनिन् की एक बात। एक साथी ने कहा—"क्रान्ति के बाद साधारण व्यवस्था स्थापित हो जानी चाहिए।" लेनिन् ने व्यंग्य के साथ कहा—"यह बड़े अफ़सोस की बात है, कि वे लोग जो क्रान्तिकारी बनना चाहते हैं, इस बात को भूल जाते हैं कि इतिहास में अत्यन्त साधारण प्रकार की व्यवस्था है, क्रान्तिकारी व्यवस्था।" इसीलिए लेनिन् उन लोगों को घृणा की दृष्टि से देखता था, जो कि हलके दिल से जनता को नीची निगाह से देखते हैं, और उन्हें किताबों से सिखलाना चाहते हैं। इसीलिए लेनिन् बराबर कहता था कि हमें जनता से

सीखना चाहिए उसकी क्रियाओं को समझना चाहिए और जनता की जद्दो-जहद की क्रियात्मकता का ध्यान से अध्ययन करना चाहिए. . . . .

क्रान्ति का ऋषि—लेनिन् क्रान्ति के लिए पैदा हुआ था। सचमुच वह क्रान्तिकारी विप्लव का ऋषि था। क्रान्तिकला का महाकलाकार था। वह अपने को उतना स्वतत्र और प्रसन्न कभी नहीं पाता था; जितना कि क्रान्तिकारी विभ्राट् के युग में। ऐसा कहने से यह न समझें कि लेनिन् हर प्रकार के क्रान्तिकारी विभ्राट् को पसन्द करता था, या वह हर समय और हर परिस्थिति में क्रान्तिकारी विप्लव का अनुमोदक था। बिलकुल नहीं। मेरे कहने का मतलब सिर्फ इतना ही है; कि लेनिन् की गंभीर अन्तर्दृष्टि उतनी पूर्णता और स्पष्टता के साथ कभी नहीं चलती थी, जितनी कि क्रान्तिकारी विप्लव के समय। क्रान्तिकारी द्वन्द्वों के दिनों में वह भविष्यद्वक्ता की तरह मालूम होता था। वह श्रेणियों की चाल को पहले से देखता था और यह भी कि क्रान्ति का टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता किधर से जायगा। वह उन्हें अपने हाथ की रेखा की तरह स्पष्ट देखता था। हमारी पार्टी में कहा जाता था कि 'इलिच् क्रान्ति की लहरों में वैसे ही तैर सकता है, जैसे कि मछली पानी में'। यह कहना निरर्थक न था।. . . . . मुझे दो घटनाएँ खास तौर से याद है, जो लेनिन् के इन विशेष गुणों को प्रकट करती हैं।

पहली घटना—अक्तूबर के विप्लव के पहले के समय में, जब कि लाखों कमकर, किसान और सिपाही युद्ध-क्षेत्र और घरों की आफतों के मारे शान्ति और स्वतंत्रता की माँग करते थे; जब कि सेनावादी और पूँजीवादी सैनिक आखिरी दम तक युद्ध के उद्देश्य से अधिनायकत्व की तैयारी कर रहे थे; जब कि सभी तथाकथित 'सार्वजनिक सम्मति' और सभी तथाकथित 'समाजवादीदल' बोल्शेविकों के विरुद्ध थे; उन पर 'जर्मन भेदिया' होने का लाछन लगाते थे, जब कि बोल्शेविक पार्टी को करेन्स्की नेस्तनाबूद करना चाहता था और उसमें कुछ सफल भी हुआ; जब कि अब भी शक्ति-

शाली और संगठित आस्ट्रिया और जर्मनी की सेना हमारी थकी और विश्रृं-खलित सेना के मुक़ाबले में खड़ी थी; और जब कि पश्चिमी यूरोप की समाज-वादी 'अन्तिम विजय' तक युद्ध के उद्देश्य से अपनी अपनी सरकारों की मित्रता का आनन्द लूट रहे थे...... ऐसे समय में विद्रोह उठाने का क्या मतलब था ? ऐसी परिस्थिति में विद्रोह उठाने का मतलब था, अपने सर्वस्व को दाँव पर रख देना। लेकिन लेनिन् सर्वस्व की बाज़ी लगाने से डरता नहीं था। क्योंकि वह जानता था, वह अपनी क्रान्तिदर्शी आँखों से देखता था, कि विद्रोह अनिवार्य है। विद्रोह विजयी होगा। रूस में विद्रोह साम्राज्य-वादियों के युद्ध का अन्त नजदीक लावेगा। रूस में विद्रोह पश्चिम की उत्पीड़ित जनता को होश में लायेगा। रूस में विद्रोह साम्राज्यवादी युद्ध को गृह-युद्ध में परिणत करेगा। विद्रोह एक सोवियत्-प्रजातंत्र को उत्पन्न करेगा। वह सोवियत्-प्रजातंत्र सारे संसार के क्रान्तिकारी आन्दो-लनों के लिए ढाल का काम देगा। ....

यह सब को मालूम है कि लेनिन् की क्रान्तिकारिणी दूरदर्शिता पीछे अभूतपूर्व निश्चयात्मकता के साथ ठीक उतरी।

दूसरी घटना—अक्तूबर क्रान्ति के आरंभिक दिनों में जब कि जन-कमीसर्-कौंसिल (सोवियत्-मंत्रिमंडल या सोव्नर्कोम्) ने विद्रोही जेनरल प्रधान-सेनापति दुखोनिन् पर ज़ोर देना चाहा कि वह युद्ध को बन्द करे और जर्मनों के साथ सुलह की बात-चीत चलाये। मुझे याद है, लेनिन् क्रिलेन्को (भविष्य का प्रधान सेनापति) और मैं पेत्रोग्राद् के प्रधान सैनिक केन्द्र में इसलिए पहुँचे कि सीधे तार द्वारा दुखोनिन् से बात करें। अवस्था बड़ी विकट थी। दुखोनिन् और जेनरल स्टाफ़् ने सोव्नर्कोम् की आज्ञा का पालन करने से साफ़ इनकार कर दिया। सेना के अफ़सर पूर्णतया जेनरल स्टाफ़् के हाथ में थे। जहाँ तक सिपाहियों का संबंध था, यह कहना मुश्किल था, कि एक करोड़ २० लाख की सेना—जो कि सोवियत् सरकार के विरोधी ऐसे सैनिक संगठन के आधीन थी—क्या करेगी ? खुद पेत्रोग्राद्

में सब को मालूम था, कि धनी खानदान वाले सैनिक विद्रोह करने के लिए तैयार हो रहे हैं। इसके ऊपर करेन्स्की पेत्रोग्राद् पर धावा कर रहा है। मुझे याद है, तार पर जरा सा ठमक जाने के बाद लेनिन् के चेहरे पर एक असाधारण प्रकाश की किरणें दौड़ गईं। यह मालूम होने लगा कि वह किसी निश्चय पर पहुँचा है। उसने कहा—"आओ, रेडियो-स्टेशन पर चलें। वह हमें मदद देगा। हम जेनरल दुखोनिन् को पदच्युत करने तथा सार्थी क्रिलेंको को उसके स्थान पर प्रधान सेनापति नियुक्त करने के लिए एक खास आज्ञा निकालते हैं। और अफसरों से बिना पूछे सीधे सिपाहियों से अपील करेंगे कि जेनरलों को पकड़ लें, युद्ध को बन्द करें, आस्ट्रिया-जर्मनी के सिपाहियों के साथ संबंध स्थापित करें, और सुल्ह का काम अपने हाथ में लें।"

यह अंधेरे में कूदना था। लेकिन लेनिन् कूदने से डरनेवाला नहीं था। बल्कि उल्टा वह उसका स्वागत करनेवाला था। क्योंकि वह जानता था, कि सेना शान्ति चाहती है। वह शान्ति के रास्ते की सभी रुकावटों को तोड़ फेंकेगी और शान्ति को लेकर रहेगी; वह जानता था कि इस तरह की शान्ति की स्थापना का तरीका, आस्ट्रिया, जर्मनी के सिपाहियों पर असर डालेगा।

. . . .

गजब की दूरदर्शिता, होनेवाली घटनाओं के आन्तरिक मर्म को योग्यता के साथ अति-शीघ्र पकड़ लेना और उससे फ़ायदा उठाना—यह लेनिन् का गुण था; जिसने कि लेनिन् को इस योग्य बनाया कि वह क्रान्तिकारी आन्दोलन के एक महत्वपूर्ण काल में एक साफ़ कार्यक्रम तथा ठीक दाँव की योजना करे।

———

७—स्तालिन्

जार्जिया (गुर्जी) काकेशस् में काला-सागर की तरफ़ अवस्थित एक छोटा सा पहाड़ी देश है। यह यूरोप में न हो कर एशिया का एक भाग है। गुर्जी के प्रधान शहर त्विलिसी (तिफ़्लिस्) से थोड़ी दूर पर गोरी नामक एक छोटा कस्वा है। यहाँ विसारियोन् जूगश्विली नाम का चमार था। विसारियोन् जूता भी बनाता था और किसान भी था। इसी के घर १८७९ में एक लड़का पैदा हुआ। माँ-बाप ने उसका नाम योसेफ़् (युसुफ़् या जोज़ेफ़्) रक्खा। वाइविल में आये यूसुफ की तरह इस लड़के में भी कोई विशेष सुन्दरता थी, यह नहीं कहा जा सकता। तो भी किस माँ-बाप को अपना लड़का सुंदर नहीं जान पड़ता। विसारियोन् की आर्थिक अवस्था के बारे में इतना ही कहा जा सकता है; कि वह भूखा नहीं मरता था। उसकी स्त्री एकातेरिना एक खास खयाल की औरत थी। अगर विसारियोन् की चलती; तो वह योसेफ़् को भी हमेशा के लिए जूता ही बनाने लायक होने देता। लेकिन एकातेरिना (कैथ्रिन्) अपने लड़के के लिए एक दूसरा स्वप्न देख रही थी। यद्यपि वह स्वप्न उतना ऊँचा नहीं था, जहाँ कि उस का लड़का पहुँचा।

योसेफ़् ने कस्बे के स्कूल में कुछ पढ़ा। माँ की इच्छा हुई कि योसेफ़् धर्मोपदेशक (पादरी) बने। ९ वर्ष की उम्र में १ सितंबर १८८८ को वह कस्बे के पादरियों के स्कूल में दाखिल किया गया। और तब से १ जुलाई १८९४ तक वहीं पढ़ता रहा। वाइविल और ईसाई धर्म की बारीकियों का गंभीर अध्ययन ही पाठशाला का पाठ्य विषय था। इन्हीं दिनों में समाजवादी क्रान्तिकारियों का आन्दोलन ज़ोर-शोर से आरंभ हुआ था। तरुण लेनिन् ने अपनी वैरिस्ट्री छोड़ समारा और पीतर्बुर्ग में धूनी रमाई

कई बार पार्टी के काम से उसे स्टाक्होल्म और प्राग् (ज़ेकोस्लाविया) और लंदन भी जाना पड़ा। लेकिन यह सिर्फ़ कान्फ़्रेंस के वक्त में ही। अधिक तर उसे रूस के भीतर ही रह कर काम करना पड़ता था। १९१२ में उसने 'समाजवाद और जातीय समस्या' पर एक पुस्तक लिखी। उसकी सब से महत्त्वपूर्ण पुस्तक है "लेनिनवाद" (लेनिनिज़्म) जिसे उसने लाल क्रान्ति के बहुत पीछे लिखा। उस समय वह 'दूमा' (रूसी पार्लियामेंट) के बोल्शेविक दल के सदस्यों का नेता था। और पार्टी के पत्र 'प्राव्दा' (सत्य) के सम्पादकों में से एक था। १९१३ में उसे फिर पकड़ा गया और आखिरी बार सिबेरिया में निर्वासित कर दिया गया; जहाँ से ज़ार के पदच्युत होने के बाद ही उसे मुक्त होने का मौक़ा मिला।

छिपकर काम करने के वक्त असली नाम छिपाने के लिए क्रान्तिकारियों को दूसरे नाम रखने पड़ते थे। योसेफ़् विसारियोनोविच् जूगश्विली का भी इसी तरह से 'स्तालिन्' नाम पड़ा। किन्हीं किन्हीं का कहना है कि लेनिन् ने उसे यह नाम दिया। और कुछ लोग कहते हैं कि अपने फौलादी मनसूबे के कारण उसका नाम स्तालिन् (फौलादी) पड़ा।

स्तालिन

१९१७ से पहले का जीवन तैयारी का जीवन था। योसेफ़् को अधिक तर अपना काम भेस बदल कर करना पड़ता था।

असली जीवन स्तालिन् का लाल क्रान्ति के बाद शुरू होता है। स्तालिन् वक्ता नहीं है, इसका यह मतलब नहीं कि वह व्याख्यान नहीं दे सकता, और उसके व्याख्यान का असर नहीं होता। कहने का अभिप्राय यह है कि उसके व्याख्यान में वह वक्तृत्व-कला नहीं दिखलाई पड़ती, जो त्रोत्स्की और दूसरे प्रसिद्ध वक्ताओं में देखी जाती है। और रही प्रभाव की बात, सो वह सिर्फ वक्तृत्व-कला पर निर्भर नहीं रखता। गांधी जी के व्याख्यान में कौन सी वक्तृत्वकला है? ठीक उसी तरह स्तालिन् के व्याख्यान में भी न स्वरों का उतार-चढ़ाव है, न लच्छेदार शब्द हैं, न मेज़ पर हाथ पटकना है, न सारे शरीर को कँपाने का अभिनय है। स्तालिन् की वक्तृता होती है युक्तियों और उदाहरणों से भरी। वह रेखागणित के साध्यों की तरह अपने व्याख्यान में हर एक बात की प्रतिज्ञा और फल को उन्हीं शब्दों में दोहराता है।

स्तालिन् लाल-क्रान्ति के समय पार्टी के राजनैतिक ब्यूरो (पोलित्-ब्यूरो या राजनीति-संचालक-मंडल) का एक सदस्य था। दूसरे सदस्य लेनिन् के अतिरिक्त त्रोत्स्की, जिनोवियेफ्, कामेन्येफ्, सोकोल्निकोफ्, और बुनोफ् थे। इसके अतिरिक्त मंत्रिमंडल में दो विभागों—किसान-मजदूर निरीक्षण और जातिक-कमीसर (मंत्री) भी था। स्तालिन् की विशेषता थी, सुन्दर संगठन और मन्तव्य को सुचारु रूप से कार्य रूप में परिणत करना। व्यवहार-ज्ञान को पुस्तक के ज्ञान से वह अधिक महत्त्व देता है। दृढ़ता से पूर्ण मनोयोग के साथ बराबर काम किये जाना यह स्तालिन् ही जानता है। स्तालिन् की कलम में ताकत नहीं है, सीधा सादा होने पर भी उसके भाषण में शक्ति नहीं है, वह सोचने की शक्ति नहीं रखता है—यह बात नहीं है। असल बात यह है कि हर एक ज्ञान को वह व्यवहार की उपयोगिता की कसौटी पर कसता है। लेनिन् अगर क्रान्ति की सफलता के लिए सोचने में कमाल रखता था, तो स्तालीन् उसे व्यवहार में लाने में कुशल है। लेनिन् को स्तालिन् की इस शक्ति का पता था। इसी लिए जब कभी संगठन

और व्यवहार के काम की ज़रूरत पड़ती थी तो वह स्तालिन् ही को वह काम सौंपता था।

स्तालिन् को विना दिखावे के काम करने की आदत है। मार्च १९१७ में करेन्स्की की सरकार ने स्तालिन् को मुक्त किया। दूसरे राजनैतिक कैदी बड़े स्वागत और प्रदर्शन के साथ पेत्रोग्राद् आते थे, लेकिन स्तालिन् को कोई जानता नहीं कि कब पेत्रोग्राद् पहुँचा और तुरन्त 'प्राव्दा' के सम्पादकीय विभाग में दाख़िल हो गया। ऐसा कभी मौक़ा नहीं आया जब कि स्तालिन् लेनिन् के विरुद्ध हुआ हो। लेनिन् के लिए उसकी कितनी श्रद्धा है, वह उसके इस वाक्य से मालूम होगी—"मैं लेनिन् का एक शिष्य हूँ। मेरी यही एक मात्र इच्छा है कि उसका योग्य अनुयायी रहूँ।" लेनिन् की महान् पीतर् से तुलना करते सुनकर उसने कहा—"मैं इतना ही कहूँगा कि मन्दिर बनाने के लिए पीतर् सिर्फ़ एक ईंट लाया था; लेकिन लेनिन् ने सारी इमारत खड़ी कर दी। मैं केवल उसका शिष्य भर हूँ।"

१९१८–२० में त्रोत्स्की सोवियत् सेना का सेनापति-सा था। कारण यह था कि वोल्शेविकों का ज़ारशाही अफ़्सरों पर विश्वास न था, इस लिए वह अपने ही में से किसी को दायित्वपूर्ण पदों पर रखते थे। देनिकिन् ने दक्षिण से हमला शुरू किया था। सफ़ेद सेना आगे बढ़ती आ रही थी। लेनिन् ने स्तालिन् को दक्षिणी युद्ध-क्षेत्र का काम दिया। वहाँ से भेजे हुए एक पत्र में उसने लिखा—"यह मानी हुई बात है, कि सभी महत्त्वपूर्ण युद्ध-संबंधी कार्रवाइयों की सारी जिम्मेवारी मैं अपने सिर पर लूँगा।" त्रोत्स्की ने उस समय अनेक आज्ञाएँ मास्को से भेजीं। स्तालिन् ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। ऐसे एक आज्ञापत्र की पीठ पर "इसकी ओर कोई ध्यान मत दो" लिख कर उसने अपने एक अफ़सर के हाथ में दे दिया। त्रोत्स्की जला भुना हुआ था। उसने इसकी शिकायत लेनिन् से की। लेनिन् ने त्रोत्स्की की आज्ञा मानने के लिए स्तालिन् को मजबूर किया। स्तालिन् मान गया। १९१९ की बात है। देनिकिन् को रोकने के लिए त्रोत्स्की

और स्तालिन् दोनों गये हुए थे। त्रोत्स्की कलम का धनी था। लंबे लंबे खरीते वहाँ से भेजता था। त्रोत्स्की के इन खरीतों में से बहुत से उसने छाप दिये है। स्तालिन् के भी खरीते आते थे, लेकिन वे अभी तक छपे नहीं हैं। इन खरीतों में से एक में सत्तर पंक्ति की एक योजना थी। त्रोत्स्की और दूसरों ने लंबे लंबे पुलिन्दों में योजना बनाई थी। स्तालिन् की ये सत्तर पंक्तियाँ उनके विरुद्ध पडती थीं, लेकिन मास्को में सरकार ने स्तालिन् की इन सत्तर पंक्तियों को मजूर किया। परिणाम यह हुआ कि देनिकिन् को भागना पडा। दोन् और उक्रइन् आजाद हो गये। इससे पता लगेगा कि स्तालिन् किस धातु का बना है।

लेनिन् का स्तालिन् पर अधिक विश्वास और स्नेह था। लेनिन् उस वक्त यूरोप में रहता था। स्तालिन् रूस के किसी कोने में। लेनिन् को कितने ही समय से कोलबा (स्तालिन् के गुप्त नामों में से एक) का पता न लगा था। उसने पूछा—"कहाँ है हमारा कोलबा? अद्भुत गुर्जी! मैं उसे भूल ही गया था! मेरी तरफ से उसे लिखो।"

त्रोत्स्की साहित्यिक आदमी था, शब्दों का धनी था। किताबी ज्ञान पर उसे बहुत अभिमान था। इसी लिए वह लेनिन् को भी संकोच ही के साथ अपने ऊपर मानता था, सो भी क्रान्ति के समय और अपनी जवानी के दिनों ही में। उसे अपने ज्ञान का बहुत अभिमान है। लेकिन वह यह नहीं समझता कि उसी किताबी ज्ञान का मूल्य है, जो ठोस धर्ती से निकला हो। और यहीं उसकी सब से बडी कमजोरी है। इसी के कारण वह दस साल तक लेनिन् के खिलाफ़ हो कर मेन्शेविक् दल में मिला रहा।

स्तालिन् काम को कितना पसन्द करता है। यह इसीसे मालूम होता है, कि १९०७ में जब रूस के राजनैतिक आकाश में निर्जीवता आ गई थी, तो त्रोत्स्की रूस छोड़ कर बाहर निकल गया; और १९१७ की क्रान्ति में पहले नहीं लौटा। स्तालिन् उस वक्त लेनिन् के सभी आदेशों के पालन करने और पार्टी के कार्यों के संचालन के लिए रूस में डटा रहा।

लाल क्रान्ति की सफलता का सब से बड़ा श्रेय लेनिन् के बाद बोल्शेविक पार्टी को है। लेनिन् स्तालिन् की योग्यता और विश्वास-पात्रता को जानता था, इसी लिए उसने उसे पार्टी का मंत्री बनाया।

लेनिन् की मृत्यु के बाद त्रोत्स्की लेनिन् का स्थान ग्रहण करना चाहता था; लेकिन स्तालिन् और त्रोत्स्की के काम करने के ढंग में बहुत फ़र्क़ था। त्रोत्स्की के लिए जनता बेवकूफ़ों की भीड़ थी। वह समझता था, हमारे जैसे ऊँचे दिमाग़ से निकली हुई बात को पालन करना ही जनता का धर्म है। हाँ, वह यह देखने का हक़ रखती है कि जो काम हम करना चाहते हैं वह उसके हित के लिए है या नहीं। वह आदर्शवादी था। लेकिन उसका आदर्शवाद क्रियात्मकता की परवा नहीं करता था। स्तालिन् के लिए कोई सच्चाई, कोई सिद्धान्त चाहे वह शिक्षितों की दृष्टि में कितना ही ऊँचा समझा जाता हो, सच्चाई और सिद्धान्त नहीं; जब तक कि जनता के सामने व्यवहार की कसौटी पर वह ठीक न उतरे। त्रोत्स्की अपने ऐसे कुछ दिमाग़दारों पर प्रभाव डालकर सन्तुष्ट रहना चाहता था और उन दिमाग़दारों में भी अभिमानी त्रोत्स्की को माननेवाले कितने थे, यह इसीसे पता लगता है; कि लेनिन् की मृत्यु के समय सोवियत् के १८ प्रधान व्यक्तियों में सिर्फ़ ४ उसके दोस्त थे। जब दिमाग़दारों की यह हालत थी, तो साधारण जनता के बारे में—जिनके विषय में उसकी राय बहुत बुरी थी—कहना ही क्या है।

लेनिन् ने मृत्यु के समय युद्ध-कालीन समाजवाद को समाप्त कर नवीन आर्थिक नीति का प्रोग्राम चलाया था। इसके कारण ग्रामों में समाजवाद को अपनी बहुत सी जीती हुई जगह छोड़ कर पीछे हटना पड़ा था। ऐसी अवस्था में स्तालिन् मैदान में आया।

त्रोत्स्की का कहना था—"हमने शहरों में क्रान्ति इसलिए नहीं की कि गाँवों में एक नई किस्म के पूँजीपति तैयार हों। क्रान्ति स्थायी है।" स्तालिन् का कहना था—क्रान्ति की पूर्ण सफलता एक दिन में नहीं हो

मुश्की। इसलिए हमें अवस्था को देख कर आगे बढ़ना चाहिए।

त्रोत्स्की चाहता था, तुरन्त गाँवों में भी जोर-शोर से समाजवाद का प्रोग्राम जारी किया जाय। स्तालिन् ने चाहा कि पहले हमें उद्योग-धंधे को—जो कि १६१३ से भी बहुत गिरी अवस्था में पहुँच गया था—ठीक करना चाहिए। फिर गाँवों की तरफ चलेंगे। लोग स्तालिन् के साथ थे। उसके प्रोग्राम को काम में लाया गया; और १६२७ तक सोवियत् उद्योग-धंधा १६१३ की अवस्था से आगे बढ़ने में सफल हुआ। त्रोत्स्की का विरोध बराबर जारी रहा। जिस वक्त सारा राष्ट्र एक मन से होकर किसी योजना को पूरा करने के लिए लगा हो, उस वक्त बराबर उसके विरोध में लोगों को उकसाते रहना जनता के उत्साह को कम करने का काम कर सकता है। स्तालिन् और सोवियत् की जनता ने ३ वर्ष तक त्रोत्स्की के हर तरह के विरोध को सहा। लेकिन अब वह पंच-वार्षिक योजनाओं की तरफ बढ़ने वाले थे। पाँच वर्ष में उन्हें पूँजीवादी देशों की सौ सौ वर्ष की औद्योगिक उन्नति को अपने मुल्क में लाना था। त्रोत्स्की की बकवाद किसी तरह बन्द न होनी थी। वह कहता था—संसार-व्यापी क्रान्ति के लिए रूस में लाल क्रान्ति हुई थी। स्तालिन् सिर्फ सोवियत्-भूमि को देखता है। अन्तर्राष्ट्रीयता-वाद से हट कर वह राष्ट्रीयता की ओर लोगों को ले जा रहा है। क्रान्ति का खून हो रहा है। अन्त में लाचार हो कर सोवियत् सरकार त्रोत्स्की को देश से निकालने पर मजबूर हुई। और अब तो अपनी क्रान्ति-युग की पुरानी कमाई पर जीना और उससे लाभ उठा कर सोवियत् साम्यवादी सरकार और उसके नेताओं को बुरा भला कहना यही उसका काम हो गया है। जिस साम्यवादी सरकार को कायम करने के लिए, जिस अपने आदर्श को धरती पर साकार रूप से स्थापित करने के लिए, उसने अपने जीवन और शक्ति का इतना भाग दिया था; अब व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा और उसीके कारण उत्पन्न हुए वैमनस्य की वजह से वह क्रान्ति के फल सोवियत् की स्वतंत्रता को फ़ासिस्त पूँजीवादियों के हाथ में बेचने से भी आनाकानी

नहीं करता। आदमी का पतन कहाँ तक हो सकता है, त्रोत्स्की इसका एक जीवित उदाहरण है। और किताबी ज्ञानवाले कितनी कम सोचने की शक्ति रखते हैं, इसे आप त्रोत्स्की के ऐसे अनुयायियों को देख कर समझ सकते हैं, जिनके लिए इतना दूर चले जाने पर भी त्रोत्स्की अब भी उसी सम्मान का पात्र है।

त्रोत्स्की की पुरानी सेवाओं, और आज कल पूंजीवादियों के साम्यवाद को बदनाम करने के अभिप्राय से त्रोत्स्की की प्रशंसा के पुल बाँधने को, पढ़ कर कितने ही लोग भ्रम में पड़ जाते हैं, और वह समझते हैं कि स्तालिन् धोखे और जबर्दस्ती से नेता बन गया। रदेक् स्वयं इसके बारे में कहता है—"लेनिन् की मृत्यु के बाद कार्यकारिणी समिति के हम १९ सदस्य एकत्रित हुए और बड़ी उत्सुकता के साथ अपने नेता की अन्तिम हिदायत की प्रतीक्षा कर रहे थे। लेनिन् की विधवा हमारे पास यह पत्र लाई। स्तालिन् हमें जोर से पढ़ कर सुनाने लगा। जब वह पढ़ रहा था, सब लोग चुप थे। फिर त्रोत्स्की के बारे में पत्र में लिखा था—'उसका अबोल्शेविक भूत एक आकस्मिक घटना न थी।' एक दम त्रोत्स्की ने रोक कर पूछा—'क्या है यह?' वाक्य फिर दोहराया गया। सिर्फ़ यही शब्द थे, जो उस वक्त बोले गये।"

लेनिन् के इन ६ शब्दों ने फैसला कर दिया कि नेतृत्व स्तालिन् को मिलना चाहिए या त्रोत्सकी को।

प्रथम पंचवार्षिक योजना—१९२७ के बाद स्तालिन् ने देश की कृषि और उद्योग को जोर से आगे बढ़ाने के लिए पंचवार्षिक योजनाओं का आरंभ किया। पहली पंच-वार्षिक योजना १ अक्तूबर १९२८ को शुरू हुई थी और ३१ दिसंबर १९३२ अर्थात् ५ वर्ष का काम ४ वर्ष में करके खतम हुई। इस समय औद्योगिक उन्नति कितनी हुई, यह इसी से मालूम होगा कि जहाँ १९२८ में राष्ट्रीय आय १५९९ करोड़ थी वहाँ १९३२ में वह ४१९० करोड़ हो गई। उससे पहले सोवियत् भूमि में ट्रैक्टर और विमान बनते

न थे। दूसरी मशीनें भी अधिकतर पश्चिमी यूरोप और अमेरिका से मँगाई जाती थीं। लेकिन इस प्रथम पंचवार्षिक योजना ने सोवियत् को इन चीज़ों में स्वावलंबी बना दिया। पेट्रोल और कोयले की उपज में वह संसार में अव्वल हो गया। तुर्किस्तान और काकेशस् में, जहाँ पहले फैक्टरियाँ नही थी, वहाँ कितनी ही फ़ैक्टरियाँ खुली। कपास की उपज दूनी हो गई और कपडे की बड़ी बडी १३ मिलें खुलीं। १९३२ में ३ अरब गज कपडा तैयार हुआ। पहले कारखानो में ४६० करोड रूबल लगा था। प्रथम पंचवार्षिक योजना के अन्त में वह २४०० करोड हो गया। १९२८ में कारखानों में काम करनेवाले ७,२३,००० आदमी थे। १९३२ में ३१, २५,००० हो गये। १५०० नई फैक्टरियाँ बनी। प्रथम पंचवार्षिक योजना ने मशीन बनाने वाली मशीनो के उद्योग-धंधे में सोवियत् को बहुत प्रबल बना दिया। खेती के ३/४ को पंचायती कर दिया।

द्वितीय पंचवार्षिक योजना—(१९३३ से १९३७ तक) पहली जनवरी १९३३ को आरम हुई और ३१ दिसंबर १९३७ को समाप्त। यह योजना अपने समय से ९ मास पूर्व ही खतम हो गई थी। पहले पंचक (पंचवार्षिक योजना) के अन्तिम वर्ष में ३ अरब गज़ कपडा बना था। १९३७ में वह ५ अरब गज से अधिक हो गया। इसी तरह १९३५ में जहाँ १० करोड गज के करीब ऊनी कपड़ा तैयार हुआ था, वहाँ १९३७ में २२॥ करोड़ गज के ऊपर बना। द्वितीय पचक के प्रथम ४ वर्षों में ४६ अरब रूबल नये कारखानों के बनाने में लगाये गये; जब कि प्रथम पचक में ४४ अरब ही लगे थे। खेती में भी इस पचक के अंत में ९९ फी सदी खेत पंचायती हो गये। और १९३७ में ७००० करोड़ पूड या साढ़े एकतीस अरब मन (१ पूड=१८ सेर) अनाज हुआ जो कि १९१३ की उपज का दूना है।

तृतीय पंचवार्षिक योजना—१ जनवरी १९३८ में यह योजना शुरू हुई है और ३१ दिसंबर १९४२ को खतम होगी। ट्रैक्टर, सोना तथा और भी कितनी औद्योगिक चीज़ों की उपज में सोवियत संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका

से भी आगे बढ़ कर संसार में अव्वल स्थान ग्रहण करना चाहता है। कल-कारखानों की उपज में इस साल (१९३८) पिछले साल की अपेक्षा १० सैकड़ा बढ़ाना है। लकड़ी की उपज में ९ सैकड़ा और रेलवे में ५$\frac{1}{2}$ सैकड़ा से ऊपर।

पंचवार्षिक योजनाओं के कारण आर्थिक, सांस्कृतिक सैनिक सभी दृष्टि से सोवियत्-संघ बहुत आगे बढ़ा है। और आज सारी दुनिया में सोवियत् की इन पंचवार्षिक योजनाओं की नकल करने की कोशिश हो रही है।

पंचवार्षिक योजनाओं की कल्पना और सफलतापूर्वक पूरा करना स्तालिन् का सब से बड़ा काम है। स्तालिन् ने पिछड़े हुए रूस को संसार में बहुत आगे बढ़ाया। समाजवाद जो अभी शहरों तक परिमित था, उसे गाँवों में पहुँचा दिया।

पद और वेतन—१९३४ के आरंभ से स्तालिन् न कम्युनिस्ट पार्टी का मंत्री है, न गवर्नमेंट में मंत्री या कमीसर है। लेकिन उससे उसके प्रभाव में कोई कमी नहीं है। पंचवार्षिक योजनाओं की सफलता ने उसे उतना ही सर्वप्रिय बना दिया है, जितना कि लेनिन् था।

स्तालिन् का वेतन प्रति मास १००० रूबल (करीब ४५० रुपये के) है।

वैयक्तिक जीवन—स्तालिन् के वैयक्तिक जीवन के बारे में लिखते हुए एक अंगरेज़ लेखक लिखता है—

वह मास्को में रहते वक्त क्रेमलिन् में रहता है। क्रेमलिन् इमारत नहीं है, बल्कि दीवारों से घिरा एक किला है, जिसके भीतर ४०–५० इमारतें, कुछ पुराने गिर्जे, बगीचे और सिपाहियों के बैरक हैं। स्तालिन् के लिए इसमें ३ कमरे हैं। वह क्रेमलिन् में काम नहीं करता। स्तालिन् के बारे में लोगों ने खबर उड़ाई है कि वह क्रेमलिन् की दीवारों के भीतर हमेशा रहता है और एक तरह से कैदी है। यह बिलकुल ग़लत है। उसे काम करने के लिए क्रेमलिन् से बाहर पार्टी की केन्द्रीय समिति की इमारत में स्तारया चौक में जाना होता है; और यह चौक मास्को का बहुत भीड़ वाला चौक

है। अपना बहुत सा समय वह मास्को से एक घंटे के रास्ते पर उसोवा अर्खानगेल्स्काया जिले में मास्को नदी के तट पर बने एक कुटीर में बिताता है। एकान्त के कारण यह जगह उसे बहुत पसन्द है। इस कुटीर को पहले किसी करोड़पति बनिये ने बनवाया था। उसीने १० एकड़ जमीन को ऊँची दीवार से घेर दिया था। उन दीवारों को स्तालिन् ने ढहवाया नहीं तो भी स्तालिन् हिटलर और मुसोलिनी की तरह हर वक्त बहु-संख्यक शरीर-रक्षकों से घिरा नहीं रहता। उनकी अपेक्षा यह अधिक बाहर आता है। कितनी ही बार ओपेरा (नाटक) देख कर साथियों के साथ बात करते हुए भीड़ के भीतर से वह अकेला लौटता देखा गया है। हर साल दोनों महोत्सवों—१ मई और ७ नवम्बर—के दिनों में स्तालिन् लेनिन् की समाधि पर खड़ा होता है; और कई लाख आदमी उससे ३० कदम पर से गुजरते हैं।

तड़क-भड़क से उसे बिलकुल प्रेम नहीं है। वह खास वर्दी नहीं पहनता। एक काला सा बन्द गले का कोट और एक घोड़सवारी का पाजामा (ब्रिचेस) और बूट—यही उसकी पोशाक है। जब वह बाहर जाता है, तो सिर पर एक छज्जेवाली टोपी रहती है।

स्तालिन् के काम करने का ढग अधिकतर ऐसा है कि वह एक सप्ताह या अधिक खूब जोर से काम करता है। इसके बाद २-३ दिन के लिए मास्को से बाहर अपने कुटीर में चला जाता है। मनोविनोद की चीजों में बहुत शौक नहीं है, लेकिन कितनी ही बार वह नाटक और सिनेमा देखने जाता है। चपायेफ् (लाल क्रान्ति का एक बहादुर सेना-नायक) फ़िल्म को देखने के लिए वह ४ बार गया था। वह पढ़ता बहुत है और कभी कभी शतरंज खेलता है। पाइप में डाल कर तबाकू पीने की बड़ी आदत है। खाने के वक्त भी मेज पर सुलगता पाइप रखा रहता है; और खाने के बीच बीच में फूंक लगा लेता है। फुर्सत के वक्त मित्रों के साथ एकाध ग्लास शराब भी पी लेता है।

से भी आगे वढ़ कर संसार में अव्वल स्थान ग्रहण करना चाहता है। कल-कारखानों की उपज में इस साल (१९३८) पिछले साल की अपेक्षा १० सैकड़ा वढ़ाना है। लकड़ी की उपज में ९ सैकड़ा और रेलवे में ५½ सैकड़ा से ऊपर।

पंचवार्षिक योजनाओं के कारण आर्थिक, सांस्कृतिक सैनिक सभी दृष्टि से सोवियत्-संघ वहुत आगे वढ़ा है। और आज सारी दुनिया में सोवियत् की इन पंचवार्षिक योजनाओं की नकल करने की कोशिश हो रही है।

पंचवार्षिक योजनाओं की कल्पना और सफलतापूर्वक पूरा करना स्तालिन् का सव से वड़ा काम है। स्तालिन् ने पिछड़े हुए रूस को संसार में वहुत आगे वढ़ाया। समाजवाद जो अभी शहरों तक परिमित था, उसे गाँवों में पहुँचा दिया।

पद और वेतन—१९३४ के आरंभ से स्तालिन् न कम्युनिस्ट पार्टी का मंत्री है, न गवर्नमेंट में मंत्री या कमीसर है। लेकिन उससे उसके प्रभाव में कोई कमी नहीं है। पंचवार्षिक योजनाओं की सफलता ने उसे उतना ही सर्वप्रिय वना दिया है, जितना कि लेनिन् था।

स्तालिन् का वेतन प्रति मास १००० रूवल (करीव ४५० रुपये के) है।

वैयक्तिक जीवन—स्तालिन् के वैयक्तिक जीवन के वारे में लिखते हुए एक अंगरेज़ लेखक लिखता है—

वह मास्को में रहते वक्त क्रेमलिन् में रहता है। क्रेमलिन् इमारत नहीं है, वल्कि दीवारों से घिरा एक किला है, जिसके भीतर ४०–५० इमारतें, कुछ पुराने गिर्जे, वग़ीचे और सिपाहियों के वैरक हैं। स्तालिन् के लिए इसमें ३ कमरे हैं। वह क्रेमलिन् में काम नहीं करता। स्तालिन् के वारे में लोगों ने ख़वर उड़ाई है कि वह क्रेमलिन् की दीवारों के भीतर हमेशा रहता है और एक तरह से कैदी है। यह विलकुल ग़लत है। उसे काम करने के लिए क्रेमलिन् से वाहर पार्टी की केन्द्रीय समिति की इमारत में स्तारया चौक में जाना होता है; और यह चौक मास्को का वहुत भीड़ वाला चौक

है। अपना बहुत सा समय वह मास्को से एक घंटे के रास्ते पर उसोवा अर्खानुगेल्स्काया जिले में मास्को नदी के तट पर बने एक कुटीर में बिताता है। एकान्त के कारण यह जगह उसे बहुत पसन्द है। इस कुटीर को पहले किसी करोड़पति बनिये ने बनवाया था। उसीने १० एकड़ जमीन को ऊँची दीवार से घेर दिया था। उन दीवारो को स्तालिन् ने ढहवाया नहीं तो भी स्तालिन् हिटलर और मुसोलिनी की तरह हर वक्त बहु-संख्यक शरीर-रक्षको से घिरा नही रहता। उनकी अपेक्षा यह अधिक बाहर आता है। कितनी ही बार ओपेरा (नाटक) देख कर साथियो के साथ बात करते हुए भीड़ के भीतर से वह अकेला लौटता देखा गया है। हर साल दोनों महोत्सवों—१ मई और ७ नवंबर—के दिनो में स्तालिन् लेनिन् की समाधि पर खडा होता है; और कई लाख आदमी उससे ३० कदम पर से गुज़रते हैं।

तडक-भडक से उसे बिलकुल प्रेम नहीं है। वह खास वर्दी नही पहनता। एक काला सा बन्द गले का कोट और एक घोडसवारी का पाजामा (ब्रिचेस) और बूट—यही उसकी पोशाक है। जब वह बाहर जाता है, तो सिर पर एक छज्जेवाली टोपी रहती है।

स्तालिन् के काम करने का ढग अधिकतर ऐसा है कि वह एक सप्ताह या अधिक खूब ज़ोर से काम करता है। इसके बाद २–३ दिन के लिए मास्को से बाहर अपने कुटीर में चला जाता है। मनोविनोद की चीजों में बहुत शौक नही है, लेकिन कितनी ही बार वह नाटक और सिनेमा देखने जाता है। चपाएफ् (लाल क्रान्ति का एक बहादुर सेना-नायक) फिल्म को देखने के लिए वह ४ बार गया था। वह पढ़ता बहुत है और कभी कभी शतरंज खेलता है। पाइप में डाल कर तबाकू पीने की बडी आदत है। खाने के वक्त भी मेज़ पर सुलगता पाइप रखा रहता है; और खाने के बीच बीच में फूंक लगा लेता है। फुर्सत के वक्त मित्रो के साथ एकाध ग्लास शराब भी पी लेता है।

स्तालिन् की पहली औरत १९१७ में निमोनिया से मर गई। उस से उसको एक लड़का है जो अब २६—२७ वर्ष का है। पढ़ने-लिखने में वह ढीला ही ढाला था, अब वह तिफ़लिस् की एक फ़ैक्टरी में काम करता है। १९१९ में स्तालिन् ने अपने एक दोस्त की लड़की नाद्येद्जा (नाद्या) से शादी की। उसके २ बच्चे हैं—वासिली १६—१५ वर्ष का लड़का है और स्वेत्लाना १०—११ वर्ष की लड़की। स्वेत्लाना से स्तालिन् को बहुत प्रेम है। स्तालिन् की स्त्री नकली रेशम के संबंध में स्कूल में पढ़ने जाया करती थी; और वहाँ किसी तरह का उसके लिए दिखावा नहीं था। मामूली ट्राम या बस में जाया करती। उसकी इच्छा थी, किसी नकली रेशम के कारखाने की प्रबंधिका बनने की। ८ नवंबर १९३२ को नादेज़्दा स्तालिन् की अकस्मात् मृत्यु हो गई। कहा जाता था कि स्तालिन् के भोजन को वह चख लिया करती थी, और उसीमें ज़हर की शिकार हुई। लेकिन असल बात यह नहीं थी। उसकी अंतड़ी में भारी दर्द हो रहा था। लेकिन कई दिनों तक उसने उसकी परवा न की। मामूली दर्द समझ कर उसने उसे अपने पति से भी नहीं कहा। अपने बच्चों के साथ स्तालिन् का प्रेम है। लेकिन उसने इसका पूरा ध्यान रखा है, कि स्कूल में उसके बच्चों के साथ वैसा ही बर्ताव किया जाय, जैसा और बच्चों के साथ। मीमेनोव्स्की सड़क के ऊपर अवस्थित उनका २५ नंबर का स्कूल मास्को के अच्छे स्कूलों में है। स्तालिन् इस स्कूल को देखने कभी नहीं गया।

अपने साथियों के साथ स्तालिन् का तू-तू का संबंध है। उसके नाम योसेफ़् को छोटा करके कहने का कोई उपाय नहीं (रूस में प्यार के लिए मिखाइल को छोटा करके 'मिश्का' कर दिया जाता है)। इसलिए जैसे क्लिमेंती वोरोशिलोफ़ का 'क्लिम्' हो जाता है, वैसे योसेफ़् को प्यार से या बराबरी के खयाल से नाम छोटा करके बोलने की गुंजायश नहीं।

एक अंगरेज़ी लेखक जान गुंथर् स्तालिन् के बारे में लिखते हुए लिखता है—लंबा क़द और दृढ़ शरीर। कलेजे की बीमारी, लेकिन और तरह से

शारीरिक शक्ति और सहनशक्ति बहुत ज्यादा है। न वह हिटलर की तरह स्वप्नचारी है, न मुसोलिनी की तरह भावुकता के साथ शारीरिक बल पर अधिकार रखता है। स्तालिन् पत्थर की तरह भावुकता-शून्य है। अगर उसमें नसें हैं तो चट्टानों की। होशियार, चतुर। आखिर है भी तो वह पूर्वीय ! वह इसे स्वीकार भी करता है। एक जापानी से मिलते वक्त उसने कहा था—'स्वागत, मैं भी तो एशियाई हूँ।'

स्तालिन् की प्रतिमा इसी से मालूम होगी कि एच्० जि० वेल्स जैसे (उच्च कोटि के लेखक) से बात करते हुए उसने प्रश्नकर्त्ता को अपने उत्तरों से दबा दिया था। १९२७ में अमेरिका के श्रमजीवियों का प्रतिनिधि मंडल स्तालिन् से मिला था। उस समय उनके पूछे हुए नाना विषय के कठिन प्रश्नों का उत्तर वह ४ घंटों तक देता रहा। सब बातें मुँह-ज़बानी थीं, लेकिन सभी संलाप परस्पर संबद्ध रहा। ११,८०० शब्दों में उसने जवाब दिया था। जब प्रतिनिधि-मंडल प्रश्न करते करते थक गया, तो स्तालिन् ने पूछा—क्या मैं भी कुछ प्रश्न अमेरिका के बारे में कर सकता हूँ ? और फिर उसने दो घंटे प्रश्न किये और उन प्रश्न से मालूम होता था कि उसको हर विषय का कितना ज्ञान है। स्तालिन् ने अकेले जितनी खूबी के साथ ४ घंटे जवाब दिये थे, उतनी खूबी से प्रतिनिधि-मंडल नहीं दे सका। इस पूरे छः घंटे की बातचीत में न कोई टेलीफोन की घंटी बजी और न कोई सेक्रेटरी बीच में आया। इससे मालूम होता है कि स्तालिन् हाथ में आये काम के ऊपर कितनी एकाग्रता से लग जाता है।

***   ***

जर्मन लेखक एमिल् लुड्विग् स्तालिन् से मिला था। उसके व्यक्तित्व के बारे में अपनी सम्मति देते हुए लिखता है—

उसकी जैसी तसवीर मैंने देखी थी और कहानियाँ जो मैंने सुनी और पढ़ी थीं, (फ़ौलादी स्तालिन्) जैसा नाम है, वह उसके लिए उपयुक्त नहीं

स्तालिन् की पहली औरत १९१७ में निमोनिया से मर गई। उस से उसको एक लड़का है जो अब २६–२७ वर्ष का है। पढ़ने-लिखने में वह ढीला ही ढाला था, अब वह तिफ़लिस् की एक फ़ैक्टरी में काम करता है। १९१९ में स्तालिन् ने अपने एक दोस्त की लड़की नाद्येद्जा (नाद्या) से शादी की। उसके २ बच्चे हैं—वासिली १६–१५ वर्ष का लड़का है और स्वेत्लाना १०–११ वर्ष की लड़की। स्वेत्लाना से स्तालिन् को बहुत प्रेम है। स्तालिन् की स्त्री नकली रेशम के संबंध में स्कूल में पढ़ने जाया करती थी; और वहाँ किसी तरह का उसके लिए दिखावा नहीं था। मामूली ट्राम या बस में जाया करती। उसकी इच्छा थी, किसी नकली रेशम के कारख़ाने की प्रबंधिका बनने की। ८ नवंबर १९३२ को नादेज़्दा स्तालिन् की अकस्मात् मृत्यु हो गई। कहा जाता था कि स्तालिन् के भोजन को वह चख लिया करती थी, और उसीमें ज़हर की शिकार हुई। लेकिन असल बात यह नहीं थी। उसकी अंतड़ी में भारी दर्द हो रहा था। लेकिन कई दिनों तक उसने उसकी परवा न की। मामूली दर्द समझ कर उसने उसे अपने पति से भी नहीं कहा। अपने बच्चों के साथ स्तालिन् का प्रेम है। लेकिन उसने इसका पूरा ध्यान रखा है, कि स्कूल में उसके बच्चों के साथ वैसा ही वर्ताव किया जाय, जैसा और बच्चों के साथ। मीमेनोव्स्की सड़क के ऊपर अवस्थित उनका २५ नंबर का स्कूल मास्को के अच्छे स्कूलों में है। स्तालिन् इस स्कूल को देखने कभी नहीं गया।

अपने साथियों के साथ स्तालिन् का तू-तू का संबंध है। उसके नाम योसेफ़् को छोटा करके कहने का कोई उपाय नहीं (रूस में प्यार के लिए मिख़ाइल को छोटा करके 'मिश्का' कर दिया जाता है)। इसलिए जैसे क्लिमेंती वोरोशिलोफ़ का 'क्लिम्' हो जाता है, वैसे योसेफ़् को प्यार से या बराबरी के ख़याल से नाम छोटा करके बोलने की गुंजायश नहीं।

एक अंगरेज़ी लेखक जान गुंथर् स्तालिन् के बारे में लिखते हुए लिखता है—लंबा क़द और दृढ़ शरीर। कलेजे की बीमारी, लेकिन और तरह से

शारीरिक शक्ति और सहनशक्ति बहुत ज्यादा है। न वह हिटलर की तरह स्वप्नचारी है, न मुसोलिनी की तरह भावुकता के साथ शारीरिक बल पर अधिकार रखता है। स्तालिन् पत्थर की तरह भावुकता-शून्य है। अगर उसमें नसें है तो चट्टानो की। होशियार, चतुर। आखिर है भी तो वह पूर्वीय! वह इसे स्वीकार भी करता है। एक जापानी से मिलते वक्त उसने कहा था—'स्वागत, मैं भी तो एशियाई हूँ।'

स्तालिन् की प्रतिभा इसी से मालूम होगी कि एच्० जि० वेल्स जैसे (उच्च कोटि के लेखक) से बात करते हुए उसने प्रश्नकर्त्ता को अपने उत्तरों से दबा दिया था। १६२७ मे अमेरिका के श्रमजीवियो का प्रतिनिधि मंडल स्तालिन् से मिला था। उस समय उनके पूछे हुए नाना विषय के कठिन प्रश्नों का उत्तर वह ४ घटो तक देता रहा। सब बातें मुंह-ज़बानी थी, लेकिन सभी संलाप परस्पर सबद्ध रहा। ११,८०० शब्दों मे उसने जवाब दिया था। जब प्रतिनिधि-मडल प्रश्न करते करते थक गया, तो स्तालिन् ने पूछा—क्या मैं भी कुछ प्रश्न अमेरिका के बारे में कर सकता हूँ? और फिर उसने दो घटे प्रश्न किये और उस प्रश्न से मालूम होता था कि उसको हर विषय का कितना ज्ञान है। स्तालिन् ने अकेले जितनी खूबी के साथ ४ घटें जवाब दिये थे, उतनी खूबी से प्रतिनिधि-मडल नही दे सका। इस पूरे छः घटे की बातचीत में न कोई टेलीफ़ोन की घटी बजी और न कोई सेक्रेटरी बीच में आया। इससे मालूम होता है कि स्तालिन् हाथ में आये काम के ऊपर कितनी एकाग्रता से लग जाता है।

***   ***

जर्मन लेखक एमिल् लुड्विग् स्तालिन् से मिला था। उसके व्यक्तित्व के बारे में अपनी सम्मति देते हुए लिखता है—

उसकी जैसी तसवीर मैंने देखी थी और कहानियाँ जो मैंने सुनी और पढ़ी थी, (फौलादी स्तालिन्) जैसा नाम है, वह उसके लिए उपयुक्त नही

है। मैंने ख़याल किया था, कि मुझे पुरानी ज़ारशाही का कोई रोबीला गंभीर कठोर ग्रांड-ड्यूक मिलेगा, लेकिन उसकी जगह मुझे ऐसा अधिनायक देखने को मिला; जिसके हाथों में मैं अपने बच्चों को ख़ुशी से छोड़ सकता हूँ। मैंने पढ़ा था कि वह जनता में नहीं आता; क्योंकि चेचक ने उसके चेहरे को बड़ा कुरूप बना दिया है। लेकिन यहाँ उसका कोई चिन्ह या दाग़ मिलना मुश्किल है। मैंने यह भी पढ़ा था, कि जब वह शहर से अपने प्रासाद जैसे देहात के निवास स्थान गोर्की—जिसमें बीमारी के समय लेनिन् रहा और मरा—को प्रतिदिन जाता है, तो उसके आसपास ५ मोटर-कारें रहती हैं। गोर्की के बारे में कहा जाता था कि रातदिन हथियारबन्द कसाक् वहाँ पहरा देते हैं। यह भी कहा गया था कि स्तालिन् प्रतिदिन क्रेम्लिन् के एक दरवाज़े से भीतर जाता है और दूसरे से बाहर आता है। खाने के वक्त ज़ार के खाने के सोने के बर्तनों में भोजन परोसा जाता है। यहाँ तक कहा गया है कि वह अपनी तरुण स्त्री को तुर्की के सुल्तान की तरह घर में ताला बन्द कर के रखता है।

लेकिन सच्चाई इससे बिलकुल उलटी है। लेनिन् की मृत्यु के बाद वह कभी गोर्की के प्रासाद में नहीं गया। जब मैं मास्को में उससे मिला; उस वक्त वह अपनी स्त्री और बच्चों के साथ शहर के बाहर एक सीधे-सादे घर में रहता था। वह अपने आफ़िस में अपनी अकेली कार में जाता है और उसी द्वार से, प्रतिदिन जाता है। दरवाजे पर संतरी कोई विशेष सलाम नहीं देता। उसका खाना रहना सहना साधारण आदमी सा है। वह सुव्यवस्था को बहुत पसन्द करता है; और अपने पास के काम के समय को ठीक से बाँटने में बड़ा ध्यान रखता है। उसकी रुचि बहुत सीधी-सादी है।........

जब मैं स्तालिन् से मिला, मैंने उसे एकान्तप्रिय आदमी पाया। धन, सुख और महत्वाकांक्षा तक का भी उस पर प्रभाव नहीं। यद्यपि अपार शक्ति उसके हाथों में है, लेकिन उसके लिए उसे अभिमान नहीं।.... मैं कहूँगा कि स्तालिन् के स्वभाव में दो बातें अधिकता से पाई जातीं

हैं। पहली वात है धैर्य और इसको उसने अंतिम दर्जे तक पहुँचा दिया है। और दूसरी बात है, दूसरों पर बिना अवलंब किये पूर्णतया आत्मावलम्बी होना। ....

वह अब (१९३३) ५० के करीब पहुँच रहा है। एक वर्ष में ३-४ से अधिक यूरोपियनों से भेंट नही करता। इसलिए जब कोई पाश्चात्य आदमी पहले पहल उससे मिलने आता हैं, तो उसे 'अनुकुस' सा मालूम होता हैं। मुझे इससे आश्चर्य हो रहा था, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता था कि मैं संसार के ६ठे हिस्से के वास्तविक शासक के सामने हूँ।..... अगर मेरा दिल ठीक कहता है, तो मैं कहूँगा कि स्तालिन् स्वभाव मे ही अच्छे दिल का आदमी है। लेकिन उसके पद ने उसे कठोर और आग्रही बना दिया है। उसमें कल्पना का अभाव नहीं है, लेकिन उसकी उडान की शौकीनी से वह इनकार करता है। वह महत्त्वाकांक्षी नहीं है, लेकिन अपने प्रतिद्वन्द्वियों से नर्मी नही रखना चाहता। स्वभाव से ही वह रुखा और लागू चित्त वाला है। जिस कर्तव्य के पालन में उसने अपना जीवन लगाया, उसने उसे सुप्त और गंभीर बना दिया है। पिछले ३५ वर्षों से उसके दिमाग में सिर्फ एक ही बात रही है, जिसके लिए उसने अपना यौवन, अपना स्वास्थ्य अपनी सुरक्षा तथा जीवन के सभी दूसरे आनद कुर्वान कर दिये। इसलिए नही कि वह खुद शासन करे, बल्कि इसलिए कि उन सिद्धान्तो के अनुसार शासन हो जिनके लिए कि उसने प्रतिज्ञा की है। उसने मुझ से कहा— 'मेरे जीवन का उद्देश्य है कि जाँगर चलानेवाली श्रेणी को और ऊपर उठाया जाय। जातीय राज्य बनाने का खयाल नही है, बल्कि एक समाजवादी राज्य चाहता हूँ, जो कि ससार के सभी कमकरों के स्वार्थ की रक्षा करेगा। अगर मेरे जीवन का हर एक कदम उस राज्य की स्थापना की ओर नहीं ले जाय, तो मैं समझूंगा कि मैं व्यर्थ ही जिया।' वह बड़ी नर्मी से बोल रहा था। और धीमी आवाज़ ऐसे निकल रही थी, मानों वह अपने आप से बात कर रहा था।...............

मेरे एक प्रश्न के उत्तर में उसने कहा—'मेरे माता-पिता अशिक्षित थे। लेकिन उन्होंने मेरे लिए बहुत किया। मसारिक (जेकोस्लाविया के राष्ट्र-निर्माता) को जैसे धुन हुई, वैसे मैं ९–१० या १२ वर्ष में समाजवादी नहीं हो गया। जबतक मैं पादरियों की पाठशाला में रहा, मैं समाजवादी नहीं बना। फिर प्रचलित शासन-प्रथा का विरोधी हुआ। शासन-प्रथा क्या थी, खुफ़िया का पीछा करना और धोखा देना। हम ९ बजे सवेरे चाय के लिए बुलाये गये और जब कोठरी में लौटे तो देखा कि सभी दराज़ों की एक एक कर के छान-बीन हुई है। वह हमारे कागज़ों की छानबीन नहीं कर रहे थे, बल्कि हमारे दिलों के एक एक कोने की छान-बीन कर रहे थे। यह असह्य था। मैं किसी भी हद तक और किसी भी प्रथा के पक्ष में जाने के लिए तैयार होता, यदि मैं समझता कि मैं उस शासन-व्यवस्था का विरोध कर सकता हूँ। उसी समय रूसी समाजवादियों का एक कानून-विरोधी समुदाय काकेशस् के पहाड़ों में आया। उन्होंने मुझ पर बहुत प्रभाव डाला और उसी समय से निषिद्ध साहित्य का मुझे चस्का लगा।'

'........मेरा साथी एक तरुण पत्रकार था। जो कई भाषाओं को खूब अच्छी तरह से बोल और ठीक से अनुवाद कर सकता था। स्तालिन् और मुस्तफ़ा कमाल दो ही ऐसे आदमी हैं, जिनसे बात करते समय मुझे दुभाषिया की ज़रूरत पड़ी। जिस कमरे में हम प्रविष्ट हुए, वह लंबा था। उसके एक छोर पर एक मझोले क़द का आदमी भूरे रंग के बन्द गले का कोट पहने कुरसी के पास खड़ा था। उसकी पोशाक उतनी ही साफ़ थी, जैसा कि वह कमरा।......एक लंबी मेज़ बीच में रखी थी।.....जिस पर पानी की झारी, ग्लास और राखदानी पड़ी थी। हर एक चीज़ से सुव्यवस्था टपकती थी। दीवारें गहरे हरे रंग से रँगी थीं। लेनिन्, मार्क्स तथा कुछ मेरे अपरिचित व्यक्तियों के फ़ोटो टँगे हुए थे। स्तालिन् की लिखने की मेज़ भी सुव्यवस्थित तौर से रखी थी। उसपर लेनिन् का एक फ़ोटो था। बग़ल में ४–५ टेलीफ़ोन् के यंत्र वैसे ही रखे थे, जैसे कि गवर्नमेंट

आक्रिमों में होते हैं। लड़खड़ाती रूसी में मैंने कहा—"दोब्रे उत्रा" (सुप्रभातम्)। उसने मुसकरा दिया और कुछ संकोचा भी, लेकिन वह बड़ा ही विनम्र था। उसने एक सिगरेट देने के लिए मुझे उठाया। उसने विश्वास दिलाया कि आप जो भी प्रश्न पूछना चाहें, पूछ सकते हैं। और मेरे पास १॥ घंटा समय है। लेकिन जब समय के खतम होते वक्त मैंने अपनी घड़ी निकाली तो उसने मना करने का संकेत किया और आध घंटा और पास रखा। कुछ मात्रा तक संकोच, यह एक शक्तिशाली पुरुष के लिए उतनी ही अच्छी बात है, जैसा कि एक सुन्दर स्त्री में।......

चूँकि वह दुभाषियर के सहारे मुझसे बात कर रहा था, इसलिए प्रायः बराबर वह मुझ से दूसरी ओर देखता था। सारे दोनों घंटे कागज के टुकड़े पर वह चीन्हा खींचता था। एक लाल पेंसिल से वृत्त और दूसरी शकलें खींचता तथा अंक लिखता था। उसने पेंसिल के दूसरे छोर को नहीं बदला। यद्यपि उधर नीला रंग था। हमारे बात करने के समय उसने कई टुकड़े कागज के लाल रेखाओं से भरे और समय समय पर उनको मोड़ कर फाड़ दिया।.............. स्तालिन् का स्वभाव है, बिना हिलेडोले बैठने का। वह बोलते वक्त किसी शब्द पर जोर या हाथ मुँह हिलाना नहीं जानता।......... मुख्य बात उसके बारे में जो मेरे दिल में धँसी, यह थी कि वह संरक्षक है। स्तालिन् वह आदमी है जिसके नाम से कितने नर-नारी रोब में पड़ जाते हैं। लेकिन एक बच्चा या पशु वैसा नहीं कर सकता। पुराने युग में ऐसे पुरुष को लोग देश का पिता कहते। .. ...

- यद्यपि मेरे सभी प्रश्नों के लिए उसने तैयारी नहीं की थी, और उसे हमारी यूरोपीय सरकारों के मंत्रियों—जिनको कि वही प्रश्न हफ्ता बाद इतना पूछे जाते हैं—जैसा अनुभव नहीं था। और वह यह भी जानता था कि उसके उत्तर को मैं सारे संसार के लिए प्रकाशित करूँगा। सभी ऐतिहासिक घटनाएँ और नाम उसको कंठाग्र थे। मेरे दुभाषिया ने जो हमारे वार्तालाप को लिखा था, उसकी उसने कापी नहीं माँगी और न किसी संशोधन

की इच्छा प्रकट की। इस प्रकार का आत्मविश्वास मैंने कहीं नहीं देखा। दुनिया के और नेताओं से, जिनसे मैंने वार्तालाप किया है, उनके कहने को मैंने उसी वक्त कागज़ पर नहीं उतारा वल्कि पीछे उतार कर उनकी स्वीकृति को दिया। लेकिन यहाँ मैंने दूसरे आदमी द्वारा त्वरित लिपि में लिखे हुए लेख को लिया और जब मैंने उसे ग़ौर से मिलाया, तो उसमें जरा भी कोई बात छूटी नहीं देखी तो भी वाक्यावली विलकुल दुरुस्त।...... जब मैं अपने मन में अपने ग़रीब मंत्रियों की आदत को खयाल में लाता हूँ, जो कि अपने पार्लियामेंट में देनेवाले व्याख्यान या संवाद देते वक्त अपने प्रेस-विभाग के अध्यक्ष द्वारा उसका संशोधन कराते हैं, तो इस काकेशस् के जूते वनानेवाले के लड़के के लिए सन्मान से मेरा दिल भर जाता है।.............

मैंने कहा—"तुमने षड्यंत्र का जीवन वहुत काल तक विताया है। क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे वर्तमान शासन में ग़ैरकानूनी आन्दोलन संभव नहीं है?"

"यह संभव है, कम से कम कुछ हद तक।"

"क्या इसी संभावना के डर के मारे अब भी, क्रान्ति के १५ वर्ष के वाद भी, इतनी सख्ती से शासन करते हो?"

"नहीं! इसके लिए प्रधान कारण क्या है, इसे मैं कुछ ऐतिहासिक उदाहरण देकर वतलाऊँगा। जब वोल्शेविक अधिकारारूढ़ हुए तो अपने शत्रुओं के प्रति वह नरम और सरल थे। उदाहरणार्थ उस समय मेन्शेविक् (नरम समाजवादी) और समाजवादी क्रान्तिकारी भी अपने अपने समाचार-पत्र कानूनन् छाप रहे थे। फ़ौजी केडेट् (धनिकों के सैनिक पुत्र) भी अपने समाचार-पत्र निकालते थे। जब सफ़ेद वालवाले जेनरल क्रास्नोफ़् ने लेनिन्ग्राद् पर धावा किया और हमने उसे गिरफ्तार किया; तो फ़ौजी कानून के अनुसार हम उसे गोली मरवा सकते थे, या कम से कम ज़ेल में भेजवा सकते थे। लेकिन उसके वचन देने पर हमने उसे छोड़ दिया।

लेकिन पीछे यह बात साफ मालूम होने लगी कि ऐसा करने से हम उस संस्था को ही खतरे में डाल रहे हैं; जिसके निर्माण के लिए हमारी इतनी कोशिश है। हमने गलती करते हुए अपना काम आरभ किया। ऐसी शक्ति के साथ नर्मी श्रमिक-श्रेणी के साथ अन्याय करना है, यह जल्द ही स्पष्ट हो गया। दक्षिण-पक्षीय समाजवादी क्रान्तिकारियो और मेन्शेविको ने बोग्दानोफ् और दूसरों के साथ मिल कर उस समय जुंकर (धनिक श्रेणी के सैनिक) ने विद्रोह किया। वे सोवियत् के साथ दो साल तक लडते रहे। मामोन्तोफ् भी उनसे मिल गया। हमें यह मालूम करने में देर नही हुई कि इन सब की पीठ पर पश्चिम की महाशक्तियाँ और जापानी है। तब हमने अनुभव किया कि हमारे लिए एक ही रास्ता है कि पूरी सख्ती दिखलायें।". . . . .

मैंने कहा—"यह निर्दयता की नीति लोगो में बहुत भय का कारण हुई है। इस देश में मुझे मालूम होता है कि हर एक आदमी भय खाता है। और आपका यह महान् तजर्बा एक ऐसी ही जाति में कामयाब हो सकता है जिसने चिर काल से पीड़ित रह कर आज्ञा-कारिता का पाठ पढ़ा है।"

स्तालिन् ने कहा—"तुम भूल कर रहे हो। लेकिन तुम्हारी भूल आम है। क्या तुम समझते हो, कि लोगों को भय दिखला कर १४ वर्ष तक शासन-शक्ति अपने हाथ में रखी जा सकती है? असभव! जारो को अच्छी तरह मालूम था कि भय से शासन कैसे चलाया जा सकता है। यूरोप का यह पुराना तजर्बा है। फ्रांस के पूँजीवादियो ने इस भय-प्रदर्शन की नीति में जनता के खिलाफ़ ज़ारो की मदद की। लेकिन क्या परिणाम हुआ? कुछ नहीं।"

मैंने जवाब दिया—"लेकिन इसके द्वारा रोमनोफ् ३ शताब्दियो तक अधिकारारूढ़ रहे।"

"हाँ, लेकिन कितनी बार विद्रोह के कारण वह अधिकार हिल गया। पुरानी बातो को छोड़ दीजिए। (उदाहरणार्थ) १६०५ की क्रान्ति ही को

ले लीजिए। ......आप इसके द्वारा एक दो साल के लिए डर पैदा कर सकते हैं या कुछ अंश में उतने समय तक शासन कर सकते हैं। लेकिन भय-प्रदर्शन के वल पर किसानों पर शासन नहीं कर सकते। दूसरी वात यह है कि सोवियत्-संघ के किसान कमकर चिरकाल पीड़ित रहने के कारण उतने भीरु नहीं हैं जितना कि तुम समझते हो। तुम समझते हो कि हमारी जनता भीरु और सुस्त है, यह वहुत पुराने ज़माने का खयाल है। पहले इस पर विश्वास किया जाता था, क्योंकि उस समय धनी ज़मींदार रईस पेरिस में जाकर अपना पैसा खर्च करने के सिवा और कुछ नहीं करते थे। इसीसे लोग समझने लगे कि रूसी सुस्त होते हैं। लोग सोचते थे, कि किसान आसानी से डराये और अधीन किये जा सकते हैं। यह ग़लत खयाल था। और कमकरों के संवंध में तो यह ग़लती तिगुनी थी। कमकर फिर अव एक आदमी का शासन सहन नहीं कर सकेंगे। ऐसे व्यक्ति जो यश के सर्व्वोच्च शिखर पर पहुँच गये थे, उसी वक्त उनका पतन हो गया, जव कि उन्होंने जनता से संवंध तोड़ा। प्लेख़ानोफ़् के हाथ में वहुत भारी शक्ति थी, लेकिन जव राजनीति में उसने गड़वड़ की, उसी समय जनता ने उसे भुला दिया। त्रोत्स्की को भी वहुत अधिकार मिला था, हाँ, उतना ऊँचा नहीं, जितना कि प्लेख़ानोफ़् को। और आज वह भी भूला जा चुका है। यदि कभी लोग उसे याद भी करते हैं, तो वड़ी घृणा के साथ।" (इस वक्त स्तालिन् ने लाल पेंसल से कोई जहाज़ सा अंकित किया था)।

मैंने कहा—"जव मैं वार वार 'जनता की शक्ति, जनता की शक्ति' को दोहराये जाते सुनता हूँ तो मुझे ताज्जुव होता है कि इतनी वीर-पूजा—जो कि जितनी यहाँ है, उतनी संसार में और कहीं नहीं है—कैसे सम्भव है? क्योंकि आपके इतिहास के भौतिक विचार के खिलाफ़ यह वात जाती है। तुम्हारा यह भौतिकवाद[1] नेताओं और लांछनों को सड़कों

---

[1] सभी चीजें पंचभूतों से वनी हैं। मनुष्य भी पंचभूतों की उपज है।

पर मूर्तियों और चित्रों के रूप में प्रदर्शित करने के खिलाफ है। तुम लोगों के लिए यही उचित है कि अज्ञात सिपाही या किसी दूसरे व्यक्ति का सम्मान न करना। कैसे तुम इस विरोध का परिहार करोगे?"

"तुम भूल कर रहे हो। मार्क्स के उस भाग को पढ़ो, जिसमें वह दर्शन की दरिद्रता के बारे में लिखता है।"

स्तालिन् के सिर के ऊपर श्वेत-केश कार्ल मार्क्स का चित्र लटक रहा था। जब जब हमारे वार्तालाप में उस महान् समाजवादी का जिक्र आता, मैं उसके चित्र की ओर देखने को मजबूर होता।

"वहाँ तुम्हें मालूम होगा, कि मनुष्य इतिहास का निर्माण करते हैं। लेकिन वैसे नहीं, जैसे कि तुम्हारी कल्पना कह रही है। मनुष्य इतिहास का निर्माण करता है, लेकिन उस निश्चित वातावरण की प्रतिक्रियाओं से, जिस वातावरण में कि वह डाल दिया गया है। प्रत्येक पीढ़ी को एक नये वातावरण का सामना करना पड़ता है। साधारणतया यह कहा जा सकता है कि महान् पुरुषों का मूल्य केवल इसी में है कि वह अपनी परिस्थिति के वातावरणों का योग्यता के साथ मुकाबला कर सकें। नहीं तो वह शेख-चिल्ली है। .... मेरी राय में यह इतिहास है जो कि मनुष्यों को बनाता है। हम तीस साल से मार्क्स को पढ़ रहे हैं।"

मैंने कहा—"लेकिन हमारे प्रोफेसर दूसरी तरह से व्याख्या करते हैं।"

"वह ऐसा करके मार्क्सवाद को आम-फहम बनाना चाहते हैं। मार्क्स ने खुद कभी वीर के काम के महत्त्व से इनकार नहीं किया है। दरअसल उसके काम का महत्त्व बहुत बड़ा है।

"क्या मैं इससे यह मतलब निकाल सकता हूँ कि यहाँ मास्को में भी

उसीसे उत्पन्न होकर उसीमें हमेशा के लिए लीन हो जाता है। इसलिए उत्पन्न-विलीन होती पंचभूत परंपरा या मनुष्य परंपरा को महत्त्वपूर्ण कार्यों का श्रेय होना चाहिए, न कि क्षणविध्वंसिनी मनुष्य व्यक्ति को।

एक आदमी शासनकर्त्ता है? समिति नहीं। और मैं मेज़ की बग़ल में १६ कुर्सियाँ देख रहा हूँ।"

स्तालिन् ने कुर्सियों की तरफ़ देखा—"व्यक्ति नहीं निर्णय करते। हर एक कौंसिल (समिति) में ऐसे लोग होते हैं, जिनकी सम्मति का ख्याल करना होता है। लेकिन ग़लत सम्मति भी मौजूद होती है। हमें ३ क्रान्तियों का अनुभव है कि १०० व्यक्तियों के किए निर्णयों में ९० एकतर्फ़ा थे। हमारी मुख्य संस्था है पार्टी (कम्युनिस्ट) की केन्द्रीय समिति और उसके ७० सदस्य। इन ७० सदस्यों में कितने ही हमारे योग्य उद्योग-निष्णात हैं। कितने ही सहयोग-निष्णात हैं, कितने ही श्रेष्ठ व्यापारी हैं। कितने ही और सहयोगी और वैयक्तिक कृषि की योग्यता में विशेषज्ञ हैं। और फिर कितने ही ऐसे आदमी हैं, जो कि नाना जातियों—जिनसे हमारा सोवियत्-संघ बना है—से कैसे वर्ताव करना चाहिए, इसका उच्च दर्जे का ज्ञान रखते हैं।.....यह समिति व्यक्ति को मौक़ा देती है कि अपने आंशिक पक्षपात का संशोधन करे। समिति के साधारण हित के लिए हर एक आदमी अपना अनुभव प्रदान करता है। इस ढंग के बिना बहुत ज़्यादा भूलें होंगी। चूंकि हर एक आदमी निर्णय में भाग लेता है, इसलिए हमारा फ़ैसला बहुत कुछ ठीक होता है।............"

घड़ी की सूई—जिसे कि मैंने सामने टेबुल पर रखा था—बतला रही थी कि हमारे पास समय बहुत कम है। मैंने एक दूसरा प्रश्न ऐसी बे-तकल्लुफ़ी से रक्खा, जिससे मालूम होता था, कि मैं अमेरिका के प्रति रूस के ख़याल को नहीं जानता। मैंने कहा—"इस देश में हर जगह मैं देखता हूँ कि अमेरिका का सन्मान किया जाता है। एक ऐसा राज्य जिसका उद्देश्य है, पूंजीवाद को उलट देना—कैसे एक ऐसे देश का सन्मान करता है जहाँ पर कि पूंजीवाद अपने विकास के सर्व्वोच्च शिखर पर पहुँच चुका है।"

एक क्षण के लिए भी रुके बिना स्तालिन् ने एक अत्यन्त सुन्दर उत्तर दिया—"आप बात को बढ़ा कर कह रहे हैं। अमेरिका की हर एक बात के

लिए हमारे यहाँ सन्मान नहीं है। उद्योग, साहित्य, व्यापार के हर एक काम में व्यावहारिकता का ध्यान जो अमेरिका मे पाया जाता है, उसीके लिए हमारे यहाँ सन्मान किया जाता है। वे मजबूत आदमी हैं या कम से कम वहाँ बहुत से मजबूत आदमी हैं। दिमाग मे भी और शरीर में भी मजबूत। काम और प्रतिदिन की घटनाओ के बारे में उनका सारा व्यवहार मजबूत है। अमेरिकन जीवन का व्यावहारिक कार्य तथा उसकी सादगी हमारे सन्मान का पात्र है।...... ...."

"जहाँ तक मुझे मालूम है, तुम्हे कुछ ही महीने यूरोप मे रहने का मौका मिला है। जब कि लेनिन् वहाँ २० साल रहा। तुम्हारे विचार में घर में रह कर क्रान्तिकारी नेतृत्व की तैयारी अच्छी रही या विदेश में रहकर?"

उसने 'हाँ' और 'न' में जवाब न दे कर इसकी एक साधारण व्याख्या की।

उसने कहा—"लेनिन् को मै अपवाद समझता हूँ। रूस के भीतर रहनेवालो में भी ऐसे बहुत कम थे जो देश मे होती घटनाओं का पूरा पूरा ज्ञान रखते हों, लेकिन लेनिन् देश से बाहर रहते भी उनका पूरा ज्ञान रखता था। मै उससे कई बार (१९०७, १९०८ और १९१२ ई०) बाहर जाकर मिला और मैंने आमतौर से देखा, कि वह रूसी राजनीतिको के पुलन्दे के पुलन्दे पत्र पाता था। रूस में क्या घटित हो रहा है, इसे वह उन लोगों से भी ज्यादा अच्छी तरह जानता था, जो कि देश के भीतर रहते थे। तो भी इसे वह अपना बड़ा दुर्भाग्य समझता था कि उसे हमेशा बाहर रहना पड़ रहा है। जो लोग कि रूस मे रह गये थे—और उनकी संख्या बहुत अधिक थी—उन्होंने आन्दोलन की निश्चय ही खूब मदद की। जिन्होंने बाहर जाकर आन्दोलन की मदद की, उनकी संख्या घर में रह कर काम करनेवालो की अपेक्षा २०० मे एक थी और आज केन्द्रीय समिति में ३ या ४ ही ऐसे सदस्य है जो कि विदेश मे रह चुके थे।........."

मैंने कहा—"हमें वड़ा आश्चर्य हुआ जव कि समानता की स्थापना को तुमने मध्यम वर्ग का दुराग्रह वतलाया।"

स्तालिन् ने जवाव दिया—"एक पूर्णतया समाजीकृत राज्य, जिसमें हर एक व्यक्ति को एक ही परिमाण में मांस रोटी मिले, एक ही प्रकार के कपड़े मिलें, वही सामग्री और उतने ही परिमाण में हर एक सामग्री मिले—ऐसा समाजवाद मार्क्स को स्वीकृत नहीं था। मार्क्स सिर्फ इतना ही कहता है कि जव तक श्रेणियों का भेद विलकुल नष्ट नहीं हो जाता, और जव तक श्रम, इच्छा—क्योंकि अभी वहुत लोग काम को वोझा समझते हैं—का विषय नहीं हो जाता, तव तक ऐसे वहुत से लोग मिलेंगे, जो चाहेंगे कि दूसरे उनसे ज़्यादा काम का वोझा उठावें। जव तक कि श्रेणियों का भेद विलकुल नष्ट नहीं हो जाता, तव तक लोगों को तनख्वाह उनके काम के मूल्य—अधिक उपज की योग्यता—के अनुसार हर एक को उसकी योग्यता के अनुसार दिया जायगा। यह है, मार्क्सवाद का सूत्र, समाजवाद की पहली अवस्था के लिए। जव समाजवाद अपनी पूर्ण अवस्था पर पहुँच जायगा, तो हर एक आदमी अपनी कार्य-क्षमता के अनुसार काम करेगा और अपने काम के लिए आवश्यकता के मुताविक उसे वेतन मिलेगा। यह विलकुल स्पष्ट है कि भिन्न भिन्न लोगों की छोटी और वड़ी भिन्न भिन्न आवश्यकताएँ हैं। समाजवाद ने कभी नहीं इनकार किया, कि व्यक्तियों की अपनी अपनी भिन्न भिन्न रुचि और भिन्न भिन्न आवश्यकताएँ—प्रकार और परिमाण दोनों में—हैं। स्टर्नर और गोथा की योजना का मार्क्स ने जो खंडन किया है, उसे पढ़ो। वहाँ पर मार्क्स ने समानता की स्थापना के सिद्धान्त का खंडन किया है। समानता स्थापित करना दकियानूसी किसानी मनोभाव का अंश है। यह समाजवादी नहीं है। पाश्चात्य लोग वातों को इस तरह और ऐसे दकियानूसी ढंग से देखते हैं कि वे ख़याल करने लगते हैं, कि हम हर एक चीज़ को वरावर वाँटना चाहते हैं। यह वावेकोफ़् का मत है। उसे वैज्ञानिक समाजवाद का कुछ भी ज्ञान नहीं था।......" ....

मैंने कहा—"कहा जाता है कि तुम पँवारा बनाने के खिलाफ हो और तो भी तुम्हारी प्रसिद्धि में कोई चीज उतनी सहायक नहीं हुई, जितनी कि यह पँवारा कि स्तालिन् हमेशा पाइप (तवाकू) पीता रहता है।"

वह हँस पड़ा—"तुम देख रहे हो, कि मुझे उसकी कितनी कम आवश्यकता है। आज मैं उसे घर छोड़ आया।"

"तो क्या तुम सचमुच पँवारा के खिलाफ हो?"

"नहीं; जब कि वह ग्रामीण (जनता का) पँवारा हो।"

"देर हो गई। क्या कृपया आप अपनी दी हुई इस पुस्तिका पर अपना हस्ताक्षर कर देंगे?"

उसने सिर हिलाया; लेकिन वह किंकर्तव्यविमूढ सा दिखाई पड़ा, क्योंकि वह इस यूरोपीय प्रथा का आदी नहीं था। "हाँ, अच्छा! लेकिन मुझे क्या लिखना होगा?"

दुभाषिये ने कहा—"तुम्हारा अपना नाम। और हेर् लुड्विग् का भी।

उस वक्त के उसके संकोच ने मुझे बहुत ज्यादा उसकी ओर आकर्षित किया। उसने लाल पेंसिल—जिससे कि चीन्हें खींच रहा था—को उठा कर पुस्तिका पर लिख दिया। मैंने गिना, ३ ताव कागज पूर्णतया उसकी चिन्हारियों से भरे हुए थे। .... मैंने खड़े होकर उससे पूछा—"आप आश्चर्य तो नहीं करेंगे मेरे एक प्रश्न पूछने पर?"

"रूस में होनेवाली कोई भी बात मुझे आश्चर्यित नहीं कर सकती!"

"दिमाग का ढाँचा अन्तर्राष्ट्रीय है। जर्मनी में भी होनेवाली कोई बात हमें आश्चर्यित नहीं कर सकती। क्या भाग्य पर तुम्हारा विश्वास है?"

वह बड़ा गंभीर हो उठा और मेरी तरफ मुँह कर के उसने अपनी नजर मेरे चेहरे पर गड़ाई, फिर थोड़ी गंभीर नीरवता के बाद बोला—"नहीं, मैं भाग्य को नहीं मानता। यह बिलकुल मिथ्या-विश्वास है। यह निर्बुद्धिपूर्ण विचार है।"

वह हँस पड़ा और धीरे धीरे मन्द-स्वर में जर्मन भाषा में कहा—"स्चिक्सल् स्चिक्सल् (भाग्य)"।

फिर वह अपनी भाषा में बोलने लगा—"ठीक वैसे ही जैसे यूनानियों का। उनके देवी और देवता थे जो ऊपर से हर वात के होने की प्रेरणा करते थे।"

मैंने कहा—"तुम सैकड़ों खतरों से हो कर गुजरे हो। जेल और निर्वासन के समयों में, क्रान्तियों और युद्धों में। यह सिर्फ़ भाग्य ही है कि तुम मारे नहीं गये; और आज तुम्हारी जगह पर दूसरा आदमी नहीं है।"

उसे कुछ अन्कुस सा लगा, लेकिन ज़रा ही देर के लिए। फिर उसने साफ़ और ठनकती आवाज़ में कहा—"भाग्य नहीं, हेर् लुड्विग् ! भाग्य नहीं। शायद वहाँ आन्तरिक और वाह्य कारण थे, जिनके कारण मेरी मृत्यु नहीं हुई। लेकिन यह हो सकता था कि यहाँ मैं नहीं दूसरा बैठा होता।"

मालूम होता था कि वह इस घने और अन्कुस लानेवाले वादल को चीर कर अपनी स्पष्ट तर्क-श्रेणी पर लौट जाना चाहता था। उसने कहा—"भाग्य ! नियम के सिद्धान्त के विरुद्ध है। यह कुछ छायावाद सा है। और ऐसी छायावादी वात में मुझे विश्वास नहीं। ज़रूर ऐसे कारण थे, जिनकी वजह से मैं इन सारे खतरों से वच निकला। यह सिर्फ़ अकस्मात् या भाग्य से नहीं हुआ।"

श्चिस्कल् (भाग्य, भवितव्यता)! इस जवर्दस्त जर्मन शब्द की प्रतिध्वनियाँ अव भी मेरे कानों में गूंज रही थीं, जव कि हम अपनी मोटर पर आकर वैठे।

*** ***

चिरकाल से लोग अपने वीरों की प्रशंसा के गीत गाते और उनके विषय में अपने हृदयोद्गार प्रकट करते आये हैं। सोवियत्-संघ की नाना

भापा-भापी जनता ने भी लेनिन् और स्तालिन् के गीत बनाये है। अत्याचार और भूख से जिन्होंने उन्हें मुक्त किया, जिन्होंने अथाह अन्धकार से निकाल कर उन्हें प्रकाश में रखा, जिन्होंने परतन्त्रता की बेड़ी काट कर मुक्त किया, २० ही वर्ष के भीतर उन्होंने अपनी आँखो के सामने ऐसा संसार देखा, जिसकी वह कल्पना भी नही कर सकते थे। ऐसे महापुरुषों के लिए कृतज्ञता से दिल का भर जाना बिलकुल स्वाभाविक है। लेनिन् और स्तालिन् की प्रशसा में बने गीत सिर्फ़ साहित्यिक कवियों ही ने नहीं बनाये हैं, बल्कि उनमें से कितने ही साधारण जनता के हृदय से निकले है। और बहुतों के कर्त्ताओं का तो नाम भी दुनिया नही जानती। स्तालिन् के सबंध में बनी कुछ कविताओं को हम यहाँ उद्धृत करते हैं—

(१)

जब कभी जनता के लिए तुम्हारे शब्द निकलते है;
तो मँडराते बाज़ जैसी हमारी नज़र हो जाती है।
जो कोई तुम्हारे बुद्धिमत्ता के शब्द सुनता है,
उसे वह सदा के लिए अपने हृदय पर उत्कीर्ण करता है।

(२)

तुम्हारा आजमाया हुआ फ़ौलाद हमारे सभी दुश्मनों के ऊपर,
बिना विचलित हुए और किसी को न छोड़े गिरता है।
अपने नेता सूर्य-मित्र का मैं सम्मान करता हूँ,
जो कि हमारे शत्रुओ का एक एक कर के संहार करता है।

(३)

मनुष्य का सुख तुम ने हमें दिया;
यह स्तालिन् के हाथ का काम था।
तुम्हारी अगुलियों ने इसे शब्द शब्द लिखा;
हमारे इस देश के विधान पर।

सुखमय श्रम में सभी वरावर,
सव को अद्भुत है अधिकार।
स्तालिन् के शब्द अति स्पष्ट सरल,
स्तालिन् के शब्द अति महान् और सत्य।

(४)

महान् नेता हमें एक ढाल दी तुम ने,
रत्नजटित तारा आड़ने के लिए।
दी जवानी काल के आघात से अनाशमान,
अनन्त सुखमय दिनों की।

इन ग्रामीण कविताओं के कवि अज्ञात हैं।

चुवाश् जाति के कवि 'शेलेपि' ने 'सर्प' कविता लिखी है। सर्प का मतलब यहाँ युद्ध की आग भड़काने वाले साम्राज्यवादी फ़ासिस्टों से है।

(५)

सर्पो के गुम्वद के ऊपर,
है श्रमिकों की भूमि।
सर्पों के गुम्वद के ऊपर,
है श्रमिकों का कानून।

(६)

तेरी निर्मल दृष्टि हे प्रिय नेता,
है दृष्टि हमारी।
तेरे निर्मल सुविचार सभी,
हैं स्पष्ट विचार हमारे।

वहुत सी कविताओं में स्तालिन् की प्रशंसा और उपमाओं में निम्न प्रकार के वाक्य उपयुक्त हुए हैं—

(७)

"शिखर जहाँ से क्षितिज दीखता"
"नेता और भ्राता"
"बाज, हजारों बाज-बच्चों के साथ"
"जनता का इंजीनियर"
"चट्टान यूसेफ् स्तालिन्"
"पार्टी का हीरक अति प्रकाशमान"
"चन्द्र-सूर्य के नीचे अति चतुर मनुज"
"निर्भय योद्धा"
"महान् लेनिन्-जैसा"

(८)

यदि होते दो हृदय मेरे सीने में,
मैं लेकर चढ घोड़े पर।
ले आता उन्हें मास्को,
पुर-द्वार उतरता अश्व से।
लेता निकाल कटिबन्द रेशमी,
रखता उस पर दो ज्वलित हृदय।
देता रख सुघड़ पावड़ो पर,
कहता पुकार दरवानों को।
उपहार स्तालिन् के लिए एक रेशमी पोटलिका,
पोटलि से हृदयद्वय जल उठते,
जल उठते, जैसा महा हृदय,
जगमग करता क्रेमलिन् में।

—अज्ञात कवि।

(६)

दाग़स्तानी कवि सुलेमान स्ताल्स्की कहता है—

जीवन बढ़ता है आगे,
दल करता है नेतृत्व।
श्रमिकों का महाप्रयाण,
साथ तुम्हारे उनके ध्वज।
स्तालिन्!

तव तरुणायी में चमकी,
तव ज्योति दिखाती पथ श्रमिकों को;
नेतृत्व जहाँ तव शोक नहीं,
जीवन है सुखमय।
स्तालिन्!

वर्षों बीते और कभी नहीं,
जब से हम को त्राण दिया;
आया दुर्भग वत्सर कोई।
उत्तुंग शिखर से तुम को,
है साफ़ दीखते दूर क्षितिज,
स्तालिन्!

अरिभुज को तुम ने भग्न किया,
दृढ़ किया हमारे भुज को।
और पूर्ण विजय माला को,
दे दिया शीर्ष दुर्बल के।
एक कुंजी नवजीवन की
स्तालिन्!

तेरा, ओ मेरे युगप्रसिद्ध !
जिस का है नाम,
है सुन्दर कृतियों की सज्ञा।
तेरा कि जिसने शब्द सुने,
औ समझे मन दुखियों के,
तेरा गाता हूँ मैं यश।
स्तालिन् !

(१०)

ऊपर ऊपर घाटी के,
गिरि-शिखर तुंग।
ऊपर ऊपर शिखरों के,
है नभ महान्।
किन्तु स्तालिन् के आगे,
है खर्व गगन।
सम सम है तेरे केवल,
वे उच्च विचार।
ऊँचे उगते हैं नभ में,
तारे और रजनीपति।
रवि सन्मुख होते मलिन किन्तु,
वह रवि भी होता मलिन,
चमक तेरी के सन्मुख।
रवि-किरण लुप्त होती,
रजनी के सन्मुख;
पर बुद्धि पार कर उसे चमकती।
अति कठिन धातु है,
यह कठिन लोह,

क्यों कि सत्पथ है तेरा।
एक बार जो तेरा अनुचर,
नहिं वह मरने से डरता।
स्तालिन्!
—अज्ञात कवि

(११)

सीमा से सीमा भू तक घाटी औ वन पर्वत में,
जँह बाज़ परम अभिमानी मँडराता केवल ऊपर।
अति प्रेम-पात्र स्तालिन् सुचतुर के (गुण-गौरव को ले कर),
जनता के हृदयों से उठता संगीत।
द्रुततर बाज़ों की गति से यह गीत उड़ रहा नभ में,
कम्पित है अत्याचारी सब इसके भय-भैरव से।
कंटकित-तार-सरक्षित औ दुर्ग-गुप्त सीमाएँ,
अवरुद्ध न कर सकती है संगीत सतत-प्रसरण को।
नहिं कोड़ा और न गोली कर चुप सकता है इसको,
यह साभिमान लँघ जाती खाईं औ मोर्चा-बन्दी।
रिक्शों के चलते पहियो औ ओठों से कुलियो के,
हलवाहों के हल से भी है गीत निकलता इसका।
जय कर्त्ता ध्वज सा इसको ऊँचे स्वर से वह गाते,
जनता का संयुत-संगर बढ़ रहा प्रबल पक्ती में।
ऊँचे और ऊँचे स्वर से साहस औ अग्नि बढ़ाता,
बढ़ रहा बढ़ाता अपने अत्याचारी को मग से।
कर प्राप्त विजय हम याँ पर अब साभिमान है गाते,
स्तालिन् के युग को मिल कर हम सम्मानित है करते।
सुखमय अद्‌भुत नवजीवन को गाते हैं हम अपने,

अपनी पाई विजयों के गाते सुख के गीतों को।
सीमा से सीमा भू तक घाटी औ वन पर्वत में,
घहराता यान गगन का, मोटर गर्जन करती जहँ;
जनता के अतिशय प्रेमों का भाजन जो है स्तालिन्,
यह विजयी जनता सारी उस सुचतुर के यश गाती।

—मिखाइल् इन्युश्किन्

* *

लोरी

लाउ लाउ लाउ ला।
रात आई मेरे बच्चे सो जा।
सो जा मेरे छोटे भूरी आँखों व
मैं गाती हूँ तेरे लिए,
त्रड़े दिन होंगे।
तेरा भाग्य।
ओ मेरे प्रसिद्ध,
खेत और जंगल,
सरिता और गिरिवर,
जो कुछ देखता है मेरे धनी,
सब तेरे।
मेरे छोटे भूरीआँखो वाले!
रात आई,
हो गए राजपथ सूने,
खेतों का काम बन्द हुआ,
सुनता है घर आने के गीत,
र से ट्रैक्टर ड्राइवरों के।

जल्दी ही मेरे बच्चे तू होगा बड़ा,
जब बढ के तू मर्द होगा,
तू भी पुत्र, कवाइद् चलायेगा।
हाँ मेरे छोटे भूरीआँखो वाले!
तू सिद्ध करेगा अपने को मेरा पुत्र,
बढने को है तेरे समाजवादी सम्वत्सर।
तेरे सीने पर अच्छे कामो के लिए,
चमकेंगे रंग पदक के।
तू होगा सन्मानित अपने काम में,
तू पिछडेगा नहीं समर में।
कौन तुझ से हाथ मिलायेगा?
हमारा स्तालिन्,
वह मिलायेगा तेरे छोटे हाथो से।
लाउ लाउ लाउ ला।
सो जा कोमल औ गहरी नीद,
ओह कैसा चमकीला यश,
तेरे लिए रक्खा है,
कैसा सुन्दर और यशस्वी जीवन।

—जुरियत् दाकोवा

(चेरकास्, स्वायत्तप्रजातंत्र)

———

८. सोवियत् के कुछ नेता

स्तालिन् सोवियत् का हर समय का नेता है। सोवियत् ही नहीं, बल्कि समाजवाद का जब इतिहास लिखा जायगा, तो मार्क्स और लेनिन् के बाद उसीका तीसरा नंबर आयेगा। सिद्धान्त को खोज निकालना मार्क्स का काम था। अब उसके बारे में कोई दूसरा मार्क्स नहीं हो सकता; चाहे भले ही वह वैज्ञानिक समाजवाद के कुछ नये नियमों को खोज निकाले। इसी तरह दुनिया में समाजवादी क्रान्तियों की हर जगह सम्भावना है; और उन क्रान्तियों को सफल बनाने के लिए प्रतिभाशाली नेताओं की आवश्यकता होगी। उनके सामने भी समस्या वैसी ही विकट होगी, लेकिन प्रथम साम्यवादी क्रान्ति की सफलता का सेहरा लेनिन् के सिर पर ही रहेगा; यह हम कह चुके हैं। समाजवादी समाज का—और सो भी शहरों से लेकर गाँवों तक—निर्माण करने का प्रथम श्रेय स्तालिन् को ही रहेगा।

स्तालिन् एक काल का नेता नहीं है; इसलिए उसे सोवियत् के साधारण नेताओं में नहीं गिना जा सकता। स्तालिन् के बाद सोवियत् का सब से बड़ा सर्वप्रिय नेता **क्लेमिन्ती एफ़्रेमोविच् वोरोशिलोफ़्** है।

(१) वोरोशिलोफ़्

वोरोशिलोफ़् का जन्म १८८१ ई० में एक मज़दूर परिवार में हुआ था। ६ साल की उम्र से ही उसे खान में काम करने के लिए जाना पड़ा। वह कभी स्कूल में नहीं गया। जो कुछ पढ़ा अपने आप पढ़ा। भूख और अपमान समाजवाद को ढूंढ़ कर पकड़ते हैं। वोरोशिलोफ़् से बढ़कर दरिद्रता का अनुभव किसको था? समाजवाद की लहर जो लेनिन् और उसके

साथियों ने चलाई, उसका असर उसपर भी पडा; और १९०३ में वह कम्युनिस्ट पार्टी में दाखिल हुआ। अभी वह लडका ही था कि एक जारशाही अफसर के सामने टोपी न उतारने के कारण उसे गिरफ्तार किया गया। उसी वक्त से उसका क्रान्तिकारी जीवन आरंभ हुआ। १९०५ की क्रान्ति में वह लुगांस्क के कमकरो की सोवियत् का अध्यक्ष था; और उसने भी क्रान्ति में भाग लिया था। एक तरह सोवियत् के भविष्य के प्रधान सेनापति को १९०५ की क्रान्ति मे ही सैनिक विज्ञान का क-ख पढ़ना पडा था। स्तालिन् की तरह वोरोशिलोफ् भी रूस के भीतर ही छिपकर काम करता रहा। लडाई के पहले उसे भी कई बार पुलीस के हाथ में पड़ना पड़ा। १९१७ की क्रान्ति में वह प्रगट होकर काम करने लगा। जब गृहयुद्ध आरभ हुआ, तो उसने उक्रइन् में लाल-सेना की पहली टुकडी सगठित की। इस प्रकार लाल-सेना का वर्तमान प्रधान सेनापति ही उसका आरभक भी था। पहले वह पंचम उक्रइनी-पलटन का सेनानायक बना, फिर दसवी पलटन का। दोन् की भूमि मे जर्मनो से लडने में उसने अपने कौशल का परिचय दिया; और सारित्सिन् में जर्मन सेना को इस तरह

मार्शल वोरोशिलोफ् (युद्ध-सचिव)

सेनानायक के हाथ मे हार कर बहुत लज्जित होना पडा। १९१९ में वोरो-

शिलोफ़् सारे सोवियत् की सवार सेना का सेना-नायक बनाया गया। १९२४-२५ में वह मास्को सैनिक इलाक़े का सेना-नायक था। वोरोशिलोफ़् बराबर स्तालिन् का घनिष्ट मित्र रहा है। अब भी मास्को के बाहर दोनों के रहने के बंगले नज़दीक नज़दीक हैं। १९२७ में त्रोत्स्की के हटाये जाने पर वोरोशिलोफ़् सोवियत् का युद्ध-मंत्री बना। आज वही संसार की सब से ज़बर्दस्त सेना (जो संख्या और योग्यता, शिक्षा और यांत्रिक शक्ति, सब में अव्वल है। सोवियत् के हर एक सिपाही के पीछे प्रायः १० अश्वशक्ति के यंत्र पड़ते हैं। संसार में अधिक से अधिक यंत्र प्रयुक्त करनेवाली सेनाओं—जैसे फ़्रांस और जर्मनी—में प्रति सिपाही ३ अश्व-शक्ति से ज़्यादा यंत्र नहीं हैं) का प्रधान सेनापति है।

वोरोशिलोफ़् का चेहरा बहुत प्रभावशाली है। जितने विदेशी उससे मिले हैं, सभी उसके स्वभाव की प्रशंसा करते हैं। वह न तो महत्त्वाकांक्षी है, न राजनीतिज्ञ। उसका विषय है सेना-विज्ञान। सोवियत्-भूमि को अपराजित रखना यही रात-दिन उसकी धुन है।

वोरोशिलोफ़् के बाल भूरे हैं, बदन गठीला जैसा कि एक सिद्धहस्त-घुड़सवार के लिए होना चाहिए। सेना में 'क्लिम्' की पूजा होती है। वह इतना प्रिय है लेकिन विनय के नाम पर सिपाहियों को अपने से नीचा समझना उसका सिद्धान्त नहीं है। सिपाहियों में वह हिल-मिल जाता है। एक बार नौसैनिकों का उत्सव था। सेनापति बुद्योन्नि के साथ वह भी मौजूद था। सिपाही नाच रहे थे। बड़ी देर के नाच के बाद एक सिपाही ने अपने साथी के कान में कुछ कहा। वोरोशिलोफ़् पूछ बैठा—"क्या कहता है?" बतलाया गया—'कह रहा है कि साथी बुद्योन्नि नहीं नाचे।' वोरोशिलोफ़् ने हँसते हुए बुद्योन्नि की ओर देखा। अपनी विकराल मूँछों के लिए मशहूर तथा पोलिश सेना को खदेड़नेवाला सोवियत् सेनापति बुद्योन्नि खड़ा हो गया। उसने ओवरकोट अलग रखते हुए ललकारा —'जो तुममें सब से ज़बर्दस्त नाचनेवाला है, वह सामने आये।' बुद्-

योम्रि तीन घंटे तक नाचता रहा। साथी थक कर बैठ गया। बुद्योन्नि अब भी मूंछ फटकारे खड़ा था।

पक्षपात या दो निगाह से देखना वोरोशिलोफ् को छू नहीं गया है। निशाना उसका अचूक होता है और इसके लिए सैनिक वोरोशिलोफ् को अपना आदर्श मानते हैं। व्याख्यान में मजाक करने में वह बड़ा सिद्धहस्त है। एक बार पार्टी की कांग्रेस में बोलते हुए उसने कहा—"कौन सी कठिनाई बड़ी है मानसिक या भौतिक? निश्चय ही मानसिक ज्यादा बड़ी है। और वह है क्या? प्रारंभिक विनय के अभाव में सभी चीजों का असगठन। मैं नहीं समझता हूँ कि मैं भेद खोल रहा हूँ"। (हँसी और हर्ष ध्वनि)

कगानोविच् मच पर मौजूद था। वह बीच में बोल उठा—'अगर तुम कोई भेद खोलो भी, तो पार्टी-कांग्रेस में हम उसे मना नहीं करेंगे।'

सेना की हर एक बातें गुप्त रखी जाती हैं। और उसीको लेकर मज़ाकिया तौर पर वोरोशिलोफ् बोल रहा था।

सोवियत् की स्थायी सेना ६,४०,००० है। इतनी बड़ी स्थायी सेना ससार में और कहीं नहीं है। इसके दो मुख्य भाग हैं। एक जापान के मुकाबले के लिए पूर्वी सिबेरिया में रखा गया है और दूसरा जर्मनी के मुकाबले के लिए पश्चिम में पोलैंड की सीमा के पास। एक अंगरेज लेखक ने सोवियत् सेना के बारे में लिखा है—

"लाल-सेना संसार की योग्यतम सेना है। सख्या में वह जैसी बड़ी है, वैसी ही जोश और हिम्मत में भी। वह अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित है। उसके सेनानायक भी योग्य हैं। यूरोप की सभी सेनाओं से इसमें मशीनों का इस्तेमाल अधिक है। १६२६ में प्रतिसैनिक २·६ अश्व-शक्ति यंत्र था। १६३० में ३·७ और १६३३ में ७·७४।..........लाल सेना के सिपाहियों में ७० सैकड़ा मशीन का काम जानते हैं।"

(२) महामन्त्री मोलोतोफ़्

सर्वप्रियता में वोरोशिलोफ़् के वाद मोलोतोफ़् का नंवर है। वह लेनिन् के पुराने साथी क्रान्तिकारियों में है। वोलशेविक पत्र 'प्रोस्वेश्चेन्ये' में उसके लेख १९११ से निकलने लगे थे। वह सोवियत् के अच्छे वक्ताओं में है; और स्तालिन् का वहुत विश्वास-पात्र मित्र है।

प्रधान मंत्री मोलोतोफ़्

(३) कगानोविच्

यह रेल-विभाग का मंत्री है। सोवियत् मन्त्रियों में यह सव से कम उम्र का है। काले वाल और काली मूँछोंवाला लम्वे और सुदृढ़ शरीर का यह सोवियत्-मन्त्री शरीर से वड़ा प्रभावशाली और सोवियत् का सर्वश्रेष्ठ वक्ता है। जाति का यहूदी है। स्तालिन् का इसके ऊपर वहुत अधिक प्रेम और विश्वास है। कठिन से कठिन काम इसे दिया गया और उसे इसने सफलता पूर्वक निवाहा। रेल की समस्या सोवियत् की सव से वड़ी समस्या है। पंच-वार्षिक-योजनाओं में यदि कोई भाग पिछड़ा रहता था, तो यह रेल-विभाग ही। कगानोविच् के हाथ में आते ही उसमें उसने नई जान डाल दी, और उसकी प्रगति तेजी से वहुत आगे वढ़ी। उसके व्याख्यान में वहुत विनोद होता है। एक वार सरकारी आफ़िसों और विभागों की सुस्ती

पर मज़ाक करते हुए कह रहा था—'कृषि-मंत्रि-विभाग के पास २६ बोर्ड हैं और २०२ लोकल-बोर्ड।' (लोगों ने ओह ओह कहा)। कगानोविच् ने कहा—"अभी यह तो कुछ नहीं हैं। हर एक लोकल-बोर्ड सारे स०स०स०र० का प्रबंध करता है।" (हँसी)

एक मर्तबे उसने एक रस्सी के कारखाने के दो अधिकारियों का किस्सा सुनाया। 'उसमे एक का नाम था, नेवोंस्लाब्नी (अनथक) दूसरे का नाम था प्रेलेस्लिकोफ् (सुन्दर)। एक था रस्सी बटने वाले विभाग का अध्यक्ष और दूसरा था रस्सी उधेड़ने वाले विभाग का अध्यक्ष। जिस वक्त एक बटता था, उसी वक्त दूसरा उधेड़ता जाता था।' (हँसी)

एक बार उसने ज़िक्र किया—'किसी गवर्नमेंट के पास एक विभाग था निर्णय-सफलता-निरीक्षण विभाग। उसे ५ दिन के काम का निरीक्षण करने मे ५ महीने लगे। इस विभाग के शब्दों के आरंभिक अक्षरों को लेने मे 'मी जाना' बनता है।

रेल-मंत्री कगानोविच्

"लाल-उषा मोजे की फैक्टरी को भिन्न भिन्न मंत्रि-विभागो, बोर्डों और ४६ लोकल-बोर्डों ने निरीक्षण किया। निरीक्षणकर्त्ताओं ने फैक्टरीको ६० प्रकार की भिन्न भिन्न हिदायतें दीं। और उनमें से हर एक दूसरे को खंडित करती थीं। योजना बराबर बदली जाती रही।

नतीजा यह हुआ कि फ़ैक्टरी को विना योजना के ही काम करना पड़ा। १६३३ की योजना अंत में ४ जनवरी १६३४ को स्वीकार की गई। इस प्रकार १६३३ की योजना के काम का आरंभ सिर्फ़ १ साल ४ महीना पिछड़ कर हुआ।"

अयोग्यता के ख़िलाफ़ वह वड़ी निर्दयता के साथ हाथ धोकर पड़ता है। एक वार उसने मज़ाक करते हुए कहा—"एक फैक्टरी को कहीं से चीज़ों की माँग आई। उसमें कुत्ते का कालर इतने परिमाण में था जिस से ज़िले के हर एक कुत्ते का वदन सिर से पैर तक ढँक जाय; और कई टन लालटेन के वर्नर, विना लैम्प के शीशे के; और वहुत से लैम्प के शीशे, विना वर्नर के माँगे गये थे।"

कगानोविच् १८६३ में उक्रइन् के एक गरीव यहूदी घर में पैदा हुआ। उसे सिर्फ़ २ साल प्रारंभिक पाठशाला में पढ़ने का मौक़ा मिला। इसके वाद जीविका के लिए मज़दूरी करनी पड़ी। १६११ में वह पार्टी में दाख़िल हुआ और उसने क्रान्ति और गृह-युद्ध में भाग लिया। पार्टी के काम के लिए तुर्किस्तान तथा समारा आदि जगहों पर उसे रहना पड़ा। वहीं स्तालिन् को इसकी योग्यता का पहले पहल पता लगा। फिर १६२२ में यह उक्रइन् के पार्टी-संगठन का अधिष्ठाता हुआ। १६२८ में केन्द्रीय सरकार में मास्को चला आया। आजकल वह सोवियत्-सरकार के अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तियों में है।

(४) लित्विनोफ़्

माखिम् माखिमोविच् लित्विनोफ़् संसार का सव से ज्यादा चतुर वैदेशिक मंत्री है। १८७६ में वह व्यालिस्तोक् में पैदा हुआ था। उस वक्त यह जगह रूस के अधीन थी। आज कल पोलैंड में है। वह शिक्षित यहूदी घर में पैदा हुआ था। उसे वाक़ायदा हाई स्कूल की शिक्षा पाने का अवसर मिला। ५ साल तक वह ज़ार की सेना में भर्ती हो कर मामूली सिपाही

रहा। अपने क्रान्तिकारी कामों के लिए १९०१ में उसे पकड कर सिबेरिया में निर्वासित कर दिया गया, लेकिन रास्ते में मे ही चकमा देकर भाग गया। स्वीजरलैंड में लेनिन् से उसकी मुलाकात हुई। १९०३ में पार्टी में आया। कितनी ही बार भेस बदल कर वह रूस आता था, कितनी ही बार षड्यन्त्रों में शामिल होता था। उसके लेख कितने ही नामों से छपते थे। जिनमें से कुछ ये हैं—पापाशा, फेलिके, दाविद्, मोर्देसेह, फिन्केल्स्ताइन्, लित्विनोफ्, हैरिसन्, लुविन्ये, एम्० जी० हैरिसन्, मुस्ताफ् ग्राफ्। उसका असली नाम था मोयेनियेकवलख। १९०५ के षड्यत्र में वह शामिल था और चुपके से हथियार भेजने का काम उसे सुपुर्द किया गया था।

१९०६ में कानूनन् पितर्बुर्ग से निकलनेवाले समाचार-पत्र 'नवजीवन' का सपादक बना। १९०७ में फिर उसे बाहर जाना पडा और काम था, लाख रुपये के करीब के उन नोटों का भुनाना, जिन्हे कि स्तालिन् ने तिफ्लिस् के बैंक को लूट कर जमा किया था। लित्विनोफ् पैरिस् गया। नोट भुनाने का काम हो गया। पीछे फ्रास सरकार ने उसे देश से निकाल दिया। फिर वह रूस आया लेकिन फिर भाग कर उसे लन्दन जाना पड़ा। फिर कई साल उसे विदेश ही में रहना पडा।

दोहरा जीवन रखने मे वह बडा सिद्धहस्त था। दिन के वक्त वह किसी प्रकाशक का मुशी बनकर हस्तलेख पढता, प्रूफ देखता, हिसाब-किताब रखा करता था; और रात के वक्त फिर उसका क्रान्ति का प्रचार चलता था। पेट की रोटी उसे प्रकाशक की मुंशीगीरी या एक जर्मन बिजली की कपनी की नौकरी से मिलती थी; और राजनीतिक भूख को मिटाने वाली रोटी लेनिन् से।

लाल-क्रान्ति होने के बाद १९१७ में सोवियत् का प्रतिनिधि बनाकर उसे लंदन भेजा गया। अगस्त १९१८ में ब्रिटिश सरकार ने उसे कैद कर लिया; क्योंकि सोवियत् सरकार ने अंगरेजों के एक आदमी को कैद किया था। अंगरेजी प्रतिनिधि के छूट जाने पर वह भी छोड़ दिया गया;

और फिर मास्को लौट आया। वहाँ सहायक वैदेशिक मंत्री वना। १९३० में चिचिरेन् की जेनोवा में हत्या कर दी गई; तव से आज तक लित्विनोफ़् सोवियत् का वैदेशिक मंत्री है।

१९१५ में जव लित्विनोफ़् लंदन में था, उसी समय एक प्रसिद्ध सुन्दरी इवी (सर सिड्नी लो की भतीजी) से उसने शादी की।

१९३३ में लित्विनोफ़् अमेरिका से दूत-संवंध स्थापित करने के लिए वाशिंगटन गया था; और उसमें उसे कामयावी हुई। लित्विनोफ़् ने वहाँ से अपनी स्त्री से टेलीफ़ोन पर वात की—

लित्०—हेलो?

इवी—हेलो प्रियतम! मैं तुम्हारी वात खूव अच्छी तरह सुन रही हूँ।

लित्०—धीरे से वोलो, सुन रही हो?

इवी—तुम कहाँ हो?

लित्०—धवलगृह (ह्वाइटहाउस) में। . . . . . . प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट तुम से नमस्कार करने को कह रहे हैं।

इवी—वहुत वहुत धन्यवाद। मेरी तरफ़ से उनसे कहो। . . . . मिश्का तुम से वोलना चाहता है।

लित्०—मिश्का तुम्हारे पास है? हलो मिश्का! तुम्हारी पढ़ाई कैसी हो रही है।

मिश्का—वहुत अच्छी। पापा! तुम कैसे हो?

लित्०—कैसा मौसम तुम्हारे यहाँ है?

इवी—सुंदर साफ़ वर्फ़! दूत के काम की सफलता के वारे में क्या हुआ? सव ठीक है न?

लित्०—हाँ!

इवी—हम कव तुम्हें देख सकेंगे?

लित्०—प्यार और चुम्वन! पुनर्दर्शनाय।

(५) कालिनिन्

मिखाइल् इवानोविच् कालिनिन् १८७५ में त्वेर् के प्रान्त में एक किसान के घर पैदा हुआ था। १६ वर्ष की उम्र में रोजी कमाने के लिए उसे नौकरी करनी पड़ी। पहले एक धनी जमींदार के यहाँ घोड़ा मलने आदि के लिए छोटे साईस का काम मिला। गाँव में ज्यादा आशा न देख कर मिखाइल् पीतर्बुर्ग चला आया; और एक फैक्टरी में मजदूर हो गया। १८९८ में वह पार्टी में शामिल हो गया। आज वह अखिल-संघ-केन्द्रीय-कार्यकारिणी-समिति का अध्यक्ष अर्थात् सोवियत्-संघ का संघपति है। विदेशी शक्तियों के नये राजदूत पहुँचने पर उसीके सामने अपना प्रमाणपत्र पेश करते हैं।

संघपति कालिनिन्

कालिनिन् पुराने बोल्शेविकों में हैं। यद्यपि ज्ञान और प्रभाव में कितने ही दूसरे उससे अधिक महत्त्व रखते हैं, लेकिन कालिनिन् का सम्मान ज्यादा है। व्यक्तिगत तौर से स्तालिन् पर उसका बहुत असर है; और किसानों के बारे में तो उसकी राय बहुत कीमती समझी जाती है। कालिनिन् एक किसान का लड़का है। अब भी वह किसानों जैसे कपड़े पहनता है।

येज़ोफ़्, मिकोयान्, चुवार और और भी कितने ही सोवियत्-नेता हैं। येज़ोफ़् गृहसचिव है; और भीतरी मामलों में उसका वहुत प्रभाव है। जब से हाल के षड्यंत्र—जिसमें वुखारिन्, रैदेक् आदि शामिल थे—का उसने पता लगाया, तव से उसकी ख्याति और प्रभाव वहुत वढ़ गया है। इस वक्त वह सोवियत् के आधे दर्जन सर्वोपरि नेताओं में से है।

९—स्त्री-पुरुष

सोवियत्-संघ में स्त्री-पुरुषों के संबंध में भारी और मौलिक परिवर्तन हुआ है। लेकिन पूँजीवादी लेखक और पत्र उसे बढ़ा चढ़ा कर इस प्रकार दिखलाना चाहते हैं कि जिसमें बाहर के अधकचरे सहानुभूति रखने वाले लोग भड़क उठें। इस संबंध में जो परिवर्तन हुआ है, वह दो बातों के कारण हुआ है। सोवियत् राष्ट्र ने सिर्फ सिद्धान्त के रूप ही में स्त्री-पुरुष को बराबर नहीं माना है; बल्कि क्रियात्मक रूप से उसने इसे दिखला दिया है। दरअसल स्त्रियों की कागज़ी स्वतन्त्रता तब तक वास्तविक रूप धारण नहीं कर सकती, जब तक कि उन्हें आर्थिक स्वतन्त्रता न हो। पूँजीवादी देश चाहे यूरोप के हों या एशिया के, अमेरिका के हों या अफ्रीका के, विवाह-संबंध को स्त्रियों के लिए जीविकोपार्जन का एक पेशा मानते हैं। सामाजिक नियम राजनैतिक कानून से भी बलवान् होते हैं; और वह कभी इस बात के लिए उत्साह नहीं देते कि स्त्री अपनी रोज़ी कमाने में पुरुषापेक्षी न हो। रोज़ी कमानेवाली स्त्री को नीची निगाह से देखा जाता है। डाक्टरी, वकालत, प्रोफेसरी—जैसे कुछ काम ऐसे जरूर हैं, जिनमें जानेवाली स्त्रियों को उतनी नीची निगाह से नहीं देखा जाता। लेकिन इनमें जानेवाली औरतें कितनी हैं ही ? जिनमें प्रतिभा और शिक्षा है, उनके लिए भी वहाँ पुरुषों से जबर्दस्त प्रतियोगिता है। कैसे पुरुषों से ? जो शताब्दियों से इन स्थानों पर अपना पक्का अधिकार जमा चुके हैं। स्त्री जो कुछ स्वतन्त्र जीविका कर भी सकती थी, उसमें भी आये दिन बाधा उपस्थित की जा रही है। हिटलर-शासित जर्मनी ने विवाहित स्त्रियों को नौकरी करने से वंचित कर दिया है। उसके अन्दर यही विचार काम कर रहा है; कि विवाह ऐसी स्त्री के लिए एक पेशा मिल

ही चुका है; उसे दूसरे पेशे की ज़रूरत क्या ?

सोवियत् ने स्त्रियों को स्वतंत्र पेशा अख़्तियार करने के लिये सारे दर्वाज़े खोल दिए हैं। आज वहाँ ऐसी स्त्री का मिलना मुश्किल है; जो पति की कमाई पर गुज़ारा करती हो। स्थलीय, समुद्री और वायवीय—तीनों सेनाओं में साधारण सिपाही से ले कर बड़े बड़े अफ़सर बनने तक का अधिकार स्त्रियों को प्राप्त है। वायुसेना में तो उनकी काफ़ी तादाद है। राजनीति में वह खुल कर हिस्सा लेती हैं; और राष्ट्रीय प्रजातंत्रों तथा सोवियत्-संघ-प्रजातंत्र के मंत्री जैसे दायित्वपूर्ण पदों पर वह पहुँच रही हैं। पालियामेंट के मेंबरों में उनकी खासी संख्या है। इंजीनियर, प्रोफ़ेसर, डाक्टर ही नहीं, बड़ी बड़ी फैक्टरियों में कितनी ही डाइरेक्टर तथा डिप्टी डाइरेक्टर तक स्त्रियाँ हैं। वर्तमान सोवियत् पालियामेंट के सब से कम उम्र के सदस्य क्लाउदिया सखारोवा को ही ले लीजिए। सखारोवा की उम्र अभी १९ साल है। वह रोदिन्की स्थान में पैदा हुई थी। उसके माँ-बाप उसी जगह कपड़े की मिल में मज़दूर थे। आजकल की बोल्शेविक-बुनाई-मिल, जिसकी सखारोवा डिप्टी डाइरेक्टर है, क्रान्ति के पहले एक व्यापारी की सम्पत्ति थी। उस वक्त घंटों का नियम नहीं था; और सखारोवा के माँ-बाप काम के मारे पिसे जाते थे। सखारोवा के जन्म के समय लाल क्रान्ति हो चुकी थी, लेकिन अभी गृह-युद्ध भयंकर रूप धारण किये हुए था। धीरे धीरे सभी जगह सोवियत्-शासन स्थापित हुआ, और हर जगह श्रमजीवियों और किसानों के लिए स्कूल और दूसरी शिक्षण-संस्थाएँ क़ायम हुईं। सखारोवा ने स्कूल में प्रवेश किया। सोलह वर्ष की उम्र तक उसने प्रारंभिक शिक्षा और अपने भविष्य के व्यवसाय की शिक्षा प्राप्त की। १९३५ में बुनकर के तौर पर उसने काम शुरू किया। साम्यवादी सरकार ने अच्छा काम करने में उत्साह पैदा करने के लिए वेतन और पुरस्कार भी अधिक नियत कर रखा है। जिस साल सखारोवा ने काम करना शुरू किया, उसी साल अलेखेइ स्तख़ानोफ़् ने सोवियत् के श्रमिकों के सामने

बुद्धिपूर्वक तत्परता से काम करने का एक नया उदाहरण पेश किया। उसने काम करने के विभाग और यन्त्र के उपयोग द्वारा साधारण उपज से कई गुना अधिक कोयला उतने ही समय में निकाला। स्तालिन् ने जब यह खबर पाई तो स्तखानोफ् को सुदूर दक्षिण दोन् की खानों से बुला कर क्रेमलिन् में उसका सम्मान किया; और चन्द ही दिनों में स्तखानोफ् की कीर्ति बाल्तिक्-समुद्र से प्रशान्त महासागर तक फैल गई। सखारोवा ने भी स्तखानोफ् का नाम सुना। पहले वह दो कर्घों पर काम करती थी। फिर उसने सोचा, किस तरह वह अकेले ४ कर्घों का सचालन कर सकेगी। उसमे वह सफल हुई। फिर कुछ दिनों बाद वह ६ कर्घों को चलाने लगी। इस सफलता पर उसका मानसिक हर्ष और उल्लास ही नहीं बढ़ा, बल्कि उसे नकद इनाम मिले। मास्को और काकेशस् की सैर के लिए टिकट और पैसे मिले; और सब से बडी बात यह हुई कि वह कारखाने के प्रधान बुनकरों में गिनी जाने लगी।

क्लाउदिया सखारोवा (डिपुटी)

निश्चय ही अगर सखारोवा किसी पूंजीपति के कारखाने मे काम करती होती, तो उसे यह सुभीता न होता। पहले तो उसे इतना अच्छा काम करने का जितना चाहिए उतना पुरस्कार न मिलता; और यदि दो से ४ कर्घों को पकड़ती तो एक मजदूर बेकार हो जाता। ६ कर्घे तक पहुँचने तक तो २ मजदूर बेकार हो जाते। इस प्रकार वह अपने सहयोगी मजदूरों के कोप का भाजन बनती। सोवियत् में किसी के बेकार होने का

डर नहीं। अव्वल तो उनके पास काम वहुत है, और जव काम कम हो, तो आदमी को वेकार करने की अपेक्षा काम के घंटों को कम कर वह अधिक आदमियों को काम दे सकते हैं।

सखारोवा सिर्फ अपने ही कामों से सन्तुष्ट न थी; दूसरे साम्यवादी श्रमजीवियों की तरह अपने अनुभव से अपने दूसरे साथियों को फ़ायदा पहुँचाना भी वह अपना कर्तव्य समझती थी। उसने खुद कहा है—"मैंने अपने कारखाने के युवक-युवती श्रमिकों को सुधरे हुए ढंग सिखलाने में मदद दी। मैंने कुछ वुनकरों को लेकर उन्हें सिखलाया; कि जिन चीज़ों पर काम करना है, उनकी सावधानी से देखभाल करनी चाहिए। मशीन और पुरज़ों को साफ़ और वाक़ायदा रखना चाहिए।" वोल्शेविक-मिल में आज दर्जनों ऐसे चतुर उत्साही कार्यकर्ता हैं; जिनको सखारोवा ने इतनी थोड़ी उम्र में सिखा कर आगे वढ़ाया। उसी फैक्टरी में एक तरुण वुनकर वान्या स्मिर्नोफ़् भी काम करता था। उसका काम वहुत खराव था। जव वह पहले पहल कारखाने में आया, तो उसने इतना कपड़ा और सूत खराव किया कि उसे काम से हटा दिया गया। सखारोवा ने यह वात सुनी। उसने प्रवन्ध-समिति से उसे फिर लेने के लिए प्रार्थना की; और फिर सिखलाना शुरू किया। पहले ही महीने में उसने अपने हिस्से से एक सौ सात सैंकड़ा अधिक काम किया; और कुछ ही महीनों में स्मिर्नोफ़् ने अपने काम के ढंग को इतना सुधारा कि वह अपनी फैक्टरी के अच्छे कार्यकर्ताओं में हो गया।

सखारोवा सिर्फ काम करने में ही अपने साथियों को मदद नहीं देती, वल्कि वह शिक्षा-संवंधी और सामाजिक क्षेत्र में भी आगे वढ़ी हुई है। वह स्वयं पढ़ने की वड़ी शौकीन है। रूसी और विदेशी साहित्य, राजनैतिक और उद्योग-संवंधी पुस्तकों को पढ़ने का उसे वहुत शौक़ है। वह खुद पढ़ती है, और अपने साथियों की प्रवृत्ति भी पढ़ने की ओर करती है। दो वर्ष के छोटे से समय में जव कि सखारोवा १८वें साल से जरा ही आगे वढ़ी थी,

उसने अपने कार्य द्वारा सब पर अपना सिक्का जमा लिया; और प्रबन्ध-समिति ने उसे कारखाने का असिस्टेंट डाइरेक्टर (सहायक प्रबन्धक) निर्वाचित किया। बोल्शेविक्-मिल हमारे यहाँ जैसी कोई छोटी मोटी मिल नही है, इसमें ११००० मजदूर काम करते है; और इसीके सहारे रोदिन्की की ३०००० जनसंख्या गुजर बसर करती है। सत्रह वर्ष की लडकी के लिए किसी पूँजीवादी देश मे क्या ऐसा स्वप्न भी देखने को मिलता!

जिस वक्त क्लाउदिया सखारोवा को यह पद मिला तो वह भी इस के भारी उत्तरदायित्व को समझ कर सहम सी गई थी। उसने कहा—"मुझे डर मालूम होता था कि मै इस उत्तरदायित्व को निभा न सकूँगी। लेकिन मजदूर-संघ, इजीनियर और पार्टी के सदस्यो ने मेरे इस नये काम मे मेरी मदद की। पहले हमारा कारखाना अपनी योजना को पूरा नहीं करता था, लेकिन अब हमने अपनी उपज को योजना से भी ऊपर बढा दिया है।"

सखारोवा के माँ-बाप अभी जिन्दा है। उसके दो छोटे भाई और एक बहन है। लडके अभी स्कूल में पढ रहे हैं। सखारोवा के माँ-बाप के आनन्द के बारे में क्या पूछना है? कहाँ वह पुराने सौदागर के कारखाने में १२-१२ घटे खटना और उसपर भी पेट को अन्न तथा तन को कपड़ा दुर्लभ! और कहाँ अब उन्हें सात घटे रोज का काम और अच्छा वेतन! और उनकी बेटी इस छोटी उम्र में फॅक्टरी में सहायक प्रबन्धक और इसके बाद देश की सर्वोपरि पार्लियामेंट की सदस्य! सखारोवा के माँ-बाप के घर में, जहाँ चूहे कलाबाजियाँ खेला करते थे, अब रेडियो, फोनोग्राफ और सिलाई की मशीन है। खाना, पीना, रहना, सभी काफ़ी ऊँचा है। पार्लियामेंट का सदस्य चुने जाने पर सखारोवा ने कहा—"कहाँ मैं एक १६ वर्ष की कपड़े के कारखाने की मजदूरिन् थी और कहाँ मै अब राजनीतिज्ञ बन गई? मै जानती हूँ कि मेरे ऊपर कितनी भारी जवाबदेही है। दुनिया के किसी भी देश में मेरी जैसी कमसिन लडकी शासन-संचालन में हाथ डालने का अधिकार नही पा सकती।" सखारोवा अब भी अपने कारखाने की

सहायक-प्रबन्धक है; और साथ ही उसे पार्लियामेंट के सदस्य का कर्तव्य भी करना पड़ता है। अभी हाल में वह अध्ययनार्थ औद्योगिक एकेडेमी में इंजीनियर का डिप्लोमा पाने के लिए दाखिल हुई है।

* * * * * *

हम लोग पतिव्रता, सती, आदि शब्दों से अपने यहाँ की स्त्रियों को पृथ्वी की नहीं, आसमान की चीज़ बना देते हैं; और इन शब्दों से जैसा चित्र हमारे सामने खिंचता है, हम मान लेते हैं कि वैसा ही रूप हमारी स्त्रियों का है। प्रेम को हम दैवी विभूति कहते हैं। पहले तो यह भी विचारणीय बात है कि स्त्रियों के बारे में जो हमारी भावना है, क्या वास्तव में वह भावना सौ में सत्तर ठीक है? खैर, कुछ भी हो, हम इसी भावना के बटखरे से सभी जगह तौलना चाहते हैं; और इस तरह हमारे देश के कितने ही लोगों की नजर में रूस की स्त्रियाँ भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा में पहुँच गई जँचती हैं। लेकिन वास्तविकता क्या है? हमारे यहाँ एक लड़की विवाहित होती है। विवाह के पीछे भी माँ-बाप को खयाल होता है, कहाँ हमारी लड़की को खाने-कपड़े का सुख होगा? खाना-कपड़ा देनेवाले को वे लोग ढूँढ़ते हैं। पति का मतलब है खाना कपड़ा देनेवाला। पत्नी का मतलब है खाना-कपड़ा पाने के लिए जो एक पुरुष की मुहताज है। पतिव्रत और सतीत्व का मतलब है, जो तुम्हें खाना कपड़ा देता है; मन-वचन-कर्म से उसकी तावदारी करो। पति चूँकि खाना-कपड़ा देता है, इसलिए पत्नी पर वह खास अधिकार रखता है। यदि स्त्री खाने-कपड़े के लिए किसी दूसरे की मुहताज न हो; तो निश्चय ही पुरुष का यह अधिकार गिर जाता है। शास्त्र और समाज सभी स्त्री के लिए तो पातिव्रत्य और सतीत्व का गंभीरता-पूर्वक उपदेश ही नहीं देते हैं, बल्कि जरा भी चूक होने पर भयंकर से भयंकर दंड देने के लिए तैयार हैं। उसे अनजान शहर में छोड़ आयेंगे। उसे जान से मार डालेंगे। और उसे

समाज में जिन्दगी भर अपमानित और लांछित कर नरक की जिन्दगी बिताने पर मजबूर करेंगे। लेकिन पुरुष का भी स्त्री के प्रति कोई कर्तव्य है, इसकी तरफ उतना ध्यान नहीं है। बहुत हुआ तो हल्के दिल से कह दिया कि पुरुष को पत्नी के साथ सहानुभूति रखनी चाहिए। किसी भारी से भारी चूक करने पर भी पुरुष के लिए कोई दंड नहीं। वह एक पत्नी के रहते दो-चार-दस से विवाह कर सकता है; और समाज में उसका चौधराना कम नहीं होता। वह बिना विवाह किये खुले आम भी अनेक स्त्रियों को रख सकता है; लेकिन 'मर्द-बच्चा' कहकर उसके इस दुराचार को टाल दिया जाता है। अनिच्छा से रोगी, कुरूप, दुर्गुणी पति से विवाहित स्त्री असन्तुष्ट हो किसी दूसरे पुरुष से यदि प्रेम करना चाहती है; तो उसके लिए उसे भयंकर से भयंकर दंड किन्तु पुरुष के लिए सात खून माफ क्यों? यह है हमारा-स्त्री-पुरुष-संबंधी सदाचार और न्याय?

सोवियत् में स्त्री और पुरुष दोनों बराबर हैं। समाज की दृष्टि में भी, कानून की दृष्टि में भी, और आर्थिक दृष्टि में भी। वहाँ स्त्री के लिए जरा सी चूक पर प्राण-दंड और पुरुष के लिए सात-खून-माफ का नियम नहीं है। माँ-बाप खाने-कपड़ों की तलाश में किसी लड़की को किसी के गले नहीं मढ़ते। वह जानते है कि लड़की अपनी रोजी आप कमा सकती है। वहाँ हर एक युवती अपने इच्छानुकूल जिस पुरुष को पसन्द करती है; उससे ब्याह करती है। इसमें सिर्फ पुरुष की सम्मति भर अपेक्षित है। न वहाँ जाति का ख्याल है, न धन का ख्याल है, न रंग का प्रश्न है, न धर्म का विचार है, न आयु का ध्यान है। विवाह हो जाने पर भी पति इसलिए धौंस दिखा कर पत्नी को अपने काबू में नहीं रख सकता कि वह उसका पति है। खाना-कपड़ा देने का तो सवाल ही नहीं है। स्त्री खुद अपने लिए कमाती है। सन्तान होने पर उसके भरण-पोषण का भार जैसे पति वहन करता है, वैसे ही पत्नी भी अपने हिस्से का वहन करती है। कहने के लिए स्त्री को हमारे यहाँ अर्द्धाङ्गिनी कहते

हैं, लेकिन स्त्री अर्द्धांगिनी तभी हो सकती है, जब पुरुष अर्द्धांग हो। लेकिन पुरुप पर क्या कभी अर्द्धांग का नियम लागू होता है ?

सोवियत् में पति पत्नी का सम्बन्ध मित्र का सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे से प्रेम रखने का वादा करते हैं और वादा-खिलाफ़ी का हक़ नहीं रखते। कुछ साल पहले विवाह के वाद अनवन हो जाने पर तिलाक वड़ी आसानी से मिल जाता था, लेकिन अब सरकार ने तिलाक के कानून को कड़ा कर दिया है। वह चाहती है कि लोग पहले ही भली प्रकार देख भाल लें; एक दूसरे के स्वभाव से भली भाँति परिचित हो जायँ; और विवाह करने में जल्दी न करें। विवाह हो जाने पर तुरन्त तिलाक को वह पसन्द नहीं करती। पहले तिलाक में दंड स्वरूप कुछ थोड़ा रुपया सरकार को देना पड़ता है। दूसरी वार के तिलाक में वह दंड की मात्रा तिगुनी चौगुनी कर दी जाती है। और तीसरी वार तो इतना जुरमाना देना पड़ता है, कि उसके लिए तिलाक चाहनेवाले को वर्षों खट कर रुपया जमा करना होगा। तिलाक के लिए जो इतनी रोक-थाम की गई है, उसके भीतर सरकार की जन-संख्या वढ़ाने की नीति काम कर रही है। भारत से सात गुना सोवियत् का क्षेत्रफल है; और आवादी हमारे यहाँ से आधी (१८ करोड़) है। सोवियत् सरकार चाहती है कि वहाँ अधिक वच्चे पैदा हों जिससे कि गैरआवाद जगहों को आवाद किया जा सके। क्रान्ति से पहले रूस साम्राज्य में हर दसवें साल १७ फी सदी जनसंख्या वढ़ती थी; लेकिन अब वह वढ़ती २४ फी सदी हो गई है। इधर दो वर्षों में कुछ और वढ़ी है। इसका मतलव है, हर दसवें साल चौथाई जनसंख्या का वढ़ जाना। १९३८ में यदि १८ करोड़ है; तो १९४८ में २२॥ करोड़ हो जायगी; और १९५८ में २९ करोड़ के करीव। इस प्रकार वीसवीं शताब्दी के अन्त में ७० करोड़ आदमी सोवियत्-भूमि में वसने लगेंगे। जनसंख्या की वृद्धि को रोकना उनके हाथ में वैसा ही है, जैसे पंचवार्पिक योजनाओं द्वारा औद्योगिक और कृषि-संवंधी उपज को अपने हाथ में रखना। वर्तमान शताब्दी के अन्त तक तो

सोवियत् सरकार को जनसख्या की वृद्धि को रोकने की जरुरत न पड़ेगी।

जनसख्या के बढाने की नीति ने तिलाक को कम करने का विधान बनाया है; उसी प्रवृत्ति ने गर्भ गिराने को भी कानूनन दडनीय बना दिया है। दो साल पहले अस्पतालो मे गर्भ गिराने का बाकायदा इन्तज़ाम था। कोई भी स्त्री जिसका गर्भ ३ महीने से कम का है, यदि बच्चा पैदा करना पसन्द नही करती थी, तो वह अस्पताल मे चली जाती थी; और विशेषज्ञ डाक्टर और नर्स की सहायता से गर्भ गिरा देती थी। अब गर्भ गिराना बन्द कर दिया गया है। गर्भ वे ही स्त्रियाँ गिरा सकती है, जिनके बारे मे डाक्टर की राय है कि यदि उक्त स्त्री बच्चा पैदा करने के लिए मजबूर की जायगी, तो उसके शरीर और जीवन के लिए अनिष्ट होगा।

स्त्री-पुरुष के सयोग को दो हिस्सो मे बाँट कर, जहाँ तक संभोग-सुख का संबध है वहाँ तक सरकार ने पुरुष-स्त्री को स्वतत्र छोड दिया है। यह उनका वैयक्तिक कार्य समझा जाता है। लेकिन सन्तान के बारे में वह उदासीन नही हो सकती। इसी लिए जहाँ तक सन्तान के भविष्य का सम्बन्ध है, पुरुष स्त्री के सभोग-सबधी स्वातत्र्य में वह बाधक है। विवाह का मतलब वहाँ है, जाकर दफ्तर मे रजिस्ट्री करवा देना। रजिस्ट्री करवाये विना भी दोनो स्त्री-पुरुष के तौर पर रह सकते हैं। इसके लिए न समाज की ओर से भर्त्सना है, न सरकार की ओर से दंड। यदि सन्तान होगी, तो वह हरामी नही समझी जायगी; और माँ-बाप की भूल का दंड बच्चे को नहीं मिलेगा। हरामी बच्चा सोवियत्-नियम के अनुसार कोई हो ही नही सकता। बाप के बिना लड़का तो पैदा नही होता, तो वह हरामी या बे-बाप का कैसे ? हाँ, ऐसी अवस्था मे यदि बाप लड़के के भरण-पोषण की जिम्मेवारी न लेना चाहे तो माँ पर अधिक बोझ पड़ने का डर है। किन्तु ऐसे झगड़ो में जहाँ पुरुष लड़के का बाप होने से इनकार करता है, वहाँ माँ की बात मान ली जाती है। तो भी जिसमें झगड़े की गुंजायश न

रहे, इसके लिए सरकार उत्साहित करती है कि लोग अपने विवाह की रजिस्ट्री करा लें।

स्त्री-पुरुष के संबंध में, इसमें शक नहीं, वहाँ बहुत भारी क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है; और जितना परिवर्तन अब तक हो चुका है आगे उससे और भी बड़ा होगा। लेकिन सहस्राब्दियों से इस सम्बन्ध में लोगों की ऐसी धारणा हो गई है, कि अब भी पुराने भाव लटके हुए हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ था, जब मैंने एक सुसंस्कृत महिला को इसी संबंध में बात करते हुए कहते सुना कि ऐसी भी युवतियाँ हैं जिनको विवाह के बिना यदि गर्भ रह जाय, तो वह आत्महत्या कर लेंगी। मैंने पूछा—"उन युवतियों को लज्जा और भय तो अपने संबंधियों से ही होगा न? मान लो उनके संबंधी भाई-बन्धु साम्यवादी दल के सदस्य हैं, ऐसी अवस्था में विवाह-संबंधी मूर्खतापूर्ण रूढ़ि को वह कोई महत्त्व नहीं दे सकते। फिर उस युवती को आत्महत्या की क्या आवश्यकता? और विवाह तो पुरुष स्त्री के प्रेम का नाम है! रजिस्ट्री कराने से कौन सी ज़्यादा बात हो जाती है।" उत्तर मिला—"साम्यवादी दल के सदस्य भाई-बहन भी ऐसा मनोभाव रखते हैं, कि यदि अपनी बहन को उक्त अवस्था में देखें, तो देहली पर पैर रखने से मना कर देंगे।"

इस उदाहरण से पता लगेगा कि आर्थिक स्वतंत्रता के कारण स्त्रियाँ यद्यपि पुरुषों की गुलाम नहीं रही हैं, तो भी संभोग-सम्बन्धी स्वच्छन्दता पर अब भी बहुत से अंकुश हैं। आपको सोवियत् के स्त्री-पुरुषों के दुराचार और मिथ्याचार की बहुत सी कथाएँ सुनाई जायँगी। लेकिन आपको एक बात याद रखनी चाहिए। सोवियत् में रुपये के बल पर औरत की आबरू नहीं ख़रीदी जा सकती। सिर्फ़ एक इसी बात से पता लग जाता है कि सोवियत् और उसके बाहर के देशों में इस सम्बन्ध में कितना ज़मीन और आसमान का अन्तर है। भय और प्रलोभन वहाँ किसी स्त्री को मजबूर नहीं कर सकते। अपनी इच्छा से वे एक दूसरे के प्रेम-पाश में फँस सकते

है। वहाँ वेश्यावृत्ति की कोई गुंजायश नहीं और वेश्यावृत्ति के कारण। पैदा होनेवाले अनेक रोग सोवियत्-भूमि से लुप्त हो चुके है।

* * * *

सोवियत्-स्त्री को आगे बढने का कितना मौका है। इसका एक और उदाहरण देकर मैं इस परिच्छेद को समाप्त करता हूँ। बस्ती बागीरोवा या पूरा नाम बस्तो मासिम् किजी बागीरोवा सोवियत् के एशियाई भाग

बस्ती बागीरोवा (डिपुटी)
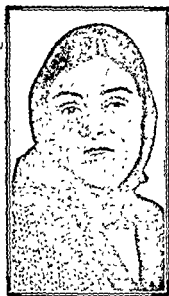
आजुर्बाइजान् के एक खेतिहर मजदूर की लडकी है, लेकिन आज कोई ऐसा सोवियत् नागरिक न होगा जिसने बागीरोवा का नाम न सुना हो। पिछले ७ नवम्बर को जब लाल क्रान्ति का बीसवाँ महोत्सव बडी धूम धाम के साथ मनाया जा रहा था, तो आजुर्बाइजान् प्रजातंत्र का कोई नगर, गाँव, कस्बा न होगा, जिसके जलूस में उसका फोटो आगे आगे न चलता हो। यदि आपको उस दिन के बाकू शहर के जलूस को देखने का अवसर मिलता तो वहाँ बागीरोवा के एक नहीं, अनेक फोटो देखने में आते। इस महोत्सव के जलूसो में कहीं बागीरोवा को क्रेमलिन् मे स्तालिन् से हाथ मिलाते हुए दिखाया गया है, कहीं उसे दोनों हाथों से कपास चुनते दिखाया गया है, कहीं उसे तरुण कन्याओं के सामने कपास चुनने की कला बतलाते हुए दिखाया गया है।

कपास के चुनने और उसकी सफल खेती करने में बागीरोवा अपने ही प्रजातंत्र में नहीं, बल्कि सारी सोवियत् में प्रसिद्ध है। इस शाल ओढ़े ठिगनी औरत के संबंध में कितनी ही कविताएँ लिखी गईं। दूर से और नजदीक से उससे इतने आदमी मिलने आते हैं, कि कुसुम्-इस्माइलोफ़् ज़िले के वोरोशिलोफ़् कोल्खोज् के इसके अपने सीधे सादे घर में कितनी ही चारपाइयाँ तैयार रखनी पड़ती हैं। पिछले ७ नवम्बर को जब वह बाकू की एक नाट्यशाला में नाटक देखने गई, तो बीच के अवकाश के समय नाट्यकार ने अपने नाटक के विषय में उसकी राय पूछी—"आप इसे कैसा समझती हैं? हमारे अभिनय में कोई दोष तो नहीं है? संगीत में तो किसी तरह की कमी नहीं हुई? पर्दा तो कोई बेमौक़े नहीं है?" जनवरी सन् १९३७ ई० में आजुरबाइजान प्रजातंत्र के जो प्रतिनिधि सोवियत् सरकार द्वारा सम्मानित किये गये थे, उनमें बागीरोवा भी थी। १९३५ में अखिल सोवियत् पंचायती खेती के प्रधान कार्यकर्ताओं का जो द्वितीय सम्मेलन हुआ था, बागीरोवा उसमें सम्मिलित ही नहीं हुई थी; बल्कि वह उस समिति की भी सदस्या थी, जिसने पंचायती खेती के विधान का मसौदा तैयार किया था। अखिल-सोवियत्-संघ-कांग्रेस का आठवाँ (विशेष) अधिवेशन जो दिसंबर १९३६ में हुआ था, उसने सोवियत् का नया शासन-विधान तैयार करने के लिए जो समिति बनाई थी, बागीरोवा भी उसकी एक सदस्या थी। आज बागीरोवा सोवियत् पार्लियामेंट की एक सम्माननीय सदस्या है।

लेकिन इस बागीरोवा की जीवन-कहानी क्या है? वह आजुर्बाइ-जान् के एक गाँव में एक गरीब किसान के घर पैदा हुई थी। उसके माँ-बाप दिन रात अपने और अपने मालिकों के खेतों में मर मर कर काम करते थे। लेकिन तब भी एक साँझ पेट भर कर खाना उनके लिए हराम था। उसके ८ भाई-बहनों में ६ बचपन ही में मर गए, और बाप भी जल्द ही उनका अनुगामी हुआ। बागीरोवा को लड़कपन ही से खेतों में काम करना

पड़ा। कपास बोने में कुछ अधिक फायदा था। वागीरोवा की माँ ने अपने खेत में कपास बोई, लेकिन जमींदार (वेग) ने सींचने के लिए पानी देने से इनकार कर दिया और पौधे वहीं धूप से सूख गए। लाल क्रान्ति (७ नवम्बर १९१७) मे दो-एक वर्ष पहले वागीरोवा की १५ वर्ष की अवस्था में शादी हो गई। उसका पति भी उसीकी तरह गरीब था। न उसके पास खेत था न हल न बैल। लेकिन क्रान्ति के होने के साथ वागीरोवा के भविष्य का रास्ता खुल गया। जमींदारों की जमींदारी छीन ली गई। सोवियत् सरकार ने किसानों को खेत दे दिये। अब वागीरोवा के पास खेत हो गया। हल और बैल भी हो गये। अब दोनों स्त्री-पुरुष अपने लिए काम करते थे, वेग के लिए नहीं। अब उन्हें खुली हवा में साँस लेने का मौका मिला। वेगों के साथ मुल्ला और मौलवी भी खतम हुए और साथ साथ मज़हब और पर्दे का भी अन्त हुआ।

लेकिन अब भी वागीरोवा को अपना जौहर दिखाने का मौका नहीं मिला। यह मौका तब आया जब कोल्खोज् (पंचायती खेती) का आरंभ हुआ। छोटे छोटे खेतों की मेंड़ें तोड़ दी गईं; और उनकी जगह बड़े बड़े खेत बन गए। एक एक, आधे आधे हलों की जुताई की जगह सारे गाँव के ५०-५० पंचायती हल एक के पीछे एक चलने लगे। कोल्खोज् की बात सुनते ही वागीरोवा ने उसका मतलब समझ लिया; और १९३० में जब पहले-पहल उसके गाँव मे कोल्खोज् का संगठन हुआ, तो वह सब से पहले उसमें शामिल हुई और प्रबन्ध-समिति की सदस्या निर्वाचित हुई। वैज्ञानिक ढंग की जुताई और वैज्ञानिक खाद के इस्तेमाल का मौका मिला। भूमि कपास के योग्य समझी गई; इस लिए गाँव ने कपास की खेती करना निश्चय किया। १९३१ की गर्मियों में (जाड़ों में अधिक सर्दी के कारण उस देश में खेती नहीं होती) वागीरोवा ५० सेर कपास प्रतिदिन लोढ़ती थी। उस वक्त तक एक ही हाथ से कपास लोढ़ने का रिवाज था। वागीरोवा ने सोचा, यदि एक हाथ से मैं ५० सेर कपास चुन सकती हूँ; तो दो हाथ

से चुनने पर १०० सेर चुन सकूँगी। जितनी ही ज़्यादा मैं कपास जमा कर सकूँगी, उतना ही अधिक कपड़ा मेरे देश के भाई-बहनों को मिलेगा; और उतना ही उनका जीवन सुखमय होगा। इस तरह के विचार वागीरोवा को उस वक्त नहीं आये थे, जब वह अपने खेत में अकेले खेती करती थी। वागीरोवा ने दोनों हाथों से कपास चुनना शुरू किया। पहली फ़सल में उसने ८५ सेर प्रतिदिन के हिसाब से चुना। दूसरे साल ११८ सेर, फिर २७० सेर, फिर ४६४ सेर और १९३७ में उसने ६४८ सेर (१९५८) प्रतिदिन के हिसाब से चुना। इस गति में वृद्धि के लिए मशीन भी कुछ सहायक बनी।

इतना ही तक उसने बस नहीं किया। उसने कपास की खेती को अधिक लाभदायक बनाने की ओर ध्यान दिया। खाद और सिंचाई का पूरा प्रबन्ध किया गया। अब वहाँ कोई ज़मींदार नहीं था कि वागीरोवा को सिंचाई के पानी के लिए रोकता। इसका परिणाम यह हुआ कि १९३७ में उसने प्रति एकड़ ४८०० सेर (१२०५) कपास पैदा की। पिछले साल तक इसके तिहाई को ही आज़ुर्बाइजान् में सब से बड़ी फ़सल कहते थे।

वागीरोवा का ध्यान हमेशा रहता है, कि जिस मुस्तैदी और योग्यता के साथ वह काम कर रही है, उसी मुस्तैदी और योग्यता के साथ उसके साथी भी करें। वह अपना ज्ञान उन्हें सिखाती है। वह उन्हें उत्साहित करती है। १९३५ के नवम्बर में अपने प्रजातंत्र की ओर से उसका स्वागत किया गया था। उस वक्त उसने कहा था—"योग्य कार्यकर्ताओं पर सब कुछ निर्भर है। कैसे योग्य कार्यकर्ता? जो कि पूरे दिल से अपने काम को प्यार करते हैं; और हमेशा सोचते रहते हैं कि कैसे वह और अधिक शीघ्रता और योग्यता के साथ अपना काम कर सकेंगे? हम सब को ऐसे ही बनना चाहिए। मैं खुद तथा कुद्रत् और दूसरे कोशिश कर रहे हैं कि अधिक से अधिक कोल्खोजियों को दोनों हाथों से कपास लोढ़ने की कला सिखाई जाय।"

आज बागीरोवा के सैकड़ों शिष्य और शिष्याएँ सारे आज़ुर्बाइजान् में फैली हुई हैं। उनमें कोई कोई तो गुरु से भी बाजी मार ले गए हैं। उदाहरणार्थ १९३६ में बागीरोवा ने ४६४ सेर कपास प्रतिदिन लोढी थी। लेकिन उसकी शिष्या मनिया करीमोवा ने ५०४ सेर लोढी। बागीरोवा अपनी इस शिष्या को बहन कहती है। १९३७ में बागीरोवा ने प्रतिदिन ६४८ सेर लोढा; लेकिन उसकी दूसरी शिष्या पसिरा हुसेनोवा ने ६५० सेर लोढा। इस साल के लिए बागीरोवा ने तय किया है कि १००० सेर या एक पूरा टन कपास एक दिन में लोढेंगी।

१०—सोवियत्-लेखक

सुखी समाज यदि उन्नति की तरफ़ अग्रसर नहीं हो रहा है, तो वह विलासितापूर्ण मृत्यु की तरफ लेजानेवाला साहित्य पैदा करेगा। दुखी समाज यदि निराशापूर्ण अवस्था में पड़कर किंकर्तव्यविमूढ़ नहीं हो गया है; तो वह घनान्धकार को चीर कर आती किरणों की भाँति जीवन-संदेश-वाहक साहित्य को पैदा करेगा। ज़ारशाही रूस में एक तरफ़ चन्द लोग विलासिता की सभी सामग्रियों से पूर्ण जीवन विता रहे थे, और दूसरी तरफ़ अधिकांश लोग दरिद्रता और दुःखमय जीवन के सब से निम्न तल पर पहुँचे हुए थे। इस दूसरी श्रेणी और उससे सहानुभूति रखनेवालों ने रूसी भाषा में इस प्रकार का साहित्य पैदा किया, जिसने परम अवसाद को प्राप्त हुई जनता में आशा और जीवन के लिए उत्तेजना प्रदान की। **पुश्किन्, लेर्मेन्तोफ़्, तुर्गनियेफ़्, क्रोपत्किन्** जैसे लेखक इसी श्रेणी के थे। जिस वक्त रूसी पीड़ित जनता को काली घटाओं के सिवा और कुछ नहीं दिखाई देता था, उस समय इन लेखकों ने उत्साह प्रदान किया। अलेख़ेइ गोर्की ने कलम उस वक्त उठाई थी, जब कि अमावस्या की काल-रात्रि में प्रकाश की कोई छींट दिखलाई न पड़ती थी। उसने अपनी सफल लेखनी से 'माँ' जैसी शक्तिप्रद सुन्दर कृतियाँ निर्माण कीं। क्रान्तिकारियों के साथ सम्पर्क रखने के कारण वह ज़ारशाही के कोप का भाजन वना। तो भी रूस की विद्वन्मंडली अलेख़ेइ माख़िमोविच् पेश्कोफ़् (माख़िम् गोर्की) की क़लम का लोहा मान चुकी थी। २१ फ़रवरी सन् १९०२ को गोर्की रूसी एकेडेमी के सभासद जैसे परम माननीय पद के लिए निर्वाचित हुआ। ज़ार इस समाचार को सुन आपे से वाहर हो गया। उसने ५ मार्च के पत्र में लिखा—'गोर्की के वैज्ञानिक एकेडेमी के सभासद के तौर पर चुने जाने

की खबर ने मेरे मन को ऐसे ही धक्का लगाया, जैसा कि उसने हर एक ठीक से विचारनेवाले दूसरे रूसी के दिल पर लगाया। मुझे समझ में नही आता कि योग्य और चतुर पुरुषों ने कैसे इस काम को पसन्द किया? न गोर्की की उम्र ही इतनी है, और न उसकी थोडी सी कृतियाँ ही काफी है, कि उसे ऐसे सम्माननीय पद के लिए निर्वाचित किया जाय। और सब से बढ कर बुरी बात यह है कि वह विचाराधीन अपराधी है। वर्तमान कठिन समय में एकेडेमी ऐसे आदमी को अपना सभासद् चुने, इसपर मुझे बहुत असन्तोष होता है। . . . निकोला।'

गोर्की

एकेडेमी ने अपने निर्वाचन को रद्द कर दिया और इसके विरोध में कोरोलेन्को और चेखोफ् ने उसकी सभासदी से इस्तीफा दे दिया। गोर्की तब से १९३७ तक—जिस साल कि मृत्यु हुई—बराबर साहित्य के निर्माण में लग्न रहा। उसने खुद ही साहित्य-निर्माण नही किया, बल्कि कितनों को उसने रास्ता बतलाया। कितनों को प्रोत्साहित किया और कितने ही धूल में पड़े हीरों को उठा कर उनको योग्य आसन पर आसीन कराया। कज़ाक कवि जम्बुल् और दागिस्तानी कवि सुलेमान स्ताल्स्की ऐसे ही धूल के हीरे थे; जिन्हें गोर्की की परखनेवाली आँखों ने परख लिया और उनकी कृतियों का सम्मान सारी सोवियत्-भूमि में होने ही नहीं लगा,

वल्कि उन्होंने दुगुने उत्साह से नये उत्पन्न हुए समाज के लिए नये साहित्य का निर्माण किया। जम्वुल् इस साल ९३ साल में प्रविष्ट हुआ है। यद्यपि वह अक्षर-ज्ञान से वंचित था, तो भी उसने सच्चा कवि-हृदय पाया था। क्रान्ति से पहले भी उसने कितनी कविताएँ की थीं और हवा ने उड़ा कर उन्हें कज़ाक के गाँवों में पहुँचा दिया था। लेकिन उस वक्त इस अनपढ़ कवि की कृतियों से सिर्फ़ अनपढ़ ख़ानाबदोशों का ही मनोरंजन होता था। क्रान्ति के वाद विलकुल संसार ही वदल गया। कज़ाक भाषा जो अव तक लेखवद्ध नहीं हो पाई थी, रोमन् लिपि में लेखवद्ध ही नहीं हुई, वल्कि वह आरंभिक, माध्यमिक और टेकनिकल शिक्षा का माध्यम वन गई। अव जम्वुल् की कविताओं की कदर करने वाली सिर्फ अशिक्षित ही नहीं, शिक्षित जनता भी हो गई। उसकी कविताएँ रूसी तथा सोवियत् की दूसरी भाषाओं में अनुवादित हुईं और इस प्रकार सारे सोवियत् प्रजातंत्र में जम्वुल् की महिमा फैल गई। जम्वुल् ने कितने ही गीत विद्रोहियों और क्रान्तिकारियों के यशोगान में वनाये हैं। किसान विद्रोही पुगाचेफ़् और लाल क्रान्ति के वीर सैनिक चपायेफ़् की तारीफ़ में उसके वनाये गीत वहुत प्रसिद्ध हैं। वर्तमान जीवन से वह कितना सन्तुष्ट है, वह उसके निम्न वचन से मालूम हो जायगा, जिसे कि उसने २२ दिसम्वर १९३७ को एक प्रेस-प्रतिनिधि से वार्तालाप करने के अवसर पर कहा था—"मैं जनता के नेता स्तालिन् की जन्मभूमि गुर्जी के दर्शन के लिए जा रहा हूँ; और पहली बार जा रहा हूँ। मैं गोरी शहर को देखूँगा जहाँ स्तालिन् उत्पन्न हुआ और वड़ा हुआ। मैं गुर्जी के अंगूरों के वगीचों को देखूँगा और देखूँगा गुर्जी के आकाश को। मैं गुर्जी के नाटकों को देखूँगा और गुर्जी (जार्जिया) के ग्राम-गायकों की आवाज़ सुनूँगा। सोवियत् प्रजातंत्र का सौन्दर्य, विशालता और शक्ति मेरे अन्दर आनन्दपूर्ण भावों को पैदा कर देती है; जिन्हें मैं अपने गीतों में व्यक्त कर देता हूँ। कज़ाकस्तान का विस्तृत विषम मैदान अराल् समुद्र, महान् वोल्गा, रूस की सुविशाल भूमि सभी सानन्द और सुखपूर्ण

जीवन में है; और अनेक शताब्दियों बाद पहली बार पूर्णतया खुश हाल हैं। मुझे यह जानकर खास तौर पर अभिमान होता है कि यह हमारी अद्भुत् पितृ-भूमि १७ वर्षों मे युद्ध-रहित हो शान्ति का सुख अनुभव कर रही है। जिस पितृ-भूमि की हिफाजत मे लाल-सेना सर्वदा तत्पर है, जिस सेना का सेनापति दुर्जेय वोरोशिलोफ् है। गृध्र-दृष्टि सोवियत् गुप्तचर-विभाग देश के प्रेम-भाजन सरदार येजोफ् के नायकत्व में बड़ी तत्परता के साथ अपना काम कर रहा है। सोवियत् के भीतर की सभी जातियाँ—रूसी, गुर्जी, कज़ाक, दुङ्गन्, किर्गिज़, उज़बेक आदि तथा सभी देश वोरोशिलोफ् और येजोफ् की सहायता मे है। मैं एक तेज चलने वाली ट्रेन की आरामदेह गाड़ी में सफर कर रहा हूँ। अपने चारो तरफ हँसमुख और प्रसन्न चेहरो को देखता हूँ। मेरी पितृ-भूमि के लोग प्रसन्न और सुखी है। मैं अपनी दिली उमगो को छिपा नही सकता; यह ख़याल करके कि मैं क्रेमलिन् को देखूँगा, जिसमें साथी स्तालिन् रहते और काम करते है; और मै उस प्रदेश को देखूँगा जिसमें स्तालिन् पैदा हुए। सोवियत्-सघ की जनता ने मनुष्यता द्वारा निर्माण किये गये सभी सस्कृति और कला के खजानो को अपनाया है। रूसी, पुश्किन् और गोर्की, उकरैनी शेवचेंको, कज़ाकी वुननवायेफ्, ईरानी कवि फिरदौसी, अंग्रेज़ शेक्सपियर और गुर्जी रुस्तावेली—सभी हमारे अत्यन्त प्रिय है। मै एक गीति-महोत्सव और हर भाषा के कवियो के मैत्री-पूर्ण सम्मेलन में शामिल होने के लिए जा रहा हूँ। मेरे आनन्द पर सिर्फ एक ही शोक की छाया पडी है, कि तिफ्लिस् मे मै अपने दोस्त तथा सोवियत्-भूमि के महान् गायक सुलेमान स्ताल्स्की को न देख सकूँगा। अपने समय से कुछ पहले वह मर गये। कुछ ही दिन और रहते, तो सोवियत् पार्लियामेंट के निर्वाचित सदस्य होने के गौरव को वह अनुभव करते।

"सुलेमान और मुझमें बहुत सी समानताएँ थी। मै और वह दोनों निरक्षर थे। हमने कभी नही लिखा। हमेशा पद्यबद्ध कर अपने गीतो को गाया। हम दोनो ने पूँजीवादी जगत् के जुए का अनुभव किया है; और

क्रान्ति के बाद ही सुख क्या है, इसका हमें, अनुभव हुआ। सुलेमान् और मैं दोनों ने इस सुख, इस पुनरुत्पन्न जनता और इस महान् स्तालिनीय युग और अपनी पितृ-भूमि का गान गाया।

"जनता का संगीत कभी इतना मधुर और भावपूर्ण नहीं हुआ। गलीचे और आभूषण इससे पहले कभी इतने सुन्दर नहीं बनाये गये। जनता की कला कभी इतनी कुड्मलित और प्रफुल्लित नहीं हुई, जैसी कि इस स्तालिनीय युग में।"

*** ***

मेखाइल् शोलोखोफ़् का स्थान सोवियत् उपन्यासकारों में बहुत ऊँचा है। इसके दो ग्रंथ 'शान्त दोन्' (तिखी दोन्) और 'धरती उलट-पलट' के अनुवाद अंग्रेज़ी में And Quite flows the Don; और Soil upturned के नाम से प्रकाशित हो चुके हैं। दोन् सोवियत् की विशाल और सुंदर नदियों में है। ईसाई-धर्म के प्रचार से पहले यह गंगा की तरह ही पवित्र नदी समझी जाती थी; और सन्मान के लिए इसे 'दोन् बाबा' कहते थे। सोलहवीं, सत्रहवीं शताब्दियों में सामन्तों के अत्याचार के कारण कितने ही रूसी किसान परिवार दोन्-तट की दुर्गम उपत्यका में आकर बस गये। यहाँ उन्हें खुली हवा में साँस लेने का अवकाश मिला और इस स्वतंत्रता से उन्हें इतना प्रेम हुआ कि उसकी रक्षा के लिए वह अपने प्राणों को भी तुच्छ समझने लगे। इस प्रकार परिस्थिति ने उन्हें जन्मजात योद्धा बना दिया। इन्हीं दोन्-तट-वासियों का नाम पड़ा 'कसाक्'। अपनी वीरता के कारण यह ज़ार के सब से बहादुर और विश्वस्त सैनिकों में माने जाने लगे। दाहिने कान में बाली, कसाक् पुरुष का जातीय चिह्न, उनके लिए बड़े सन्मान की चीज़ थी। धीरे धीरे उन्होंने अपनी एक अलग जाति कायम की और वह दोन् के राजपूत बन गये। कोई कसाक् लड़की ग़ैर-कसाक् से विवाह-संबंध करने पर अपनी जाति खो बैठती थी। ऐसे विवाह से

उत्पन्न सन्तान के लिए उस पुराने ज़माने—जिसको गुज़रे अभी २० ही साल हुए है—में अपमान के सिवा और कुछ नही धरा था। वेशोस्काया नगर के पास क्रुज़्लिनो गाँव कसाकों की वस्ती थी। अलेक्सान्दॆर् शोलोखोफ् एक नवागत ग़ैरकसाक तरुण का क्रुज़्लिनो की एक कसाक विधवा से प्रेम हो गया। विवाह हुए बिना ही उनको १९०५ ई० में एक बच्चा पैदा हुआ। लड़के का नाम मिखाइल् रक्खा गया। उस जमाने में कहाँ कोई अनुमान कर सकता था कि यह एक विधवा की सकर सन्तान सोवियत्-सघ के विशाल प्रजातंत्र के सर्वोच्च लेखकों में होगा। लड़कपन से ही मिखाइल् को दोन् की स्वच्छ शुद्ध हवा खाने का अवसर मिला। पहाडी भूमि पर तपते सूरज की धूप में दौड़ने और गर्म हवा से खेलने का मौका मिला। उसी वक्त मे वह देख रहा था कि कैसे गभीर और विशाल दोन् शान्त भाव से उसके गाँव के नीचे वह रही है। दोन् के किनारे के कसाकों के गाँव,

सोवियत् उपन्यास का एक चित्र

उनके छोटे छोटे घर, खलिहान और ऊँचे नीचे खेत उसके चित्त को अपनी ओर बराबर आकर्षित करते रहे। अपने कसाक् हमजोलियों के साथ वह कभी धूल पड़ी और कभी घास उगी सड़कों और गलियों में खेलता रहता था। जब वह कुछ बड़ा हुआ, तो कसाक् तरुण और तरुणियों के साथ निर्मल चाँदनी में सड़कों पर गाता और हँसता बेफ़िक्र घूमता था। कसाक् बड़े ही खुशदिल, हँसमुख और विनोदप्रिय लोग हैं। जहाँ कहीं वह जमा हो जाते हैं, हँसी मज़ाक़ और ठट्ठे से आस पास की मनहूसी भाग जाती है। उनके गीत बड़े सुन्दर और प्रभावशाली होते हैं। दिल के अन्तस्तल तक चुभ जानेवाले होते हैं। कसाक् भाषा बड़ी चलती, तीक्ष्ण, चित्र-विचित्र, और सजीव भाषा है। शोलोख़ोफ़् ने अपनी माँ के दूध के साथ उस भाषा को पिया और इस भाषा के मुहावरों को बड़ी स्वतंत्रता के साथ अपने ग्रंथों में प्रयुक्त किया। मिख़ाइल् के पिता ने अपने लड़के को आरंभिक स्कूल में दाख़िल किया। अपनी श्रेणी में वह हमेशा अव्वल रहा करता था। मिख़ाइल् की माँ अब तक भी अक्षर-ज्ञान से परिचित न थी, लेकिन अपने लड़के के साथ पत्र-व्यवहार रखने के लिए उसने लिखना-पढ़ना सीखा। माँ और बेटे के बीच लिखे गये इन पत्रों के देखने से मालूम होता है, कि शोलोख़ोफ़् ने कहाँ से लेखन-प्रतिभा पाई थी। शोलोख़ोफ़् अभी बारह ही साल का हो पाया था कि लाल-क्रान्ति आई। उसने शहर से गाँव तक ऐसी झंझावात बहाई कि जिससे कितने ही कूड़ा-कर्कट, पुराने रीति-रस्म, धनियों और ज़मींदारों के साथ साथ बहा दिए गए। कसाकों की भूमि में भी रूस के और भागों की तरह दो टुकड़े हो गये। गरीबों ने क्रान्ति का अनुगमन किया। धनी क्रान्ति के विरोधी बने। शोलोख़ोफ़् के सामने भी धीरे धीरे यह प्रश्न आया—किस तरफ़? पन्द्रहवें वर्ष में पहुँचते पहुँचते उसने निश्चय कर लिया किस तरफ़? उसने पोथी-पत्रा बाँध कर ताक में रखा और क्रान्ति के भँवर ने उसे अपने चक्कर में खींच लिया। शोलोख़ोफ़् एक गरीब घर में

पैदा हुआ था। साथ साथ माँ-बाप के जिस तरह के संबंध से उसका जन्म हुआ था उससे भी उसे लाछिन रहना पड़ता था। उसको मालूम था कि दरिद्रता और अपमान किसे कहते हैं। पीड़ितों और मेहनत करते करते मरनेवालों की भलाई की चिन्ता उसके दिल में आग की तरह जल रही थी। उसने क्रान्ति-विरोधियों से युद्ध किया। क्रान्ति के सफल होने पर जब उसने देखा कि धनी किसान (कुलक) आगे बढ़ने में बाधक है तो वह उनके विरुद्ध खड़ा हो गया। जब बन्दूक की जरूरत नहीं रही तो उसने कलम हाथ में ली और आज तक वह वैसी ही सफलता के साथ चल रही है जैसे कि उसकी बन्दूक। गृह-युद्ध के समय शोलोखोफ् ने दोन्-प्रदेश के कोने कोने की खाक छानी थी। फिर डाकुओं के खिलाफ वह तब तक लड़ता रहा, जब तक कि १९२२ में डाकुओं को तितर बितर नहीं कर दिया गया।

१९२३ में शोलोखोफ् तरुण कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर था। उसी वक्त उसने लिखना शुरू किया। उसकी छोटी कहानियों की पहली पुस्तक १९२५ में छपी। इसी साल से उसका साहित्यिक लेखक-जीवन आरंभ होता है।

वेशेंस्काया स्तानित्सा (ग्राम) दोन् नदी के बिलकुल किनारे पर बसा है। इसकी चौड़ी सड़कों के किनारे सफेदी किये हुए, साफ सुथरे कसाकों के घर हैं। सड़क पर वृक्षों की अपेक्षा धूल अधिक है। नदी के ढलुआँ किनारे पर हरी घास दिखलाई पड़ती है। नदी से थोड़ी दूर पर एक नया घर है जिसमें शोलोखोफ् आज कल रहता है। अपने लिखने पढ़ने के कमरे को मज़ाक से कहता है—'गर्मी में बहुत गर्म और सर्दी में बहुत सर्द।'

शोलोखोफ् अपना काम रात को करता है। ऐसी आदत बनाने के लिए उसे मजबूर होना पड़ा, क्योंकि दिन में उससे मिलनेवालों का ताँता बना रहता है। कसाक पंचायती खेतिहर, मजदूर, फौजी अफसर, विद्यार्थी, देशी-विदेशी यात्री, वृद्धाएँ, बच्चे, संवाद-दाता, लेखक, गायक, अभिनेता,

नाटक-कार, कवि, सभी उसके पास पहुँचते रहते हैं। कोई मोटर पर आता है, कोई घोड़े पर, कोई नाव पर, कोई स्टीमर पर और कितने ही हवाई जहाज़ पर। शोलोख़ोफ़् सबका दिल खोल कर स्वागत करता है, बात करता है, समझाता है, सहायता करता है और राह बतलाता है।

शान्त दोन्, जिसे होश सँभालने के साथ साथ शोलोख़ोफ़् ने देखा, अब भी उसके प्रेम की सब से बढ़ कर पात्र है। उसकी रूखी हवा, उसके चमकीले सूरज, उसकी झुलसाती तथा गर्म पहाड़ी भूमि और खड्ड, उसमें रहने वाले पशु-पक्षी सभी उसके चित्त को आकर्षण करते हैं। दोन् में बहुत तरह की मछलियाँ होती हैं; और शोलोख़ोफ़् को बंशी लगाने का बहुत शौक है। कसाक मछुओं से उसकी बड़ी घनिष्टता है। उसके उपन्यासों में पैने चुभते मुहावरे इस्तेमाल हुए हैं, वह उसे इसी घनिष्टता के फल-स्वरूप मिले हैं। दोन् में मछलियों का मारना और सूर्योदय से सूर्यास्त तक आस पास की पहाड़ी भूमियों—जिनमें जहाँ तहाँ पंचायती खेतियाँ बिखरी हुई हैं—में शिकार खेलना उसके शरीर में स्वास्थ्य और स्फूर्ति का संचार ही नहीं करता, बल्कि वहीं से अपने उपन्यासों के लिए वह सामग्री भी इकट्ठा करता है। दोन् नद, पहाड़ी उपत्यका, कसाक और उनका इतिहास, जीवन और मनोभाव ये सब शोलोख़ोफ़् के ख़मीर में दाख़िल हो गए हैं।

एक शाम को शोलोख़ोफ़् पहाड़ियों से घोड़ा दौड़ाता घर की तरफ़ आ रहा था। गाँव में पहुँचने से पहले ही जिस वक्त वह एक तरफ़ से मोड़ पर आया, उसी वक्त एक तेज़ दौड़ती मोटरकार पहुँच गई। घोड़ा दूसरी तरफ़ मुड़ गया और शोलोख़ोफ़् एक तरफ़ ज़मीन पर आ पड़ा। अगर ज़रा सी देर हुई होती, तो सवार और घोड़ा दोनों मोटर के पहियों के नीचे कुचल जाते। ड्राइवर ने झटपट ब्रेक लगाया। मोटर-सवारों ने बाहर कूद कर घुड़सवार से माफ़ी माँगना चाहा। उन्होंने चाहा कि शोलोख़ोफ़् को घर चढ़ा ले चलें और घोड़े को वहाँ पहुँचा दें। शोलाख़ोफ़् ने—'सब ठीक है, कोई परवा नहीं' कह कर उनकी प्रार्थना अस्वीकृत कर दी। शोलोख़ोफ़् फिर

के ग्रंथों की विशेषताएँ हैं। उसके रंग-बिरंगे तथा अतिगंभीर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण का पाठकों के ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ता है। उसकी किताबें बहुत सी यूरोपीय भाषाओं में अनुवादित हो चुकी हैं। वह कितनी ही बार विदेशों की यात्राएँ कर चुका है और विदेशी लेखकों और पाठकों को उसके सत्संग से सोवियत्-संबंधी ग़लत-फ़हमियों को हटाने का मौक़ा मिला है।

*** ***

अलेखेइ ताल्स्त्वा—गोर्की के बाद सोवियत्-प्रजातंत्र का सब से बड़ा उपन्यासकार अलेखेइ ताल्स्त्वा है। उसकी कितनी ही पुस्तकों के अनुवाद अनेक यूरोपीय भाषाओं में हो चुके हैं। "प्रथम पीतर" (Peter The Great), "रोटी" (Bread) आदि उसके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। ताल्स्त्वा की अवस्था ४५ से ऊपर है। वह क्रान्ति से पहले स्वयं भी एक कौंट (ग्राफ़) था। उसका कौंट टाल्स्टाय के परिवार से संबंध था। अपने नामराशि पुराने लेखक और आदर्शवादी टाल्स्टाय की भाँति यह भी सिर्फ़ लेखक और विचारक ही नहीं, बल्कि एक आदर्शवादी व्यक्ति है। सोवियत् जनता और सरकार ने उसके ग्रंथों का बड़ा आदर किया है। सब से बढ़ कर उसका सम्मान हाल में हुआ है; जब कि पिछले १२ दिसंबर को वह सोवियत् पार्लियामेंट का सभासद चुना गया। यहाँ उसके चुनाव-संबंधी एक सभा का वर्णन हम दे रहे हैं। स्तारया-रूसा (वृद्ध-रूस) ज़िले से ताल्स्त्वा पार्लियामेंट की सभासदी के लिए खड़ा हुआ था। अनीश्वरवादी-कोल्खोज़् के वोटरों के सामने व्याख्यान देने के लिए वह पहुँचा। श्रोताओं में सिर्फ वोटर ही नहीं थे, बल्कि कितने ही पाठक और पाठिकाएँ भी थीं। वे १८ वर्ष से कम उम्र होने के कारण वोट देने के अधिकारी न थे। कोल्खोज़् के संस्कृति-भवन के पुस्तकालय में ताल्स्त्वा के ग्रन्थों की प्रदर्शिनी की गई। कोल्खोज़् के सब से वृद्ध किसान करयोफ़् ने वक्ता का स्वागत किया। उसने भूमिका के तौर पर स्तारया-रूसा के

किसानों की पुरानी जीवनी पर संक्षेप में प्रकाश डाला। उस वक्त बहुत से गाँव वाले खेत-बिना अत्यन्त गरीबी और निरक्षरता की जिन्दगी बिताने के लिए मजबूर थे। बे-खेत के ग्रामीण किसानों के सामने सिर्फ एक ही स्वप्न था कि कैसे एक छोटा सा टुकड़ा खेत का मिल जाय, लेकिन पीढ़ियों तक यह स्वप्न ही रहता। खेत जमींदारों और धनी किसानों के अधिकार में था। करयोफ् ने एक पुरानी कहानी सुनाई। एक जमींदार ने अपने गाँव के बे-खेत के मजदूरों से कहा—बिना रुके दौड़ते जाओ और सूर्यास्त तक जितनी भूमि पर तुम घूम जाओगे, वह तुम्हारी होगी। गरीब किसान सूर्यास्त तक कहाँ दौड़ सकता था; वह उससे पहले ही चल बसा। आज जमीन के लिए दौड़ने की जरूरत नहीं। सोवियत्-सरकार ने कोल्खोज़ियों को मुफ़्त ज़मीन हमेशा के लिए दे दी है।

गाँव वालों ने तालस्त्वा से बड़े अभिमान में कहा—हमारे गाँव का हर एक बच्चा स्कूल में जाता है। हमारे इलाके में ७०० अध्यापक और एक ट्रेनिंग स्कूल है। १६३५ में १८० अध्यापक ट्रेनिंग पा कर निकले थे और १६३६ में ४६८ अध्यापक ट्रेनिंग पा रहे हैं।

गाँव के तरुण शिक्षक निकितिन् और कुछ दूसरे नौजवानों ने लेखक के ग्रन्थ 'हरे नगर' (Azure cities) के बारे में वार्तालाप किया। एक किसान ने कहा—हरे नगर सोवियत्-प्रजातंत्र में बसाये जा चुके हैं। मग्-नितोगोर्स्क, कोम्सोमोल्स्क, किरोव्स्क ऐसे ही नये शहर हैं, जो चन्द बरसों में लाखों की जनसंख्या और हरे भरे बाग बगीचों के साथ जमीन के भीतर से निकल आये।

तालस्त्वा ने अपने भाषण में कहा—"आज जब नौजवानों और प्रतिभाशाली पुरुषों द्वारा अपने प्रति कहे गये शब्दों को मैंने सुना, तो मैंने निश्चय किया कि दूनी ताकत से सारी शक्ति लगा कर अपनी पितृ-भूमि के बारे में, तुम्हारे बारे में अपने बन्धुओं के लिए, अपने देश के लिए, बहुत सी किताबें लिखूँ (जोर की करतलध्वनि)। सोवियत् क्रान्ति के

के ग्रंथों की विशेपताएँ हैं। उसके रंग-विरंगे तथा अतिगंभीर मनोवैज्ञानिक विश्लेपण का पाठकों के ऊपर वड़ा प्रभाव पड़ता है। उसकी कितावें वहुत सी यूरोपीय भापाओं में अनुवादित हो चुकी हैं। वह कितनी ही वार विदेशों की यात्राएँ कर चुका है और विदेशी लेखकों और पाठकों को उसके सत्संग से सोवियत्-संवंधी ग़लत-फ़हमियों को हटाने का मौक़ा मिला है।

*** ***

अलेखेइ ताल्स्त्वा—गोर्की के वाद सोवियत्-प्रजातंत्र का सव से वड़ा उपन्यासकार अलेखेइ ताल्स्त्वा है। उसकी कितनी ही पुस्तकों के अनुवाद अनेक यूरोपीय भापाओं में हो चुके हैं। "प्रथम पीतर" (Peter The Great), "रोटी" (Bread) आदि उसके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। ताल्स्त्वा की अवस्था ४५ से ऊपर है। वह क्रान्ति से पहले स्वयं भी एक कौंट (ग्राफ़) था। उसका कौंट टाल्स्टाय के परिवार से संवंध था। अपने नामराशि पुराने लेखक और आदर्शवादी टाल्स्टाय की भाँति यह भी सिर्फ़ लेखक और विचारक ही नहीं, वल्कि एक आदर्शवादी व्यक्ति है। सोवियत् जनता और सरकार ने उसके ग्रंथों का वड़ा आदर किया है। सव से वढ़ कर उसका सम्मान हाल में हुआ है; जव कि पिछले १२ दिसंवर को वह सोवियत् पार्लियामेंट का सभासद चुना गया। यहाँ उसके चुनाव-संवंधी एक सभा का वर्णन हम दे रहे हैं। स्तारया-रूसा (वृद्ध-रूस) ज़िले से ताल्स्त्वा पार्लियामेंट की सभासदी के लिए खड़ा हुआ था। अनीश्वरवादी-कोल्खोज़् के वोटरों के सामने व्याख्यान देने के लिए वह पहुँचा। श्रोताओं में सिर्फ वोटर ही नहीं थे, वल्कि कितने ही पाठक और पाठिकाएँ भी थीं। वे १८ वर्ष से कम उम्र होने के कारण वोट देने के अधिकारी न थे। कोल्खोज़् के संस्कृति-भवन के पुस्तकालय में ताल्स्त्वा के ग्रन्थों की प्रदर्शिनी की गई। कोल्खोज़् के सव से वृद्ध किसान करयोफ़् ने वक्ता का स्वागत किया। उसने भूमिका के तौर पर स्तारया-रूसा के

किसानो की पुरानी जीवनी पर सक्षेप मे प्रकाश डाला। उस वक्त बहु
से गाँव वाले खेत-बिना अत्यन्त गरीबी और निरक्षरता की जिन्दगी बिता
के लिए मजबूर थे। बे-खेत के ग्रामीण किसानो के सामने सिर्फ एक ही
स्वप्न था कि कैसे एक छोटा सा टुकडा खेत का मिल जाय; लेकिन पीढियो
तक यह स्वप्न ही रहता। खेत ज़मींदारो और धनी किसानो के अधिकार
में था। करयोफ् ने एक पुरानी कहानी सुनाई। एक ज़मीदार ने अपने
गाँव के बे-खेत के मजदूरो से कहा—बिना रुके दौडते जाओ और सूर्यास्त तक
जितनी भूमि पर तुम घूम जाओगे, वह तुम्हारी होगी। गरीब किसान
सूर्यास्त तक कहाँ दौड सकता था, वह उससे पहले ही चल बसा। आज
ज़मीन के लिए दौडने की ज़रूरत नही। सोवियत्-सरकार ने कोल्खोज़ियो
को मुफ्त ज़मीन हमेशा के लिए दे दी है।

गाँव वालो ने ताल्स्त्वा से बडे अभिमान से कहा—हमारे गाँव का
हर एक बच्चा स्कूल में जाता है। हमारे इलाके में ७०० अध्यापक और
एक ट्रेनिंग स्कूल है। १९३५ में १८० अध्यापक ट्रेनिंग पा कर निकले थे
और १९३६ में ४६८ अध्यापक ट्रेनिंग पा रहे हैं।

गाँव के तरुण शिक्षक निकितिन् और कुछ दूसरे नौजवानो ने लेखक
के ग्रन्थ 'हरे नगर' (Azure cities) के बारे में वार्तालाप किया। एक
किसान ने कहा—हरे नगर सोवियत्-प्रजातत्र में बसाये जा चुके हैं। मग्-
नितोगोर्स्क, कोम्सोमोल्स्क, किरोव्स्क ऐसे ही नये शहर हैं, जो चन्द बरसो
में लाखो की जनसख्या और हरे भरे बाग बगीचो के साथ ज़मीन के भीतर
से निकल आये।

ताल्स्त्वा ने अपने भाषण मे कहा—"आज जब नौजवानो और
आशाली पुरुषो द्वारा अपने प्रति कहे गये शब्दो को मैंने सुना, तो
निश्चय किया कि दूनी ताकत से सारी शक्ति लगा कर अपनी पितृ-
के बारे में, तुम्हारे बारे में अपने बन्धुओ के लिए, अपने देश के लिए,
ी किताबें लिखूँ (जोर की करतलध्वनि)। सोवियत् शान्ति के

पहले रूस और सारे संसार में सिर्फ एक ही प्रथा थी और वह थी ज़मींदारी और पूँजीवाद की। मैं उसका विवेचन करने नहीं जा रहा हूँ। उसके बारे में सिर्फ इतना ही कहना काफ़ी है कि इस प्रथा ने साम्राज्यवादियों के युद्ध को हमारे सिर पर गिराया। उस युद्ध में डेढ़ करोड़ आदमी बलि चढ़े। इन डेढ़ करोड़ को साकार बना कर, आँखों के सामने लाने के लिए ज़रा सोचिए दो करोड़ मन मनुष्य का मांस। जर्मन व्यवहार कुशल हैं। उन्होंने इससे फ़ायदा उठाया; और युद्ध के समय में मनुष्य के मांस से वे ग्लेस्रिन् निकाल रहे थे।

"आज फ़ासिस्ट देश—जर्मनी, जापान और इटली—अपनी सारी ताक़त लगाकर एक नये-संसार-व्यापी युद्ध की कढ़ाई चढ़ाना चाहते हैं। मैं पच्छिम (यूरोप) में था, और मैंने इसे अपनी आँखों से देखा। हमारी क्रान्ति ने एक नई साम्यवादी प्रथा स्थापित की। यह बिलकुल ही भिन्न राष्ट्रीय अर्थ-नीति है। साम्यवादी अर्थनीति के विकास के लिए सर्वत्र शान्ति आवश्यक चीज़ है। सारे समाज के लिए सुख और सम्पत्ति; हर एक नागरिक के लिए सुख और सम्पत्ति, यह है ध्येय साम्यवादी अर्थनीति का।

"खाने से भूक लगती है—एक रूसी कहावत है। सुख और सम्पत्ति के लिए कोई सीमा नहीं है। और न कोई सीमा या बंधन होना चाहिए।

"इस साल हमने दो अरब दस करोड़ तुमन (७ अरब पुड, १ पुड=१२ सेर) गेहूँ पैदा किया। इस साल के लिए शाबास, लेकिन भविष्य में हमें इससे भी बड़ी फ़सल काटनी है। हमने निरक्षरता को दूर कर दिया। बिना अपवाद के अब सभी बच्चे पाठशाला में पढ़ते हैं। इतना काफ़ी नहीं है। हमें कोशिश करनी चाहिए कि हमारा हर एक बच्चा हाई स्कूल की शिक्षा समाप्त करे और पीछे कोशिश करनी होगी कि हमारा हर एक जवान लड़का-लड़की विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त करे।

"पुराने ज़माने में गाँव की जिन्दगी गन्दगी की जिन्दगी थी। आप किसी झोपड़ी में घुसते, और उसे खटमलों से भरा पाते। यदि पूछें—दादी,

तुम्हारे घर में इतने खटमल क्यों भरे है ?'। 'कुछ नहीं बच्चा ये हमारे ही है।' जवाब मिलता था।

"आज बिजली और रेडियो गाँव मे घुस गये। घर साफ हैं। ढोरो के लिए गर्म रखी जानेवाली गोशालाएँ बनी है। बाग लगाये गये हैं और जाड़े के दिनो में सब्जी पैदा करने के लिए काँच के गर्म घर तैयार किये गये है; तो भी इतना काफी नही है। गाँव को देहात का नगर बनना होगा। यहाँ पर भी अस्फाल्ट (सख्त पत्थर) की सड़कें, मोटर-खाने, सुन्दर और विशाल क्लबघर, दाईखाने, बड़े स्कूल और विस्तृत खेल के मैदान होने चाहिएँ। .... २० साल पहले जर्मनी जारशाही जमींदारो के रूस की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली और अधिक सस्कृत देश था। आज सोवियत् रूस जर्मनी ही से अधिक शक्तिशाली और वैभवशाली नहीं है, बल्कि जापान और इटली के जर्मनी के पल्ले पर बैठ जाने पर भी हमारा पल्ला भारी है। आप पूछेंगे, और अधिक संस्कृत भी ? 'हाँ, अधिक सस्कृत भी। यद्यपि हम जानते हैं कि हमे और कितनी ही सास्कृतिक आदतें सीखनी है। .... हम अधिक संस्कृत है, क्योंकि किसी जाति की सस्कृति है वह समस्याएँ और वह आदर्श जिसे वह जाति सामने रखती है। मेरी राय मे हमारे गाँव का वह अध्यापक, जो पुस्तकों के पढने और सोवियत् मानवता के आदर्श को सीखने मे रात-रात खर्च करता है, वह उस जर्मन प्रोफेसर से अधिक सस्कृत है, जो जर्मन-जाति की लम्बी खोपड़ियो की उच्चता पर व्याख्यान झाड़ने में अपना सारा समय खर्च करता है।

"हमारी कोल्खोजी किसान स्त्री जिसने ज्यादा सन उपजाने के लिए स्तालिन् को वचन दिया है, और इसके बारे में काम करने के बाद रातो पढ़ती है; उस जर्मन प्रोफेसर की स्त्री से अत्यधिक सुसस्कृत है जिसका उद्देश्य है बच्चे पैदा करना।—हाँ, दो से अधिक नहीं, और रसोई-खाने में हँड़िया पकाना, कमरे की धूल को झाड़ना और फुरसत के वक्त दूसरी घरनियों से गप मारना। हम एक उत्कृष्ट सस्कृति का निर्माण कर रहे हैं।

और सारे संसार की शान्ति की रक्षा कर रहे हैं। जब कि फ़ासिस्ट संस्कृति को मटियामेट कर रहे हैं और युद्ध को भड़का रहे हैं।............याद रखिए स्तारया-रूसा (वृद्ध रूस) ने स्वतंत्रता के युद्ध में शताब्दियाँ बिताई हैं। शताब्दियों तक स्वातंत्र्य युद्ध को सारी रूसी जाति चलाती रही। जब उन्होंने देखा कि ज़मींदारों के अत्याचार को वह अधिक नहीं सह सकते तो बोलोत्-निकोफ़्, रज़िन्, पुगाचेफ़् के नायकत्व में विद्रोह किया। यह १७वीं शताब्दी के अन्त और १८वीं शताब्दी में हुआ। १९वीं सदी में कितनी ही बार सिपाहियों और किसानों ने बलवा किया। अन्त में १९०५ की क्रान्ति आई। और फिर १९१७ की महाक्रान्ति! जनता ने एक भयंकर चोट के साथ ज़ार, जमींदार, बनियाँ और धनी किसानों के ज़ुल्म को खत्म कर दिया। जनता भूमि की मालिक बनी। उसने अपने मज़दूर-किसान-राज्य का निर्माण किया।............चिरंजीव सोवियत्-संघ की जातियाँ, चिरंजीव स्तालिनीय विधान, चिरंजीव वह महान् ऐतिहासिक साम्यवाद का पथ, जिस पर साथी स्तालिन् हमें अग्रसर कर रहे हैं।

* * *　　* * *

व्लादिमिर् **मायाकोव्स्की**—यह सोवियत् युग का सर्वश्रेष्ठ कवि है। वर्तमान शताब्दी के आरंभ से कुछ वर्ष पहले काकेशस् के एक छोटे गाँव बगदादी में पैदा हुआ था। उसका जन्म एक जंगल-कर्मचारी के घर में हुआ था। मायाकोव्स्की-खानदान पहले गाँव को छोड़ कर कुतइसी में चला गया था। वहीं व्लादिमिर् ने स्कूल में प्रवेश किया। कुतइसी के स्कूल में १८७२ की लिखी एक पीले काग़ज़ पर अर्ज़ी है। चौथे दर्जे का विद्यार्थी व्लादिमिर् मायाकोव्स्की उसमें लिखता है—"मेरा पिता अत्यन्त ग़रीब है; और उसके ऊपर सात व्यक्तियों के परिवार का बोझ है, जिनको वह बड़ी मुश्किल से खिला पाता है। अपनी दुस्सह दरिद्रता के कारण मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरी फ़ीस माफ़ कर दी जाय।" उसी अल-

मारी में एक दूसरी अर्जी भी पाई जाती है, जो कि ब्लादिमिर् माया कोव्स्की नामक एक दूसरे विद्यार्थी ने फीस माफ करने के लिए दी थी। दोनों अर्जियाँ एक ही हाथ की लिखी हुई थीं। दोनों की तारीख में ३० साल का अन्तर है। पहली में ब्लादिमिर् कान्स्तान्तिनोविच् मायाकोव्स्की ने अपने लिए फीस की माफी चाही थी और दूसरी अर्जी में अपने पुत्र के लिए।

३० वर्षों ने उसके जीवन में कोई परिवर्तन नहीं किया। १६०५ की क्रान्ति, हड़तालें, सभाएँ और पुलीस के साथ सशस्त्र मुकाबला ये घटनाएँ थीं, जिन्होंने कि बालक ब्लादिमिर् पर अपनी गहरी छाप छोड़ी। १२ वर्ष की उम्र में मायाकोव्स्की ने अपनी बड़ी बहन को एक पत्र लिखा "......अब तक कुतइसी के ऊपर कोई आफत नहीं आई। यद्यपि अपर स्कूल और महाजनी पाठशाला में हड़ताल हुई। अपर स्कूल में तोपों की प्रदर्शिनी हुई। महाजनी पाठशाला में और बढ़ चढ़ कर किया गया। वहाँ तोप लगा दी गई और घोषित कर दिया गया कि अगर किसी ने जरा भी मुँह खोला तो वह इस जगह को धुस उड़ा देंगे। . ..... कुतइसी हथियार-बन्द हो रही है। सड़क में चारों ओर मार्सेई (के क्रान्तिकारी गीत) की आवाज सुनाई देती है।"

मायाकोव्स्की (कवि)

मायाकोव्स्की के दिमाग़ में इन घटनाओं ने ऐसी उत्तेजना पैदा की कि वह स्कूल छोड़ कर मार्क्सीय स्वाध्याय-मंडली में प्रविष्ट हो गया। उसने राजनैतिक और साम्यवादी ट्रैक्ट पढ़े और वह रियोन नदी के किनारे भाषण का अभ्यास करने लगा। वह यूनान के महान् वक्ता, देमोस्थेनेस् की तरह उत्तम वक्ता होने के लिए उसी तरह मुँह में पत्थर डाल कर अभ्यास भी करता था।

१९०६ में मायाकोव्स्की का पिता मर गया; और परिवार को मास्को चला जाना पड़ा। माँ को थोड़ी सी पेंशन मिल रही थी, जो कि ६ आदमियों के परिवार के लिए पर्याप्त न थी। इसलिए उन्होंने अपने घर के एक कमरे को काकेशस् के २ विद्यार्थियों को भाड़े पर दे दिया। व्लादिमिर् ने उनसे दोस्ती की और गुप्त क्रान्तिकारी-दल से सम्बन्ध स्थापित किया।

२८ मार्च १९०८ को मायाकोव्स्की पहली वार गिरफ्तार हुआ। वह कुछ गैरकानूनी कागज़ों और अखवारों को लिये जा रहा था। उम्र वहुत छोटी होने से छोड़ दिया गया, लेकिन पुलीस उस पर वड़ी कड़ी निगाह रखने लगी। जनवरी १९०९ में पकड़ कर छोड़ दिया गया। जुलाई १९०९ में तीसरी वार पकड़ा गया और उसे ९ महीने जेल की हवा खानी पड़ी। क्रान्तिकारियों की गुप्त वैठकें और पुलीस की धर-पकड़ ने उसके लिए शिक्षा का काम दिया। उन्होंने उसकी हिम्मत को मजवूत कर दिया। जेल से निकलने के वाद उसके सामने प्रश्न हुआ कि वह किस व्यवसाय के लिए अपने को तैयार करे। अन्त में उसने कलाकार वनने का निश्चय किया। १९३१ के अन्त में उसने चित्र-सम्वन्धी एकेडेमी से एंट्रेंस पास किया। यही उसकी अन्तिम पाठशाला थी, जिसमें कि वह चित्रकार वनने के लिए दाखिल हुआ था, किन्तु निकला एक कवि वनकर। इसी समय उसके प्रथम पद्य प्रकाशित हुए, जिनका संग्रह १९१३ में प्रथम भविष्यत्-वादी काव्य-संचय के रूप में छपा। संग्रह का नाम था—"स्वतंत्र-

कला की हिमायत में" और हेडिंग था "जन-रुचि के गाल पर एक थप्पड़।" मायाकोव्स्की की प्रथम कविताओं का विषय था, नगर का विस्मृत अकिंचन प्राणी। जन-प्रिय होने का गुण और सभा में भाषण करने का कौशल उसे रंगमंच की तरफ खींच ले गया। और इसके फल स्वरूप उसने 'ब्लादिमिर् मायाकोव्स्की' दु.खान्त नाटक लिखा। विषय है--कवि सभी दीनों और दुखियों के लिए दु.ख सह रहा है। वह मनुष्य जाति के शोक को स्वय वहन करना चाहता है। लोग उसके पास सहायता के लिए आते हैं, लेकिन वह असमर्थ है। सिवाय सवेदना के और कुछ नही प्रदान कर सकता।

उसके गर्म विचारो के कारण चित्रकला की एकेडेमी ने मायाकोव्स्की को निकाल दिया। इसपर वह मास्को से पीतर्बुर्ग चला गया। वहाँ उसने अपना सारा समय लिखने के लिए अर्पण किया। १९१३ के अन्त में उसका नाटक एक छोटी सी नाट्यशाला में खेला गया। विरोध के साथ साथ कितनो ने उसकी दाद दी। इससे वह उत्साहित हुआ। उसमें विश्वास की मात्रा बढी। उसकी कलम और निर्भीक हो गई। १९१४-१५ में '१३वाँ शिष्य' के नाम से उसने अपना दूसरा बडा काव्य ग्रंथ लिखा। सेंसर ने नाम बदलने के लिए ही मजबूर नही किया बल्कि कितने ही हिस्सों को निकलवा दिया। 'पतलूनवाले बादल' के नाम से ग्रथ प्रकाशित हुआ। इसमें भी उसने पीडितों और दलितों की हिमायत की। लेकिन यहाँ दलितो और पीड़ितो की बेबसी के गीत नही गाये गये हैं। वह कहता है—दान के तौर पर समय की भिक्षा मत माँगो और आगे बढ़ो। जो तुम्हारा है, अपना अधिकार समझ कर ले लो। अत्याचारी वह कहता है पहले धनियो को फिर उन कवियो और लेखको को, जो इन मोटी तोंदवाले मालिको को खुश करने के लिए कलम घिसते हैं। और अन्तिम अत्याचारी वह खुदा को कहता है, जो इन सभी अत्याचारो और अन्यायो को उचित ठहराता है।

क्रान्ति के वाद 'पतलूनवाले वादल' अपने असली रूप में फिर से प्रकाशित हुआ। उसके चारों परिच्छेदों के हेडिंग हैं—'तुम्हारे प्रेम का क्षय हो', 'तुम्हारी कला का क्षय हो', 'तुम्हारे समाज का क्षय हो', 'तुम्हारे धर्म का क्षय हो'। अभी भविष्य का प्रोग्राम कवि ने निश्चय नहीं कर पाया था, लेकिन विद्रोही होना वह सव से ज़रूरी समझता था। आनेवाली क्रान्ति का स्वागत वह इन शब्दों में करता है—

"वह समय के भींटे को पार कर रहा है।
मैं उसे देख रहा हूँ जो कि अव भी अदृश्य है।
क्योंकि उस दूरी पर दृष्टि असफल हो जाती है।
भूखों के मुंडों के साथ
विद्रोह के काँटों की माला पहने
सन् १९१६ आ रहा है।"

अभी तक मायाकोव्स्की अकेला था, और इस अकेलेपन का उसपर प्रभाव पड़ रहा था। १९१५ में पहले पहल वह गोर्की से मिला। गोर्की ने तुरन्त उसकी अप्रतिम प्रतिभा और विद्रोही कवित्व को पहचान लिया। १९१५ के अन्त में गोर्की ने अपना मासिक पत्र निकाला और मायाकोव्स्की नियमपूर्वक उसमें लिखने लगा। क्रान्ति के कुछ ही समय पूर्व जव चारों ही ओर निराशा ही निराशा दिखलाई पड़ती थी, उसने लिखा था—

"कैसी वुरी
वाई चढ़ी रात में,
कैसे मूढ़ ने,
मुझे निर्मित किया।
मैं इतना वड़ा
इतना निरर्थक।"

जव १९१७ की क्रान्ति आ गई, उस वक्त मायाकोव्स्की सैनिक-सेवा में था। क्रान्ति के पहले दिनों में उसने 'क्रान्ति' नाम से कविता लिखनी

शुरू की और बोल्शेविक् कला पर व्याख्यान दिया। क्रान्ति के बाद कितने ही लेखक और कवि अभी सोच ही रहे थे कि नवयुग का स्वागत किया जाय या नही। मायाकोव्स्की पहले ही दिन से अपने लिए निश्चय कर चुका था। वह अपनी जीवनी में लिखता है—'स्वीकार करें, या अस्वीकार करें? अपने बारे में मेरे सामने ऐसा कोई प्रश्न नही था। क्रान्ति मेरी है, मै स्मोल्नी चला गया और काम मे लग गया। जो करने को था, किया।'

१७ नवम्बर सन् १९१७ को कलाकार-संघ की बैठक थी। शिक्षा कमीसर लूनाचार्स्की का प्रस्ताव था—देश के कला सबंधी जीवन को सगठित किया जाय। उपस्थित कलाकारो मे कितने बोल्शेविको के अधिकारारूढ़ होने की निन्दा करते थे और कह रहे थे, कि सहयोग नही देना चाहिए। लेकिन अधिकाश सदस्य कोई निश्चय नहीं कर रहे थे और चुप थे। मायाकोव्स्की ने सीधे और साफ शब्दो मे प्रस्ताव किया—'नई शक्ति का स्वागत किया जाय और उसके साथ सम्बन्ध जोडा जाय।'

जिस वक्त क्रान्ति की आग धक धक जल रही थी, उस वक्त कितने ही लेखनी के धनी इस कहावत को चरितार्थ कर रहे थे—जब तोप की आवाज चलती है, तो कविता देवी चुप हो जाती है। मायाकोव्स्की ने कहा—मैं ऐसी कविताएँ नही लिखता जो कि अच्छे समय की प्रतीक्षा में दराज मे बन्द रहें। मेरे पास ऐसे जोरदार शब्द है जो तोप के साथ स्वर मिला कर बोल सकते है। मै शब्द के ऐसे बमों को ढाल सकता हूँ जो शत्रु को चिथड़े चिथड़े उडा सकते है।

वह कविताएँ लिखता था और जब उसने कागज़ की कमी देखी, तो क्रान्ति की प्रशंसा मे ऐसे नाटक लिखे, जिन्हे देश की हजारों नाट्यशालाओं में लाखों आदमी देख सकते है। १९१८ में उसने "रहस्यमय मेलाव" नाटक लिखा। उसने बाइबिल मे आये बडे जलप्लावन से क्रान्ति की उपमा दी। क्रान्ति वह बाढ है, जो पुराने संसार की सभी गन्दगियों को बुहारी बहार्दी साफ कर देती है। नाटककार ने इस नाटक को क्रान्ति के प्रथम वार्षिकोत्सव

से एक मास प्रथम समाप्त किया था। इसका सभी जगह बड़ा स्वागत हुआ। सोवियत्-नाटक-साहित्य में इसका विशेष स्थान है। यह सोवियत् युग का सोवियत् कवि द्वारा सोवियत् शक्ति की प्रशंसा में लिखा गया पहला नाटक था।

१९१८ में बाल्तिक के नौसैनिकों ने मायाकोव्स्की को कविता-पाठ के लिए निमंत्रित किया। कवि ने पुरानी कविता पढ़ने की जगह उस समय के लिए एक नई कविता बनाई, जो 'बाँएँ चलो' के नाम से उसकी अत्यन्त प्रसिद्ध कविता है; और संसार की बहुत सी भाषाओं में उसका अनुवाद हो चुका है। १९१९ में उसने '१५ करोड़' नामक अपना महाकाव्य समाप्त किया। इस महाकाव्य में लेखक का नाम नहीं दिया गया। वह मानता था, कि १५ करोड़ सोवियत्-जनता इसकी निर्माता है, जिसने कि क्रान्ति को सफल बनाया।

गृह-युद्ध बड़े ज़ोर से चल रहा था। तरुण सोवियत्-प्रजातंत्र सर्वस्व की बाज़ी लगा कर अपनी रक्षा कर रहा है। उस वक्त प्रेसों और छापने की मशीनों की बड़ी कमी थी। जो थीं भी, वह ठीक से काम नहीं कर सकती थीं। कुछ कलाकारों ने सोचा कि प्रचार के लिए वह हाथ से पोस्टर तैयार करें। उन्होंने रूसी तार-विभाग के सामने अपनी इच्छा प्रकट की और उसके स्वीकार करने पर परिहासमय "रोस्तजंग्ले" के नाम से कार्टून निकलने शुरू हुए। यह कार्टून अधिकतर तत्कालीन समस्याओं को ले कर तैयार किये जाते थे। ये क्रान्ति-विरोधियों के ख़िलाफ़ प्रचार ही नहीं करते थे, बल्कि ताज़ी समस्याओं द्वारा समाचार का भी काम देते थे। रोस्तजंग्ले थोड़े ही दिनों में सारे देश में फैल गये। मायाकोव्स्की इस योजना का प्रधान नायक था और उसने हज़ारों कार्टून खुद बनाये। कितनी ही बार उसकी कविताएँ रोस्तजंग्लों में निकलीं। इस वक्त मायाकोव्स्की को चित्रकार और काव्यकार दोनों की शक्ति का पूरा पूरा उपयोग लेने का अवसर मिला। तत्कालीन सभी घटनाओं पर कार्टून खींचे

गये। सफेद जेनरल देनिकिन्, उदेनिन्, रेंगल् से ले कर पोल् सामन्तों तथा दूसरे हजारों विषयों पर कार्टून निकाले गये। वह जनता के ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करने में बहुत सफल हुए। अहम्मन्य कवि और कितने ही अहम्मन्य पाठक उस समय मायाकोव्स्की को बडी नीची निगाह से देखने लगे। उनके खयाल में था, कि ऐसा छोटा काम किसी ऊँचे कवि के लिए शोभा नहीं देता। मायाकोव्स्की के खयाल में कोई काम छोटा-बड़ा नहीं है। जो उपयोगी हो और जिसकी आवश्यकता हो, वही बडा काम है।

गृह-युद्ध के समाप्त हो जाने के बाद भी कितने ही समय तक रोस्त-जंग्ले कार्टूनों से अलंकृत होते रहे। अब निर्माताओं ने आर्थिक योजना, देश की पुनर्रचना से ले कर इन्फ्लुएंज़ा, भूख और अव्यवस्था पर कार्टून बनाने शुरू किये। १९२२ के मार्च में जा कर यह कार्टून-प्रचार बन्द हुई। ५ मार्च की "इज्वेस्तिया" में मायाकोव्स्की ने बहुत दिनों बाद एक कविता लिखी। जवाबदेह कार्यकर्ताओं पर अधिक सभाओं के बोझ का लादना यही कविता का विषय था। दूसरे दिन लेनिन् ने अखिल रूसी धातु के कारखानों के मजदूरों की कांग्रेस में इस कविता की तारीफ करते हुए कहा—अपनी कविता में कम्युनिस्टों के बहुत अधिक सभा करने का वह उपहास करता है। उसकी कविता में कवित्व कितना है, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन जहाँतक राजनीति का संबंध है, मैं कह सकता हूँ कि वह बिलकुल उचित है।

अब मायाकोव्स्की ने नियमित रूप से अपनी कविताएँ समाचार-पत्रों में भेजनी शुरू की और इस कार्य को वह मृत्यु के समय तक करता रहा। उसके काव्य 'लेनिन्' और 'अच्छा' पत्रों में प्रकाशित हुए। अब भी उसकी कविताएँ तात्कालिक समस्याओं को ही ले कर होती थी। कितनी ही बार जब संपादक ने मायाकोव्स्की को फोन किया कि अमुक विषय पर कोई कविता होती, तो अच्छा था। और उत्तर मिलता—'हाँ, मैं समझता हूँ। इस पर आधा मैं लिख भी चुका हूँ।'

१९२० में लेनिन् की पचासवीं वर्षगाँठ पर मायाकोव्स्की ने जो कविता लिखी थी; उसकी दो पंक्तियाँ थीं—

*करता हुआ लेनिन् प्रशंसा सूक्ष्म अपने ज्ञान से।
निज विश्व-आशा की प्रशंसा कर रहा हूँ ध्यान से॥

जब लेनिन् की बीमारी की पहली सूचना निकली, तो मायाकोव्स्की ने लिखा—

क्रान्ति चाहती है अपने सीने के भीतर।
नित के लिए समोद प्रेम से लेनिन्-उर-वर।

२७ जनवरी १९२४ को लाल-मैदान में लेनिन् की अर्थी के साथ माया-कोव्स्की मौजूद था। उसने उस समय के दृश्य को इस प्रकार वर्णित किया—

अतिशय नीरव सुन्दर अर्थी,
जग के ऊपर निश्चल।
होंगे किन्तु बगल में उसकी,
हम वाचाल अमितचल॥

मायाकोव्स्की व्यक्ति का बड़प्पन व्यक्ति की विभूति नहीं समझता। उसके विचार में व्यक्ति समाज की उपज है। वह ऐतिहासिक आवश्यकता है। वह लिखता है—

दो सौ वर्ष हुए आने का,
समाचार था आया।
धन्य भाग्य से भू ने पहले,
लेनिन् को जब पाया॥

पूँजीवादियों की लूट और वर्गद्वन्द्व ने लेनिन् को पैदा किया—

इसीलिये सिम्बिर्स्क पुरी में,
जन्मा वह था शुभ दिन।

---

* साहित्यरत्न पंडित श्यामनारायण पांडे, शास्त्री द्वारा पद्यबद्ध।

(लिये हाथ में आग क्रान्ति की,)
साधारण शिशु लेनिन्॥

वह सच्चे कम्युनिस्ट की तरह सारी शक्ति का स्रोत जनता को मानता था। वह एक जगह लिखता है—

श्रेणी की वर्गवदियों को,
लेनिन् ने छुआ (अभय समक्ति)।
उस छूने से ही उसको थी,
मिल गई ज्योति मिल गई शक्ति॥

उस शक्ति ज्योति से जनता की,
वह सदा बढ़ा ऊँचा लेनिन्।
उन्नति की उन्नत चोटी पर,
श्रेणी के साथ चढ़ा दिन दिन॥

१९२२ और १९२९ के बीच प्रायः हर साल मायाकोव्स्की विदेश-यात्रा के लिए जाता था। इन ७ वर्षों में उसने लत्विया, जर्मनी, फ्रांस, स्पेन, क्यूबा, मेक्सिको, सयुक्त राष्ट्र अमेरिका, पोलैंड और जेकोस्लवाकिया की सैर की। १९२४ में मायाकोव्स्की ससार-यात्रा के लिए निकला। वह इसके लिए पेरिस गया और अमेरिका जाने के लिए वीज़ा लेना चाहा, लेकिन उसमें वह सफल न हुआ। दूसरे साल उसे सफलता मिली। जिस वक्त वह जहाज़ से अमेरिका को जा रहा था, उसी वक्त उसने "अटलांटिक महासागर", "छ माधुनियाँ", "क्रुस्टोफर कोलम्बस" और "गहरे स्थान में, छिछली फ़िलासफ़ी" कविताएँ लिखी।

न्यूयार्क को देखने पर उसने एक कविता लिखी। कविता यह है—

..न्यूयार्क बढ़ाता है मस्ती,
मैं करता हूँ स्वीकार इसे।

पर टोपी शिर पर रही, न मैं,
दे सकता हूँ सत्कार इसे ॥

हम वीर सोवियत् जान रहे,
किस का करना सम्मान उचित।
पूंजीवादी-मानव-गण का,
आदर करना अतिशय अनुचित ॥

मायाकोव्स्की इस थोथी धारणा को नहीं मानता था, कि कवि को उत्प्रेरणा अन्दर से आती है, वाहर से प्रेरणा सच्चे कवि की चीज़ नहीं है। मायाकोव्स्की वड़े ज़ोर से इसका प्रतिवाद करता है। उसका कहना है—एक महान् युग की आवश्यकताएँ और समस्याएँ सच्चे कवि के दिल में उस से कहीं अधिक सवल प्रेरणा उत्पन्न कर सकती हैं, जैसी कि ऋतुओं के परिवर्तन या कवि के सफल-असफल प्रेम के परिणाम। उसने एक जगह कहा है—

तुम अन्य सुमन-गण को रहने,
दो, चयन-प्रतीक्षा में सन्तत।
मुझ को तो आर्थिक मेजों पर,
वस स्वेद वहाने दो शतशत ॥

कवि के लिए वह कहता है—

कवि चाहे यदि सदियों तक,
वह वना रहे यश-धारी।
कवि चाहे मानवता का,
संकेतक वनना भारी ॥

तो जगती के रस जिनसे,
वह पीता है निशि-वासर।

उन नलियों के रहने दो,
गद गड़े महों के भीतर॥

ले हँसवे और हथौड़े,
जग से श्रमजीवी आते।
कवि-नभ से उनके भुज में,
जाते, जब प्रेम न पाते॥

१९२८–२९ में मायाकोव्स्की ने "खटमल" और "स्नानागार" नामक दो नाटक लिखे। दोनों में सोवियत् जीवन के बचे खुचे विरोधियों की कशमकश को चित्रित किया गया है। मायाकोव्स्की की अन्तिम कविता 'गला फाड़ कर' १९३० में समाप्त हुई।

स्तालिन् के शब्दों में 'मायाकोव्स्की हमारे सोवियत्-युग का सर्वोत्तम तथा अत्यन्त प्रतिभाशाली कवि था और है।'

* * * * * *

सोवियत् लेखक और कवि अपनी कला के निर्माण में सारे संसार में सब से अधिक स्वतंत्र हैं। शर्त यह है कि वह वास्तविकता से बिलकुल नाता तोड़कर गगन-विहारी बनना न चाहें। वहाँ उनके सामने जीविका का प्रश्न नहीं है। अच्छे से अच्छे सरकारी कर्मचारी ही नहीं, बड़े बड़े विशेषज्ञों से भी अधिक उनकी मासिक आय है। अपनी कृति के निर्माण में जैसे एकान्त और शान्त निवास तथा जितने साधनों की आवश्यकता है, वे सब उनके लिए तैयार हैं। वह अपने काम के लिए सुविशाल सोवियत् प्रजातंत्र में काम्सूचत्का (कनाडा के पास) से लेनिन्ग्राद् तक ही चक्कर नहीं लगा सकता, बल्कि अगर दूसरे देशों की तरफ से रुकावट न पैदा की जाय, तो सारे संसार में घूम सकता है। उसकी कृति में यदि वास्तविक गुण है, तो उसे किसी की सिफ़ारिश की आवश्यकता नहीं और न प्रकाशकों के सामने गिड़गिड़ाने की जरूरत। सब से बड़ी बात यह है, कि भूत की रूढ़ियाँ

और धारणाएँ उसके रास्ते में वहाँ जरा भी रुकावट डालने की शक्ति नहीं रखतीं। बल्कि ऐसे स्वतंत्र विचारवाले लेखक के लिए तो वहाँ सब से अच्छा सहानुभूति-पूर्ण क्षेत्र है। सोवियत् साहित्य बिलकुल २० साल की चीज है। अभी वह अत्यन्त शैशव में है लेकिन इतने ही में उसने अपनी धाक संसार में जमा दी है। यदि नोबुल पुरस्कार के संचालकों को सोवियत् का नाम भड़काने वाला न होता, तो अब तक कितने सोवियत्-लेखक साहित्य के पुरस्कार पा चुके होते। गोर्की जैसा संसार का सर्वोत्तम लेखक जब नोबुल पुरस्कार के योग्य नहीं समझा गया, तो इसीसे समझ लीजिए कि नोबुल पुरस्कार का क्या मूल्य रह जाता है।

*** ***

सुलेमान् स्तालस्की—दागिस्तान का यह गायक ६८ वर्ष की उम्र में पिछले दिसम्बर के पहले सप्ताह में मर गया। इसकी जीवनी भी इस बात का उदाहरण है कि सोवियत्-शासन धूलि में पड़े हीरे को कितना जल्दी पहचानता है। सुलेमान का जन्म दागिस्तान के एक छोटे से गाँव अशग़-स्ताल में हुआ था। बचपन ही में उसका बाप मर गया। फिर वह गाँव के धनी किसानों की चरवाही कर के पेट पालता था। कुछ बड़ा होने पर उसने मजदूरी तथा गाँव के किसी आदमी की साईसी भी की। गाँव की मजदूरी इतनी कम थी कि उससे पेट चलना भी मुश्किल था। मज़दूरी की तलाश में वह दर्वेन्त पहुँचा और वहीं ४ वर्ष रहा। इसी वक्त उसे मालूम हुआ कि मध्य-एशिया में रेल बनाई जा रही है। वह वहाँ पहुँचा और समरक़न्द रेलवे पर मजदूरी करने लगा। वहाँ से लौट कर बाकू के तेल के कुओं पर उसे काम मिला। उसने कुछ रुपया भी कमाया। अब वह ३० वर्ष का हो चुका था; इसलिए शादी के लिए और देरी नहीं करना चाहता था। शादी कर गाँव में चला आया। उसने नया झोपड़ा बनाया। पैसे से नया झोपड़ा तो बना लिया, लेकिन रोजी का सवाल वैसा ही था। बीबी को लेकर फिर

माकू जाना नही चाहता था। इसलिए गाँव ही में दूसरो के खेतों पर मजदूरी करने लगा।

होश सँभालते वक़्त ही से सुलेमान को तुकबन्दी की आदत थी। जवानी की ठंडी और गर्म आँधी से हो कर जब वह गुजर रहा था, तो उसे इस शौक से आनन्द और सन्तोष मिलने लगा। मुल्ला, गाँव के पच, जमींदार, सरकारी नौकर, महाजन के खिलाफ अपनी भाषा में वह पद्य बनाता था। पद्य इतने रोचक होते थे, कि लोग ले उड़ते थे। एक मुँह से दूसरे मुँह में हो कर वह सर्वत्र फैल जाते थे। लेकिन दो-चार आदमियों को छोड़ कोई नही जानता था कि इन पद्यों का कर्त्ता कौन है। शादी किये १८ वर्ष गुज़र गये। सुलेमान ४८ साल का हो गया था। बच्चों और परिवार के बोझ ने उसकी कमर तोड़ दी थी। इसी बीच लाल क्रान्ति हो गई और क्या हुआ, यह सुलेमान के शब्दों ही में सुनिए—"बोल्शेविक भूकंप ने पुराने ससार को तर-ऊपर कर दिया। हमारे चिर-कालीन दुःख के पहाड़ ढह गये; और हमारी अन्धकारपूर्ण घाटी को अक्तूबर के महान् प्रकाश ने आलोकित कर दिया।"

सुलेमान के कहने के मुताबिक अब उसे नया जीवन ही नही मिला, बल्कि नई जवानी मिली। सोवियत्-सरकार ने हर जाति की उन्नति के लिए उसी की भाषा को साधन बनाया। अब गँवारू भाषाएँ भी साहित्यिक बन गईं। सुलेमान ने अक्षरज्ञान पाने का कभी सौभाग्य नही पाया। वह अपने पदों को कंठ ही में जोड़ता था। उसके पद अब दागिस्तानी भाषा में लिपिबद्ध हुए। पढनेवालों के दिल से दागिस्तानी के गँवारू भाषा होने का खयाल उठ चुका था। वह देखने लगे कि यह अनपढ़ कवि अपनी कविता में कैसे बहुमूल्य मोतियों को पिरो रहा है। अब सुलेमान की पुरानी कविताएँ, मुल्लों और ज़ारशाही के नौकरों के खिलाफ जो कही गई थी, उन्हें शिक्षित लोग भी बड़े आदर से पढ़ने लगे। सुलेमान ने अब क्रान्ति और नये युग पर अपनी सरस्वती को जगाना शुरू किया। कुछ ही दिनो में

उसकी कविता को दागिस्तान से वाहर जाना पड़ा। उसके कुछ पद्य रूसी भाषा में अनुवादित हो कर छपे। गोर्की ने देखा, वह दंग हो गया। उसने सुलेमान से परिचय प्राप्त किया। उसकी वहुत सी कविताओं को रूसी भाषा में अनुवादित करवाया। स्तालस्की (स्ताल् गाँव वाला) की कविताओं का वहुत वड़ा भाग सोवियत् की दूसरी भाषाओं में अनुवादित हो चुका है। सरकार की ओर से उसे पेंशन मिली थी। जनता की ओर से अपार सम्मान। उसे पार्लियामेंट का उम्मेदवार खड़ा किया गया था लेकिन निर्वाचन-दिन से चार पाँच दिन पहले उसकी मृत्यु हो गई।

स्तालस्की ऐसे निरक्षर प्रतिभाशाली कवि भारत में भी हैं और हुए होंगे। अपनी गाँव की भाषा में वह भी सजीव चुभती और ललित कविताएँ करते होंगे लेकिन इन प्रतिभाओं को आगे वढ़ने का मौक़ा कहाँ? स्तालस्की भी यदि ज़ारशाही के ही दागिस्तान में मर गया होता, या हिन्दुस्तान में पैदा हुआ होता, तो उसकी गति क्या होती?

११—सोवियत्-फ़िल्म

ललित-कला में रूस पिछली शताब्दी से ही यूरोप में अग्रणी माना जाने लगा है। यदि युरोप के बड़े बड़े गायक-गायिका, नर्तक-नर्तकी, वादक-वादिका के नाम की सूची ली जाय, तो उनमें रूसियों का नम्बर बहुत काफी आयेगा। लाल-क्रान्ति के बाद सोवियत्-भूमि ने अपने को इस उत्तराधिकार से वंचित नहीं किया, बल्कि आज इन बातों में वह संसार में प्रथम स्थान ग्रहण कर रहा है। सोवियत् फिल्म सभी दृष्टि से ससार में सर्वोत्तम है। सीन-सीनरी दिखलाने में तो वह कमाल करते हैं। वर्षा, सूर्योदय, सूर्यास्त, चाँदनी आदि का इतना सच्चा और इतना सुन्दर चित्रण संसार के किसी भी फिल्म में न मिलेगा। चाहे आप होलीउड को लीजिए या जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेज़ी फिल्मों को। सोवियत्-फिल्मों के सामने वह दरिद्र मालूम होंगे। यह जरूर है, कि अगर स्त्रैण सबंधो को लीजिए, तो होलीउड क्या हमारे हिन्दुस्तानी फिल्मों के सामने भी वह दरिद्र मालूम होंगे। चुम्बन तो वहाँ देखने में ही नहीं आयेगा। और आलिंगन आदि उतना ही, जितना स्वाभाविक समाज में होता है। जहाँ एक ओर सोवियत् फिल्मों में अश्लीलता नही आने दी जाती, वहाँ उनके प्लाट, दृश्य और अभिनय में बड़ी गभीरता रहती है। ऐतिहासिक फ़िल्मों में उस समय के ससार को बड़े प्रयत्न के साथ चित्रित किया जाता है। उस समय लोग कैसा कोट पहनते थे, कैसा पतलून और कैसी टोपी। कैसी उनके पास बन्दूक थी और किस तरह के आमोद-प्रमोद को वह पसन्द करते थे? समाज और धर्म के बारे में उनके कैसे खयाल थे? इन सभी बातों को सच्चाई के साथ फिल्म में लाने की कोशिश जितनी सोवियत्-फिल्म करते हैं, उतनी दुनिया के किसी फिल्म में नही देखी जाती। सोवियत्-फिल्मों में इस बात का भी खयाल रखा जाता है कि उनसे जहाँ

साधारण जनता का मनोरंजन हो, वहाँ उच्च साहित्यिक भी उसे पसन्द करें। "वाल्तिक् के डिपुटी" नामक फ़िल्म को फ़्रांस, अमेरिका में उसी तरह की सफलता हुई, जैसी सोवियत्-भूमि में। रोम्यो रोलाँ ने इसकी वड़ी तारीफ़ की थी। जहाँ वहाँ साधारण दर्शकों की टिकट के जँगलों पर भीड़ रहती थी, वहाँ संसार के लब्ध-प्रतिष्ठ वैज्ञा-निक भी इसे देखने के लिए लालायित थे। "महान् पीतर" सोवियत् का एक दूसरा फ़िल्म पिछले साल चल रहा था। यह सो-

महान् पीतर (फिल्म)
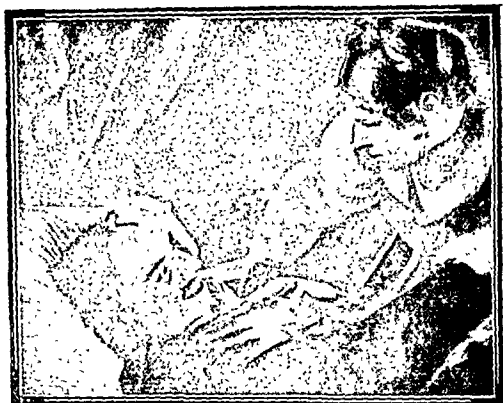
वियत् के सर्वोच्च उपन्यासकार अलेक्सेइ ताल्स्त्वा के उसी नाम के उपन्यास के आधार पर वना है। पीतर के समय के संसार और समाज को चित्रित करने में इस फ़िल्म ने कमाल किया है। कैसे समाज के भिन्न भिन्न अंग ज़मींदार, व्यापारी एक दूसरे से आगे वढ़ने के लिए प्रतिद्वन्द्विता कर रहे थे, इसका इसमें अच्छी तरह परिचय कराया गया है। इसमें पीतर को एक चतुर और कर्मठ शासक के रूप में दिखाया गया है। यह पीतर ही था जिसने पुराने ढाँचे में ढले रूस को यूरोप के विज्ञान और प्रगतिशील सभ्यता से प्रभावित होने का उद्योग किया। पीतर के इस काम में उसके सामन्त और धर्माधिकारी वाधक थे। फ़िल्म में वड़ी चतुरता से दिखलाया गया है कि कैसे सामन्तों और महन्तों ने पीतर के पुत्र को उसके वाप के

ख़िलाफ भड़काया। सौदागर पीतर के सुधारो को चाहते थे, क्योंकि उनके द्वारा व्यापार की वृद्धि के साथ साथ समाज में उन्हें सम्माननीय स्थान मिलने का अवसर था। ऐसे ऐतिहासिक व्यक्तियो के भाव-चित्रण और व्यक्तित्व-चित्रण में कलाकारो ने कमाल किया है।

अलेक्सेइ ताल्स्त्वा (लेखक) (पृ० २४२)

** **

१६ नवम्बर को हमने लेनिनग्राद् मे "पुगाचोफ्" फिल्म देखा। यह भी एक ऐतिहासिक फिल्म है। जमींदारो के अत्याचार और ज़ार के अन्याय के कारण रूस के किसान नरक की जिन्दगी बिता रहे थे। हज़ारो ने जान से हाथ धोया और हज़ारो जेलो में पड़े सड रहे थे। इन्ही कैदियो मे एक तरुण किसान पुगाचोफ् भी था। उसका हृष्ट पुष्ट वदन, उसकी निर्भीकता और साथियो के साथ दिली महानुभूति ने उसे कैदियो में सर्वप्रिय बना दिया था। एक दिन वह जेल से भाग निकलता है। किसानो को ज़ालिमों के खिलाफ उठ खड़े होने के लिए उत्तेजित करता है। हज़ारो किसान खुशी खुशी उसके दल मे शामिल होते है। ज़ार और उसके पिट्ठुओ की सेना पुगाचोफ् के दल के सामने मठी की तरह चूर चूर हो जाते हैं। पुगाचोफ् के अनुयायी उससे 'राजा' बनने का आग्रह करते हैं। वह राजा स्थापित किया जाता है। राजा होने के साथ अपनी पुरानी किसान बीवी के साथ उसी ठाट को क़ायम रखने में बाधा होती हैं। मुसाहिब राय देते है, पुरानी

पत्नी को तिलाक दे कर नई रानी लाने के लिए। पुगाचोफ़् दिल से नहीं चाहता। अन्त में एक पत्नी के रहते दूसरी से विवाह उसका समाज बर्दाश्त नहीं कर सकता। इसलिए दिल को पत्थर करके वह पत्नी को विदाई देता है। नई रानी और मुसाहिबों की इच्छा के विरुद्ध स्वयं फाटक तक अपनी पत्नी को पहुँचाने आता है। पुगाचोफ़् का एक सहायक तातार सरदार उसके राजदरबार में किसी ग़लतफ़हमी के कारण अपमानित होता है। जातीयता और धर्म (मुसलमान तथा ईसाई) का भेद भी उसमें दख़ल देता है। इस प्रकार एक ओर पुगाचोफ़् की शक्ति क्षीण होने लगती है; और दूसरी ओर ज़ार और उसके अनुयायियों की शक्ति बढ़ती है। पुगाचोफ़् फिर भी बहादुरी के साथ सामना करता है और गिरफ़्तार कर मास्को ले जाया जाता है। अन्त में जल्लाद के हाथ में कुठार और हाथ पैर बँधे शेर की तरह खड़े पुगाचोफ़् को दिखलाया जाता है। फ़िल्म का कथानक यही है। लेकिन हर एक चीज़ के पीछे जितने बड़े और सुंदर दृश्य हैं, उनको देखते ही बनता है। फ़िल्म के देखने से ही पुगाचोफ़् जिस संसार में घूमता था, उसका सजीव चित्र हमारे सामने आ जाता है। ज़ारीना कैथराइन उस वक़्त रूस की शासिका थी। उसके दरबार और मुसाहिबों की सजावट और वेश-भूषा ही का इस फ़िल्म से पूरी तरह परिचय नहीं मिलता, बल्कि यह भी मालूम होता है कि कैथराइन के सलाहकारों में कैसे कैसे डरपोक, वंचक और नीच पुरुष थे।

* * * * * *

वहीं हमने अर्मनी में क्रान्ति के संबंध का एक फ़िल्म भी देखा। सोवियत्-फ़िल्मों का उद्देश्य दर्शकों का सिर्फ़ मनोरंजन करना मात्र नहीं है। वह मनोरंजन के साथ जनता के ज्ञान की वृद्धि करते हैं। भारतीय फ़िल्म तो इस दृष्टि से देखने पर अत्यन्त निम्न कोटि के हैं। इनका सारा प्लाट कलकत्ता या बम्बई के शहर और आसपास की थोड़ी सी जगह पर ही

चित्रित होता है। बहुत कुछ तो वह अपने स्टुडियो के भीतर ही कर डालते हैं। इस अर्मनी फिल्म में वहाँ के हरेभरे पहाड़ों, घने जगलों, कल-कल-नादिनी नदियो का इतना सुन्दर चित्रण हुआ था कि उस एक चित्र से आदमी आर्मेनिया के प्राकृतिक भूगोल के बारे में बहुत सा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। क्रान्तिकारी सैनिक—जिनमे पुरुषों के अतिरिक्त स्त्रियाँ भी शामिल थीं—जिन समाजो से आये थे, जैसे उनके घर थे, जिस तरह का व्यवसाय करते थे, इन सब को भी बारीकी के साथ दिखाया गया था। करुणा, क्रोध, जहाँ जिस भाव की आवश्यकता थी वहाँ उसी को बड़ी सफलता के साथ अंकित किया गया था।

*** ***

हाल में लाल-क्रान्ति के सम्बन्ध में भी कुछ फिल्म बने है। इनमें 'अक्तूबर मे लेनिन्' बहुत ही सफल फ़िल्म है। लाल क्रान्ति पर पोथे के पोथे पढ जाने पर भी उस समय की अवस्था का जितना ज्ञान नही होगा, उतना इस फिल्म को दो घंटा देख लेने मे होता है। वास्तविकता लाने में कमाल किया गया है। लेनिन्, स्तालिन्, ज़ेर्ज़िन्स्की, करेन्स्की ऐतिहासिक व्यक्ति हैं, जिनमें कुछ अब भी जीवित है। फिल्म को देखने से मालूम होता है कि हम उन्ही व्यक्तियों को फिल्म मे देख रहे हैं। मोम, रबर और दूसरी चीजों से चेहरों की हूबहू नक़ल ही नही उतारी गई है, बल्कि उनके सिर पर हाथ रखने, दाढ़ी पर हाथ फेरने, सीटी बजाने आदि विशेष ढगो और बोलने के तकिया-कलाम को भी बारीकी के साथ लाया गया है। व्यक्तियो के चित्रण में जिस सूक्ष्मता से काम लिया गया है, स्थानो और प्राकृतिक दृश्यों के चित्रण में भी वही बात दिखलाई पड़ती है। लेनिन् कई साल के प्रवास के बाद वेष बदल कर चुपके से एक बोल्शेविक इजन-ड्राइवर के साथ शाम को पीतर्बुर्ग के फिनलैंड स्टेशन पर पहुँचता है। करेन्स्की-गवर्नमेंट—जो लेनिन् से बहुत ख़ौफ खाती है—को इसका पता लग गया। उसने पुलीस के

चढ़के बैठे। इंजन-ड्राइवर ट्रेन को प्लेटफ़ार्म से थोड़ा आगे बढ़ा देता है, और फिर भाप का एक घना बादल इंजन से छोड़ता है। उसी भाप की आड़ में वह लेनिन् को स्टेशन से बाहर निकाल ले जाता है। वहाँ मित्र लोग तैयार हैं। लेनिन् छद्म में भागा है और इंजन से आया उसका मित्र

अक्तूबर में लेनिन् (एक फ़िल्म)

बहुत लंबा चौड़ा है। उसी आदमी के साथ लेनिन् पहले ही से निश्चि

किये गये घर में जाता है। मकान के दरवाजे को अच्छी तरह देख कर बन्द किया जाता है। घर उसी साथी का है। वहाँ उसकी स्त्री रहती है। स्त्री ने स्वागत किया। लेनिन् ओवरकोट उतार कर झट से मेज पर बैठ जाता है। लेनिनवाद् के नक्शे को सामने रखता है। उसी समय स्तालिन्, जेर्जेन्स्की तथा दूसरे बोल्शेविक आ पहुँचते हैं। क्रान्ति का झंडा कैसे और किस वक्त उठाया जाय, कहाँ और कितने हमारे साथ सहयोग देनेवाले सैनिक हैं आदि आदि बातों पर विचार होता है। सब लोग चले जाते हैं। लेनिन् की नजर एक दूसरी मेज पर जाती है। वहाँ पर गृहपत्नी ने अपने होनेवाले बच्चे के लिए कुर्सी सी कर रखी है। लेनिन् का उस कुर्सी को उठाकर देखने तथा टिप्पणी करने का ढंग बड़ा ही मनोरंजक है। लेनिन् अपने लम्बे साथी से—जो कि कई दिन से नहीं सो सका था—सोने के लिए बड़ा आग्रह करता है। वह बहाना करके बाहर जाता है। बड़ी देर बाद लेनिन् खुद सोने के लिए उठता है। उसके लिए चारपाई तैयार की हुई है लेकिन वह फर्श पर कुछ पुस्तकों का तकिया बना ओवरकोट ओढ़ सो जाता है। उसका लम्बा रक्षक लेनिन् को सोया देख सन्तुष्ट होता है।

करेन्स्की की सरकार लेनिन् का काम तमाम करना चाहती है। लेनिन् को मारने के लिए एक मजदूर तैयार किया जाता है। उसे बहुत धनधान्य और प्रलोभन दे कर बड़े अफसर के पास लाया जाता है। मजदूर अभिवादन करके हाथ आगे बढ़ाता है। उसके मैले कुचैले कपड़े, असाधारण केश और कालिमा पूर्ण हाथ को देख कर अफसर अपना हाथ भी खींच रखता है। पैसे के लोभ के लिए मजदूरों के नेता लेनिन् को मार डालने के लिए वह तैयार है; लेकिन उसके साथ उस अफसर का यह व्यवहार हत्यारे के चेहरे पर अनेक भाव रेखाओं में अंकित हो जाता है। हत्यारा उस मकान को देख आता है, जिसमें लेनिन् ठहरा है। वहीं पर उसने एक हृदयाकर्षक आदमी को छोड़ रखा है। वह भयानक दृश्य

लेनिन् को पकड़ने चलती है। हत्यारा ड्राइवर के पास बैठता है। ड्राइवर को किसी तरह यह मालूम हो जाता है। आगे वढ़ता देख हत्यारा पहले ज़वान से, फिर हाथ से ड्राइवर को रोकना चाहता है। ड्राइवर एक ऐसा घूंसा रसीद करता है कि हत्यारा वेहोश हो जाता है। ड्राइवर मोटर को आगे दौड़ा किसी चीज़ से टकरा कर उसे वेकार कर देता है। सिपाही लोग उतर कर पैदल जाने के लिए मजवूर होते हैं; लेकिन पथप्रदर्शक हत्यारा वेहोश है।

उधर संकट के जीवन के चिरअभ्यासी लेनिन् ने मकान को छोड़ना चाहा। साथी कहता है—अभी रक्षा का पूरा प्रवन्ध नहीं हुआ है। तो भी लेनिन् जाने के लिए आग्रह करता है। रोकने पर वह छटपटाता है और रुक जाता है। निश्चय ही यदि मोटर ड्राइवर वाधक न हुआ होता, तो कभी की पुलिस मकान में दाख़िल हो गई होती। आखिर लेनिन् के गंजे सिर में वाल चिपका, दाढ़ी मूँछ को घायलों की सफ़ेद पट्टी में छिपा वाहर निकाला जाता है। दरवाज़े से वाहर जाकर पहले लम्वा आदमी ख़ुद झाँकता है और वहाँ हथियारवन्द आदमी को खड़ा देख वहीं पटक कर उसे ख़तम कर देता है। फिर कितने ही उपायों से वचा कर वह लेनिन् को एक जगह ले जाता है। वहाँ मज़दूरों के भीतर लेनिन् भी वैठता है। पेत्रोग्राद् के मज़-दूरों की वग़ावत का करेन्स्की की सरकार को सामना करना पड़ता है। वह उसको रोकना चाहती है। लेकिन असफल!

जिस मज़दूर की वग़ल में लेनिन् वैठा है, उसने भी लेनिन् का नाम सुना है। वह अपने पास के आदमी से पूछता है—'तुमने लेनिन् को देखा है, वह काले वालोंवाला है या भूरे वालोंवाला?' लेनिन् वड़ी संजीदगी से कहता है—मैंने नहीं देखा! 'कहाँ है' के जवाव में कहता है—शायद यहीं हो। वाल्तिक के नौसैनिक क्रान्ति का पक्ष लेते हैं। मज़दूर और मज़दू-रिनें अपने ऊलजलूल कपड़ों में वन्दूकें हाथ में लिये क्रान्ति-युद्ध आरम्भ करती हैं। युद्ध के भिन्न भिन्न मोर्चों को वड़ी ख़ूवी से दिखलाया गया है।

युद्ध के बीच में करेन्स्की के मंत्रिमंडल की बैठक होती है। लाल योद्धा ज़ार के शरद्-प्रासाद में दाखिल होते हैं। वहां किसी जगह सुन्दर पाषाणमूर्तियां हैं। किसी जगह किसी महान् कलाकार द्वारा चित्रित अद्भुत चित्रपट हैं। वेपरवाई से या जानबूझ कर इन चीजों को सिपाही नष्ट न कर दें, इसके लिए मजदूर सेना का अगुआ बहुत खयाल करता है। वह एक बार चिल्ला कर कहता है—'साथियो, यह सुन्दर कला की वस्तुएँ राष्ट्र की सम्पत्ति हैं। सोवियत् सरकार को इनकी जरूरत पड़ेगी। खयाल रखना, इनको नुकसान न पहुँचे।'

शरद्-प्रासाद पर बोल्शेविकों का अधिकार होता है। करेन्स्की का मंत्रिमंडल पकड़ा जाता है। विजय के उपलक्ष में प्रासाद के बड़े हाल में सभा होती है। लेनिन् मंच पर व्याख्यान देने आता है। वह मजदूर, जिसकी बगल में लेनिन् कुछ समय तक बैठा था, खुशी के मारे फूला नहीं समाता। साथियों से कहता है—अरे, लेनिन् तो मेरे पास बैठा था! मैंने उससे बात की थी। मैंने पूछा—लेनिन् कहां है; तो बोला, शायद यहीं हो।

'अक्तूबर में लेनिन्' सोवियत्-फिल्म-उद्योग की प्रगति को बहुत ऊँचा साबित करता है। कलाकारों ने जिन व्यक्तियों को अपने नाट्य का विषय बनाया है, उनके रूप और भाव के चित्रण में इसने अद्वितीय सफलता प्राप्त की है। जन-कलाकार श्चुकिन् ने अपने चित्रण द्वारा सिद्ध किया है कि जारशाही की मजबूत शक्ति को ध्वस्त करने के लिए लेनिन् के पास कितना सुदृढ़ दिल और दिमाग़ था।

* * * * * *

'बाल्तिक् के आदमी' एक दूसरा फिल्म है, जो कि क्रान्ति-युद्ध के एक अंग को दिखलाता है। यह फिल्म एक एक शहर में महीनों चलता रहा; और तब भी दर्शकों की भीड़ कम न होती थी। मैंने पहले दिन टिकट के लिए कोशिश की, तो देखा, पहले और दूसरे प्रदर्शन के सभी टिकट बँट चुके

हैं और तीसरे प्रदर्शन के लिए मेरे आगे एक लम्बी क़तार खड़ी है। टिकट मिलता, तो भी ११ बजे रात से ४ बजे तक फ़िल्म आरंभ की प्रतीक्षा में बैठने के लिए मैं तैयार नहीं था। दूसरे दिन किसी तरह टिकट मिला। दृश्य १९१९ में मित्र (अंग्रेज़-फ्रेंच)-शक्तियों की मदद से सफ़ेद रूसी (ज़मींदार और पूँजीपति) पेत्रोग्राद् पर कब्ज़ा करना चाहते थे। एक तरफ़ जेनरल यूदेनिच् की सेनाएँ पेत्रोग्राद् के पास पहुँचती हैं और दूसरी तरफ़ अंग्रेज़ी जहाज़। बाल्तिक् समुद्र में वे माइन डाल कर सोवियत् बेड़े को नष्ट करने की प्रतीक्षा में खड़े होते हैं। दो सोवियत् जंगी जहाज़ गवरील और आज़र्द, फ़िन्लैंड की खाड़ी (पेत्रोग्राद् की खाड़ी) की हिफ़ाज़त के लिए तैयार हैं। गवरील का कप्तान ज़ारशाही के वक़्त का एक अफ़सर है। वह लाल क्रान्ति को दिल से नहीं पसंद करता तो भी वह बाग़ी होना नहीं चाहता। इधर क्रान्ति के बाद सैनिकों में विनय की कमी और उच्छृंखलता अधिक बढ़ जाती है। सैनिक अपने पुराने कप्तान से बड़ी बेतकल्लुफ़ी से बातचीत ही नहीं करते, बल्कि मुंह पर मज़ाक़ उड़ाने से भी बाज़ नहीं आते। कप्तान को यह बहुत बुरा लगता है। सोवियत् कायदे के मुताबिक हर एक सेना या जंगी जहाज़ में सैनिक अफ़सर के अतिरिक्त एक राजनैतिक अफ़सर या कमीसर रहना भी ज़रूरी था। एक मज़दूर कमीसर हो कर आता है। सोवियत्-शासन के ऊपर काली घटाएँ छाई हुई ह। चारों ओर शत्रुओं की शक्ति अधिक दृढ़ हो चुकी है। कमीसर बड़ी हँसी-खुशी के साथ अपनी स्त्री और एकलौते लड़के से विदाई लेता है। जहाज़ में आकर सैनिकों को लज्जा और उच्चादर्श की ओर ध्यान दिला कर विनीत बनाने में सफल होता है। पुराने कप्तान को भी नई परिस्थिति के अनुकूल बनाने के लिए प्रस्तुत करता है। जहाज के भीतर भी दुश्मन के आदमी पहुँचे हुए हैं। वह उलटा सन्देश दे गवरील के सैनिकों को दुश्मनों के आधीन एक तट पर उतार देते हैं। शत्रु गोलाबारी शुरू करता है। सैनिक खुद खतरे में तो हैं ही, लेकिन वह चाहते हैं कि इस खतरे को उनका साथी जहाज़ जान जाय। वे एक दूत भेजते

है, लेकिन वर्षा की बूँदों की तरह बरसती गोलियों के भीतर वह चार क़दम आगे भी जीवित नही बचता। दूसरा तैयार होता है। तीसरा भी उसी हिम्मत और उत्साह से सन्देश ले जाने के लिए अपने को अर्पण करता है। आखिर गोलियों के भीतर से एक सन्देश-वाहक जहाज़ की ओर भागता है। सैनिक एक पहाड़ के डाँडे की आड से दुश्मन का मुकाबला कर रहे है। एक सिगरेट जला कर एक छोर मे दूसरे छोर तक सभी मुँहों में घडी की सुई की तरह कैसे खिसकता चला जा रहा है, और किस तरह वह सैनिक मृत्यु से निडर हो दुश्मनों की गोलियो की प्रतीक्षा कर रहे हैं; ये दृश्य बहुत ही भावपूर्ण है।

सन्देश-वाहक जहाज़ पर पहुँचता है। सैनिक भी कुछ हानि के बाद अपने जहाज पर लौटते हैं। एक अंग्रेज़ लडाई का जहाज हमला करता है। समुद्री लड़ाई का एक बहुत ही भीषण दृश्य दर्शकों के सामने आता है। तोपें आग उगल रही हैं। उनका धुआँ आसमान में छा रहा है। गोलों के आघात से नौकाएँ और जहाज के पटरे गज़ों ऊपर उड़कर समुद्र-तल पर गिर रहे हैं। अंग्रेजी जहाज़ डूबने लगता है। बचे-खुचे नौसैनिक पानी में कूद पड़ते हैं। सोवियत् जहाज़ जीवित अंग्रेज सैनिकों को बचाता है। अंग्रेज कप्तान गिरफ़्तार होता है। उसे सोवियत् के साधारण सैनिक और अफसर में कोई भेद नही दिखलाई देता। लाल सिपाहियों के समानता के व्यवहार से झुँझला उठता है। उसके रूखे बर्ताव को लाल सैनिक हँसी में उड़ा देते हैं।

दो खतरों से अभी तक वे बच चुके थे। लेकिन इसी समय दुश्मन का भेदिया भुलावा दे कर गब्रील को उस तरफ भेज देता है, जिस तरफ कि समुद्र में विस्फोटक बिछे हुये हैं। भेदिया मृत्यु से डर जाता है और भेद खोल देता है। लेकिन तब तक जहाज करीब पहुँच गया है। उसे खुद बचने की कोई गुंजायश नहीं, लेकिन वह अपने साथी जहाज आज़र्द को संकेत द्वारा खतरे की सूचना दे देता है। जहाज़ से टकरा कर विस्फोटक फूटता है और जहाज़

में भारी छेद हो जाता है। वचने के लिए छोटी नावें और कमर-पेटियों के सहारे लोग उतर रहे हैं। कमीसर और कप्तान उतरने से इनकार कर देते हैं। इसी वक़्त पता लगता है, कि कमीसर का एकलौता लड़का भी छिप-कर जहाज़ में चला आया है। कमीसर अपने लड़के को गोद में लेता है। अब तक उसके चेहरे पर हर्ष का चिह्न था। अपनी मृत्यु उसके लिए तृण के समान थी। उसको ख़ुशी इस वात की थी, कि उसने एक जहाज़ को बचा दिया; और दुश्मन के एक जहाज़ को वह पहले ही डुवा चुका है। लेकिन मृत्यु की घड़ी में अपने वच्चे को सामने पा कर वह विचलित हो जाता है। उसी समय नाव से कोई आदमी वच्चे को लेने के लिए आ जाता है। कमीसर प्यार कर के वच्चे को दे देता है। जहाज़ पर कमीसर और कप्तान खुशी खुशी मृत्यु का आलिंगन करने के लिए खड़े हो जाते हैं। इंच-इंच कर के जहाज़ पानी में धँसता जाता है और वह दोनों प्रसन्नमुख अनन्त जलराशि के भीतर निमग्न हो जाते हैं। कलाकारों ने भाव-चित्रण में ही सिद्धहस्तता नहीं दिखलाई है; वल्कि प्राकृतिक दृश्यों के दिखलाने में भी वैसी ही उदारता है जैसी कि सोवियत्-फ़िल्मों में देखी जाती है।

* * * * * *

छोटे छोटे लड़कों के लिए सोवियत् ने अलग फ़िल्म तैयार किये हैं। इनकी संख्या हज़ारों तक पहुँच गई है। शिक्षाप्रद कहानियों को ऐसे मनो-रंजक ढंग से बोलते चित्रपटों में उतारा गया है कि वालक देखते वक़्त लोट-पोट हो जाते हैं। पुश्किन की सोने की मछली और मछुएवाली कहानी मैंने देखी। उसमें मछुए का जाल गिराना, मछली का जाल में आना और उसकी प्रार्थना पर मछुए का छोड़ देना। फ़िर मछुए की औरत की फ़रमाइश पर मछुए का एक के ऊपर एक वरदान माँगना और धीरे धीरे झोपड़ी की जगह महल और मछुइन की जगह महारानी वनना आदि सभी घटनाओं को वड़े स्वाभाविकरूप में चित्रित किया गया है।

मछुइन-रानी के दरबार और उसकी लौंडियों का ऐसा खाका खींचा गया है कि लड़के भी अपनी हँसी को रोक नही सकते थे।

ऐसे ही कितने दूसरे पशु-पक्षियों की कहानियों के भी फिल्म तैयार किये गये है, जिनसे मनोरंजन ही नहीं, लड़को के ज्ञान की भी वृद्धि होती है।

इतिहास के ज्ञान के लिए बड़े सुन्दर प्रयोग हुये है। 'लेनिनग्राद्' के पहले दृश्य में १५ करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी की अवस्था दिखलाई गई है। कैसे लाल धधकती गोल धरती के ऊपर ताजी पपड़ी पड़ी। पपडियों के बीच में जहाँ-तहाँ लाल आग दिखलाई पड़ रही है। दहकता तरल पदार्थ बीच बीच से ऊपर फिंक जाता है; और वह धीरे धीरे ठंडा होने लगता है। उस दहकती हुई धरती की लौर दूर तक आसमान में फैल रही है। गर्म बादल उस पर बूंदें डालते है। उस नवीन ग्रह के चारों ओर आँधियाँ दौड़ रही है। पृथ्वी थर्राती है। धीरे धीरे ऊपर की लाली छिप जाती है। घन बादल भी जहाँ-तहाँ फट जाते ह और सूरजकी किरणें धरातल तक पहुँचने लगती है। पृथ्वी पर प्रथम दिन होता है। लेकिन अभी वहाँ किसी प्राणधारी का पता नहीं।

दूसरे दृश्य में भिन्न भिन्न भूगर्भी युगों को दिखलाया जाता है। कैसे पपड़ियो की सिकुड़न मे पानी जमा हुआ। कैसे धीरे धीरे उसकी भाप कम होने लगी और कैसे ताप-मान के गिरने के अनुसार केंचुए जैसे जानदरो और क्रमशः बड़े बड़े विशालकाय जीवधारियों का प्रादुर्भाव हुआ।

फिर कैसे उन जीवों की पैदायश हुई जो धरती और जल—दोनों में रहते है। उन वनस्पतियों को भी दिखलाया गया ह जो उस [illegible] में रह सकते थे। मछलियाँ जल-थल-वासिनी हुई। फिर वृक्ष भी [illegible] के सूखे किनारो पर उगने लगे और अपने भीतर से आक्सिजन [illegible] हवा में फैलाने लगे।

चौथे दृश्य में दिखाया गया है कि कैसे बड़ी बड़ी [illegible]

हुईं। पानी में झुंड की झुंड मछलियाँ और पनिहे साँप दौड़ने लगे। अभी तक चिड़ियाँ नहीं उत्पन्न हो पाई थीं और न फूलों का अब तक प्रादुर्भाव हुआ था। करोड़ों महाकाय वृक्ष टूट-फूट कर गिरने लगे और पानी के भीतर नरम काली राख जैसे कोयले का रूप धारण करने लगी और करोड़ों वर्षो वाद यही चल कर कोयले वने।

फिर ५ लाख वर्ष पहले का दृश्य सामने आया। हिमयुग सारे उत्तरी भूमंडल को विशाल हिमराशि से ढक कर सर्द करने लगा। आज जिस जगह पानी कभी नहीं जमता, वहाँ भी निरन्तर हज़ारों वर्षों तक वर्फ़ पड़ी रही। धीरे धीरे हिमयुग की कड़ाई दूर होने लगी। वर्फ़ पिघलने लगा और हिमानियाँ (ग्लेसियर) उत्तर की ओर हटने लगीं। अब नये वृक्ष जो आज भी सिवेरिया के तुन्द्रा में मिलते हैं, प्रकट होने लगे। वड़े वड़े वालोंवाले महागज (मम्मथ) और उत्तरी गैंड़े जहाँ-तहाँ घूमने लगे। उसके वाद हमारे वाप-दादा प्रस्तरयुग के मनुष्य अपने अनगढ़ पत्थर के हथियारों से रीछों को गुफ़ाओं से भगाने लगे। और उन गुफाओं को अपने घर के रूप में परिणत कर दिया।

फिर ७ हज़ार वर्ष पहले के लेनिन्ग्राद् का दृश्य दिखलाया गया। उस वक़्त नेवा नदी के मुँह पर इतने अधिक द्वीप न थे। नेवा उस वक़्त लदोगा झील और फ़िनलैंड की खाड़ी को मिलाती थी। आजकल जिसे वसिलियेफ़् द्वीप कहते हैं, वहाँ अजगर, मछली और भेड़िया के सिर की नक़्क़ाशीवाले कितने ही वजरे आते थे। ये यूनानी व्यापारियों के पोत थे, जो सुदूर काला सागर से आते थे। उन्हीं पर स्कन्दनेविया के नाविक भी देखे जाते हैं। यही वे नाविक थे, जिन्होंने कि नार्वे से यूनान तक के रास्ते का पता लगाया।

इसके वाद आधुनिक समय के भौगोलिक और सामाजिक परिवर्तनों को दिखलाया गया है।

समाचार देनेवाले वोलते फ़िल्म कितनी जल्द सोवियत् में तैयार कर

दिए जाते हैं, यह इसी से मालूम होगा कि १२ जनवरी को जो महासोवियत् (पार्लियामेंट) का प्रथम अधिवेशन हुआ, उसका फिल्म तीसरे दिन (१४ जनवरी को) दिखलाया जा रहा था। पूँजीवादी देशों में विज्ञान के हर एक आविष्कार को काम में लाने में सब से बड़ा बाधक होता है, नफे का सवाल। पूँजीवादी पैसा तब लगायेगा जब वह देखेगा कि एक का सवा होगा। मनोरंजन, ज्ञानवृद्धि, कला की उन्नति उसके सामने कोई चीज नहीं है। उसके सामने सिर्फ एक सवाल है नफा! पूँजीवादी सरकारें आँख मूँद कर रुपया ऐसे फिल्मों पर सिर्फ इसलिए नहीं खर्च कर सकतीं कि उनसे ज्ञान और कला का प्रसार होगा। वह जानती हैं कि ऐसे फिल्मों पर खर्च करने के लिए रुपया नये टैक्स के लगाने से मिलेगा। अधिकांश जनता गरीबी के कारण ऐसे टैक्स के बोझ को सह नहीं सकती और पूँजीपति—जिनके पास कि रुपया है—पर टैक्स अधिक बढ़ाया नहीं जा सकता; क्योंकि गवर्नमेंट तो उन्हीं के हाथ में है। सेना में बड़े बड़े जेनरल उन्हीं के बेटे-पोते हैं। सोवियत्-भूमि की परिस्थिति ही दूसरी है। वहाँ देखना होता है क्या फिल्म जिस कच्चे माल से बनता है, वह काफी परिमाण में हमारे यहाँ मौजूद है? क्या वह यन्त्र है, जिनकी फिल्म बनाने और दिखाने के वक्त जरूरत होगी. उनके बनाने में काम आनेवाले कच्चे माल—लोहा, ताँबा, अल्मोनियम, निकल आदि—हमारे यहाँ मौजूद हैं? क्या हमारे यहाँ ऐसे यन्त्र-विद्याविशारद मौजूद हैं, जो इन कच्चे मालों को फिल्म और यन्त्र के रूप में परिणत कर दें। क्या हमारे यहाँ ऐसे कलाकार पर्याप्त संख्या में मौजूद हैं जो फिल्म में आये पात्रों के चरित्र को अच्छी तरह से चित्रित कर सकें? या ऐसे कारीगर हैं, जो ऐतिहासिक, प्रागैतिहासिक और वर्तमान जगत् के प्राणियों को ऐसे रूप में चित्रित करें कि देखनेवालों को वे वास्तविक मालूम पड़ें? यह स्पष्ट ही है कि जहाँ तक कच्चे माल का सवाल है, सोवियत् प्रजातंत्र उनके लिए सब से अधिक धनी देश है। यन्त्र-विद्या-विशारद इंजीनियर और मेकेनिक उनके यहाँ दिन पर दिन बढ़ते

जा रहे हैं। हर एक आदमी को नया काम मिलने से बेकारी की समस्या हल होती है। काम करनेवाले आदमी की आवश्यकताएँ कैसे पूर्ण होंगी, इसका जवाब सोवियत्-सरकार के पंचायती खेत और कपड़ा आदि पैदा करनेवाले कारखाने देंगे। सारांश यह कि सोवियत्-सरकार के सामने किसी उपयोगी काम में हाथ डालते वक़्त टैक्स बढ़ाने की भयंकरता नही आती। यही वजह है कि सोवियत्-सरकार इन उपयोगी फ़िल्मों पर इतना श्रम और सामग्री लगाने में समर्थ है। सोवियत् में फ़िल्म उद्योग की कितनी तेजी से तरक्की हुई है, यह इसीसे मालूम होगा कि १९३२ ई० में जहाँ दो करोड़ ५६ लाख ७९ हज़ार मीतर फ़िल्म बना था, वहाँ १९३५ ई० में ८ करोड़ ६३ लाख ८५ हज़ार मीतर* फ़िल्म तैयार हुआ।

---

* १ मीतर=४० इंच। अर्थात् ३ फ़ीट ४ इंच लंबा।

अभिनय को देखना कौन पसन्द करेगा? पूँजीवादी देशों में बोलते फ़िल्मों ने लाखों मध्यम और निम्न श्रेणी के कलाकरों को वेकार कर दिया। लन्दन, न्यूयार्क जैसे शहरों में जहाँ पहले सैकड़ों नाट्यशालाएँ बराबर आवाद रहती थीं, अव दो-चार ही रह गईं। और यह उन्हीं धनियों के प्रताप से जिनके पास इतना पैसा है कि वह उसे आँख मूँद कर लुटा सकते हैं।

सोवियत्-प्रजातंत्र में फ़िल्म के द्वारा नाट्यशाला को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा। जिन लेनिन्ग्राद् और मास्को शहरों में पहले पचीसों नाट्यागार थे, वहाँ अव उनकी संख्या पचासों हो गई है। यही नहीं, जहाँ पहले वालकों के लिए अलग नाटकों का प्रवन्ध नहीं था, वहाँ अव उनके लिए अलग कितनी ही शिशु-नाट्य-शालाएँ स्थापित हुई हैं। पहले सभी नाट्य-शालाएँ सोवियत् प्रजातंत्र के रूस प्रदेश में और उसमें भी मास्को और पेत्रोग्राद् जैसे दो, तीन शहरों ही में थीं। अव नाट्यशालाएँ सभी वड़े वड़े शहरों में और एक से अधिक संख्या में स्थापित हो गईं। ताजिकिस्तान, उज़्वेकिस्तान, तुर्कमानिस्तान, किर्गिज़स्तान, कज़ाकस्तान, याकूतिया, तातार आदि ऐसे प्रजातंत्रों में भी, जहाँ पहले न कोई रंगशाला थी, और न कोई नाटक-साहित्य। क्रान्ति के वाद इन पिछले २० वर्षों में इन जातीय प्रजातंत्रों की रंगशालाएँ इतनी समुन्नत हुई हैं कि समय समय पर होनेवाले अखिल-सोवियत्-संघ नाटक-सम्मेलनों में इन्होंने प्रशंसा-पत्र पाया है। और ताजिकिस्तान का रंगमंच तो सारे सोवियत् प्रजातंत्र में ऊँचा माना जाने लगा है। १६१८ से पहले ताजिक भाषा—जो फ़ारसी भाषा की एक वोली है—में कोई नाटक लिखा न गया था। जिस नौजवान ने अपनी भाषा में पहले पहल नाटक लिखा, वह एक धर्मान्ध क़ातिल की छुरी का शिकार हुआ। जो लड़की पहले पहल रंगमंच पर आई, उसकी खवर जव गाँव में उसके पिता को मालूम हुई, तो वह क्रोध से पागल हो गया। उसने कहा—"एक मुसलमान की लड़की—जिसकी अनगिनत पीढ़ियों ने किसी अजनवी के सामने मुँह तक न खोला—लोगों के सामने इस तरह निर्लज्ज हो मुँह खोलकर

नाचे। उसने खुद रगमच पर कूदकर लड़की के सीने में उस वक्त छुरा भोंक दिया, जब कि वह एक नाटक में अभिनय कर रही थी। इन घटनाओं से पता लगेगा, कि सोवियत्-प्रजातंत्र के कुछ भागों में नाट्यकला को कितने और कैसे भयंकर रास्ते पार करने पड़े।

आज सोवियत् के नाट्यकलाकार बहुत ही सम्माननीय स्त्री-पुरुष हैं। मास्क्विन मास्को का सब से बड़ा अभिनेता सारे सोवियत् जगत् में प्रसिद्ध ही नहीं है; बल्कि वह अब की बार सोवियत् पार्लियामेंट का मेंबर चुना गया है। उसी की भाँति एक दो और अभिनेता और अभिनेत्रियाँ पार्लियामेंट की सदस्य चुनी गई हैं। पूँजीवादी देशों में अच्छे अभिनेताओं की कुछ क़दर जरूर है, लेकिन वह सिर्फ अधिक मूल्य चुकाने के स्वरूप में ही। और यदि स्त्री हैं, तो उसे तो रूप की दुकान और खुला सौदा समझा जाता है। सोवियत् के नट और नटी के सामने क्रय-विक्रय का सवाल नहीं है। वह राजा, राजकुमार और कुछ रईसों के लिए अपनी कला को नहीं प्रदर्शित कर रहा है। वह मनोरंजन करता है, अपने अपार जन-समूह का, जो ऐसे अभिनेता को हमेशा श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखता है।

सिगान्स्की (रोमनी या जिप्सी), पोलिश्, यहूदी तथा दूसरी अत्यन्त अल्पसंख्यक जातियों के भी अपनी अपनी भाषा में अथवा अपनी अपनी कला के अनुसार अलग अलग नाट्य-मंच हैं। सोवियत् नाट्य-मंच दुनिया में सब से अधिक उन्नत है, इसे दुनिया भर के नाट्य-तत्त्वविद् और नाट्य-कला-प्रेमी मानते हैं। एक और भी बात सोवियत् नाट्य-कला के विषय में स्मरणीय है। वहाँ के नाट्यकलाकार मास्को, लेनिन्ग्राद् जैसे कुछ बड़े बड़े शहरों की जनता के मनोरंजन में ही अपना सारा समय नहीं गुज़ारते। गर्मियों में वे इन बड़े बड़े शहरों में रहते हैं और जाड़ों के ४–५ महीने कोल्-खोज़ों और दीहात में घूमते हैं। इस प्रकार साधारण ग्रामीण जनता को भी बड़े बड़े कलाकारों का अभिनय देखने का मौका मिलता है। स्वरद

रखिए, इन कलाकारों में कितने ऐसे स्त्री-पुरुष हैं, जो अपने अभिनय, नृत्य और संगीत के लिए सारी दुनिया में ख्याति पा चुके हैं। ये लोग मोटरों पर अपने पर्दे, वाद्ययन्त्र, आदि के साथ रेलवे स्टेशनों से दूर दूर के गाँवों तक में पहुँचते हैं। यह इस बात का द्योतक है, कि सोवियत्-राष्ट्र उपभोग-सामग्री की भाँति अपने ज्ञान-विज्ञान और ललित-कला को भी सभी नागरिकों के उपभोग की वस्तु बनाना चाहता है।

***   ***

सोवियत् फ़िल्मों का टिकट दो रूबल से तीन रूबल तक है और नाटकों के टिकट १५, २०, २५ रूबल के होते हैं। लेनिन्ग्राद् में राष्ट्रीय ओपेरा-और-त्रैलेट-थियेटर में मैं एक बैलेट देखने गया। समय से सिर्फ ३ मिनट पीछे मैं पहुँचा था। मेरा टिकट २० रूबल का था। रेलवे टिकट की तरह सिनेमा और नाटक के टिकटों पर भी कुर्सी का नम्बर लिखा रहता है। मेरी कुर्सी रंगमंच के सामने के अर्द्धवृत्ताकार चबूतरे पर थी। मैं ३ मिनट पीछे पहुँचा था। इसलिए उधर का रास्ता रुक गया था। मजबूरन् मुझे चबूतरे के तीन ओर अर्द्धवृत्ताकार पाँच तल्ले की बैठकों में से सब से ऊपरवाली पर जाना पड़ा। खैरियत यह हुई थी, कि मैंने अपने टिकट का प्रबन्ध इन्तुरिस्त द्वारा करवाया था; नहीं तो टिकट खरीदनेवालों की इतनी भीड़ थी कि उसका मिलना असम्भव सा था। पहले दृश्य के बाद अवकाश जब हुआ तो मुझे अपनी कुर्सी पर जाने का मौक़ा मिला। नाट्यशाला के निर्माण में बड़ी सुरुचि का प्रदर्शन किया गया है। यह नाट्यगृह १८४० ई० के करीब बना था। रंगमंच के सामने कुछ नीची जगह में ५० के करीब वादक अपने भिन्न भिन्न प्रकार के वाद्यों को लेकर बैठते हैं। उसके बाद वह चढ़ा-उतार अर्द्धवृत्ताकार चबूतरा है। पहले और दूसरे दर्जे के दर्शकों की कुर्सियाँ हैं। तीसरे दर्जे के लिए अर्द्धवृत्ताकार पाँच तल्ले की बैठकें हैं। दो हजार से ऊपर आदमी इस नाट्यशाला में बैठ सकते हैं। रंगमंच के सामने सुन-

हले रेशमी पर्दे और नाना प्रकार के वेल-बूटों से अलकृत मच है जिसपर किसी समय ज़ार और ज़ारीना बैठकर अभिनय देखा करते थे। आजकल कोई भी ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा वहाँ पहुँच सकता है। मैंने समझा था कि नाटकों का जब इतना अधिक टिकट है, तो वहाँ दर्शकों की कमी ज़रूर होगी। लेकिन जब कभी मैं किसी नाट्यशाला में गया, हमेशा ही कुर्सियों को भरी पाया।

बैलेट् का नाम था—शमराल्दा। यह कह चुका हूँ कि बैलेट् कहते है, मूक-नाटक को। इसमें नृत्य होता है, लेकिन जिह्वा का काम सकेत और इशारे से लिया जाता है और इसी सकेत और इशारे मे अभिनेता का कमाल देखा जाता है। किसी तरुण को प्राण-दड की आज्ञा होती है। वहाँ एक रोमनी (जिप्सी या नट) का गिरोह पहुँचा हुआ है। एक रोमनी तरुणी अपने नृत्य से सारी राजसभा को मुग्ध कर लेती है। राजा प्रसन्न होकर वर देता है। तरुणी उसी तरुण को माँग लेती है। एक महन्त रोमनी युवती के असाधारण सौन्दर्य और अनुपम कलानैपुण्य पर मुग्ध हो जाता है। तरुणी उसे पसन्द नही करती, वह उसी नये पति और रोमनियों के गिरोह के साथ एक दूसरे राजदरबार मे पहुँचती है। एक तरफ राजा और रानी सिंहासन पर बैठे है। उनके सामने राजकन्या अपने पति के साथ बैठी है। राजा के दाहिने अर्द्धवृत्त मे दरबारी लोग बैठे है। अनेक रोमनी तरुणियाँ एक हाथ मे छोटी झालोंवाले चग को लाल-पीले लटकते रूमालों से सजा कर बजाती अपना जातीय नृत्य दिखलाती है। रोमनी तरुणी अपने नृत्य मे कमाल करती है। हर एक तरह के कठिन से कठिन नृत्यो को दिखलाते दिखलाते थक जाती है, लेकिन उस सारी सभा में एक भी गुण-ग्राहक नही, कोई एक पैसा भी इनाम नही देता। सुन्दर तरुण फिर अपनी पत्नी को खडा कर नाचने के लिए बाध्य करता है। शायद अब की बार किसी का दिल पसीज जाय और रोमनियो को आज उपवास न करना पड़े। लेकिन कोई फल नही। इस प्रकार तीसरी

चौथी बार भी। थक कर मरणासन्न हो जाने पर भी तरुणी अपना नृत्य दिखलाती है। इसी बीच सभा बर्खास्त होती है। राजा-रानी एक तरफ़ जाते हैं। दरबारी खिसकने लगते हैं। राजकन्या कुछ आगे बढ़ती है, उस समय उसका पति ठमक जाता है। वह रोमनी तरुणी को अपनी चद्दर इनाम देता है और अपना प्रेम प्रकट करता है। दूसरे दृश्य में राजकुमार रोमनी तरुणी को लेकर कहीं दूर जाकर एक मठ में पहुँचता है। वहाँ धर्मशाला में ठहरता है। रोमनी तरुणी को नहीं मालूम था कि यह उसी महन्त का मठ है, जिसने उससे पहले छेड़खानी की थी। महन्त ने साथी तरुण को मार डाला और तरुणी से प्रणय-भिक्षा माँगी। लेकिन उसने इनकार कर दिया। इसपर राजकुमार के मारने का दोष रोमनी तरुणी पर लगाया गया। महन्त और दूसरे कितने ही भलेमानुस साक्षी बने। तरुणी को प्राण-दंड की सज़ा हुई।

वैलेट् की विशेषता है संकेत से अभिप्राय प्रकट करना। इसमें कलाकारों को कितनी सफलता हुई, इसके लिए मैं ही प्रमाण हूँ। बिना किसी के बतलाये भी कथा के भाव को मैं ख़ुद समझ गया था। वाचेस्लोवा ने प्रधान पात्र रोमनी तरुणी का पार्ट लिया था और नृत्य में उसने ग़ज़ब किया था। सोवियत् कलाकारों के देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि वहाँ कलाकार के लिए सुन्दर होना आवश्यक चीज़ नहीं। कई अभिनेताओं और अभिनेत्रियों को तो सुन्दर क्या कुरूप भी कहा जा सकता है, लेकिन उससे उनकी सफलता में कोई बाधा नहीं होती। वाचेस्लोवा कुरूप तो नहीं थी, लेकिन उसकी प्रशंसा उसके नृत्य और अभिनय में थी। दूदीनिकाया और उलूनोवा दूसरी अभिनेत्रियाँ थीं, जिन्होंने दर्शकों को अधिक प्रसन्न किया। नृत्य और भावव्यंजन के अतिरिक्त दूसरी विशेपता थी पर्दे पर दृश्यों के अंकन की। जो चीज़ भी रंग-मंच पर चित्रित की गई थी, ऐसे ढंग से उसमें दृष्टिभ्रम उत्पन्न किया गया था, कि सभी चीज़ें वास्तविक ही नहीं मालूम होती थीं, बल्कि दर्शक को आश्चर्य होने लगता था

कि इतने छोटे से रंगमंच पर वह कैसे नीलो हरा आसमान, दुर्ग और प्रासाद खिड़कियों और दरवाज़ों के साथ देख रहा है।

* * * *

ओपेरा पद्यमय नाटक को कहते हैं। बैलेट् रूस की अपनी विशेषता है। उसका उद्भव और विकास रूस में हुआ है। ओपेरा रूस की कोई खास चीज़ नहीं है। यह यूरोप के अन्य देशों में भी खूब प्रचलित है। लेकिन कला के लिए जितना उत्साह, जितना स्वच्छन्द वातावरण सोवियत्-प्रजातंत्र में है, उतना और कहीं नहीं है। इसलिए इन पद्यमय नाटकों ने यहाँ बड़ी तरक्की की है। यहाँ मैं १९३७ के ओपेरा पोतेमूकिन् का उदाहरण देता हूँ। १९०५ ई० में पहली बार रूस की दलित जनता ने ज़ार के खिलाफ़ आवाज़ उठाई थी। जुल्म के मारे पिसी रहने पर भी उसने अब तक न ज़बान खोली थी, न हाथ उठाया था। रूस-जापान के युद्ध में रूस की हार से जनता के दिल से ज़ार की धाक कुछ कम हो चुकी थी; और अब अपने ऊपर होते हुए अत्याचारों को वह मूक रहकर सहना नहीं चाहती थी। जहाँ उस वक्त पीतरबुर्ग में मज़दूरों ने खुले तौर से अपना विरोध प्रदर्शित किया, और ज़ारशाही ने बहुत निर्दयतापूर्वक तलवार के ज़ोर से उसे दबा दिया; वहाँ कालासागर के नौसैनिकों ने भी खुलेआम विद्रोह किया। यह पहला अवसर था, जब कि युद्धपोत ने क्रान्तिकारियों का साथ दिया हो। पोतेमूकिन् उस जंगी जहाज़ का नाम था, जिसके नाविकों ने विद्रोह का झंडा ऊँचा किया। उस समय सारे साम्राज्य में एक ज़बर्दस्त हलचल थी। किसानों ने ज़मींदारों की कचहरियाँ और हवेलियाँ जला दी थीं। कारखाने और रेलवे के मज़दूरों ने हड़ताल कर दी थी। "पोतेमूकिन्" के कर्त्ता *चीश्को* (उकइन् जातीय) ने अपनी रचना के बारे में लिखा है—"इस नाटक के निर्माण में हमारा मतलब सिर्फ़ यही नहीं है कि उस युद्ध-पोत के नाविकों की वीरता—जो कि लाल क्रान्ति के पहले के रिहर्सल के

अद्भुत पृष्ठों में से एक थी—को पुनर्जागृत किया जाय, वल्कि उन घटनाओं को आज की वर्तमान घटनाओं से जोड़ना भी हमारा काम था। इस तरह का जीवित संवंध मौजूद था। हमने प्रयत्न किया कि उस संवंध को पूर्णरूप में दर्शकों के सामने लाया जाय।'

क्रान्तिकारी नाविकों का चित्रण ओपेरा का सव से अधिक सफल भाग है। मत्युशेंको क्रान्ति का प्रेमी एक ज़बर्दस्त वक्ता और साहसी है। वह जानता है कि कैसे उत्साह को वढ़ाया जा सकता है। वकुलेंचुक् एक जवर्दस्त मौक़ाशनाश नेता है। उसमें जहाँ एक वीर योद्धा और पटु संगठनकर्त्ता के गुण हैं, वहाँ वह मनुष्य-स्वभाव से भी पूरा परिचित है। नाटक में इस क्रान्तिकारी का चित्र वड़ी योग्यता से चित्रित किया गया है। नौसैनिक कचूरा को वड़ी कुशलता के साथ एक विश्वासपात्र खुले दिलवाले साथी के रूप में नाटककार ने चित्रित किया है। वकुलेंचुक् की मित्र ग्रुन्या युवती को वड़े मनोहर रूप और औचित्य के साथ उपस्थित किया गया है। क्रान्तिविरोधी कप्तान और उसके साथियों को स्वाभाविकता के साथ चित्रण करते हुए भी इस प्रकार उपस्थित क़िया गया है कि दर्शकों की नज़र में वह गिर जाते हैं। घटनाएँ दर्शक के दिल में असफल क्रान्तिकारियों के दिल में सहानुभूति और सहयोगिता का भाव पैदा कर देती हैं। अपने वीर क्रान्तिकारी वकुलेंचुक् के मरने पर जव ओदीसा के मज़दूर उससे सहानुभूति प्रकट करते हैं।—'साथियो, मुझे रोने के लिए मत समझाओ। क्या मैं नहीं जानती कि किसी को रोना नहीं चाहिए? यहाँ आँसू की एक वूँद न होनी चाहिए।' ग्रुन्या इन शब्दों में रोते हुए गाती है। उसकी प्रतिध्वनि और शब्दों में अन्तर्हित भाव दर्शक के अन्तस्तल तक पहुँच जाता है। वह उनमें प्राण और शक्ति का संचार करती है। लोग क्रान्ति के नेता की अर्थी वड़ी सजधज के साथ निकालते हैं। वे गाते चलते हैं—"खूनी लड़ाई में निहत अपने सिपाहियों को हम दफ़नाने जा रहे हैं।" इन शब्दों को सुन कर एक वड़ा-जनसन्दोह जमा होता है और

वह जहाँ एक ओर जनता की सहानुभूति शहीदों की ओर प्रदर्शित करता है, वहाँ शासकों के प्रति घोर विरोध भी प्रकट करता है। कोई गाता है—'हर एक सब के लिए और सब हर एक के लिए।'

पोतेम्किन् के सैनिकों में अशिक्षित असस्कृत कहे जानेवाले मछुए ही अधिक हैं। नाटक में उनकी बात, उनके गीत और उनके नृत्य अत्यन्त स्वाभाविक हैं।

पात्रों के चित्रण करने में जन-कलाकार पिरोगोफ् क्रान्तिकारी नायक वकुलेंचुक् का पार्ट बडे सुन्दर रूप से अदा करता है। नाट्यकार के शब्दों में कैसे एक सिद्धहस्त अभिनेता अपने स्वर से नवजीवन फूँक सकता है, कैसे वह अपनी भाव-भगी से नाट्यकार के अभिप्राय को कई गुना अधिक करके अभिव्यक्त कर सकता है, इसके लिए पिरोगोफ् का अभिनय एक अच्छा उदाहरण है। दविदोवा ने ग्रुन्या का पार्ट लिया है। प्रेमी की मृत्यु के समय जिस तरह ग्रुन्या के मनोभावों को सयत और सबल से व्यक्त किया है, वह बड़े मार्के की बात है।

पर्दों की चित्रकारी में तो कमाल किया गया है। भारी युद्धपोत के दृश्य को रगमच पर लाना असभव सी बात थी। लेकिन चित्रकार ने इसमें बडी सफलता प्राप्त की है। छोटी सी रगभूमि में पोत, उसकी तोपें और उसके सैनिकों को उसने ऐसे चित्रित किया है, कि देखने से मालूम नहीं होता कि कितने पात्र यहाँ सजीव है और कितने चित्रमय ?

***   ***

"राष्ट्रीय-ऑपेरा-और-बैलेट्-थियेटर" में हम एक दिन ओपेरा देखने गये। ओपेरा का नाम था 'माजेपा'। कथानक था, एक छोटे सरदार की कन्या एक तरुण को चाहती है। पिता भी उसी को पसन्द करता है, लेकिन एक शक्तिशाली सरदार माजेपा मरिया के सौन्दर्य पर मुग्ध है। पिता के आना-

कानी करने पर वह उसे जबर्दस्ती पकड़ले जाता है। पिता एक क़िले में जंजीर से बाँध कर बन्द कर दिया जाता है। माज़ेपा मरिया के साथ जबर्दस्ती विवाह करता है। मरिया के पिता को अब भी बड़ी रुकावट समझ उसे मार डालता है। वध्य-स्थान पर ले जाने के समय का दृश्य अत्यन्त करुणापूर्ण है।

मरिया भाग जाती है। पिता के मकान का बहुत सा हिस्सा गिर चुका है। लेकिन उसी टूटे-फूटे खंडहर में वह आधी पगली की तरह रहती है। कितने ही दिनों बाद एक अँधेरी रात में उसका प्रेमी वह तरुण खोजते हुए उसी खंडहर पर पहुँचता है। उसकी भग्नावस्था को देख कर वह शोकोद्‌गार प्रकट करता है। इसी वक़्त मरिया की खबर पाकर माज़ेपा उसी खंडहर में आता है। उसको देखकर युवक की आँखों में खून चढ़ आता है। वह जानता है—इस महल के स्वामी का प्राण लेने और उसे खंडहर के रूप में परिणत करने में इसी दुष्ट का हाथ है। वह द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारता है। लेकिन माज़ेपा उसके लिए तैयार नहीं होता। युवक तलवार लेकर दौड़ता है और माज़ेपा के तमंचे की गोली का शिकार होता है। पगली मरिया खंडहर के एक कोने से बाहर आती है। पहले उसकी नजर माज़ेपा पर जाती है। माज़ेपा प्रेम प्रदर्शित करता है और अनुनय-विनय करके घर लेजाना चाहता है। मरिया का जवाब ऐसा होता है, जैसा कि कोई अर्द्ध-विक्षिप्त व्यक्ति दे सकता है। वह स्वयं हर्ष और विषाद दोनों अवस्थाओं को पार कर चुकी है। लेकिन उसकी दशा को देख कर दर्शक उसकी सहानुभूति में विकल हो उठता है। मरिया के बालों में तिनके पड़े हुए हैं। उसके कपड़े जहाँ-तहाँ फट चुके हैं। उसकी आँखों के नीचे काले दाग़ दिखाई पड़ते हैं। माज़ेपा से बात करते करते ज़मीन पर पड़ी किसी चीज़ को वह देखती है। फिर आँखें फाड़कर ग़ौर से देखती है और अन्त में अपने तरुण प्रेमी को पहचानती है। माज़ेपा को धिक्कारती है और तरुण के पास बैठ जाती है।

पर्दे पर हर एक दृश्य को दिखाने में चित्रकार ने गजब ढाया है। गाँव और सरदार की हवेली मानों मीलों तक फैली हुई है। मालूम होता था

कि सैकड़ो आदमी (एक बार १५० आदमी तक गिने गये) एक पहाड़ी के पीछे से सामने आते जा रहे हैं। रात के वक़्त शून्य, निश्शब्द, गलियो को बड़ी खूबी से दिखलाया गया है। खडहर के दिखलाने में कितना भाग पर्दे का है और कितना भाग ईंटे-चूने द्वारा रग मच पर बनाया गया है, इस का पता नही लगता था। अन्धकार और झुलमुल प्रकाश को इतनी बारीकी से सम्मिश्रित किया गया था, कि बनावटी न होकर वह वास्तविक रात में एक गाँव का दृश्य मालूम होता था।

"माज़ेपा" एक खास समय और एक खास प्रदेश में घटित घटना के आधार पर रचा गया है; और उसके हर एक दृश्य पर उस काल और प्रदेश की स्पष्ट छाप दीख पडती है। माज़ेपा पोल-जातीय एक बड़ा सरदार था। मरिया का पिता उक्रइन् का एक छोटा सरदार था। उस समय बारूद के हथियारो का प्रयोग हो चुका था; लेकिन अभी कारतूस नही आये थे। उक्रइन् के किसान का मुँह देखने में रोहतक या गुड़गाँवाँ के किसी जाट के मुख की तरह मालूम देता था। दाढी-शून्य वैसी ही बड़ी बड़ी मूँछें, सिर के बाल सब मुंडे हुए, लेकिन सिर के बीच में पतली चुटिया, उसी तरह का भोलाभाला किन्तु सयम और वीरताद्योतक मुख। वेशभूषा में भी उस समय का पूरी तौर से खयाल रखा गया था। सोवियत् नाटक और फिल्म, कला, ऐतिहासिक और भौगोलिक औचित्य आदि सभी दृष्टियों से क्यों इतने अच्छे होते है? कारण यह है कि उसकी हर एक बात को उन उन विषयो के विशेषज्ञ बडी बारीकी से देखते है और आलोचना करते है। सब की आलोचना के अनुसार फिर कथानक, नृत्य, संगीत, और दृश्य में हेर-फेर किया जाता है। और इस प्रकार उसमे सर्वांग-पूर्णता आती है।

*** ***

बैलेट् और ओपेरा की तरह कन्सर्त (सगीत) और ड्रामा मे भी सोवियत् ने बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त किया है। उसके प्रहसन गभीरता के साथ

और सेठों में उसकी क़द्र थी। क्रान्ति के बाद जिस तरह शासन दूसरी श्रेणी के हाथ में चला गया, उसी तरह नाट्यशालाओं के दर्शकों में भी परिवर्तन हुआ। कहाँ राजा-महाराजा दर्शक-मंच की शोभा बढ़ाते थे और कहाँ मैले-कुचैले पत्थर जैसे कड़े हाथोंवाले मज़दूर उन्हीं मंचों पर बेपरवाई से बैठने लगे। मास्कोविन् देश से भागा नहीं लेकिन तब भी आरंभिक वर्षों में वह भौंचक सा हो गया था। वह समझ नहीं सकता था, कि ये अशिक्षित और रूखे लोग उसकी कला की क्या दाद देंगे। लेकिन उसने देखा कि क्रान्ति ने अपनी कला को विकसित करने के लिए उसे और भी अधिक मौक़ा दिया है। जहाँ पहलेवाले मालिक हमेशा गुलामों की तरह उससे ख़ुशामद की आशा रखते थे, दिल में उसकी नीच-कुलीनता आदि के प्रति घृणा करते थे, वहाँ आज के मालिक श्रमिक उसे बिलकुल बराबर समझते हैं। यही नहीं, बल्कि छोटा बन कर ख़ुशामद करने को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। मास्कोविन् ने परिस्थिति की अनुकूलता को समझ लिया और उसने अपनी कला को सोवियत्-नवनिर्माण का एक भाग बना दिया। आज वह सोवियत् का अत्यन्त सम्माननीय अभिनेता है। मास्को-आर्ट-थियेटर और मास्कोविन् नाट्यजगत में एक समझे जाते हैं। अब की बार इवान् मास्कोविन् पार्लियामेंट का मेंबर चुना गया है।

१३—सोवियत्-संग्रहालय

विज्ञान के बहुत से आविष्कार कितने ही मुल्कों में तमाशे की चीजें हैं। हिन्दुस्तान में भी युनिवर्सिटी कालेजों में साइंस (रसायन और भौतिकी), कृषि-कालेजों में कृषि-विज्ञान और इम्पीरियल एग्रिकल्चरल् इंस्टीट्यूट जैसी संस्थाओं में कृषि और पशुपालन-संबंधी अन्वेषण इसी तरह के तमाशे हैं। इन वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रयोग से तो देश की दरिद्रता कब की दूर हो जानी चाहिए थी, लेकिन उनका परिणाम क्या देखा जाता है? यही कि कृषि और उद्योग के नाम पर मोटी मोटी तनख्वाह दे कर कुछ रिसर्च-स्कालर, कुछ प्रोफेसर, कुछ डाइरेक्टर और डिप्टी डाइरेक्टर बना कर बैठा दिये गये। उनको बँधी हुई तनख्वाह मिलने लगी। जिन्दगी की तरफ से उन्हें बेफिक्री हुई। डिपार्टमेंट को रोज का काम दिखलाना जरूरी है और उसके लिए मुफ्त की कागज-स्याही मिल ही रही है, इसलिए अपने दौरे का स्थान और मील गिना दिये। प्रयोगशाला में जो दो-चार कीड़े-मकोड़े या मेंढक मारे उनको भर दिया। दो-चार सुझाव रख दिये और यह जानते हुए कि हिन्दुस्तान में इनपर कभी अमल नहीं होगा। बस, कृषि की उन्नति, गो-जाति का विकास कागज पर हो गया और उनका काम खतम। इस कहने का मतलब यह नहीं कि विज्ञान झूठा है, वैज्ञानिक कार्यकर्त्ता बिलकुल निकम्मे हैं। बल्कि असली दोष है, उन चीजों का उपयोग न होना। हमारे दैनिक कार्य में जो सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक बाधाएँ हैं, उनको दूर करने से सभी डरते है।

सोवियत् भूमि में विज्ञान मनुष्य के लिए इसी पृथ्वी पर स्वर्ग बनाने का काम कर रहा है; और इसी दृष्टि से हर चीज का मूल्य वहाँ आँका जाता है।

दुनिया में किसी देश में इतनी संख्या में संग्रहालय (म्यूज़ियम) नहीं हैं, जितने कि सोवियत्-भूमि में। ऐतिहासिक, चित्रकला, नाटक, संगीत, साहित्य, विज्ञान आदि के संबंध के अलग अलग म्यूज़ियम सैकड़ों नहीं, हज़ारों की तादाद में हैं। कोई शहर ऐसा नहीं, कोई ज़िला या प्रान्त ऐसा नहीं जिसमें स्थानीय म्यूज़ियम न हों। और विशेष बात यह है कि वहाँ के म्यूज़ियमों में लोग अतवार के दो घंटे काटने के लिए नहीं जाया करते! जिस विषय के भी म्यूज़ियम में जाना हो, आपको उस विषय का जानकार पथ-प्रदर्शक मिलेगा और वह हर एक चीज़ को खूब अच्छी तरह समझाकर आपको बतलायेगा। इस प्रकार वहाँ से आप कुछ सीख कर आयँगे। म्यूज़ियमों का कितना अधिक प्रचार है, और गवर्नमेंट का ध्यान उस ओर कितना है, इसे आप मास्को के म्यूज़ियमों की इस सूची से जान सकते हैं—

१—इतिहास-सम्बन्धी

(१) केन्द्रीय लेनिन्-म्यूज़ियम
(२) क्रान्ति-म्यूज़ियम
(३) जेलों में वन्द और विदेशों में निर्वासित बोल्शेविक-म्यूज़ियम
(४) खुफ़िया क्रान्तिकारी छापाखानों का म्यूज़ियम
(५) क्रास्नाया प्रेस्न्या ज़िले का क्रान्ति-इतिहास-म्यूज़ियम
(६) लाल-सेना केन्द्रीय म्यूज़ियम
(७) सरकारी इतिहास म्यूज़ियम, (इसकी शाखायें भी हैं)
(८) भूतपूर्व नवोदेवीची साधुनी-मठ-म्यूज़ियम
(९) भूतपूर्व पोकरोव्स्की गिर्जा-म्यूज़ियम
(१०) सत्रहवीं सदी के सामन्तों के जीवन का म्यूज़ियम

(११) म०स०स०र० की जातियों का म्यूज़ियम
(१२) धर्म-विरोधी केन्द्रीय म्यूज़ियम

२—ललित-कला—

(१३) त्रेत्याकोफ् राजकीय चित्रशाला
(१४) आधुनिक पश्चिमी कला का म्यूज़ियम
(१५) पुश्किन् ललित-कला राजकीय म्यूज़ियम
(१६) वस्नेत्सोफ् चित्र प्रदर्शिनी
(१७) गोलुकिना तक्षणकला म्यूज़ियम और स्टूडियो
(१८) पूर्वी सभ्यताओं का म्यूज़ियम
(१९) अखिल-संघ वास्तु-शास्त्री एकेडेमी का म्यूज़ियम

३—नाटक और संगीत

(२०) वख्रुशिन् नाटकीय केन्द्रीय म्यूज़ियम
(२१) गोर्की मास्को कला नाटक म्यूज़ियम
(२२) स्क्रापिन् म्यूज़ियम

४—साहित्य—

(२३) राजकीय साहित्य म्यूज़ियम
(२४) दोस्तोयेव्स्की म्यूज़ियम
(२५) राजकीय ताल्स्त्वा म्यूज़ियम
(२६) ल्यू ताल्स्त्वा प्रासाद म्यूज़ियम
(२७) मायाकोव्स्की म्यूज़ियम और पुस्तकालय वाच-
नालय

५—प्रकृति-विज्ञान—

(२८) प्लेनेटोरियम् (नक्षत्र-भवन)
(२९) राजकीय डार्विनीय म्यूज़ियम
(३०) तिमिर्याज़ेफ् बायोलोजी (जीवनशास्त्र)
म्यूज़ियम

(३१) राजकीय केन्द्रीय प्राणिशास्त्र म्यूज़ियम
(३२) राजकीय मानवशास्त्र म्यूज़ियम

६—शिक्षा—

(३३) राजकीय शिशु पुस्तक म्यूज़ियम
(३४) शिशु रेखांकन (ड्राइंग) की स्थायी प्रदर्शिनी

७—शिशु और प्रसूता की सुरक्षा—

(३५) शिशु और प्रसूता की सुरक्षा के केन्द्रीय अन्वेषणालय की प्रदर्शिनी

८—समाजवादी अर्थशास्त्र और टेक्नौलोजी (यंत्रशास्त्र)

(३६) राजकीय पोलीटेक्निक् (नाना यंत्र) म्यूज़ियम
(३७) सोवियत् निर्यात केन्द्रीय म्यूज़ियम
(३८) भवन-निर्माण उद्योग की अखिल-संघ प्रदर्शिनी
(३९) नगर म्यूज़ियम
(४०) कला दस्तकारी म्यूज़ियम
(४१) फ़्रुंजे विमान-संचालन-म्यूज़ियम
(४२) घोड़े की नसल संबंधी म्यूज़ियम

* * *

पोलीटेक्निक म्यूज़ियम—१९३७ में इस म्यूज़ियम में १० लाख आदमी देखने गये। यहां के चार्ट, मॉडल (नमूने) और संग्रहों की संख्या १० हज़ार है। और सबसे बड़ी विशेषता इस म्यूज़ियम में यह है, कि सारे सोवियत् के नगरों और ग्रामों में, साम्यवादी नवनिर्माण ने जिन उद्योगों की वृद्धि और पंचायती खेतियों और मशीनों के प्रयोग ने युगान्तर स्थापित कर दिया है, उन सब को आप इस म्यूज़ियम में देख सकते हैं।

कहने को तो यह म्यूज़ियम १८७२ ई० में खोला गया था, लेकिन उस समय के म्यूज़ियम और आज के म्यूज़ियम में ज़मीन आसमान का

अन्तर है। उस वक्त यह ज़ारशाही के प्रति भय और सम्मान के प्रचार का साधन समझा गया था। प्रदर्शित वस्तुओं में महान् पीतर तथा तत्कालीन ज़ार के पैरों के नाप के दो जोड़े जूते बड़े अभिमान के साथ दिखाये गये थे। थोड़े से कपड़े, कुछ ईसाईधर्म-सम्बन्धी पताकाएँ और चित्र थे। १८७२ में १८२८ आदमी म्यूज़ियम देखने आये थे।

आजकल यह म्यूज़ियम प्रदर्शनीय चीज़ों को ही नहीं दिखाता बल्कि उसके झलकानेवाले नमूने, तस्वीरें, नक्शे, पंचवार्षिक योजनाओं में स्थापित उद्योगों का जन्म और विकास बतलाते हैं। साथ ही यह म्यूज़ियम अपने वैज्ञानिकों की सहायता से देश में बड़े विस्तार के साथ वैज्ञानिक और यन्त्र-संबंधी खोज का काम करता है। १९३७ में म्यूज़ियम पर ४० लाख रूबल खर्च हुआ था, जिसमें १२ लाख वैज्ञानिक अन्वेषण पर।

पथप्रदर्शक पहले दर्शक को जिस कमरे में ले जाता है, उसके बीचो-बीच एक धातुस्तंभ पर भावपूर्ण दो तरुण स्त्री-पुरुष मूर्ति है। पुरुष के हाथ में हथौड़ा और स्त्री के हाथ में हँसुआ। अपने एक हाथ को ऊपर उठाकर उन्होंने मिला लिया है। और हँसुए-हथौड़े वाले हाथ ऊपर आसमान में फैले हुए हैं। उनके सारे शरीर, मुख-मुद्रा से उत्साह और शक्ति का परिचय मिलता है। हँसुआ खेती को सूचित करता है और हथौड़ा उद्योग को। कमकर और किसान के मेल ने सोवियत्-शासन का निर्माण किया है; उसी भाव को इस मूर्ति में दिखाया गया है। दीवार के ऊपर सोवियत् भूमि का एक बहुत विशाल नक्शा है। पथ-प्रदर्शक (अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच जाननेवाले भी मौजूद हैं), आपका ध्यान नक्शे की ओर आकर्षित करता है। फिर बिजली के स्विच् को दबाता है। नक्शे पर कई जगह रोशनी हो जाती है। रोशनी में कोई लाल है, कोई पीली, कोई दूसरे रंग की है। पथ-प्रदर्शक बतलाता है—देखिए, क्रान्ति से पहले इन्हीं थोड़ी सी जगहों में—जो कि यूरोप के थोड़े से ही हिस्से में हैं—लोहे-कोयले के कारखाने बिजली
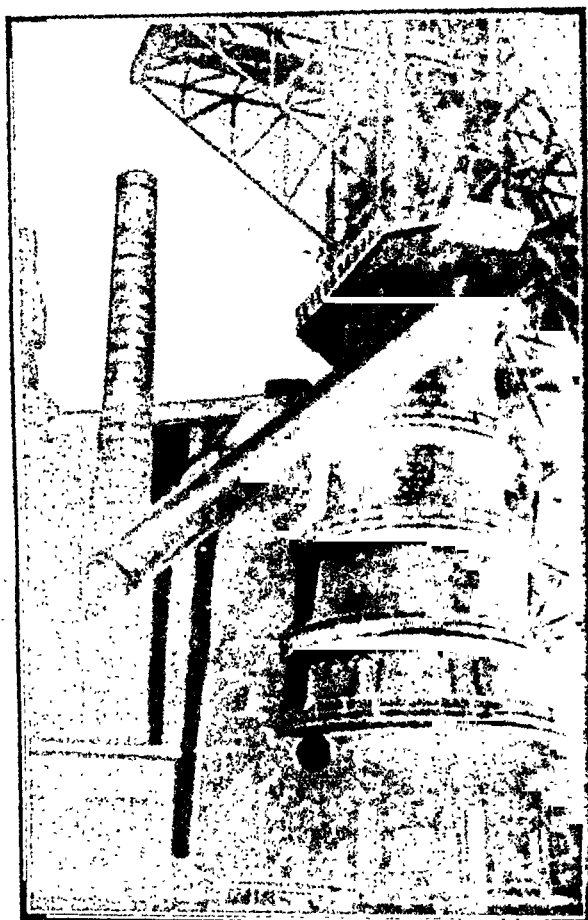
पोलिटेक्निक् म्यूजियम में एक भट्ठे का नमूना

के स्टेशन आदि थे। फिर वह दूसरी स्विच् दबाता है और बतलाता है—क्रान्ति के बाद गृहयुद्ध के फलस्वरूप इन कारखानों में भी बहुत से बेकार हो गये थे। कैसे साम्यवादियों ने लेनिन् के नेतृत्व में पुनर्निर्माण का काम आरम्भ किया। कैसे अभी वह पुनर्निर्माण के काम में थोड़ी ही दूर अग्रसर हो पाये थे, और लेनिन् की योजना—सारे देश मे बिजली का सार्वजनिक प्रचार—अभी कागज से धरती पर पहुँची ही थी कि १६२४ में उनका देहान्त हो गया। फिर स्विच् दबा कर कुछ नये आलोकों से आलोकित स्थान को दिखलाते हुए वह बतलाता है—स्तालिन् के नेतृत्व में सोवियत्‌संघ ने पुनर्निर्माण का काम १६२७ में खतम कर दिया। सभी उद्योगों में देश उस समय उस अवस्था में पहुँच गया, जिसमें कि वह १६१३ में था।

अब उसका स्विच् दबाना आपके ऊपर जादू की तरह असर करने लगेगा। जहाँ पहले इस बड़े चित्रपट का एक छोटा सा कोना, वह भी कमजोर टिमटिमाते बल्बों (विद्युत-प्रदीपों) में आलोकित हो रहा था, वहाँ अब तेज रोशनीवाले बल्ब बहुत दूर तक फैले आपको मिलेंगे। उनमें आपको मग्नीतोगोर्स्क के विशाल लोहे के कारखाने का पता लगेगा। आप स्तालिन्ग्राद् के भारी ट्रैक्टर के कारखाने को देखेंगे। नई नई कपड़े की मिलों, तेल की खानों तथा दूसरी चीजों को पायेंगे। हाँ, आपको यह ध्यान रखना होगा कि लाल बल्ब बहुमूल्य पत्थरों (माणिक, पुखराज आदि) को सूचित करते हैं। पीले बल्ब सोने को। इसी तरह दूसरे रंग दूसरी चीजों को सूचित करते हैं।

प्रथम पंचवार्षिक योजना मे आप देखेंगे कि प्रकाश दूर तक में प्रकट हुआ है; लेकिन अब भी उसका अधिकांश भाग सोवियत् के यूरोपीय भाग में है। अब द्वितीय पचवार्षिक योजना की स्विच् दबाई गई। आलोक-क्षेत्र और भी बढ़ गया। अब सुदूर सिबेरिया ही नहीं, प्रशान्त महासागर के उदर में अवस्थित सखालिन् और उत्तरी अमेरिका के पड़ोसी कम्चत्स्का में भी दीप दिखलाई दे रहे हैं। पथ-प्रदर्शक प्रथम पंचवार्षिक से द्वितीय

पंचवार्षिक के भेद को दिखलाने के लिए जल्दी जल्दी दोनों स्विचों को वारी वारी से बुझायेगा और जलायेगा। अब विना उसके कहे आप समझ सकते हैं कि सोवियत् का उद्योग-धंधा प्रथम पंचवार्षिक से द्वितीय पंचवार्षिक में कितनी दूर तक फैल गया। द्वितीय पंचवार्षिक में उद्योग, मध्य-एशिया में हिन्दुस्तान की सीमा के २५ मील पास तक आ जाता है। अगर दर्शक भारतीय है तो बड़ी उत्सुकता से पामीर के ऊपर चमकते उन चिराग़ों को देखेगा, और एक ठंडी साँस लिए विना नहीं रहेगा।

इसके वाद पथ-प्रदर्शक अन्तिम स्विच् दवायेगा। अब जो प्रकाश-पुंज हर जगह के चमकते वल्वों से आपके ऊपर पड़ेगा, उससे आपकी आँखें चौंधिया जायेंगी। देखेंगे, प्रशान्त महासागर से वालतिक् सागर तक ध्रुव-कक्षीय महासमुद्र से पामीर के शिखर तक अगणित रंग विरंगे वल्व जल रहे हैं।

इस एक नक़शे के देखने से सोवियत् शासन ने देश के लिए क्या किया, इसे आप समझ जायँगे। लेकिन अभी तो सोवियत् की आर्थिक उन्नति का और भी सजीव उदाहरण, हाँ, सचमुच सजीव उदाहरण आपके सामने आनेवाला है। आप एक जगह जीती जागती गाय देखेंगे। एक छोटी सी कोठरी है। दरवाज़े पर काँच लगा है। उसके पीछे गाय खड़ी है। सामने चारा भी पड़ा हुआ है। आप देखते ही चौंक पड़ेंगे। ख़याल होगा हम तो म्यूज़ियम देखने आये थे, यह खिड़की के पीछे हज़ार गायों का रेवड़ और हरा-भरा चरागाह जाड़े के दिनों में कहाँ से चला आया। खैर, आपको यह समझने में दिक़्क़त नहीं होगी कि सजीव गाय यही आपके पासवाली है, क्योंकि यही कान हिला रही है और पूँछ चला रही है; वाक़ी ९९९ चुपचाप निर्जीव खड़ी हैं।

यहाँ चित्रकार की तूलिका ने वह कमाल किया है कि आपका दिमाग़ भ्रम में पड़ गया। जितनी ही चीज़ें दूर, दूरतर, दूरतम होती जाती हैं,

उतना ही उनका आकार छोटा होता जाता है। इसी दूरी के कारण आकार की तारतम्यता को लेकर चित्रकार ने इस चित्र को नाना रंगों में चित्रित किया है। जब आप सेब के कमरे में जायँगे, तो वहाँ भी यही भ्रम आपके दिल में उत्पन्न होगा। सामने के दो सच्चे सेव के दरख्तों को देख कर आप सारी तसवीर को सच्चा बाग समझ जायँगे। लेकिन यह म्यूजियम चतुर चित्रकार या कुशल फोटोग्राफर की कला को प्रदर्शित करने के लिए नहीं बना है, उसके लिए तो दूसरी जगहें हैं। यहाँ यह दिखलाना है कि अमुक सरकारी बाग जो इतने हजार एकड़ का है, उसमें सेब के दरख्त कैसे लगे हैं। किस तरह के फल होते हैं। कैसे फलों को तोड़ते हैं। कीड़ा लगने पर कैसे दवाई का फुहारा छोड़ते हैं आदि।

यहाँ पानी से बिजली पैदा करनेवाले नये नये कारखानों की कलों के छोटे छोटे नमूने हैं। ये नमूने जड़ निर्जीव नहीं है। पथ-प्रदर्शक स्विच् दबाता है, और द्नीयेपर् की सब से बड़ी टर्वाइन जोर से चलने लगती है। आपको बतलाया जायगा कि सोवियत् में १६१३ से १६३७ में २०गुनी बिजली पैदा हुई।

यहाँ आपको कुइबिशेफ् का वोल्गा के ऊपर बँधता महान् बंध दिखलाई पड़ेगा। वह १३५० करोड़ किलोवाट घंटा बिजली देगा। अर्थात् १६३२ में सारे सोवियत् में जितनी बिजली पैदा होती थी उतनी यह अकेला स्टेशन देगा। और यह बंध और उसके साथ खोदी जाती नहरें सूखी पथरीली जमीन को हरी-भरी कर देंगी।

बिजली पैदा करने की एक दूसरी टर्वाइन (चक्का) का माडल आप देखेंगे। इसकी ताकत है १ लाख किलोवाट और सोवियत् के कारखाने एलेक्त्रोसिला में बनी है। साथ ही खारकोफ् में बननेवाले २५ हजार से ५० हजार और १ लाख किलोवाट् ताकत के और भी जेनेरेटर (विद्युत्-उत्पादक) आपके देखने में आयेंगे। जारशाही रूस ने ढाई हजार किलोवाट् से अधिक ताकत का जेनेरेटर कभी नहीं बना पाया। कुइबिशेफ् का बिजली

का कारखाना कैसे कैसे बल्बों को बनाता है, उसके बहुत से नमूने यहाँ देखने को मिलेंगे। उनमें पतली फाउंटेन पेन में छिप जानेवाले बल्व से ले कर ५००० वाट की ताक़तवाले प्रचंड बल्व—जिससे कि क्रेमलिन् के दोनों लाल तारे रात को आलोकित किये जाते हैं—दीख पड़ेंगे।

एक दूसरा हाल है जिसमें लोहा, फौलाद, ताँबा और दूसरी धातुओं को दिखलाया गया है। यहाँ ख़ुद माल ढोने, गिराने, पिघला कर निकालने-वाले माकेयफ़्का के एक धौंकू भट्ठे का नमूना है। दूसरा नमूना है, पत्थर को पीस कर सोना निकालनेवाली मशीन का। और भी कितनी ही तरह के माडल आपको यहाँ मिलेंगे। एक कमरे में श्रम की उपज कैसे बढ़ाई जा रही है, इसे प्रदर्शित किया गया है। सौ वर्ष पहले कोयला कैसे हाथ से काटकर निकाला जाता था। ३० वर्ष पहले भी ज़ारशाही कोलियरी मशीन के बारे में कितनी दरिद्र थी। क्रान्ति के बाद और विशेष कर पिछले १०-१२ सालों में कैसे सूमा और खंती की जगह बिजली से चलनेवाले बर्मों ने लिया और फिर १९३५ में वह पतले से शरीरवाला तरुण—जिसके नाम से आज सोवियत् का बच्चा बच्चा परिचित है, यानी स्तख़ानोफ़्—के दिमाग़ में बात समाई और उसने चार साथियों की मदद से कोयला काटने और थूनी लगाने के काम को बाँट दिया। स्तख़ानोफ़् और उसके साथियों की छोटी छोटी मूर्तियाँ यहाँ कोयले के स्तर में अपनी योजना चलाती हुई दिखलाई गई हैं। एक कमरे में ट्रैक्टर और कम्बाइन् दिखलाये गये हैं। सब से नये माडल का ढोलाकार (कटरपिलर) ट्रैक्टर भी रखा हुआ है। इसमें ईंधन की भी किफ़ायत है और जंजीर पर चलने के कारण ऊँची नीची जगह में चलाना भी आसान है। एक अत्यन्त नये कम्बाइन् को दिखलाकर पथप्रदर्शक कहेगा, इस मशीन के द्वारा पहले के ३०० आदमियों का काम अब ३ आदमी करते हैं।

एक कमरे में मास्को की मेत्रो (भूगर्भी रेलवे) के माडल भी रखे हैं।

कैसे ६२ भाषाओं में रेडियो पर ब्राडकास्ट होता है। कैसे मास्को

का भारी टेलीफोन्-आफ़िस लाखो आदमियो के लिए अपने आप लाइन बदल कर काम करता रहता है। कैसे ३०–३० लाख छपनेवाले सोवियत् के दैनिक पत्रो का मुद्रण और वितरण होता है।

स्कूल के छात्र और छात्राएँ आपके इधर उधर आती जाती दिखलाई पड़ेंगी। कितनी ही जगहों पर तो मालूम होगा कि यह म्यूज़ियम नहीं कोई कालेज का लेक्चर-हाल है।

१६ नवम्बर १९३७ को जब मैं इस म्यूज़ियम को देखने गया था, तो एक अंगरेज़ सज्जन भी दर्शको में थे। वह पथप्रदर्शक से बार बार प्रश्न करते थे—यन्त्रो का इतना अधिक प्रयोग क्या आदमियो को सुस्त और निकम्मा नहीं बना देगा? और फिर उससे मनुष्य समाज घोर पतन की ओर नहीं जायगा? उन बेचारो को दुनिया के कमकरो की आजकल की नारकीय ज़िन्दगी का कोई खयाल नहीं था। उनका सारा दिमाग उस सुदूर भविष्य की ही समस्या से विकल्पित था जब कि मशीनों के उपयोग से मनुष्य-समाज दो मिनट में अपनी आवश्यक सभी चीज़ों को पैदा कर लेगा। वह चिन्तित थे—उस समय अपने खुराफ़ाती दिमाग से बचने के लिये उपाय क्या रहेगा?

* *

केन्द्रीय लेनिन् म्यूज़ियम—यह बिलकुल नया म्यूज़ियम है, जो सन् १९३६ में स्थापित हुआ है। इसमें २२ हाल हैं, जिनमें लेनिन् के कार्य और जीवन-संबंधी पत्र, फ़ोटो, चित्र तथा दूसरी चीज़ें जमा की गई हैं। लेनिन् का जीवनचरित्र समझने के लिए यह म्यूज़ियम बड़ा अच्छा साधन है। एक हाल से दूसरे हाल में जाते हुए उस महान् नेता के बचपन, उसके माँ बाप, विद्यार्थी जीवन, क्रान्तिकारी कार्य, जेल, सिबेरिया मे देश-निकाला, वर्षों विदेशों में भटकना, १९०५ की क्रान्ति, क्रान्ति की असफलता से जोश का ठंडा होना, महायुद्ध, फ़रवरी की क्रान्ति, लेनिन् का देश लौटना, महान् साम्यवादी क्रान्ति, गृह-युद्ध, नवीन अर्थ-नीति, सोवियत्

सरकार के अध्यक्ष के तौर पर लेनिन् के काम, कम्युनिस्ट पार्टी का २५ वर्ष के करीब नेतृत्व और जीवन के अन्तिम दिन; सभी यहाँ सामयिक सामग्रियों के साथ प्रदर्शित किये गये हैं। यहाँ मुल्क की उस राजनैतिक अवस्था को भी चित्रित किया गया है, जिसमें रह कर लेनिन् को काम करना पड़ा। वह सब मौलिक सामग्री यहाँ मौजूद है जिससे सिद्ध होता है कि लेनिन् को मेंन्शेविक, त्रोत्स्की, जिनोवियेफ़्, कामेनेफ़् के खिलाफ़ कितनी जद्दोजहद करनी पड़ी।

स्तालिन् के लिए लिखे लेनिन् के कितने ही व्यक्तिगत पत्र भी यहाँ रखे हैं, जिनसे पता लगता है कि, लेनिन् स्तालिन् से कितना स्नेह रखते थे। कुछ पत्रों में लेनिन् ने स्तालिन् के स्वास्थ्य के बारे में पूछा है।

यहाँ लेनिन् के घनिष्ट सहकारी स्वेर्दलोफ़्, ज़ेर्ज़िन्स्की, फ्रुंजे, किरोफ़्, कुइबिशेफ़् और ओर्जोनीकिद्ज़े—जो क्रान्ति के लिए जिये और क्रान्ति के लिए मरे—से भी दर्शक का परिचय होता है। स्तालिन्, मोलोतोफ़्, वोरोशिलोफ़्, कगानोविच्, कालिनिन् आदि अभी तक जीवित लेनिन् के सहकारियों के बारे में भी ज्ञान होता है।

लेनिन् के मूल हस्तलेख और वैयक्तिक काग़ज़-पत्रों के फ़ोटो-चित्र यहाँ सजाए हुए हैं। लेनिन की घड़ी यहाँ रखी है। उनकी वह क़लम भी यहाँ मौजूद है, जिससे कि उन्होंने सोवियत् सरकार की पहली घोषणा पर हस्ताक्षर किया था। १९१८ में उनपर किसी क्रान्तिविरोधी ने गोली चलाई थी, गोली ओवरकोट को छेदकर भीतर चली गई। वह ओवर कोट यहाँ रखा है। फटी हुई जगह की मरम्मत लेनिन् की स्त्री क्रुप्सकाया ने की थी। ज़ार की पुलीस के लिखे लेनिन् के खिलाफ़ काग़ज़-पत्र भी यहाँ मौजूद हैं, और उनकी किताबों के ग़ैरक़ानूनी प्रथम संस्करण भी।

साम्यवादी क्रान्ति के आरंभिक दिनों में लेनिन् के लिखे हुए कितने ही ऐतिहासिक काग़ज़-पत्र यहाँ संगृहीत हैं। यहीं लेनिन् और स्तालिन् द्वारा

संपादित अधिकारों की घोषणावाला मूल पत्र मौजूद है। कमकर-किसान सरकार की स्थापना की घोषणा, लाल-सेना के कायम करने की घोषणा, जिन पर लेनिन् और दूसरों के हस्ताक्षर है, यहां रखे हुए हैं। एक हाल में लेनिन्-ग्रन्थ-संग्रह की सभी जिल्दें तथा उनके संपूर्ण या आंशिक अनुवाद दुनिया की ८३ भाषाओं में—जिनमें भारत, चीन, जापान की भाषाएँ तथा यूरोप आदि की भाषाएँ शामिल हैं—रखे हुए हैं।

कागज़-पत्रों के फ़ोटो बहुत महत्त्वपूर्ण हैं; लेनिन् की जीवनी के लिए ही नहीं, बल्कि साम्यवादी इतिहास के लिए भी। इन कागज़पत्रों से यह भी मालूम होता है कि लेनिन् जहां एक जबर्दस्त राजनीतिज्ञ थे, वहां उनका ज्ञान और विषयो में भी कितना विस्तृत था। क्रान्ति-युद्ध के लिए उनकी प्रतिभा कितनी अद्वितीय थी। कारखाना, बिजली के पावर हाउस, खेती, उपज का वितरण, यातायात का प्रबन्ध, शिक्षा और संस्कृति, वैदेशिक नीति, सभी विषयो पर लेनिन् की कलम गंभीरतापूर्वक चली है; और उन कागज़ों का यहां बहुत अच्छा संग्रह है। सीधे सादे किसानों और मजदूरो ने जो पत्र लेनिन् को लिखे थे, उनमें से भी कितने यहां प्रदर्शित किये गये है। उनसे मालूम होता है कि रूस के किसान मजदूर लेनिन् से कितना प्रेम रखते थे।

मशहूर चित्रकारों—अन्द्रेवेफ़्, अल्तमान्, ब्रोद्स्की द्वारा अंकित लेनिन् के चित्र या ड्राइंग यहां मौजूद है।

एक हाल में ऐसे मूल कागज़-पत्र है, जिनमे लेनिन् की मृत्यु पर दुनिया के बड़े बड़े राजनीतिज्ञों और साहित्यिकों—रोम्यां रोलां, बर्बुसे, सुन्यात्सेन्, टामस्मान्—आदि ने जो शोक प्रकट किया था। यही किसानो और मजदूरो के कितने ही शोक-पत्र भी हैं।

एक हाल में सोवियत् के भिन्न भिन्न जाति के प्रजातन्त्रो और बाहर के कलाकारों के बनाये रेशम, कालीन, कमख़ाब, चद्दर आदि पर बनी लेनिन् की तसवीरें जमा की गई हैं। गाँव की साधारण जनता ने अपनी भाषा

में कविता के रूप में लेनिन् के प्रति जो उद्‌गार प्रकट किया, उसका भी यहाँ अच्छा संग्रह है। इन पद्यों और गीतों में कितने ऐसे हैं, जिनके कर्त्ताओं का नाम संसार ने नहीं जाना।

यहाँ पर लेनिन [illegible] भाषण के फ़िल्म हैं; और दर्शकों को जीवित लेनिन् के शब्द सुनने का [illegible] होता है।

१४—नगरों की कायापलट

स्तालिन्स्क—क्रान्ति के बाद दो-दो चार-चार लाख आबादीवाले कौड़ियों नये शहर आबाद हुए हैं। स्तालिन्स्क भी पश्चिमी सिबेरिया में उसी तरह का एक शहर है। नगर की वृद्धि कितनी तेज़ी से हुई है, और वह कितना समृद्धिशाली है, यह निम्नलिखित वर्णन से समझा जा सकता है। लेखक—जो एक रूसी पत्र का संवाददाता है—पिछले दिसम्बर (१९३७) में वहाँ गया था।

अंधेरा होने लगा था जब कि हमारी ट्रेन स्टेशन पर पहुँची। जाड़े के मारे रेल के शीशे बाहर से हिम-जटित हो गये थे; इसलिए बाहर देखने के लिए दरवाज़े खुले हुये थे। मुसाफिर चारों ओर दिखाई दे रहे थे। कोई घर की तरफ जल्दी जल्दी जा रहा था और कुछ लोग स्टेशन को बड़ी दिलचस्पी और आश्चर्य से देख रहे थे।

एक भाई देर तक बाहर रह कर लौट रहा था। उसने देखा, एक कोलाहलपूर्ण लम्बे चौड़े स्टेशन पर सिबेरिया की उस सर्दी में भी स्टेशन के भोजनालय में गमलोवाले ताड़ लगे हुए हैं। यात्री ने कितनी देर तक इधर उधर दृष्टि डालने के बाद एक छोटा सा सफेद पत्थर का झोपड़ा प्लेटफार्म के एक छोर पर देखा। वह हँस पड़ा।

"हाँ, यहाँ ही कुज़्नेत्स्क के इस झोपड़ेवाले स्टेशन में ७ वर्ष पहले मैं वर्फ बरसती शाम को आया था।"

स्टेशन के पीछे स्तालिन्स्क नगर है। उसे पतले कुहरे में कम्पित लाखों बिजली-बत्तियाँ प्रकाश का सरोवर जैसा बनाती थीं। लोहे और फौलाद के कारखाने शहर से कुछ दूर पर खड़े नगर की शोभा को दुगुना कर रहे थे। लोहे के भट्ठे शोर मचाते सनसना रहे थे। उनमें पेंदी-में-लाल-लौर-

लिये हुए धुएँ का वादल निकल रहा था।

१९१३ में इसी नगर के वारे में लिखते हुए एक लेखक ने लिखा था——

"क़सवा तेल्वेस् ताइगा (जंगल) के छोर पर वसा हुआ है। यहाँ आग की रखवाली के लिए एक मीनार, तीन गिर्जे और दो छोटी प्रार्थना-शालाएँ हैं। इस ज़िले में एक पाठशाला है; जिसमें प्रथम दो दर्जो तक पढ़ाई होती है। एक फ़ौजी जेल अस्पताल है, जिसमें २२ मरीजों के लिए चारपाइयाँ हैं। क़सबे में २४०० घर हैं; जिनमें एक तिहाई ही ईंट के हैं। आवादी ४०८२ है। पिछले १० साल के भीतर आवादी में सिर्फ दो आदमियों की वृद्धि हुई। क़सवे की तरह ज़िले में भी जन-वृद्धि नहीं के वरावर है। पुराने वाशिन्दे बड़ी तेजी से मर कर लुप्त हो रहे हैं, और रूसी गाँव की जनवृद्धि तो कालापानी के लिए भेजे कैदियों पर निर्भर है। यद्यपि ज़िले में लोहा, सीसा, ताँवा, कोयला और अज़्वेस्तो की वहुत अच्छी खानें हैं लेकिन इस समय उनको कोई नहीं निकालता। खानों में काम न होने में सव से वड़ी कठिनाई है यातायात का न होना। ज़िले में ८५ शराव की दुकानें, ४ पुलीस के थाने और और दुकानें हैं। वसन्त और शरद् में कुज़नेत्स्क नगर का वाहरी दुनिया से संवंध टूट जाता है"।

और अव २४ वर्ष वाद क्या है? सात वर्प वाद लौटे उस यात्री ने अपनी आँखों के सामने एक नये नगर को खड़ा देखा। सड़कों पर सव जगह विजली-वत्तियाँ जगमगा रही हैं। तोम् नदी पर रोशनी में झिलमिल करता एक लोहे का पुल खड़ा है। सड़क की पगडंडियों पर हमेशा हरे रहनेवाले देवदारु वृक्षों की पांतियाँ खड़ी हैं। वड़े वड़े जँगलों वाले विशाल प्रासाद दोनों ओर खड़े हैं जिनके निचले तल में कितनी ही दुकानें सजी हुई हैं। चौरस्तों पर मोटरों की कतारोंको लाल, हरी स्वयं जलनेवाली लालटेनें रोके हुए हैं।

स्तालिंस्क नगर सिर्फ ६ वर्ष हुए, प्रगट हो कुजनेत्स्क के पुराने क़सवे वेसोनोफ़् गांव को निगल गया। स्तालिन्-लोह-कारखानों के साथ साथ यह नगर भी वढ़ा। स्तालिन्-कारख़ाना लोहा और फौलाद पैदा करने के लिए

एक बहुत भारी कारखाना ही नहीं है, बल्कि वहाँ नई से नई मशीनों का इस्तेमाल किया गया है। यह दुनिया के सब से बड़े लोहे के कारखानों में है।

स्तालिस्क में ६७ स्कूल है, १ लोह फौलाद इंस्टीट्यूट है, ३ टेक्निकल स्कूल हैं, १७ क्लब, १ सास्कृतिक भवन, २ सिनेमा, १ नाटकशाला, ३ सरकस, २ म्यूज़ियम,,२ समाचारपत्र, ३० पुस्तकालय, (३०,००० स्थायी पाठकों के साथ) २ विश्राम-शालाएँ और १ होटल जिसकी इमारत के लिये कोई भी शहर लज्जित नहीं हो सकता। और विद्यार्थी कितने हैं? ५० हज़ार! इस ज़िले में १०० चिकित्सा संस्थाएँ और १०० प्रसूति-गृह बच्चा-खाना और किन्डर-गार्टन हैं।

ज़िले के भीतर से हो कर एक बड़ी सुन्दर रेलवे लाइन गई है। पत्थर, लोहा, और दूसरी खानों में बड़े ज़ोर के साथ काम हो रहा है। लोहा फौलाद कारखाना लगातार दिन रात काम करता है। स्तालिस्क नगरी रात को भी नहीं सोती। कारखाने मे काम करनेवाले अपनी अपनी ड्यूटी के समय के मुताबिक आते जाते रहते हैं।

स्तालिस्क के निवासियों मे तीन-चौथाई से भी अधिक नौजवान है। इसलिए इसे नौजवानों की नगरी कहा जा सकता है।

* * * * * *

मिन्स्क—कई शताब्दियों तक मिन्स्क—बेलोरूसिया स०स०र० की राजधानी—एक भारी वाणिज्य-केन्द्र था। और पूर्व से पश्चिम जानेवाले वाणिज्य-पथ पर अवस्थित होने से विशेष महत्त्व रखता था। अपने प्रान्त का यह शासन-केन्द्र भी था। ज़ारशाही के शासन मे बेलोरूसीय लोगो के साथ शासकों का वैसा ही बर्ताव था, कि जैसा अन्य पराधीन जातियों के साथ। मिन्स्क में उद्योग-धंधे के लिए कोई स्थान नहीं था। बेलोरूसिया को सिर्फ अनाज पैदा करने के लिए मजबूर किया गया था। ज़ारशाही उसे अनाज और कच्चे माल पैदा करने तथा कारखाने के बने हुए माल

की खपत का सुन्दर क्षेत्र समझती थी। इसीलिए क्रान्ति के आरंभ होने तक सारा प्रजातंत्र उद्योग-धन्धों, कल-कारखानों से शून्य था। लोग पुराने तरीके से कुछ हाथ की छोटी छोटी दस्तकारियाँ कर लेते थे।

६० सैकड़ा खेत ज़मींदारों और कूलकों के हाथ में थे। किसी किसी किसान को खेत की छोटी टुकड़ी प्राप्त थी और बहुसंख्यक तो उससे भी महरूम थे। गाँव के ग़रीब किसानों और खेतिहर मज़दूरों को जितना अधिक चूसा जाता था, उससे किसानों की अवस्था बड़ी ख़राब थी। वे भूख और ग़रीबी में डूबे हुए थे। इसके अतिरिक्त बेलोरूसी जाति पराधीन समझ कर हर तरह के ज़ुल्म की शिकार थी।

मिन्स्क शहर बसाने में कोई क़ायदा-क़ानून की पाबन्दी नहीं की गई थी। न सड़कें सीधी थीं, न शहर के स्वास्थ्य और सफ़ाई का ख़याल रखा गया था। अपने हज़ारों निवासियों के लिए वह सासतखाना था। साम्य-वादी क्रान्ति ने उस अवस्था से लोगों को मुक्त किया। १९१९–२० तक मिन्स्क क्रान्ति-विरोधियों के हाथ में पड़ कर और भी बर्बाद हो गया था। क्रान्ति की सफलता के बाद मिस्क को पहली ही अवस्था तक नहीं पहुँचा दिया गया, बल्कि यहाँ नये कल-कारख़ाने खोले गये और साम्यवाद के आधार पर नगर में नवजीवन का प्रसार किया गया। क्रान्ति के पहले यहाँ के इंजीनियरिंग कारख़ाने में २०९ कमकर थे और यही नगर का सब से बड़ा कारख़ाना समझा जाता था। आज मिस्क में हज़ारों से ऊपर कम-करवाले अनेक कारख़ाने हैं। भारी और हलके उद्योग-धन्धे, खानें और लकड़ी के कारख़ाने, कपड़े, जूते, ब्रुश की फैक्टरियाँ और मकान के सजाने के सामान बनानेवाले कारख़ाने सभी बड़े पैमाने पर मौजूद हैं। मिन्स्क में जिस तरह कल-कारख़ानों की तरक़्क़ी हुई, उसी तरह यह बेलोरूसीय प्रजातंत्र का सांस्कृतिक केन्द्र भी होता जा रहा है। इसकी जन-संख्या बहुत बढ़ गई है और जल्द ही साढ़े तीन लाख पहुँचनेवाली है। शहर को रोशनी देने के लिए जो पावर-स्टेशन था, वह क्रान्ति से पहले सिर्फ़ ८००

किलोवाट विद्युत्-शक्ति देता था जो कि शहर के दशांश को आलोकित करने के लिए पर्याप्त न थी और वह बिजली शहर के केन्द्र में रहनेवाले कुछ धनियों को ही मिलती थी। शहर के बाहरी ओर रहनेवाले कमकरों के लिए तो बिजली स्वप्न की बात थी।

आज मिस्क में बिजली के दो पावर-स्टेशन हैं। एक ६७५० किलोवाट का और दूसरा २४ हज़ार किलोवाट का। शहर के नवनिर्माण की जो योजना है, उसमें ६४ हज़ार किलोवाट बिजली तैयार करना रखा गया है। घरों और सड़कों में बड़ी शाहखर्ची के साथ बिजली की रोशनी इस्तेमाल की जाती है। पुराने घिसे सड़े पानी के पाइप प्रति दिन १००० घन मीतर[१] पानी भी नगर को नहीं दे सकते थे। सिर्फ राजा-बाबू सेठ-साहूकार लोगों के ही घरों में पानी के पाइप थे; और वह भी एक परिमित संख्या में। आज सारे शहर को पाइप का पानी मिलता है। रोज़ाना खर्च ६६००० घन-मीतर है। यानी पहले से ६६ गुना ज्यादा। १९३० से मिस्क में मल और गन्दे पानी आदि के बहाने के लिए सीवेर का प्रबन्ध हो गया है। १९२९ तक घोड़े से खींची जानेवाली ट्राम और सो भी ४ मील तक ही मौजूद थी। १९२९ में नगर-सोवियत् ने ३६ मील लम्बी बिजली की ट्रामवे जारी की। इसके अतिरिक्त बहुत अधिक तादाद में मोटरबस और टैक्सी भी हैं।

क्रान्ति के पूर्व सुव्यवस्थित स्नानागारों और धोबीखानों का नाम न था, किन्तु अब बहुत अधिक तादाद में उन्हें बनाया गया है। पुराने मिस्क की कच्ची सड़कों में धूल उड़ा करती थी। एक दो प्रधान सड़कें ही पक्की थीं। आज एकाध को छोड़ सभी सड़कें पक्की हैं। कमकर महल्ले की सड़कें भी पत्थर कूटी हुई हैं। सड़कों के सुधार के साथ साथ मोटरों और लारियों का उपयोग भी बहुत बढ़ा है।

---

[१] १ घन मीतर=३२·७५ घनफुट

पाँच पाँच छः छः महलों के हवादार एपार्टमेंट (घर) और सरकारी इमारतों को देखकर पुराने मिस्क का पहचानना मुश्किल हो गया है। पुराने मकानों की मरम्मत के अतिरिक्त ५ लाख वर्गमीतर[1] फर्श वाले नये मकान बने हैं। कितने ही ४ से ६ तल्ले वाले एपार्टमेंट (घर) आधुनिक सभी सुविधाओं के साथ बनाये गये हैं। नगर के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में बड़ी उन्नति हुई है। क्रान्ति के पहले स्कूलों में सिर्फ ४५०० लड़के पढ़ते थे, और अब सत-साला और दस-साला स्कूलों में ३० हज़ार लड़के पढ़ रहे हैं। अध्ययन-वर्ष को बढ़ा कर इनकी तादाद ६५००० होने जा रही है। इन स्कूलों में १७ टेकनिकल स्कूल, १२ हाई स्कूल, २५ अन्वेषणसंस्थाएँ, १७ विज्ञान एकेडेमी के इंस्टीट्यूट शामिल नहीं हैं। उच्च शिक्षण-संस्थाओं में २० हज़ार से अधिक विद्यार्थी, अध्यापक, और अन्वेषण-कर्ता हैं। महान् साम्यवादी क्रान्ति के बाद बेलोरूसिया प्रजातंत्र की सभी जातियों को अपनी भाषा में शिक्षा पाने का अधिकार दिया गया है। स्कूल में दाखिल होने से पहले की अवस्था में लड़कों की शिक्षा बच्चाख़ानों और किंडरगार्टन द्वारा दी जाती है। केन्द्रीय सांस्कृतिक उद्यान में बहुत से क्लब हैं। इनके अतिरिक्त और भी कितने हैं। एक बहुत भारी सांस्कृतिक प्रासाद तृतीय वार्षिक योजना के अनुसार बन रहा है। ४० लाख जिल्दों के साथ कई पुस्तकालय बनाये जा रहे हैं। ४ म्यूज़ियम तैयार हो रहे हैं।

पुराने मिस्क में एक भी थियेटर नहीं था, और आज १ यहूदी, १ पोल, और १ बेलोरूसी—३ थियेटर हैं। नई योजना के अनुसार कई नाट्यशालाओं और सिनेमा-भवनों के बनाने में हाथ लग चुका है। मिस्क ने स्वास्थ्य-रक्षा के क्षेत्र में बड़ी सफलता प्राप्त की है। एक विशाल स्वास्थ्य-भवन है, जिसकी कितनी ही शाखाएँ शहर के भिन्न भिन्न हिस्सों में बनी हैं।

---

[1] १ वर्गमीतर=१०·५६२ वर्गफुट

१० पोलीक्लीनिक (विविध रोग चिकित्सालय), ५ डिस्पेंसरी और कोढ़ियों स्वास्थ्य-परामर्शशालाएँ तैयार है। नगर के हर एक मुहल्ले में एक दिन का और एक रात का सेनीटोरियम है। ५० चिकित्सा-स्थान मौजूद है। इनके अतिरिक्त मिस्क के १० अस्पतालों में २००० चारपाइयों का प्रबन्ध है। ऐम्बुलेंस की गाडियो मे ला कर प्रतिदिन ५०० मरीज़ों की चिकित्सा होती है।

साम्यवादी सरकार ने स्त्रियों के अधिकार की रक्षा के लिए विशेष ध्यान दिया है। माँ और बच्चे के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए बड़े ऊँचे पैमाने का आयोजन किया गया है। कई हजार बच्चों की देखभाल के लिए ७० बच्चेखाने बनाये जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त माँ और बच्चो के लिए ख़ास इंस्टीट्यूट और पचासो परामर्श-स्थान है।

मिस्क के पुनर्निर्माण की जो बडी योजना है, उसमें स्वास्थ्य-रक्षा की ओर और भी खयाल रखा गया है। २४ संस्थाएँ इसके लिए बनाई जायँगी जिसमें १४०० रोगियों के लिए ४ सेनीटोरियम, २८०० चारपाइयो के साथ ३ अस्पताल, १७०० चारपाइयो और बहुत से प्रसूति-शालाओं के साथ ३ स्थायी सेनीटोरियम बनने जा रहे हैं। मिस्क की सडको पर अब बहुत सी सुन्दर इमारतें बन गई हैं। विश्वविद्यालय की दूर तक फैली भव्य इमारतें चिकित्सा-केन्द्र, औद्योगिक-म्यूज़ियम, प्रेस-भवन, विशेषज्ञ-भवन, अनेक होटल, स्कूल और एपार्टमेंट (घर) बड़े विशाल रूप में बने है। गवर्नमेंट-भवन, लाल-सेना-भवन, विज्ञान एकेडेमी-भवन तथा दूसरी इमारतें वास्तु-कला के सुन्दर उदाहरण हैं। स्वास्थ्य-रक्षा, शिक्षा-प्रचार, सांस्कृतिक उन्नति के कारण बीमारियो और मृत्यु पर बडा असर हुआ है। युद्ध के पहले की अपेक्षा अब मृत्यु-संख्या एक-तिहाई रह गई है।

*** ***

गोर्की प्रान्त—निजनीनोवोग्राद् का नाम दुनिया में मशहूर था।

खास कर अपने उस बड़े मेले के कारण जो कि संसार का सबसे बड़ा मेला था। इस मेले में एशिया और यूरोप के बहुत से भागों के व्यापारी और ज़मींदार आते थे। ख़रीद-फ़रोख़्त में नफ़ा नहीं, लूट थी। २० वर्ष के सोवियत्-शासन ने नाम के साथ साथ इसका सारा ढाँचा ही बदल दिया। यहाँ के गाँव की ग़रीबी उस समय अपना सानी नहीं रखती थी। उनका काम था पल्लादारी और लकड़ी लादना। अधिकांश को तो काम भी मयस्सर न था।

अब नाम बदल कर प्रसिद्ध लेखक के नाम पर गोर्की हो गया है। सोवियत्-संघ के प्रधान, औद्योगिक और सांस्कृतिक-केन्द्रों में से वह एक है। पिछली दो पंचवार्षिक योजनाओं में सैकड़ों फैक्टरियाँ और विशाल कारखाने बने हैं। अपनी मशीनरी तथा टेकनीक में वह बिलकुल नये हैं। हज़ारों कोलखोज़ों के खेत गोर्की के ट्रैक्टरों (मोटरहलों) से जोते जाते हैं; और देश की करोड़ों एकड़ खेती का काटना-दाँवना गोर्की की कंबाइन मशीनों से होता है।

१९१३ में सारे प्रान्त के ४६१ कल-कारखानों में ५० हज़ार कमकर काम करते थे। १९३६ में १०४० फैक्टरियाँ और कारखाने थे, जिनमें काम करनेवाले मजदूरों की तादाद २ लाख २० हज़ार थी। गोर्की प्रान्त की सम्पूर्ण उपज में आधा भाग बनी हुई मशीनों का है। मोटरें, डीसेल मोटर इंजन, दर्जनों प्रकार की मशीनें, औज़ार, काग़ज़ के मिलों की मशीनें, यहाँ तैयार की जाती हैं। सिर्फ गोर्की प्रान्त के कारखानों में इतनी मशीनें, औज़ार बनते हैं, जितने सारा ज़ारशाही रूस में बनाते थे। उस समय थोड़े से छोटे छोटे काँच-कारखाने तथा और आधे दस्तकारी जैसे कारखाने थे, जिनकी जगह अब बड़ा जबर्दस्त काँच-उद्योग तैयार होगया है। १९३६ में जितना काँच तैयार हुआ था, वह क्रान्ति से पहले का पँचगुना था।

इस एक ज़िले में जितनी बिजली तैयार होती है वह १९१३ के सारे रूस की बिजली का $\frac{१}{०}$ है। लेनिन् की योजना के मुताबिक देश को

विद्युन्मय बनाने का काम शुरू हुआ। बड़े भारी भारी बिजली के पावर स्टेशन बनाये गये जो सिर्फ केन्द्र के कारखानों और फैक्टरियों को ही बिजली नहीं देते, बल्कि कोलखोज़ी गांवों तक में उसका प्रचुर प्रचार हो गया है। भारी उद्योग के कारखाने तो बड़े बड़े हैं ही, बनियान और कपड़े की फैक्टरियाँ—कपड़े की फैक्टरी तो पहले इस जिले में अज्ञात थी—

तीन छात्राएँ (गोर्की)

कोड़ियों तैयार हुई है। चमड़ा सिझाने और जूता बनाने की भी कई फैक्टरियाँ जिले में खुली है।

गोर्की जिले की खेती में तो आमूल परिवर्तन हुआ है। जोते खेत, ३२,८०,००० एकड़ से ५,८२,००,००० हो गए। गेहूँ के खेत तो तब से पँचगुने हो गये। १९३० से पहली जुलाई १९३७ तक ट्रैक्टर १६३ से ४४७५ हो गये। कम्बाइन (काटने दाँवने की मशीन), ट्रक (खुली लारी) और दूसरी कृषि-संबंधी मशीनों में भी इसी प्रकार वृद्धि हुई है। पशु-पालन बहुत तेजी से आगे बढ़ा है। पशु-पालक गाँव १९३४ में १६६० थे। पहली जनवरी १९३७ को ६४६८ अर्थात् चौगुना—हो गये। उतने ही समय में कोलखोज़ी किसान ३७३०० की जगह १५६८०० हो गये।

कोल्खोज़ी गाँवों में भी बुड्ढे लोगों के लिए कितने ही भवन बनाये गये हैं। १९२४ की अपेक्षा ज़िले के अस्पतालों की संख्या दूनी हो गई है। अस्पतालों में मरीज़ों की चारपाइयाँ तो उससे भी ज़्यादा तेज़ी से बढ़ी हैं। अब उनकी संख्या ७६६१ है। हाल में बने प्रसूतिका-गृह में चारपाइयों की तादाद ८७ से १५९५ उसी समय में हो गई। पूँजीवाद के अधीन रहते समय मज़दूर औरतों के लिए बच्चाखाना का कोई प्रबन्ध नहीं था। १९३७ में १,०४,००० से अधिक बच्चे गोर्की प्रान्त के बच्चाखानों में थे।

पानी का पाइप, सेव्रेज् (मल तथा कूड़ा कर्कट के बहा ले जाने के लिए बनी नहरें), ट्रामवे और एपार्टमेंट (घरों) की कतार की कतार ने ज़िले के रूप में बहुत परिवर्तन किया है। नये मकानों के बनाने में भी बड़ी फ़ुर्ती से काम लिया जाता है।

जब से अनिवार्य प्रायमिक शिक्षा स्थापित हुई है, तब से हाई स्कूलों की संख्या बढ़ गई है। ज़िले में ६२६ हाई स्कूल हैं जिनमें ३ लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं। इन स्कूलों के सिवा १२१ फैक्ट्री स्कूल और ६५ टेकनिकल स्कूल के अतिरिक्त और बहुत से औद्योगिक स्कूल और कालेज बने हैं।

१९१४ में ११ समाचार-पत्र थे, जिनकी ग्राहक-संख्या ५४ हज़ार थी। आज १३५ समाचार-पत्र हैं जिनकी ग्राहक-संख्या ४,७५,२०० है।

१५—मास्को नगर

सोवियत् राजधानी मास्को ५५° ४५′ उत्तर अक्षांश और ३७° ३७′ पूर्वी देशान्तर में मास्को नदी तथा उसकी शाखा ओका के किनारे अवस्थित है। यह सोवियत् के यूरोपीय भाग के केन्द्र मे है और यहाँ से चारों ओर को ११ रेलवे लाइनें जाती हैं। १९३५ मे शहर २८५ वर्ग-किलो-मीतर मे बसा था और मास्को-नगर-योजना के अनुसार १९४५ में वह ६०० वर्ग-किलोमीतर हो जायगा।

मास्को शहर २३ जिलों में बँटा हुआ है, जिनमें कुछ के नाम लेनिन्स्की, स्तालिन्स्की, फ्रुन्ज़ेन्स्की, सोवियत्स्की, स्वेर्द्लोवस्की, कोमिन्तेर्नोव्स्की, जेर्जिन्स्की, कुईबिशेव्स्की, बौमान्स्की, मोलोतोव्स्की, किरोव्स्की है।

१९३६ मे मास्को की जनसंख्या ३६ लाख थी। संसार में इसका नंबर छठा है। बोल्शेविक चाहते तो १० वर्ष मे इसे अव्वल बना देते। लेकिन दुश्मन के हवाई जहाज़ों के डर मे लन्दन और तोकियो की परेशानी को देखकर वे वैसा नहीं करना चाहते। मास्को की जनसंख्या निम्न प्रकार बढ़ी है—

१८७१	६ लाख २ हज़ार
१८९७	१० लाख ३९ हज़ार
१९१२	१६ लाख १८ हज़ार
१९२७	२० लाख ३२ हज़ार
१९३२	३१ लाख ३५ हज़ार
१९३६	३६ लाख ३५ हज़ार

सोवियत् के मज़दूरों की संख्या का ९ सैकड़ा यहीं रहता है। मास्को में एक भी आदमी बेकार नहीं है। तनख्वाह साल बसाल बढ़ती जा रही है। १९२८ की अपेक्षा १९३५ में तनख्वाह दुगुनी (२०४ सैकड़ा) हो गई।

१९३६ के आरंभ में मास्को के कमकरों में ४०·९ सैकड़ा स्त्रियाँ थीं। मास्को की जनसंख्या में १० लाख से ऊपर संख्या विद्यार्थियों की है।

*** ***

इतिहास—मास्को का नाम पहले पहल ११४७ ई० में सुनने में आता है। पुरातत्त्ववेत्ताओं का कहना है कि बस्ती उससे पहले भी थी।
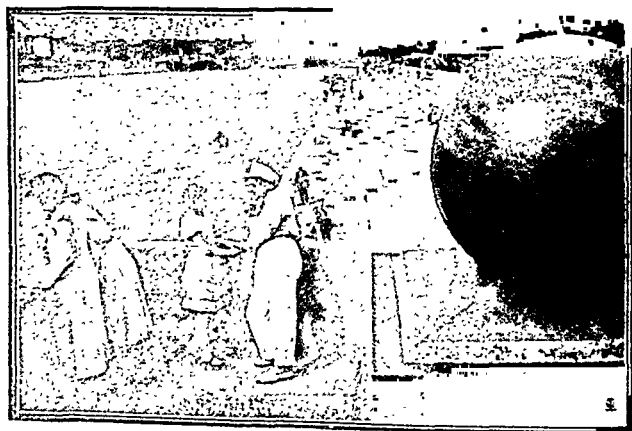
मास्को (मॉस्क्वा) नदी

प्राचीन नगर उस जगह था, जहाँ मास्को और नेग्लिन्नया नदियाँ मिलती थीं। इसी जगह क्रेम्लिन् का दक्षिण-पश्चिमी भाग अवस्थित है। इस जगह एक क़िला था, जिसके तीन तरफ़ पानी होने से उस समय के अस्त्र-

शत्रुओं के लिए वह काफी सुरक्षित था। पुराने समय में मास्को की भूमि में कितनी ही छोटी छोटी नदियां थीं, जिनमें अब यवूजा और नेतुन् दो ही बच रही हैं, बाकी जमीन के भीतर भीतर जानेवाली गन्दे पानी की नहरों में मिला दी गई हैं।

सैनिक खयाल ही से मास्को को आदर्श स्थान नहीं मिला था, बल्कि यह संसार के बड़े बड़े वणिक्-पथों के मिलने के स्थान पर था। बाल्तिक समुद्र-कास्पियन समुद्र, अजोफ समुद्र तथा यूरोप और एशिया से आनेवाले व्यापारी मार्ग यहीं आ मिलते थे। उस समय रूस बहुत से छोटे छोटे सामन्तों में बँटा था, जो कि बराबर आपस में लड़ा करते थे। वे सभी कजान् के तातार खानों को कर दिया करते थे। मास्को के सामन्त, खान की ओर से कर उगाहने के लिए नियुक्त किये गये थे।

केन्द्र में होने की वजह से मास्को के सामंतों की आमदनी भी बढ़ रही थी। पहले ये लोग एक दूसरे सामन्त ब्लादिमिर् के अधीन थे, लेकिन कुछ ही समय में वे रूस के अन्य सामन्तों की अपेक्षा अधिक बलवान् और धनी हो गये। उन्होंने क्रय और विजय द्वारा राज्य की सीमा बहुत बढ़ा ली। इवान् कलिता (१४६२-१५०३) के समय सारे रूस को एक करने का काम आरंभ हुआ, और पन्द्रहवीं शताब्दी में तृतीय इवान् (१४६२-१५०५) के समय सारे रूस का एक राज्य बना। मास्को उसकी राजधानी घोषित हुई। उसी वक्त (१४८०) रूस कजान के खानों की अधीनता से बिल्कुल स्वतंत्र हो गया। आरंभ में सामन्त लोग बहुत कुछ स्वतंत्र थे, लेकिन अब मास्को के इन महासामन्तों ने अपने प्रभाव को बढ़ाते हुए छोटे सामन्तों की स्वतंत्रता का अपहरण करना शुरू किया। सोलहवीं सदी के आरंभ में ये सामन्त एक तरह के अमीर और बड़े जमींदार भर रह गये। इवान् तृतीय और उसके उत्तराधिकारियों के शासन में सामन्तों ने कई बार विद्रोह किया, लेकिन उन्हें सख्ती से दबा दिया गया। कितनों की जागीर छीनी गई, कितने निर्वासित हुए और कितने फाँसी पर चढ़े। ज़ार (चार्)

इवान् चतुर्थ (१५३३–८४) अपने भारी अत्याचार के लिए क्रूर इवान् कहा जाता था।

क्रूर इवान् ने सामन्तों की शक्ति नष्ट करने के लिए **'ओप्रिच्निना'** का आरंभ किया। जिन सामन्तों से वह नाखुश होता, उनकी जागीरों को छीन लेता, यही **ओप्रिच्निना** था। फिर छोटे छोटे ज़मींदारों और अपने दरवारियों को **ओप्रिच्निना** से छीनी हुई ज़मींदारियों को बाँट देता था। इन नये अमीरों को **ओप्रिच्निकी** कहते थे। खुशामद की वजह से तथा इस खयाल से भी कि पुराने सामन्तों और ओप्रिच्निकियों से एक ही साथ विगाड़ कर लेना हानिकर होगा, इन पर राज्य का कोई अंकुश नहीं था; और वे खुल कर किसानों और साधारण जनता पर अत्याचार करते थे। तभी से रूसी भाषा में **ओप्रिच्निक्** अत्याचार का पर्याय माना जाने लगा। **बाल्तिक्** समुद्र तक पहुँचने के लिए क्रूर इवान् वहुत उत्सुक था; और इसके लिए उसने स्वीडेन और पोलेंड से कई लड़ाइयाँ लड़ीं, लेकिन असफल रहा। वह अपने राज्य को **कज़ान्, अस्त्राख़ान्**, और सिवेरिया के विजयों द्वारा पूर्व और दक्षिण में वहुत दूर तक वढ़ाने में सफल हुआ। **वोल्गा** की सारी उपत्यका—जो कि पूर्व और पश्चिम के व्यापार का भी मिलन स्थान थी—उसके हाथ में आ गई। ईसाई धर्म की यूरोप में पहले दो शाखाएँ थीं। एक कैथोलिक (उदार) और दूसरे **अर्थोडक्स** (सनातनी)। कैथोलिकों का केन्द्र था रोम में, इसलिए उन्हें रोमन कैथोलिक कहा जाने लगा। **अर्थोडक्स** सम्प्रदाय ने ग्रीस (यूनान) से अपना संवंध जोड़ा। वह **बैजंटाइन्** राजवंश का कृपापात्र था और इस प्रकार **बैजंटाइन्** साम्राज्य की राजधानी कुस्तुन्तुनिया (**कान्स्तन्तिनो-पोल=कान्सतन्तिनोपुर**) ग्रीक अर्थोडक्स सम्प्रदाय का भी केन्द्र हो गया। जव तुर्कों ने कुस्तुन्तुनिया को दखल कर लिया, तो **अर्थोडक्स** सम्प्रदाय के प्रधान गुरु **मेत्रोपोलितन** को भी वहाँ से भागना पड़ा। १३४५ में **मेत्रोपोलितन** ने मास्को को अपना

निवासस्थान बनाया। इस प्रकार मास्को ग्रीक-अर्थोडक्स-सम्प्रदाय—जो कि पीछे सारे रूस में सर्वमान्य धर्म हो गया—का केन्द्र और तीर्थ सा बन गया। मास्को के ज़ारों का काम था अपने धर्म (ग्रीक अर्थोडक्स सम्प्रदाय) के प्रति अपनी अधिक श्रद्धा दिखला कर सम्प्रदाय की सहानुभूति प्राप्त करना। मेत्रोपोलितन् और उसका सम्प्रदाय ज़ार को मदद दे कर लाभान्वित हो सकते थे। इस प्रकार चौदहवीं सदी में जो मेत्रोपोलितन् और ज़ारों का गँठबंधन हुआ, वह बराबर लाल क्रान्ति तक उसी तरह चला आया। धर्म के अगुआ, ज़ार के अधिकार को अक्षुण्ण रखना अपना धर्म समझते थे।

क्रूर इवान् के समय में मास्को नगर की शक्ल में बहुत तबदीली हुई। बारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में शहर क्रेम्लिन् के सिर्फ ½ हिस्से ही में बसा था। यह एक व्यापार का केन्द्र था, जिसकी रक्षा के लिए सेना का प्रबंध
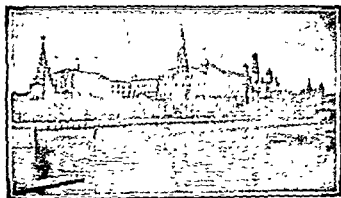
क्रेम्लिन् (मास्को)

था और चारों ओर लकड़ी का प्राकार था। तेरहवीं-चौदहवीं सदी में मास्को के तीन भाग थे। एक क्रेम्लिन् (क्रेम्ल=दुर्ग)—नगर का किला-बन्द भाग,

जहाँ कि सामन्त रहता था। दूसरा पोसद्—क्रेम्लिन् के बाहरवाला भाग जहाँ पर व्यापारी और शिल्पी आदि रहा करते थे; और जिसे चीनी व्यापारियों की आमदरफ़्त तथा चीनी माल रखने के कारण पीछे किताई-गोरद् (चीनी नगर) कहा जाने लगा। तीसरा भाग मास्को नदी के पार था, जिसे जारेच्ये कहते थे। यह एक बड़ा गाँव सा मालूम पड़ता था।

सोलहवीं सदी के मध्य में आनेवाले पश्चिमी यात्रियों ने लिखा है कि मास्को लन्दन से बड़ा है। मास्को में सिबेरिया का समूर, रेशम चीन से, मसाला भारत से और बहुत सी दस्तकारी की चीजें यूरोप से आती थीं। मास्को में बहुत से शिल्पकार थे, लेकिन प्राय: सभी ज़ारों के दरबार और उसके दरबारियों की कृपा पर आश्रित थे।

मरने से कुछ समय पहले क्रूर इवान् ने अपने पुत्र इवान् से झगड़ कर उसे मार डाला। ज़ार के उत्तराधिकारी थे एक बच्चा दिमित्री और एक निर्बुद्धि फ़ेदोर्। फ़ेदोर् (१५८४–१५९८) को दरबारियों ने गद्दी पर बैठाया। वह नाममात्र का ज़ार था, सारा काम उसका साला बोरिस् गोदुनोफ़् करता था। फ़ेदोर् के मरने के बाद गोदुनोफ़् (१५९८–१६०५) ज़ार चुना गया। फ़ेदोर् निस्संतान मर गया और दिमित्री किसी दुर्घटना में मरा। बोरिस् के चुनाव को बड़े सामन्तों ने नहीं माना; क्योंकि बोरिस् छोटे सामन्तों में से आया था। बोरिस् भी क्रूर इवान् की ही तरह अत्याचार करता था। पुराने सामन्तों ने रोमनोफ़् सरदारों और शुइस्की सामन्तों के नेतृत्व में विद्रोह किया। बोरिस् के राज्यकाल ही में किसानों को धीरे धीरे दबा कर अर्द्धदास के रूप में परिणत कर दिया गया। यह वही समय था, जब हिन्दुस्तान में अकबर शासन कर रहा था।

जिन किसानों को अर्द्धदास जैसा जीवन पसन्द नहीं था, वे घर-बार छोड़कर मास्को की अमलदारी के बाहर दोन् उपत्यका और उक्रइन् में चले गये। ये ही पीछे चलकर दोन् के कसाक् हुए।

१६०२–४ ई० में अकाल पड़ गया। किसान तथा दूसरे करदाता कर

देने में असमर्थ हो गये; जिससे आपस में बहुत झगड़े बढ़ गये। इस मौके को गनीमत समझ कर पोलैंड की नजर मास्को की तरफ घूमी। उसने एक नकली दिमित्री प्रथम होने के दावादार के पक्ष में हो कर १६०५ में—जिस साल कि अकबर मरा—मास्को पर कब्जा कर लिया। पीछे मास्को के सरदारों को अपनी गलती मालूम हुई। उन्होंने सामन्त वासिली शुइस्की के नेतृत्व में नकली दिमित्री को मार डाला। वासिली खुद सिंहासन पर बैठा। दक्षिण के कुछ सामन्तों ने वासिली को जार नहीं स्वीकार किया।
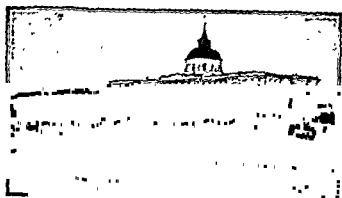
ह्वेरेस्त्नुदा (मास्को)

उन्होंने पहलेवाले दिमित्री को न मरा कह कर एक और दिमित्री के पक्ष में विद्रोह किया। इसी समय किसानों में भी धनी जमींदारों और सामन्तों के खिलाफ भाव फैल रहा था। किसानों का नेता था इवान् बोलोत्निकोफ्। बोलोत्निकोफ् की सेना मास्को की दीवारों के बिलकुल पास (कोलोमेन्स्कोये गाँव) तक चली आई थी, लेकिन यहाँ उसे हारना पड़ा।

इधर दूसरे दिमित्री के पक्ष में होकर पोलों ने कसाक् और दूसरे असन्तुष्ट समुदाय को लेकर मास्को पर धावा बोला। मास्को से चन्द मील पर तुशिनो (एक किलाबन्द) गाँव में वह ठहरा। इस प्रकार वासिली

शुइस्की और द्वितीय दिमित्री दो ज़ार हुए। पीछे दोनों को हटा कर पोलिश् सामन्त व्लादिस्लाव ज़ार बना। पोल मास्को के शासक हुए। उनका वर्ताव रूसियों के साथ ख़राब था। वह अपने को विजेता और रूसियों को रैयत समझते थे। रूसियों को इससे बड़ी आत्म-ग्लानि हुई। निज्नी नोव्गोरद् (वर्तमान गोर्की) के व्यापारी **मिनिन्** ने घूम घूम कर देश की स्व-तंत्रता के लिए धन जमा किया और सामन्त **पोजार्स्की** ने उसकी मदद की। १८२६ में इन दोनों के स्मृति-चिह्न लाल-मैदान में बने।
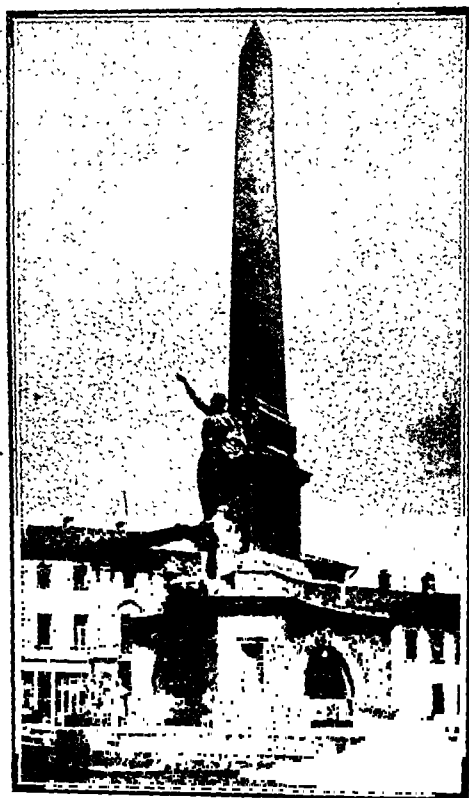
जय-स्तम्भ (मास्को)

अन्त में १६१२ में (जब कि जहाँगीर नूरजहाँ की सहायता से हिन्दुस्तान पर शासन कर रहा था) एक सामन्त मिख़ाइल् रोमनोफ़् (१६१३–४५ ई०) पोलों को हरा कर ख़ुद

सिंहासन पर बैठा। इस प्रकार १६१३ से लेकर १९१७ तक—३०४ वर्ष—रोमानोफ्-वंश ने रूस पर शासन किया। इसके शासन-काल में भी किसानों ने विद्रोह किया, लेकिन सामन्तों और अमीरों की मदद से दबा दिया गया।

प्रथम रोमानोफ् के पुत्र अलेक्सेइ मिखाइलोविच् (१६४५–१६७६) के शासन काल में फिर जनता ने विद्रोह किया। इस विद्रोह को नमक-विद्रोह (१६४८) कहते हैं; क्योंकि यह नमक पर कर लगाने के खिलाफ हुआ था। १६६२ में ताम्र-विद्रोह हुआ था। जार तांबे का पैसा चला कर चाँदी के भाव बेचना चाहता था। अलेक्सेइ के अन्तिम शासनकाल (१६६७–७१) में वोल्गा और उराल के किसानों ने स्तेपन् राजिन् के नेतृत्व में जमींदारों के खिलाफ घोर-विद्रोह किया। विद्रोह में भी किसानों को हारना पड़ा और राजिन् को मास्को में लाकर प्राणदंड दिया गया। एक सौ साल बाद (१७७३–१७७५) फिर किसानों ने येमेल्यन् पुगाचोफ् के नेतृत्व में जमींदारों के खिलाफ़ बगावत की। कज़ान के गरीब किसानों की हार हुई और मास्को में लाकर पुगाचोफ् का सिर काटा गया। अठारहवीं सदी के आरंभ में मास्को की महिमा काफी घट गई, जब प्रथम पीतर ने १७०९ में मास्को को बदल कर बाल्तिक के तट पर अपने बसाये पीतर्-बुर्ग नये नगर को अपनी राजधानी बनाई। इतना होने पर भी व्यापार, गृहशिल्प और उद्योग-धंधे के कारण मास्को अपने को काफी सँभाल सका।

१७वीं १८वीं सदी में मास्को की जनसंख्या धीरे धीरे बढ़ती ही रही। क्रेम्लिन् अब भी शासन-केन्द्र था। उससे पूर्व कितांईगोरद् और उसके बाहर बेलोगोरद् थे। ये प्राकार से घिरे हुए थे। कितांईगोरद् की दीवारें अभी हाल में (१९३४ में) गिराई गईं। बेलोगोरद् का प्राकार १८ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गिराया गया। सड़कें केन्द्र (क्रेम्लिन्) से चारों ओर को निकलती थीं; और वे बीच की वृत्ताकार दीवारों के द्वारों

को पार करती थीं। उस समय के मकान अधिकतर लकड़ी के थे। १८१२ में नेपोलियन् की फ़ौज मास्को में दाखिल हुई। उस समय आग लगने से बहुत से मकान जल गये। लेकिन जब नेपोलियन् की फ़ौज चली गई, तो कई अच्छे अच्छे मकान बने। १८२० के बने कितने ही अच्छे मकान आज भी मौजूद हैं।

पीतरबुर्ग की तरह मास्को भी कला और शिक्षा का केन्द्र रहा। १८वीं सदी के मध्य में रूस का पहला विश्वविद्यालय मास्को में बना। मास्को विश्वविद्यालय ने रूसी शिक्षा के इतिहास और सार्वजनिक विचार के निर्माण में १८३०–१८४० में बड़ा काम किया।

१८४० में मास्को में कपड़े बनाने की पहिली मिल् स्थापित हुई; लेकिन मज़दूरों की कमी से काम आगे नहीं बढ़ा। १८६० में जब किसानों
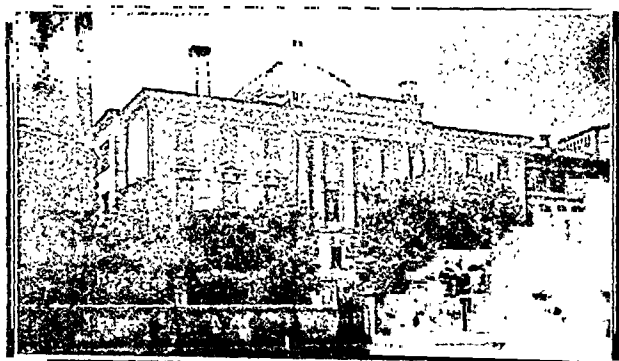
मास्को विश्वविद्यालय

को अर्द्धदासता से मुक्त कर दिया गया, तो खेतिहर मज़दूर फैक्टरियों में भरती होने लगे। कहने को किसान स्वतंत्र कर दिये गये थे, लेकिन अब भी उनकी भूमि के मालिक ज़मींदार थे।

१८६० से पहले मास्को अधिकतर धनी जमींदारो के रहने की जगह थी; और उन्ही के बडे बडे महल नगर की शोभा बढाते थे। पीछे हथियार बनाने का कारखाना, बुनने की मिल और कमकरो की बैरक शहर की बाहरी ओर बनने लगे। १६वी और २०वी सदी मे मास्को में कई नाट्यशालाओं, चित्रशालाओ और बृहद् प्रकाशन-गृहो की स्थापना हुई। अन्त में पूँजीपतियो और व्यापारियो के हाथो मे म्युनिसिपल शासन का काम चला गया। लेकिन ये पूँजीपति शासक शहर के पुनर्निर्माण मे असमर्थ थे, क्योकि हर एक सडक को सीधी और चौडी करने में वैयक्तिक सम्पत्ति का सवाल आ जाता था।

राजनैतिक क्षेत्र मे मास्को के पूँजीवादी ज़ारशाही की निरकुशता को पसन्द नहीं करते थे, लेकिन तो भी मिश्री की डली मुंह में डाल कर
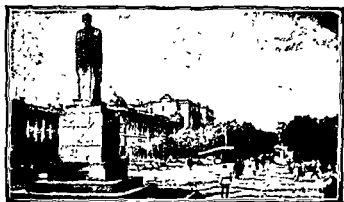
तिमिर्याज़ेफ् की मूर्त्ति (मास्को)

'हुजूर सरकार माँ बाप' के साथ कुछ नर्म-नर्म आलोचना भर करते थे। कभी कोई ज़बान निकालने मे थोड़ा आगे भी बढता था, तो भी क्रान्ति और उसके आन्दोलन का विरोध करना वह अपना फ़र्ज़ समझता था। १६०५

श्रमिक दल' नाम मात्र बाक़ी रह गया।

क्रान्तिकारी मार्क्सवाद के सिद्धान्तों का प्रचार करने के लिए लेनिन् ने १६०० के अन्त में "इस्क्रा" (चिनगारी) पत्र निकाला। दो साल बाद उक्त जनसत्ताक-समाजवादी-दल की (१६०३) दूसरी कांग्रेस बुलाई गई। इस कांग्रेस में पार्टी में मतभेद हो कर दो टुकड़े हो गये। बहुमत लेनिन् के पक्ष में था। बहुमत पक्ष या बोल्शेविक पार्टी लेनिन् के नेतृत्व में अलग हो गई। मेन्शेविक या अल्पमत पक्ष **मर्तोफ़्, अख़िल्रोद** आदि के नेतृत्व में अलग काम करने लगा। मास्को की क्रान्तिकारी संस्थाएँ लेनिन् के अनुयायियों के साथ थीं।

१६०२-३ में रोस्तोव् (दोन् पर) बाकू, **ओदेसा** आदि जगहों में भी हड़तालें शुरू हुईं। इनका संबंध राजनीति से स्पष्ट था। **उक्रइन्** और **वोल्गा** की उपत्यका में किसानों के आन्दोलन छिड़े। चारों तरफ़ वायुमंडल गर्म हो पड़ा और अन्त में ६ जनवरी १६०५ के हत्याकांड—जो कि **पीतरबुर्ग** में शरद्-प्रासाद के सामने ज़ार की आज्ञा से हुआ था—के बाद इसने क्रान्ति का रूप धारण कर लिया।

अप्रैल-मई १६०५ में तृतीय पार्टी काँग्रेस—जो सिर्फ बोल्शेविकों की थी—बैठी। उसने सशस्त्र युद्ध की तैयारी का प्रस्ताव स्वीकृत किया। जून के महीने तक मास्को के बोल्शेविकों ने कमकरों की सैनिक टुकड़ियाँ बनानी शुरू कीं। धन जमा किया गया। बारूदवाले हथियार ख़रीदे गये। पार्टी की प्रार्थना पर कमकरों ने ख़ुद नाना प्रकार के हाथ के बने हथियार तैयार किये। **सोकोल्निकी, इज़्माइलोवो** और दूसरे जंगलों में चाँदमारी का अभ्यास किया जाता था।

इस साल के अगस्त-सितंबर के महीनों में मास्को की उच्च शिक्षण-संस्थाएँ—विशेष कर विश्वविद्यालय—क्रान्तिकारी संस्थाओं के केन्द्र बन गये। क्रान्ति के इस भयंकर तूफ़ान को देखकर ज़ारशाही घबरा गई। उसने आजकल के फासिस्टों की तरह 'काले सैकड़ों' को संगठित किया

लड़ाई के लिए जनता का एक नये ढंग का संगठन हुआ। ५ दिसंबर (२२ नवम्बर) को कमकर प्रतिनिधियों की सोवियत् मास्को में वनाई गई। इसमें सभी क्रान्तिकारी दलों, मज़दूरसंघों आदि के प्रतिनिधि सम्मिलित थे। सैनिक-प्रतिनिधि-सोवियत् भी स्थापित हुई, लेकिन उसकी वठक एक ही वार हो पाई। १६ (६) दिसंवर को मास्को सोवियत् ने दूसरे दिन दोपहर से सार्वजनिक हड़ताल का प्रस्ताव पास किया। इसी हड़ताल को सशस्त्र युद्ध में परिणत करना था। निश्चित समय पर सभी कारख़ाने और रेलें वन्द हो गई। २२ (९)[1] तारीख़ को मास्को में जगह जगह मोर्चेवन्दियाँ हो गई। सारी जनता ने वाढ़ लगाने में मदद की। लड़नेवालों के लिए लोग भोजन लाते थे और अपने घरों में उन्हें छिपाते थे। उसी दिन सरकारी फ़ौजों ने फ़िद्लर हाई स्कूल को घेर कर गोलावारी शुरू की। यहाँ मुक़ावले में थे अधिकतर स्कूल के नौजवान। मास्को में यह लड़ाई १० दिन (३१ दिसंवर) तक जारी रही। लाल प्रेस्न्या के कमकरों ने अपनी वीरता का जवर्दस्त परिचय दिया। यद्यपि ज़ार की भारी सेना के सामने उन्हें हारना पड़ा, लेकिन कौन कह सकता है कि उनकी क़ुर्वानियाँ वेकार गई। लाल प्रेस्न्या के कमकरों को पत्र लिखते वक़्त १९२० में लेनिन् ने कहा था—"दिसंवर १९०५ के सशस्त्र विप्लव के पहले रूसी जनता शोपकों के विरुद्ध सामूहिक सशस्त्र युद्ध के संचालन में अयोग्य थी, लेकिन दिसम्वर के वाद फिर वह वही जनता नहीं रह गई। वह विलकुल वदल गई। विप्लव ने उन्हें पक्का कर दिया। उसने उन लड़नेवाले अगुओं को तैयार किया, जो १९१७ में विजयी हुए।"

१९०५ का विद्रोह दवा दिया गया और चारों तरफ़ निर्जीविता सी दिखलाई पड़ने लगी। लेकिन वोल्शेविक पार्टी ने अपने काम को एक मिनट

---

[1] पुरानी रूसी तारीखें अंगरेजी तारीख़ों से १३ दिन पीछे रहा करती थीं।

भी बन्द नहीं किया। ये बोल्शेविक ही थे, जिन्होंने फरवरी-मार्च १९१७ की प्रथम क्रान्ति कराने के लिए सारा आयोजन किया। मास्को के कमकरों ने पेत्रोग्राद् के कमकरो और सिपाहियो के कामों मे सहायता पहुँचाई। बोल्शेविको का बल बढते देख करेन्स्की ने यह सोचकर मास्को में राज्यकान्फ्रेंस बुलाई कि इस प्रकार वह पेत्रोग्राद् के कमकरो और सैनिको
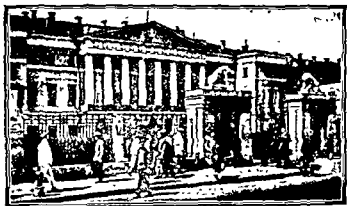
क्रान्ति-म्यूजियम (मास्को)

के क्रान्तिकारी प्रभाव से बचा कर अपने मतलब के प्रस्ताव पास करा सकेगा। लेकिन इसका स्वागत मास्को के कमकरो ने एक सार्वजनिक हड़ताल द्वारा किया। १८ (५) सितंबर (१९१७) को मास्को के कमकरो और सैनिकों के प्रतिनिधियों की सोवियत् ने बोल्शेविको के प्रस्ताव को स्वीकृत करते हुए कहा—"सभी राज्य-शक्ति सोवियतो को।"

पेत्रोग्राद् की तरह मास्को ने भी विजयी लाल-क्रान्ति में भाग लिया। मास्को के बोल्शेविको ने युद्ध-सचालन के लिए सैनिक-क्रान्तिकारिणी-समिति स्थापित की। पूँजीवादी दलों ने मेन्शेविको और समाजवादी क्रान्ति-कारियो के साथ मिल कर सार्वजनिक-रक्षा-समिति स्थापित

समिति ने धनिक सैनिकों (कैडेट) की मजबूत शक्ति से मिलकर क्रान्ति का जबर्दस्त मुक़ाबला किया। ६ नवंबर (२७ अक्तूबर) से १५ (२) नवंबर तक खूनी गृहयुद्ध, मास्को के चौकों और सड़कों पर तथा क्रेमलिन् की चहारदीवारियों के चारों तरफ़ होता रहा। कमकरों ने सभी कारखानों और फैक्टरियों से निर्वाचित कर अपना लाल गारद कायम किया। क्रान्तिकारी पलटनों से मिलकर इस लाल गारद ने क्रान्ति-विरोधियों के साथ लोहा लिया। कैडेटों और अफ़सरों ने क्रेम्लिन् की मोर्चाबन्दी खूब की थी। ५ दिन की लड़ाई के बाद—जिसमें क्रान्तिकारी कमकरों और सैनिकों ने अभूतपूर्व त्याग और साहस का परिचय दिया—दुश्मनों ने आधीनता स्वीकार की। इस लड़ाई में क्रान्ति-विरोधियों ने गिर्जों के घंटा-

नक्षत्रभवन (मास्को)
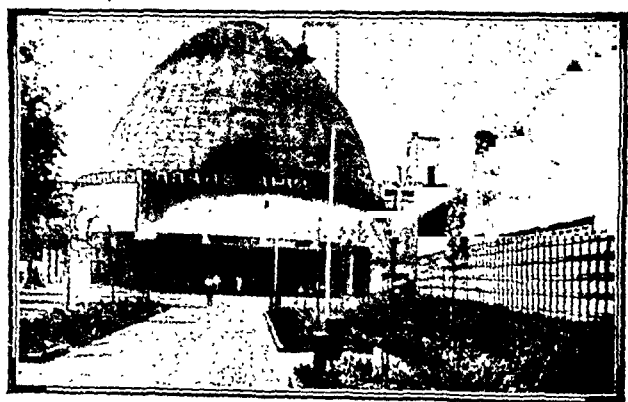
घरों तक पर मशीनगनें बैठाई थीं और ईसाई पुरोहितों और उनके धर्म की सहायता और सहानुभूति क्रान्ति-विरोधियों के साथ थी। क्रेम्लिन् के लिए लड़ने में क्रान्तिकारी बहुत संख्या में मारे गये। लाल मैदान पर

क्रेमलिन् की दीवारों के पास इन वीरों की सामूहिक समाधि बनी हुई है।

क्रान्ति की विजय हुई। १५ (२) नवंबर १९१७ को मास्को में सोवियत शासन की दृढ़ नींव पड़ी। २५ (१२) मार्च १९१८ को—२०० वर्ष बाद—मास्को फिर राजधानी बना। लेकिन अब वह ज़ार की राजधानी न थी, बल्कि संसार के सर्व प्रथम साम्यवादी सरकार की राजधानी थी। पेत्रोग्राद् से राजधानी को मास्को बदलने की बात जब लेनिन् ने कही, तो लोगों ने कहा—"क्रान्ति के युद्ध की सफलता और उस वक्त की कितनी ही आरंभिक घटनाएँ पेत्रोग्राद् में हुई हैं, इसलिए जनता के भावुक हृदय का उस नगर से विशेष प्रेम हो गया है।"
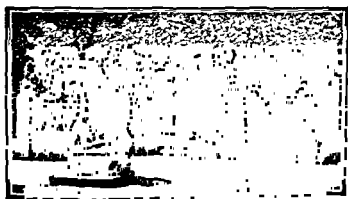
चिड़ियाखाना (मास्को)

लेनिन् ने कहा—"भावुकता पैदा करनेवाला सोवियत्-शासन है। मास्को चले जाने पर लोगों का वैसा ही प्रेम मास्को के साथ भी हो जायगा।"

*** ***

नव-निर्माण—सोवियत् शासन की स्थापना के समय रूस के अन्द

भागों की तरह मास्को की भी आर्थिक अवस्था नष्टप्राय हो चुकी थी। महायुद्ध के समय उसके जन धन का दोहन हुआ था। १९१७—२० में घर और बाहर के शत्रुओं ने सोवियत्-सरकार पर ज़बर्दस्त प्रहार करना शुरू किया। इस प्रकार मास्को के पुनर्निर्माण की तो बात ही क्या, ईंधन और कच्चे माल के अभाव से रही सही फ़ैक्टरियों में से भी बहुत सी बन्द हो गईं।

गृह-युद्ध की समाप्ति के बाद पुनर्निर्माण का काम शुरू हुआ। बन्द हुई फैक्टरियों और कारखानों को फिर से चालू किया गया। मास्को की म्युनिसिपलिटी की हालत भी धीरे धीरे सुधरने लगी। पहले पहल कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार का सारा ध्यान उद्योग और कृषि की ओर था; लेकिन प्रथम और द्वितीय पंचवार्षिक योजनाओं ने—विशेष कर १९३१ के बाद—नगर के जीवन में भारी परिवर्तन किया। १० जुलाई १९३५ को सरकार और पार्टी ने मास्को के पुनर्निर्माण की दस वार्षिक योजना स्वीकार की जो कि १९४५ में खतम होगी। इस योजना के अनुसार अभी ही मास्को की सड़कों और मकानों में भारी परिवर्तन होने लगा है; और सारी योजना के समाप्त होने के बाद तो उसका रू ही बदल जायगा।

मास्को के पुराने मुहल्लों—जहाँ कमकरों की दरिद्रता साकार रू धारण किये रहती थी—का अब पता नहीं। उन जगहों पर अब चौतल पंचतल्ले हवादार साफ़ मकान हैं। स्कूल, अस्पताल, प्रसूति-गृह बने है पानी, बिजली, गैस, पाख़ाने के पंपों का इंतजाम है। दो ज़मीन के भीत जानेवाली रेलें तैयार हो गई हैं और तीसरी बन रही है। मास्को प जितना पानी खर्च करता था, अब उससे ६ गुना ज़्यादा ख़र्च करता सड़कों का क्षेत्रफल २० गुना बढ़ा है।

उद्योग—(प्रथम पंच वार्षिक योजना)—ज़ारशाही के ज़माने मे मास्को उद्योग-केन्द्र था। लेकिन क्रान्ति के बाद फ़ैक्टरियों और कारख
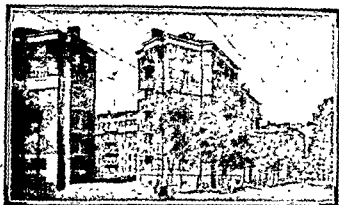
कमकरों के घर (मास्को)
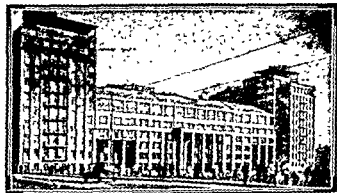
कमकरों के घर (मास्को)

का जो परिवर्तन और परिवर्द्धन हुआ है, इसका उससे मुकाबला नहीं किया

जा सकता। भारी उद्योग[१] बहुत तेज़ी से बढ़ा है। हलका[२] उद्योग और खाद्य-उद्योग का जड़मूल से पुनर्निर्माण हुआ है। मशीनों में नये से नये आविष्कारों का प्रयोग किया गया है।

कुछ उद्योग तो बिलकुल नये—मास्को ही के लिए नहीं, बल्कि सारे देश के लिए—स्थापित हुए हैं। मोटर, माप-यंत्र, घड़ी, एनिलाइन के

कमकर-परिवार (मास्को)

रंग, बाइसिकिल, बिजली का सामान, आदि चीजें बनानेवाली फ़ैक्टरियाँ इसी प्रकार की हैं। संसार-प्रसिद्ध फ़ैक्टरियाँ स्तालिन्-मोटर-फैक्टरी,

---

[१] लोहे, कोयले आदि आरंभिक वस्तुओं के उत्पादन तथा कपड़े आदि बनानेवाली मशीनों को बनानेवाले कारखाने—अर्थात उद्योग के मूलभूत उद्योग को भारी उद्योग कहते हैं।

[२] भारी उद्योग से उत्पन्न सामग्रियों से लेकर आगे चलनेवाला उद्योग हलका उद्योग कहलाता है।

हँसुआ-हथौड़ा-फैक्टरी, कुइबिशेव्-विद्युत्-कारखाना आदि तो प्रायः शून्य से आरंभ हुये हैं।

स० म० स० र० के उद्योग का १५ सैकड़ा मास्को में है। १९३९ के आरंभ में मास्को में २२१० कल-कारखाने थे। सोवियत् के सारे उद्योग की उपज में मास्को का हाथ ५.७३ सैकड़ा (१९३६) है। १९३५ में जितना माल मास्को के कारखानों ने बनाया, वह लड़ाई से पहले का दस गुना था। मास्को के सभी कल-कारखाने समाज के हैं; व्यक्ति कहीं मालिक नहीं हैं। १९३५ में यहाँ के कल-कारखानों में १९ लाख कमकर थे।
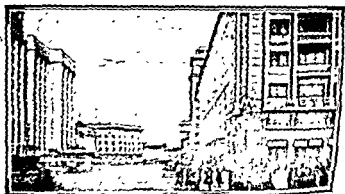
नये मकान (मास्को)

द्वितीय पंचवार्षिक योजना—प्रथम पंचवार्षिक योजना के [illegible] माल में मास्को के उद्योग-धन्धों ने ४॥ अरब रूबल का [illegible] द्वितीय पंचवार्षिक योजना के अन्त (१९३७) में उन्हों [illegible] माल तैयार किया। इसीसे मालूम कर सकते हैं [illegible] धन्धों में कितनी तरक्की हो रही है। सरकार [illegible] मास्को में नहीं बढ़ाना चाहती। वह चाहती है कि [illegible] में बराबर बँटें जिसमें अधिक जन और [illegible]

लड़ाई के वक़्त बहुत संकट का सामना न करना पड़े।

द्वितीय पंचवार्षिक योजना में प्रथम की अपेक्षा मोटरों की उपज चौगुनी बढ़ गई। दूसरी मशीनों की तीनगुनी, और बारीक यंत्रों की बारह गुनी। ३० अगस्त १९३५ को **दोनेत्स** की कोयले की खान में **अलेक्सेइ स्तख़ानोफ़्** ने ४ साथियों की मदद से ६ घंटे के भीतर ७ टन की जगह १०२ टन कोयला खोद निकाला था, जिसने वहीं श्रम की शक्ति को नहीं बढ़ाया बल्कि **स्तालिन्** के उत्साह दिलाने के कारण आज **स्तख़ानोफ़्-आन्दोलन** सारी सोवियत्-भूमि में फैल गया है। मास्को के कारख़ानों में तो, इस आन्दोलन का ख़ास तौर से अधिक प्रचार है। यहाँ के सैकड़ों स्ताख़ानोफ़ी कमकरों ने बड़े से बड़े सरकारी पदक और पारितोषिक प्राप्त किये हैं।

मास्को में ११ रेलें मिलती हैं, इसीलिए माल और मुसाफ़िरों का आना जाना बहुत ज्यादा है। १९३५ में यहाँ २ करोड़ २२ लाख मेट्रिक टन (१ टन = ·९८४ टन या २५ मन से कुछ ऊपर) माल में १ करोड़ ८८ लाख टन माल आनेवाला और ३४ लाख टन माल जानेवाला था। हर साल यह बढ़ रहा है; और यूरोप में लन्दन, बर्लिन या किसी और जगह इतना माल आता जाता नहीं।

मुसाफ़िरों के यातायात में भी इसी तरह वृद्धि हुई है। युद्ध के पहले मास्को में १ करोड़ ६० लाख मुसाफ़िर आने जानेवाले थे; लेकिन १९३५ में उनकी तादाद १४ करोड़ ५ लाख हो गई। शहर के बाहरी छोरों पर रहनेवाले मुसाफ़िरों में और भी ज़्यादा वृद्धि हुई है। जहाँ युद्ध से पहले ऐसे मुसाफ़िरों की तादाद सवा करोड़ थी, वहाँ १९३५ में १३ करोड़ ४५ लाख हो गई। अब शहर के छोरों पर जानेवाली सभी रेलें बिजली से चलती हैं। नई योजना में माल के स्टेशनों को शहर की सीमा से बाहर रखना तय किया गया है और सुरंगों के द्वारा मास्को में आनेवाली रेलों का सम्बन्ध जोड़ा जा रहा है।
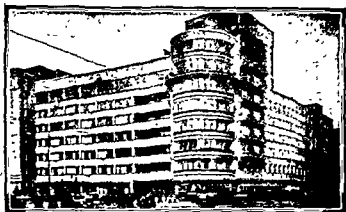
सरकारी आफ़िस (मास्को)

मास्को-वोल्गा नहर—मास्को प्रान्त में बहुत सी नदियाँ हैं। इन नदियों के जरिये देश के दूसरे भागों से मास्को का संबंध जोड़ने का सरकार को ख़याल आया। इससे पहले उसने बाल्तिक्-समुद्र और श्वेत-समुद्र को नहरों से मिला दिया था। दो साल के परिश्रम के बाद उसने १२८ किलोमीतर (प्रायः ८० मील) लंबी ८५·५ मीतर (२५० फीट से अधिक) चौड़ी और ५·५ मीतर (१७ फीट) से अधिक गहरी नहर खोदकर वोल्गा को मास्को नदी से मिला दिया गया। इस नहर के जरिए मास्को और यऊजा नदियों का पानी और गहरा हो गया है। मास्को में १५० कीलो-मीतर तथा यऊजा में ५८ किलोमीतर लंबा गहरा जलमार्ग तैयार हुआ है। कुल मिला कर २४० ताले, पंप-स्टेशन, छोटे स्टेशन, बिजली के पावरहाउस और पुल इस नहर पर बनाये गये हैं। मास्को-वोल्गा नहर संसार में अपने किस्म की सब से बड़ी नहर है। इस नहर के द्वारा कास्पियन, बाल्तिक् और श्वेतसागर के स्टीमर अब मास्को पहुँचने लगे हैं। पूर्वी देशों से इमारत बनाने का सामान दक्षिण से अनाज और कोयला, कास्पियन से

मछली और पेट्रोल, **करेलिया** से कागज़ बनाने का पल्प, वोनेगा झील के तट से संगखारे की पट्टियाँ और श्वेत सागर से एपेटाइट (रसायनिक खाद) अब मास्को पहुँचने लगी हैं। हर साल डेढ़ करोड़ टन माल आने का
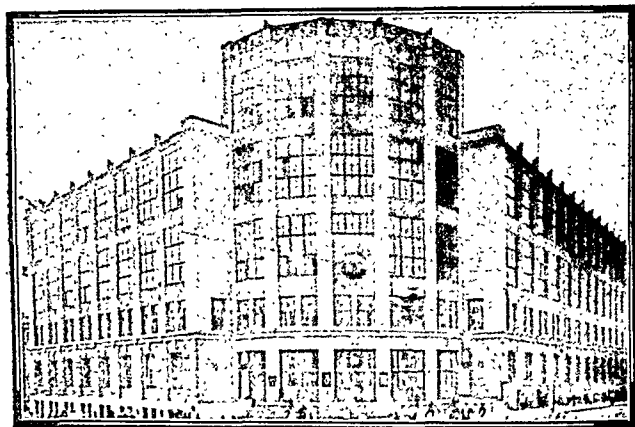
केन्द्रीय तारघर (मास्को)

प्रवन्ध है। इसके साथ ही इस नहर द्वारा मारीइन्स्क-नहर-जाल (श्वेत सागर और वाल्तिक् सागर को मिलाने वाली नहरें) की दूरी १ हज़ार किलोमीतर कम हो गई। इसके साथ नहर ने एक और वड़ा काम किया है। उसने ६॥ लाख घनमीतर की जगह ४० लाख घनमीतर पानी प्रति-दिन मास्को नगर को देने के लिए मास्को नदी को तैयार कर दिया। इस नहर के कारण मास्को (मास्क्वा) **यऊज़ा** और **स्खोद्न्या** नदियों का पानी वहुत वढ़ गया है।

शिक्षा—मास्को के प्रारंभिक और हाई स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या ६ लाख १४ हज़ार है। इनमें वे विद्यार्थी नहीं गिने गये हैं, जो थोड़े थोड़े समय के पाठ्य विपयों को ले कर फैक्टरियों

के स्कूलों तथा दूसरी जगह पढ़ने है। १९३७ में मास्को ने २५ करोड़ रूबल (१२ करोड़ रुपया) अपने नगर की शिक्षा पर खर्च किया। १९३८ के बजट में ३७ करोड़ ६० लाख रूबल (प्राय. १८ करोड़ रुपया) खर्च किया जानेवाला है। इसमें से ७॥ करोड़ रूबल मास्को के ६० नये स्कूलों की इमारतें बनाने में खर्च होगे। ये मकान नये ढग के बनेंगे। हर एक स्कूल के साथ साथ बच्चों के क्लबघर, स्वाध्याय-केन्द्र आदि भी शामिल होंगे। हाई स्कूलों में १९३६ की अपेक्षा १९३७ में ४२ हजार विद्यार्थी अधिक बढ़े है। १९३८ में ६॥ हजार विद्यार्थी हाई स्कूल से निकलेंगे। विद्यार्थियों को विशेष छात्रवृत्ति देने के लिए २२ लाख रूबल (१० लाख रुपये से ऊपर) अलग रखे गये हैं। १९३८ के बजट में २१ लड़कों के क्लब, १४ बालचर-भवन, १७ टेकनिकल स्टेशन, ८ क्रीडाकेन्द्र, ८ घुमक्कड़-निवास, २ शिशुकला-शिक्षणगृह, १ ललित-कला-विद्यालय, १५ बालपुस्तकालय, १ बालचर-कैम्प, अनेक तैराकी स्थान, और बालकों के उद्यान तथा क्रीडा-क्षेत्र बनाने मजूर हुए हैं। इसके लिए ३ करोड़ ५ लाख रूबल अलग रखा गया है। १९३७ में इस मद में १ करोड़ ही खर्च किया गया था। १९३८ में मास्को में भी एक विशाल बालचर-प्रासाद के निर्माण की योजना तैयार होने वाली है।

विद्यार्थी ७वें साल में जाने पर स्कूल में भेजे जाते है। स्कूली अवस्था के पहले के लडकों की शिक्षा के लिए भी मास्को का शिक्षा-विभाग विशेष ध्यान देता है। १९३८ में ८५ हजार ऐसे लड़के किंडर गार्टन (बालोद्यानों) में शिक्षा पा रहे है। नये किंडर-गार्टनों के बनाने के लिए मास्को शिक्षा-विभाग ने ३ करोड़ ४० लाख रूबल मजूर किया है। यह रकम भी पिछले साल से दूनी है। ३५ लाख रूबल बच्चों की क्रीडा-भूमि के बढ़ाने और हिफाजत करने में खर्च किये जायेंगे।

४ करोड़ रूबल इसलिए अलग रखा गया है कि उसे शिशुभवनों तथा और स्वास्थ्य-सबधी उपायों—विशेष कर गर्मी के दिनों में शहर के बाहर के हरे-भरे जगलों में बच्चों के कैम्प लगवाने—में खर्च किया जाय।

१९३८ में ९ हज़ार नये अध्यापक पुस्तकाध्यक्ष, स्कूली अवस्था से पहले के बच्चों के लिए तैयार हो कर निकलनेवाले हैं। १४ हज़ार ५ सौ अध्यापक

मेत्रोपोल् होटल (मास्को)

अपनी शिक्षण-योग्यता बढ़ाने के लिए विशेष पाठ्य-श्रेणियों में पढ़ रहे हैं। इसके लिए दो करोड़ २० लाख रूबल अलग रखा गया है। ४० लाख रूबल खर्च किया जा रहा है, एक ट्रेनिंग कालेज की इमारत पर।

स्तख़ानोफ़्-आन्दोलन में शारीरिक और दिमाग़ी योग्यता—दोनों की अधिक ज़रूरत है। इसीलिए इस आन्दोलन ने कमकरों में ज्ञान की प्यास बहुत अधिक बढ़ा दी है। और बहुत से कमकर रात्रि-पाठशालाओं तथा दूसरे शिक्षणालयों में टेकनिकल् और वैज्ञानिक विषयों का अध्ययन कर रहे हैं। कितने ही विदेशी भाषाओं और साहित्य की कक्षाओं में जुट रहे हैं। एक तरह कहा जा सकता है कि मास्को का हर एक कमकर किसी न किसी कक्षा का विद्यार्थी है। १९३० में मास्को में ७ साल (८ से १४वें साल) की अनिवार्य शिक्षा की गई। १९३२ से इसे मास्को के लिए १०

माल कर दिया गया। निःशुल्क की तो बात ही क्या स्कूलों में दोपहर के वक्त विद्यार्थियों को गर्मागर्म भोजन मिलता है, जिसके लिए बहुत कम को
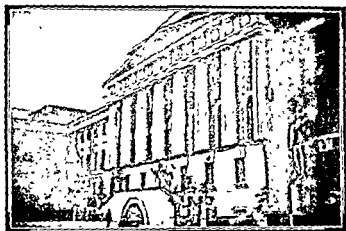
विश्वविद्यालय (मास्को)

नाम मात्र मूल्य देना पड़ता है। गर्मियों के दिनों में विद्यार्थियों को शहर से दूर दूर ग्रीष्म-कैम्पों में भेजा जाता है। १९३६ में ऐसे भेजे हुए विद्यार्थियों की संख्या ४२ हज़ार थी।

विद्यार्थियों की संख्या कितनी अधिकता से बढ़ती जा रही है, यह इसी से समझा जा सकता है, कि १९३५ में ७२ बड़े बड़े स्कूल बनाये गये। १९३६ में १०५ बनाये गये। और अकेले १९३८ में ८०० बनाये जा रहे हैं। इन स्कूलों की इमारतें मामूली नहीं हैं, ३-३, ८-८ तल्ले की इमारतें जिनमें सीमेंट, लोहा और कांच ही अधिक दिखाई पड़ते हैं। भिन्न भाषा-भाषी जातियों—जैसे तातार, मोर्दविन्, और रोमनी (जिप्सी) के लिए मास्को में अलग स्कूल हैं। अंग्रेज और अमेरिकन विदेशज्ञों के लड़कों के लिए अंग्रेजी स्कूल भी मौजूद हैं।

१९३६ के आरंभ में मास्को में १०० टेकनिकल स्कूल थे। १९१३ में सिर्फ २२ स्कूल सो भी बहुत छोटे छोटे। १९१३ में इन स्कूलों में पढ़ने-वाले लड़कों की संख्या ६००० थी, और १९३६ में ३५०००। १९३६ में कमकरों के विशेष शिक्षणालय (ख़ुफक्) ३२ थे जिनमें २० हज़ार विद्यार्थी थे। इन शिक्षणालयों का संबंध विश्वविद्यालयों से है और इनमें पढ़ाई हाई स्कूल जैसी होती है। यहाँ तैयारी करके विद्यार्थी फिर उच्च शिक्षा के लिए आगे बढ़ सकते हैं। क्रान्ति के पहले ऐसे स्कूलों का नाम न था। १९३६ के आरंभ में फैक्टरी उम्मेदवारों के ११८८ कूल थे, जिनमें २० हज़ार विद्यार्थी ५४४ प्रकार के विषयों को पढ़ कर अपनी योग्यता बढ़ाते थे। क्रान्ति के पहले उच्च शिक्षा के ३६००० विद्यार्थियों के लिए १३ शिक्षणालय थे। किसानों, कमकरों और पिछड़ी जातियों का शायद ही कोई विद्यार्थी इनमें पढ़ सकता था। लेकिन क्रान्ति के बाद मास्को के कालेजों और विश्वविद्यालय में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या ९० हज़ार से ज़्यादा है। अधिकांश विद्यार्थी सरकारी छात्रवृत्ति पाते हैं। कितने मुहल्ले के मुहल्ले ऐसे हैं जहाँ छात्र-छात्राएँ ही रहती हैं।

पुस्तकालय—१९३४ के आरंभ में स्कूलों और फैक्टरियों के पुस्त-कालयों को छोड़ देने के बाद २००० से अधिक पुस्तकालय थे। सब से बड़ा पुस्तकालय है, अखिल-संघ-लेनिन्-पुस्तकालय। यह पुस्तकालय जिस मकान में इस वक़्त है, उसे शिल्पी बाजेनोफ़् ने १७७० में बनाया था। लेकिन अब पुस्तकालय को और बढ़ाने के लिए बड़ी इमारत बन रही है, जिसका एक हिस्सा तैयार भी हो गया है। १९३६ में इसमें ६६ लाख पुस्तकें थीं। इस वक़्त सोवियत्-संघ के पुस्तकालयों में इसका दूसरा नंबर है। लेकिन नई योजना के मुताबिक इसमें एक करोड़ २० लाख पुस्तकें होंगी और इस प्रकार यह संसार का सब से बड़ा पुस्तकालय होगा। दुर्लभ ग्रन्थों के विभाग में स्वदेश और विदेश की छपी १ लाख पुस्तकें मौजूद हैं। इनमें कितनी ही १५५० ई० के पहले की छपी तथा ग़ैरकानूनी रूसी क्रान्ति-

१९३६ के आरंभ में मास्को में १०० टेकनिकल स्कूल थे। १९१३ में सिर्फ २२ स्कूल सो भी बहुत छोटे छोटे। १९१३ में इन स्कूलों में पढ़ने-वाले लड़कों की संख्या ६००० थी, और १९३६ में ३५०००। १९३६ में कमकरों के विशेष शिक्षणालय (ख़्फक्) ३२ थे जिनमें २० हज़ार विद्यार्थी थे। इन शिक्षणालयों का संबंध विश्वविद्यालयों से है और इनमें पढ़ाई हाई स्कूल जैसी होती है। यहाँ तैयारी करके विद्यार्थी फिर उच्च शिक्षा के लिए आगे बढ़ सकते हैं। क्रान्ति के पहले ऐसे स्कूलों का नाम न था। १९३६ के आरंभ में फैक्टरी उम्मेदवारों के ११८८ कूल थे, जिनमें २० हज़ार विद्यार्थी ५४४ प्रकार के विषयों को पढ़ कर अपनी योग्यता बढ़ाते थे। क्रान्ति के पहले उच्च शिक्षा के ३६००० विद्यार्थियों के लिए १३ शिक्षणालय थे। किसानों, कमकरों और पिछड़ी जातियों का शायद ही कोई विद्यार्थी इनमें पढ़ सकता था। लेकिन क्रान्ति के बाद मास्को के कालेजों और विश्वविद्यालय में पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या ९० हज़ार से ज़्यादा है। अधिकांश विद्यार्थी सरकारी छात्रवृत्ति पाते हैं। कितने मुहल्ले के मुहल्ले ऐसे हैं जहाँ छात्र-छात्राएँ ही रहती हैं।

पुस्तकालय—१९३४ के आरंभ में स्कूलों और फैक्टरियों के पुस्त-कालयों को छोड़ देने के बाद २००० से अधिक पुस्तकालय थे। सब से बड़ा पुस्तकालय है, अखिल-संघ-लेनिन्-पुस्तकालय। यह पुस्तकालय जिस मकान में इस वक़्त है, उसे शिल्पी बाजेनोफ़् ने १७७० में बनाया था। लेकिन अब पुस्तकालय को और बढ़ाने के लिए बड़ी इमारत बन रही है, जिसका एक हिस्सा तैयार भी हो गया है। १९३६ में इसमें ६६ लाख पुस्तकें थीं। इस वक़्त सोवियत्-संघ के पुस्तकालयों में इसका दूसरा नंबर है। लेकिन नई योजना के मुताबिक इसमें एक करोड़ २० लाख पुस्तकें होंगी और इस प्रकार यह संसार का सब से बड़ा पुस्तकालय होगा। दुर्लभ ग्रन्थों के विभाग में स्वदेश और विदेश की छपी १ लाख पुस्तकें मौजूद हैं। इनमें कितनी ही १५५० ई० के पहले की छपी तथा ग़ैरकानूनी रूसी क्रान्ति-

वारी साहित्य की पुस्तकें भी हैं। हस्तलेख-विभाग में ६० हजार पुस्तकें है, जिनमें पुश्किन्, गोगोल् और दूसरे रूसी लेखकों के हस्तलेख भी हैं। सड़क
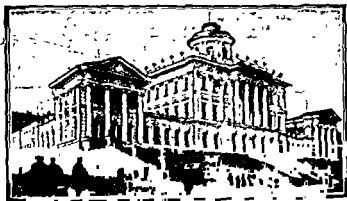
लेनिन्-पुस्तकालय (मास्को)
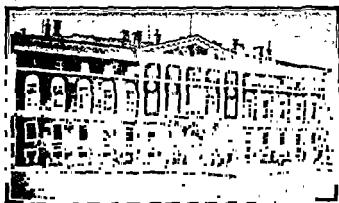
मास्को-सोवियत् (मास्को)

की दूसरी तरफ साहित्य-संग्रहालय है। इसमें १७ वीं शताब्दी से ले कर

२०वीं शताब्दी के प्रथम पाद तक रूसी साहित्य-संबंधी सामग्री जमा की गई है। इसमें लेखकों के ही जीवन के संबंध में नहीं, वल्कि तत्कालीन जनता के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक जीवन से संबंध रखनेवाली सामग्री भी जमा की गई है। हस्तलेख-विभाग में १५ लाख वस्तुएँ जमा की गई हैं, जिनमें हस्तलिखित ग्रंथ, चिट्ठियाँ, डायरी, स्मृति-ग्रंथ आदि शामिल हैं। ग्रामीण कहानियों से संबंध रखने वाली ४ लाख चीज़ें इकट्ठी की गई हैं। मूर्ति-विभाग में लेखकों के चित्र, फ़ोटो और मूर्तियाँ हैं। इसके पुस्तकालय में ४० हज़ार पुस्तकें साहित्य के परिचय आदि के संबंध में हैं। इनमें वहुत से उन ग्रंथों के संस्करण हैं, जिन्हें ज़ारशाही ने ज़ब्त या नष्ट कर दिया था। यहाँ पर एक ख़ास विभाग ऐसी पुस्तकों का है, जिनपर लेखकों के स्वहस्ताक्षर मौजूद हैं।

लेनिन्-पुस्तकालय में १९३५ में ४८ हज़ार पाठक थे। वे ४॥ लाख वार पुस्तकालय में आये। नई इमारत के वाचनालय में ३ हज़ार आदमियों के वैठने की जगह है। लाइब्रेरी की इमारत के सामने के हिस्से पर वहुत से प्रसिद्ध लेखकों और राजनीतिज्ञों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं।

मार्क्स-ऐंगेल्-लेनिन्-इंस्टीट्यूट, मास्को की ख़ास चीज़ है। इसके साथ कार्लमार्क्स, फ़्रीड्रिख़् ऐंगेल् म्यूज़ियम तथा केन्द्रीय लेनिन् म्यूज़ियम है। समाजवाद के संबंध की इतनी अधिक पुस्तकें दुनिया के किसी पुस्तकालय में नहीं हैं। यहाँ प्रथम, द्वितीय और तृतीय इन्टर-नेश्नल (समाजवाद-संबंधी अन्तर्राष्ट्रीय सभा), **पैरिस्-कम्यून्** तथा १८वीं, १९वीं और २०वीं शताब्दियों की कितनी ही क्रान्तियों की मौलिक सामग्री जमा की गई है। १९३४ की जनवरी में इसमें १० लाख चीज़ें जमा थीं।

मास्को में दुनिया की सव से ऊँची इमारत सोवियत्-प्रासाद का इस वक़्त निर्माण हो रहा है। अभी इसको समाप्त होने में ४ साल और लगेंगे। इसके प्लेन वनाने में सारी दुनिया के वड़े वड़े इंजीनियरों ने सहायता दी है। इसकी ऊँचाई होगी ४१५ मीतर (१३०० फ़ीट से ज़्यादा) सव से वड़ा हाल १३६

भीतर (४०० फीट से अधिक) व्यास का गोलाकार होगा; और इसमें २० हजार आदमियों के बैठने की जगह होगी। एक दूसरा छोटा हाल ६००० आदमियों के बैठने लायक होगा। प्रधान हाल के ऊपर एक दूसरा हाल होगा,
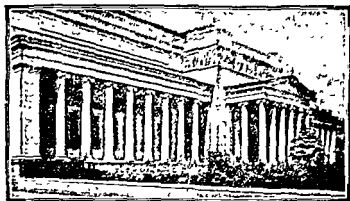
म्यूजियम (मास्को)

जिसमें श्रमिक क्रान्ति की अनेक अवस्थाओं को चित्रित किया जायगा। ऊपरवाले तलों में म्यूजियम रहेंगे। सारी इमारत लेनिन् की एक प्रकाण्ड मूर्ति की पाद-पीठिका (चौकी) मात्र रहेगी। चारों तरफ पत्थरों पर दुनिया के सभी जातियों के जांगर चलानेवालों के चित्र अंकित रहेंगे।

प्रेस—१९३६ में मास्को से ५६ समाचारपत्र निकलते थे, जिन में ५ प्रान्त और शहर से सबंध रखते थे और बाकी अखिल-संघ से। २८५ पत्र फैक्टरियों के थे। १० पत्र विदेशी भाषाओं और अल्पसंख्यक जातियों के निकलते थे। नंबर २४ उलित्सा प्राव्दी (प्राव्दा सड़क) पर "प्राव्दा" पत्र का कार्यालय है। यह ८ तल का महल है। इसमें १ लाख घनमीतर (१ लाख घनगज से अधिक) कमरे, मकान और हाल है। छापने की सभी कार्रवाई मशीन से होती है। और छापने, काटने, बांधने आदि का काम

इतना पास पास है कि चीजों के इधर से उधर भेजने में देर नहीं लगती। ३६ कम्पोज़ करनेवाली मशीनें लगी हुई हैं। स्टीरियोटाइप-विभाग ६५० घनमीतर में है। "प्राव्दा" की ग्राहक-संख्या २० लाख से ज़्यादा है। रोटरी मशीन प्रति घंटे एक लाख 'प्राव्दा' के साइज़ (अमृतबाजारपत्रिका के साइज़) की चौपेजी छापती है। स्वयं काग़ज़ खींचने वाली मशीन ३ मालगाड़ी भर काग़ज़ एक बार लेती है। १२ मालगाड़ियाँ प्रतिदिन **प्राव्दा** नामक स्टेशन के माल-गोदाम पर काग़ज़ लेकर पहुँचती हैं। इसी प्रेस से **कोम्सोमोल्स्काया-प्राव्दा,** (तरुण-साम्यवादी-संघ-सत्य) **प्यूनिर्काया-प्राव्दा** (बालचर-सत्य) और दो मासिक पत्र **बोल्शेविक** और **क्रोकोदिल्**
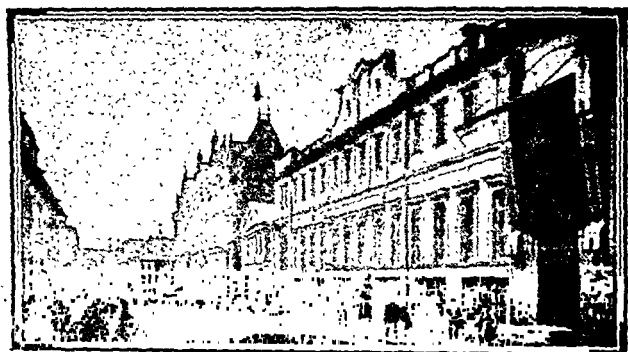
गोर्की-सड़क (मास्को)

(मगर, परिहासपत्र) भी निकलते हैं। इनके अतिरिक्त पुस्तकें भी छपती हैं। 'प्राव्दा' सोवियत्-संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का मुख्य पत्र है। १९१८ में इसकी ग्राहक संख्या ९० हज़ार थी; १९२९ में ६ लाख ६२ हज़ार और १९३६ में २० लाख। सोवियत् सरकार का मुख्य पत्र है "इज़्वेस्तिया" जो १९२९ में ४ लाख ४० हज़ार छपता था और जनवरी १९३६ में १६

लाख। 'प्राव्दा' के बाद दूसरा नंबर है, किसानों के पत्र 'क्रेस्त्यन्स्काया गजेता' (किसान गजट)। १९३९ में यह १७॥ लाख रोजाना छपता था।

१९३६ के आरंभ में मास्को से ४६७ पत्र भिन्न भिन्न विषयों पर निकलते थे; जिनमें विषय के लिहाज से १९३ टेक्निकल, ८६ सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक, ४ प्रकृतिविज्ञान और गणित, ३१ चिकित्सा-शास्त्र, २ भाषा-तत्व, ३६ साहित्य और कला, १४ श्रम और मजदूर-संघ-आन्दोलन, २९ कृषि और कोल्खोज् आन्दोलन।

मास्को में कई प्रकाशन सस्थाएँ हैं। 'पर्तिज्दात'—यह अधिकतर मार्क्स, लेनिन् तथा कम्युनिस्ट-पार्टी के संबंध के ग्रंथों को छापता है। १९३६ में इसने ३२१ ग्रंथों की ७ करोड ६० लाख ८६ हजार प्रतियाँ छापीं। 'गोस्तलितीज्दात्'—इसमें स्वदेशी और विदेशी मशहूर लेखकों (जीवित और मृत दोनों) के ग्रन्थ छपते हैं। १९३६ में इसने ६७८ ग्रंथों की सवा दो करोड से ज्यादा प्रतियाँ छापीं। सोत्सेक्गिज्—अर्थशास्त्र और समाजतत्व पर पुस्तके छापता है। १९३६ में इसने १५५ ग्रंथों की २७ लाख ८१ हजार कापियाँ छापीं। 'ओनित' वैज्ञानिक और टेकनिकल विषयों पर किताबें छापता है। १९३६ में इसने ३०६८ पुस्तकें छापीं। म०स०म०र० में विदेशी कमकरों की सहयोगी-प्रकाशक-समिति विदेशी पाठकों के लिए अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, पोल, चीनी, कोरियन आदि भाषाओं में पुस्तकें छापती है।

मास्को में क्लबों की संख्या १६० से ज्यादा है। कुछ क्लबों के नाम हैं—वैज्ञानिक-भवन, लेखक-भवन, समाचार-पत्र-भवन, सिनेमा-भवन, अभिनेता-भवन, शिल्पि-भवन, अध्यापक-भवन आदि।

नाट्यशाला—मास्को में नाट्यशालाओं की संख्या ६० से ऊपर है। १९१७ में इनकी संख्या २१ थी। लाल-सेना तथा दूसरी कितनी ही नाट्यशालाओं की भव्य इमारतें बनी हैं। शाम के वक्त इनका हाल खचाखच भरा रहता है। सितंबर के पहले दो हफ्तों में नाट्यमहोत्सव होता है।

इसके लिए सभी नाट्यशालाएँ पहले से तैयारी करती हैं। इस समय दुनिया के भिन्न भिन्न भागों से नाट्यमर्मज्ञ लोग उन्हें देखने के लिए मास्को पहुँचते है। मास्को की सव से पुरानी नाट्यशाला है माली-थियेटर,

बोल्शोइ थियेटर (मास्को)

जिसे १८२४ में स्थापित किया गया था। मास्को-कला-थियेटर—जिसे अव गोर्की कला-थियेटर कहते हैं—१८९८ में स्थापित हुआ था।

लड़कों के विनोद, म्युनिसिपलिटी का काम, स्वास्थ्य-रक्षा, जिस किसी-भी विभाग को देखा जाय, मास्को सव में वहुत आगे वढ़ा मिलता है। जुलाई १९३६ में—जो मास्को के नवनिर्माण की योजना आरंभ हुई है—उस से मास्को दुनिया के सव से समृद्ध नगरों में हो जायगा। वहाँ टूटी झोपड़ियाँ और गिरे पड़े मकान कही ढूंढ़ने पर भी न मिलेंगे। योजना के पूरा हो जानेपर मास्को का क्षेत्रफल दूना हो कर ६० हज़ार हेक्तर हो जायगा; और उसके सुन्दर विशाल घरों में ५० लाख आदमियों के रहने का इन्तज़ाम रहेगा। इस वक़्त मास्को में प्रति एकड़ ४००आदमी रहते हैं। १९४५ में प्रति एकड़ २०० आदमी रहेंगे; हालाँकि इमारतें औसतन् ६–७ तल्ले की होंगी

और बहुत सी १० और १४ तल्ले की भी। आजकल मास्को के मकान जितनी भूमि पर हैं, उस वक्त उस से आधी ही पर रहेंगे। बाकी जगहों में चौड़ी सडकें और बगीचे बनेंगे। मकानो के हर एक ब्लाक में बच्चाखाना, किन्डरगार्टन, बाल-क्रीड़ा-क्षेत्र, अखाड़ा, भोजनालय, क्लब आदि रहेंगे। ३ से ७ एकड़वाले वर्तमान ब्लाकों (चारो ओर सड़क से घिरी गृहश्रेणी) की जगह २० से ३० एकड़ के ब्लाक बनेंगे। इसके कारण गलियों और सड़कों की संख्या कम हो जायगी, और लोगों को उनको पार करने में भी कमी रहेगी।

पुराने समय के बेढगे छोटे बड़े मकान तोड कर हटाये जा रहे हैं। लाल मैदान को सामने के मकान हटा कर दूना कर दिया जायगा। क्रेम्लिन् को केन्द्र मान कर समकेन्द्रक वृत्त मे निकलनेवाली सडके और चौड़ी कर दी जायेंगी और उनके किनारे हरे हरे दरख्त लगेंगे। मास्को नदी के दोनो तरफ प्रशस्त राजपथ बनना शुरू हो गया है। मास्को नदी के किनारे को संगखारे से बांधा जा रहा है। इसकी बगल में ४० से ५० मीतर (६० से ८० फीट) चौडी वृक्षोवाली सड़क रहेगी।

* * * * * *

मास्को के कुछ स्थान—क्रेम्लिन् दीवार—इसी के पास लाल क्रान्ति के बडे बड़े नेताओ की समाधियाँ है। सोवियत्-प्रजातंत्र के प्रथम राष्ट्र-पति **स्वेर्द्लोफ्**, काकेशस्-प्रजातंत्र के राष्ट्रपति नारीमानोफ्, गृहसचिव **जेर्झिन्स्की**, यहीं पर दफनाये गये। सोवियत् राजदूत **वोरोव्स्की** और **वोइकोफ्**—जिनकी हत्याएँ विदेश में हुई थीं—तथा प्रसिद्ध सेनानायक **फ्रुन्ज़े** भी यहाँ दफनाया गया है। यहीं पर कम्युनिस्ट पार्टी के बहुत बडे नेताओं—किरोफ्, ओर्जोनीकिद्ज़े, कुइबिशेफ् और क्रासिन् की राख रखी हुई है। माक्सिम् गोर्की तथा विज्ञान-एकेडेमी के प्रधान करपिन्स्की की राखें भी यहीं हैं। १९३४ मे आकाश के शांत ऊपरी तल (स्ट्रेटोस्फ़ेयर)

इसके लिए सभी नाट्यशालाएँ पहले से तैयारी करती हैं। इस समय दुनिया के भिन्न भिन्न भागों से नाट्यमर्मज्ञ लोग उन्हें देखने के लिए मास्को पहुँचते हैं। मास्को की सब से पुरानी नाट्यशाला है माली-थियेटर,
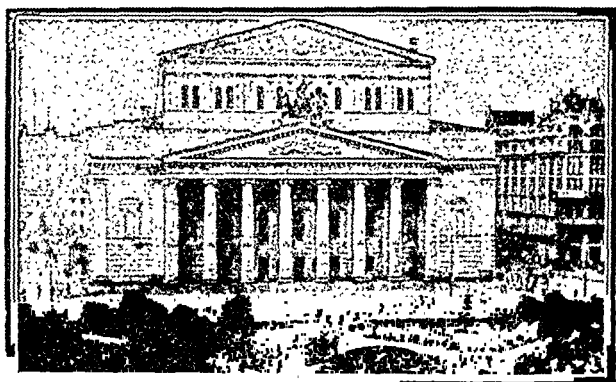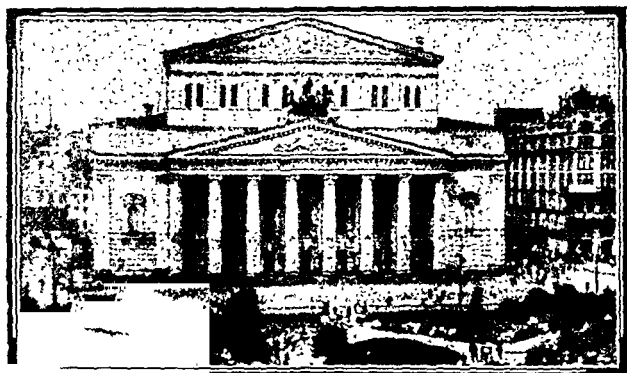
वोल्शोइ थियेटर (मास्को)

जिसे १८२४ में स्थापित किया गया था। मास्को-कला-थियेटर—जिसे अब गोर्की कला-थियेटर कहते हैं—१८९८ में स्थापित हुआ था।

लड़कों के विनोद, म्युनिसिपलिटी का काम, स्वास्थ्य-रक्षा, जिस किसी भी विभाग को देखा जाय, मास्को सब में बहुत आगे बढ़ा मिलता है। जुलाई १९३६ में—जो मास्को के नवनिर्माण की योजना आरंभ हुई है—उस से मास्को दुनिया के सब से समृद्ध नगरों में हो जायगा। वहाँ टूटी झोपड़ियाँ और गिरे पड़े मकान कहीं ढूंढ़ने पर भी न मिलेंगे। योजना के पूरा हो जानेपर मास्को का क्षेत्रफल दूना हो कर ६० हजार हेक्तर हो जायगा; और उसके सुन्दर विशाल घरों में ५० लाख आदमियों के रहने का इन्तज़ाम रहेगा। इस वक्त मास्को में प्रति एकड़ ४०० आदमी रहते हैं। १९४५ में प्रति एकड़ २०० आदमी रहेंगे; हालाँकि इमारतें औसतन् ६–७ तल्ले की होंगी

और बहुत सी १० और १४ तल्ले की भी। आजकल मास्को के मकान जितनी भूमि पर है, उस वक्त उस से आधी ही पर रहेंगे। बाकी जगहों मे चौड़ी सडकें और बगीचे बनेंगे। मकानों के हर एक ब्लाक में बच्चाखाना, किन्डरगार्टेन, बाल-क्रीडा-क्षेत्र, अखाडा, भोजनालय, क्लब आदि रहेंगे। ३ से ७ एकड़वाले वर्तमान ब्लाको (चारों ओर सडक से घिरी गृहश्रेणी) की जगह २० से ३० एकड़ के ब्लाक बनेंगे। इसके कारण गलियो और सड़कों की संख्या कम हो जायगी, और लोगों को उनको पार करने मे भी कमी रहेगी।

पुराने समय के बेढगे छोटे बडे मकान तोड कर हटाये जा रहे है। लाल मैदान को सामने के मकान हटा कर दूना कर दिया जायगा। क्रेम्लिन् को केन्द्र मान कर समकेन्द्रक वृत्त मे निकलनेवाली सडकें और चौड़ी कर दी जायँगी और उनके किनारे हरे हरे दरख्त लगेंगे। मास्को नदी के दोनों तरफ प्रशस्त राजपथ बनना शुरू हो गया है। मास्को नदी के किनारे को सगखारे से बाँधा जा रहा है। इसकी बगल मे ४० से ५० मीतर (६० से ८० फीट) चौड़ी वृक्षोंवाली सडक रहेगी।

***   ***

मास्को के कुछ स्थान—क्रेम्लिन् दीवार—इसी के पास लाल क्रान्ति के बड़े बड़े नेताओं की समाधियाँ है। सोवियत्-प्रजातन्त्र के प्रथम राष्ट्र-पति स्वेर्दलोफ़, काकेशस्-प्रजातंत्र के राष्ट्रपति नारीमानोफ़, गृहसचिव जेर्जिन्स्की, यहीं पर दफनाये गये। सोवियत् राजदूत वोरोव्स्की और वोइकोफ़्—जिनकी हत्याएँ विदेश मे हुई थी—तथा प्रसिद्ध सेनानायक फ्रुन्जे भी यहाँ दफनाया गया है। यहीं पर कम्युनिस्ट पार्टी के बहुत बडे नेताओं—किरोफ़, ओर्जोनीकिद्जे, कुइबिशेफ़ और क्रासिन् की राख रखी हुई है। मासिम् गोर्की तथा विज्ञान-एकेडेमी के प्रधान कार्पिन्स्की की राखें भी यही है। १९३४ में आकाश के शांत ऊपरी तल (स्ट्रैटोस्फेयर)

का पता लगाने के लिए जो तीन वैज्ञानिक—फेदोसेयेन्को; वस्सेन्को और उस्सिस्किन्—गुबारे में उड़े थे, और गिर कर मर गये थे; उनका शरीरावशेष भी यहाँ रखा हुआ है। इनके अतिरिक्त विदेशों के कितने ही क्रान्तिकारी नेताओं का शरीरावशेष क्रेमलिन् की दीवार के पास गड़ा है। इन में कुछ के नाम हैं—चर्लिस रदेन्वर्ग (युक्त-राष्ट्र अमेरिका की कम्युनिस्ट पार्टी का मंत्री), **मेक्मैनेस्** (इंगलैंड की कम्युनिस्ट पार्टी का मंत्री), **सेन् कातायामा** (जापान की कम्युनिस्ट पार्टी का नेता।), **लैंडेलेर** (हुंगरी का कम्युनिस्ट), क्लैरा जेत्किन् (जर्मनी), **फ़्रिट्ज़ हेकर्ट**, विल्हेउड्, और अमेरिकन कवि तथा लेखक **जौन् रीड्**।

लाल मैदान के पश्चिमी किनारे पर पोकरोव्स्की गिर्जा है। यह १५५५ ई० में क्रूर **इवान् की** आज्ञा से कज़ान् के विजय के उपलक्ष में बना था।

गिर्जे के पास में **लोब्नीयेमेस्तो** नामक एक गोल चबूतरा है। यहीं पर खड़े होकर ज़ार की राज-घोषणाएँ और मृत्युदंड सुनाये जाते थे।

गोर्की-केन्द्रीय-संस्कृति-विश्राम-उद्यान—६०० एकड़ से ऊपर भूमि में मास्को नदी के दक्षिणी तट पर यह उद्यान बना है। इसके ३ भाग हैं—(१) **यर्त्तेरे** (दरवाजे के पास का भाग), (२) हरित-भूमि (नदी के किनारे का भाग), (३) लेनिन्-पर्वत। शहर भर के लोग मनोरंजन के लिए इस बाग़ में जाया करते हैं। १८ मई १९३७ (दसवें मौसिमी उद्घाटन दिवस) में ३ लाख आदमी बाग़ में गये थे। यहाँ संगीत, नृत्य, वाद्य, सर्कस, लड़कों के खेल, मछली मारना, बाग़वानी, फोटोग्राफ़ी, रेडियो आदि सब तरह के मनोविनोद उपलब्ध हैं। उद्यान में रंगशालाएँ हैं जिनमें छत के नीचे या खुली जगह में मास्को-कला-नाट्यशाला, माली-नाट्यशाला, वख्तंगोफ़्-नाट्यशाला आदि मास्को के नाट्यशालाओं ही के अभिनेता नहीं बल्कि लेनिन्ग्राद् और उक्रइन् की नाट्यशालाओं के नट भी आकर अपने अभिनय दिखलाते हैं। उद्यान की नाट्यशालाओं में प्रति दिन ३० हज़ार से अधिक दर्शक आते हैं। खुली जगह में हरित नाट्यशाला

यहाँ की एक विशेषता है, जिसमे २० हजार आदमी सैकड़ो अभिनेताओ के सामूहिक अभिनय एक साथ देखते है। रात को हरित-नाट्यशाला में फिल्म दिखलाये जाते है और ये फिल्म पौने दो सौ गज लबे और पौने दो सौ गज चौड़े पर्दे पर दिखलाये जाने के कारण बहुत स्पष्ट और मनोरजक मालूम होते है।

* *
*

भास्को प्रान्त मे कुछ और भी जगहे दर्शनीय है। इनमें शहर से १४–१५ मील पर अवस्थित आरखन्गेल्स्कोये (रिजेव रेलवे-स्टेशन) एक पुरानी जगह है। सामन्त गोलित्सिन् ने १८ वी शताब्दी के अन्त में यहाँ अपना दरबार बनाया था। उन्नीसवी शताब्दी के अन्त मे वह सामन्त (प्रिंस) युसुपोफ्–रूस के सब से धनी और प्रभावशाली व्यक्तियो में से एक—के हाथ में चला गया। यहाँ पर फ्रासीसी शिल्पी शेवालिए-द-गर् द्वारा १७७० में बनाया एक प्रासाद है। प्रासाद के चारो ओर बाग है। यहाँ पुराने यूरोपीय कलाकारो के चित्रों का एक बहुत उत्तम सग्रह है। बाग की वीथियों पर मशहूर मूर्तिकारो की बनाई मूर्तियाँ सजाई हुई है। युसुपोफ् के लिए इटालियन् चित्रकार गोन्ज़गा ने १८१७ में एक विशाल नाट्यशाला बनाई, जिसमें सामन्त के असामी अर्द्धदास अभिनेता अभिनय किया करते थे। कला-सग्रह में प्रासाद के काम में आनेवाले बर्तन तथा दूसरी चीजें सुरक्षित रखी गई है। भोजनालय मिस्री ढग से सुसज्जित किया गया था। बगल के कमरो में राबर्ट ह्वर, तथा तीपोलो और रोतोरी के बनाये चित्र है। अध्ययनागार मे युसुपोफ् के परिवार के आदमियो के चित्र रखे हुए है। आजकल युसुपोफ् के खेतों पर कोल्खोज् स्थापित है। कितने ही स्कूल और फैक्टरियाँ बनी हे; लेकिन युसुपोफ् के दरबार की कला-सबधी वस्तुओं को बहुत सुरक्षित रखा गया है। प्रासाद के भित्ति-चित्रों, मूर्तियों और नाट्यशाला के बिगड़े और बेमरम्मत हिस्से को बहुत खर्च कर के मरम्मत कर दी गई है। नाट्यशाला में उन्ही अर्द्धदास किसानो को बैठ कर

नाटक देखते देख कर युसुपोफ़् की आत्मा क्या कहती होगी?

कुस्कोवो—कुर्स्क स्टेशन से ६ मील पर एक जगह है। यहाँ ग्राफ़् (कौंट) शेरेमेत्येफ़् (१७७०) का बनवाया महल है। शेरेमेत्येफ़् के अधिकार में २ लाख अर्द्धदास किसान और २० लाख एकड़ से अधिक ज़मीन थी। इसके अलावा इवानोवो की बड़ी बड़ी कपड़े की मिलें भी इसी की थीं। अकूत धन था, इसलिए शेरेमेत्येफ़् परिवार दोनों हाथ से उसे अपने विलास के लिए ख़र्च भी करता था। तरह तरह की मूर्तियाँ, चित्र, जाड़े गर्मी के घर और क्या क्या चीज़ें नहीं बनवाई हैं? इन चीज़ों में अधिकांश को ग्राफ़् के अर्द्धदासों ने बनाया है। दासों में से कितनों ही को मालिकों ने वास्तु-शिल्प, कितनों को मूर्ति-कला, कितनों को चित्रकला और कितनों को नाट्यकला सिखलाई थी। वैयक्तिक नाट्यशाला के लिए ख़ास ध्यान था। ग्राफ़् के अभिनेताओं की संख्या २०० थी; और वह मास्को की नाट्यशालाओं का मुक़ाबला करते थे।

उद्यान, सरोवर और आरंभिक इमारतें अब भी सुरक्षित रखी गई हैं। मकान को ऐतिहासिक म्यूज़ियम के रूप में परिणत कर दिया गया है; और उसे इस तरह से सजाया गया है, जिसमें कि ज़ारशाही के धनिकों के जीवन का दर्शकों को पूरा पता लग जाय। म्यूज़ियम में १८वीं सदी के पश्चिमी यूरोप और रूस के कलाकारों के बहुत से चित्र संगृहीत हैं। अर्द्धदास बढ़इयों के लकड़ी के कामों का भी अच्छा संग्रह है। एक लकड़ी की मेज़ पर कुस्कोवो दरबार के महल और बग़ीचों को सुन्दरता के साथ उत्कीर्ण किया गया है। म्यूज़ियम में उस काल की कुर्सी, मेज़ तथा दूसरे घर के सजाने के सामान एकत्रित हैं। पहले तल्ले के २० कमरों में कमख़्वाब, ग़लीचे, झाड़, मूर्तियाँ और तसवीरें रखी हुई हैं। यहाँ पर स्थायी तौर से एक म्यूज़ियम मिट्टी और चीनी के बर्तनों का स्थापित किया गया है। इसमें यूनानी मिट्टी के बर्तन, इटली और फ़्रांस के १६वीं-१८वीं शताब्दी के मजोलिका पात्र, स्पेन के मुसलमानों के बर्तन, १७वीं-१८वीं शताब्दी के

हालैंड के बर्तन, १७वीं-१८वीं शताब्दी के चीन-जापान के बने चीनी के बर्तन और सोवियत् के चीनी के बर्तन रखे हुए हैं। चित्रों में लागरान्, मोनियें और रोनोरी विदेशी कलाकारों तथा अर्गुनोफ़-परिवार, तेप्पलोफ़ और शुबिन् की कला के नमूने मौजूद हैं।

जागोर्स्क—मास्को से ७१ किलोमीतर (प्रायः ४५ मील) पर है। क्रान्ति से पहले इस शहर का नाम था सेर्गियेफ़्पोसाद् और यहाँ सेर्गियेफ़् मठ के दर्शनार्थ हज़ारों तीर्थयात्री ठहरा करते थे। आजकल यह जागोर्स्क जिले का केन्द्र है, और हाथ के बने खिलौनों के लिए म०स०स०र० और बाहर भी प्रसिद्ध है। १९३३ में इसकी जन संख्या ३० हजार थी।

स्टेशन से ½ किलोमीतर पर त्रोइत्सेसेर्गियेफ़् मठ है। इसकी स्थापना १४ वीं शताब्दी में हुई थी, और धीरे धीरे बढ़ते बढ़ते यह रूस के बड़े शक्तिशाली मठों में हो गया। इसके पास बहुत जागीर थी। १८वीं शताब्दी के अन्त में मठ के अधीन ५ लाख अर्द्धदास किसान थे। क्रान्ति के बाद मठ का काम बन्द हो गया और सेर्गियेफ़् मठ रूसी कला के म्यूज़ियम के रूप में परिणत कर दिया गया। दर्शनीय स्थानों में हैं—१९वीं शताब्दी का बना घटाघर जिसे कि शिल्पी रस्त्रेली ने बनाया था। त्रोइत्स्की गिर्जा सफ़ेद पत्थर से १४२२ में बनाया गया। दीवारों के किनारे तथा खाने के स्थानों पर मूर्तियों का बड़ा संग्रह है। इनमें चौदहवीं सदी से ले कर २० वीं सदी तक की मूर्तियाँ हैं। म्यूज़ियम में पुराने गोटे, वस्त्र और पच्चीकारी की बहुत सी चीज़ें हैं। सबसे ज्यादा दिलचस्प वह इमारत है जिसमें मेत्रोपोलितन् (ग्रीक-अर्थोडक्स सम्प्रदाय का सबसे बड़ा महन्त या पोप) रहता था। यह १८वीं सदी में बनाया गया था, और बड़ी सुरक्षित अवस्था में रखा गया है। पुरानी सजावटें वैसी ही मौजूद हैं। म्यूज़ियम के एक खास विभाग में यह प्रदर्शित किया गया है कि क्रान्ति के बाद लोगों के जीवन में कैसा परिवर्तन हुआ।

खिलौना-म्यूज़ियम १९१८ में मास्को में स्थापित किया गया ...
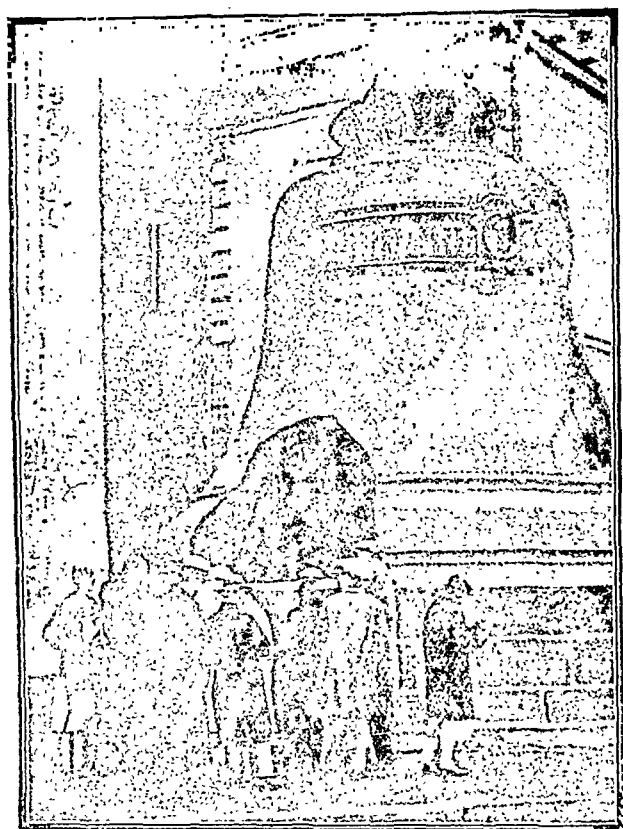
मास्को का घण्टा।

लेकिन अव उसे इसी मठ की एक इमारत में रखा गया है। यहाँ पर कई हज़ार पुराण-काल से ले कर आज तक के तरह तरह के हाथ के बने खेलौने रखे हुए हैं। १६३२ से खेलौनों के अन्वेषण के लिए एक विशेष अन्वेषणशाला स्थापित की गई है।

१६—सोवियत्-विधान पर स्तालिन्

५ दिसंबर १६३६ को अष्टम सोवियत्-काग्रेस के विशेष अधिवेशन ने सोवियत् का नया विधान स्वीकृत किया। यह विधान सोवियत् के लिए ही नहीं, सारे संसार के लिए एक अपूर्व चीज़ है। इसके निर्माण का इतिहास जानने के लिए तवारिश् स्तालिन् ने जो व्याख्यान २५ नवंबर १६३६ को दिया था, वह बहुत उपयोगी है। उस व्याख्यान से इस विधान ही का इतिहास नहीं मालूम होता, बल्कि क्रान्ति के बाद सोवियत्-भूमि में समाज-वाद की कैसी प्रगति हुई है, उसका भी पता लग जाता है। हम उस व्याख्यान को यहाँ उद्धृत करते हैं—

१—विधान-कमीशन और उसका काम

साथियो,

विधान-कमीशन—जिसका मसविदा विचार करने के लिए काग्रेस के सामने रखा गया है—आप जानते हैं, स०स०स०र० के सप्तम-सोवियत्-काग्रेस के विशेष निश्चय के अनुसार निर्मित किया गया है। उक्त निश्चय ६ फ़रवरी १६३५ को स्वीकृत किया गया। उसका उद्देश्य इस प्रकार है—

"(१) संघ-सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक (स०स०स०र०) के विधान में संशोधन निम्न बातों का ख्याल कर के—

(क) पूर्णतया न समान मताधिकार की जगह पर समान मताधिकार, अप्रत्यक्ष निर्वाचन की जगह प्रत्यक्ष निर्वाचन और खुली वोट की पुर्जियों की जगह गुप्त पुर्जियों द्वारा चुनाव की प्रक्रिया को और अधिक जनसत्ताक बनाना।

(ख) विधान को स०स०स०र० की वर्ग-शक्तियों के वर्तमान

सम्बन्ध (एक नये समाजवादी उद्योग का निर्माण, कुलक श्रेणी का लोप, कोल्खोज़् प्रथा की विजय, सोवियत् समाज की आधार-शिला के तौर पर समाजवादी सम्पत्ति की व्यापकता आदि) के अनुसार विधान को ले आ कर विधान के सामाजिक और आर्थिक आधार की और भी स्पष्टता के साथ व्याख्या करना;

(२) स०स०स०र० की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति को हिदायत करना कि वह एक ऐसे विधान-कमीशन को चुने जो कि प्रथम धारा में बतलाये सिद्धान्तों के अनुसार विधान के संशोधित मसविदे को तैयार करे और उसे स०स०स०र० की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के अधिवेशन में स्वीकृति के लिए पेश करे।

(३) नये निर्वाचन-नियम के अनुसार स०स०स०र० की सोवियत् गवर्नमेंट की संस्थाओं के आनेवाले साधारण निर्वाचनों को संचालित करना।"

यह ६ फरवरी, १९३५ को हुआ था। एक दिन बाद ७ फरवरी को यह निश्चय स्वीकृत हुआ। उस दिन स०स०स०र० की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति का प्रथम अधिवेशन हुआ और स०स०स०र० की सप्तम सोवियत् कांग्रेस के निश्चयानुसार ३१ व्यक्तियों का एक विधान-कमीशन स्थापित किया गया। उसने विधान कमीशन को हिदायत की कि वह स०स०स०र० के विधान का एक संशोधित मसविदा तैयार करे। यह हैं स०स०स०र० की सर्वोपरि समिति की हिदायतें और आधार जिनके अनुसार कि विधान-कमीशन के काम को चलाना था।

इस प्रकार विधान-कमीशन को प्रचलित विधान—जो कि १९२४ में स्वीकृत हुआ था—में १९२४ से आजतक के समय में स०स०स०र० के जीवन के संबंध में समाजवाद की तरफ़ हुए परिवर्तनों को ध्यान में रखते हुए तब्दीली करना था।

२—१९२४-३६ में परिवर्तन

१६२४ से १६३६ तक के समय में म०म०म०र० के जीवन में वे क्या परिवर्तन हुए हैं, जिन्हें कि विधान के मसविदे में विधान-कर्मीशन को दिखलाना है।

परिवर्तनों का क्या सार है?

१६२४ में क्या परिस्थिति थी?

यह नवीन-आर्थिक-नीति का प्रथम काल था; जब कि सोवियत् गवर्नमेंट ने समाजवाद के सभी तरीकों को अख्तियार करते हुए पूँजीवाद को थोड़ा पुनर्जीवित होने दिया। जब कि उसने हिमाब लगा लिया कि समाजवादी और पूँजीवादी—दोनों आर्थिक सिद्धान्तों की प्रतिद्वन्द्विता में समाजवाद पूँजीवाद पर हावी होगा। काम था, इस प्रतिद्वन्द्विता के समय समाजवाद की स्थिति को मजबूत करना, पूँजीवादी अंग को निर्मूल करने में सफलता प्राप्त करना और राष्ट्रीय अर्थनीति के मौलिक सिद्धान्त के तौर पर समाजवाद के सिद्धान्त की विजय को पूर्णता पर पहुँचाना।

उस समय हमारे उद्योग—विशेष कर भारी उद्योग—की अवस्था बहुत शोचनीय थी। यह सच है कि धीरे धीरे उसे पूर्व स्थिति पर पहुँचाया जा रहा था, लेकिन तो भी उस वक्त तक उपज युद्ध के पहलेवाले आँकडे तक नहीं पहुँची थी। वह पुरानी पिछडी हुई और बहुत थोड़ी सामग्री से युक्त टेक्नीक् (यन्त्र-चातुरी) पर अवलम्बित थी। यह भी ठीक है कि वह समाजवाद की ओर बढ़ रहा था। उस समय हमारे उद्योग में समाजवाद का भाग ८० सैकडा था, लेकिन पूँजीवादी भाग अब भी हमारे उद्योग का २० सैकड़ा अपने हाथ में रखे हुए था।

कृषि की अवस्था और भी शोचनीय थी। यह सच है कि जमींदार श्रेणी कभी की लुप्त हो चुकी थी, लेकिन तो भी कृषि के पूँजीवादी—कुलक श्रेणी अब भी काफी ताकत रखती थी। सब देखने पर उस समय की कृषि पिछड़े हुए दकियानूसी किसानी तरीकों से युक्त छोटे छोटे वैयक्तिक खेतों

के अपरिमित समुद्र सी दिखलाई पड़ती थी। उस समुद्र में छोटे छोटे विन्दुओं और द्वीपों की भाँति कुछ कोल्खोज् (पंचायती खेती) और सोव्खोज् (सरकारी खेती) थे। ठीक तौर से कहने पर अभी हमारी राष्ट्रीय अर्थनीति में उनका कोई विशेप स्थान न था। कोल्खोज् और सोव्खोज़ निर्वल थे, जव कि कुलक अव भी प्रवल था। उस समय हमने कुलकों के नष्ट करने की जगह पर उन्हें सीमावद्ध करने के लिए कहा।

यही वात देश के व्यापार के वारे में भी उस समय कही जा सकती थी। व्यापार में समाजवादी भाग ५० से ६० सैकड़ा तक था, अधिक नहीं। जव कि वाक़ी हिस्सा वनियों, लाभ कमानेवालों तथा दूसरे वैयक्तिक व्यापारियों के हाथ में था।

यह चित्र था हमारी अर्थनीति का १९२४ में।

और आज १९३६ में क्या परिस्थिति है?

उस समय हम थे नवीन-आर्थिक-नीति के प्रथम काल में; नवीन-आर्थिक-नीति के आरंभ में, पूँजीवाद के कुछ पुनरुज्जीवन के काल में। लेकिन अव हम हैं नवीन-आर्थिक-नीति के अन्तिम काल में, नवीन अर्थनीति के अन्त में, ऐसे काल में जव कि राष्ट्रीय अर्थनीति के सभी क्षेत्रों में पूँजीवाद का पूर्णतया मूलोच्छेद हो गया है।

उदाहरणार्थ—यह यथार्थ वात है कि इस काल में हमारा उद्योग वड़ी विशाल शक्ति के रूप में वढ़ा है। अव इसको कमज़ोर, और यांत्रिक प्रक्रिया में दरिद्र नहीं कहा जा सकता। वल्कि इसके विरुद्ध आज यह एक वलिष्ट और उन्नत भारी उद्योग तथा एक उससे भी अधिक उन्नत मशीन-निर्माण-उद्योग के साथ नये लाभदायक आधुनिक यांत्रिक साधनों के ऊपर अवलंवित है। लेकिन सव से महत्त्वपूर्ण वात यह है कि पूँजीवाद हमारे उद्योग के क्षेत्र से विलकुल ही लुप्त हो चुका और उपज का समाजवादी तरीक़ा अव वह सिद्धान्त है, जो कि हमारे उद्योग के हर क्षेत्र में अव्याहत अधिकार रखता है। हमारी आज की समाजवादी उद्योग की उपज युद्ध के पहले के

उद्योग में सातगुना से भी अधिक है। यह कोई मामूली बात नहीं है।

कृषि के क्षेत्र में अपनी दरिद्र कृषि-प्रक्रिया से युक्त और कुलकों के जबर्दस्त प्रभाववाले छोटे छोटे वैयक्तिक किसानों के खेतों के समुद्र की जगह पर आज हमारे पास है यन्त्रों द्वारा खेती का उपजाना। वह नई से नई कृषि-विज्ञान की प्रक्रियाओं से युक्त कोल्खोज़ और सोव्खोज़ के सर्व-व्यापी सिद्धान्त के रूप में इतने बड़े पैमाने पर किया जा रहा है जैसा कि संसार में और कहीं नहीं देखने में आता। सभी लोग जानते हैं कि कृषि से कुलक (धनी किसान) श्रेणी लुप्त हो चुकी है, और पिछड़े दकियानूसी कृषि-प्रक्रियाओं से युक्त छोटे वैयक्तिक किसानों का अंश भी अब नगण्य के बराबर रह गया है। जोती हुई भूमि को लेने पर कृषि में इसका भाग २ या ३ सैकड़ा से अधिक नहीं है। हमें यह बात भूलनी नहीं चाहिए कि आज कोल्खोज़ों के पास ५७ लाख अश्व-शक्तिवाले ३ लाख १६ हजार ट्रैक्टर हैं। सोव्खोज़ों को भी ले लेने पर ७५ लाख ८० हजार अश्वशक्ति के ४ लाख ट्रैक्टर हो जाते हैं।

देश के व्यापार को देखने पर मालूम होगा कि इस क्षेत्र से बनिये और लाभ उठानेवाले बिलकुल नष्ट हो चुके हैं। सारा व्यापार अब राज्य सहयोग-समितियों और कोल्खोज़ों के हाथ में है। एक नया सोवियत् व्यापार—व्यापार बिना लाभ उठानेवालों के, व्यापार बिना [illegible] के—उत्पन्न हो कर विकसित हुआ है।

इस प्रकार राष्ट्रीय अर्थनीति के सभी क्षेत्रों में समाजवाद [illegible] की पूर्ण विजय अब एक वास्तविक घटना है।

और इसका क्या मतलब है?

इसका मतलब है कि मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण नष्ट हो गया; जब कि उपज के हथियारों और [illegible] अधिकार हमारे सोवियत् समाज में [illegible] है। (देर तक हर्ष-ध्वनि)

स०स०स०र० की राष्ट्रीय अर्थनीति के क्षेत्र में इन सभी परिवर्तनों के फल-स्वरूप अब हमारे पास एक नई समाजवादी अर्थनीति है। जिसमें न मन्दी संभव है, न बेकारी; जिसमें न गरीबी संभव है, न सर्वनाश। और जो नागरिकों को समृद्ध और संस्कृत जीवन बिताने के लिए हर प्रकार का मौक़ा देती है।

ये हैं वे मुख्य परिवर्तन जो कि हमारी अर्थनीति के क्षेत्र में १९२४ से १९३६ के समय में हुए हैं।

स०स०स०र० की अर्थनीति के क्षेत्र में होनेवाले इन परिवर्तनों के अनुसार हमारे समाज का श्रेणी-ढाँचा भी बदल गया है।

ज़मींदार-श्रेणी, जैसा कि आप जानते हैं, गृह-युद्ध की विजयपूर्ण समाप्ति के परिणाम स्वरूप पहले ही लुप्त हो चुकी; और दूसरी शोषक श्रेणियों की भी गति ज़मींदार श्रेणी जैसी ही हुई। उद्योग-क्षेत्र में पूँजीवादी श्रेणी का खात्मा हो चुका। कृषि-क्षेत्र में कुलक-श्रेणी का अस्तित्व मिट चुका। व्यापार के क्षेत्र में बनियों और लाभ कमानेवालों की सत्ता मिट गई। इस प्रकार सभी शोषक श्रेणियाँ अब खतम हो चुकीं।

अब बाकी है, श्रमिक-श्रेणी।
अब बाकी है, कृषक-श्रेणी।
अब बाकी है, बुद्धि-जीवी-श्रेणी।

लेकिन यह समझना ग़लत होगा कि उक्त काल में इन श्रेणी-समूहों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ; और वे अब भी वैसी ही हैं, जैसी कि पूँजीवाद-काल में थीं।

उदाहरणार्थ स०स०स०र० की श्रमिक-श्रेणी को ले लीजिए। इसे **प्रोलेतेरियत्** (मज़दूर) आदत के वस कहा जाता है। लेकिन **प्रोलेतेरियत्** क्या चीज़ है? **प्रोलेतेरियत्** वह श्रेणी है, जिसके पास उपज के औज़ार और साधन का अभाव है। और जो ऐसे आर्थिक सिद्धान्त के आधीन हैं, जिसमें उपज के औज़ार और साधन का मालिक पूँजीपति है, जो कि **प्रोले-**

तेरियत् का शोषण करता है। मजदूर वह श्रेणी है, जिसका कि पूँजीवादी शोषण करते है। लेकिन हमारे देश में, जैसा कि आप जानते हैं, पूँजीवादी-श्रेणी कभी की खतम हो चुकी। उपज के औजार और साधन पूँजीवादियो के हाथ से छीन कर राज्य के हाथ में दे दिये गये। जिस राज्य की एक जबर्दस्त ताक़त है श्रमिक-श्रेणी। यहाँ पर अब कोई पूँजीवादी-श्रेणी नहीं रह गई, जो श्रमिक-श्रेणी का शोषण करेगी। अतएव हमारी श्रमिक-श्रेणी उपज के औजारों और साधनों से वंचित होने की तो बात कौन कहे, उलटे वह सारी जनता के साथ उनकी मालिक है। और चूँकि वह उनकी मालिक है, और पूँजीवादी-श्रेणी नष्ट हो चुकी है, इसलिए श्रमिक श्रेणी के शोषण की सम्भावना ही बिल्कुल नहीं रही। ऐसा होने पर क्या हमारी श्रमिक-श्रेणी को मजदूर (प्रोलेतेरियत्) कहा जा सकता है? बिल्कुल साफ है कि नहीं! मार्क्स ने कहा था—अगर मजदूर अपने को मुक्त करना चाहता है, तो उसे पूँजीवादी-श्रेणी को नष्ट करना होगा, और उपज के औजारों और साधनों को पूँजीपतियों के हाथ से छीन लेना होगा। उपज की उन अवस्थाओं को बन्द करना होगा, जो कि मजदूर उत्पन्न करते हैं। क्या यह कहा जा सकता है कि स०म०स०र० की श्रमिक-श्रेणी अपनी मुक्ति के लिए इन अवस्थाओं को उत्पन्न कर चुकी है? निस्सन्देह! यह कहा जा सकता है और इसे कहना चाहिए। फिर इसका मतलब क्या है? इसका मतलब है—स०म०स०र० का मजदूर एक बिल्कुल ही नई श्रेणी में, स०म०स०र० की श्रमिक-श्रेणी में परिवर्तित हो गया है। उसने उपज के पूँजीवादी सिद्धान्त को उठा दिया, उसने उपज के औजारों और साधनों पर समाज का स्वामित्व स्थापित किया और वह सोवियत् समाज को साम्यवाद के रास्ते पर ले जा रहा है।

जैसा कि आप देखते है, कि स०म०स०र० की श्रमिक-श्रेणी एक बिल्कुल ही नई श्रमिक-श्रेणी, शोषण से मुक्त श्रमिक-श्रेणी है, जिसकी तरह की श्रेणी को मानव-इतिहास ने इससे पहले कभी नहीं देखा।

आओ, किसानों के प्रश्न पर एक नजर डालें। आमतौर से कहा जाता है कि किसान छोटे उत्पादकों की एक श्रेणी हैं। इस श्रेणी के व्यक्ति बहुत छोटी-छोटी भूमि पर चारों ओर बिखरे हुए हैं; और अकेले हल से पिछड़ी दक़ियानूसी प्रक्रिया के साथ अपने छोटे खेतों को जोतते हैं।

वे वैयक्तिक सम्पत्ति के दास हैं और उन्हें ज़मींदार, कुलक, बनियाँ, महाजन, लाभ उठानेवाले तथा दूसरे बे-खटके चूस सकते हैं। और सचमुच पूँजीवादी देशों में सबको लेकर देखने पर किसान ठीक ऐसी ही श्रेणी है। क्या यह कहा जा सकता है कि आजकल का हमारा किसान-समुदाय, सोवियत्-किसान-समुदाय, सबको लेकर देखने पर उस प्रकार के किसान-समुदाय सा मालूम होता है? नहीं, ऐसा नहीं कहा जा सकता! अब हमारे देश में वह किसान-समुदाय नहीं रहा। हमारा सोवियत्-किसान बिलकुल नया किसान है। हमारे देश में किसानों को चूसने के लिए एक भी ज़मींदार और कुलक नहीं रहा। एक भी बनियाँ और महाजन नहीं रहा। इसलिए हमारा किसान हर प्रकार के चूसने से मुक्त किसान है। और भी, हमारे सोवियत्-किसान की सबसे अधिक संख्या कोल्ख़ोज़ी (पंचायती खेती-वाली) है। इसका कार्य और धन वैयक्तिक श्रम और पिछड़ी हुई कृषि-प्रक्रिया पर निर्भर न होकर; सामूहिक श्रम और नई से नई वैज्ञानिक प्रक्रिया पर निर्भर है। अन्ततः, हमारे किसान की खेती वैयक्तिक सम्पत्ति के आधार पर न हो, सामूहिक सम्पत्ति पर है; और सामूहिक श्रम के आधार पर बढ़ी है।

जैसा कि आप देखते हैं, सोवियत्-किसान एक बिलकुल नया किसान है, जिसकी तरह की श्रेणी को मानव-इतिहास ने इससे पहले कभी नहीं देखा।

अन्त में आइए, बुद्धि-जीवी-श्रेणी के प्रश्न पर विचार करें। इंजीनियर मिस्त्री, सांस्कृतिक क्षेत्र के कमकर, साधारण आफ़िस आदि में काम करनेवाले आदि के प्रश्न पर गौर करें। इस काल में बुद्धि-जीवी-श्रेणी में

भी भारी परिवर्तन हुआ है। अब ये वह बुद्धि-जीवी-श्रेणी नहीं है, जो अपने को श्रेणियों से उपर समझती थी; हालांकि वह जमींदारों और पूंजी-पतियों की सेवक मात्र थी। पहली बात यह है, कि अब बुद्धि-जीवी-श्रेणी की बनावट में परिवर्तन हो गया है। आज की सोवियत् बुद्धि-जीवी-श्रेणी मे अमीरों और मध्यवित्त के लोगो से आनेवाले लोगो की सख्या बहुत कम है। सोवियत् बुद्धिवादी-श्रेणी का ८० से ६० सैकडा कमकर, किसान और श्रमिक जनता के निम्नस्तर से आया है। अन्तिम बात यह है कि बुद्धि-जीवी-श्रेणी के काम का ढग ही बिलकुल बदल गया है। पहले ये धनिक-श्रेणी की सेवा करने के लिए मजबूर थी, क्योंकि दूसरा चारा नहीं था, लेकिन आज उसे जनता की सेवा करनी है। क्योंकि अब वह चूसनेवाली श्रेणियाँ (जमींदार और पूंजीपति) रही ही नहीं। अब वे सोवियत्-समाज में बराबर के सदस्य है। उस समाज मे यह किसानो और मजदूरो से कन्धा से कन्धा मिला कर एक साथ जोर लगाते हुए नई श्रेणीरहित समाजवादी समाज के निर्माण में लगी हुई है।

जैसा कि आप देखते है, सोवियत्-बुद्धि-जीवी-श्रेणी एक बिलकुल ही नई श्रेणी है, जिसकी तरह की श्रेणी को पृथ्वीतल पर किसी भी दूसरे देश में आप नहीं पायेंगे।

यह है वह परिवर्तन जो कि सोवियत्-समाज की श्रेणी के ढाँचे मे इस काल मे हुए है।

ये परिवर्तन क्या बतलाते है ?

अव्वल यह बतलाते है कि किसानों और श्रमिक-श्रेणी तथा इन दोनो श्रेणियों और बुद्धि-जीवी-श्रेणी को विभक्त करनेवाली रेखा मिट-सी चुकी है। श्रेणियों का पुराना अलगयल्गपन लुप्त हो रहा है। इसका मतलब यह है, कि समाज के इन समुदायो का फर्क तेजी से खतम हो रहा है।

दूसरे, यह बतलाते है कि समाज क इन समुदायो के पारस्परिक आर्थिक द्वन्द्व दबते जा रहे है, लुप्त होते जा रहे है।

और अन्त में, यह वतलाते हैं, कि इनके पारस्परिक राजनैतिक द्वन्द्व भी दवते जा रहे हैं, लुप्त होते जा रहे हैं।

यह है स्थिति स०स०स०र० के श्रेणी-ढाँचे के सवन्ध में हुए परिवर्तनों के वारे में।

स०स०स०र० के सामाजिक जीवन के परिवर्तनों का जो चित्र यहाँ खींचा गया है, वह अपूर्ण रहेगा; जव तक कि कुछ शब्द एक और भी क्षेत्र के परिवर्तनों के वारे में न कहा जाय। मेरा मतलव है, स०स०स०र० की जातियों के पारस्परिक सम्वन्ध के विषय से। जैसा कि आप जानते,हैं, सोवियत्-संघ के भीतर रहनेवाली जातियों, जाति-समूह और राष्ट्रों की संख्या ६० है। सोवियत्-राज्य एक वहुजातिक राज्य है। यह स्पष्ट ही है कि स०स०स०र० की जनता के पारस्परिक संबंध का प्रश्न अव्वल दर्जे के महत्त्व का प्रश्न है।

आप जानते हैं कि संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक(स०स०स०र०) प्रथम सोवियत् कांग्रेस में १६२२ में संगठित हुआ था। इसे स०स०स०र० की जातियों की स्वतंत्रता और स्वेच्छा से सम्मिलित होने के सिद्धान्त पर संगठित किया गया था। जो विधान आजकल काम कर रहा है, वह स०स० स०र० का प्रथम विधान है। और उसे १६२४ में स्वीकृत किया गया था। यह वह समय था, जब कि लोगों का पारस्परिक संवंध अभी ठीक तौर से जम नहीं पाया था। जव कि महान् रूसियों के प्रति सदियों से चला आता अविश्वास लुप्त नहीं हुआ था। और जब कि विखरनेवाली शक्तियाँ अव भी काम कर रही थीं। इन अवस्थाओं में यह जरूरी था, कि श्रमिक, राजनैतिक और सैनिक पारस्परिक सहायताओं के आधार पर एक संयुक्त वहुजातिक राज्य के रूप में सभी जातियों में परस्पर भ्रातृ-भाव-पूर्ण सहयोग स्थापित किया जाय। सोवियत्-सरकार इस काम की कठिनाइयों को जानती थी। उसके सामने पूँजीवादी देशों के वहुजातिक राज्यों के नाकामयाव तजर्वे मौजूद थे। उसके सामने पुराने आस्ट्रिया-हंगरी का

नाकामयाब तजर्बा मौजूद था। लेकिन तो भी, उसने निश्चय किया, एक बहुजातिक राष्ट्र के बनाने के तजर्बे का; क्योंकि वह जानती थी, कि समाजवाद के आधार पर जो बहुजातिक राज्य स्थापित होगा, वह अवश्य हर तरह की परीक्षाओं में उत्तीर्ण होगा।

तब से १४ वर्ष बीत गये। तजर्बे की परीक्षा के लिए यह काफी लंबा समय है। और अब हम क्या पा रहे हैं? इस समय ने बिलकुल असंदिग्ध रूप से दिखला दिया, कि समाजवाद के आधार पर संगठित बहुजातिक राष्ट्र का तजर्बा बिलकुल कामयाब रहा। यह है निःसन्दिग्ध विजय लेनिन् की जातीय नीति की। (देर तक हर्षध्वनि)

यह विजय क्यों हुई?

चूसने वाली श्रेणियों के अभाव के कारण। यही श्रेणियां हैं, जो मुख्यतया जातियों में पारस्परिक वैमनस्य को संगठित करती हैं। चूसने का अभाव इसका कारण हुआ। क्योंकि यही पारस्परिक अविश्वास को बढ़ाता और जातिक द्वेष को उत्तेजित करता है। चूंकि शक्ति कमकर-श्रेणी के हाथ में हैं, उस श्रेणी के हाथ में, जो कि हर तरह की दासता का शत्रु और अन्तर्राष्ट्रीय विचारों का सच्चा वाहन है। और कारण हैं, हर सामाजिक और आर्थिक जीवन-क्षेत्र में लोगों की पारस्परिक सहायता में योग देना। और आखिरी कारण है, स०स०स०र० की जनता की जातिक संस्कृति—वह संस्कृति जो आकार में जातिक है, और भीतर से समाजवादी है—की समृद्धि। यह और इसी तरह के दूसरे कारण हैं, जिन्होंने स०स०स०र० के लोगों की दृष्टि में भारी परिवर्तन किया। उनका पारस्परिक अविश्वास लुप्त हो गया। उनमें परस्पर मित्रता का भाव विकसित हुआ। और इस प्रकार एक अकेले संयुक्त राष्ट्र के भीतर लोगों में परस्पर वास्तविक भ्रातृ-भाव-पूर्ण सहयोग स्थापित हो गया।

इसके परिणामस्वरूप अब हमारे सामने एक पूर्णतया तैयार बहुजातिक समाजवादी राष्ट्र मौजूद है; जो कि हर प्रकार की परीक्षाओं में उत्तीर्ण

हुआ है। जिसकी स्थिरता को संसार के किसी भाग का कोई भी राष्ट्रीय राज्य देखकर ईर्ष्या किये बिना नहीं रहेगा। (जोर की हर्ष-ध्वनि)

उक्त समय के भीतर स०स०स०र० के जातिक संबंध के क्षेत्र में यह परिवर्तन उपस्थित हुए हैं।

१९२४ से १९३६ तक के समय के भीतर स०स०स०र० के आर्थिक और समाजी-राजनीतिक जीवन के क्षेत्र में जो परिवर्तन हुए हैं, उनका यह है पूर्ण योग।

३—विधान-मसविदे की कुछ विशेषताएँ

नये विधान के मसविदे में स०स०स०र० के जीवन के इन परिवर्तनों का क्या आभास मिलता है?

दूसरे शब्दों में, मुख्य निश्चित विशेषताएँ क्या हैं इस विधान-मसविदे की—जो वर्तमान कांग्रेस के सामने विचारार्थ उपस्थित किया गया है?

विधान-कमीशन को हिदायत हुई थी कि वह १९२४ के विधान में संशोधन करे। विधान-कमीशन के कार्य के परिणामस्वरूप एक नया विधान, स०स०स०र० के नये विधान का मसविदा, सामने आया है। विधान-कमीशन नये विधान के मसविदे को तैयार करते वक्त यह खयाल कर चुका था, कि विधान को प्रोग्राम से नहीं मिलाना चाहिए। इसका मतलब यह है कि विधान और प्रोग्राम में आवश्यक भेद है। प्रोग्राम बतलाता है ऐसी चीज को, जो अभी मौजूद नहीं है, जिसे कि भविष्य में प्राप्त करना और जीतना है। इसके विरुद्ध विधान को कहना होता है उस चीज को, जो कि मौजूद है। जो कि अब तक वर्तमान काल में पाई और जीती जा चुकी है। प्रोग्राम का संबंध मुख्यतया भविष्य से होता है और विधान का सम्बन्ध वर्तमान से।

इसको स्पष्ट करने के लिए दो उदाहरण देते हैं—

हमारा समाजवादी समाज अभी ही मुख्यतया समाजवाद को प्राप्त करने में कामयाब हुआ है। इसने एक समाजवादी जीवन—जिसे कि मार्क्सवादी दूसरे शब्दों में प्रथम या निम्न प्रकार का साम्यवाद कहते हैं—का निर्माण किया है। अतएव प्रधानतया हमने साम्यवाद के प्रथम आकार, समाजवाद को अभी ही प्राप्त कर लिया (देर तक हर्ष-ध्वनि)। साम्यवाद के इस आकार का मौलिक सिद्धान्त है, जैसा कि आप जानते हैं—'हर एक से उसकी योग्यता के अनुसार, हर एक को उसके काम के अनुसार'—सूत्र है। क्या हमारा विधान यह बात—कि समाजवाद तक पहुँचा जा चुका है—को प्रदर्शित करता है? क्या इसे हमें अपनी सफलताओं पर आधारित करना चाहिए? निस्सन्देह इसे जरूर करना चाहिए। ऐसा जरूर करना चाहिए। क्योंकि स०स०स०र० के लिए समाजवाद ऐसी चीज है जिसे प्राप्त किया और जीता जा चुका है।

लेकिन सोवियत्-समाज अभी साम्यवाद के ऊँचे रूप पर नहीं पहुँच सका है। जहाँ पर पहुँचने पर यह सूत्र माना जायगा—'हर एक से उसकी योग्यता के अनुसार, हर एक को उसकी आवश्यकता के अनुसार'—यद्यपि हमारे सोवियत्-समाज के सामने भविष्य में समाजवाद के इसी ऊँचे रूप की प्राप्ति अभीष्ट है। क्या हमारा विधान साम्यवाद के इस ऊँचे आदर्श पर आधारित होना चाहिए, जो कि अभी मौजूद नहीं है, जिसे कि अभी हमें प्राप्त करना है? नहीं, आधारित नहीं होना चाहिए। क्योंकि स०स० स०र० के लिए साम्यवाद का वह ऊँचा रूप ऐसी चीज है, जो कि अभी तक प्राप्त नहीं की जा चुकी है, जिसे कि भविष्य में प्राप्त करना है। विधान ऐसा नहीं कर सकता, जब तक कि इसे प्रोग्राम या भविष्य की सफलताओं की घोषणा के रूप में न परिणत कर दिया जाय।

वर्तमान ऐतिहासिक समय में हमारे विधान के लिए यह सीमाएँ हैं।

इस प्रकार नये विधान का मसविदा, जितना रास्ता हमने तय किया है, जितनी चीजें हम पा चुके हैं, उनका संक्षेप है। इसीलिए जो कुछ पाया

जा चुका है, और जो कुछ वास्तविक रूप में जीता जा चुका है, उसका अंकन और कानूनी एकीकरण यह विधान है। (ज़ोर की हर्ष-ध्वनि)

स०स०स०र० के नये विधान के मसविदे का यह प्रथम निश्चित आकार है।

और भी। पूंजीवादी देशों के विधान इस धारणा के साथ तैयार होते हैं कि पूंजीवादी सिद्धान्त अचल है। इन विधानों का मुख्य आधार है, पूंजीवाद के सिद्धान्त, जिसके कि प्रधान स्तंभ हैं—भूमि, जंगल, फैक्टरी, कारखाना और उपज के दूसरे औज़ारों और साधनों का वैयक्तिक स्वामित्व। मनुष्य का मनुष्य द्वारा चूसा जाना, तथा चूपक और चूपित का मौजूद रहना; समाज के एक छोर पर बहुसंख्यक जाँगर चलानेवालों का निराशापूर्ण जीवन और दूसरी ओर मुट्ठी भर जाँगर न चलानेवालों का व्यसनपूर्ण निश्चित जीवन आदि आदि। वे विधान इन या ऐसे ही दूसरे पूंजीवाद के स्तंभों पर अवलंबित हैं। वे विधान इन्हें सूचित करते हैं। वे उन्हें कानून का रूप देते हैं।

उनके विरुद्ध स०स०स०र० के नये विधान का मसविदा इस बात को सामने रख कर चलता है कि पूंजीवादी प्रथा खतम हो चुकी, और स०स० स०र० में समाजवादी सिद्धान्त की विजय हुई। स०स०स०र० के नये विधान के मसविदे का प्रधान आधार है, समाजवाद के सिद्धान्त। उसके मुख्य स्तंभ हैं—जिन्हें कि जीता और पाया जा चुका है—भूमि, जंगल, फैक्टरी, कारखाने और उपज के औज़ारों और साधनों में समाज का स्वामित्व; चूपक श्रेणी और चूसने को उठा देना। बहुसंख्यक की दरिद्रता और अल्पसंख्यक के ऐश व आराम को उठा देना। बेकारी को उठा देना। 'जो काम नहीं करता, वह खा नहीं सकता' के सूत्र के अनुसार हर एक उपयुक्त शरीरवाले नागरिक के लिए काम करना आवश्यक और सन्माननीय कर्तव्य है। काम करने का अधिकार अर्थात् हर एक नागरिक को काम मिलने की गारंटी का अधिकार मिलना चाहिए। अधिकार मिलना चाहिए छुट्टी

और विश्राम का, अधिकार मिलना चाहिए शिक्षा आदि का। नये विधान का मसविदा समाजवाद के इन और ऐसे अन्य स्तंभों के ऊपर अवलंबित है। विधान उन्हें सूचित करता है और उन्हें कानून का रूप देता है।

नये विधान के मसविदे का यह दूसरा विशेष रूप है।

और भी। पूंजीवादी विधान पहले ही से इस प्रतिज्ञा को जोर से पकड़ कर आगे चलते हैं; कि समाज परस्पर विरोधी श्रेणियों पर अवलंबित है—ऐसी ऐसी श्रेणियों पर अवलंबित हैं—जिनमे एक सम्पत्ति की मालिक है और दूसरी वे जिन के पास सम्पत्ति नहीं। चाहे कोई भी दल अधिकारारूढ हों, समाज का नेतृत्व करने में राज्य (अधिनायकत्व) अवश्य पूंजीवादियों के हाथ में होना चाहिए और वह मानते हैं कि विधान का प्रयोजन है, लाभ उठानेवाली धनी श्रेणियों की इच्छा के अनुसार सामाजिक व्यवस्था को दृढ करना।

पूंजीवादी विधानों के बरखिलाफ स०स०स०र० के नये विधान का मसविदा इस बात को ले कर चलता है; कि यहाँ समाज में परस्पर विरोधी श्रेणियाँ नहीं रह गईं; और समाज में दो मित्रतापूर्ण भाव रखनेवाले वर्ग कमकर और किसान हैं। और यही वर्ग—जाँगर चलानेवाले वर्ग—अधिकारारूढ हैं। समाज का नेतृत्व करने में राज्य (अधिनायकत्व) अवश्य श्रमिक वर्ग—जो कि समाज में बहुत उन्नत वर्ग है—के हाथ में होना चाहिए। विधान का यह प्रयोजन है, कि जाँगर चलानेवालों की इच्छा के अनुकूल तथा उनके लिए लाभप्रद सामाजिक व्यवस्था को दृढ करना।

नये विधान के मसविदे का यह तीसरा विशेष रूप है।

और भी। पूंजीवादी विधान इस प्रतिज्ञा को मजबूती से पकड कर चलते हैं; कि सभी राष्ट्र और जातियाँ बराबर का अधिकार नहीं रख सकतीं। राष्ट्रों में भी कुछ पूर्ण अधिकार-प्राप्त हैं और कुछ को पूर्ण अधिकार नहीं प्राप्त हैं। इसके अतिरिक्त एक तीसरे प्रकार के राष्ट्र और जातियाँ हैं। उदाहरणार्थ परतंत्र देश, जिन्हें कि पूर्ण अधिकार न

नये विधान के मसविदे का यह विशेष रूप है, कि यह नागरिकों के बाहरी अधिकार को निश्चित करने ही तक महदूद नहीं रहता, बल्कि इन अधिकारों की गारंटी के लिए और इन अधिकारों के उपयोग के लिए आवश्यक साधनों का प्रबंध करता है। यह नागरिकों के अधिकारों की समानता की घोषणा मात्र नहीं करता, बल्कि कानून द्वारा इस बात को दृढ़ कर देता है, कि चूसने का राज्य उठा दिया गया। नागरिक सभी प्रकार के चूसनों से स्वतंत्र कर दिया गया। यह काम पाने के अधिकार की घोषणा नहीं करता, बल्कि कानून इस बात का ज़िम्मा लेता है कि सोवियत्-समाज में (मंदी आदि) दुर्घटनाओं का अस्तित्व नहीं। बेकारी नष्ट की जा चुकी है। यह जन-सत्ताक स्वतंत्रताओं की सिर्फ घोषणा ही नहीं करता, बल्कि कानूनन् उनकी ज़िम्मेवारी लेता है और उसके लिए निश्चित आर्थिक साधन मुहय्या करता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि नये विधान के मसविदे में जो जन-सत्ताकपन है, वह साधारण 'मामूली' और 'सर्वत्र स्वीकृत' जनसत्ताकता नहीं है; बल्कि समाजवादी जनसत्ताकता है।

स०स०स०र० के नये विधान के मसविदे के ये हैं मुख्य निश्चित रूप।

नये विधान का मसविदा १९२४ से १९३६ तक के समय के भीतर स०स०स०र० की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक जीवन के संबंध में होने वाली उन्नति और परिवर्तनों को सूचित करता है।

४—विधान मसविदे पर पूँजीवादियों का आक्षेप

विधान-मसविदे पर पूंजी-वादियों के आक्षेप के बारे में चंद शब्द।

विधान-मसविदे के प्रति विदेशी पूंजीवादी समाचार-पत्रों के भाव निस्सन्देह दिलचस्पी से ख़ाली नहीं हैं। चूँकि विदेशी पत्र पूंजीवादी देशों की जनता के भिन्न-भिन्न स्तरों के जनमत प्रकट करते हैं, इसलिए उन्होंने विधान के मसविदे के ख़िलाफ़ जो दोष लगाये हैं, उनकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते।

विधान-मसविदे के प्रति विदेशी पत्रों के मनोभाव का प्रथम आभास, था, विधान-मसविदे की उपेक्षा करना। मेरा मतलब यहाँ है, सब से अधिक प्रगति-विरोधी फासिस्ट पत्रों से। इस श्रेणी के समालोचकों ने यही अच्छा समझा, कि विधान के मसविदे की उपेक्षा कर दी जाय, जिससे मालूम हो कि विधान जैसी चीज़ न कोई है न थी। यह कहा जा सकता है कि चुप रहना समालोचना नहीं है; लेकिन यह ठीक नहीं। चुप रहना भी, वस्तु की सत्ता की उपेक्षा करने का एक खास ढंग भी, एक प्रकार की आलोचना है—यह सच है कि वह मूर्खतापूर्ण और हास्यास्पद प्रकार की—लेकिन तो भी वह एक आक्षेप है (हँसी और हर्ष ध्वनि)। लेकिन उनके चुप रहने का ढंग असफल रहा। अन्त में वे मजबूर हुए कि बात को खोलें और दुनिया को सूचित करें। यद्यपि यह उनके लिए अफसोस की बात थी, कि स०स०स०र० के विधान के मसविदे का अस्तित्व है। इतना ही नहीं, बल्कि वह जनता के दिमागों पर विषैला असर भी करने लगा है। यह छोड़ दूसरा हो ही नहीं सकता था। क्योंकि आखिर संसार में पढ़नेवाली में जीते लोगों में कुछ जनमत है, और वे चाहते हैं बात के सच-झूठ के बारे में जानना। ऐसे लोगों को चिरकाल तक धोखे में रखना बिलकुल असंभव है। धोखा देना बहुत दूर तक नहीं चल सकता। ....

दूसरे प्रकार के समालोचक *स्वीकार करते हैं कि विधान-मसविदा नाम* की एक चीज़ वस्तुत: है; लेकिन यह मसविदा कोई खास दिलचस्पी की चीज़ नहीं है; क्योंकि यह वस्तुत: विधान का मसविदा नहीं है, बल्कि रद्दी का टुकड़ा, 'एक खोखली प्रतिज्ञा, तिकड़म लगा कर जनता को धोखे में डालना है। वह यह भी कहते हैं, कि स०स०स०र० इससे बेहतर मसविदा नहीं तैयार कर सकता था, क्योंकि वह एक राज्य नहीं है, बल्कि भौगोलिक संज्ञा है (हँसी)। और चूँकि वह एक राज्य नहीं है, इसलिए उसका विधान वास्तविक विधान नहीं हो सकता। इस प्रकार के समालोचकों का अच्छा नमूना, यद्यपि यह सुनकर ताज्जुब होगा, जर्मन अर्द्धसरकारी पत्र "ड्वाश्

डिप्लोमातिश्-पोलितिश् कोरेस्पोन्डेंज"। यह पत्र मुँहफट होकर कहता है—कि स०स०स०र० के विधान का मसविदा एक खोखली प्रतिज्ञा, जालसाजी और "पोतेम्किन् गाँव" है। यह निस्संकोच होकर घोषित करता है कि 'स०स०स०र० एक राज्य नहीं है। स०स०स०र० निश्चित सीमा से युक्त एक भौगोलिक संज्ञा से अधिक कुछ भी नहीं है।' (हँसी)। इस मत के अनुसार स०स०स०र० का विधान वास्तविक विधान नहीं समझा जा सकता।

कृपया बतलाइए तो, ऐसे समालोचकों के लिए क्या कहना चाहिए?

रूसी महान् लेखक श्चेद्रिन् अपनी कहानियों में एक बैल अफ़सर को चित्रित करता है। वह बड़ा ही संकीर्ण और ज़िद्दी स्वभाव का था। लेकिन उसका आत्मविश्वास और उत्साह हद को पहुँचा हुआ था। इस नौकरशाह ने हज़ारों निवासियों को नाश कर और बीसों शहरों को जला कर अपने शासित प्रदेश में शान्ति और व्यवस्था स्थापित की। फिर उसने अपने चारों तरफ़ देखा और क्षितिज पर अमेरिका जैसे एक देश को देखा, जो बहुत कम लोगों को मालूम था। और जहाँ के बारे में कहा जाता था, कि वहाँ किसी न किसी तरह की स्वतन्त्रता है, जो लोगों को उत्तेजित करती है। और जहाँ का राज्य-शासन दूसरे किस्म का है। नौकरशाह ने अमेरिका को देखा। और उसे बुरा लगने लगा। वह कैसा देश है? और कैसे वहाँ पहुँच गया? अपनी सत्ता क़ायम रखने का उसको क्या अधिकार है (हँसी और हर्षध्वनि)? हाँ, उसका अकस्मात् कई सदियों पूर्व पता लगा था, लेकिन क्या उसे फिर अन्तर्हित नही किया जा सकता? जिसमें कि उसकी छाया तक बाक़ी न रह जाय (हँसी)? तब उसने हुक्म लिखा—"बन्द कर दो अमेरिका को फिर।" (हँसी)। मैं समझता हूँ, ड्वाश-डिप्लोमातिश्-पोलितिश्-कोरेस्पोन्डेंज के सज्जन और श्चेद्रिन् का नौकरशाह जुड़वें की तरह हैं (हँसी और हर्षध्वनि)। स०स०स०र० देर से इन सज्जनों की आँखों में किरकिरी बना हुआ था। १६ वर्ष तक स०स०स०र० प्रदीप-

स्तम्भ की भाँति सारी दुनिया की श्रमिक-श्रेणी में मुक्ति का भाव फैलाता एवं श्रमिक-श्रेणी के दुश्मनों के क्रोध को जगाता मौजूद है। और पता लगता है कि यह स०स०स०र० मौजूद ही नहीं है, बल्कि बराबर बढ़ रहा है। बढ़ ही नहीं रहा है, बल्कि सम्पत्तिशाली होता जा रहा है। सम्पत्तिशाली ही नहीं होता जा रहा है, बल्कि वह एक नये विधान का मसविदा भी तैयार कर रहा है। ऐसा मसविदा जो कि दलित श्रेणियों के दिमाग में उत्तेजना पैदा करता और नई आशा का सचार करता है (हर्षध्वनि)। ऐसा होने पर कैसे जर्मन अर्द्ध-सरकारी पत्र के सज्जनों को अलकुस न लगेगा? वह चिल्लाते हैं, कौन यह देश है? और यदि अक्तूबर १९१७ में उसका पता चला, तो इसे फिर क्यों न उसी तरह बन्द कर दिया जाय कि उसकी छाया भी बाकी न रहे। उसके बाद उन्होंने तय किया—स०स०स०र० को फिर बन्द कर दो। लोगों के सामने बाँह उठा कर चिल्लाओ। स०स०स०र० राष्ट्र के तौर की कोई चीज नहीं है। स०स०स०र० सिर्फ़ भौगोलिक संज्ञा है (हँसी)।

श्चेद्रिन् के नौकरशाह ने अमेरिका को फिर बन्द करने का हुक्म लिखते हुए, चाहे कुछ भी हो, कुछ वास्तविकता का ख़याल जरूर रखा, जब कि हुक्म लिखते वक्त उसने यह भी जोड़ दिया—"तो भी यह मालूम होता है, कि यह मेरे अधिकार के भीतर की बात नहीं है।" (हँसी और हर्ष-ध्वनि की गर्जना)। मैं नहीं जानता कि जर्मन अर्द्ध-सरकारी पत्र के सज्जन इतने अधिक बुद्धिमान् है जो सोचें कि 'बन्द कर दो' यह किसी राज्य के बारे में वह कागज पर नहीं लिख सकते। लेकिन विचारपूर्वक कहने पर 'यह मेरे अधिकार के भीतर नहीं है' कहना पड़ेगा।.......... (हँसी और हर्षध्वनि की गर्जना)

यह कहना कि 'स०स०स०र० का विधान खोखली प्रतिज्ञा है, पोतेम्किन् गाँव है' इत्यादि। इसके लिए मैं कुछ सर्वसिद्ध घटनाएँ कहूँगा, जो खुद सहादत देंगी।

१९१७ में स०स०स०र० की जनता ने पूँजीवादियों को पदच्युत किया और श्रमजीवियों का अधिनायकत्व स्थापित किया। एक सोवियत् सरकार को स्थापित किया। यह वास्तविक है, (खोखली) प्रतिज्ञा नहीं है।

और भी। सोवियत् सरकार ने ज़मींदार श्रेणी को उठा दिया और १५ करोड़ हेक्तर (प्रायः ३६ करोड़ एकड़) ज़मीन जो पहले ज़मींदारों, मठों, और ज़ार के हाथ में थी, इसके अतिरिक्त और भी भूमि जो कि पहले ही से किसानों के हाथ में थी, छीन कर किसानों को दे दी। यह वास्तविक है, प्रतिज्ञा नहीं।

और भी। सोवियत् सरकार ने पूँजीपति-श्रेणी को वेदखल कर दिया। उनके वैंकों, फ़ैक्टरियों, रेलों, और उपज के औज़ारों तथा साधनों को छीन-कर उन्हें समाज की सम्पत्ति घोषित किया और इन उद्योगों के प्रवंध के लिए श्रमिक-श्रेणी के योग्यतम व्यक्तियों को नियुक्त किया। यह वास्तविक है, प्रतिज्ञा नहीं। (देर तक हर्षध्वनि)

और भी। उद्योग और कृषि को, एक नये साम्यवादी तरीक़े के अनु-सार, एक नई वैज्ञानिक प्रक्रिया के आधार पर संगठित कर आज सोवियत् सरकार ऐसी अवस्था में पहुँची है; जव कि स०स०स०र० की खेती लड़ाई के पहले होनेवाले अनाज का ड्योढ़ा अन्न पैदा करती है; और उद्योग लड़ाई के पहले से पँचगुना चीजें पैदा कर रहा है। राष्ट्रीय आय लड़ाई के पहले से चौगुनी हो गई है। यह वास्तविक है, प्रतिज्ञा नहीं। (देर तक हर्षध्वनि)

और भी। सोवियत् सरकार ने वेकारी को उठा दिया। काम पाने का अधिकार, शान्ति और छुट्टी पाने का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, सव को दिया। कमकरों, किसानों और वुद्धिजीवियों के लिए वेहतर आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति तैयार की, और (चुनाव में) छिपी पुर्जी के साथ सार्वजनिक प्रत्यक्ष और समान-मताधिकार अपने नागरिकों के लिए प्रदान किया, यह वास्तविक है, (खोखली) प्रतिज्ञा नहीं। (लंवी हर्षध्वनि)

अन्त में, स०स०स०र० ने एक नये विधान का मसविदा तैयार किया।

वह प्रतिज्ञा नहीं है, बल्कि सर्व-साधारण को विदित बातों का दर्ज करना और कानून द्वारा दृढ़ करना है। यह उन बातों का दर्ज करना और कानून द्वारा दृढ़ करना है, जो जीती और प्राप्त की जा चुकी है।

प्रश्न होता है, क्यों जर्मन अर्द्ध-सरकारी पत्र के सज्जन यह सब पोतेम्किन् गाँव के बारे में कहते हैं; अगर वह नहीं चाहते कि जनता से म०स०स०र० संबंधी सत्य को छिपाया जाय, उन्हें बरगलाया जाय, धोखा दिया जाय।

यह वास्तविक बात है और वास्तविकता के बारे में कहा जाता है कि वह दुर्दम्य चीज है। जर्मन-अर्द्धसरकारी पत्र के सज्जन कह सकते हैं, वह और भी बुरा है (हँसी)। लेकिन हम उन्हें प्रसिद्ध रूसी कहावत के शब्दों में कह सकते हैं—'कानून बेवकूफों के लिए नहीं बनाये जाते'। (हँसी और लम्बी हर्ष-ध्वनि)

तीसरी श्रेणी के समालोचक विधान के मसविदे के कुछ गुणों को स्वीकार करने के विरुद्ध नहीं हैं। वह इसे अच्छी बात समझते हैं, लेकिन उनको बहुत सन्देह है कि उसके सिद्धान्तों में से कितने ही प्रयोग में नहीं लाये जा सकते। उनको विश्वास है, कि ये सिद्धान्त आमतौर से अव्यवहार्य हैं और वे किताब ही में पड़े रहेंगे। यह सन्दिग्ध-विचारी लोग हैं। ऐसे सन्दिग्ध-विचारी सभी देशों में पाये जाते हैं।

लेकिन ऐसे सन्देहवाले लोग हमें यह पहली ही बार नहीं मिले हैं। जब १९१७ में बोल्शेविकों ने अधिकार हाथ में लिया, तो इन सन्देहवादियों ने कहा—"बोल्शेविक बुरे नहीं हैं, शायद! लेकिन वे शासन नहीं कर सकेंगे। वे विफल होंगे!" लेकिन असल बात क्या हुई? बोल्शेविक नहीं, बल्कि सन्देहवादी नाकामयाब हुए।

इस प्रकार के सन्देहवादियों ने गृह-युद्ध और उसमें विदेशियों के नाजायज दखल देने के वक्त कहा—सोवियत् सरकार बुरी चीज नहीं है, लेकिन देनिकिन् और कोल्चक्—हम बतला देना चाहते हैं, अवश्य

वजयी होंगे। लेकिन यहां भी बात उल्टी हुई। सन्देहवादियों का अनुमान गलत निकला।

जब सोवियत् सरकार ने प्रथम पंचवार्षिक योजना प्रकाशित की, तो फिर सन्देहवादियों की सूरतें दिखलाई देने लगीं। उन्होंने कहा—पंचवार्षिक योजना जरूर अच्छी चीज़ है, लेकिन इसका होना बहुत मुश्किल है। बोल्शेविकों की पंचवार्षिक योजना कामयाब होनेवाली नहीं है। लेकिन असल बात ने सिद्ध कर दिया कि अभाग के मारे सन्देहवादी फिर एक बार हारे! पंचवार्षिक योजना चार वर्ष में पूरी हुई!

यही बात नये विधान के मसविदे और संदेहवादियों के किये आक्षेपों के बारे में कही जा सकती है। जैसे ही मसविदा प्रकाशित हुआ, वैसे ही इस प्रकार के समालोचक मैदान में अपने निराशापूर्ण सन्देह के साथ तथा विधान के कुछ सिद्धान्तों की अव्यवहार्यता पर सन्देह करते दिखलाई पड़े। इसमें संदेह की जरा भी गुंजायश नही, कि इस बार भी सन्देहवादी नाकामयाब होंगे। आज भी वैसे ही नाकामयाब होंगे, जैसे पहले अनेक बार हो चुके हैं।

चौथे प्रकार के समालोचक नये विधान के मसविदे पर आक्षेप करते हुए उसके बारे में नाना स्वरों में कहते हैं—"यह दक्षिणपार्श्व (नर्मदल) की ओर झुकना", "श्रमजीवियों के अधिनायकत्व का परित्याग", "बोल्शेविक शासन का खातमा", "बोल्शेविक् दक्षिण पार्श्व की ओर झुक गये, यह सच्ची बात है।" ऐसे कहनेवालों में कुछ पोलैंड के समाचार-पत्र तथा कितने ही अमेरिका के समाचार-पत्र बड़ा जोश दिखला रहे हैं। कृपया बतलाएँ तो ऐसे समालोचकों के लिए क्या कहा जाय?

श्रमजीवी श्रेणी के अधिनायकत्व के आधार को और विस्तृत करने और अधिनायकत्व को और भी लचकदार तथा राज्य द्वारा समाज के नेतृत्व के लिए और भी प्रबल; श्रमजीवी श्रेणी के अधिनायकत्व को मजबूत करना नहीं कह कर कमजोर करना कहते हैं, या त्याग देना तक कहते हैं, तो क्या उनसे यह पूछना उचित न होगा?—क्या ये सज्जन वस्तुतः

जानते हैं कि श्रमजीवी श्रेणी का अधिनायकत्व क्या चीज है ? यदि समाजवाद की विजयों को कानूनन् दृढ़ता प्रदान करना, उद्योगीकरण, पंचायतीकरण और जनसम्पत्ती-करण की कामयाबियों को कानूनन् दृढ़ करना 'दक्षिण-पार्श्व की ओर झुकना है' तो यह पूछना उचित होगा—"क्या सचमुच यह सज्जन जानते हैं कि दक्षिण और वाम में क्या भेद है ?" (हँसी और हर्षध्वनि)।

इसमें सन्देह नहीं कि यह सज्जन विधान के मसविदे की आलोचना करते हुए अपना रास्ता बिल्कुल भूल गये। और रास्ता भूल जाने पर दक्षिण-वाम का उन्हें पता नहीं।

इस सम्बन्ध में मुझे गोगोल् के 'मृत आत्मा' की दासी पेलागेया याद आ रही है। पेलागेया ने चिचिकोव् के कोचवान सेलिफन् को रास्ता बताने का जिम्मा लिया। लेकिन उसे रास्ते का दाहिना, बायाँ भाग मालूम नहीं था जिससे वह रास्ता भूल किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। यह मानना पड़ेगा, जानकारी का दम भरते हुए भी पोलिश् समाचार-पत्र-वाले आलोचकों का ज्ञान मृत आत्मा की दासी पेलागेया से अधिक नहीं है (हर्षध्वनि)। आप को स्मरण होगा कि कोचवान सेलिफन् ने ताना मारते हुए कहा—'ओ, तू मसखरी तुझे दाहिने-बायें का भेद मालूम नहीं है।' हमारे ये अभागे आलोचक भी उसी तरह के ताने के पात्र मालूम होते हैं— 'ओः, तुम बेचारे आलोचको तुम्हें दाहिने बायें का भेद मालूम नहीं है।' (लम्बी हर्षध्वनि)

अन्तिम। दूसरे प्रकार के भी कुछ आलोचक हैं। पिछले प्रकार के आलोचक जहाँ विधान के मसौदे पर श्रमिक-श्रेणी के अधिनायकत्व को परित्याग करने का दोष लगाते हैं वहाँ ये आलोचक लोग, उसके विरुद्ध आक्षेप करते हैं, कि इसमें स०स०स०र० की वर्तमान अवस्था में परिवर्तन करने की कोई बात नहीं, श्रमिक श्रेणी का अधिनायकत्व पूर्ववत् ही है; राजनीतिक दलों को स्वतन्त्रता नहीं दी गई है; और स०स०स०

पूर्ववत् ही साम्यवादी-दल (कम्युनिस्ट पार्टी) का नेतृत्व कायम रक्खा गया है। इस प्रकार के आलोचकों का खयाल है, कि स०स०स०र० में (राजनीतिक) दलों का अभाव, जनसत्ताकता के सिद्धान्तों की अवहेलना है।

मैं स्वीकार करता हूँ, कि नये विधान के मसौदे में, सचमुच, श्रमिक-श्रेणी का अधिनायकत्व वैसे ही क़ायम रक्खा गया है; जैसे कि उसमें साम्यवादी दल का नेतृत्व क़ायम रखा गया है (उच्च हर्षध्वनि)। यदि हमारे आदरणीय आलोचक इसे विधान के मसौदे का कलंक समझते हैं, तो यह अफ़सोस की बात है। हम बोल्शेविक इसे मसौदे का गुण समझते हैं (उच्च हर्षध्वनि)।

राजनैतिक दलों की स्वतंत्रता के सम्बन्ध में हमारी सम्मति दूसरी है। दल का मतलब है श्रेणी का एक भाग, उसका अग्रणी भाग। बहुत से दल और इसीलिये दलों की स्वतंत्रता ऐसे ही समाज में रह सकती है, जिसमें परस्पर विरोधी श्रेणियाँ हैं, जिन श्रेणियों का स्वार्थ एक दूसरी के खिलाफ़ और न सुलह होने लायक़ है। जिनमें कि पूँजीपति और कमकर, ज़मींदार और किसान, कुलक और ग़रीब किसान आदि हैं। किन्तु स०स०स०र० में अब पूँजीपति, ज़मींदार, कुलक जैसी श्रेणियाँ नहीं हैं। स०स०स०र० में सिर्फ दो श्रेणियाँ हैं। कमकर और किसान, जिनके स्वार्थ एक दूसरे के विरोधी नहीं। बल्कि उनके स्वार्थ एक दूसरे के सहायक हैं। इसी-लिए स०स०स०र० में अनेक राजनीतिक दलों की ज़रूरत नहीं। और इसीलिए इन दलों की स्वतंत्रता का भी प्रश्न नहीं होता। स०स०स०र० में सिर्फ एक दल साम्यवादी-दल की आवश्यकता है। स०स०स०र० में सिर्फ एक दल साम्यवादी दल रह सकता है जो कि हिम्मत के साथ कमकरों और किसानों के स्वार्थ की पूर्णतया रक्षा करता है। और यह इन श्रेणियों के स्वार्थ की रक्षा बहुत खूबी से करता है; इसमें ज़रा भी सन्देह की गुंजायश नहीं। (उच्च हर्षध्वनि)

वे लोग जनसत्ताकता की बात करते हैं; लेकिन जनसत्ताकता क्या

हैं ? पूँजीवादी देशों में जहाँ कि परस्पर विरोधी श्रेणियाँ हैं—दूर तक विचार करने पर वह जनसत्ताकता है बलवानों के लिए, जनसत्ताकता है अल्पसंख्यक धनी श्रेणी के लिए। इसके विरुद्ध स०स०स०र० में प्रजासत्ताकता है जाँगर चलानेवालों की प्रजासत्ताकता। अर्थात् सबकी प्रजासत्ताकता। इससे तो यही मालूम होता है कि जनसत्ताकता के सिद्धान्तों की अवहेलना स०स०स०र० के नये विधान के मसविदे में नहीं है; बल्कि पूँजीवादी विधानों में है। इसीलिए मैं समझता हूँ कि स०स०स०र० का विधान ही संसार में पूर्णतया जनसत्तात्मक विधान है।

स०स०स०र० के नये विधान के मसविदे की जो आलोचना पूँजीवादियों ने की है, उसकी यह स्थिति है।

५—विधान-मसविदे के संशोधन

आइए, मसविदे के संबंध में जो सारे राष्ट्र में चारों ओर बहस करते समय नागरिकों ने विधान के मसविदे में संशोधन पेश किये हैं, उनपर विचार करें।

सारे राष्ट्र में चारों ओर विधान के मसविदे पर वाद-विवाद हुए हैं। उन्होंने बहुत अधिक संख्या में संशोधन और संवर्द्धन पेश किये हैं। वे सोवियत् पत्रों में प्रकाशित हुए हैं। संशोधनों की नानाकारता और सभी का मूल्य बराबर नहीं है। इसे देखते हुए मेरी राय में उन्हें तीन किस्मों में विभक्त किया जा सकता है।

पहली क़िस्म के संशोधनों की यह विशेषता है कि वह विधान-संबंधी प्रश्न से संबंध नहीं रखते, बल्कि उन प्रश्नों से संबंध रखते हैं, जो कि भविष्य की धारा-सभाओं के तात्कालिक कानूनी काम के भीतर आते हैं। कुछ बीमा के प्रश्न से संबंध रखते हैं। कुछ कोल्खोज् के ढाँचा संबंधी प्रश्न, कुछ हमारे उद्योग के ढाँचे तथा आर्थिक समस्याओं से संबंध रखते हैं। इन संशोधनों का विषय उक्त प्रकार से है। मालूम देता है, इन संशोधनों को

हम जानते हैं कि सोवियत्-समाज दो श्रेणियों से मिल कर बना है—एक कमकर श्रेणी और एक किसान श्रेणी। और इसी बात को विधान-मसविदे की पहली धारा बतलाती है। यह पहली धारा हमारे समाज की श्रेणी-संबंधी बनावट को सूचित करती है। प्रश्न हो सकता है, कि बुद्धिजीवी कार्यकर्ताओं को फिर क्यों छोड़ दिया गया ? बुद्धिजीवी समुदाय कभी एक श्रेणी न था, और न कभी वह एक श्रेणी हो सकता है। वह हमेशा एक ऐसा स्तर था और अब भी है जो कि समाज की सभी श्रेणियों से ले कर अपने सदस्य बनाता है। पुराने ज़माने में बुद्धिजीवी समुदाय अमीरों, मध्यम वर्ग और कुछ कुछ किसानों और बहुत ही कम कमकरों में से अपने सदस्यों की भर्ती करता था। हमारे सोवियत् के ज़माने में बुद्धिजीवी समूह के प्रायः सभी सदस्य कमकरों और किसानों में से भर्ती किये जाते हैं। चाहे जैसे भी वह अपने सदस्यों की भर्ती करता हो, चाहे जैसी भी उसकी शकल हो, वह ज़रूर एक स्तर है, श्रेणी नहीं।

क्या ऐसी स्थिति के कारण बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ताओं के अधिकारों पर प्रहार होता है ? बिलकुल नहीं। विधान-मसविदे की प्रथम धारा सोवियत्-समाज के नाना स्तरों के अधिकार की बात नहीं करती। वह सिर्फ समाज की श्रेणी-संबंधी बनावट बतलाती है। सोवियत्-समाज के नाना स्तरों—जिनमें बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ता भी शामिल हैं—के अधिकारों को विधान-मसविदे के दसवें और ग्यारहवें परिच्छेदों में मुख्यतया कहा गया है। उन परिच्छेदों से साबित है कि कमकर, किसान और बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ता देश के आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में बिलकुल समान अधिकार रखते हैं। इसलिए बुद्धिजीवी कार्यकर्त्ताओं के अधिकारों के ऊपर प्रहार का प्रश्न ही नहीं होता।

स०स०स०र० में रहनेवाली जातियों और राष्ट्रों के बारे में भी वही बात कही जा सकती है। विधान-मसविदे के दूसरे परिच्छेद में कहा गया है, कि स०स०स०र० समान अधिकारोंवाली जातियों का एक स्वतंत्र संघ है।

क्या यह अच्छा होगा, कि इस सूत्र को विधान-मसविदे की पहली धारा—जो कि सोवियत् समाज की जातिक बनावट की बात नहीं करती, बल्कि उसकी श्रेणी-संबंधी बनावट को कहती है—में दोहराया जाय? निश्चय ही नहीं दोहराना चाहिए। स०स०स०र० के राष्ट्रों और जातियों के अधिकारों को विधान-मसविदे के दूसरे, दसवें और ग्यारहवें परिच्छेदों में कहा ही जा चुका है। उन परिच्छेदों से स्पष्ट है, कि स०स०स०र० के राष्ट्र और जातियाँ देश के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में समान अधिकार रखती हैं। इसलिए जातीय अधिकारों पर प्रहार का सवाल ही नहीं उठता।

यह भी ठीक नहीं होगा, कि 'किसान' की जगह 'कोल्खोजी' या 'समाजवादी कृषि का जाँगर चलानेवाला' रक्खा जाय। पहली बात यह है, कि कोल्खोजियों के अतिरिक्त अभी किसानों में गैर-कोल्खोजी १० लाख के करीब किसान-घर हैं। उनके बारे में क्या करना होगा? क्या इस संशोधन के पेश करनेवाले चाहते हैं कि उनका नाम ही किताब में काट दिया जाय? यह बुद्धिमानी नहीं होगी। दूसरी बात। चूँकि बहुसंख्यक किसान कोल्खोजी हैं, इसका यह मतलब नहीं निकलता, कि अब वह किसान ही नहीं हैं? और उनके पास, अपना घर, थोड़ा पिछवाड़े का खेत आदि है ही नहीं। तीसरी बात। ऐसा स्वीकार करने पर तो "कमकर" की जगह भी हमें "समाजवादी जाँगर चलानेवाला" बनाना पड़ेगा। जिसके बारे में कि संशोधनकर्ता न जाने क्यों चुप हैं? अन्तिम बात। क्या कमकर-श्रेणी और किसान-श्रेणी लुप्त हो चुकी है? अगर लुप्त नहीं हुई है, तो क्या यह अच्छा होगा कि उनके स्थापित नाम को कोष में उड़ा दिया जाय? वास्तविक बात यह है कि संशोधन पेश करनेवाले के दिमाग में वर्तमान समाज नहीं है। वह भविष्य समाज का खयाल कर रहा है, जब कि श्रेणियाँ नहीं रह जायँगी, और कमकर तथा किसान साम्यवादी समाज के जाँगर चलानेवालों के रूप में परिणत हो जायँगे।

इसीलिए ऐसे संशोधन पेश करनेवाले बहुत आगे उड़ रहे हैं। लेकिन विधान बनाते वक़्त भविष्य से न आरंभ करके वर्तमान—जो कि इस वक़्त अस्तित्व में आ चुका है—से आरंभ करना चाहिए। विधान को बहुत आगे न दौड़ना है, न दौड़ाना चाहिए।

(२) उसके बाद विधान-मसविदे की सत्रहवीं धारा पर एक संशोधन है। इस संशोधन में कहा गया है; कि सत्रहवीं धारा, जिसमें कि संघ-रिपब्लिकों को स०स०स०र० से स्वतंत्रतापूर्वक अलग होने का अधिकार दिया गया है, उसे बिलकुल हटा दिया जाय। मैं समझता हूँ, यह प्रस्ताव उचित नहीं है। इसलिए कांग्रेस को इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। स०स०स०र० समान अधिकारवाले संघ-रिपब्लिकों का स्वेच्छा-संघ है, विधान से इस धारा—जो कि स०स०स०र० से स्वतंत्रतापूर्वक अलग होने का अधिकार प्रदान करता है—को निकाल देना इस संघ के स्वेच्छापूर्वक होने की विशेषता के विरुद्ध जाता है। क्या हमें ऐसा कदम उठाना चाहिए? मैं समझता हूँ, हम ऐसा क़दम उठा नहीं सकते, न उठाना चाहिए। कहा जाता है, कि स०स०स०र० में एक भी रिपब्लिक नहीं है, जो कि स०स०स०र० से अलग होना चाहता हो; इसलिए धारा १७ का कोई क्रियात्मक उपयोग नहीं। निश्चय यह ठीक है कि एक भी ऐसी रिपब्लिक नहीं है, जो कि स०स०स०र० से अलग होना चाहता हो, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम स०स०स०र० से संघ-रिपब्लिकों के स्वतंत्रतापूर्वक अलग होने के अधिकार के लिए विधान में जगह न दें। स०स०स०र० में एक भी ऐसा संघ-रिपब्लिक नहीं है, जो कि दूसरे संघ-रिपब्लिक पर अत्याचार करना चाहता हो, लेकिन इसका मतलब हर्गिज़ नहीं कि हम स०स०स०र० के विधान से उस धारा को निकाल दें, जो कि संघ-रिपब्लिकों के अधिकारों की समानता बतलाती है।

(३) एक प्रस्ताव है, कि विधान-मसविदे के दूसरे परिच्छेद में एक नई धारा निम्न अर्थ की जोड़ दी जाय—"उपयुक्त आर्थिक और सांस्कृतिक

विकास के तल पर पहुँचने के बाद स्वायत्त सोवियत्-समाजवादी रिपब्लिकों को सघ-सोवियत्-समाजवादी रिपब्लिकों के रूप में परिणत किया जा सकता है।" क्या इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया जाय? मेरे विचार में इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। यह गलत प्रस्ताव है। अपने अभिप्राय ही से नहीं; बल्कि इसलिए कि यह शर्त पेश करता है। आर्थिक और सांस्कृतिक परिपक्वता पर जोर देकर स्वायत्त-रिपब्लिकों को सघ-रिपब्लिकों की श्रेणी में परिणत करने के लिए कारण के तौर पर जोर नहीं दिया जा सकता। और न ही आर्थिक या सामाजिक पिछड़ेपन को स्वायत्त-रिपब्लिकों की सूची में किसी एक रिपब्लिक को छोड़ रखने के लिए कारण माना जा सकता है। यह मार्क्सवादी, लेनिन्वादी दृष्टि नहीं है। उदाहरणार्थ तातार-रिपब्लिक स्वायत्त-रिपब्लिक ही बनी है, जब कि कज़ाक-रिपब्लिक सघ-रिपब्लिक बन गई है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि सांस्कृतिक और आर्थिक विकास की दृष्टि से देखने पर कज़ाक रिपब्लिक तातार रिपब्लिक से अधिक ऊँची है। बात बिलकुल उलटी है। यही बात वोल्गा जर्मन स्वायत्त रिपब्लिक और किर्गिज सघ-रिपब्लिक के बारे में भी कही जा सकती है। इन दोनों में पहली दूसरी की अपेक्षा सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में अधिक आगे है, यद्यपि वह स्वायत्त-रिपब्लिक ही रह गई है। स्वायत्त-रिपब्लिकों को सघ-रिपब्लिकों के रूप में परिणत करने के कारण क्या है?

ऐसे तीन कारण हैं—

अव्वल ऐसे रिपब्लिक को सीमान्त रिपब्लिक—ऐसी रिपब्लिक जो कि चारों तरफ से स०स०स०र० की भूमि से घिरी न हो—होना चाहिए। क्यों? क्योंकि सघ-रिपब्लिकों को स०स०स०र० से अलग होने का अधिकार है। जब एक रिपब्लिक *सघ-रिपब्लिक हो जाती है, तो स्वायत्तः* उसे इस स०स०स०र० से अपने अलग होने के प्रश्न को उठाने के योग्य होना चाहिए। लेकिन ऐसा प्रश्न वही रिपब्लिक उठा सकती है, ...

करे? निस्सन्देह हमें जरूरत है। इसमें सन्देह नहीं कि ऐसी संस्था के विना स०स०स०र० जैसे वहुजातिक राज्य का प्रबंध करना असंभव होगा। ऐसी संस्था है यह द्वितीय भवन स०स०स०र० की जातिक-सभा।

यूरोपीय और अमेरिकन राज्यों के पार्लियामेंट-संबंधी इतिहास का उदाहरण दे कर वतलाया गया है, कि उन देशों में दोहरे भवन की प्रथा ने सिर्फ अभावात्मक परिणाम ही पैदा किये हैं; और द्वितीय भवन आमतौर से प्रतिक्रिया के केन्द्र के रूप में विगड़ जाता और प्रगति के रास्ते में रुकावट डालता है। यह सब सच है, लेकिन यह इस वजह से है, कि उन देशों में दोनों भवनों के बीच समानता नहीं है। जैसा कि हम जानते हैं द्वितीय भवन को प्रायः पहले भवन से अधिक अधिकार दिये गये हैं, और हमेशा द्वितीय भवन का निर्माण जनसत्ता-विरोधी ढंग से होता है। अकसर इनके सदस्य ऊपर से नियुक्त किये जाते हैं। निस्सन्देह ही यह दोष लुप्त हो जाते हैं जब कि दोनों भवनों में समानता स्थापित की गई हो; और जब कि द्वितीय भवन भी प्रथम की तरह ही जनसत्ताकीय रीति से स्थापित हुआ हो।

(६) और भी। विधान-मसविदे में एक वात जोड़ने के लिए कही गई है—दोनों भवनों के सदस्यों की संख्या बराबर होनी चाहिए। मेरी राय में इस प्रस्ताव को स्वीकृत किया जा सकता है। मेरे विचार में इसका राजनैतिक लाभ स्पष्ट है। क्योंकि यह दोनों भवनों की समानता पर जोर देता है।

(७) इसके वाद विधान-मसविदे में यह जोडने का प्रस्ताव आया है कि जातिक-सभा के सदस्यों को भी संघ-सभा के सदस्यों की तरह साक्षात् निर्वाचन द्वारा चुना जाय। मैं समझता हूँ, इस प्रस्ताव को भी स्वीकृत कर लेना चाहिए। यह सच है कि इसके कारण चुनावों में कुछ दफ़्तरी असुविधाएँ होंगी, लेकिन दूसरी ओर इसका राजनैतिक लाभ भी वहुत ज़्यादा है, क्योंकि यह जातिक सभा (सोवियत्) के सन्मान को वढ़ा देगा।

(८) इसके वाद ४० वीं धारा में जोड़ने के लिए यह प्रस्ताव किया

गया है, कि महासोवियत् के प्रेसीदिउम् को अस्थायी क़ानून बनाने का अधिकार दिया जाय। मैं समझता हूँ, कि यह प्रस्ताव ग़लत है और कांग्रेस को इसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। हमें अब ऐसी परिस्थिति का ख़ात्मा कर देना चाहिए, जहाँ कि एक नहीं, कई संस्थाएँ क़ानून बनावें। ऐसी परिस्थिति इस सिद्धान्त के विरुद्ध है कि क़ानून स्थायी होने चाहिए। और हमें इस वक़्त क़ानूनों की स्थायित्व की सबसे अधिक आवश्यकता है। स०स० स०र० में क़ानून बनाने का अधिकार सिर्फ़ एक ही संस्था—स०स०स०र० की महासभा—को होना चाहिए।

(९) और भी, विधान-मसविदे की ४८वीं धारा में यह जोड़ने का प्रस्ताव किया गया है, कि स०स०स०र० की महासभा (सुप्रीम कौंसिल) के प्रेसीदिउम् का अध्यक्ष स०स०स०र० के महासभा द्वारा निर्वाचित नहीं होना चाहिए, बल्कि, देश की सम्पूर्ण जनता द्वारा। मेरी राय में यह प्रस्ताव ग़लत है। क्योंकि यह हमारे विधान की स्पिरिट के विरुद्ध जाता है। हमारे विधान के सिद्धान्त के अनुसार स०स०स०र० का एक ऐसा व्यक्ति प्रेसिडेंट नहीं होना चाहिए, जिसे कि सारी जनता महासभा से अलग चुने, और वह महासभा के विरुद्ध अपने को रख सके। स०स०स०र० का प्रेसीडेंट सहकारी है, महासभा का प्रेसीदिउम् है, साथ ही महासभा के प्रेसीदिउम् का अध्यक्ष है, जो कि सारी जनता द्वारा न निर्वाचित होकर महासभा द्वारा निर्वाचित हुआ है; और महासभा के सामने उत्तरदायी है। इतिहास के तजर्बे ने बतलाया है कि सर्वोच्च संस्थाओं का इस प्रकार का ढाँचा अत्यन्त प्रजासत्ताक है; और यह अनभिलषित घटनाओं से देश को बचाता है।

(१०) इसके बाद एक संशोधन धारा ४८ पर है। इसमें कहा गया है कि स०स०स०र० की महासभा के प्रेसीदिउम् के उपाध्यक्षों की संख्या को बढ़ा कर ग्यारह—प्रत्येक संघ-रिपब्लिक से एक कर दिया जाय। मैं समझता हूँ कि इस संशोधन को स्वीकृत किया जा सकता है, क्योंकि यह स०स०स०र० के महासभा का सम्मान और बढ़ा देगा।

"रूसी कम्युनिस्ट पार्टी को जाँगर चलानेवाली जनता के सामने स्पष्ट कर देना चाहिए, जिसमें कि अस्थायी ऐतिहासिक आवश्यकताओं को ग़लती से साधारण के तौर पर न मान लें। नागरिकों के एक भाग को मताधिकार से वंचित करना सोवियत्-प्रजातंत्र में मताधिकार से वंचित नागरिकों की एक निश्चित श्रेणी को जीवन भर के लिए नहीं है; जैसा कि अधिकांश पूँजीवादी जनसत्ताक प्रजातंत्रों में हुआ है। वल्कि इसका संवंध सिर्फ चूसनेवालों से है। सिर्फ उनसे है, जो अपनी चोषक की स्थिति को क़ायम रखने के लिए, पूँजीपतिक संवंध को अक्षुण्ण रखने के लिए समाजवादी सोवियत्-प्रजातंत्र के मौलिक क़ानूनों को तोड़ने में तत्पर हैं। इसीलिए सोवियत्-प्रजातंत्र में हर एक दिन जो कि समाजवाद के मज़बूत करने में लग रहा है, वह एक ओर वचे-खुचे चूपकों या पूँजीपतिक संवंध की संभावना को कम करता जा रहा है। और इस प्रकार स्वयं मताधिकार से वंचित पुरुषों के प्रतिशतक को कम कर रहा है। रूस में इस वक्त ऐसे लोग मुश्किल से दो या तीन प्रतिशत हैं। दूसरी ओर अदूर भविष्य में विदेशी हमलों के वन्द होने और पहले के मालिकों की सम्पत्ति के जब्त होने का काम पूरा हो जाने पर, कुछ नियमों के साथ ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी, जव कि श्रमजीवी राज्य-शक्ति चूपकों के विरोध को दवाने के लिए कोई दूसरा तरीक़ा चुनेगी और **विना किसी निर्वन्ध** के सार्वजनिक मताधिकार प्रदान करेगी" (लेनिन्-ग्रन्थ-संग्रह, भाग २४, पृष्ठ ६४, रूसी संस्करण) मैं समझता हूँ, यह स्पष्ट है।

स०स०स०र० के विधान के मसविदे के संशोधनों और संवर्द्धनों की यह स्थिति है।

६—स०स०स०र० के नये विधान का महत्त्व

देश के कोने कोने में करीव पाँच महीने तक जो वाद-विवाद हुआ है, उसके परिणामों को देखने से यह माना जा सकता है कि वर्तमान कांग्रेस-

विधान-ममविदे को स्वीकार कर लेगी (उच्च हर्षध्वनि और करतल ध्वनि, सभी खड़े)।

चन्द दिनों में सोवियत्-संघ के पास एक नया, सविस्तर समाजवादी-जनसत्ताकता के सिद्धान्तों पर अवलम्बित समाजवादी विधान होगा।

यह एक ऐतिहासिक दस्तावेज होगा, जिसमें कि सरल, और संक्षिप्त शब्दों में प्रायः रोज़ाना टिप्पणी के ढग में स०स०स०र० में समाजवाद के विजय की घटनाएँ, पूँजीवादियों की गुलामी से स०स०स०र० के जांगर चलानेवालों के मुक्त होने की घटनाएँ, स०स०स०र० मे पूर्ण और परस्पर अविरोधी जन-सत्ताकता के विजय की घटनाएँ दर्ज है।

यह एक ऐसा दस्तावेज होगा, जो कि उस घटना को सिद्ध करेगा, जिसका कि स्वप्न पूँजीवादी देशों के लाखो ईमानदार आदमी देखते थे और अब भी देख रहे हैं। जो कि स०स०स०र० में प्राप्त किया जा चुका है (उच्च हर्षध्वनि)। यह एक ऐसा दस्तावेज होगा, जो कि इस बात को सिद्ध करेगा, कि जो बात स०स०स०र० में प्राप्त की जा चुकी है दूसरे देशो मे भी उसका प्राप्त करना बिल्कुल सभव है (उच्च हर्षध्वनि)।

इससे यह मालूम होगा कि स०स०स०र० के नये विधान का अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व कितना अधिक है।

आज, जब कि फासिज्म की भयकर लहर श्रमिक-श्रेणी के समाजवादी आन्दोलन को टुकडे टुकडे कर रही है, और सभ्य जगत् के श्रेष्ठ पुरुषों के जनसत्ताक प्रयत्नों को विफल कर रही है, स०स०स०र० का नया विधान फासिज्म के विरुद्ध-समाजवाद और जनसत्ताकता अटूट हैं—इसे घोषित करते हुए एक जबर्दस्त विरोधी आवाज होगी (हर्षध्वनि)। स०स०स०र० का नया विधान उन सभी लोगों की नैतिक सहायता और वास्तविक मदद का काम करेगा, जो कि आज फासिस्ट बर्बरता मे लड रहे हैं (उच्च हर्षध्वनि)।

इस से भी अधिक महत्त्व स०स०स०र० के नये विधान का है, स०स०

स०र० की जनता के लिए। जब कि स०स०स०र० का विधान पूँजीवादी देशों के लिए एक कार्य के प्रोग्राम का महत्त्व रखेगा। स०स०स०र० की जनता के लिए, उनके जद्दोजहद के सारांश, मानवता की मुक्ति के मैदान में उनके विजयों के सारांश का परिचायक है। युद्ध और भूख-अकाल की पीड़ा का जो लम्बा मार्ग हमने तय किया, उसके बाद यह आनन्द और ख़ुशी का समय है, जब कि हम अपने लिए ऐसा विधान पा रहे हैं, जो कि हमारी विजय के फलों का परिचायक है। यह जानने में आनंद और ख़ुशी होती है कि किस लिए हमारे लोग लड़े और किस तरह सारे संसार के इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण इस विजय को प्राप्त किया। यह जानकर आनंद और ख़ुशी होती है, कि हमारे लोगों का ख़ून, जो उतनी अधिकता से बहा, वह व्यर्थ नहीं गया। उसने सुन्दर फल पैदा किए (लंबी हर्षध्वनि)। यह हमारी कमकर-श्रेणी, हमारी किसान-श्रेणी हमारी बुद्धिजीवी-कमकर-श्रेणी को आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करता है। यह उन्हें आगे बढ़ाता है, और उनमें उचित अभिमान का खयाल लाता है। यह हममें अपनी शक्ति पर विश्वास को बढ़ाता है; और साम्यवाद की नवीन विजयों के लिए फिर से जद्दोजहद करने के लिए हमें प्रेरित करता है (ज़ोर की करतलध्वनि और हर्षध्वनि)।

१७—सोवियत्-विधान

संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक की ८वीं असाधारण सोवियत् कांग्रेस स्वीकृत करती है—कि स०म०स०र० का विधान (मौलिक कानून)-मसविदा कांग्रेस के ममविदा बनानेवाले कमीशन द्वारा जैसा पेश किया गया है, उसे स्वीकृत किया गया।

मास्को, क्रेम्लिन् कांग्रेस प्रेसीदिउम्।
दिसंबर ५, १९३६

सोवियत्-विधान

परिच्छेद (१)

समाज-संगठन—

धारा (१) संघ-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक (स०स०स०र०) कमकरों और किसानों का समाजवादी राज्य है।

धारा (२) स०स०स०र० के राजनैतिक आधार हैं, जाँगर चलानेवालों के सदस्यों (डिपुटी) की सोवियतें, जो कि ज़मींदारों और पूँजीपतियों की शक्ति को उठा देने तथा श्रमजीवियों के अधिनायकत्व की सफलता के परिणाम स्वरूप विकसित और मज़बूत हुईं।

धारा (३) स०स०स०र० का सभी अधिकार शहर और गाँव के जाँगर चलानेवालों—जिनके प्रतिनिधि-स्वरूप जाँगर चलानेवाले प्रतिनिधियों की सोवियतें हैं—के हाथ में है।

धारा (४) स०स०स०र० का आर्थिक आधार है समाजवादी अर्थनीति का सिद्धान्त और उपज के हथियारों और साधनों पर समाजवादी स्वामित्व

—जो कि पूँजीवादी अर्थनीति की प्रथा को उठा देने, उपज के हथियारों और साधनों के वैयक्तिक स्वामित्व को हटा देने और मनुष्य द्वारा मनुष्य के चूसे जाने को बन्द कर देने के परिणामस्वरूप दृढ़तापूर्वक स्थापित है।

धारा (५) स०स०स०र० में समाजवादी सम्पत्ति या तो राज्य की सम्पत्ति (सारी जनता के अधिकार में) के रूप में है या सहयोगी और सामूहिक खेती की सम्पत्ति (पृथक् कोल्खोजों की सम्पत्ति और सहयोग-समितियों की सम्पत्ति) के रूप में है।

धारा (६) राज्य की सम्पत्ति—भूमि, खनिज-पदार्थ, जल, जंगल, मिल, फैक्टरी, खानें, रेलवे, पानी और हवा के यातायात की संस्थाएँ, बैंक, गमनागमन के साधन, राज्य द्वारा संगठित बड़े बड़े कृषि-संबंधी उद्योग (सोव्खोज, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन आदि) तथा सभी म्युनिसिपलिटियों की चीज़ें और नगरों तथा उद्योग-संबंधी स्थानों की सभी मुख्य रहने लायक घरों की सम्पत्तियाँ सारी जनता के अधिकार में हैं।

धारा (७) कोल्खोजों और सहयोगी संस्थाओं की समाजवादी सार्वजनिक सम्पत्तियाँ हैं कोल्खोजों और सहयोगी संस्थाओं की सभी सार्वजनिक उद्योग तथा उनके पशु और औजार; कोल्खोजों और सहयोग-समितियों द्वारा उत्पादित या निर्मित उपज और उनके सार्वजनिक ढाँचे।

कृषि के अर्तेल् के क़ानून के अनुसार कोल्खोज़ के हर एक घर की सम्पत्ति होंगे—अपने कोल्खोज़ के सार्वजनिक कोल्खोज़ी उद्योग से प्राप्त आय के अतिरिक्त वैयक्तिक उपयोग के लिए घर से लगा हुआ भूमि का एक टुकड़ा और खेत के ऊपर बनी कोई सहायक चीज, घर, पशु और मुर्गी और छोटे छोटे कृषि के औज़ार।

धारा (८) कोल्खोजों को अपने अधिकार की भूमि स्वतंत्र उपयोग के लिए अपरिमित समय अर्थात् सदा के लिए प्राप्त है।

धारा (९) समाजवाद के आर्थिक सिद्धान्त—जो कि स०स०स०र० की अर्थनीति का सर्वाधिक रूप हैं—के साथ साथ अपने वैयक्तिक श्रम पर

अवलंबित तथा दूसरे के श्रम को चूसे बिना वैयक्तिक किसानों और हाथ के कारीगरों की छोटी छोटी वैयक्तिक सम्पत्ति को कानून स्वीकार करता है।

धारा (१०) निम्न प्रकार की वैयक्तिक सम्पत्तियों पर नागरिकों का अधिकार क़ानून द्वारा रक्षित है—श्रम की आय, बचत की आय, रहने के घर, और उसकी सहायक गृहस्थी की सम्पत्ति, घर का असबाव, वर्तन भाँडा, और वैयक्तिक उपयोग और आराम की चीजें तथा नागरिकों की वैयक्तिक सम्पत्ति का उत्तराधिकार।

धारा (११) राष्ट्रीय अर्थनीति की राजकीय योजना। सार्वजनिक धन के बढ़ाने, जाँगर चलानेवालों की आर्थिक और सांस्कृतिक अवस्था को निरन्तर उन्नत करने और स०स०स०र० की स्वतन्त्रता तथा उसकी रक्षा के साधनों (सैनिक शक्ति) को मजबूत करने के लिए स०स०स०र० के आर्थिक जीवन का निर्धारण और पथ-प्रदर्शन करना है।

धारा (१२) "जो काम नहीं करता, वह खा भी नहीं सकेगा" के सिद्धान्त के अनुसार स०स०स०र० में हर एक उपयुक्त शरीरवाले नागरिक के लिए काम करना आवश्यक और सम्मान की चीज है।

स०स०स०र० में समाजवाद का सिद्धान्त। "हर एक से उसकी योग्यता के अनुसार, हर एक को किये काम के अनुसार"—माना गया है।

परिच्छेद (२)

राज्य-सङ्गठन—

धारा (१३) संघ-सोवियत् साम्यवादी रिपब्लिक एक संयुक्त राज्य है, जो कि समान अधिकार रखनेवाली निम्न सोवियत् समाजवादी रिपब्लिकों के स्वेच्छापूर्वक सम्मिलन के आधार पर बना है। उक्त रिपब्लिक हैं—

१—रूसी-सोवियत्-फ़ेडरेटेड् (संयुक्त)-समाजवादी-रिपब्लिक (स०स०स०र०)

२—उक्रइन् सोवियत् समाजवादी ,,

३—बेलो-रूसी	स०	स०	र०
४—आज़ुर्बाइजान्	,,	,,	,,
५—गुर्जी ,,	,,	,,	,,
६—अर्मनी ,,	,,	,,	,,
७—तुर्कमान	,,	,,	,,
८—उज़्बेक ,,	,,	,,	,,
९—ताजिक ,,	,,	,,	,,
१०—कज़ाक ,,	,,	,,	,,
११—किर्गिज़ ,,	,,	,,	,,

धारा (१४) स०स०स०र० के प्रतिनिधि और उसकी सर्वोच्च शक्ति-संस्थाओं और राज्य-प्रबंध-संस्थाओं के अधिकार हैं—

(क) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के लिए संघ का प्रतिनिधि भेजना। दूसरे राज्यों के साथ संधि करना।

(ख) शान्ति और युद्ध के प्रश्न।

(ग) स०स०स०र० में नये प्रजातंत्रों को सम्मिलित करना।

(घ) स०स०स०र० के विधान के पालन करने का निरीक्षण करना और इसकी जिम्मेवारी लेना कि संघ-प्रजातंत्रों के विधान स०स०स०र० के विधान के अनुकूल हैं।

(ङ) संघ-प्रजातंत्रों की आपस की सीमाओं के हेर-फेर को स्वीकार करना।

(च) संघ-प्रजातंत्रों के भीतर नये स्वायत्त प्रजातंत्र, प्रान्त या नये प्रान्तों और इलाकों के निर्माण को स्वीकार करना।

(छ) स०स०स०र० की सेना को संगठित करना और स०स०स०र० की सभी सैनिक शक्तियों का संचालन करना।

(ज) राज्य के स्वामित्व के आधार पर विदेशों से व्यापार करना।

(झ) राज्य की सुरक्षा के क़ायम रखने का प्रबंध करना।

(ञ) स०स०स०र० की जातीय आर्थिक योजनाओं को निश्चित करना।

(ट) स०स०स०र० के एकीभूत राजकीय आय-व्यय के लेखे (बजट) को स्वीकार करना तथा उन टैक्सों और मालगुजारियों को स्वीकार करना जो कि सघ-प्रजातन्त्र और स्थानीय बजट का अग बनती है।

(ठ) सारे सघ के लिए विशेष महत्त्व रखनेवाले बैंकों, औद्योगिक और कृषि-सबधी सस्थाओ तथा कारखानों और व्यापारी सस्थाओं का प्रबन्ध करना।

(ड) यातायात और सामान ढोने की चीज़ों का इतज़ाम करना।

(ढ) सिक्के और ऋण की प्रक्रिया का सचालन करना।

(ण) राजकीय बीमा सस्थाओ का सगठन करना।

(त) कर्ज़ लेना-देना।

(थ) खेत का बन्दोबस्त तथा खनिज पदार्थों, जगलो और जलाशयों के इस्तेमाल के बारे में मूल सिद्धान्तो को निर्धारित करना।

(द) शिक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में मौलिक सिद्धान्तों को निर्धारित करना।

(ध) राष्ट्रीय सम्पत्ति के बहीखाते के लिए एक सा कायदा सगठित करना।

(न) श्रम-सबधी कानूनो के बारे में सिद्धान्तों का स्थापन करना।

(प) दीवानी नियमों तथा दीवानी कचहरियों की कार्रवाई एवं फौजदारी और दीवानी कानूनों पर लागू होनेवाले विधानों का बनाना।

(फ) संघ की नागरिकता पर लागू होनेवाले कानून तथा विदेशियों के अधिकारों पर लागू होनेवाले कानूनों का बनाना।

(ब) सारे सघ में क्षमादान सबधी व्यवस्थाओं को जारी करना।

ये अधिकार हैं, जिन्हें विधान ने स०स०स०र० को प्रदान किया है; और उन्हें उसकी पार्लियामेंट—जिसे महासोवियत् कहते हैं—इस्तेमाल करती है। महासोवियत् दो भवनों में विभक्त है—एक है संघ-सोवियत् और दूसरा जातिक-सोवियत् ।

धारा (१५) स०स०स०र० के विधान की १४वीं धारा में उल्लिखित नियमों को छोड़ कर बाक़ी बातों में संघ-प्रजातंत्र पूर्णरूपेण स्वतंत्र है। इन निर्बन्धों के बाहर प्रत्येक संघ-प्रजातंत्र स्वतंत्ररूपेण अपने राज्याधिकार का उपयोग करता है। स०स०स०र० संघ-प्रजातंत्रों की पूर्ण स्वतंत्रता के अधिकारों की रक्षा करता है।

धारा (१६) हर एक संघ-प्रजातंत्र (संघ-रिपब्लिक्) का अपना निजी विधान है; जो कि उक्त प्रजातंत्र के विशेपरूप के अनुसार स०स०स०र० के विधान के पूर्णतया अनुकूल बनाया गया है।

धारा (१७) प्रत्येक संघ-रिपब्लिक स्वतंत्रतापूर्वक स०स०स०र० से अलग होने का अधिकार अपने हाथ में रखती है।

धारा (१८) संघ-रिपब्लिक की भूमि में उसकी सम्मति के बिना हेर-फेर नहीं हो सकता।

धारा (१९) स०स०स०र० के कानून सभी संघ-रिपब्लिकों की भूमि में समान अधिकार रखते हैं।

धारा (२०) यदि संघ के क़ानून तथा संघ-रिपब्लिक के क़ानून में विरोध हो तो अखिल संघ-कानून मान्य होगा।

धारा (२१) स०स०स०र० के सभी नागरिकों के लिए एक संघ-नागरिकता स्थापित की गई है।

संघ-रिपब्लिक का हर एक नागरिक स०स०स०र० का नागरिक है।

धारा (२२) रूसी स०फ०स०र० के निम्न विभाग हैं—

(क) प्रदेश

१—अजोफ़्-कालासागर

२—सुदूर-पूर्व
३—पश्चिमी सिबेरिया
४—क्रास्नोयार्स्क
५—उत्तर काकेशस्

(ख) ज़िले
१—वोरोनेज्
२—पूर्व-सिबेरिया
३—गोर्की
४—पश्चिमी ज़िला
७—इवानोवो
८—कालिनिन्
९—किरोफ्
१०—कुइबिशेफ्
११—कुर्स्क
१२—लेनिन्ग्राद्
१३—मास्को
१४—ओम्स्क
१५—ओरेन्बुर्ग
१६—सरातोफ्
१७—स्वेर्द्लोव्स्क
१८—उत्तरी ज़िला
१९—स्तालिन्ग्राद्
२०—चेल्याबिन्स्क
२१—यारोस्लाव्स्क

(ग) स्वायत्त सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक—(स्व०स०स०र०)

(स्व०सं०स०र०)

१—तातार . . . . ,,

२—बश्किर् . . . . ,,

३—दागिस्तान . . . . ,,

४—बुर्यत्‌मंगोल . . . . . . ,,

५—कर्बादिनो-बल्कारिन् . . . . ,,

६—कल्मुक् . . . . ,,

७—करेलिया . . . . ,,

८—कोमी . . . . ,,

९—क्रिमिया . . . . ,,

१०—मारी . . . . ,,

११—मोर्दोविया . . . . . . ,,

१२—वोल्गा-जर्मन . . . . . . ,,

१३—उत्तरी ओसेतिया . . . . . ,,

१४—उद्‌मुर्त्त . . . . ,,

१५—चेचेन्‌इन्‌गुश् . . . . . . ,,

१६—चुवाश् . . . . ,,

१७—याकूत् . . . .

(घ) स्वायत्त ज़िले

१—अदीगेइ

२—यहूदी

३—कराचइ

४—ओइरोत्

५—खकस्

६—चेर्कस्

धारा (२३) उक्रइन् सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक के निम्न विभाग हैं—

(क) ज़िले

१—विन्नित्सा

२—द्नियेप्रोपेत्रोव्स्क

३—दोनेत्स्क

४—कियेफ्

५—ओदेसा

६—खर्कोफ्

७—चेर्निगोफ्

(ख) स्वायत्त-सोवियत्-समाजवादी-रिपब्लिक

१—मोल्दाविया

धारा (२४) आज़ुर्बाइजान् सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक में सम्मिलित है—

(क) स्वायत्त स०स०र०

१—नखिचेवन्

(ख) स्वायत्त ज़िला

१—नगुर्नो कराबख्

धारा (२५) गुर्जी (जॉर्जिया) स०स०र० में सम्मिलित है—

(क) स्वायत्त स०स०र०

१—अब्खाज़िया

२—अजार

(ख) स्वायत्त ज़िला

१—दक्षिणी ओसेतिया

धारा (२६) उज़्बेक् स०स०र० में सम्मिलित है—

(क) स्वायत्त स०स०र०

१—कराकल्पक्

धारा (२७) ताजिक स०स०र० में सम्मिलित है—

(क) स्वायत्त ज़िला

१—गोर्नोवदख़्शां

धारा (२८) कजाक स०स०र० के विभाग हैं—

(क) ज़िले

१—अत्युबिन्स्क

२—अल्मा-अता

३—पूर्व कजाकस्तान

४—पश्चिम कजाकस्तान

५—करागन्दा

६—कुस्तनई

७—उत्तर कजाकस्तान

८—दक्षिण कजाकस्तान

धारा (२९) निम्न सोवियत् समाजवादी रिपब्लिकों में स्वायत्त रिपब्लिक प्रदेश और ज़िले नहीं हैं—

१—अर्मेनी . . . . (स०स०र०)
२—वेलो रूसी . . . . ,,
३—तुर्कमान् . . . . ,,
४—किर्गिज़ . . . . ,,

परिच्छेद (३)

स०स०स०र० की राज्यशक्ति की सर्वोच्च संस्थाएँ—

धारा (३०) स०स०स०र० की राज्यशक्ति की सर्वोच्च संस्था है, स०स०स०र० की महासोवियत्।

धारा (३१) स०स०स०र० की महासोवियत् उन सभी अधिकारों का उपयोग करती है, जो कि विधान की १४वीं धारा के अनुसार

स०स०स०र० को दिये गये हैं; जहाँ तक कि वे अधिकार विधान के अनुसार स०स०स०र० की उन संस्थाओं के अधिकार में सम्मिलित नहीं हैं जो कि स०स०स०र० की महासोवियत् के सामने उत्तरदायी हैं। अर्थात् स०स०स०र० की महासोवियत् का प्रेसीदिउम् महासोवियत् के जन-कमीसरों की कौंसिल और महासोवियत् के जन-कमिसरियत्।

धारा (३२) स०स०स०र० के कानून बनाने के अधिकार का उपयोग सिर्फ स०स०स०र० की महासोवियत् की है।

धारा (३३) स०स०स०र० की महासोवियत् दो भवनों में विभक्त है—संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत्।

धारा (३४) संघ-सोवियत् के लिये प्रतिनिधि प्रति तीन लाख जन-संख्या पर एक सदस्य (डिपुटी) के आधार पर बने निर्वाचनक्षेत्र के अनुसार स०स०स०र० के नागरिक चुनते हैं।

धारा (३५) जातिक-सोवियत् को संघ-रिपब्लिक, स्वायत्त रिपब्लिक, स्वायत्त ज़िले और जातिक-क्षेत्र के अनुसार तथा सदस्यों की निम्न संख्या के अनुसार स०स०स०र० के नागरिक चुनते हैं।

(१) प्रति संघ-रिपब्लिक . .	(स०स०र०)	२५
(२) ,, स्वायत्त ,,	(स्व०स०स०र०)	११
(३) ,, स्वायत्त-ज़िला .		५
(४) जातिक क्षेत्र .		१

धारा (३६) स०स०स०र० की महासोवियत् का चुनाव चार वर्षों के लिए होता है।

धारा (३७) स०स०स०र० की महासोवियत् के दोनों भवन—संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत्—के अधिकार बराबर हैं।

धारा (३८) संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् कानून-निर्माण आरंभ करने में बराबर अधिकार रखती हैं।

धारा (३९) कोई भी कानून स्वीकृत समझा जायगा, यदि वह

स०स०स०र० की महासोवियत् के दोनों भवनों द्वारा प्रत्येक में मामूली बहुमत के साथ पास किया गया हो।

धारा (४०) स०स०स०र० की महासोवियत् द्वारा स्वीकृत कानून स०स०स०र० की महासोवियत् के **प्रेसीदिउम्** के अध्यक्ष और मंत्री के हस्ताक्षरों के साथ संघ-रिपब्लिकों की भाषाओं में प्रकाशित हुआ करेगा।

धारा (४१) संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् के अधिवेशन एक ही समय आरंभ और समाप्त होंगे।

धारा (४२) संघ-सोवियत् अपने लिए एक अध्यक्ष और दो उपाध्यक्ष चुनेगी।

धारा (४३) जातिक-सोवियत् अपने लिए एक अध्यक्ष और दो उपाध्यक्ष चुनेगी।

धारा (४४) संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् के अध्यक्ष लोग अपने अपने भवनों के अधिवेशनों का सभापतित्व करेंगे और उनकी कार्यवाहियों के ज़िम्मेवार होंगे।

धारा (४५) स०स०स०र० के महासोवियत् के दोनों भवनों के सम्मिलित अधिवेशन का सभापतित्व संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् के अध्यक्ष बारी बारी से करेंगे।

धारा (४६) स०स०स०र० के महासोवियत् के अधिवेशनों को हर साल दो बार स०स०स०र० के महासोवियत् का प्रेसीदिउम् (मंत्रि-मंडल) बुलायेगा।

स०स०स०र० की महासोवियत् का अध्यक्ष अपने विचारानुसार या किसी एक संघ-प्रजातंत्र की माँग के अनुसार विशेष अधिवेशन बुलायेगा।

धारा (४७) यदि संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् में मत-भेद हो, तो वह प्रश्न एक बराबर संख्याओं में चुने सुलह्-कमीशन के पास तय करने के लिए भेजा जायगा। यदि सुलह्-कमीशन उभय पक्ष द्वारा स्वीकरणीय निर्णय पर नहीं पहुँचता अथवा उसका निर्णय दोनों भवनों में से एक को

नापसन्द होता है, तो वह प्रश्न फिर दूसरी बार दोनों भवनों के सामने विचार के लिए पेश होगा। यदि दोनों भवन उभय-स्वीकृत निश्चय पर नहीं पहुँचे तो स०स०स०र० की महासोवियत् का प्रेसीदिउम् स०स०स०र० की महासोवियत् को तोड़ देगा और नये चुनाव का प्रबंध करेगा।

धारा (४८) स०स०स०र० की महासोवियत् दोनों भवनों के सम्मिलित अधिवेशन में स०स०स०र० की महासोवियत् का प्रेसीदिउम् (मंत्रि-मंडल) चुनेगी। जिसमें स०स०स०र० की सुप्रीम सोवियत् के प्रेसीदिउम् का एक अध्यक्ष ११ उपाध्यक्ष १ मंत्री और २४ सदस्य होंगे।

स०स०स०र० के महासोवियत् का प्रेसीदिउम् अपने हर काम के लिए स०स०स०र० के महासोवियत् के सामने जिम्मेवार है।

धारा (४९) स०स०स०र० के महासोवियत् के प्रेसीदिउम् का काम है—

(क) स०स०स०र० के महासोवियत् के अधिवेशनों को बुलाना।

(ख) स०स०स०र० के मौजूदा कानूनों की व्याख्या करना और खरीता प्रकाशित करना।

(ग) स०स०स०र० के विधान की ४७वीं धारा के अनुसार स०स०स०र० की महासोवियत् को तोड़ना और नये चुनाव को नियत करना।

(घ) अपने निर्णय के अनुसार या किसी एक संघ-प्रजातंत्र की माँग के अनुसार सार्वजनिक वोट का प्रबंध करना।

(ङ) स०स०स०र० के जन-कमीसर-कौंसिल तथा संघ-रिपब्लिक के जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णयों और हुक्मों को रोक देना, यदि वह कानून के अनुकूल न हों।

(च) स०स०स०र० के महासोवियत् के अधिवेशनों के बीच के समय में वह स०स०स०र० के जन-कमीसरों को स०स०स०र० के जन-कमीसर कौंसिल के अध्यक्ष की सिफारिश के अनुसार

बर्खास्त या बहाल कर सकता है; यदि पीछे स०स०स०र० की महासोवियत् को स्वीकार हो।

(छ) स०स०स०र० के पदकों और सन्मान-जनक पदवियों को देना।

(ज) क्षमा करने के अधिकार का उपयोग करना।

(झ) स०स०स०र० सेना के उच्च सेना-नायकों को बहाल-बर्खास्त करना।

(ञ) स०स०स०र० की महासोवियत् के अधिवेशनों के बीच के समय में यदि स०स०स०र० पर सशस्त्र हमला हो, या जब कभी हमलावरों के हमले से पारस्परिक रक्षा के संबंध में अन्तर्राष्ट्रीय सुलहनामों के पूरा करने की आवश्यकता हो, उस समय युद्ध की घोषणा करना।

(ट) पूर्ण या आंशिकरूप से सेनाओं को युद्ध-क्षेत्र में भेजना।

(ठ) अन्तर्राष्ट्रीय सुलहनामों को स्वीकृत करना।

(ड) विदेशी राज्यों में स०स०स०र० के प्रतिनिधि (दूतों) को बहाल और बर्खास्त करना।

(ढ) विदेशी राज्यों द्वारा अपने यहाँ भेजे गये दूत-प्रतिनिधियों को लौटा मँगाने के पत्रों और प्रमाणपत्रों को लेना।

धारा (५०) संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् अपने अपने भवन के सदस्यों के (निर्वाचन की) प्रामाणिकता की परीक्षा के लिए अलग अलग प्रमाण-कमीशन निर्वाचित करेंगी।

प्रमाण-कमीशनों की सिफारिश पर भवन निश्चित करेंगे कि किसी सदस्य के चुनाव को अनुचित करार दें या उचित।

धारा (५१) स०स०स०र० की महासोवियत् जब ज़रूरत समझेगी, किसी विषय के अन्वेषण और निरीक्षण के लिए कमीशन नियुक्त कर सकती है।

सभी संस्थाओं और अधिकारियों का कर्तव्य है कि माँगे जाने पर वे

इन कमीशनों के सामने आवश्यक सामग्री और कागज-पत्र पेश करें।

धारा (५२) स०स०स०र० की महासोवियत् के किसी सदस्य को स०स०स०र० की महासोवियत् की सम्मति बिना पकड़ा या उस पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता। जिस समय स०स०स०र० की महा-सोवियत् का अधिवेशन नहीं है उस समय स०स०स०र० के महासोवियत् के प्रेसीदिउम् की सम्मति के बिना वैसा नहीं किया जा सकता।

धारा (५३) स०स०स०र० की महासोवियत् के अधिकार की अवधि तक या अवधि की समाप्ति के पहले यदि महासोवियत् तोड़ दी गई हो, तो स०स०स०र० की महासोवियत् का प्रेसीदिउम् तब तक अधिकारारूढ़ रहेगा, जब तक कि नई चुनी हुई स०स०स०र० की महासोवियत् एक नये प्रेसीदिउम् को बना न लेगी।

धारा (५४) महासोवियत् की अवधि बीत जाने या समय से पहले तोड़ देने पर प्रेसीदिउम् निर्वाचन का दिन निश्चित करेगा; जो कि मीयाद के अन्तिम दिन या महासोवियत् के टूटने के दिन से दो महीने से अधिक नहीं होगा।

धारा (५५) नई चुनी हुई महासोवियत् के अधिवेशन को प्रेसीदिउम् निर्वाचन-दिन के बाद एक महीने के भीतर बुलायेगा।

धारा (५६) महासोवियत् दोनों भवनों की सम्मिलित बैठक में स०स०स०र० की सरकार—स०स०स०र० जन-कर्मासर-कौंसिल को नियुक्त करेगी।

परिच्छेद (४)

सङ्घ-रिपब्लिक की राज्यशक्ति सम्बन्धी सर्वोच्च संस्थाएँ—

धारा (५७) सघ-रिपब्लिक की राज्यशक्ति सम्बन्धी सर्वोच्च संस्था है सघ-रिपब्लिक की महासोवियत्।

धारा (५८) संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् को उसके नागरिक चार वर्ष के लिए चुनते हैं।

प्रतिनिधियों और वोटरों की संख्या का तारतम्य संघ-रिपब्लिकों के विधानों के अनुसार तय होगा।

धारा (५९) संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् ही उक्त रिपब्लिक की क़ानून बनानेवाली संस्था है।

धारा (६०) संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् का कार्य है—

(क) रिपब्लिक का विधान बनाना, और स०स०स०र० के विधान की सोलहवीं धारा के अनुसार उसमें संशोधन करना।

(ख) अपने अधीन के स्वायत्त-रिपब्लिकों के विधानों को स्वीकार करना तथा उनकी सीमा निर्द्धारित करना।

(ग) रिपब्लिक की राष्ट्रीय आर्थिक योजना तथा आय-व्यय (बजट) का स्वीकार करना।

(घ) संघ-रिपब्लिक की अदालतों द्वारा दंड पाये नागरिकों के अपराध को माफ़ करने या छोड़ देने के अधिकार का उपयोग करना।

धारा (६१) संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् अपना प्रेसीदिउम् चुनेगी, जिसमें एक अध्यक्ष, अनेक उपाध्यक्ष, एक मंत्री तथा अनेक सदस्य होंगे।

संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् के **प्रेसीदिउम्** के अधिकार संघ-सोवियत् के विधान में दिये हुए हैं।

धारा (६२) संघ-सोवियत् की महासोवियत् अपने अधिवेशनों के संचालन के लिए एक अध्यक्ष और अनेक उपाध्यक्ष निर्वाचित करेगी।

धारा (६३) संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् संघ-सोवियत् की गवर्नमेंट—संघ-सोवियत् की जन-कमीसर-कौंसिल को नियुक्त करेगी।

परिच्छेद (५)

स०स०स०र० के राज्यप्रबंध की संस्थाएँ—

धारा (६४) स०स०स०र० की राज्यशक्ति की सर्वोच्च कार्यकारिणी और प्रबंध-कारिणी संस्था है स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल।

धारा (६५) स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल स०स०स०र० के महामोवियत् के सामने उत्तरदायी है; और महामोवियत के अधिवेशनों के बीचवाले समय में स०स०स०र० की महामोवियत् के प्रेसीदियम् के सामने उत्तरदायी और जिम्मेवार है।

धारा (६६) स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल प्रचलित कानूनों का अनुसरण करके अपने निर्णय और आज्ञाएँ निकालेगी और उन्हें कार्य-रूप में परिणत होने की देख-भाल करेगी।

धारा (६७) स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णय और आज्ञाएँ स०स०स०र० की सम्पूर्ण भूमि के भीतर अवश्य मान्य हैं।

धारा (६८) *स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल का कार्य है—*

(क) स०स०स०र० की संघ-रिपब्लिक जन-कमीसरी और अखिल-संघ और अपने अधीन की दूसरी आर्थिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के कार्य का संगठन और संचालन करेगी।

(ख) राष्ट्रीय-आर्थिक-योजना (विभाग) राजकीय आय-व्यय को काम में लाने के लिए तथा सिक्के और साख को मजबूत करने के लिए कार्रवाई करेगा।

(ग) सार्वजनिक व्यवस्था को कायम रखने के लिए, राजकीय स्वार्थों की रक्षा के लिए और नागरिकों के अधिकारों की हिफाजत के लिए कार्रवाई करेगा।

(घ) विदेशी राज्यों के साथ संबंध के क्षेत्र में साधारण नियमन का काम करेगा।

(ङ) प्रतिवर्ष सैनिक सेवा के लिए बुलाये जानेवाले नागरिकों की संख्या निश्चित करेगा और देश की सेना के साधारण संगठन और विकास का संचालन करेगा।

(च) जब आवश्यकता होगी, तो आर्थिक, सांस्कृतिक और सेना-संबंधी विकास से संबंध रखनेवाली बातों के लिए स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल की मातहत समिति या केन्द्रीय बोर्ड नियुक्त करेगा।

धारा (६६) स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल स०स०स०र० के अधिकार की प्रबंध और अर्थ-संबंधी शाखाओं के बारे में यह अधिकार रखती है, कि वह संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णयों और आज्ञाओं को रोक दे और स०स०स०र० के जन-कमीसरों की आज्ञाओं और हिदायतों को मंसूख कर दे।

धारा (७०) स०स०स०र० की महासोवियत् निम्न व्यक्तियों की स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल बनायेगी—

(१) अध्यक्ष स०स०स०र० जन-कमीसर-कौंसिल
(२) अनेक उपाध्यक्ष स०स०स०र० ज० क० कौं०
(३) अध्यक्ष ,, राजकीय-योजना-कमीसर
(४) ,, सोवियत्-नियंत्रण-कमीसर
(५) स०स०स०र० के जन-कमीसर लोग
(६) अध्यक्ष कृषि-संबंधी-पशु-समिति
(७) ,, कला-समिति
(८) ,, उच्च-शिक्षा-समिति

धारा (७१) स०स०स०र० की गवर्नमेंट या स०स०स०र० का कोई जन-कमीसर स०स०स०र० की महासोवियत् के किसी सदस्य द्वारा पूछे जाने पर तत्संबंधी उत्तर भवन में ३ दिन के

भीतर मौखिक या लिखित देगा।

धारा (७२) स०स०स०र० के जन-कमीसर स०म०म०र० के अधिकार के भीतर आनेवाले राजकीय प्रबंध की शाखाओं का संचालन करेंगे।

धारा (७३) स०स०म०र० के जन-कमीसर अपने अपने जन-कमीसरी के अधिकार के भीतर प्रचलित कानूनों और स०स०स०र० की जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णयों और आज्ञाओं के अनुसार या उनके आधार पर आज्ञा या हिदायत देंगे और उनके कार्यरूप में परिणत होने की देख भाल करेंगे।

धारा (७४) स०स०स०र० के जन-कमीसर दो प्रकार के हैं—एक अखिल-संघ-कमीसर और दूसरे संघ-रिपब्लिक-कमीसर।

धारा (७५) अखिल-संघ-जन-कमीसरियाँ प्रत्यक्ष या अपने द्वारा नियुक्त संस्थाओं द्वारा स०स०म०र० की तमाम भूमि में अपने जिम्मे के राजकीय प्रबंध की शाखाओं का संचालन करेंगी।

धारा (७६) संघ-रिपब्लिक-जन-कमीसरियाँ वैसे ही नामवाले संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसरियों द्वारा आमतौर से अपने जिम्मे के राजकीय प्रबंध की शाखाओं का संचालन करेंगी। वे एक निश्चित और परिमित संख्या के कारबार का प्रत्यक्षरूप से प्रबंध करेंगी। निश्चित और परिमित कारबारों की सूची स०स०स०र० की महासोवियत् का प्रेसीडियम् बनायेगा।

धारा (७७) निम्न जन-कमीसर अखिल-संघ-जन-कमीसर (मंत्री) कहे जाते हैं—

(१) सेना
(२) वैदेशिक नीति
(३) „ व्यापार
(४) रेलवे

(५) यातायात का प्रबन्ध
(६) जल-वाहन
(७) भारी उद्योग
(८) सेना-संबंधी-उद्योग

धारा (७८) निम्न जन-कमीसर संघ-रिपब्लिक जनकमीसर कहे जाते हैं—

(१) खाद्य-उद्योग
(२) हलका उद्योग
(३) काष्ठ-उद्योग
(४) कृषि-उद्योग
(५) राजकीय अन्न और पशु संबंधी खेती
(६) कोष (अर्थ)
(७) आंतरिक व्यापार
(८) आन्तरिक नीति
(९) न्याय
(१०) सार्वजनिक स्वास्थ्य

परिच्छेद (६)

संघ-रिपब्लिक के राजकीय प्रबंध की संस्थाएँ—

धारा (७९) संघ-रिपब्लिक की राज्यशक्ति की सर्वोच्च कार्यकारिणी और प्रबंधकारिणी संस्था है संघ-रिपब्लिक जन-कमीसर-कौंसिल।

धारा (८०) संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल संघ-रिपब्लिक के सामने जिम्मेवार और जवाबदेह है। संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् के अधिवेशनों के बीच के समय में वह अपनी संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् के प्रेसीदिउम् के सामने जिम्मेवार और जवाबदेह होगी।

धारा (८१) संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल स०स०स०र० और संघ-रिपब्लिक में प्रचलित कानूनों और स०स०स०र० के जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णयो और आज्ञाओ के अनुसार तथा आधार पर अपने निर्णय और आज्ञाएँ निकालेगी; और उनके कार्यरूप में परिणत होने की देख-भाल करेगी।

धारा (८२) संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल को अधिकार है कि वह स्वायत्त-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णयों और आज्ञाओ को रोक दे और अपने अन्दर के प्रदेशो, ज़िलो, और स्वायत्त ज़िलो के जाँगिर चलानेवाले डिपुटियों की सोवियत् की कार्यकारिणी समिति के निर्णयो और आज्ञाओ को मनुस्ख कर दे।

धारा (८३) संघ-रिपब्लिक की महासोवियत् निम्न व्यक्तियों की जन-कमीसर कौंसिल बनायेगी।

१—अध्यक्ष संघ-रिपब्लिक जन-कमीसर-कौंसिल
२—अनेक उपाध्यक्ष ,, ,, ,,
३—अध्यक्ष राजकीय योजना कमीशन
४—खाद्य-उद्योग जन-कमीसर (मंत्री)
५—हल्का ,, ,,
६—काष्ठ ,, ,,
७—कृषि ,, ,,
८—राजकीय अन्न और पशु-संबंधी खेती
९—कोष (अर्थ)
१०—आन्तरिक व्यापार
११— ,, नीति
१२—न्याय
१३—सार्वजनिक स्वास्थ्य
१४—शिक्षा

१५—स्थानीय उद्योग
१६—म्युनिसिपल विभाग
१७—समाज
१८—समाज की ओर से परवरिश
१९—कृषि सामग्री संबंधी समिति
२०—कला-बोर्ड का प्रधान
२१—अखिल-संघ-जन-कमीसरों के प्रतिनिधि

धारा (८४) संघ-रिपब्लिक के जन-कमीसर संघ-रिपब्लिक के अधिकार के राजकीय प्रबंध की शाखाओं का संचालन करते हैं।

धारा (८५) संघ-रिपब्लिक के जन-कमीसर अपनी जन-कमीसरी के अधिकार के भीतर स०स०स०र० और संघ-रिपब्लिक के कानूनों, स०स० स०र० और संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णयों और आज्ञाओं तथा स०स०स०र० की संघ-रिपब्लिक-जन-कमीसरों की आज्ञाओं और हिदायतों के अनुसार और आधार पर आज्ञा और हिदायत निकालेंगे।

धारा (८६) संघ-रिपब्लिक के जन-कमीसर दो प्रकार के हैं; एक संघ-रिपब्लिक-कमीसर और दूसरे रिपब्लिक कमीसर।

धारा (८७) संघ-रिपब्लिक-जन-कमीसर अपने ज़िम्मे के राजकीय प्रबंध की शाखाओं का संचालन करते हैं और वे संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल तथा स०स०स०र० के उसी विभागवाले संघ-रिपब्लिक जन-कमीसर के अधीन हैं।

धारा (८८) रिपब्लिक-जन-कमीसर अपने जिम्मे के राजकीय प्रबंध की शाखाओं का संचालन करते हैं; और सीधे संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर कौंसिल के मातहत हैं।

परिच्छेद (७)

स्वायत्त रिपब्लिकों की राज्यशक्ति संबंधी सर्वोच्च संस्थाएँ—

धारा (८६) स्वायत्त-रिपब्लिक की राज्यशक्ति की सर्वोच्च संस्था है, स्वायत्त सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक की महासोवियत्।

धारा (९०) स्वायत्त-रिपब्लिक की महासोवियत् को उस रिपब्लिक के नागरिक चार साल के लिए स्वायत्त रिपब्लिक के विधान में दिये प्रतिनिधित्व की संख्या के अनुसार चुनते हैं।

धारा (९१) स्वायत्त-रिपब्लिक की कानून बनानेवाली संस्था सिर्फ उसकी महासोवियत् है।

धारा (९२) हरएक स्वायत्त-रिपब्लिक अपना विधान बनाती है, जिसमें स्वायत्त रिपब्लिक की अपनी विशेष परिस्थिति का ख़याल रखा जाता है; तथा यह भी देखा जाता है कि वह संघ-रिपब्लिक के विधान के अनुकूल है।

धारा (९३) स्वायत्त-रिपब्लिक की महासोवियत् अपना प्रेसीदिउम् चुनती; तथा अपने विधान के अनुसार स्वायत्त-रिपब्लिक-जन-कमीसर-कौंसिल नियुक्त करती है।

परिच्छेद (८)

स्थानीय राजकीय संस्थाएँ—

धारा (९४) प्रदेशों, ज़िलों, स्वायत्त-ज़िलों, क्षेत्रों (हल्कों), इलाकों, नगरों और देहाती स्थानों (स्तानित्सा गाँव, टोला, किश्लक, अउल) के जाँगर चलानेवाले डिपुटियों की सोवियतें राजकीय संस्थाएँ हैं।

धारा (९५) प्रदेशों, ज़िलों, स्वायत्त ज़िलों, क्षेत्रों, इलाकों, नगरों और देहाती स्थानों के जाँगर चलानेवालों के डिपुटियों की पचायतों को वहाँ के जाँगर चलानेवाले दो वर्ष के लिए चुनते हैं।

धारा (९६) जाँगर चलानेवाले डिपुटियों की सोवियत्, सा० हि० सो० में प्रतिनिधित्व की संख्या का निर्णय संघ-रिपब्लिक के विधान करते हैं।

१५—स्थानीय उद्योग

१६—म्युनिसिपल विभाग

१७—समाज

१८—समाज की ओर से परवरिश

१९—कृषि सामग्री संवंधी समिति

२०—कला-वोर्ड का प्रधान

२१—अखिल-संघ-जन-कमीसरों के प्रतिनिधि

धारा (८४) संघ-रिपब्लिक के जन-कमीसर संघ-रिपब्लिक के अधिकार के राजकीय प्रवंध की शाखाओं का संचालन करते हैं।

धारा (८५) संघ-रिपब्लिक के जन-कमीसर अपनी जन-कमीसरी के अधिकार के भीतर स०स०स०र० और संघ-रिपब्लिक के कानूनों, स०स० स०र० और संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल के निर्णयों और आज्ञाओं तथा स०स०स०र० की संघ-रिपब्लिक-जन-कमीसरों की आज्ञाओं और हिदायतों के अनुसार और आधार पर आज्ञा और हिदायत निकालेंगे।

धारा (८६) संघ-रिपब्लिक के जन-कमीसर दो प्रकार के हैं; एक संघ-रिपब्लिक-कमीसर और दूसरे रिपब्लिक कमीसर।

धारा (८७) संघ-रिपब्लिक-जन-कमीसर अपने ज़िम्मे के राजकीय प्रवंध की शाखाओं का संचालन करते हैं और वे संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर-कौंसिल तथा स०स०स०र० के उसी विभागवाले संघ-रिपब्लिक जन-कमीसर के अधीन हैं।

धारा (८८) रिपब्लिक-जन-कमीसर अपने जिम्मे के राजकीय प्रवंध की शाखाओं का संचालन करते हैं; और सीधे संघ-रिपब्लिक की जन-कमीसर कौंसिल के मातहत हैं।

परिच्छेद (७)

स्वायत्त रिपब्लिकों की राज्यशक्ति संवंधी सर्वोच्च संस्थाएँ—

धारा (८६) स्वायत्त-रिपब्लिक की राज्यशक्ति की सर्वोच्च संस्था है, स्वायत्त सोवियत् समाजवादी रिपब्लिक की महासोवियत्।

धारा (६०) स्वायत्त-रिपब्लिक की महासोवियत् को उस रिपब्लिक के नागरिक चार साल के लिए स्वायत्त रिपब्लिक के विधान में दिये प्रतिनिधित्व की संख्या के अनुसार चुनते हैं।

धारा (६१) स्वायत्त-रिपब्लिक की कानून बनानेवाली संस्था सिर्फ उसकी महासोवियत् है।

धारा (६२) हरएक स्वायत्त-रिपब्लिक अपना विधान बनाती है, जिसमें स्वायत्त रिपब्लिक की अपनी विशेष परिस्थिति का ख़याल रखा जाता है; तथा यह भी देखा जाता है कि वह संघ-रिपब्लिक के विधान के अनुकूल है।

धारा (६३) स्वायत्त-रिपब्लिक की महासोवियत् अपना प्रेसीदिउम् चुनती; तथा अपने विधान के अनुसार स्वायत्त-रिपब्लिक-जन-कमीसर-कौंसिल नियुक्त करती है।

परिच्छेद (८)

स्थानीय राजकीय संस्थाएँ—

धारा (६४) प्रदेशों, ज़िलों, स्वायत्त-ज़िलो, क्षेत्रों (हल्कों), इलाको, नगरों और देहाती स्थानो (स्तानित्सा गाँव, टोला, किशलक, अउल) के जाँगर चलानेवाले डिपुटियो की सोवियतें राजकीय संस्थाएँ हैं।

धारा (६५) प्रदेशों, ज़िलों, स्वायत्त ज़िलो, क्षेत्रों, इलाको, नगरो और देहाती स्थानों के जाँगर चलानेवालों के डिपुटियो की पचायतो को वहाँ के जाँगर चलानेवाले दो वर्ष के लिए चुनते हैं।

धारा (६६) जाँगर चलानेवाले डिपुटियों की सोवियत्, जा० डि० सों० में प्रतिनिधित्व की संख्या का निर्णय संघ-रिपब्लिक के विधान करते हैं।

धारा (९७) जा० डि० सो० अपने मातहत की प्रवंध-संस्थाओं के कार्यों का संचालन करती हैं, सार्वजनिक व्यवस्था कायम रखने की जिम्मेवारी लेती है, कानूनों और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा की देख-भाल करती है, स्थानीय आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति का संचालन करती है; और स्थानीय आय-व्यय का निर्णय करती है।

धारा (९८) जा० डि० सो० स०स०स०र० और संघ-रिपब्लिक के कानूनों द्वारा प्राप्त अधिकारों की सीमा के भीतर निर्णय और आज्ञा निकालती है।

धारा (९९) जा० डि० सो० की कार्यकारिणी और प्रवंधकारिणी संस्था है अपने द्वारा चुनी कार्यकारिणी समिति; जो निम्न सदस्यों पर निर्भर है—

(१) अध्यक्ष
(२) अनेक उपाध्यक्ष
(३) मंत्री
(४) अनेक सदस्य

धारा (१००) संघ-रिपब्लिक के विधानानुसार छोटे स्थानों में दीहाती जा० डि० सो० की कार्यकारिणी और प्रवंधकारिणी संस्था निम्न सदस्यों से मिल कर चुने हुए सदस्यों से वनती है।

(१) अध्यक्ष
(२) एक उपाध्यक्ष
(३) एक मंत्री

धारा (१०१) जा० डि० सो० की कार्यकारिणी अपने चुननेवाली जा० डि० सो० और उच्च जा० डि० सो० की कार्यकारिणी के सामने सीधे जवावदेह है।

परिच्छेद (९)

महान्यायाधिकारी और न्यायालय—

धारा (१०२) स०म०स०र० में म०म०म०र० का महान्यायालय, संघ-रिपब्लिकों के महान्यायालय, प्रदेश, जिला, स्वायत्त-रिपब्लिक, स्वायत्त जिलों और क्षेत्रों के न्यायालय तथा स०म०स०र० के महासोवियत् के निश्चयानुसार स्थापित स०म०म०र० के विशेष न्यायालय और जन-न्यायालय न्याय का प्रबंध करते हैं।

धारा (१०३) सभी मुकदमों का फैसला जनता के असेसरों की मदद से होना है, सिवाय उन मुकदमों के जिनके लिए कानून ने विशेष नियम बना रखे हैं।

धारा (१०४) स०म०स०र० का महान्यायालय सर्वोच्च न्याय-संस्था है। स०म०स०र० का महान्यायालय स०म०म०र० और संघ-रिपब्लिकों की न्याय-संस्थाओं की न्यायसंबंधी कार्रवाइयों की देख-भाल का जिम्मेवार है।

धारा (१०५) स०म०म०र० का महान्यायालय तथा स०म०स०र० के विशेष न्यायालय स०स०म०र० के महासोवियत् द्वारा पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं।

धारा (१०६) संघ-रिपब्लिक के महान्यायालय संघ-रिपब्लिकों की महासोवियतों द्वारा पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं।

धारा (१०७) स्वायत्त-रिपब्लिकों के महान्यायालय स्वायत्त-रिपब्लिकों द्वारा पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं।

धारा (१०८) प्रदेश, जिला, स्वायत्त जिला और क्षेत्र के न्यायालय प्रदेश, जिला या क्षेत्र की जा० डि० सो० द्वारा या स्वायत्त जिले की जा० डि० सो० द्वारा पाँच वर्ष के लिए चुने जाते हैं।

धारा (१०९) जनता-न्यायालय को हलके के नागरिक, सार्वजनिक, प्रत्यक्ष, समान निर्वाचनाधिकार और गुप्त पुर्जी के सिद्धान्तानुसार तीन वर्ष के लिए चुनते हैं।

धारा (११०) न्यायालय का कारबार संघ-रिपब्लिक स्वायत्त-रिपब्लिक या स्वायत्त-जिले की भाषा में होगा। जो व्यक्ति उस भाषा को

नहीं जानते, उनके लिए दुभाषिया द्वारा मुक़दमे के हर पहलू की जानकारी का प्रबंध तथा न्यायालय में अपनी भाषा में बोलने का अधिकार है।

धारा (१११) स०स०स०र० के हर न्यायालय में मुक़दमे की सुनवाई खुली अदालत में होगी, यदि क़ानून ने उस श्रेणी के मुक़दमे के लिए कोई दूसरा नियम न बना रक्खा हो। अपराधी को सफ़ाई पेश करने का पूरा अधिकार है।

धारा (११२) न्यायाध्यक्ष स्वतंत्र हैं; उनपर सिर्फ क़ानून की पाबन्दी है।

धारा (११३) स०स०स०र० के महान्यायाधिकारी को स०स०स०र० के सभी जन-कमीसरों तथा उनके अधीन संस्थाओं, सभी अधिकारियों और नागरिकों द्वारा क़ानूनों की सख़्त पाबन्दी की देख-भाल का सर्वोपरि अधिकार है।

धारा (११४) स०स०स०र० की महासोवियत् स०स०स०र० के महान्यायाधिकारी को सात वर्ष के लिए नियुक्त करती है।

धारा (११५) संघ-रिपब्लिकों, प्रदेशों, ज़िलों तथा स्वायत्त रिपब्लिकों और स्वायत्त ज़िलों के न्यायाधिकारियों को स०स०स०र० का महान्यायाधिकारी पाँच वर्ष के लिए नियुक्त करता है।

धारा (११६) क्षेत्र, इलाक़ा और नगर के न्यायाधिकारियों को संघ-रिपब्लिक के न्यायाधिकारी स०स०स०र० के महान्यायाधिकारी की स्वीकृति के अनुसार ५ वर्ष के लिए नियुक्त करते हैं।

धारा (११७) न्यायाधिकारी अपने कर्तव्यपालन में सभी तरह की स्थानीय राजकीय संस्थाओं से स्वतंत्र हैं; और वे केवल स०स०स०र० के महान्यायाधिकारी के अधीन हैं।

परिच्छेद (१०)

नागरिकों के मौलिक अधिकार और कर्तव्य—

धारा (११८) स०स०रा०र० के नागरिकों को काम पाने का अधिकार है—अर्थात् उनके काम मिलने और परिमाण और गुण के अनुसार काम का वेतन देने का अधिकार राज्य ने अपने जिम्मे लिया है।

राष्ट्रीय, अर्थ-सम्बन्धी समाजवादी सस्थाओ, समाजवादी समाज की उपजाऊ शक्तियों की निरन्तर वृद्धि, आर्थिक उपद्रवो (मन्दी आदि) की संभावना के दूर हो जाने और बेकारी के उठ जाने के कारण हर एक के लिए काम पाने का अधिकार सुरक्षित है।

धारा (११९) स०स०स०र० के नागरिकों को अधिकार है, छुट्टी और विश्राम का।

प्रायः सभी कमकरो को प्रतिदिन सात ही घंटा काम करने, कमकरों और आफिस आदि में काम करनेवालों को वेतन सहित वार्षिक छुट्टियों के प्रबध और जाँगर चलानेवालों के ठहरने के लिए सब जगह सैनिटोरियम, विश्राम-गृह और क्लबों का इन्तजाम, छुट्टी और विश्राम का अधिकार सुरक्षित है।

धारा (१२०) स०स०स०र० के नागरिकों को बुढापे, बीमारी और काम करने की योग्यता न रहने पर पर्वरिश पाने का अधिकार है।

कमकरो तथा दूसरे आफिस आदि में काम करनेवालों का राज्य के खर्च पर सामाजिक बीमे के भारी विकास, जाँगर चलानेवालों की निःशुल्क चिकित्सा और जाँगर चलानेवालो के ठहरने के लिए स्वास्थ्य-निवासो का चारों ओर जाल बिछा कर यह अधिकार सुरक्षित है।

धारा (१२१) स०स०स०र० के नागरिकों को अधिकार है, शिक्षा पाने का। सार्वजनिक अनिवार्य प्रारभिक शिक्षा, प्रारभिक से उच्च शिक्षा तक की निःशुल्क शिक्षा, उच्च शिक्षण-संस्थाओं में प्राय सभी विद्यार्थियो को राज्य की ओर से छात्रवृत्ति का प्रबन्ध, स्कूलों में मातृभाषा को शिक्षण का माध्यम स्वीकृत कर; और फैक्टरियों, सोव्खोजो, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनो तथा कोल्खोजो में जाँगर चलानेवालो की औद्योगिक टेकनिकल और

कृपि-संवंधी निःशुल्क शिक्षा को संगठित कर यह अधिकार सुरक्षित किया हुआ है।

धारा (१२२) स०स०स०र० में स्त्रियों को आर्थिक, राजकीय, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन के हर एक क्षेत्र में पुरुपों के वरावर अधिकार हैं।

स्त्रियों को पुरुपों के वरावर काम करने, काम का वेतन, छुट्टी और विश्राम पाने; (वेकारी के ख़िलाफ़) सामाजिक वीमा और शिक्षा का प्रवंध करके, तथा राज्य की ओर से माँ और वच्चे के स्वार्थ की रक्षा, वेतन के साथ प्रसूता की छुट्टी और प्रसूतिगृहों, वच्चाखानों और किंडरगार्टनों की सर्वत्र स्थापना कर के, स्त्रियों को इस अधिकार से लाभ उठाने की संभावना सुरक्षित की हुई है।

धारा (१२३) राष्ट्र और जाति का कुछ भी न खयाल करके आर्थिक, राजकीय, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन के हर एक क्षेत्र में स०स०स०र० के नागरिकों के अधिकारों की समानता अटल नियम हैं।

इन अधिकारों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी तरह भी निर्वन्ध करना, अथवा इसके विरोध में जाति और रंग का ख़याल कर के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्षरूप से नागरिकों के विशेष अधिकार की स्थापना, और रंग तथा जाति संवंधी भेद-भाव या घृणा और अपमान का प्रचार करना क़ानून से दंडनीय हैं।

धारा (१२४) नागरिकों की मानसिक स्वतंत्रता की सुरक्षा के लिए स०स०स०र० में धर्म का राज्य से और स्कूल का धर्म से कोई संवंध नहीं है। सभी नागरिकों को धार्मिक उपासना की स्वतंत्रता और धर्म-विरोधी प्रचार की स्वतंत्रता है।

धारा (१२५) जाँगर चलानेवालों के स्वार्थों के अनुकूल होने से तथा समाजवादी प्रथा को मजवूत करने के लिए स०स०स०र० के सभी नागरिकों को क़ानूनन् निम्न अधिकार प्राप्त हैं—

सम्मिलित होने का अधिकार है।

धारा (१२७) स०स०स०र० के नागरिकों को शारीरिक स्वतंत्रता की गारन्टी है। न्यायालय के निर्णय या न्यायाधिकारी की स्वीकृति के बिना कोई व्यक्ति गिरफ़्तार नहीं किया जा सकता।

धारा (१२८) नागरिकों के घर के भीतर अनुचित प्रवेश का प्रतिषेध तथा लिखा-पढ़ी को गुप्त रखने का अधिकार कानून द्वारा सुरक्षित है।

धारा (१२९) जाँगर चलानेवालों के स्वार्थों की रक्षा करने, अपने वैज्ञानिक कामों या राष्ट्रीय स्वतंत्रता-सम्बन्धी अपनी तत्परताओं के लिए सताये गये विदेशी नागरिकों को स०स०स०र० में शरण पाने का अधिकार है।

धारा (१३०) स०स०स०र० के हर एक नागरिक का कर्तव्य है कि वह स०स०स०र० के विधान के अनुकूल चले, कानूनों की पावन्दी करे, श्रमिक-नियमों को कायम रक्खें, सच्चाई के साथ सार्वजनिक कर्तव्य का पालन करे और समाजवादी मानवीय मेलजोल के नियमों को माने।

धारा (१३१) स०स०स०र० के हर एक नागरिक का कर्तव्य है कि वह सार्वजनिक समाजवादी सम्पत्ति की, समाजवादी सिद्धान्त के पवित्र और अविचल आधार के तौर पर देश के धन और बल के स्रोत के तौर पर सभी जाँगर चलानेवालों के समृद्ध और संस्कृत जीवन के स्रोत के तौर पर समझ कर, रक्षा और गोपन करे।

सार्वजनिक सामाजिक सम्पत्ति को हानि पहुँचानेवाले व्यक्ति जनता के शत्रु हैं।

धारा (१३२) सार्वजनिक सैनिक-सेवा कानून है।

लाल-सेना में सैनिक-सेवा करना स०स०स०र० के नागरिकों का पवित्र कर्तव्य है।

धारा (१३३) पितृ-भूमि की रक्षा के लिए लड़ना हर एक स०स०स०र० के नागरिक का पवित्र कर्तव्य है। देश-द्रोह—शपथ-त्याग, शत्रु से मिल

जाना, राज्य की सैनिक शक्ति को कमजोर करना, भेद खोलना—अत्यन्त भयंकर अपराध है; और वह बड़ी सख्ती से कानून द्वारा दंडनीय है।

परिच्छेद (११)

निर्वाचन-प्रथा—

धारा (१३४) जांगर चलानेवाले डिपुटियों की सभी सोवियतों—म०म०स०र० के महासोवियत्, संघ-रिपब्लिक की महासोवियत्, प्रदेश और ज़िलों की जा० डि० सो०, स्वायत्त-रिपब्लिकों की महासोवियत्, स्वायत्त जिलों, क्षेत्रों, इलाकों, नगरों और दीहातों (स्तानित्सा, गाँव, टोला, किशलक्, आउल)—के सदस्य निर्वाचकों द्वारा सार्वजनिक समान और प्रत्यक्ष मताधिकार के साथ गुप्त पर्ची द्वारा चुने जाते हैं।

धारा (१३५) डिपुटियों का चुनाव सार्वजनिक है—म०स०स०र० के सभी नागरिक जो १८ वर्ष के हो चुके हैं, जाति, रंग, धर्म, शिक्षा की योग्यता, निवास की कैद, उत्पन्न होने की श्रेणी, सम्पत्ति की कैद या पुरानी विरोधी कारंवाइयों के विचार के बिना, डिपुटियों के चुनाव में वोट देने तथा खुद भी खड़े होने का अधिकार रखते हैं, शर्त यह है कि वे न पागल हों, और न क़ानूनी न्यायालय में उन्हें मताधिकार से वंचित रहने का दंड दिया गया हो।

धारा (१३६) डिपुटियों के चुनाव (में सभी) बराबर हैं—हर एक नागरिक को एक वोट का अधिकार है। सभी नागरिक बराबर होकर चुनाव में भाग लेते हैं।

धारा (१३७) पुरुषों के समान ही स्त्रियों को भी चुनने और चुने जाने का समान अधिकार है।

धारा (१३८) लाल-सेना में काम करनेवाले नागरिकों को बाकी सभी नागरिकों की तरह बराबरी के साथ चुनने और चुने जाने का समान अधिकार है।

धारा (१३९) डिपुटियों के चुनाव साक्षात्‌रूप से होंगे—सभी जाँगर चलानेवाली सोवियतें, दीहाती और नागरिक जा० डि० सो० से लेकर स०स०स०र० के महासोवियत् तक नागरिकों द्वारा साक्षात् वोट से चुनी जायँगी।

धारा (१४०) डिपुटियों के चुनाव में वोट गुप्त देना होगा।

धारा (१४१) चुनाव के लिए उम्मेदवार निर्वाचन-क्षेत्र के अनुसार नामज़द किये जायँगे।

उम्मेदवारों को नामज़द करने का अधिकार सार्वजनिक संस्थाओं और जाँगर चलानेवालों की सभाओं—कम्युनिस्ट पार्टी की संस्थाओं, मज़दूर-सभाओं, सहयोग-समितियों, तरुण-संघों और सांस्कृतिक-सभाओं—को है।

धारा (१४२) हर एक डिपुटी (सदस्य) का कर्तव्य है, कि वह अपने काम तथा जा० डि० सो० के काम से निर्वाचकों को सूचित करे। तथा वह किसी समय क़ानून द्वारा स्थापित तरीके से अपने निर्वाचकों के बहुमत के निर्णय पर सदस्यता से हटा दिया जायगा।

परिच्छेद (१२)

राज्य-चिह्न-ध्वज राजधानी—

धारा (१४३) स०स०स०र० का राज्य-चिह्न है, सूर्य की किरणों में चित्रित भूगोल के ऊपर रक्खा एक हँसुआ और एक हथौड़ा, जिसको संघ-रिपब्लिकों की भाषाओं में—"सब देशों के जाँगर चलानेवालो ! एक हो जाओ !" के लेख के साथ गेहूँ की बालें घेरे हुई हैं। चिह्न के ऊपर एक पँचकोना तारा है।

धारा (१४४) स०स०स०र० का राज्य-ध्वज है—लाल कपड़े पर डंडे के साथवाले ऊपरी कोने में सोने में अंकित हँसुआ और हथौड़ा तथा उनके ऊपर एक पँचकोना सुनहरी किनारीवाला लाल तारा। ध्वज की लंबाई चौड़ाई से दूनी है।

धारा (१४५) स०म०स०र० की राजधानी मास्को नगर है

परिच्छेद (१३)

विधान के संशोधन की प्रक्रिया—

धारा (१४६) स०स०स०र० के विधान का संशोधन स०स०स०र० की महासोवियत् के निर्णय द्वारा ही हो सकता है, शर्त यह है कि संशोधन के पक्ष में हर एक भवन में कम से कम २/३ का बहुमत उसके पक्ष में हो।

१८—महासोवियत् का चुनाव

१२ दिसम्वर (१६३७ ई०) से पहले भी सोवियत् के कितने ही चुनाव हुए थे, लेकिन उनमें यह विशेषता नहीं थी। सोवियत्-शासन की स्थापना के वाद यह पहला समय था, जव कि नये विधान के अनुसार १८ वर्ष से अधिक उम्रवाले सभी स्त्री-पुरुषों को वोट देने और सदस्यता के लिए खड़े होने का अधिकार मिला। पहले पुराने धनी, ज़मींदार, पुरोहित और उनके वंशज वोट के अधिकार से वंचित रखे गये थे। लेकिन नये विधान ने उन्हें भी समान अधिकार दे दिया। पहले हाथ उठा कर या खुले तौर से वोट लिया जाता था, जिससे वहुत से लोग भय और संकोच से भी वोट देते थे। अवकी वार चुनाव की पर्ची के साथ एक एक लिफ़ाफ़ा मिला था और वोट के स्थान ऐसी एकान्त जगह रखे गए थे, जहाँ विना किसी को दिखाये वोटर पर्ची पर निशान कर सकता था। अवकी वार पहले पहल छिपी पर्ची द्वारा वोट दिया था।

वोट का अधिकार पाकर भूतपूर्व राजा-वावुओं को कितनी प्रसन्नता हुई, इसका मैं एक उदाहरण देता हूँ। मैंने अपने एक परिचित वड़े ऊँचे दर्जे के पुराने रईस से वोट देने के दूसरे दिन पूछा—"आपकी तवीयत इन दिनों अच्छी नहीं थी, आप तो शायद वोट देने नहीं गये होंगे?"

उन्हों ने वड़े आह्लाद के साथ कहा—"नहीं, मैं गया था। थोड़ा वीमार हो गया था तो क्या?"

उनके चेहरे पर जिस प्रकार प्रसन्नता की किरणें फूट निकली थीं, और वह जिस प्रकार उल्लास के साथ वात कर रहे थे, उससे मालूम होता था, कि २० वर्ष तक नागरिकता के अधिकार से वंचित इस श्रेणी को नये विधान से कितनी प्रसन्नता हुई है।

के लिए विज्ञापन छपवाना, सभाओं का प्रबन्ध करना, जहाँ-तहाँ दौड़-धूप करना, रेडियो, समाचार-पत्र, जलूस का प्रबन्ध करना ये सब ज़िम्मेवारी व्यक्ति के ऊपर न होकर समाज के ऊपर पड़ती हैं; इसलिए जैसे-कैसे भी दो आदमियों के कह देने पर नामज़द कर देना कभी उचित नहीं हो सकता। नामज़द करने का अधिकार संस्था या सभा को होना चाहिए, क्योंकि उन्हीं के ऊपर चुनाव का सब खर्च और मिहनत पड़नेवाली है।

वोट दिये जा रहे हैं

सोवियत्-चुनाव के बारे में यह भी आक्षेप किया जाता है; कि वहाँ प्रतिद्वन्दी को खड़ा होने का मौक़ा नहीं दिया जाता। एक चुनाव-क्षेत्र में एक ही आदमी नामज़द होता है, लेकिन इसमें सोवियत्-विधान का कोई दोष नहीं। उसमें कोई ऐसा नियम नहीं है; कि विरोध में खड़े होन का किसी को अधिकार नहीं। पार्लियामेंट के दोनों घरों को मिला कर ११४३ मेम्बर होते हैं। इनमें किसी जगह कोई विरोध में खड़ा नहीं हुआ, तो इसका मतलब यह नहीं कि उसपर ज़ोर या दवाव दिया गया। कम्युनिस्ट पार्टी ने देश की इतनी सेवाएँ की हैं, और कर रही है, कि उसका सारी जनता पर बहुत जबर्दस्त प्रभाव है। कोई भी विरोध में खड़ा होनेवाला यह अच्छी तरह

जानता हूँ कि कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर और पार्टी द्वारा अनुमोदित जो गैर-मेंबर पालियामेंट के लिए खड़े हुए हैं, उनके विरोध में सफलता प्राप्त करना असंभव है। हिन्दुस्तान का ही उदाहरण ले लीजिए। पिछले चुनाव में कांग्रेस को जिन प्रान्तों मे बहुत अधिकता के साथ कामयाबी हुई, वहाँ चुनाव के वक्त भी कितने मेंबरो के खिलाफ कोई खड़ा नहीं हुआ; और पुनर्निर्वाचन के वक्त तो साधारण निर्वाचन-क्षेत्रों मे कांग्रेस का मुकाबिला करने के लिए किसी की हिम्मत नहीं हुई। जब जमींदारो और उपाधि-धारियो ने देख लिया, कि लाख लाख,दो दो लाख रुपये खर्च करने पर भी साधारण क्षेत्र के लोग कांग्रेस के मुकाबले में सफल नही हुए, तो अब जमानत जब्त करवाने कौन जाय? हिन्दुस्तान के बहुत से चुनाव-क्षेत्र धर्म और जाति के नाम पर अलग कर के रक्खे हुए हैं। बड़े बड़े धनी और जमींदारो के लिए भी कितनी ही जगहें सुरक्षित रखी हुई हैं। इसके अतिरिक्त सभी श्रेणियो के आदमियो पर कांग्रेस का उतना प्रभाव नही है जितना सोवियत्-प्रजातत्र में कम्युनिस्ट-पार्टी का।

कम्युनिस्ट-पार्टी को समझने में बाज वक्त लोग गलती कर बैठते है। वह समझते है कि १८ करोड की जनता में १५–१६ लाख कम्युनिस्ट-पार्टी के मेम्बर है, और वही ज़ोर-जबर्दस्ती से सारी जनता की नाक मे नकेल डाल कर जिधर चाहते है, उधर घुमाते है। सोवियत्-प्रजातंत्र में कम्युनिस्ट-पार्टी के मेंबर और साधारण कम्युनिस्ट (साम्यवादी) की संख्या में फर्क है, लेकिन जहाँ तक कम्युनिज्म (साम्यवाद) का सबध है, उसका न मानने-वाला सारे देश में शायद ही कोई मिले। १८ करोड की जन-संख्या में अबोध बालकों को छोड कर कितने आदमी है जो साम्यवादी नहीं है? साम्यवादी तो सभी है, हाँ साम्यवादी दल (कम्युनिस्ट पार्टी) का सदस्य बहुत छान-बीन कर बनाया जाता है। देखा जाता है कि वह साम्यवाद के सिद्धान्तों को काफी समझता है, उसमें काम करने की योग्यता है, वह ईमानदार है, और पार्टी के आदर्श के लिए स्वार्थ-त्याग कर सकता है, हर तरह की

कठिनाइयाँ झल सकता है, हर प्रकार के प्रलोभनों से अपने को ऊपर उठा सकता है। ऐसा ही आदमी वर्षों की शिक्षा और परीक्षा के बाद पार्टी का मेम्बर बनाया जाता है। मेम्बर होने पर उसकी ज़िम्मेवारी बहुत बढ़ जाती है। उसके काम की मात्रा भी अधिक होती है। ज़रा सी ग़लती पर साधारण आदमी की अपेक्षा उसके लिए दंड भी कड़ा है। साम्यवादी दल के १५–१६ लाख मेम्बर सारी १८ करोड़ साम्यवादी जनता के नायक हैं। सभी जनता सिपाही है और वह उनके पथ-प्रदर्शक अफ़सर।

यही कारण है जिससे कि साम्यवादी दल का सोवियत्-जनता पर इतना प्रभाव है। यह प्रभाव ही कारण है कि साम्यवादी दल द्वारा प्रस्तुत किये उम्मेदवारों का विरोध करने के लिए कोई खड़ा नहीं हुआ। यदि कोई विरोधी खड़ा नहीं होता, तो यह नहीं कहा जा सकता. कि चुनाव जनसत्ताक नहीं है। आज हिन्दुस्तान से मुसलमानों के पृथक्-निर्वाचन को हटा दीजिए, बड़े बड़े स्वार्थों की सीटें उठा दीजिए; तो देखिएगा, सौ में ९० सीटों पर कांग्रेस का विरोध करनेवाला कोई न उठेगा। यदि सभी बालिग़ स्त्री-पुरुषों को वोट देने का अधिकार मिल गया हो, तो ९० फ़ी सदी कांग्रेसियों को निर्विरोध निर्वाचित होने पर विधान को, जन-सत्ताक नहीं है—नहीं कह सकते। इससे तो यही सिद्ध होगा कि कांग्रेस बहुत सर्व-जनप्रिय संस्था है। यदि कोई विरोध करने के लिए खड़ा नहीं होता, तो उसे धर-पकड़ कर कैसे खड़ा किया जा सकता है!

इतना होने पर भी सोवियत्-विधान ने यह नियम रखा है कि किसी भी निर्वाचित सदस्य को निर्वाचकों का बहुमत, जब चाहे तब अपने भेजे मेम्बर को हटा सकता है और उसकी जगह नया सदस्य भेज सकता है। साथ ही यह भी बात रखी गई है कि हर एक सदस्य को उस इलाके के वोटरों का बहुमत ज़रूर मिलना चाहिए। यदि गिनने पर वोट आधे से कम आते हैं, तो उसे सदस्य नहीं समझा जाता और इसीलिए निर्विरोध को बिना वोट के चुने जाने का नियम वहाँ स्वीकार नहीं किया गया है।

सोवियत्-विधान स्पष्ट देखना चाहता है कि पार्लियामेंट का सदस्य वही हो, जिसको निर्वाचकों के बहुमत ने दिल से चुना है।

सोवियत्-चुनाव के बारे में जनसत्ता के नाम पर जो आक्षेप होते हैं, उन पर अगर गौर करें, तो दोष या गुण जो वहाँ है, वह सम्पत्ति पर व्यक्ति के अधिकार उठ जाने के कारण है। *यह निश्चय ही है कि किसी भी साम्यवादी देश में, जहाँ कि स्थावर-जंगम सभी सम्पत्ति का मालिक राष्ट्र है,* व्यक्ति को मनमाना खर्च करने के लिए रुपया नहीं मिलेगा। रुपया न होने पर जैसा-तैसा आदमी विरोध करने के लिए खड़ा कैसे होगा? आपको अगर आक्षेप करना ही है, तो बेहतर है, यही कहें कि व्यक्तिगत सम्पत्ति के बिना जनसत्ता असंभव है। सवाल हो जाता है, क्या समाजवाद जनसत्तावाद का विरोधी है? और यह कौन अक्ल का अंधा कह सकता है? समाजवाद व्यक्ति की अपेक्षा समाज के अधिकार को ऊँचा मानता है; और जन-सत्तावाद भी बहुमत के अधिकार को मान कर उसी तत्व को स्वीकार करता है।

यदि हम सोवियत्-पार्लियामेंट के सदस्यों को देखें तो मालूम होगा कि उनमें देश के कोने कोने के व्यक्ति चुने गये हैं; सभी भाषा-भाषी जातियों के आदमी वहाँ मौजूद हैं। उनमें कुछ स्त्री-पुरुष तो ऐसे हैं, जो रूसी भाषा समझ नहीं सकते और उनके लिए अधिवेशन में खास टेलीफोन का इन्तज़ाम किया गया है जिसके द्वारा भिन्न भाषा के व्याख्यान का अनुवाद तत्काल उनके कानों में पहुँचाया जाता है। *यदि स्त्री-पुरुष के* खयाल से देखें, तो वहाँ स्त्रियों की संख्या कई सौ है। यदि व्यवसाय की दृष्टि से देखें, तो जहाँ एक ओर उनमें बड़े बड़े एकेडेमीशियन, प्रोफेसर, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ, कवि, लेखक, सेना-नायक हैं, तो दूसरी ओर सैकड़ों की तादाद में कारखानों, खानों, पंचायती-खेतों और पशुशालाओं में काम करनेवाले सैकड़ों मजदूर और किसान हैं। *जिस पार्लियामेंट में हर* व्यवसाय, हर जाति के इतने प्रतिनिधि किसी धन या कुल के बल पर नहीं,

सिर्फ अपनी योग्यता के बल पर पहुँचे हों, वह यदि जनसत्ताक नहीं है, तो और जनसत्ताक हो ही कहाँ सकती है !

*** ***

निर्वाचन के वक़्त बड़ी धूम-धाम से देश के:कोने कोने में प्रचार किया गया था। रेडियो यंत्रों का इस्तेमाल हुआ था। लाखों की संख्या में छपनेवाले अख़बारों में लेख लिखे गये। उम्मेदवारों के फोटो के साथ बड़े बड़े जलूस निकाले गये। ट्रामवे और मोटर-बसों में रंग-बिरंगी रोशनियों और साइन-बोर्डों से प्रचार किया गया। लेनिन्ग्राद् में तो मैंने देखा, कुछ बड़ी इमारतों पर उम्मेदवारों के १०—१० हाथ ऊँचे चित्र लगे हुए हैं। उम्मेदवार तथा दूसरे जन-नायक सभाओं में व्याख्यान देते थे। उनके व्याख्यान के बोलते फ़िल्म तैयार करके चौकों और खुली जगहों पर दिखलाये जाते थे। चुनाव के तीन-चार दिन पहले से तो लेनिन्ग्राद् में हर पचास गज़ पर शब्द-प्रसारक यंत्र लगा दिये गये थे। और मास्को तथा दूसरी जगहों में होते उस वक़्त के व्याख्यानों को ब्राडकास्ट किया जाता था। सारा नगर इस ब्राडकास्ट से शब्दायमान हो रहा था।

प्रश्न हो सकता है कि जब ११४३ सीटों पर कोई विरोध करनेवाला नहीं था, तो इतने तूफ़ानी प्रचार की आवश्यकता क्या? हम कह चुके हैं कि वहाँ विरोधी न होने मात्र से कोई मेंबर चुना नहीं जा सकता। उसके लिए बहुमत का वोट अवश्य मिलना चाहिए और चुपके पर्चियों के डालने का प्रबंध होने से कोई भी आदमी पर्ची को बिना चिह्नित किये या बेक़ायदा बक्स में डाल कर अथवा पर्ची को पाकेट में रख ख़ाली लिफ़ाफ़े को डाल कर अपना वोट ख़राब कर सकता है। इस प्रकार पार्टी की तरफ़ से नामज़द होने पर भी जनता की उदासीनता या अज्ञान से कोई आदमी चुनाव में हार सकता है। इसीलिए लोगों को समझाने की वहाँ उतनी ही आवश्य-

उदाहरण देते हैं—रूस की गंगा वोलगा के ऊँचे किनारे पर उग्लिच् कस्बे के पास पुराने पक्रोव्स्क मठ की सफ़ेद दीवारें खड़ी हैं। बीस ही वर्ष हुए जब यह मठ एक बड़ी ज़मींदारी का मालिक था। उसके पास कई गाँव थे, जिनमें २५९६ मर्द उसकी बेगार करनेवाले थे। स्त्रियों और बच्चों की गिनती ही नहीं। मठ के खेतों पर सारे जीवन भर ये किसान काम करते थे। वह मठ के असामी कहे जाते थे।

शताब्दियों से कुछ निठल्ली काला चोगा पहननेवाली मोटी तोंदें (साधु) इन किसानों के खून और पसीने के बल पर मौज उड़ा रही थीं। श्रद्धालुओं के अज्ञान से फ़ायदा उठा कर उनको मरने के बाद स्वर्ग का प्रलोभन दे कर ठगा जाता था। वोलगा माई के बालुओं की पवित्र प्रसादी बना कर लोगों के दुःख-विपत्ति के हरण का ढोंग रचा जाता था।

सोवियत्-शासन के स्थापित होने पर धनिकों और ज़मींदारों के साथ साधु कही जानेवाली यह काले जामें में लिपटी तोंदें भी न जाने कहाँ विलीन हो गईं। नई सरकार ने मठ के मकानों को वृद्ध-आश्रम के रूप में परिणत कर दिया। आज वहाँ ३०० बूढ़े-बूढ़ियाँ बेफ़िक्र हो, शान्ति के साथ अपना अन्तिम जीवन बिता रही हैं। उनके भोजन-छाजन, दवा-दारू और मनो-विनोद का सारा प्रबंध सरकार करती है।

देश के और लोगों की तरह इन ३०० वृद्धों को भी सोवियत् नागरि-कता का अधिकार है। उन्हों ने भी चुनाव में भाग लिया। इन्हीं ३०० वृद्धों में दो अपनी अवस्था के कारण सब से विशेष स्थान रखते हैं। तीख़ोन् माख़ीमोविच् (माख़िम् का पुत्र) तोरुसिच् चिरल्निकोफ़् की अवस्था १२१ साल की है; और पावेल कुज़मिच् मर्कलोफ़् की १२२ साल।

तीख़ोन् चिरल्निकोफ़् ने कहा—"मैं १८१७ में पैदा हुआ था। थोड़े ही दिनों में इस पृथ्वी पर रहते मुझे १२१ वर्ष हो जायेंगे। मेरे गाँव का नाम था अलेक्सेयव्का जो कि वोरोनेश् के इलाक़े में है। सोसना नदी बड़ी सुन्दर है। उसकी धार चौड़ी है। जगह लंबी-चौड़ी है। गाँव और मीलों

तक फैली भूमि एक धनी, कौंट शेरेमेतेव् की सम्पत्ति थी। हमने कभी कौंट को नहीं देखा। उनके पटवारी, गुमाश्ता और मैनेजर हम पर शासन करते थे और बड़ी कठोरता के साथ शासन करते थे। घोड़ों की तरह सिर्फ हम जमींदार के लिए काम करते करते मरते थे। दूसरे प्रकार के जीवन को हम जानते न थे। आजकल सब को पढ़ने के लिए मौका मिलता है, मेरा पड़पोता इंजीनियर है। लेकिन हमें कभी नहीं पढ़ाया गया। मालिकों को केवल हमारे हाथ-पैरों की जरूरत थी। जो भी हो, गाँव में कोई स्कूल न था। वे हमें कोड़ों से सिखलाते थे। मुझे मालूम नहीं कौन से साल। शायद किसी जार के मरने के बाद। चाहे अलेक्सन्देर् होगा या दूसरा। उस वक्त किसान जमींदारों के खिलाफ उठ खड़े हुए। मैं तब १०-१२ साल का लड़का था। वे पल्टन बुला लाये। उन्होंने स्त्री-पुरुष सभी किसानों को बटोर लिया, और सब को हाँक कर वे गाँव के बाहर कोड़ा लगाने के लिए ले गये। कुछ ने जान बचाने की कोशिश की लेकिन भागने में सफल बहुत कम हुए। मैं नदी की ओर भागा और झाड़ियों की ओट में छिप गया। मैं वहाँ से सब देख रहा था। बहुत से कोड़ों की मार से वहीं मर गये। कोई जर्नैल पल्टन लेकर आया था। वह घोड़ा गाड़ी पर था। वह लम्बा पतला आदमी था। उन दिनों लोग साँस लेने में भी डरते थे। वह सभी चीज़ से डरते थे। उस डरने की तुम कल्पना नहीं कर सकते।"

सम्वाददाता लिखता है—इतना कहने के बाद बूढ़ा जरा देर के लिए चुप हो गया। इसके बाद उसका चेहरा चमक उठा और उसने कहना शुरू किया—आजकल हर एक आदमी स्वतन्त्रतापूर्वक साँस लेता है, स्वच्छन्दतापूर्वक रहता है, आज जीवन वास्तविक है। मनुष्य का जीवन है। तुम समझते ही हो कि हम बूढ़ों से क्या काम निकलेगा, तो भी सोवियत् सरकार हमें भोजन देती है, कपड़ा देती है। हम अच्छी तरह जानते हैं कि यह सब कहाँ से आता है। मत समझो चूँकि मैं बूढ़ा हूँ, इसलिए कुछ नहीं जानता। मैं सब जानता हूँ। मैं स्तालिन को भी जानता हूँ। वह हमारे

देश का प्रथम पुरुष है। उसकी बुद्धिमत्ता के कारण लोगों ने उसे अपना नेता बनाया।

पावल मर्कोलोफ़्, निजनीनोवोग्राद् (वर्तमान गोर्की) इलाक़े के सेर्गच गाँव का निवासी है। वह धीरे धीरे बोलता है। हरएक शब्द के बीच में दृष्टि को दूर किसी जगह स्थिर करके ठहरते हुए बोलता है—"मैं तिप्लोये का हूँ। एक बड़ा गाँव है। हम पीतर् मिखाइलोविच्, फ़िलातोफ़् के असामी थे। लोगों के लिए बड़ा कठिन जीवन था। अन्त न होनेवाला दुःख। कोड़ा और बेंत।

"दादा! क्या वे तुमको मारते थे?"

"हाँ, मारते थे।"

"किस लिए?"

"सभी चीज़ के लिए। फाटक तक नहीं पहुँचा—मारो! फाटक से आगे चला गया—मारो! दोषी हो चाहे निर्दोष, छोटी सी भी भूल के लिए। आजकल बिलकुल दूसरी ही बात है। लेकिन उन दिनों अदालत नहीं थी। गाँव का मालिक ही संपूर्ण अदालत था। वही फैसला करता था कि हमको अस्तबल में कोड़े लगाना चाहिए या खलिहान में। मुझे याद है, एक बार कटाई के वक़्त उन्होंने मुझे कोड़े लगवाये थे। घर के बड़े ने चार औरतों के साथ खेत काटने के लिए मुझे भेजा था, औरतें सभी गर्भिणी थीं। जल्दी ही उनको बच्चा होने वाला था। न वह झुक सकती थीं, न एक डंडी हाथ से उठा सकती थीं। एक औरत ने उसी समय वहीं खेत में बच्चा जना।

"सूर्य अस्त होनेवाला था। कटाई का अभी आरंभ नहीं हो पाया था। कारिन्दा आग-बबूला हो गया, जब कि उसने यह देखा। उसने ठोकर मारी और मैं मुँह के बल गिर पड़ा। मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता था। उठ कर मैंने उसका कोट पकड़ लिया। वह मुझे खींच कर ज़मींदार के महल में ले गया। और फिर एक दर्जन या दो दर्जन न जाने कितने कोड़े लगाये।

"दूसरी बार मैं एक पीपे के कारण पीटा गया। मैं एक पानी का पीपा काटनेवालों के लिए ले जा रहा था। वह एक खन्दक में गिर गया। पीपा एक तरफ खिसक गया, अभागा! इसलिए मुझे कोड़े लगे। मैं ही अकेला नहीं था, सभी को कोड़े लगे। कोड़ों की मार के कारण दो गर्भिणी औरतें मेरी आँखों के सामने मर गईं। और भी बहुत से लोग पीटे गये। और सिर्फ हमारे ही गाँव में नहीं, हमारे पड़ोसी गाँव के किसानों की तो और शामत आ गई थी। उनके साथ तो खरीदे दास जैसा बर्ताव होता था। लोगों ने धैर्य छोड़ दिया। उन्होंने खेत में खड़े गेहूँ को जला दिया, और गाँव के चौकीदार को पीटा उसका फल हमें बड़ी क्रूरता के साथ भोगना पड़ा।

"आह मेरे प्यारो! क्या तुम सोचते हो, कि उन दिनों सिर्फ पीटने ही की आफत लोगों पर थी? उनको पीटा जाता था, जबर्दस्ती फौज में भर्ती किया जाता था, और शरीफों की मनमानी का शिकार होना पड़ता था। एक दिन मैं खेत में निकाई कर रहा था। उस वक्त मैं करीब २० वर्ष का था। जमींदार खेत देखने आया। उसने मुझे देख कर कहा—देखो उस मोटकड़े को! अब उसकी शादी का समय आ गया है। वह उसी वक्त मुझे पकड़ कर मालिक के घर पर ले गया। वह एक दुलहिन लाये। हमारे गाँव मे एक कुबड़ी लड़की थी, बस वही थी। उसे वे सीधे खेतों में से पकड़ लाये थे। मेरे ऊपर मानो बिजली गिर गई। मेरा पिता दौड़ा दौड़ा आया, और मालिक के पैरों में पड़ गया। उसने किसी तरह गिड़-गिड़ा कर आरजू मिन्नत कर के मुझे छुड़ाया। मालिक का वह विश्वासपात्र चरवाहा था। इसीलिए मालिक ने उसकी बात मानी। नहीं तो वह मुझे उस कुबड़ी के साथ व्याह चुके थे। सब चीज मालिक के हाथ में थी। कोई आदमी अपनी स्वतंत्र इच्छा से व्याह करने की हिम्मत नहीं रखता था।

"कभी कभी वह हमको ढोरों की तरह बेच देते थे। निन्डोई के मालिक ने असामियों के साथ अपनी जमीन को किसी राजकुमार के हाथ

वेच दिया, और उसने राजकुमार वोल्कोन्स्की के हाथ में।

"लेकिन सब से कठिन था .फौज की नौकरी का सहना। वह किसी भी अवस्था के आदमी को पकड़ ले जाते थे। सब कुछ मालिक की खुशी पर था। २५ साल के लिए। फौजी नौकरी गुलामी से भी वदतर थी। वहुत कम जीते लौटते थे। मुझे दो तितोफ़् भाइयों की याद है। किसी कारण से मालिक उनसे नाराज़ हो गया। और दोनों को फौज़ में भेज दिया। फिर वहाँ दूसरा एक फ्योदोर था। उसका निजी नाम मुझे याद नहीं। वह जवान नहीं था। वह खेत काट रहा था। उसी वक़्त मालिक की नज़र उसपर पड़ी। उसको उसका ढंग नहीं पसन्द आया। जो भी हो, जब वह घर आया, तो उसी वक़्त उसे पकड़ ले गये। उसे खाने भर की भी फुर्सत न दी गई; न चीज़ों को सँभालने का मौक़ा। वह फिर नहीं लौटा।

"और कभी यदि कोई लौट कर आया भी तो वह किसी काम के लायक न रह कर। वह बूढ़ा देह-जाँगर से थक कर अपने परिवार पर बोझ वन कर। एक बात को मैं कभी न भूलूँगा। मैं उस वक़्त लिस्कोफ़् में था। एक वड़ी दयनीय सूरत का प्राणी मुझे दिखलाया गया। कह रहे थे, यह तुम्हारे गाँव का आदमी है। लेकिन कोई ठीक से नहीं बतला सकता था कि वह कौन है। मैंने उसपर नज़र डाली और देखा; कि वह अब मनुष्य नहीं रह गया था। उसके वाल सफ़ेद थे; पैर नंगे, जिनसे खून वह रहा था। उसके कपड़े चिथड़े चिथड़े हो गये थे। और वीमार भी था। मैं उसे अपने साथ घर ले चला। रास्ते में मालूम हुआ कि वह सिपाही रहा है। उसकी उम्र ७० वर्ष की थी। ४० वर्ष की उम्र में उसे पकड़ कर पलटन में ले गये थे। कहीं दूरदेश में २३ वर्ष तक नौकरी वजानी पड़ी और वहाँ से सारा रास्ता पैदल चल कर हमारे इलाक़े में पहुँचा। वह वरावर खोजता रहा लेकिन उसको अपने गाँव का पता नहीं मिला। .फौज की नौकरी ने उसकी स्मरण शक्ति को ख़तम कर दिया था।

"मैं उसे तिप्लोये ले आया। उसके संबंधी उसे नहीं पहचानते थे।

...सकी औरत और लड़के कितने ही साल पहले भूख और सर्दी से मर चुके थे। एक बूढ़ी औरत ने कहा—इसके कुर्ते को हटा तो दो, अगर पैदा होने का चिह्न उसके दाहने कंधे पर हो, तो वह हमारे घर का है। लोगों ने उसके फटे कुर्ते को हटा दिया और वहाँ पैदायश का चिह्न मिला। "वन्यूश्का" कह कर बूढ़ी औरत रो पड़ी।

"यह थी उन दिनों तुम्हारे लिए फौज की नौकरी। ऐसी ही जिन्दगी उन ज़मींदारों के मातहत हम बिताते थे। जब किसानों को ज़मींदारों की दासता से मुक्त किया गया, तब भी हमारी अवस्था में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ था। उन्होंने न हमें खेत दिया, न घोड़े। लोग वोल्गा में नावों पर कुलीगीरी करने चले गये।

"मेरी नजर कमज़ोर होती जा रही है। आँखों ने काफी समय काम दिया, यह मैं जरूर कहूँगा। कानों से अच्छी तरह मुझे सुनाई भी नहीं देता। लेकिन चीज़ों को मैं खूब अच्छी तरह पहचानता हूँ। अब जीवन अच्छा है। इससे बेहतर नहीं हो सकता। पहले यह कैसा था? नरक! सिर्फ चन्द लोगों के लिए अच्छा और हजारों के लिए बदतर! और अब? सभी जाँगर चलानेवाले सुख से रहते हैं। यह ठीक कहा गया है, तुमने अपने हिस्से के काम को पूरा किया है, अब जनता की सरकार बुढ़ापे में तुम्हारा प्रबन्ध करेगी।

"मैंने बड़े आनन्द के साथ जनता की सरकार को अपना वोट दिया और मैं हृदय से आदर करता हूँ जनता के पिता योसेफ् विसारियोनोविच स्तालिन् को।"

***

२४ नवम्बर को लेनिनग्राद् की सड़क पर जाते हुए मैंने देखा, ... पुरुषों का एक बड़ा जलूस आ रहा है। कलिनिन् का चित्र तथा ... घोषणा-वाक्य है। आदमियों की संख्या १००० से ज्यादा होगी। ...

दोनों मिश्रितरूप से चल रहे थे। स्त्रियाँ पुरुषों के साथ फ़ौजी सिपाहियों की भाँति क़दम मिला कर चल रही थीं।

*** ***

तात्याना फ़्योदोरोवा पार्लियामेंट के लिए मास्को से चुने जानेवाले उम्मेदवारों में से एक थी। २१ वर्ष की यह तरुणी मास्को शहर के अन्दर तीसरी भूगर्भी रेलवे-लाइन में खुदाई का काम करनेवाले स्त्री-पुरुष श्रमिकों की एक ब्रिगेड (दल) की नेता है। जितनी वह फावड़ा चलाने में तेज है, उतनी ही कलम और ज़बान के उपयोग में भी। प्रथम श्रेणी के वायुयान संचालक का प्रमाण-पत्र भी उसे मिला हुआ है। वह अपनी डायरी म लिखती है—

(१) "छठे हल्के के वोटरों की सभा थी। मैं ज़रा देर से पहुँची। यातायात-विभाग के जन-मंत्री-क्लब-घर में सैकड़ों आदमी आ चुके थे। मैंने बड़ी दिलचस्पी के साथ व्याख्यानों को सुना जिनमें अभिमान और उत्साह दोनों की मात्रा भरी थी। मुझे याद आते हैं, एक स्त्री के शब्द। यह शब्द उसके हृदय के अन्तस्तल से निकले थे—'स्तालिन् हमारा सब कुछ है। वह हमारा नाज़ (अभिमान) है, वह हमारा चातुर्य है, हमारा जीवन है। स्तालिन् का नाम श्रमजीवियों के सुख की बाह्य प्रतिमा बन गया है।'

"साथी स्तालिन् के प्रेम का भाव हम सब को एक कर देता है। जब उसका नाम उच्चरित होता है, तो तालियों से सारा हाल गूँज उठता है। सभी सभाओं में जहाँ जहाँ इन दिनों मैं गई, यही देखा। जब मैं और सारे कमकर खड़े हो कर वक्ता के लिए ताली बजाते हैं, तो मालूम होता है, कि दीवारें हट गईं और सम्पूर्ण देश में सुखी, शक्तिशाली जनता और स्तालिन् मार्च कर रहे हैं। स्तालिन् अपनी सादी और पिता की जैसी मन्द मुसकान के साथ हमारे आगे चल रहा है।

मंच से एक स्त्री आती है और मेरे कानों में कहती है—'तवारिश्,

फ़्योदोरोवा, मेरे जीवन में यह पहला समय है, जब कि मैंने किसी सभा में भाषण दिया।'

'तुम्हारा भाषण बड़ा सुन्दर रहा'—हाथ मिलाते हुए मैंने उससे कहा।

इस चुनाव के प्रचार के कारण लाखों नये आदमी राजनैतिक हलचल में खिंच आये। मुझे रोज़ रोज़ इसे देखने का मौका मिल रहा है।

कुछ घरू औरतें सभा समाप्त होने के बाद मुझे चारों ओर घेर कर खड़ी हो गईं। उन्होंने मुझ से कहा—'हम अपने देपुतात् (सदस्य) को और अच्छी तरह जानना चाहती हैं'।

हममें दोस्ताना बातचीत शुरू हुई। मेरे नये परिचितों ने आग्रह किया कि मैं संगीत-नाटक को देखकर जाऊँ। मैंने हँसते हुए कहा—'वोटरों की आज्ञा मेरे लिए कानून है।'

संगीत-नाटक बड़ा सुन्दर था। वहाँ कलाकार और जनता में कोई भेद-भाव न था। सभी एक सुखी परिवार से मालूम होते थे।

(२) मैंने समझा, आज सवेरे छुट्टी रहेगी; लेकिन उसी वक्त टेलीफ़ोन खनखन करने लगा। कान लगा कर सुना—'तवारिश् फ़्योदोरोवा, ८४ नंबर के स्कूल में हम तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

मैं उस सुन्दर स्कूल-भवन में पहुँची। यह पिछले तीन साल के भीतर मास्को में बने २६५ स्कूलों में से एक है। मुझे याद आने लगा। मास्को कम्युनिस्ट पार्टी के मंत्री श्चेर्बकोफ़ ने एक बार एक सभा में कहा था—'पुराने ज़माने में हर साल दो या तीन स्कूल ही बन पाते थे।' मैं प्रकाश से देदीप्यमान एक विशाल मनोविनोद-हाल में पहुँची। विद्यार्थियों ने कान बहरा कर देने वाले 'हुरा' के घोष से मेरा स्वागत किया। वे ताली बजाने लगे और धरती पर पैरों को धमधमाने लगे। मुझे उन्हें शान्त करने के लिए प्यूनिर्का (बालचरी) जीवन के कुछ वर्षों के अनुभव कहने पड़े। मैंने अपने उन दिनों के बारे में उनसे कहा। उन्हें बीते अब भी बहुत समय

नहीं गुज़रा। लड़कों ने बड़ी दिलचस्पी से सुना। मैंने कहा—'अच्छा, दूसरी क्या बात मैं तुम से कहूँ।' मेरे ऊपर प्रश्नों की बौछार होने लगी।

'भूगर्भी रेल के बारे में कहो। बेइंजन के विमान (ग्लाइडिन) के बारे में कहो।'

'तुमने स्तालिन् को देखा है?'

'विमान-संचालक बनने के लिए कितना बड़ा होने की ज़रूरत है?'

मैंने सब की जिज्ञासा को पूरा किया। मैंने उनसे कहा—'महान् क्रान्ति के बीसवें वार्षिकोत्सव के कुछ दिन पहले हमारे तरुण-साम्यवादी-संघ का ब्रिगेड कितने ही दिनों तक अपने काम से नहीं हटा, जब तक कि हमने योजना के मुताबिक अपने काम को समाप्त नहीं कर लिया। मैंने उनसे कहा—जब पहले पहल उड़ते हवाई जहाज से पराचूट (मुँहबन्द छाता) के सहारे मैं कूदी। कूद जाने के बाद मेरा डर भाग गया, और मैं इतनी प्रसन्न हुई कि गीत गाने लगी। लेकिन लड़को, अब मैं तुम से कुछ पूछना चाहती हूँ? जरा अपनी नोटबुकें दिखलाओ तो!'

एक बड़ी छल्ली मेरे सामने लाई गई। सभी नोटबुकें साफ़ और ठीक से रखी गई थीं। मैंने कहा—"कमज़ोर विद्यार्थियों की कुछ नोटबुकें मुझे दिखाओ तो।'

चारों ओर कानाफूसी होने लगी। तो भी हिम्मत कर के एक शरमीला लड़का मेरे सामने पेश किया गया—'चाची तान्या, (तात्याना) यह है! यह तीसरे दर्जे का विद्यार्थी बड़ा नटखट और बड़ा ही फूहड़ लड़का है।'

एक बड़ा ही मीठा-कथा-संलाप शुरू हुआ। लड़के ने 'बालचर क वचन' दिया कि मैं मन लगा कर पढ़ूँगा और ठीक चाल से चलूँगा। स्कूल छोड़ने से पहले हम लोगों ने मिलकर गाना गाया।

(३) मुझे कभी विश्वास नहीं था कि मेरे इतने दोस्त हैं। बीसों प हर रोज़ आ रहे हैं। उनमें कितने ही मास्को, लेनिन्ग्राद् से ही नहीं, बल्कि सुदूर ताश्कन्द और बाकू से आ रहे हैं। कितने ही कोल्खोज़ों से आ

है और कितने ही सीमान्त चौकियो मे। ऐसे पत्र भी डाकखाने की कृपा मे मुझे मिल जाते है जिन पर इतना ही लिखा रहता है—'मास्को, तान्या फ्योदोरोवा'। मुझे इस सचाई का ठीक तौर से पता अब मालूम हो रहा है कि हमारे देश में किसी मनुष्य को सूनापन का भान होना बडे अचरज की बात है। साथी बधाइयाँ भेजते है। वह अपनी जीवनी, अपनी पढाई, अपने काम और अपनी सफलताओ के बारे में कहते है। मैं अपने नये दोस्तो में से अधिकाश को उत्तर देती हूँ। लेकिन दुर्भाग्य से हर एक पत्र का उत्तर देना मेरी शक्ति से बाहर की बात है। देश के सभी भागो से आये ये पत्र मेरे लिए बड़े आनन्द के विषय है।

(४) नब्बेवें हल्के की सभा थी। खुली जगह में हजार से अधिक आदमी जमा थे। कितने ही श्रोता अपने बच्चों के साथ आये थे। एक खुली लारी भाषण-मच का काम दे रही थी। लोग उसे घेरे खडे थे। चुनाव-समिति के एक सभासद ने मुझ से कहा—'यह देखो, यहाँ कितने ही घरघुसू आये हुए है।' उन्होने यह कहते हुए लारी के पास खडे कुछ बूढों की ओर इशारा कर के फिर कहा—'किसी सभा में इनको खीच लाना आज तक संभव नहीं हुआ था।'

एक पताका पर लिखा था—'हम सब तवारिश् फ्योदोरोवा और तवारिश् बुल्गानिन् को वोट देंगे।'

मै कितनी ही बार इन वाक्यो को पढ चुकी हूँ, तो भी यह मेरे दिल में सदा एक लहर पैदा करते है। मैं सोचती हूँ—क्या सचमुच ही मैं ऐसे महान् सम्मान की पात्री हूँ? जो विश्वास मेरे प्रति किया गया है, क्या मैं उसके साथ न्याय कर सकूँगी। मेरे दिमाग में देश-प्रेम के कितने ही शब्द आये, लेकिन शब्दों की जरूरत नही, कार्य की जरूरत है। जो भाव मुझे अपने में डुबा रहे है, उनकी सत्यता मुझे अपने कार्यों से दिखलानी होगी।

एक प्रसन्न सजीव श्रोतृमडली ध्वजा-पताका तवारिश् स्तालिन् तथा पार्टी और सरकार के कितने ही नेताओं के चित्र बड़े जलूस के साथ जब

निकलते हैं, तो वह एक बड़ा त्योहार सा मालूम होता है। वही भाव वक्ताओं के भाषणों में भी दिखाई देता है। मुझे और शायद सभी उपस्थित मनुष्यों को यह नहीं मालूम होता कि हम किसी राजनैतिक सभा में हैं। जान पड़ता है, जैसे स्नेही बन्धुओं की बैठक लगी है। मैं ऐसी अविस्मरणीय उत्साहवर्द्धक बैठकों में उपस्थित हो रही हूँ।

(५) मुझे अपने चंदवक (shaft या ज़मीन के नीचे गहराई में उतरने के लिए खुदा हुआ कुआँ) में जाने की बड़ी इच्छा हो रही है। कितने दिनों से खुदाई में मैं उपस्थित न हो सकी, लेकिन चुनाव संबंधी कामों की इतनी भीड है कि उसके लिए ज़रा भी समय निकालना मुश्किल है।

"अच्छा तान्या, मालूम होता है, तुम हम सब को भूल गई!"—हँसते हुए मेरे साथी कमकर मिलने पर कहते हैं। चंदवक का काम समाप्त होने जा रहा है। १२ दिसंबर तक भूगर्भी रेलवे की पक्रोव्स्की लाइन पर गाड़ी दौड़ने लगेगी। लाइन पर आख़िरी हाथ फेरा जा रहा है। हमें सभी काम पूर्ण और निर्दोष रीति से करना है।

मेरे साथी कमकर शिकायत कर रहे हैं—'अब ज़रा ज़रा कहीं कहीं समाप्त करना रह गया है। अपना कर्तव दिखलाने के लिए कौन सी बात रह गई है?'—दोस्तो, धीरज धरो, अभी तीसरी लाइन बाकी है। उसमें करने के लिए बहुत काम मिलेगा। हमारे तरुण-साम्यवादी-संघ के ब्रिगेड को अपना कर्तव्य दिखलाने के लिए वहाँ बहुत मौक़ा मिलेगा।

* * *   * * *

प्रसिद्ध उपन्यासकार मिख़ाइल् शोलोख़ोफ़् सोवियत् पार्लियामेंट के लिए एक उम्मेदवार था। नवोचेर्कास्क शहर के वोटरों की सभा थी। आसपास के कितने ही कोल्ख़ोज़ों के कसाक भी आये हुए थे। ओर्जोनीकिद्ज़े-हाल लोगों से खचाखच भरा था। दो हज़ार से ऊपर आदमी प्रसिद्ध उप-

न्यामवार के भाषण सुनने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। वस्ता के हाल में प्रवेश करते लोगों ने जोर से करतल-ध्वनि की।

रोस्तोफ़् नगर के गोर्की नाट्यशाला के कलाकार ल्यात् ने 'शान्त-दोन्' के लेखक के जीवन पर प्रकाश डाला। शोलोख़ोफ़् मंच पर आया। जोर की ताली पिटी। उपन्यासकार ने कहना शुरू किया—

साथियो, सोवियत् पार्लियामेंट के भाषणों से—जो कि समाचारपत्रों में छप रहे हैं—एक अभिमान का भाव प्रतिध्वनित होता है। किसका अभिमान? यही कि जनता ने उनके ऊपर इतना विश्वास किया (हर्ष-ध्वनि)। मुझे भी वह अभिमान का भाव विह्वल कर रहा है। मेरे लिए इस अभिमान में कुछ व्यक्तिगत विशेष भाव भी मिश्रित हो गया है। सो क्यों? क्योंकि मैं दोन् के एक निर्वाचन-क्षेत्र से खड़ा हुआ हूँ। दोन् के तट पर मैं पैदा हुआ। दोन् ने मुझे पाला पोसा। यहीं मैंने शिक्षा पाई। यहीं मैं जवान और लेखक हुआ और यहीं मैं अपनी महान् कम्युनिस्ट पार्टी का मेंबर बना। मैं अपनी महान् तथा अनुपम शक्तिशाली पितृभूमि का भक्त हूँ। मैं यह भी अभिमान के साथ कहता हूँ कि मैं अपनी जन्मदातृ दोन्-भूमि का भक्त हूँ (हर्षध्वनि)।

साथियो, इस पुराने नगर ने पितृभूमि के प्रेमभरे कितने ही भाषण सुने हैं। गृहयुद्ध के दिनों में पितृभूमि के प्रेम के बारे में बहुत कहा गया था। दूसरों के साथ साथ (शान्ति-विरोधी) जेनरल क्रास्नोफ् और उसी तरह दूसरे राजनैतिक गिरगिट देश-प्रेम की बात करते थे, और साथ ही जर्मनों को दोन् पर चढ़ाई करने की दावत देते थे। पीछे वे मित्रों—अंग्रेजों और फ़्रांसीसियों—को बुलाने लगे। एक तरफ़ वह देश-प्रेम की बात करते थे; और दूसरी तरफ़ कसाकों के ख़ून को बेच रहे थे। सोवियत् सरकार के विरुद्ध लड़ने के लिए जो हथियार उन्हें मिलते थे, उनके बदले में रूसी जनता को बन्धक रख रहे थे।

इतिहास लोगों को उनके वचन से नहीं बल्कि उनके काम से परखता

है। इतिहास जानना चाहता है कि आदमी कितनी मात्रा में अपने देश से प्रेम करता है और उस प्रेम का वास्तविक मूल्य क्या है? देश का सच्चा प्रेम बड़ी बुरी तरह से क्रास्नोफ़् और दूसरे वतनफ़रोश बदमाशों द्वारा रौंदा जा रहा था। उन्होंने धोखा देकर कसाक कमकरों को बेवकूफ़ बनाया और क्रान्ति-विरोधी युद्ध में खींच लिया।

आज सोवियत्-संघ के करोड़ों आदमी देश के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करते हैं। वह अपने ख़ून से अपनी मातृभूमि की सीमाओं की रक्षा के लिए तैयार हैं। जिसने हमें माता की तरह पाल पोस कर तैयार किया, उस स्वदेश से प्रेम करना हमारा पवित्र कर्तव्य है।

१७ करोड़ कमकरों के लिए हमारा देश प्रिय है। इन १७ करोड़ों में कुछ घृणास्पद राजनैतिक वेश्याएँ—सभी त्रोत्स्की, जिनोव्येफ़् और बुख़ारिन् के अनुयायी हैं, जिन्होंने अपने आप ही को नहीं बेचा, बल्कि वे पितृ-भूमि को भी बेचना चाहते हैं। ऐसों के लिए आश्चर्य नहीं होता, बल्कि ऐसी घृणा होती है कि जिसकी तुलना नहीं की जा सकती। मनुष्य-जाति के इतिहास में जाति-द्रोह और राष्ट्र के प्रति विश्वासघात—सब से बड़ा पाप समझा गया है।

कसाक जाति—जिसने अमीरों के ख़िलाफ़ विद्रोह करनेवाले रजिन् और पुगाचेफ़् जैसे वीरों को पैदा किया—क्रान्ति के दिनों में उसे (सफ़ेद) जेनरलों ने बेवकूफ़ बनाया। और कमकर रूसी जनता को भाई का ख़ून बहाने के लिए तैयार किया। जब कसाकों को अपनी ग़लती मालूम हुई, तो वे सफ़ेदों से अलग हो गये।

आज बोल्शेविक पार्टी के नेतृत्व में, हमारे युग के प्रतिभावान् महा पुरुष साथी स्तालिन् के नेतृत्व में, वह एक शान्त और सुखमय जीवन का निर्माण कर रहे हैं। १९१८ ई० में बवेरिया (जर्मनी) के सवारों ने अपने घोड़ों को दोन् नदी का पानी पिलाया। जर्मन सिपाहियों के बूटों ने दोन् की धरती को रौंदा। क्रास्नोफ़् विदेशी बन्दूकों के भरोसे पर तरुण सोवि-

यत्-सरकार का गला घोंटना चाहता था। वे क्रान्ति के मार्ग को रोक देना चाहते थे। वे महान् रूसी जनता—जो कि एक नये जीवन का निर्माण कर रही थी—के रास्ते को रूँधना चाहते थे। १६ वर्ष हो गये। आज फिर पूर्व और पश्चिम में फासिस्ट गुंडे हम पर प्रहार करना चाहते हैं। ऐसे कड़े शब्द के इस्तेमाल के लिए मैं माफी माँगता हूँ। निश्चय ही यह शब्द सुभाषित नहीं कहा जा सकता। लेकिन जब कोई इन पशुओं के बारे में बोलता है, तो ऐसे शब्दों का रोकना मुश्किल हो जाता है। इससे भी कड़े शब्द को इस्तेमाल किया जा सकता है, लेकिन मैं एक लेखक हूँ, इसलिए उसकी शान के वह लायक नहीं।

बोल्शेविक पार्टी के प्रयत्न से संपूर्ण नानाजातिक कमकर जनता की कोशिश से हमने अपने गरीब देश को सम्पत्तिशाली बना दिया है। हमने विशाल नयी फैक्टरियाँ खोलीं। हमने बड़े पैमाने पर पचायती समाजवादी कृषि का निर्माण किया। हम अपनी आर्थिक प्रभुता को प्रतिदिन बढ़ा रहे हैं। आज उन सभी जातियों—जो कि परमुंडे फलाहार करना चाहती हैं—के लिए हम ललचाऊ कौर हैं। वह फिर उक्रइन् को हम से छीनने का स्वप्न देख रहे हैं। वह फिर दोन् की भूमि को जर्मन जूतों के लोह की नालों से रौंदना चाहते हैं। साथियो, जैसा कि तुम जानते हो, यह कुछ नहीं होने पायेगा। (हर्षध्वनि)

यह कुछ नहीं होने पायेगा। जैसा कि तुम्हें हाल में दिये क्लिमेन्त वोरोशिलोफ् के भाषण से मालूम होगा। लाल-सेना आत्मरक्षा के लिए सगठित की गई है। लेकिन अगर हमारे ऊपर हमला होगा, तो लाल-सेना अपने को संसार की सब से जबर्दस्त हमला करनेवाली फौज साबित करेगी। (हर्षध्वनि)

साथियो, मैं जानता हूँ। अगर एक समय जनरल क्रास्नोफ् और दूसरे देश-द्रोहियों की सम्मति से जर्मन घोड़ो ने दोन् नदी का पानी पिया, तो अब उन्हें फिर कभी हमारे सोवियत् दोन् का पानी पीने का अवसर न मिलेगा।

वल्कि इससे विलकुल उलटी वात होगी। अगर हम पर हमला हुआ, अगर फ़ासिस्टों के साथ सशस्त्र द्वन्द्व हुआ तो कसाक लाल-सेना के दोन् वाले घोड़े राइन (जर्मनी की पश्चिमी सीमा पर अवस्थित नदी) का पानी पियेंगे। सोवियत् राज्य के इतने वर्षों में दोन् कसाक क्या से क्या वन गये। गाँवों में ही नहीं, वल्कि हर एक घर के लड़के हाई स्कूलों में पढ़ रहे हैं। कसाक कोल्खोज़ी किसान अव अपने पुत्र के लिए इतने से सन्तुष्ट नहीं होता, वह अपने वच्चों को इंजीनियर, लाल-सेना के सेनानायक, कृपि-विशेपज्ञ, डाक्टर और प्रोफ़ेसर वना देखना चाहते हैं। एक नई सोवियत् कसाक शिक्षित श्रेणी प्रगट हो रही है। दोन् की कायापलट हो रही है। यह अभी ही एक नई दोन् वन गई है। हम वड़े साहस और विश्वास के साथ भव्यतर भविप्य की ओर वढ़ते जा रहे हैं। (हर्पध्वनि)

चिरंजीव वोल्शेविकों की कम्युनिस्ट पार्टी! (हर्पध्वनि) चिरंजीव हमारा महान् राप्ट्र और दोन् के कमकर कसाक! (हर्पध्वनि)

चिरंजीव वह जिसका नाम हम अपने हृदयों में रखते हैं, चिरंजीव साथी स्तालिन्! (गर्जनापूर्ण हर्पध्वनि और हुरा का नारा।)

***   ***

चुनाव के संवंध में दुनिया के एक पप्ठांश में फैले सारे सोवियत् प्रजातंत्र में सभाएँ हुई थीं। नवम्वर और दिसंवर की सर्दी और उस पर उत्तरी ध्रुव के पास वाले प्रदेशों की सर्दी! सत्तरवें अक्षांश से भी और उत्तर लेनेत्सु गाँव (दुरिन्सकोये प्रान्त) में एक ऐसी सभा हो रही थी। गाँव के सभी २१६ वोटर सभा में उपस्थित थे। **किरिल् यम्किन्** ने—जो कि सोवियत् पार्लियामेंट की जातियों की सोवियत् के लिए तैमूर निर्वाचन-क्षेत्र से खड़ा हुआ था—कहा—

"मुझे जातिक-भवन के लिए अपने ज़िले के कमकरों ने जो उम्मेदवार चुना है, उसके लिए मेरे हर्प की सीमा नहीं। मैं वारहसिंघों के तंवू

के भीतर पैदा हुआ था। वहीं मैंने अपना बचपन बिताया। पहले वर्षों में धनी किसानों (कुलक) के लिए काम करता था। मेहनत सख्त थी और जीवन में कोई रस न था।. . . . . . सोवियत् सरकार ने हमें सुख और शान्ति प्रदान की। मैं अब जानता हूँ कि मैं सिर्फ अपने लिए काम नहीं कर रहा हूँ, बल्कि अपनी भव्य पितृभूमि की भलाई के लिए कर रहा हूँ। मैं देख रहा हूँ नये जीवन को। मैं देख रहा हूँ, कैसे पहले की उत्पीड़ित तैमूर की जनता पुनरुज्जीवित हुई है। हमारा प्रिय नेता साथी स्तालिन् चाहता है कि हमारा जीवन और भी सुखमय हो, और भी आनंद-पूर्ण और सम्पत्तिशाली हो। मैं हर वक्त तैयार हूँ, उस हुक्म को बजा लाने के लिए; जो बोल्शेविक पार्टी या हमारा नेता साथी स्तालिन् दे। मैं निर्मम हो कमकरों के और भी अधिक सुखमय जीवन के लिए लड़ने को तैयार हूँ। मैं लेनिन्-स्तालिन् के झंडे को ऊँचा रक्खूँगा और जनता उसके चौगिर्द आ घेरेगी। चिरंजीव जनता का महान् नेता साथी स्तालिन्!"

सतङ् गाँव की सभा में भी एक राय से यमुकिन् को वोट देने के पक्ष में प्रस्ताव पास हुआ। प्रस्ताव में कहा गया था—"साथी यमुकिन् हमारे जिले का सब से अच्छा आदमी है। वह तुन्द्रा का प्रमुख पुरुष है। वह वह मनुष्य है जिसे हमारी पार्टी और महान् नेता साथी स्तालिन् ने निर्मित किया है।"

*** ***

निरक्षर कवि सुलेमान स्तात्स्की को पार्लियामेंट का उम्मेदवार खड़ा किया गया था। वोट के दिन से चन्द ही रोज पहले उसका देहान्त हो गया। उसने अपने वोटरों को निम्नलिखित कविता अर्पित की थी—

> मेरे जन ने कहा सोवियत्-
> हेतु खड़ा हो जाऊँ।
> पुण्य-देश का प्रिय सपूत मैं,
> अतिशय आदर पाऊँ॥

मोदमग्न हो गया वहा,
संगीतमध्य मुद मेरा।
वय झुका सकेगी कटि क्या,
जब सम्मानों ने घेरा॥

वाजी वदता हूँ, गायक,
यह कहाँ मान पायेगा।
इस जन्मभूमि में ही यह,
सम्मान दिया जायेगा॥

पर सुयश गान गाऊँगा,
मैं उसका सुख से दिन-दिन।
जो मार्ग प्रकाशित करता,
जो राह बताता स्तालिन्॥

मिल खेतों में खानों में,
सागर, वहती सरिता पर।
तुम मेरे सहचर स्तालिन्,
घन में पथरीली भू पर॥

जन मुक्त हुए चलते हैं,
जग-रवि के पीछे दिन दिन।
जय जय करने को है वह
मेरा पावक-ध्वज स्तालिन्॥

घन-शासन से विलगाया,
कुहरे पर पानी फेरा।
पथ में शुचि सुमन पड़े हैं,
ऐसा है स्तालिन् मेरा॥

महासोवियत् का चुनाव

उसने जंजीरें तोड़ीं,
बन असि अरि-दल को मारा;
तूफ़ाँ, आँधी है झंझा,
वह अपना स्तालिन् प्यारा॥

रवि-दीप्त मही में गाऊँ,
उसका पावन यश दिन दिन।
निज वोट सुलेमाँ का वह
पायेगा मेरा स्तालिन्॥

निज वोट सुलेमाँ ही क्या,
प्रत्युत सब जनता देगी।
स्तालिन् की मय-गति उर में,
अति सुख आँखें देखेंगी॥

नारी में नर्त्य चलेगा,
उस महत् सोवियत् में जब।
निज पुत्रों को ले उसमें,
होगा मेरा स्तालिन् तब॥

सम्मान सुलेमाँ, पाया,
गा तेरी गीत बहेगी।
जनता के सुख का कारण,
तुझ पर विश्वास करेगी॥

ओ जन्म भूमि मेरी, मैं,
तेरा गुण-गान करूँगा।
उनका चारण मैं, पूरी–
निज जाति-चाह कर दूँगा॥

ओदेसा—

(१) ओदेसा काला-सागर के पश्चिमोत्तर तट पर अवस्थित एक वड़ा वन्दरगाह है। आज सवेरे ५ वजे ही से सड़कें लोगों से भर गई थीं। वोटिंग आरंभ होने से वहुत पहले ही कितने लोग निर्वाचन-स्थान पर पहुँच गये थे। हर एक आदमी सव से पहले अपनी पर्ची को वैलेट-वक्स में डालना चाहता था। लेनिन्-चुनाव-क्षेत्र के ४१वें निर्वाचन-स्थान में जिस व्यक्ति ने पहला वोट दिया, वह थी ७२ साल की अंधी वुढ़िया रोस्या **मल्मुद्**। १६१८ में वह **कियेफ़्** शहर के पास एक छोटे से गाँव में रहती थी। एक दिन डाकू उसके घर में घुस आये और उसके लड़के का पता ज़वर्दस्ती पूछना चाहते थे। वुढ़िया ने नहीं वतलाया और उन्होंने उसकी आँखें फोड़ दीं। वुढ़िया कह रही थी—'मुझे वड़ा आनन्द आ रहा है कि मैं अपने ज़िले के योग्यतम उम्मेदवार **खेनकिन्** और **चेर्नित्सा** को वोट दे रही हूँ।'

६० वर्ष की वुढ़िया **सोफ़िया माखीमोव्ना** (माखिम् की लड़की) **पोनोमरेवा** अपने निर्वाचन-स्थान में वोट देने गई। उसके वुढ़ापे को देख कर कार भेजी गई, लेकिन उसने उस पर चढ़ने से इनकार कर दिया। वह पैदल ही चल कर पहुँची।

(२) निर्वाचन-दिन **ओदेसा** में वड़े समारोह के साथ मनाया गया था। गायक, वादक, नर्तक, वक्ता, अभिनेता तथा दूसरे कलाकार सड़कों, चौकों, और चौराहों में अपने गुण को प्रदर्शित कर रहे थे। वोलते फ़िल्म सड़कों की दीवारों पर दिखलाये जा रहे थे। लाउड-स्पीकर से सारे शहर में संगीत ध्वनि सुनाई पड़ती थी।

कृषि-विज्ञान में क्रान्ति पैदा करनेवाला **वीजसंस्कार** (Vernalization) का आचार्य **अकदमिक लिसेन्को**, **नोवोउक्रइन्का** के निर्वाचन-क्षेत्र से संघ-सोवियत् की सदस्यता के लिए खड़ा हुआ था। दूर दूर के गाँवों के

कोल्खोजी किसान रात रहते ही जाग उठे थे; और हर एक चाहता था कि बैलेट-बक्स पर पहले वही पहुँचे।

*** ***

१२ दिसंबर को निर्वाचन का प्रबंध बड़े विशाल पैमाने पर किया गया था। हर एक कस्बे, शहर, गाँव में दौड़ती ट्रेनों, चलते जहाजों, पनडुब्बियों, अस्पतालों, सभी जगहों पर वोट देने का प्रबंध हुआ था। वोटरों में पैदल, मोटर, तथा दूसरी साधारण सवारियों के अलावा कितने ही स्कीइस (बर्फ पर फिसलने का लकड़ी का जूता) पर आये थे, कितने ही घोड़ों पर, कितने ही बारहसिंघों और ऊँटों पर, कितने ही बैलगाड़ियों पर। उनमें थे कमकर, कोल्खोजी किसान, विद्यार्थी, लाल सैनिक, घर की औरतें, वैज्ञानिक, कलाकार, बूढ़े और जवान। नगरों में तीर के निशान से निर्वाचन-स्थान की ओर संकेत किया गया था। निर्वाचन-घर बिजली की रोशनी तथा दूसरी तरह से खूब सजाये गये थे। ऐसे निर्वाचन-स्थानों की संख्या थी डेढ़ लाख। निर्वाचन-स्थानों पर बच्चे वाली माँओं के सुभीते के लिए अस्थायी बच्चेखाने बनाये गये थे। बूढ़ों और बीमारों के लिए सवारी का प्रबन्ध किया गया था।

*** ***

मास्को—

क्रेमलिन की घड़ी ने ६ बजाया। उसी समय मास्को नगर के १३०० निर्वाचन-स्थानों के दरवाज़े खोल दिये गये। हर एक निर्वाचन-स्थान पर सैकड़ों आदमी पहले से ही आ कर इन्तज़ार कर रहे थे। कोई कोई बहादुर तो रात के तीन बजे ही से आकर धरना दिये हुये थे। वोगुस्लाव्स्की वोटर मोलोतोफ़ निर्वाचन-क्षेत्र के ६३वें स्थान पर ३ बजे से भी पहले पहुँचा था। अध्यक्ष ने पूछा—'इतना सवेरे क्यों? तुम्हें ३ घंटे से ज्यादा इंतजार करना पड़ेगा।'

'तीन घंटा! इससे क्या! मैं तो इस सुखमय दिन की महीनों से प्रतीक्षा कर रहा था। मैं ही अकेला नहीं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।'

स्तालिन्-निर्वाचन-क्षेत्र में वोटरों की विशेष तौर से भीड़ लगी हुई थी। स्तालिन् को वोट देने के लिए सारा देश तैयार था लेकिन यह सौभाग्य मास्को के स्तालिन्-निर्वाचन-क्षेत्र को ही प्राप्त हुआ। स्तालिन्-निर्वाचन-क्षेत्र के वोटर अनुभव कर रहे थे, कि सारे देश की आँखें उनकी ओर लगी हुई हैं। जो लोग निर्वाचन-स्थान पर ज़रा देर से पहुँचे वे इस के लिए अपने पड़ोसी से क्षमा माँगते थे। वोट देने का समय ६ बजे सुबह से मध्य-रात्रि तक था। इस निर्वाचन-क्षेत्र के ७५वें निर्वाचन-स्थान में सौ सैकड़े वोटरों ने अपना वोट दे दिया था। दूसरे निर्वाचन-क्षेत्रों में भी यही बात थी।

*** ***

गोर्की—

गोर्की नगर के हर एक निर्वाचन-स्थान में दरवाज़ा खुलने से पहले ही ढाई सौ से ४०० तक आदमी इंतजार में खड़े थे। ५४ वर्ष का कमकर अलेक्षेइ गुरेयेफ़् पहला आदमी था, जिसने ८१ वें निर्वाचन-स्थान में सर्व प्रथम वोट दिया। उसने कहा—'२८ साल से मैं स्वर्मोवो में काम कर रहा हूँ। मेरे सामने ही शहर बढ़ा और मेरी आँखों के देखते देखते इसकी कायापल्ट हो गई। आज यह एक स्वच्छ सम्मार्जित नगर है।'

*** ***

तुर्कमानिया—

उस दिन तुर्कमानिया के मेघ-रहित आकाश में सूरज बड़ी चमक-दमक के साथ उगा था। अश्काबाद की सड़कें रंग-बिरंगी पोशाक पहने स्त्री-पुरुषों से भरी थीं। किरोफ़्-कोल्खोज़ के चरवाहों के दो परिवार अपनी चरागाहों से ऊँटों पर चढ़ कर गाँव को लौटे। सखत, मुरादोफ़् और अता-

कारा चरवाहों ने कहा—'हम अपने मित्र साथी अन्द्रेयेफ् को वोट देंगे और फिर जल्दी लौट जायेंगे। दूसरे चरवाहे बड़े भारी गल्लों को चरा रहे हैं और कगकेर में हमारे लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वहाँ तक पहुँचने में बड़ा समय लगता है, हमें तुरन्त पीछे लौटना है; जिसमें कि वह भी आकर वोट दे सकें।'

***   ***

सोवियत् के अन्तिम उत्तर वाले निर्वाचन-स्थान रुदोल्फ्-द्वीप में ६३ वोटरों ने वोट दिया। विमान-सञ्चालक लेवानेव्स्की—जो उत्तरी ध्रुव-प्रदेश में कहीं गुम हो गया था—की खोज में निकली मुहिम के सरदार तथा सोवियत्-संघ-वीर शेवेलोफ् ने ठीक ६ बजे निर्वाचन-घर का द्वार खोला। वोट के समाप्त होने पर द्वीप-वासियों ने प्रदर्शन किया और देश के सम्मान में हुरा का नारा और बन्दूक का फैर किया गया, जिससे ध्रुव-प्रदेश की दीर्घ रात्रि की वह शान्ति भंग हो गई।

***   ***

सखालिन्—

सखालिन् द्वीप के बहुत से रास्तों को बर्फ ने बन्द कर दिया था; और दूर के वोटरों को निर्वाचन-स्थान पर पहुँचने में बड़ी दिक्कत होने वाली थी। रास्ते की बर्फ साफ करने का प्रबंध बड़े संगठित रूप से किया गया था; और वोटरों को लाने के लिए मोटरों का इन्तजाम था।

उत्तरी सिबेरिया में कितने ही वोटरों को ३० से ६० मील तक चल कर अमूदर्या के निर्वाचन-स्थान में पहुँचना पड़ा। नेन्स के रहनेवालों का एक समुदाय तो कुत्तों के स्लेज (बेपहियों की गाड़ी) में ६० मील चल कर आया था।

***   ***

सद्को, मलिगिन् और सिदोफ़् नामक बर्फ़ काटनेवाले जहाज़ों के आरोहियों ने उत्तरी अक्षांश के ७८ डिग्री १० मिनट स्थान में वोट दिया। जाड़े के कारण उत्तरी महासमुद्र के पानी के साथ जम कर ये जहाज़ रुके हुए थे। सद्को जहाज़ को उन्होंने अपना निर्वाचन-स्थान बनाया।

***   ***

द्नियेप्रोपेत्रोव्स्क नगर के ६३ वें निर्वाचन-स्थान में फ़ैक्टरी स्कूल के एक विद्यार्थी ग्रिगोरी प्रुद्निकोफ़् ने वोट दिया। उसने बड़े अभिमान से कहा—"कैसा संयोग है, आज ही मेरा जन्म-दिन है और आज ही मैं १८ वर्ष का हुआ।' ८० वर्ष के करीब के दो बूढ़े-बूढ़ी उसी निर्वाचन-स्थान पर मोटर द्वारा लाये गये थे। उन्होंने कहा—'साथी स्तालिन् को अनेक धन्यवाद! जो हमारे जैसे बूढ़ों के लिए इतना खयाल और सन्मान करते हैं।'

कियेफ़् नगर के १२०वें निर्वाचन-स्थान में ७३ वर्ष की बूढ़ी लोपातिना ३ बजे रात ही को पहुँची, कि जिसमें पहला वोट उसीका हो; लेकिन वहाँ उसने एक तरुण कमकर विजुकोव्स्की को पहले ही से डटा पाया। थोड़ी विनती करने पर तरुण ने आयु का ख़याल किया और बूढ़ी औरत को सर्व-प्रथम वोट देने का अवसर दिया।

गाँवों के लिए तो चुनाव मेला-त्योहार बन गया था। किर्गिज़िया प्रजातन्त्र के काराकोल् ज़िले में कज़ल् चेल्येक्-कोल्ख़ोज़् है। वहाँ चुनाव के दिन कितनी ही जोड़ियाँ मौज में आकर नाच रही थीं। बग़ल के एक कमरे में किसानों की मंडली ग्रामीण गायक तुज़े तुर्गम्बयेफ़् का गान सुन रही थी। सब से पहले वोट देनेवाली थी एक किर्गिज़ औरत सेइख़ान् अलीयेवा। उसने कहा—'हमने दरिद्री तम्बू और ख़ानाबदोशों का जीवन छोड़ दिया और सुखपूर्ण नये जीवन का आरंभ किया है। अपने उम्मेद-वारों के लिए वोट क्या देना है, अपने सुख और शान्ति के लिए वोट देना।'

दोन् तटवर्ती कसाक् गाँव में उस दिन बड़ा जोर था। कसाक् स्त्री-पुरुष एक दूसरे से होड़ लगाये हुए थे, कि कौन पहले अपने देश के पुत्र फ़ोल्स्किल्कोफ् और प्रसिद्ध कसाक लेखक मिखाइल शोलोखोफ् को वोट देगा। सारे गाँव में गाने की ध्वनि सुनाई देती थी—

मृदु समीर धीरे से बहती,
उपवन के वृक्षों में हो।
क्या आश्चर्य मौज में यदि हम,
इस सुखमय उत्सव-दिन में।

अस्पतालों और प्रसूति-गृहों में बीमारों के लिए वोट का विशेष प्रकार से प्रबन्ध किया गया था। इर्कुत्स्क (बैकाल झील के तट पर सिबेरिया में) के एक प्रसूति-गृह में रहती अन्तोनिना रुदुख ने कहा—'मेरे जीवन का यह सबसे बड़ा आनन्दमय दिन है। मैंने आज ही एक कन्या प्रसव की और आज ही मैंने अपना वोट महासोवियत् के योग्य उम्मेदवारों को दिया। मेरी कन्या के जीवन का कितना सुखमय भविष्य है! उसका जन्म-दिन होगा एक अविस्मरणीय त्योहार का दिन।'

*** ***

जिस वक्त चुनाव के लिए घोर प्रचार हो रहा था, उसी वक्त दिसम्बर की पहली तारीख से १० दिन के लिए सभी फैक्टरियों, और कारखानों, में अधिक मात्रा में चीजें तैयार करने के लिए ज़बर्दस्त होड़ लगी हुई थी। दोन्-वास की कोयले की खानों में ११ दिसंबर को २,३२,१६५ टन कोयला निकला था जो कि योजना से १ सैकड़ा ज्यादा था। १२ दिसंबर को वहाँ २,४६,७०३ टन कोयला निकाला गया अर्थात् योजना से ७·६ सैकड़ा ज्यादा। अलग अलग खानों के लेने पर तो कितनों ने अपने हिस्से के कामको बहुत ज्यादा मात्रा में पूरा किया। इलिच् की खान ने योजना से ४५·४ सैकड़ा ज्यादा कोयला निकाला। शास्ती-कोल्-ट्रस्ट ने १३·७ सैकड़ा ज्यादा।

व्यक्तियों को लेने पर कितने ही खनकों ने अपने हिस्से को कई गुने के रूप में पूरा किया। ओर्जोनीकिद्जे-ट्रस्ट के एक खनक सोलोगुव् ने चार सहायकों की मदद से ४० गुना अधिक कोयला निकाला। उसी खान में एक दूसरे खनक कोव्नोफ़् ने एक सहायक की मदद से २२ गुना से भी अधिक अपने काम को पूरा किया।

मास्को के हँसुआ-हथौड़ा-लोहे के कारखाने ने उपज के लिए कई नये रेकार्ड क़ायम किये। एरकिन् ने प्रति वर्गमीतर गर्माने के तल पर ६॥ टन .फौलाद तैयार की; और भ्रूज़ीनिन् ने ९·१ टन। बिजली के भट्ठे पर काम करते मोरोज़ोफ़् ने २२ टन .फौलाद तैयार किया, हालाँ कि योजना के मुताबिक १२ टन ही काफ़ी था।

मग्नीतोगोर्स्क के स्तालिन्-लोह-फ़ौलाद-कारख़ाने में प्रथम खुले भट्ठे ने २६७० टन की जगह ३०१६ टन .फौलाद तैयार किया। .फौलाद के कमकर कोलेसोफ़् ने ९·३७ टन और कोलोद्यज्नी ने ९·०८ टन फ़ौलाद प्रति-वर्गमीतर तैयार की। दोन्बास के एक लोहे के कारख़ाने में अमोसोफ़् ने ११·२ टन फ़ौलाद तैयार की; हालाँ कि उस भट्ठे की ताक़त ७·७ टन ही तक मानी जाती थी। उसी दिन (१२ दिसंबर) ४ नम्बर के पिघलाऊ भट्ठे ने अपने साल के प्रोग्राम को ही पूरा नहीं किया, बल्कि उससे १३००० टन अधिक लोहा दिया। गोर्की प्रान्त की पचास मिलों, कारख़ानों और औद्योगिक-सहयोग-समितियों ने १२ दिसंबर को ही साल का प्रोग्राम ख़तम कर दिया।

करेलिया की लकड़ी काटनेवाली प्रसिद्ध महिला कोस्तिना ने अपने पिता के साथ कटाई करते हुए उस दिन अपने हिस्से के काम को ८ गुना से भी ज्यादा पूरा किया। रेलवे में भी नये रेकार्ड स्थापित हुए। दक्षिण दोनेस् रेलवे के एक इंजन-ड्राइवर मत्वेयेंको ने एक भारी ट्रेन को २९ किलोमीतर की जगह ६२·२ किलोमीतर घंटे की चाल से दौड़ाया।

*** ***

उपज में ही नहीं, विभाजन में भी १२ दिसंबर को कितनी ही दुकानों और भंडारों ने पहले के रेकार्ड तोड़ दिये। १० दिसंबर को प्रथम गस्त्रोनोम्-भंडार ने ३ लाख रूबल की जगह ३,४६,००० रूबल का सामान बेचा। ११ दिसंबर को उसने ४,४२,००० रूबल का सामान बेचा। १२ दिसंबर को भंडार से पता लगाने पर मालूम हुआ कि पिछले दो दिनों की बिक्री के लिए उसने अच्छे किस्म के १६५ टन माल मँगवाये थे, जिनमें नफ़ीस भोजन, केक, मिश्री, फल थे। उन दो दिनों में डेढ़ लाख खरीदें हुईं। डिलेवरी विभाग ने ३५ हज़ार की जगह ८५ हज़ार रूबल की चीज़ें ग्राहकों के पास भेजीं। शम्पेन तथा दूसरी अच्छी जाति की शराब की बहुत माँग थी। १,३०,००० से अधिक नारंगियाँ फल-विभाग से बेची गई थीं। मास्को के भोजन-भंडारों के विक्रयाध्यक्ष गुत्कोफ़् के कथनानुसार ११ दिसंबर को २२ सैकडा और १२ दिसंबर को मामूल से ३२ सैकडा ज्यादा बिक्री हुई। सड़कों और चौरस्तों की पगडंडियों पर खड़ी दुकानचियों में भी उस दिन बड़े जोर की बिक्री हुई थी।

गोरी—

स्तालिन् की जन्म-नगरी गोरी में चुनाव के दिन निर्वाचन-गृह बडी अच्छी तरह सजाया गया था। युवक युवतियाँ चारों ओर टहल रही थीं। स्कूल के विद्यार्थी और बालचर फाटक पर खड़े हुए हसरत भरी निगाह से वोट के लिए आनेवाले, नर-नारियों की ओर देख रहे थे। बेचारे अभी १८ वर्ष के नहीं हो सके थे। नौजवान ज्यादातर उन जगहों पर भीड़ लगाये हुए थे, जहाँ पर भिन्न भिन्न प्रकार के जय-शब्द, साइन-बोर्ड और स्तालिन् के चित्र टँगे थे।

गुर्जी (जार्जिया) के कर्तालिनिया के इस छोटे से पहाड़ी शहर में स्तालिन् का चित्र लोगों के दिल में अद्भुत् भाव पैदा करता था। स्तालिन् यहीं पैदा हुआ था, इसी गोरी में बड़ा हुआ और यहीं उसने शिक्षा

पाई। यहाँ की हर एक चीज़ उसके यौवन की स्मृतियों से संबंध रखती है। कृषि-शिक्षणालय-भवन—जहाँ कि नगर का तीसरा निर्वाचन स्थान है—के दरवाज़े पर एक तख्ती लगी हुई है; जिसपर लिखा है—"यहीं भूत-पूर्व मिश्नरी स्कूल में महान् स्तालिन् ने १ सितंबर सन् १८८८ से १ जुलाई १८९४ तक शिक्षा पाई थी।"

जिन कमरों में नगर-निवासी और कोल्खोज़ी किसान वोट दे रहे हैं, उन्हीं की वग़ल में दो कमरे हैं। इन्हीमें बैठकर वह तरुण पढ़ा करता था जो कि अव सोवियत् जनता का शिक्षक और मार्ग-दर्शक है। आजकल शिक्षणालय का पुस्तकालय इन्हीं कमरों में है। स्तालिन् के सम्वन्ध की कितनी ही चीज़ों की इन कमरों में आजकल प्रदर्शिनी की गई है। दीवारों पर योसेफ़् विसारियोनोविच् के विद्यार्थी जीवन से संबंध रखनेवाले हस्तलेख और फोटोग्राफ़ टँगे हुए हैं। उसकी वग़ल में एक दूसरा क्लास-रूम है, जिसमें एक देवदार की शाखा को गाड़ कर फूल, खिलौने तथा जलते हुए प्रदीपों से सजाया गया है। माँ-बाप जव वोट देने के लिए जाते हैं, तो अपने वच्चों को यहीं खेलने के लिए छोड़ जाते हैं।

सोवियत् जनता के ज्येष्ठ प्रतिनिधि के नाम के साथ गोरी की हर एक चीज़ सम्वद्ध है। स्तख़ानोवी कोल्खोज़ी औरत सद्गश्विली और पार्टी के मेम्बर यग्नतश्विली को वोट देते वक्त गोरी का हर एक कोल्खोज़ी किसान और कमकर समझ रहा था कि वह पार्टी के आदर्श के लिए और स्तालिन् के आदर्श के लिए वोट दे रहा है।

जिस घर में स्तालिन् पैदा हुआ, उसमें अव म्युज़ियम है। उस के पास के निर्वाचन-स्थान में ६ वजे सवेरे से पहले ही से वागवुस्तानी कोल्-ख़ोज़ के वोटरों ने भीड़ लगा रखी थी। एक वढ़ी औरत निर्वाचन-स्थान में आई और उसने अध्यक्ष से कहा कि उसका ९० वर्ष का अन्धा पति वोट देने के लिए आने की ज़िद कर रहा है। उसके लिए मोटर भेजी गई। गुलिश्विली नामक एक स्त्री ने वडे गंभीर स्वर में अध्यक्ष से कहा—

"मेनशेविकों ने मेरे बेटे को मार डाला था, और मैं अंधी हो गई लेकिन अन्धापन मुझे अपने कर्तव्य पालन में नहीं रोक सकता।"

उसी निर्वाचन-स्थान में मेल्दीयेज् मकायेफ् नामक कोल्खोज़ी किसान बड़े सवेरे पहुँचा। वह अपने गाँव नादरवाजेवी से एक दिन पहले ही चला था। वहीं से अपने वोट का प्रमाण-पत्र भी लेता आया था। शहर में पहुँचने पर सब से पहले वह निर्वाचन-स्थान में वोट देने गया। किसान की उम्र ८० वर्ष की थी। गेगुती गाँव के अध्यापक तथा निर्वाचन-कमीशन के सदस्य ग्रीगोरी ग्लुर्जिद्ज़े ने कहा—"देखिए, नौजवान कितना आनंद मना रहे हैं। सुनिए उनके गीतों को और जरा देखिए तो उनके नाच को। अगर हम पहले की पीढ़ियों ने पहाड़ को हिला दिया तो ये सुर्खी नौजवान क्या कर डालेंगे, यह सोच कर कितना आनन्द आता है।"

महान् नेता की जन्म-नगरी पर निरभ्र आकाश में तारे खिले हुए थे। पर्वत की मन्द हवा में मिश्रित हो कर कर्तलिनियों के मर्दाने सगीत की ध्वनि सुनने में बड़ी मधुर मालूम होती थी। वोटर कभी के अपना कर्तव्य पालन कर चुके थे; लेकिन उनका उत्सव जारी था। पहाड़ के ऊँचे भाग पर स्तालिन् का विशाल चित्र बिजली द्वारा प्रकाशित किया गया था। उसे दूर से देखने पर मालूम होता था कि एक पहाड़ी बाज अपनी जन्मभूमि के ऊपर चक्कर काट रहा है।

२०—निर्वाचन-फल

मास्को के स्तालिन्-निर्वाचन-क्षेत्र का निर्वाचन-कमीशन १२ दिसंबर की आधी रात के वाद निर्वाचन-फल निकालने में तत्पर हुआ। महा सोवियत् के प्रथम सदस्य तवारिश् स्तालिन् यहीं से खड़े हुए थे। कमीशन के मेंवर लोग वोटों के गिनने में व्यस्त थे। जव कमीशन के चेयरमैन विनोग्रादोफ़् ने परिणाम सुनाया और 'तवारिश् स्तालिन् स०स०स०र० की महासोवियत् के सदस्य चुने गये'—घोषित किया तो लोगों ने देर तक नारे लगाये। चेयरमैन ने कहा—तवारिश् स्तालिन् का महासोवियत् का सदस्य चुना जाना सिर्फ हमारे स्तालिन् ज़िले के वोटरों के भाव को ही प्रकाशित करना नहीं वल्कि यह सारी लाल राजधानी (मास्को) नहीं, नहीं, हमारी सारी वहुकरोड़ी जनता के अभिप्राय का प्रकाशित करना है।

गुप्त पुर्जियों में यद्यपि चिह्न भर कर देना ही ज़रूरी था, लेकिन कितने ही वोटर अपने हृदय के उद्गार लिखने से वाज़ न आये। उनमें से कुछ के नमूने सुनिए—

"अपने प्रिय स्तालिन् के लिए मैं वोट दे रहा हूँ।"

'वड़े हर्ष के साथ मैं साथी स्तालिन् की उम्मेदवारी के लिए वोट दे रहा हूँ।'

'प्रिय साथी स्तालिन्, हम—जनता और उसके शिक्षित समाज—पर विश्वास करने के लिए आपको धन्यवाद। हम कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेंगे। तुम्हारे आदेशानुसार और सोवियत्संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के आदेशानुसार हम सभी कठिनाइयों को पार करेंगे; और साम्यवाद के निर्माण में आनेवाली सभी वाधाओं को दूर फेंक देंगे।'

१२ दिसंवर को निर्वाचन और उसका परिणाम सोवियत्-इतिहास में

हमेशा के लिए स्मरणीय बात रहेगी। इस निर्वाचन ने साबित कर दिया कि जो पार्टी सोवियत्-भूमि का नेतृत्व कर रही है, वह जनता की कितनी विश्वास-पात्र है। कुल वोटरों की संख्या थी ९,३६,३९,४७८ जिनमें ९,०३,१९,३४६ अर्थात् ९६·५ सैंकड़ा लोग वोट देने गये। इसकी आप

देश तथा निर्वाचन सन्	जन-संख्या	वोटर-संख्या	जन-संख्या प्रतिशत	वोट दिया	प्रतिशत वोटर
पोलैंड १९३५	३,३४,००,०००	१,६२,८२,३४७	४८·८	७५,७६,६८६	४६·६
जापान १९३७	६,९२,५१,२६५	१,४६,१८,२९८	२१·१	१,०२,०४,१२७	६९·९
इंग्लैंड १९३५	४,४९,३७,४४४	३,०५,६२,७७४	६८·१	२,२०,०१,८३७	७१·९
जर्मनी १९३२	६,२४,१०,६००	४,४३,७३,७००	७१·२	३,५७,५९,१००	८०·६
यु० रा० अमेरिका (प्रेसिडेंट) १९३६	१२,८४,२९,०००	५,५०,००,०००	४२·८	४,५८,१२,१५५	८३·३
फ्रांस १९३६	४,१९,०५,९६८	१,१७,६८,४९१	२८·२	९९,३८,०५८	८३·९
स०स०स०र० १२ दि० १९३७	१६,९०,००,०००	९,३६,३९,४७८	५५·४	९,०३,१९,३४६	९६·५

दुनिया के और चुनावों से मुकावला कीजिए तव आपको सोवियत् चुनाव की विशेपता मालूम होगी—

इंगलैंड में जो अनुदार-दल शासन कर रहा है, उसे ५३·६ सैकड़े ही वोट मिले थे। युक्त राष्ट्र अमेरिका में १९३६ के प्रेसिडेंट के चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी को कुल वोट का ६०·५ सैकड़ा मिला था; लेकिन सोवियत् चुनाव में शासक पार्टी को १०० सैकड़ा वोट मिले।

सोवियत् चुनाव के वारे में व्याख्यान देते हुए स्तालिन् ने कहा था—'हमारे यहाँ न पूँजीपति हैं, न ज़मींदार। इसीलिए धनवालों का निर्धनों पर कोई दवाव नहीं। हमारे यहाँ कमकरों किसानों और बुद्धिजीवियों के सहयोग की अवस्था में चुनाव होते हैं। परस्पर विश्वास की अवस्था में या मैं कहूँ परस्पर की मित्रता की अवस्था में। क्योंकि हमारे यहाँ न पूँजीपति हैं; न ज़मींदार हैं, न शोपण है। और यथार्थतः यहाँ कोई ऐसा नहीं है, जो लोगों पर उनकी इच्छा के विरुद्ध दवाव डाल सके। इसीलिए हमारे चुनाव ही संसार में दरअसल स्वतंत्र और प्रजासत्तात्मक चुनाव हैं।'

वोट के अधिकार देने में दूसरे देशों ने कई तरह की वाधाएँ डाल रक्खी हैं। सोवियत् के नये विधान में न स्त्री-पुरुप का भेद है, न जाति का, न धर्म का, न शिक्षा संवंधी योग्यता का, न सम्पत्ति का, न सामाजिक स्थिति का। वहाँ सिर्फ १८ वर्प की अवस्था से ज़्यादा होना चाहिए, वस, इतना ही वस है। लेकिन दूसरे देशों में क्या हालत है? जर्मनी में २० वर्प के ऊपर के ही आदमी वोट दे सकते हैं और उन में भी वे ही जो 'आर्य' हैं। इंगलैंड में २१ वर्प के वाद वोट का अधिकार मिलता है। फ़्रांस में भी २१ साल के वाद; लेकिन सिर्फ मर्दों को, औरतों को नहीं।

वोट की योग्यता के लिए इतना कम निर्वन्ध होने पर भी जर्मनी, अमेरिका और इंगलैंड की अपेक्षा सोवियत् में प्रतिशत कम होने का कारण यह है, कि इंगलैंड और जर्मनी में वच्चों और तरुणों की संख्या प्रतिशतक वहुत कम है। उन देशों में लड़कों की पैदाइश खास कर के युद्ध के

बाद बहुत कम हो गई है। १६१० में जर्मनी में २० वर्ष के कम के बच्चे और तरुण २,५१,६०,००० (अर्थात् ४३.५ प्रतिशतक) थे और १६३३ में १,८०,३७,००० (२८.८ सैकड़ा) लेकिन सोवियत् में बच्चों की पैदाइश ज्यादा है।

***   ***

प्रजातंत्र	वोटर	वोट दिया	प्रति शत
स०स०म०र०	६,३६,३६,४७८	६,०३,१६,३४६	६६.५
१–रूमी संयुक्त स०स०र०	६,०३,५१,६५६	५,८२,५७,२४५	६६.५
२–उक्रइन् स०म०र०	१,७५,३०,३५१	१,७०,६८,१००	६७.५
३–वेलोरुसी स०म०र०	३०,०७,३४२	२६,२६.३७१	६७.३
४–आजुर्बाइजान् स०म०र०	१६,४८,३५३	१५,७८,७६२	६५.५
५–गुर्जी स०स०र०	१६,८०,५८७	१८,६१,१७५	६५.६
६–अर्मेनी स०स०र०	६,२०,२२०	५,६०,६८१	६५.२
७–तुर्कमानिया स०म०र०	६,५७,५१५	६,२१,८४७	६५.३
८–उजबेक् स०स०र०	३५,४८,८८१	३३,१६,४८१	६३.५
९–ताजिक स०स०र०	७,५१,७६८	७,१०,८७१	६४.६
१०–कजाक् स०म०र०	२७,८८,१४७	२६,१६,७७६	६३.६
११–किर्गिज स०म०र०	७,६६,४०८	७,४४,६८७	६३.१

मास्को नगर के वोटरों में से ६६.१३ प्रति सैकड़ा ने वोट दिया। मास्को प्रान्त में ६८ सैकड़ा। मिन्स्क नगर में वोट देनेवाले ६६.६ प्रति शत थे। लेनिन्ग्राद् में ६६.३, बाकू ६५.५, तिफलिस् (तुबिलिसी) ६५.६ सैकड़ा।

महासोवियत् (सोवियत्-पार्लियामेण्ट) के दोनों भवनों (संघ-भवन और जातिक-भवन) में कुल मिलाकर ११४३ सदस्य हैं जिनमें ८५५

कम्युनिस्ट पार्टी के मेंबर और २८८ ग़ैर मेंबर हैं। सदस्यों (देपुतात् या डिपुटी) में १८४ औरतें हैं और ६५६ मर्द।

सोवियत्-संघ में उपर्युक्त ११ सोवियत्-सोशलिस्ट-रिपब्लिक (संघ-प्रजातंत्र) हैं; जिन्हें स्वतंत्रता है कि जब चाहें तब संघ से अलग हो जायँ। रूसी, उज़बेक, यहूदी, आर्मेनियन, नेनेत्स आदि १७५ जातियाँ और कबीले सोवियत्-संघ के नागरिक हैं।

३३हज़ार सभाओं में किसानों और मज़दूरों, लाल-सैनिकों और प्रोफ़ेसरों ने स्तालिन् की उम्मेदवारी का प्रस्ताव पास किया था। पर्चियों में लोगों ने लिखा था—मैं अपना वोट ही नहीं दे रहा हूँ बल्कि ज़रूरत पड़ने पर साथी स्तालिन् के लिए अपना जीवन भी दे दूँगा।

मंत्रि-मंडल के एक सदस्य के लिए डाली गई एक पर्ची में लिखा था—'मेरे प्रिय साथी **मिकोयान्**! मैं तुम्हें अपना वोट बड़ी ख़ुशी के साथ दे रहा हूँ।' दूसरीं में लिखा था—"प्रतिक्रिया के सालों में ज़ारशाही के वर्षों में गृहयुद्ध के कठिन समयों में तुम कमकरों की आजादी के लिए लड़े, और आज हमारे सुख और बेहतर ज़िन्दगी के लिए अपना युद्ध जारी रखे हुए हो। महान् स्तालिन् के नज़दीकी सहकारी बोल्शेविक मिकोयान्! मैं तुम्हें अपना वोट ही नहीं दूँगा, बल्कि जीवन भी। चिरंजीव हमारा नेता पिता और गुरु योसेफ़् स्तालिन्। चिरंजीव हमारा प्यारा **मिकोयान्**।"

मार्शल **वोरोशिलोफ़्** (युद्धमंत्री) की सर्वप्रियता इसी से सिद्ध है कि **मिन्स्क** नगर—जहाँ से वह खड़ा हुआ था—के वोटरों में ९९·६ सैकड़े ने जाकर उसे वोट दिया।

ख़रकोफ़् में तरुण वोटरों की संख्या सब से ज़्यादा थी, यह तरुणों की नगरी समझी जाती है। नगर की ज़न-संख्या के तीन चौथाई व्यक्ति क्रान्ति के बाद पैदा हुए और वहाँ के कारख़ानों में से $\frac{९}{१०}$ पिछले इतने ही दिनों में बने हैं। वहाँ के विश्वविद्यालय के छात्रावासों के विद्यार्थियों में दो मत हो गया था। एक ने प्रस्ताव किया कि जल्दी सो जाना चाहिए, कि जिसमें

सवेरे उठकर सबसे पहले निर्वाचन-स्थान में पहुँच जायँ। दूसरे दल ने कहा—रात जग कर बिता देनी चाहिए। कहीं नींद लंबी न हो जाय। उनके लिए निर्वाचन-स्थान छात्रावासों में ही नियत किये गये थे। सवेरे ही उनके यहाँ भीड़ लग गई थी। उनमें प्राय. सभी १८ से २१ साल तक के थे।

***   ***

(१) तात्याना फ़्योदोरोवा ने अपने मतदाताओं को धन्यवाद देते हुए लिखा—"एक अनिर्वचनीय जबर्दस्त भावना ने, जिसे सिर्फ़ खुशी नहीं कहा जा सकता, मेरे हृदय को भर दिया; जब कि १२ दिसंबर के वोट-दान का जबर्दस्त परिणाम मैने पढ़ा। यह भाव हमारी साम्यवादी पितृभूमि के लिए कोमल प्रेम का था और यह मेरे लिए आनन्द का विषय था; क्योंकि मेरा और लाखों तरुण नागरिकों का यह सौभाग्य था जो कि वे संसार के स्वतंत्र देश स०स०स०र० मे पैदा हुए और पले।

तात्याना फ़्योदोरोवा

"अपने सदस्य चुने जाने के विषय में, सोवियत् ज़िले के वोटरों के प्रति उन्होंने जो देश के सर्वोपरि-शासन सभा का मेंबर चुन कर मेरे प्रति महान् विश्वास का परिचय दिया है, इसके लिए मै उनकी हृदय से कृतज्ञ हूँ। मै अभी बिलकुल तरुणी सिर्फ़ २२ साल की हूँ; लेकिन मुझे स्तालिनीय पाठशाला में पढ़ने का मौका मिला है। मेरी हमेशा कोशिश होगी कि अपने विचारों में साफ और निश्चित रहूँ। दुश्मन के प्रति बिलकुल निर्दय रहूँ। न्याय-युक्त और लड़ाई में निर्भय, अपनी पितृभूमि मे वैसे ही प्रेम करूँ, जैसे लेनिन् ने किया; और जैसे स्तालिन् कर रहे हैं।

कम्युनिस्ट पार्टी के मेंबर और २८८ ग़ैर मेंबर हैं। सदस्यों (देपुतात् या डिपुटी) में १८४ औरतें हैं और ६५६ मर्द।

सोवियत्-संघ में उपर्युक्त ११ सोवियत्-सोशलिस्ट-रिपब्लिक (संघ-प्रजातंत्र) हैं; जिन्हें स्वतंत्रता है कि जब चाहें तब संघ से अलग हो जायँ। रूसी, उज़बेक, यहूदी, आर्मेनियन, नेनेत्स आदि १७५ जातियाँ और कबीले सोवियत्-संघ के नागरिक हैं।

३३हज़ार सभाओं में किसानों और मज़दूरों, लाल-सैनिकों और प्रोफ़ेसरों ने स्तालिन् की उम्मेदवारी का प्रस्ताव पास किया था। पर्चियों में लोगों ने लिखा था—मैं अपना वोट ही नहीं दे रहा हूँ बल्कि ज़रूरत पड़ने पर साथी स्तालिन् के लिए अपना जीवन भी दे दूँगा।

मंत्रि-मंडल के एक सदस्य के लिए डाली गई एक पर्ची में लिखा था—'मेरे प्रिय साथी **मिकोयान्**! मैं तुम्हें अपना वोट बड़ी ख़ुशी के साथ दे रहा हूँ।' दूसरी में लिखा था—"प्रतिक्रिया के सालों में ज़ारशाही के वर्षों में गृहयुद्ध के कठिन समयों में तुम कमकरों की आजादी के लिए लड़े, और आज हमारे सुख और बेहतर ज़िन्दगी के लिए अपना युद्ध जारी रखे हुए हो। महान् स्तालिन् के नज़दीकी सहकारी बोल्शेविक मिकोयान्! मैं तुम्हें अपना वोट ही नहीं दूँगा, बल्कि जीवन भी। चिरंजीव हमारा नेता पिता और गुरु योसेफ़् स्तालिन्। चिरंजीव हमारा प्यारा **मिकोयान्**।"

मार्शल **वोरोशिलोफ़्** (युद्धमंत्री) की सर्वप्रियता इसी से सिद्ध है कि **मिन्स्क** नगर—जहाँ से वह खड़ा हुआ था—के वोटरों में ६६·६ सैकड़े ने जाकर उसे वोट दिया।

ख़रकोफ़् में तरुण वोटरों की संख्या सब से ज़्यादा थी, यह तरुणों की नगरी समझी जाती है। नगर की जन-संख्या के तीन चौथाई व्यक्ति क्रान्ति के बाद पैदा हुए और वहाँ के कारख़ानों में से $\frac{6}{10}$ पिछले इतने ही दिनों में बने हैं। वहाँ के विश्वविद्यालय के छात्रावासों के विद्यार्थियों में दो मत हो गया था। एक ने प्रस्ताव किया कि जल्दी सो जाना चाहिए, कि जिसमें

सवेरे उठकर सबसे पहले निर्वाचन-स्थान में पहुँच जायँ। दूसरे दल ने कहा—रात जग कर बिता देनी चाहिए। कहीं नींद लंबी न हो जाय। उनके लिए निर्वाचन-स्थान छात्रावासो मे ही नियत किये गये थे। सवेरे ही उनके यहाँ भीड़ लग गई थी। उनमें प्रायः सभी १८ से २१ साल तक के थे।

*** ***

(१) तात्याना प्योदोरोवा ने अपने मतदाताओं को धन्यवाद देते हुए लिखा—"एक अनिर्वचनीय जबर्दस्त भावना ने, जिसे सिर्फ खुशी नही कहा जा सकता, मेरे हृदय को भर दिया; जब कि १२ दिसंबर के वोट-दान का जबर्दस्त परिणाम मैने पढ़ा। यह भाव हमारी साम्यवादी पितृभूमि के लिए कोमल प्रेम का था और यह मेरे लिए आनन्द का विषय था; क्यों कि मेरा और लाखो तरुण नागरिको का यह सौभाग्य था जो कि वे संसार के स्वतन्त्र देश स०स०स०र० मे पैदा हुए और पले।

तात्याना प्योदोरोवा

"अपने सदस्य चुने जाने के विषय में, सोवियत् जिले के वोटरो के प्रति उन्होने जो देश के सर्वोपरि-शासन सभा का मेंबर चुन कर मेरे प्रति महान् विश्वास का परिचय दिया है, इसके लिए मै उनकी हृदय से कृतज्ञ हूँ। मै अभी बिलकुल तरुणी सिर्फ २२ साल की हूँ, लेकिन मुझे स्तालिनीय पाठशाला में पढने का मौका मिला है। मेरी हमेशा कोशिश होगी कि अपने विचारो में साफ और निश्चित रहूँ। दुश्मन के प्रति बिलकुल निर्दय रहूँ। न्याय-युक्त और लडाई मे निर्भय, अपनी पितृभूमि मे वैसे ही प्रेम करूँ, जैसे लेनिन् ने किया; और जैसे स्तालिन् कर रहे है।

"मेरा हृदय सारी सोवियत् जनता के लिए सन्मान और प्रेम से भर गया है; उस सोवियत् जनता के लिए जिसने कि कम्युनिस्ट पार्टी के मेंबर और गैर-मेम्बर उम्मेदवारों—जो कि देश के सर्वोत्तम व्यक्ति हैं—को चुन कर अपने राजनैतिक सुविचार का उत्तम परिचय दिया है। मेरा दिल, सोवियत् जनता की अग्रसेना महान् कम्युनिस्ट पार्टी और उसके यशस्वी नेता के प्रेम से भर गया है। मैं अपने जीवन और कार्य से यह सिद्ध करने की कोशिश करूँगी। मैं सोवियत् बच्चों और नौजवानों की माँ जैसी हितचिन्तन के लिए कितनी अधिक कृतज्ञ हूँ। इस हितचिन्तन के लिए मैंने सदा कृतज्ञता का अनुभव किया है और आज भी अपने दैनिक जीवन के कामों में कर रही हूँ।"

(२) मास्को के मशीन बनानेवाले एक कारख़ाने का एक बड़ा तेज़ कमकर गोरोफ़् सदस्य चुने जाने के बारे में अपनी कृतज्ञता निम्न शब्दों में प्रकट करता है—

"निर्वाचन के परिणाम ने मेरे दिल में ज़बर्दस्त उल्लास पैदा कर दिया है; और यशस्वी बोल्शेविक पार्टी तथा सारी पितृभूमि के लिए मेरे दिल में अभिमान भर दिया है। इसने हमारे राष्ट्र की राजनैतिक और नैतिक एकता का परिचय दे दिया। लेनिन् निर्वाचन-क्षेत्र के वोटरों ने सोवियत्-शक्ति की सर्वोच्च संस्था के लिए मुझे सदस्य चुना। सारे निर्वाचन के प्रचार के समय मैंने कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर और गैर-मेम्बर उम्मेदवारों में जनता का ज़बर्दस्त विश्वास देखा। कल मैंने सुदूर व्लादिवोस्तोक् तथा गोर्की, लेनिन्ग्राद् और मास्को से पचासों बधाई के तार पाये।

"जनता का विश्वासपात्र होने से बढ़कर जीवन में कोई आनंद नहीं। जो सन्मान मुझे प्रदान किया गया है, मैं कैसे अपने को उसके योग्य सिद्ध कर सकूँगा? महासोवियत् के लिए चुना जाना, जनता और ख़ास कर अपने निर्वाचकों के प्रति मेरे सिर पर एक बड़ा दायित्व है। वह मुझ

से आशा रखेंगे कि मैं अपने को श्रेष्ठ कमकर और राजनीतिज्ञ सिद्ध करूँ। स्तालिन् के परामर्शानुसार वह अपने भेजे गए सदस्यों से जरूर यह माँग करेंगे कि वह लेनिन् की तरह विचार में साफ और निश्चित, जनता के शत्रुओं के प्रति निर्दय, सच्चे और इन्साफ-पसन्द राजनीतिज्ञ हों। एक सदस्य के तौर पर जनता को सदा प्यार करना मेरा ध्येय है। यही आदर्श है जिसकी प्राप्ति के लिए मैं निरन्तर प्रयत्न करूँगा।

"आज मैं उपज के एक नये रेकार्ड की स्थापना में लगा हूँ। ६ दिसम्बर को मैंने अपना काम ४५·८२ गुना किया था। मैं चाहता हूँ कि बहुत जल्द अपने उस रेकार्ड को मात करूँ। कारखाने के डाइरेक्टर की आज्ञा के अनुसार इंजीनियरों और यंत्रप्रवीणों का एक दल बनाया गया है, जो मेरे बताये अनुसार तीसरे नंबर की सारी वर्कशाप के लिए एक योजना बनाएँगे। *मेरा इस वक्त सब से पहला काम है कि अगले महीनों में मेरा वर्कशाप* प्रोग्राम को दूना पूरा करे।

"इस समस्या को हल करके हम लोग स्तखानोफ़-आन्दोलन (उपज को कई गुना बढ़ाने का आन्दोलन) को और आगे बढ़ाने में सफल होंगे और हमारे सभी कमकर काम की उपज को कई गुना बढ़ाने में कामयाब होंगे। यह राष्ट्र के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण काम है, जैसा कि तवारिश् मोलोतोफ् ने संकेत किया है—श्रम की उपज को बढ़ाना हमारे सामने सब से बड़ा प्रश्न है। पूँजीवाद और साम्यवाद के युद्ध का अन्तिम फैसला इसी समस्या के हल करने पर निर्भर है।"

(३) प्रसिद्ध वैमानिक सोवियत्-संघ-वीर वर्दुकोफ् ने अपने वोटरों को इस प्रकार धन्यवाद दिया—

"निर्वाचकों ने अपना इतना जबर्दस्त विश्वास प्रकट किया है, वह मेरे लिए सिर्फ़ सम्मान की ही बात नहीं, बल्कि एक भारी जिम्मेवारी भी है। मैं महान् स्तालिन् के इस वाक्य की सचाई और बुद्धिमत्ता को दिल से मानता हूँ; कि वोटरों और सदस्य का संबंध चुनाव के बाद ही खतम नहीं हो जाता।

स्तालिनीय विधान—जो कि हमारे युग का सब से बड़ा विधान है—साफ़ शब्दों में कहता है कि जिस सदस्य ने अपने को अपने निर्वाचकों के विश्वास का पात्र नहीं सिद्ध किया, उसको सोवियत् से अवश्य लौटा लेना चाहिए।

"हमारे देश में सदस्य का नाम दिखावा भर नहीं है और न सजावट की चीज़ है। बल्कि सर्वप्रथम वह है सन्मान-पूर्वक मशक्कत करना तथा गंभीर बोल्शेविक सिद्धान्त के अनुसार निरन्तर उद्योगपरायण रहना, लेनिन् और स्तालिन् के आदर्श के लिए असीम लगन रखना। मैं जोर के साथ अपने निर्वाचकों—जिन्होंने कि मुझे महासोवियत् में अपना प्रतिनिधि बना कर भेजा है—से कहूँगा कि वह ध्यान से देखते रहें कि मैंने कहाँ तक अपने को उनके विश्वास के योग्य सिद्ध किया और नियम पूर्वक मुझ से मेरे काम के बारे में जवाब-तलब करते रहें। और जब कभी मैं कोई भूल या ग़लती करूँ तो मुझे ख़बरदार करें। भूलिए नहीं, मेरे काम का अच्छा भला होना बहुत कुछ निर्भर करता है, आपके ऊपर। वह निर्भर करता है इस बात पर कि जनता की चतुराई और अनुभव से मुझे कितनी सहायता मिलती है।

"मैंने सारे उत्तरीय ध्रुव प्रदेश में स्तालिनीय मार्ग से हुई उस महान् उड़ान में भाग लिया था। मैंने स्तालिन् की आज्ञा से उस अत्यन्त कठिन उड़ान में भी भाग लिया जो सोवियत्-भमि से उत्तरी ध्रुव होकर युक्त राष्ट्र अमेरिका को हुई थी।

"अपने एक एक शब्द की जिम्मेवारी लेते हुए मैं घोपित करता हूँ कि अपनी समृद्धिशाली पितृभूमि में मैं उस स्तालिनीय मार्ग से—जो कि हमारे देश में साम्यवाद का महानिर्माण कर रहा है—एक जौ भर भी बिना इधर उधर हुए उसी तरह लगन से काम करूँगा, जैसे कि उस उड़ान के समय मैंने किया था। और यदि इस आदरणीय आदर्श के लिए मुझे प्राण भी देना हो तो मैं ज़रा भी हिचकिचाये बिना खुशी से वैसा करूँगा।

"स०स०स०र० की महान् सोवियत् का चुनाव हुआ है सोवियत् जनता की इच्छा से। इस सोवियत् का सदस्य होना बहुत भारी सम्मान है। ऐसा सम्मान जो मुझे अत्यन्त सन्तोष प्रदान करता है साथ ही सोवियत् का सदस्य होना एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। मै उस जिम्मेवारी को स्तालिन् के बताये रास्ते से पूरा करूँगा।"

२१—महासोवियत् के कुछ सदस्य

चुकानोफ़्—वह छोटे छोटे शब्दों में बड़ी सादगी के साथ किन्तु स्पष्ट बोलता है। उसके सारे शरीर से शान्ति और स्थिरता टपकती है। दिखावा उसमें छू तक नहीं गया है। ज़रा सा सिर एक तरफ़ झुकाये वह नगर की पार्टी कमेटी की कार्य-कारिणी के मेम्बरों की बात बड़े ध्यान से सुनता है; और बाद के समय उनका नेतृत्व और पथ-प्रदर्शन करता है; सब से आवश्यक अंश को झट से समझ कर काम करने लायक तरीक़े से बातों को संक्षिप्त कर देता है।

मीरोन् चुकानोफ़् जब कोयलों की खान में एक खनक था, तब भी अपने साथी कमकरों की बातों को इसी तरह ध्यान तथा एकाग्रता से सुनता था। जब वह **इर्मिनो** खान (दोन्-बास्) के स्तालिन् चंदवक (Shaft) में *कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन करता था, और जिस समय कि महत्त्वशाली* स्तख़ानोफ़् आन्दोलन का जन्म हुआ, उस समय भी वह इसी तरह अपने साथियों की बातों को ध्यान से सुनता था। वह लोगों को सिखलाता है और दोहरी शक्ति से उनसे बहुत सी बातें सीखता है। वह अब भी सीधा सादा त्यागी पक्का बोल्शेविक है। अब भी वही **चुकानोफ़्** है जिसने **अलेख़ेइ स्तख़ानोफ़्** को परख लिया और उसको सिखाया; उसके हृदय में बोल्शेविकों की ज्वाला जगा दी। मालूम होता है कि जैसे इस बात को युग बीत गये। इस बीच में छोटी-बड़ी अनेक समस्याएँ उसके सामने आईं। अभी दो ही वर्ष हुए, कि वह सर्वप्रथम **क्रेमलिन्** में आया और स्तालिन् ने उसकी बात को बड़े ध्यान से तथा उसे उत्साहित करते हुए सुना। चुकानोफ़् ने कहा—"पहले हम ख़ुद ही कोयला काटते थे और ख़ुद ही ख़ाली जगह में थूनी लगाते थे; लेकिन अब हम ने काम को बाँट दिया है।"

साथी स्तालिन् बोल् उठे—"यही है सफलता की कुंजी!"

चुकानोफ़् से पूछा गया—अपने नये ढग के अनुसार जितनी मात्रा में वह कोयला निकाल रहे हैं, क्या उसको खान के ऊपर पहुँचाया जा सकता है? जरा देर के लिए चुकानोफ् ठहर गया फिर उसने आहिस्ते से शान्ति पूर्वक कहा—"यह बिलकुल सम्भव है। मैं दावे के साथ कहता हूँ कि यह सम्भव है।"

(घट्ठे पडे हाथों को मेज की छोर पर रखे) ठिगना और गठीले वदन का चुकानोफ् स्तालिन् के सामने निर्छे खडा था। स्तालिन् वडे गौर से सुन रहा था। यद्यपि चुकानोफ् की बात रुक रुक कर होती थी, वह उस खनक के मजीदे तथा जहाँ तहाँ कोयले की नीली धूल के दाग पड़े चेहरे की परीक्षा कर रहा था। स्तालिन् खडा हो गया और उसके साथ क्रेमलिन् के हाल में बैठी सारी जनता। इस बोल्शेविक—जिसने कि अलेक्सेइ स्तखानोफ् को सिखा कर तैयार किया—के लिए प्रशसासूचक नारे लगाने लगी। तवारिश् मोलोतोफ् ने कहा—"कम्युनिस्ट चुकानोफ़् ऐसे लोग ही स्तखानोफ् आन्दोलन के सच्चे सूत्रधार हैं।"

मिरोन् चुकानोफ् (डिपुटी)

चुकानोफ़् के अब तक के किये कामो ने उसे तैयार किया कि वह खान की खुदाई में चदवक की कम्युनिस्ट पार्टी में आये। और वहाँ से नगरवाली

पार्टी का नेता बने। इन्हीं कामों ने उसमें वह योग्यता पैदा की कि उस का गौरव जनता की दृष्टि में बढ़ गया। लोगों का वह विश्वासपात्र बना और आज वह स०स०स०र० के महासोवियत् का सदस्य चुना गया। द्युका-नोफ़् में अपनी पार्टी के लिए बड़ी लगन है। जनता के शत्रुओं से वह अत्यन्त घृणा करता है। उसके काम में बोल्शेविक आग है। उसमें ज्ञान और संस्कृति की प्राप्ति के लिए न बुझनेवाली प्यास है।

वर्षों गुज़र गये, जब कि लेनिन् अपना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण लेख 'होड़ को कैसे संगठित करना चाहिए?' लिख रहा था, उसी समय एक खेतिहर मज़दूर अपना गाँव तरोयेरोज् देस्त्वेन्स्कोये को छोड़ कर मैदान में आया। वह पुराने घृणा के योग्य जीवन—जिसने उसके जैसे हज़ारों आदमियों के जीवन को पीस दिया, निर्जीव बना दिया—के ख़िलाफ़ लड़ने को निकला। क्रान्ति के युद्ध के समय वह वोल्गा प्रदेश में लड़ा। चारित्सिन् के प्रसिद्ध युद्ध में उसने भाग लिया। सफ़ेद देश-द्रोहियों के जेल की भयं-कर साँसत को भी उसने सहा और चुपके से वहाँ से निकल कर फिर क्रान्ति के पक्ष में हथियार ले कूद पड़ा। ज़ार, ज़मींदार, और पूँजीपतियों के लिए उसकी घृणा ने उसमें वह साहस पैदा कर दिया था, कि वह दिलोजान से पुरानी रूढ़ियों, पुराने जीवन, पुरानी परिस्थिति को उखाड़ फेंकने के लिए कटिबद्ध हो गया था।

गृह-युद्ध समाप्त हो गया और अब साम्यवादियों को नव-निर्माण में लगना पड़ा।

उसका भाई तेरेन्ती पहले ही से कोयले की खान में काम करता था। वह द्युकानोफ़् को अपने साथ इरमिनो खान में ले गया। यह १६२४ की बात है। पिंजड़ा मज़दूरों को लेकर बड़े वेग से चंदवक के पेंदी की ओर चला। चारों तरफ़ घुप अँधेरा था। पानी का 'टप टप' स्पष्ट सुनाई देता था। मीरोन् सिकुड़ कर अपने भाई से सट गया—'डर गया बचवा!'

'हाँ, ज़रूर डर गया था।'

तेरेन्ती अपने छोटे भाई को एक गलियारे में ले गया। चिराग की धीमी रोशनी मे कोयले के काले स्तर को दिखलाकर उसने मीरोन् के हाथ में एक मूमा देकर कोयला खोदने की कला की बारहखड़ी आरंभ करवाई। पुराने खनक ने काले चमकीले कोयले के बारे में बड़े प्रेम मे कहा—'यह जीवनदाता है!'

मीरोन् बड़े ध्यान मे देख रहा था कि कैसे उसका भाई कोयले पर टूट रहा है।

३ सप्ताह बाद बड़े ने अपने छोटे भाई की तारीफ की—"तेरे पास खनकों जैसा मजबूत और सधा हाथ है मीरोन्! हम तुझे पक्का खनक बनायेंगे।"

यह बात सच्ची निकली किन्तु उसको अपनी निरक्षरता के लिए बड़ी चिन्ता रहने लगी। वह सोचता था, कि उसमें और भी बड़ी बातों की योग्यता है, लेकिन निरक्षरता का अन्धकार उसे खान, देश और संसार तक पहुँचने देने में बाधक है।

खुकानोफ् ने इस कठिनाई का कैसे सामना किया, यह भी उसके चरित्र-बल की दृढ़ता को प्रकट करता है। उसे अपने छोटे से पुत्र—जो उस समय दूसरे दर्जे में पढ़ रहा था—से अक्षर सीखने मे ज़रा भी लाज नहीं आई। यही नहीं, वह अपने लड़के के साथ स्कूल में जाने लगा। लड़का अगली जमात में बैठता था और बाप पीछे की जमात मे। अपनी स्वाभाविक गंभीरता और सूक्ष्म चिन्तन के साथ खुकानोफ् अध्यापक की बातों को सुनता था और दूसरे बच्चों के साथ अपने पाठ को दोहराता था। खुकानोफ् लड़कों के चले जाने पर भी पीछे रह जाता था। अध्यापक उससे कागज़ के अक्षर कटवाता था और उन्हें मेज पर बिखेर देता था। फिर मीरोन् उन अक्षरों को जोड़ कर शब्द और वाक्य बनाता था।

जिस काम में वह एक बार हाथ लगाता उसे बिना पूरा किये दम नहीं लेता था। इसी तरह उसने कोयला काटने की मशीन की बारीकियों

को भी सीखा और उसकी पढ़ाई को ख़तम कर शिक्षित-खनक का प्रमाण-पत्र पाया।

जितना ही अधिक वह पढ़ता उतनी ही अधिक अध्ययन की चाह उसमें बढ़ती गई।

द्युकानोफ़् के पड़ोस में कम्युनिस्ट पार्टी का मेंबर एक इंजीनियर पावेल् रसोख़िन् रहता था। दोनों में परिचय हो गया। और फिर अक्सर दोनों में गर्मागरम बहस छिड़ जाती। इंजीनियर ने कहा—"अब मीरोन् द्युकानोफ़् को पार्टी का मेंबर बनना चाहिए।" लेकिन मिरोन् कहता था—"अभी मुझमें वैसी योग्यता नहीं आई है।" इंजीनियर उत्तेजित होकर कहता —"प्रकृति पहले ही से ठोक पीट कर तैयार बोल्शेविक नहीं पैदा करती, उनके लिए सब से ज़्यादा सख़्त और अति विचित्र स्कूल है पार्टी। वह शिक्षा दीक्षा दे कर के उन्हें पक्का बनाती है।"

रसोख़िन् का कहना ठीक था; इसे मीरोन् ने भी पार्टी में दाख़िल होने के बाद अनुभव किया।

मीरोन् ने जो कुछ पहले सीखा और जो कुछ पार्टी ने ज्ञान के प्रति उत्साह सिखलाया, उन्हें वह अपने पास रखना पसन्द नहीं करता था। वह अपने साथ खान के भीतर काम करनेवाले मजदूरों और पास में रहनेवाले पड़ोसियों में भी वही उत्साह ज्ञान के लिए प्यास पैदा करने की कोशिश करता था। थोड़े ही दिनों में उसके प्रभाव में आकर उसका बड़ा भाई भी पार्टी का मेंबर हो गया।

खान के उदर में पहुँचकर वह खनकों को खोदने की मशीन के इस्तेमाल का ढंग बतलाता था। वहीं उसने नीली आँखों वाले एक लड़के को देख कर परख लिया कि इस पतले से कमकर में नई चीज़ पैदा करने की प्रतिभा है। लड़का खान में उसके साथ काम करता था और गाँव में उसके पड़ोस में रहता था। यही लड़का था अलेक्सेइ स्तख़ानोफ़्! बोल्शेविक् द्युकानोफ़् अलेक्सेइ के साथ खनकों की लालटेन ले पृथ्वी के उस अन्धकार-

पूर्ण उदर में उतरा और उस ऐतिहासिक रात (१९३५) को उस नौजवान के पथ को प्रकाशित कर दिया।

स्तखानोफ् कोयला काटने में किसी से पीछे नहीं था। वह खोदने की मशीन को भी अच्छी तरह चलाना जानता था। उस वक्त तक कोयले की खानों में कायदा यह था कि एक आदमी खुद ही खनता था और कोयले के निकाल देने पर जिसमें ऊपर के बोझे से ज़मीन बैठ न जाय, लकड़ी की थूनी लगाता था। इस थूनी के लगाने का काम भी वही आदमी करता था। स्तखानोफ़् ने सोचा—मशीन से खोदने में थोड़े समय में हम कोयला तो काफी निकाल लेते हैं, लेकिन थूनी लगाने में समय अधिक लगता है। उसने सोचा, अगर थूनी लगाने का काम दूसरे को दे दिया जाय तो खुदाई में जल्दी होगी। इस युक्ति से उस रात स्तखानोफ् कई गुना अधिक कोयला खोदने में सफल हुआ। अब स्तखानोफ् ने अपने गुरु से भी अधिक कोयला निकाल कर रख दिया।

३ दिन बाद बुकानोफ् ने स्तखानोफ् के रेकार्ड को तोड़ दिया। इस की खबर खान के दूसरे हिस्सों में और फिर खान के बाहर बड़ी तेज़ी से फैली और शीघ्र ही स्तखानोफ्-आन्दोलन सारे देश में जगल की आग की तरह फैल गया।

कुछ ही समय बाद नगर की कम्युनिस्ट पार्टी की कमेटी ने अपने वार्षिक अधिवेशन में बुकानोफ् को मंत्री बनाने का प्रस्ताव पेश किया। बुकानोफ् के लिए यह बड़ी भारी जिम्मेवारी की बात थी; लेकिन वह जिम्मेवारी से डरा नहीं। उसने कहा—"साथियो, क्या तुम समझते हो कि मैं इसे निबाह सकूँगा? क्या आप इतनी तेजी से मुझे ऊपर उठा कर जल्दी नहीं कर रहे हैं? नीचे के कोयले के गड्ढे से मुझे आप इतना ऊपर चढ़ा रहे हैं। तो भी यदि आप का मुझ पर विश्वास है तो पार्टी ने जो काम मुझे सौंपा है, उसे पूरा करने के लिए मैं कोई कसर नहीं उठा रखूँगा।"

मंत्री बनते ही उसने वही तत्परता, वही नया रास्ता निकालने के लिए

उद्योग और समाजवाद के लिए वही श्रद्धा और प्रेम दिखलाना शुरू किया। उसने ढिलमिल-यक़ीन कमज़ोर आदमियों को हटा कर योग्य प्रतिभाशाली जवानों को आगे बढ़ाना शुरू किया।

वह हर रोज़ खानों में पहुँचता था और पता लगाता था कि कौन टुकड़ी काम में पीछे पड़ रही है।

कोयला सेर्गो शहर का सर्वस्व है। चाहे नये स्कूल बनाना हो या नई नाट्यशाला खोलनी हो या ट्रामवे की लाइन निकालनी हो या स्वाध्याय-केन्द्र स्थापित करना हो, हर जगह खर्च का प्रबन्ध कोयले की उपज बढ़ा कर ही हो सकता है।

एक खान को १६०० टन कोयला रोज़ निकालना चाहिए था लेकिन निकलता था १३०० टन। बैठकों में प्रस्ताव पर प्रस्ताव लाये जाते थे लेकिन कोई लाभ नहीं। चुकानोफ़् ने प्रस्तावों को एक तरफ़ रखा, बैठक को मुल्तवी कर दिया और मैनेजर के साथ खान के भीतर गया। देखा मशीन से काम करने का सारा प्रबन्ध ठीक है; लेकिन फिर कौन सी रोक? चुकानोफ़् ने फिर खनक का कपड़ा पहना, हाथ में लालटेन ली और फिर चला गढ़े की ओर। पेट के बल तथा निहुर कर सारी खान उसने छान डाली। दूसरे दिन फिर वह उसी तरह गया। कहाँ क्या दोष है, इसे उसने नोट कर लिया। फिर उसने खनकों से बात करनी शुरू की। उन्होंने दिल खोल कर सारी बातें बतलाई। उसने उनको बढ़ावा देना नहीं चाहा बल्कि उनसे राय माँगी, कि कैसे खान के काम को सुचारु रूप से चलाया जाय? जो कुछ उसने देखा और जो कुछ सुना, उन सब को लेकर उसने अपनी एक योजना तैयार की और जब वह योजना कोयले की खानों के प्रबन्धकों और इंजीनियरों के सामने रखी गई तो चुकानोफ़् की निरीक्षण की सूक्ष्मता और वैज्ञानिक प्रक्रिया की शुद्धता को देख कर सब ने एक राय से उसे मान लिया। चन्द ही दिनों बाद खान अपने हिस्से के काम ही को पूरा न करने लगी, बल्कि नियम पूर्वक उससे भी अधिक कोयला देने लगी। चुका-

नोफ् दोबारा खान देखने गया, और खनकों को सफलता की कुंजी बतलाने लगा। फिर उसने उस खान के चतुर खनकों को आसपास की सुस्त खानों में बाँट दिया और इस प्रकार सेरगो नगर अपने काम में आदर्श बन गया; और स्ताख़ानोफ्-आन्दोलन के जन्म-स्थान बनने का उसे सौभाग्य प्राप्त हुआ।

थुकानोफ् को अब भी वैसी ही ज्ञान की ज़बर्दस्त प्यास लगी रहती है। जनता और पार्टी ने उस पर जो विश्वास प्रकट किया, उसे सम्मानित किया, उससे बल्कि उसकी प्यास और बढ़ गई। नई पुस्तकों के पढ़ने में उसे बड़ा आनंद आता है। खान या पार्टी कमेटी की बैठक में जब वह रात को घर लौटता है, तो अपने उसी लड़के—जिसके साथ उसने स्कूल जाना शुरू किया था और जो अब दसवीं श्रेणी में पढ़ता है—के साथ बैठ जाता है। वह पुश्किन् के मधुर पद्यों को उच्चस्वर से पढ़ने लगता है और उसका लडका अपने बाप के अशुद्ध उच्चारण को शुद्ध करता है। नगर की पार्टी का सेक्रेटरी बोल्शेविक् थुकानोफ् इसमें ज़रा भी शरम महसूस नहीं करता। मिथ्याभिमान और अहम्मन्यता उसके लिए कोसों दूर की चीज़े हैं।

** **

दर्या निकितिच्ना फदूचेंको

मोश्चेनोये गाँव तीन प्रान्तों—ओदेसा, कियेफ् और विनित्स्या तथा मोल्दाविया स्वतन्त्र-सोवियत्-रिपब्लिक की सीमा पर बसा हुआ है और इसीलिए सब की आँखें उसके ऊपर रहती हैं। उसे भी मानना चाहिए कि मोश्चेनोये के स्तालिन्-कोल्खोज़ के चारों हज़ार घर इस उत्तरदायित्व को समझते हैं। उनका हमेशा प्रयत्न रहता है कि उनका कोल्खोज़ आस-पास के प्रदेशों के लिए आदर्श बना रहे।

दर्या इसी कोल्खोज़ के एक ब्रिगेड की प्रसिद्ध [illegible] ही में ओदेसा देहाती-निर्वाचन-क्षेत्र से उसे पार्लियामेंट [illegible]

चुना गया है। वह पुराने दिन भी याद हैं जब कि मोश्चेनोये के चारों ओर की भूमि खनन्को नामक एक बड़े ज़मींदार की ज़मींदारी थी। खनन्को चतुर्थ दूमा (ज़ारशाही पार्लियामेंट) का सदस्य था। वह धन कुबेर था और साथ ही फुलवारी लगाने की उसे सनक सी थी। उसके पास २०५० देसीयातिन (१ देसी०=२॥ एकड़) ज़मीन थी। स्थानीय कुलकों के हाथ में भी सैकड़ों देसीयातिन् थे। और मोश्चेनोये के गरीब किसानों के पास सिर्फ चार सौ देसीयातिन अर्थात् आदमी पीछे १/४ देसीयातिन्।

गरीबी किसे कहते हैं, दर्या इसे बचपन ही से जानती थी। लेकिन वह उससे डरनेवाली न थी। उसके चारों ओर दरिद्रता ही का बसेरा था। उसका परिवार, उसके पड़ोसी, और प्रायः सभी ग्रामवासी दरिद्रता ही में जी रहे थे। ८ वर्ष की उम्र में बारहों मास भूखा रहनेवाले अपने बाप के घर को छोड़कर उसे पेट भरने के लिए नहीं जीने के लिए काम करने जाना पड़ा। घर में ८ बच्चे थे। दर्या चौथी थी। ३ बड़े लड़के धनी किसानों के यहाँ मज़दूरी करते थे। गाँव में दर्या के भाग की सराहना हो रही थी—"छोटकी दर्या बड़ी खुश-किस्मत है। खनन्को के महल में उसे फूल सजाने का काम मिला है।"

खुशकिस्मत! किस को मालूम था कि इस छोटी कन्या को कितनी बार आँसुओं से अपनी आँखों को लाल करना पड़ा। कितनी बार मालिक के काम में जरा सी भूल हो जाने पर उसे बुरी तरह से पीटा गया। किसी वक्त गुच्छा मालिक की ख्वाहिश के अनुसार नहीं बना था, या किसी समय माला ठीक से नहीं गुथी गई, कभी फूलों को ठीक समय पर नहीं सींचा गया; और बच्चे पर छड़ी पर छड़ी! दर्द से वह सिकुड़ जाती। सामने उसे रोने की भी आज्ञा न थी। अँधेरे में छिप कर अपने दिल के भीतर ही उसे सिसकना पड़ता था। आवाज़ हुई नहीं कि आँसुओं को पोंछ कर मुँह की सिकुड़नों को दूर कर मालकिन के सामने आना पड़ता था। उस वक्त कौन जानता था,

कि यही दर्या एक दिन संसार के सब से बड़े राज्य की पार्लियामेंट की सदस्या चुनी जायगी?

अपने ८ व्यक्तियों के परिवार के लिए दर्या के पिता निकिता स्लोबोद्यानुक् के पास २ देसीयातिन् खेत था, एक घोड़ा था। गर्मियों में एक गाय भी हो जाती थी, जिसे जाड़ों में चारे के अभाव में बेच दिया जाता था।

दर्या को अब भी एक घटना की धीमी सी याद बनी हुई है। एक हल और बुआई के पाँचे के लिए निकिता को अपने खेत में से आधा देसीयातिन् बेचने पर मजबूर होना पड़ा। पीछे एक अकाल वाले साल में उस हल और पाँचे को भी बेच देना पड़ा। कर्ज में घोड़ा भी लग गया। उसी वक्त दर्या को जमींदार स्तनुको के पास मजदूरी करने के लिए भेजना पड़ा। उस दिन से माँ-बाप का प्रेम किसे कहते हैं, इसे उसने नहीं जाना। किसी ने उसे बेटी नहीं कहा। किसी ने उसे बच्चा कर के नहीं देखा। वह 'मजूरिन' थी! 'सुस्त काहिल'! 'मूर्ख'! 'गोबर भरे दिमाग की' उसके मालिकों के पास उसे पुकारने के लिए दूसरे शब्द न थे। लम्बे वर्ष बीत गये।

तब से ३० वर्ष गुजर गये। दर्या अपने भूत के बहुत से भाग को भूल गई। जो याद भी है, वह भी बहुत धुँधला सा। लेकिन अभी हाल के कुछ वर्षों की कितनी ही स्मरणीय घटनाएँ उसे खूब याद हैं। अर्तेल् और पंचायती खेती का कैसे संगठन हुआ, कैसे उसमें उन्नति हुई, इस सबध की छोटी छोटी बातें भी उसे याद हैं। और ऐसा होने के लिए कारण है। दर्या फेदूचेंको के लिए, उसके सभी ग्रामवासी नर-नारियों के लिए कोल्खोज की कल्पना के साथ साथ एक नये जीवन का आरंभ हुआ।

स्तालिन्-कोल्खोज को स्थापित हुए अभी सात ही साल खतम हुए हैं, लेकिन इतने ही में गाँव की जो आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति हुई है, उसका पहले स्वप्न भी देखना मुश्किल था। १९३१ का मोश्चेनोये १९३३ में क्या से क्या हो गया, इसके लिए नीचे के नक्शे को देखिए—

	१६३१	१६३७
जुते खेत	४२३·५ हेक्तर	२,१०० हेक्तर
गेहूँ के खेत	१६६	७०७
चुकन्दर के खेत	७८	२६५

१ हेक्तर=२·४७ या प्रायः २॥ एकड़ का होता है।

उपज	१६३१	१६३७
गेहूँ की खेती	१ टन प्रति हेक्तर	२·१६ टन प्रति हेक्तर
चुकन्दर की फसल ..	१२·१ टन प्रति हेक्तर	२७·६ टन प्रति हेक्तर
प्रति किसान काम के दिन ..	११३	१६०
कोल्खोज़ की आय ..	३७,००० रूवल	६,५०,००० रूवल
प्रतिदिन का वेतन (नाज) ..	१·४ किलोग्राम	५·२ किलोग्राम
प्रतिदिन का वेतन (नक़द) ..	६५ कोपेक्	२ रूवल

इसके देखने से मालूम होगा कि १६३१ में जहाँ एक दिन का वेतन था प्रायः २ सेर नाज और चार आना पैसा; वहाँ १६३७ में हो गया प्रायः ७ सेर नाज और १४ आना पैसा।

पिछले सात वर्षों में स्तालिन्-कोल्खोज़ ने खेती में जबर्दस्त उन्नति की है। गेहूँ की उपज में ग्यारह गुना और चुकन्दर में १० गुना की तरक्की हुई है। इतना ही नहीं इस कोल्खोज़ की पशुशाला बड़ी जबर्दस्त है। एक विभाग में २७५ अच्छी नस्ल की गायें हैं। दूसरे विभाग में सफ़ेद अंग्रेज़ी सूअर २५० पोसे गये हैं। तीसरे में ऊँची नस्ल की मुर्गियों का एक बहुत भारी मुर्गीख़ाना है। पशुओं और मुर्ग़ियों से कोल्खोज़ की आमदनी बहुत बढ़ गई है। हर एक किसान को एक एक दो दो पशु और कितनी ही

बुनाई के दूसरे मौसम में दर्या खेत पर काम करनेवाले प्रथम ब्रिगेड में ली गई। एक साल बाद वह तूफ़ानी कमकर (अपने हिस्से से भी कई गुना काम करनेवाला व्यक्ति) बन गई। और उसको कई बार काम के लिए इनाम मिले। अपने अच्छे काम के लिए २० औरतों की टोली की वह नेता चुनी गई। जुताई और निराई में मर्द भी कितनी ही बार उसके साथ चलने की हिम्मत नहीं रखते थे। गाँव की औरतों में तो दर्या ने रूह फूँक दी थी। सभी उसीकी तरह अपने काम में तत्परता दिखलाती थीं। पहले जो औरतें और लड़कियाँ घर के काम का बहाना बना कर काम से जी चुराती थीं; वह भी खेतों में दौड़ने लगीं। कुछ ही दिनों में काम करने में औरतों ने अपने को मर्दों के बराबर सिद्ध कर दिया। १९३४ में दर्या की टोली ने प्रति बीघा १५० मन (प्रति हेक्तर १८ टन) चुकन्दर पैदा किया। उस समय तक ओदेसा में चुकन्दर की यह सब से बड़ी उपज थी और तारीफ़ यह कि उस साल सूखा सा पड़ गया था। इस उपज से दर्या की कीर्ति मोश्-चेनोये से बाहर फैलने लगी। बुग् नदी की सारी उपत्यका में उसका नाम फैल गया।

अब दर्या को कोल्खोज़ ने एक पूरे ब्रिगेड का नेता बनाया और उसके जिम्मे १२०० बीघा (४०० हेक्तर) खेत लगा दिया, ठीक उतना ही खेत जितने से कि जमींदारी राज्य के समय सारे गाँव के किसान जीते थे।

सातवीं अखिल सोवियत् कांग्रेस में दर्या ओदेसा प्रान्त की प्रतिनिधि चुनी गई और यह पहला समय था, जब कि वह मास्को गई।

२८ जनवरी १९३५ की वह स्मरणीय संध्या थी जब कि वह मानो स्वप्न में हजारों विद्युत्-प्रदीपों से प्रकाशित कोलाहल पूर्ण राजधानी की सड़क पर चल रही थी। वह भी स्वप्न ही सा था जब कि वह क्रेमलिन् में प्रविष्ट हुई। विशाल चमकते हुए बिजली के फानूसों के प्रकाश में क्रेमलिन् का प्रासाद उसे बचपन की चिरविस्मृत किसी कहानी का स्वर्ग सा मालूम होता था। यहाँ क्रेमलिन् की देहली पर एक बार उसके सामने अपना सारा

भूत जीवन झलक उठा। कांग्रेस में दर्या म०स०म०र० की केन्द्रीय प्रबंध-कारिणी समिति की सदस्या चुनी गई। कोल्खोजी तूफानी कमकरों की जो दूसरी कांग्रेस हुई थी, उसमें भी वह ओदेसा प्रान्त की प्रतिनिधि चुनी गई थी और स्तालिन् तथा मंत्रिमंडल के प्रमुख व्यक्तियों के साथ उसने कांग्रेस के संचालन का काम किया। दर्या कांग्रेस के उस पहले दिन को कभी नहीं भूल सकती, जब कि स्तालिन्, वोरोशिलोफ् और मोलोतोफ् ने उसका बड़ा जोरदार स्वागत किया। हर एक ने बड़े जोश के साथ उससे हाथ मिलाया। उस दिन दर्या को अपना आँसू रोकना मुश्किल हो गया था और स्तालिन् के हँसमुख चेहरे से निकले प्रश्न के उत्तर में उसने लड़खड़ाती जबान से कहा—"आप जानते हैं, मैंने अपनी सारी जवानी जारशाही के नीचे बिताई। . . . . . एक खेतिहर मजदूर, एक पददलित किसान औरत. . . . . . आपका कृपापूर्ण व्यवहार मेरे हृदय के अन्तस्तल तक इतना पहुँच गया है कि मैं कुछ नहीं कह सकती।"

स्तालिन् ने उसे शान्त किया और अपनी बगल की कुर्सी पर बैठाया।

१९३५ में दर्या के ब्रिगेड ने प्रति हेक्टर २·७ टन गेहूँ पैदा किया, बल्कि १० हेक्टर लेने पर औसत ३·७ टन तक पहुँच गई थी। इसके अतिरिक्त चुकन्दर प्रति हेक्टर २१ ८ टन। इस सफलता के लिए उसे लेनिन्-पदक (सोवियत् का सब से ऊँचा पुरस्कार) मिला। १९३६ में उसने प्रति हेक्टर २·८ टन गेहूँ और २३·८ टन चुकन्दर पैदा किये। १९३७ में उसने और उपज बढ़ाई, और उस साल प्रति हेक्टर २ ५ टन गेहूँ तथा ३० टन चुकन्दर।

दर्या का गाँव ३ प्रान्तों और १ प्रजातंत्र के बीच में पड़ता है, यह हम कह चुके हैं। दर्या को जिन तरीकों से ये सफलताएँ मिली थीं, उनके प्रचार का बहुत अच्छा मौका था। वह अपने ब्रिगेड के आदमियों को लेकर आस-पास के पिछड़े हुए गाँवों में चली जाती थी और उन्हें काम का ढंग सिखलाती थी। उसने अपने तजर्बे से खेती के जो गुर प्राप्त किये थे, उन्हें वह दूसरों

तक पहुँचाना अपना कर्तव्य समझती थी। यही उसके काम का प्रभाव था, जिसके कारण १२ दिसंबर १६३७ को लोगों ने उसे अपना प्रतिनिधि बना कर सोवियत् पार्लियामेंट (संघ सोवियत्) में भेजा।

आज दर्या निकितिच्ना, क्रेम्लिन् में सोवियत् संसार के भाग्य-विधाताओं की पंक्ति में बैठती है। लेकिन अब उसमें वह हिचकिचाहट नहीं है और न क्रेमलिन् के विशाल प्रासाद उसपर वैसा रोब डाल सकते हैं जैसा कि उन्होंने ३ साल पहले, पहले पहल आने के वक़्त डाला था।

***   ***

कोर्नेइचुक्—

उक्रइन् के तरुण नाट्यकार अलेखांद्र कोर्नेइचुक के नाटकों को सोवियत् के करोड़ों आदमियों ने देखा है। कितने ही सालों से उसके दो नाटक—'बेड़े का ध्वंस'—'प्लेटोन् क्रेचिट्' वर्षों से सोवियत् जनता के प्रीति-भाजन बने हैं। उसकी इसी सफलता के लिए ज्वेनीगराद् निर्वाचन-क्षेत्र (कियेफ़् प्रान्त) ने उसे पार्लियामेंट में अपनी तरफ़ से भेजा है।

कोर्नेइचुक का बाल्य महायुद्ध और गृहयुद्ध के समय में बीता। उक्रइन् प्रजातंत्र के एक छोटे से स्टेशन क्रिस्तिनोफ़्का के एक रेलवे मजदूर के घर उसका जन्म हुआ था।

१६१८ में जर्मनों ने उक्रइन् पर क़ब्ज़ा किया और उनके अत्याचार का बालक कोर्नेइचुक के दिल पर गहरा प्रभाव पड़ा। जर्मन देश को लूट रहे थे। अनाज, ढोर, फल, मूल जो कुछ भी सामने आया सब छीन कर ट्रेन में लाद लाद जर्मनी भेजा जा रहा था। लोग अन्न-बिना भूखों मर रहे थे। चौदह वर्ष के अलेखांद्र के दिल में इन विदेशी लुटेरों के प्रति बड़ी घृणा पैदा हो गई। अलेखांद्र को एक घटना अब भी याद है। उसका कुत्ता पल्मा अजनबी को देख कर भूंक पड़ा था। इस पर जर्मन सिपाहियों ने कुत्ते को मार दिया।

यह कुत्ते को तड़पता देख रहा था और अपने आँसुओं को भी नहीं रोक सकता था।

वह स्कूल के तेज लड़कों में था; और हर तरह की किताबों के पढ़ने का बड़ा शौकीन था। गर्मी की छुट्टियों में वह रेलवे में गाड़ियों की मरम्मत का काम करता था। उसी समय वह तरुण-साम्यवादी-संघ का सदस्य था और उसके संगठन में उसने बड़ी योग्यता का परिचय दिया। १९२३ में संघ ने उसे पढ़ने के लिए कियेफ् भेजा। उसने खूब दिल लगा कर अध्ययन किया। उसे उस समय लिखने का शौक हुआ। उसने इसके लिए बहुत समय दिया। १९२५ में लेनिन् की बर्षी के नजदीक आते समय उस ने उस महान् नेता की मृत्यु के बारे में एक कहानी लिखी। यह उसकी पहली कहानी थी। उसने उसे धड़कते दिल से एक पत्र में भेज दिया। कई दिन उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा करता रहा। आखिर २१ जनवरी को उसके सहपाठियों ने सूचित किया कि कोर्नेइचुक नामक किसी व्यक्ति ने लेनिन् के जीवन पर एक बड़ी दिलचस्प कहानी लिखी है। उनको गुमान भी नहीं हो सकता था कि उस कहानी का लेखक यही उनका सहपाठी है। कुछ महीनों पीछे कियेफ् के कमकर-तरुण-थियेटर में एक अज्ञात नाट्यकार के 'देहली पर' नामक नाटक का अभिनय हुआ। दर्शक-मंडली ने पहली ही रात उसकी बड़ी दाद दी।

१९३० में उक्रइन् के तरुण-साम्यवादी-संघ ने कोर्नेइचुक को ओदेसा के सिनेमा के कारखाने में काम करने को भेजा। यहीं उसने अपना पहला ऐतिहासिक नाटक 'बेड़े का ध्वंस' लिखा। अब उसकी प्रसिद्धि सारे देश में हो गई। यह नाटक गृह-युद्ध की एक घटना को ले कर है। उस समय क्रान्तिकारी नौ-सैनिकों ने दुश्मन के हाथ न पड़ने देने के लिए जंगी बेड़े को अपने हाथों से गर्क कर दिया। कोर्नेइचुक ने इस घटना की जानकारी के लिए बहुत समय लगाया। वह कितने ही उन लाल नौ-सैनिकों से मिला, जिन्होंने उस ऐतिहासिक घटना में भाग लिया था। नाटक का खाका तैयार हो गया था,

लेकिन अभी उपसंहार और कुछ और बातें नहीं मिल रही थीं। इत्तिफाक से एक दिन एक बूढ़े मल्लाह ने कोर्नेइचुक् से कहा—नाव डुबाने से पहले कैसे नाविकों ने जहाज़ को खूब धो धा कर इसलिए साफ़ किया कि जिसमें समुद्र देव को एक स्वच्छ जहाज़ की भेंट चढ़ायें। इस बात ने कोर्नेइचुक् को अन्तः प्रेरणा दी और वह समझ सका कि वे नाविक क्रान्ति-यज्ञ में इस समिधा को एक बड़े भाव के साथ डाल रहे थे। इस नाटक को रंग-मंच पर बड़ी सफलता मिली; और लेखक को नाट्यकार प्रतियोगिता में दूसरे नंबर का पारितोषिक मिला। कोर्नेइचुक का दूसरा नाटक "प्लेटोन् क्रेचिट्" आधुनिक सोवियत् जीवन से संबंध रखता है और सोवियत् जनता को बहुत प्रिय है। तीसरे नाट्य-महोत्सव (१९३५) में खेले गये नाटकों में से यह एक था। १९३६ में पार्टी और गवर्नमेंट के नेताओं ने उक्रइन् के नाट्यकारों का अभिनन्दन किया था। उसमें कोर्नेइचुक भी मौजूद था। कोर्नेइचुक लिखता है—"मैं सभापति-मंच की ओर बढ़ा। मुझे अपना परिचय देने का मौक़ा दिये बिना ही कगानोविच् ने मुझे साथी स्तालिन् के सामने पेश किया। हमने हाथ मिलाया और तवारिश् स्तालिन् ने अपनी स्वाभाविक मुस्कुराहट के साथ मुझसे कहा—'मैंने तुम्हारे बारे में सुना है।' मेरे दिल पर इसका इतना असर हुआ कि मैं उसका कोई समुचित उत्तर न दे सका।

कोर्नेइचुक् का सब से नया नाटक है 'सत्य'। यह महान् साम्यवादी क्रान्ति की घटनाओं से संबंध रखता है। लेखक ने लिखा है—"अपने नये नाटक में मैं दिखलाना चाहता हूँ कि कैसे मेरी जन्मभूमि के कमकरों ने लेनिन्-स्तालिन् की पार्टी के नेतृत्व में सत्य को पाया; और श्रम-जीवियों के अधिनायकत्व का निर्माण किया।"

***　　　***

पार्लियामेंट की एक सदस्या लिखती हैं—

"स्लोवोत्स्काया (भूतपूर्व व्यत्का और वर्तमान कीरोफ् प्रान्त) के छोटे से गाँव में मैं पैदा हुई थी। सोवियत् में कितनी जल्दी नगरों, ग्रामों की कायापलट हो रही है, इसका उदाहरण एक मेरा गाँव भी है। ७ वर्ष पहले मैं एक छोटी सी वर्कशाप में समूर तैयार करने के काम में दाखिल हुई। वहाँ २०० कमकर थे। आजकल वहाँ पर स०स०स०र० की सब से बड़ी समूर तैयार करने वाली फैक्टरी है। मकानों की ३ बड़ी बड़ी कतारें चली गई हैं। इस वक्त वहाँ ६००० कमकर काम करते हैं।

क्रुप्स्काया (पृ० १३४)

पहले स्लोवोत्स्काया के नजदीक छोटी छोटी पन्द्रह चमड़ा सिझाने की कोठियाँ थी। अब सब को एक कर के वहाँ एक बहुत जबर्दस्त चमड़े की फैक्टरी तैयार हुई है। उस में ४००० कमकर काम करते हैं। पास वाली शराब की भट्ठी को बढ़ाकर बड़े कारखाने का रूप दिया जा रहा है। १० वर्ष पहले गाँव की आबादी १२,००० थी और अब २५,००० है। अब वह छोटा सा शहर है। हमारे शहर के कमकरों की आर्थिक अवस्था प्रत्येक साल उन्नत होती जा रही है। इसी साल हमारे कारखाने में एक सांस्कृति-

भवन वनाया गया है। इसके हाल में ७०० आदमी बैठ सकते हैं। और उसके साथ में ८ विश्राम और अध्ययन के कमरे, ३ किन्डरगार्टन और बच्चे-खाने के कमरे, (जिनमें ४०० बच्चों का इंतज़ाम है) एक वृहद् क्रीड़ा-क्षेत्र, एक नाव खेने की जगह, बनी हैं। हमारे कमकरों में बहुत ही कम अशिक्षित या अर्द्धशिक्षित हैं।

हमारे कारखानों में काम करनेवाले सैकड़ों व्यक्ति—जो आर्थिक सुख और अधिकार से वंचित रखे गये थे—अब बड़े बड़े पदों पर पहुँच गये हैं। सोवियत्-सरकार की कृपा से उनको सीखने का ऐसा अवसर मिला कि उन की प्रसिद्धि उनके नगर और जिले से पार हो कर दूर तक फैल गई है।

मेरे माँ-बाप तभी मर गये, जब कि मैं ८ वर्ष की थी। मेरे घर-द्वार कुछ नहीं था। एक कुलक के लड़कों के खेलाने का काम मुझको मिला। वह जीवन बिलकुल सूखा और घोर अपमान का था। भूखी चीथड़ोंवाली मुझ जैसी छोटी सी अनाथ लड़की के लिए और क्या आशा हो सकती थी! लेकिन सोवियत्-शासन ने मुझे उस भयंकर दरिद्रता और परतंत्रता से मुक्त किया। मैंने फ़ैक्टरी में काम करना शुरू किया और मेरा जीवन कुछ से कुछ बन गया। काम करते वक़्त मैं रात की पाठशालाओं में अपने काम के विषय में विशेष ज्ञान सीखती रही। अब भी मैं पढ़ रही हूँ। सोवियत्-शासन और जनता ने जो मेरा उपकार किया है, उसने मुझे सिखलाया कि मैं अपने देश के ऋण को सामग्री की उपज बढ़ा कर दूर करूँ। मैं एक तूफानी कमकर थी। फिर १६३२ में एक ब्रिगेड की नायक बनाई गई। हलके-उद्योग-विभाग के मंत्री ने सब से अच्छे काम करनेवाले ब्रिगेड को एक झंडा देना तय किया था; और हमारे ब्रिगेड ने इतना अच्छा काम किया कि वह झंडा हमको मिला। अपने काम में हमने श्रम बचाने वाले कई तरीके निकाले और अपने माल को बढ़िया बनाया। समूर की सिलाई में जो छाँट होती है, उसमें भी हमने कमी कर दी। मैंने काटनेवाले दर्जी को नया तरीका बतलाया जिससे कि सिलाई का समय आधा हो

गया। अपनी फैक्टरी में पहले-पहल मैने स्तखानोफ्-आन्दोलन का सूत्रपात किया। हम बराबर अपने प्रोग्राम से दुगुना माल तैयार कर रहे है।

वायु-सैनिका स्मगिना (डिपुटी)

पिछले साल मैं अपने कारखाने की सब से बडी वर्क-शाप—दर्जीखाना, जिसमें कि समूर काटा, जोडा और सिया जाता है—की सहायक मैनेजर

बनाई गई; और उसीके बाद मैंने सुना कि मेरे ज़िले के कमकर मुझे पार्लियामेंट का उम्मेदवार खड़ा कर रहे हैं।

अपने बचपन के वर्षों में मुझे स्वप्न में भी ख़याल नहीं आया था कि मैं कभी राजधानी देखूँगी; और आज मैं यहाँ मास्को में हूँ। और सो भी स०स०स०र० की पार्लियामेंट के मेम्बर के तौर पर। यहाँ सरकारी मंत्रियों, महान् क्रान्तिकारियों और वैज्ञानिकों के साथ बैठ कर मुझे भी राजनैतिक समस्याओं के निर्णय करने का अधिकार होगा।

पार्लियामेंट के सदस्य के तौर पर मैंने अपने सामने काम रखा है कि उद्योग-धंधे की जिस समूर शाखा को भली प्रकार जानती हूँ, मैं उसकी उन्नति के लिए पूरा जोर लगाऊँ। यह बड़ा ही आवश्यक काम है। पहले जब कमकरों की आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी, तो समूर (कीमती बालवाले चमड़े) के कोट या पोशाक के ख़रीदने के लिए पैसा किसके पास था? लेकिन अब हालत दूसरी हो गई है। अच्छे समूर की पोशाक की बड़ी माँग है। हमें हर कीमत के भिन्न भिन्न समूरों को कमकरों के लिए तैयार करना है। समूर के उद्योग के संबंध में ऐसी वैज्ञानिक खोज के लिए मैं मनोयोग दे रही हूँ कि जिसमें चमड़े की सिझाई और रँगाई बेहतर हो। यद्यपि अभी ही हमने इस क्षेत्र में विदेशी कम्पनियों को मात करना शुरू किया है, लेकिन मैं चाहती हूँ कि इस सम्बन्ध की और समस्याएँ हल की जायँ, जिसमें समूर का उद्योग बड़े ज़ोर से बढ़े।

*** ***

वोल्कोवा एक स्ताख़ानोवी कमकर स्त्री जो चेर्नेरिचेन्स्क रसायन फ़ैक्टरी में काम करती है, और संघ-सोवियत् की सदस्या चुनी गई है, अपने वोटरों को धन्यवाद देते हुए कहती है—

"सिर्फ उसी देश में—जहाँ पर कि शासन की बागडोर किसानों और मज़दूरों के हाथ में है, जहाँ पर कि साम्यवादी समाज का निर्माण हुआ है,

जहाँ पर कि सभी समाजवादी निर्माण का नेतृत्व बोल्शेविक पार्टी और उसके महान् नेता और शिक्षक तवारिश् स्तालिन् के हाथ में है—वहीं यह संभव है, कि एक स्त्री जो हाल तक घर की नौकरानी थी, वह राष्ट्र की सर्वोच्च पार्लियामेंट की सदस्या चुनी जाय।

मैं खूब अनुभव करती हूँ कि निर्वाचकों ने मेरे कंधे पर कितना भारी बोझ रख दिया है। लेकिन मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि मैं अपनी सारी शक्ति, सारा जीवन, सोवियत्-जनता और लेनिन्-स्तालिन् की पार्टी को दूँगी।"

***　　　***

एक तातार (पहले मुसल्मान) अध्यापिका मर्यम् तुमालोवा ने अपने उद्‌गार इस प्रकार प्रकट किये—

"मैंने अपनी जन्मभूमि के श्रेष्ठ पुत्र और कन्या को वोट दिया। मैंने वोट दिया कम्युनिस्ट पार्टी के लिए, विधान के महान् निर्माता तवारिश् स्तालिन् के लिए। दूसरा मैं कर ही कैसे सकती थी! एक निरक्षर कमकर की लड़की मेरी जैसी तातार-स्त्री को जिस सोवियत्-शासन ने नागरिकता का महान् अधिकार दिया, जिसने मुझे उच्च-शिक्षा पाने का अवसर दिया। मैं अध्यापिका हूँ। स्वाधीनमक् गाँव के हाई-स्कूल में अपनी तातार भाषा में मैं कैमेस्ट्री और बायालोजी पढ़ाती हूँ। मेरे सभी शिष्य साम्यवाद के ध्येय के लिए सजग योद्धा होंगे।"

***　　　***

तात्याना विकुलिना कोल्खोजी किसान स्त्री पार्लियामेंट की सदस्या है। अपने जीवन के बारे में वह कहती है—

"मैं एक खेतिहर-मजूरिन थी और उसपर भी पिछड़ी हुई जाति करेलिया की। मुझे कहाँ यह गुमान हो सकता था, कि स्वतंत्र-करेली जनता सभ जातिक-सोवियत् (पार्लियामेंट) की सदस्या चुनेगी। मुझे कहाँ यह

कल्पना हो सकती थी, कि एक गरीब किसान—सो भी जारशाही के शासित एक उपनिवेश में—जैसा कि क्रान्ति के पहले करेलिया थी—शिक्षित और सुख-सम्पन्न बनेगी। और मेरे लड़के शिक्षा पायेंगे। यह कहाँ मैं सोच सकती थी, कि नागरिकता के अधिकार से वंचित एक स्त्री—जिसको गाँव के पंच चुनने में भी वोट का अख्तियार नहीं था—पार्लियामेंट की मेम्बर चुनी जायगी"!

***   ***

मरिया देम्चेंको ने चुकन्दर की खेती में स्ताख़ानोफ़्-आन्दोलन आरंभ किया था। यह सब से पहली किसान थी जिसने एक एकड़ में २० टन (१ बीघे में २८६ मन) चुकन्दर पैदा किया था। उसका अनुकरण कर के कितने ब्रिगेड नेताओं ने उसके ढंग पर खेती कर के प्रति एकड़, ४० से ६० टन तक (फ़ी बीघा १००० मन से अधिक) चुकन्दर पैदा किया। मरिया के साथ ही सोवियत् जनता ने उसके बतलाए रास्ते पर चलने वाले तात्याना, दादिकिना, **तेज़िक्वयेवा** इत्यादि को पार्लियामेंट का मेम्बर चुना।

दोरिमा नम्मसरयवा एक गरीब अपढ़ **बुर्यत्** मंगोल लड़की थी। वह कोल्ख़ोज़ में शामिल हुई। वहीं उसने लिखना-पढ़ना सीखा। अपने काम में उसने बड़ी तत्परता और ज़ोर दिखलाया। इसपर पशुपालन-कला के विशेप अध्ययन के लिए उसे भेज दिया गया। पिछले चार वर्षों से वह एक पशुशाला और दुग्धशाला (डेरी-फ़ार्म) में मैनेजर है; और उसके प्रबन्ध और उन्नति में उसने कमाल किया है। इसके लिए उसे सरकारी पदक मिला है। आज बुर्यत् जनता की ओर से वह पार्लियामेंट की मेंबर है।

***   ***

उज़्बेकस्तान उजबेक लोगों का प्रजातंत्र है। हिन्दुस्तान में तो उज़्बेक कहने ही से लोगों को हँसी आती है; लेकिन आज उज़्बेकस्तान

प्रजातन्त्र शिक्षा और धन सभी में बहुत आगे बढ़ा हुआ है। इस्लाम ने जो पर्दा और धार्मिक कट्टरता उनमें पैदा की थी, उसका अब नाम तक नहीं है। उज्बेक जनता ने सोवियत् पार्लियामेंट में ४५ सदस्य (संघ-सोवियत् में २० और जातिक-सोवियत् में २५) भेजे हैं। कगानोविच् (रेलवे मंत्री) और यूसुफोव जैसे प्रसिद्ध व्यक्तियों के अतिरिक्त उनमें उस्मान बरकयेफ्, अलनूजर खुदीयेफ्, शरीफ़ बीबी समरयेफ्, पाशा महमूदी गुलजार, अरतीकोवा—जैसे कोल्खोज के स्त्री पुरुष हैं। भेड़िहर यूसुफ समानोफ्, मिस्त्री एम्सचोफ्, अध्यापिका अहमनिसा मीर अहमदोवा भी उज्बेकस्तान से चुने गये पार्लियामेंट के सदस्य हैं।

कोसिओर के साथ उज्बेक् डिपुटी स्त्रियाँ

अहमेजान् इब्राहीमोफ् उज्बेकस्तान से चुने गये पार्लियामेंट के सदस्य ने मास्को में एक प्रेस-प्रतिनिधि को अपना वक्तव्य दिया—

महासोवियत् के उद्घाटनाधिवेशन की पहली शाम को देर तक मुझे

नींद ही नहीं आई। मैं वार वार उठकर होटल के जँगले से क्रेम्लिन् के लाल (पद्मराग) जटित तारों को देखता रहा। क्रेम्लिन् राजधानी का हृदय है और ये तारे उसी हृदय की प्रतिमा हैं। हमारे देश के सभी कमकरों का ध्यान क्रेम्लिन् की ओर है।

पहले अधिवेशन के लिए जब मैं मास्को आ रहा था, तो मेरी नज़र के सामने अपना पुराना जीवन फिरने लगा। मुझे याद हुआ, कैसे मैं लाल-सेना का एक सिपाही था और कैसे मैं सोवियत्-शासन के लिए दुश्मनों—अमीरों और मुल्लाओं से लड़ा। लेनिन् और पार्टी के नाम मेरे होंठों पर थे। जब मैं दुश्मन से मुकावला करने युद्ध-क्षेत्र में गया, पार्टी और जनता के साथ मैंने साम्यवाद का निर्माण किया। कितना मुझे आनन्द आता है, जब मैं देखता हूँ कि हमारा जीवन इतना सुखमय हो गया है।

सदस्य हाल में पहुँच गये हैं। प्रतीक्षा के मिनट बड़े आहिस्ते आहिस्ते गुज़र रहे हैं। लोग तवारिश् स्तालिन को देखने के लिए उतावले हो रहे हैं। वह अपने निकटतम सहयोगियों के साथ भीतर आते हैं। सदस्य खड़े होते हैं। ताली वजाते हैं और हुरा का नारा लगाते हैं। मेरे मन में एक अनिर्वचनीय आनन्द उत्पन्न होता है। सारी दर्शक-मंडली आनन्दविभोर है।

जनता की मित्रता एक ज़बर्दस्त ताक़त है। सदस्यों—सोवियत् जनता के प्रतिनिधियों—ने नेता का अभिनन्दन कर के दिखला दिया कि जनता की मित्रता अचल है। जो कोई भी इस मित्रता के ख़िलाफ़ जाने की कोशिश करेगा; वह उस बड़ी चट्टान से टकरा कर रेज़ा रेज़ा होकर गिर जायगा। मैंने पार्टी के झंडे के लिए जिया और काम किया और पार्टी के लिए, जनता के लिए, मैं जीता रहूँगा।

*** ***

आशुरबाइजान् से निर्वाचित सदस्या चिम्नाज् अस्लानोवा के उद्गार हैं—

"जिस दिन की प्रतीक्षा कर रही थी, आखिर वह दिन आ गया। स०स०स०र० की महासोवियत् का प्रथम अधिवेशन आरंभ हुआ। पूरे एक महीने हुए जब मैंने कि मैंने सुना, कि मैं जातित-सोवियत् की डिप्टी चुनी गई हूँ, तभी से मेरा मन मास्को में लगा था। मैं सोचती थी, कैसे मुझे काम करना चाहिए, कि जिन हजारों व्यक्तियों ने मुझे वोट दिया, वह अपने डिप्टी के काम से सन्तुष्ट हों। सिवाय इसके मैं और क्या कर सकती हूँ कि सिद्ध करूँ कि जनता के सुख और सन्तोष से बढ़ कर मेरे लिए कोई स्वार्थ नहीं। सोच रही थी—वहाँ मास्को में जाकर जब क्रेमलिन् में हम सभी डिप्टी सारे देश के सम्मुख, स्तालिन् के सम्मुख एकत्रित होंगे तो मैं क्या कहूँगी।

बुल्गानिन् (डिपुटी)

१२ जनवरी की शाम आई। मैं राजधानी में हूँ। मैं क्रेमलिन् गई। मास्को की सड़कें प्रसन्न और शब्दायमान हैं। लाल-मैदान अद्भुत है। क्रेमलिन् के तारे बड़ी खूबसूरती से चमकते हैं।

मेरे निर्वाचकों की तसवीर दिमाग के सामने आई। वह है तेल के कमकर, कपड़े के कमकर, अध्यापक, विद्यार्थी, लाल-सेना के सिपाही और बाकू-गैरिसन (पलटन) के अफसर। मुझे उन सभाओं की याद आई जिनमें उन्होंने मुझ से कहा था—"चिमनाज, तू 'मातृ-भूमि की सच्ची बेटी

बनना। लेनिन् और स्तालिन् से सीखना कि कैसे जनता का प्रेम किया जाता है। बोल्शेविक-पथ से कभी नहीं हटना' मैंने अपने निर्वाचकों को जवाब दिया—'मैं ईमानदारी और विश्वास के साथ बेहतर और कठिनतर काम करूँगी। मेरा जीवन, मेरा खून, जनता का है। और अब यहाँ मैं क्रेम्लिन् में हूँ।' मैं कहती मालूम होती हूँ—भाइयो, बहनो, हम एक हैं। हम स्वतंत्र हैं। हम समान अधिकार रखते हैं। **उज्बेक, कल्मुक् आज़ुर-बाइजान्, याक़ूत्**, महान् रूसी जाति—जिसने स०स०स०र० की सभी जातियों को साम्यवाद के पथ पर अग्रसर किया—के सगे भाई हैं। हम यहाँ क्यों हैं? क्योंकि लेनिन् और स्तालिन ने सोवियत्-संघ की सभी जातियों को मिलाकर एक परिवार बना दिया।

शोलोखोफ़् (डिपुटी) (पृ० २३६)

हम अधिवेशन के उद्घाटन की प्रतीक्षा कर रहे थे। एकाएक मैंने देखा, कि तवारिश् स्तालिन् अपने बक्स में प्रवेश कर रहे हैं। मेरा हृदय उछलने लगा। और जो ही शब्द पहले पहल मेरे दिमाग़ में आया, उसीको मैं चिल्ला उठी—'अभिनन्दन है तवारिश् स्तालिन्, तुम्हारा! मुक्त हुई स्त्रियों की तरफ़ से।'

यह मेरे ही शब्द नहीं हैं, बल्कि सोवियत्-संघ की सभी जातियों की स्त्रियों का यह जय-घोष है। जातिक-सोवियत् (पार्लियामेंट का एक भवन) ने अध्यक्ष का निर्वाचन किया। सब ने एक राय से न० म० श्वेर्निक् के लिए वोट दिया। वह अध्यक्ष के आसन पर आसीन होते हैं; और

यक्ष चुनने की सूचना देते हैं। मै देखती हूँ हमारे आजुरबाइजान् के
नधियों में से एक तैमूर याकूबोफ् उठते हैं। वह कहते हैं—"मै
दिम् विमनाग् अस्लानोवा का नाम जातिक-सोवियत् के उपाध्यक्ष के
पेश करता हूँ।"

'मै! ऐसा सम्मान!'

याकूबोफ् ने मेरी—आजुरबाइजान् की एक अध्यापिका की—अति-
योक्तिपूर्ण तारीफ करनी शुरू की। वह मेरे हर्ष और संकोच दोनों का
पय थी। डिपुटियों ने मुझे चुना। हमारे वेलोरुसी मायी अ०म०
वित्स्की एक मन से उपाध्यक्ष चुने गये। क्या मुझे अपने आनन्द के
विषय में कुछ कहने की आवश्यकता है? मै एक ही बात कहूँगी। मै
अन्तिम साँस तक कमकरो के मुख के लिए, जन्म-भूमि के लिए, पार्टी के
लिए, लेनिन्-स्तालिन् के ध्येय के लिए लड़ूँगी।"

***

लेवोनोवा मास्को की अध्यापिका सोवियत् पार्लियामेंट की एक सदस्या
ने अपने भावों को इन शब्दो मे प्रकट किया—

"स०म०स०र० के महासोवियत् के प्रथम अधिवेशन के उद्घाटन के
दिन जब मै क्रेमलिन् की दीवारों की ओर जा रही थी, तो एक असाधारण
हर्षोल्लास मेरे हृदय मे उठ रहा था।

मै अधिवेशन के उद्घाटन के समय से करीब एक घंटा पहले
स्पास्की दरवाजे पर पहुँची। तो भी सदस्य और विशेष तौर से आमन्त्रित
अतिथि दरवाजे में प्रवेश कर रहे थे। दरवाजों के सामने का आँगन लोगो
से भरा हुआ था। वह सदस्यो का अभिनन्दन कर रहे थे। हँसते हुए
बच्चे दौड़कर मेरे पास पहुँचे—'हो चाची लेवोनोवा!'

स्पास्की दरवाजो को छोड़कर मैं आगे बढ़ी। क्रेमलिन् की गभीर
शान्ति, अधिवेशन की प्रथम बैठक के लिए जल्दी करते सदस्यो के कदम की

आवाज़ से भंग हो रही थी। संगमर्मर का वड़ा हाल खचाखच भरा हुआ था। मेरी आँखें अनन्त कतारों में चक्कर काट रही थीं। यहाँ हैं राज-काज में, मेरे प्रिय साथी ताजिकों और तुर्कमानों की चमकीली पोशाक, काकेशस् की नाना जातियों से आये सदस्यों के काले कश्मीरे के जामे, उक्रइन् और बेलोरूसिया के कोल्ख़ोज़ी किसानों की भड़कीली पोशाक.......।

सब की आँखें घड़ी की तरफ़ हैं। सुई ४ के अंक के समीप और समीप खिसक रही है। इसी समय एक तूफ़ानी जन-रव टूट पड़ा और नाना भाषाओं में अभिनन्दन के नारे होने लगे। तवारिश् स्तालिन् पार्टी और गवर्नमेंट के दूसरे नेताओं के साथ वक्सों में प्रविष्ट हुए। अपार आनन्द से मेरा मन प्रफुल्लित हो गया। मैं तवारिश् स्तालिन् की ओर टकटकी लगाये देखती रही। मैंने दिल से अनुभव किया, इस प्रतिभाशाली पुरुष के स्वभाव—महानता, और सादगी का।

एक वार फिर मेरा हृदय भावावेश में डूब गया, जव मैंने अकदमिक वाच् की आवाज़ को यंत्र से आते सुना। संघ-सोवियत् का वह वृद्धतम सदस्य अधिवेशन का उद्घाटन कर रहा था। हमारे देश—साम्यवाद के देश—की यह विशेषता है, एक वृद्ध वैज्ञानिक राष्ट्र के महान् पार्लियामेंट के ऐतिहासिक अधिवेशन का उद्घाटन कर रहा है। और एक वार फिर वड़े ज़ोर के साथ मेरे मन में अपनी पितृभूमि—जहाँ पार्टी और जनता विज्ञान की उन्नति के लिए सव कुछ कर रहे हैं, और जहाँ विज्ञान जनता की सेवा कर रहा है—के प्रति अभिमान का भाव जाग उठा।

२२—महासोवियत् का प्रथम अधिवेशन

(१) सोवियत् पार्लियामेंट का चुनाव हो जाने के एक महीने बाद १२ जनवरी को प्रथम अधिवेशन होने की घोषणा की गई। संघ-सोवियत् की बैठक उस दिन क्रेमूलिन् के भीतर अपने भवन में ४ बजे शाम को होनेवाली थी; और जातिक-सोवियत् का प्रथम अधिवेशन क्रेमूलिन् के भीतर अपने भवन में ८ बजे रात को होनेवाला था। १० तारीख तक आधे से अधिक डिपुटी मास्को पहुँच चुके थे।

जगह जगह निर्वाचकों ने सभा कर के अपने अपने प्रतिनिधियों को खास तरह की हिदायतें दी थीं। लेनिन्ग्राद्-नगर के मास्को निर्वाचन-क्षेत्र के ८०० वोटरों ने जमा होकर अपने डिपुटी स्येतनिन् को यह आदेश दिया था—

"तवारिश् स्तालिन् से कहना कि हम लोगों का सारा प्रेम और सारी भक्ति, हम लोगों के सारे खयाल और भावनाएँ, सम्पूर्ण राष्ट्र की महा-सोवियत् के डिपुटियों की ओर लगी हुई हैं। उनकी सभी राय और सभी आदेशों को हम कानून समझते हैं। भविष्य में भी हर बात में हम तवारिश् स्तालिन् का अनुगमन करने को तैयार हैं। और अगर जरूरत पड़ेगी तो दुश्मनों से अपने देश की रक्षा करने के लिए हम अपने खून का अन्तिम बिन्दु तक दे देंगे। हमें पूरा विश्वास है, कि तुम हमारे विचारों को प्रकट करोगे। और तुम लेनिन् और स्तालिन् की तरह के जन-सेवक बनोगे। हम तुमको कहते हैं कि लेनिन्ग्राद् के जबर्दस्त राजनैतिक और श्रमजीविक उत्साह को वहाँ जाकर कहोगे।"

(२) वोदोप्यानोफ्-कोल्खोज् के किसानों ने अपने डिपुटी सोवियत्-संघ-वीर म० व० वोदोप्यानोफ् के पास निम्नलिखित आदेश भेजा था—

"हमारे साथ के सम्पर्क को छोड़ना मत। अपनी सारी शक्ति लगा कर पितृभूमि की भलाई के लिए महा-सोवियत् में काम करो। समाजवादी उद्योग और कृषि की उन्नति के लिए काम करो। स०स०स०र० की राष्ट्रीय सैनिक शक्ति को मज़बूत करो। क्रान्ति-विरोधी गुंडों, त्रोत्स्की तथा बुख़ारिन् के अनुयायी भेदियों, बाधादायकों, ध्वंसकों तथा दूसरे जनता के दुश्मनों के बचे खुचे अंश को भी नष्ट कर दो। जैसे महान् स्तालिन् ने हमें शिक्षा दी है, उसी तरह काम करो। हर एक बात में स्तालिन् को अपना आदर्श रखो।"

(३) क्रास्नीखोपेर-कोल्ख़ोज् के किसानों ने अपने डिपुटी सोवियत् संघ-वीर न०प० कम्निन् को आदेश दिया था —

"जनता के चुने हुए प्रतिनिधि के रूप में सोवियत्-जनता की और भी अधिक समृद्धि के लिए लड़ने का सम्मान-पूर्ण काम तुम्हें मिला है। हम तुम्हारे साथ निकट संबंध रखेंगे और तुम्हारे काम में हर तरह से सहायता करेंगे। हम तुमसे पितृभूमि की भलाई के लिए सचाई और लगन के साथ काम करने की आशा रखते हैं। लाल राजधानी में लोगों को कहना कि हम वसन्त की बुआई के लिए पूर्णतया तैयार हैं।"

(४) चुसोवया ज़िले (स्वेर्द्लोफ़् प्रान्त) के अध्यापकों ने अपने डिपुटी म० अ० अर्त्युशिन् को हिदायत की—

"वह इसके लिए कोशिश करें कि चुसोवया शहर में लड़कों के लिए १० नये स्कूल, सयानों के लिए १ स्कूल, १ सांस्कृतिक-प्रासाद, और १ बालचर-प्रासाद बनवाया जाय।"

(५) ध्रुव-कक्षावर्ती प्रदेश के किरोव्स्क फैक्टरी के पुराने कमकरों के एक समुदाय ने अपने डिपुटी क०ई० दुशेनोफ़् के पास लिख कर भेजा—

"स०स०स०र० की महासोवियत् के प्रथम अधिवेशन में भाग लेते वक़्त हमारी प्रिय पितृभूमि की सैनिकशक्ति को और भी मज़बूत करने का प्रश्न उठाना। हमारा देश ऐसा दुर्धर्ष दुर्ग होना चाहिए कि वह उन्हें पीस डालने

के लिए समर्थ हो जो कि हमारे सुखमय जीवन को छीनना चाहते हैं या हमारे शान्तिपूर्ण निर्माण मे बाधा डालते हैं। हम को विश्वास है कि इस ध्रुव-कक्षीय प्रदेश को देश के एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र के रूप मे परिणत करने में तुम अपनी सारी शक्ति लगाकर काम करोगे। हमारे मित्र और पिता तवारिश् स्तालिन् को कहो, कि कोला प्रायद्वीप के लोग कितने प्रसन्न, समृद्ध और संस्कृतिपूर्ण जीवन बिता रहे हैं।"

(६) एक जगह के वोटरों ने अपने प्रतिनिधि को सन्देश भेजा—

"म०स०म०र० की महासोवियत् के अधिवेशन की कार्रवाई की ओर करोड़ो आदमियो का ध्यान लगा हुआ है। सारी दुनिया एक बार देखेगी कि लेनिन्-स्तालिन् की पार्टी के नायकत्व में एक हुए हम लोग दुर्जेय हैं; और वह देश भी दुर्जेय है, जिसकी पार्लियामेंट म०स०म०र० की महासोवियत् जैसी है।"

(७) अन्ना फ़्योदोरोव्ना स्मिर्नोवा एक कारखाने की कमकरिन तथा महासोवियत् की डिपुटी ने मास्को को प्रस्थान करने से पहले एक सम्वाददाता से कहा—

"हाल में मुझे मेरे निर्वाचकों ने ५६ पत्र भेजे हैं। उनके भेजनेवालो मे प्रोफ़ेसर, कमकर, कमकरिन तथा घर में काम करनेवाली औरतें है। इन पत्रों में मुझे चुनाव की सफलता के लिए सिर्फ बधाई ही नहीं दी गई है, उनमें से अधिकांश हमारे रोज़बरोज़ की ज़िन्दगी से सबध रखनेवाली समस्याओं का जिक्र करते हैं। वह त्रुटियों पर नुक्ताचीनी करते हैं और उनके दूर करने के लिए ज़ोर देते हैं। मैंने उनकी सभी बातों को ध्यान में रखा है और आवश्यकता के अनुसार कार्रवाई करूँगी। किरोफ़् ज़िले मे नये मकानों के बनाने का काम बड़े ज़ोर-शोर से चल रहा है। अधिवेशन से लौटकर मैं निरन्तर घर बनाने के काम में जाया करूँगी और उसकी देखभाल करती रहूँगी। स्कूल, किंडरगार्टन और बच्चाखानो के काम पर भी मैं बराबर ध्यान रखूँगी। पार्टी और सरकार के प्रति कृतज्ञता से

मेरा हृदय भरा हुआ है, जो कि उन्होंने मेरे जैसी एक भूतपूर्व घर की नौकरानी को ऐसे पद पर पहुँचाया।"

मास्को में जाकर स्मिर्नोवा लेनिन्-समाधि, लेनिन्-म्यूज़ियम, मेत्रो (भूगर्भी रेल) आदि को देखना चाहती है।

(८) अकद्मिक् (एकडेमीशियन्)[1] ग० फ० प्रोज्कूरा ने पार्लियामेंट के अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए जाते वक्त लिखा—

"स०स०स०र० के महासोवियत् के अधिवेशन का आनेवाला दिन बहुत ही महत्त्वपूर्ण होगा। हम सभी सोवियत् नागरिक—ख़ास करके महासोवियत् के हम डिपुटी लोग—जिनके ऊपर कि जनता ने इतना बड़ा विश्वास किया है—एक ऐसे बड़े अभिमान और दायित्व को अनुभव कर रहे हैं, जिसे शब्दों में प्रकट करना मुश्किल है। महासोवियत् का काम तृतीय-पंचवार्षिक-योजना के प्रथम वर्ष के साथ शुरू हो रहा है। हमारी सोवियत् भूमि नये साम्यवादी विजयों की ओर बड़े विश्वास के साथ बढ़ रही है। हर एक डिपुटी हमारे साम्यवादी राष्ट्र को विकसित और सुदृढ़ करने के काम के लिए जवाबदेह है। ऊँचे दर्जे की टेकनिकल शिक्षा-संस्थाओं के एक कमकर और एक एकडेमीशियन के तौर पर मैं अपने सामने काम रख रहा हूँ—ऊँचे दर्जे के टेकनिकल स्कूलों और उसमें होनेवाले वैज्ञानिक कार्य को इस रूप में आगे बढ़ाया जाय कि वह हमारी औद्योगिक आवश्यकताओं में सहायक हो। हमारे टेकनिकल स्कूलों को औद्योगिक समस्याओं को हल करने में जितना चाहिए उतनी मात्रा में उनका उपयोग नहीं हो रहा है।

"महासोवियत् का अधिवेशन होने जा रहा है। इसलिए हम सब अपनी

---

[1] स०स०स०र० के विज्ञान एकेडेमी की सदस्यता चोटी के विद्वानों को ही प्राप्त होती है। ऐसे सदस्यों की संख्या सारे देश में १०० से भी कम है। सदस्य को एकडेमीशियन (रूसी अकद्मिक) कहते हैं।

आत्मपरीक्षा कर रहे हैं। १२ जनवरी १९३८ के महत्वपूर्ण दिन पर हम को क्या कर दिखाना है? हर एक आदमी अपने काम के परिणाम को तौल रहा है। मैंने अपने लिए दो खास काम चुन रखे हैं। खर्कोफ् की दोनों मशीन-निर्माण तथा वायुयान-अन्वेषण-शालाओं में अव्वल दर्जे की दो प्रयोगशालाओं का बनाना।

"सोवियत्-सरकार और बोल्शेविक-पार्टी को ही इसका सारा श्रेय है। उसने हमारे अन्वेषण कार्य के लिए सब प्रकार का सुभीता प्रचुर परिमाण में दे रखा है।"

(६) एक दूसरे एकडेमीशियन अ० अ० बोगोमोलेत्स—जो कि पार्लियामेंट के एक डिपुटी हैं—का कहना है—

"स०श०स०र० की महासोवियत् के प्रथम अधिवेशन के लिए प्रस्थान करते समय मुझे बड़ा आनंद आ रहा है। यह इतिहास में एक स्मरणीय अधिवेशन होगा। यह स०स०स०र० की सारी जनता का एक राय होकर साम्यवाद के निर्माण को प्रदर्शित कर रहा है। यह सारे संसार को दिखायेगा कि यथार्थ जनसत्ता क्या है? यह सिद्ध करेगा कि हमारे महान् संघ की सारी जनता का कम्युनिस्ट-पार्टी और हमारे प्रिय नेता तवारिश् स्तालिन् में अपरिमित विश्वास है।"

***   ***

मास्को में आज सभी ११४३ डिपुटी उपस्थित हैं। उनमें से अधिकांश मास्को होटल की हाल ही में तैयार हुई विशाल इमारत में, ठहरे हैं। ये डिपुटी किस तरह के नर-नारी हैं, इसके लिए जगह जगह खड़ा नागरिकों का झुंड आपस में बात कर रहा है। उनकी शकल देखने से यद्यपि उनमें गोरे लंबे रूसी, ठिंगने लेकिन चौरस छातीवाले मंगोल, भूरे रंगवाले ताजिक। पोशाक सब की न्यारी न्यारी। उनमें कितने ही ऐसे प्रसिद्ध स्तखानोवी कमकर और किसान हैं जिनको अपने काम के लिए सरकार

ने पदकों से अलंकृत किया है। उनमें कितने ही संसार-प्रसिद्ध वैज्ञानिक और अकदमिक् हैं। कितने ही कलाकार स्त्री-पुरुष हैं, जिनका नाम कला-जगत् में बड़े गौरव से लिया जाता है। उनमें कितने ही चित्रकार हैं, जिनकी तूलिका ने सोवियत् भूमि का यश दूर दूर तक फैलाया है। उनमें कितने ही संसार में अपनी कीर्ति से अमर होनेवाले लेखक हैं। कितने ही उद्भट वैमानिक, सोवियत्-संघ-वीर हैं जिनकी हवाई उड़ान को सोवियत् से उत्तरी ध्रुव के रास्ते अमेरिका तक पहुँचने के कर्तव को देख कर सारी दुनिया चकित हो गई। ये थे वह डिपुटी जो उस दिन मास्को होटल और नगर की सड़कों पर देखे जाते थे।

अन्द्रेयेफ़् (सोवियत्-स्पीकर)

** **

संघ-सोवियत् के अधिवेशन में श्वेदर्वाकोफ़् ने जब कहा—हमारे भवन का एक सदस्य १६ वर्षीया सखारोवा संसार के पार्लियामेंटों की सब से अल्पवयस्क डिपुटी तथा फ़ैक्टरी की डाइरेक्टर हैं, तो लोगों ने बड़े जोश के साथ तालियाँ बजाईं। लोगों के जोश का ठिकाना नहीं था, जब उसी वक्ता ने महान् स्तखानोवी स्वयं स्तखानोफ़् का नाम भवन के सदस्य के तौरपर लिया। क्रिवोनोस्, ओग्नेफ़् जैसे प्रसिद्ध कमकर (जो अपनी फ़ैक्टरी के

मैनेजर तथा औद्योगिक एकेडेमी के विद्यार्थी हैं) गुदोफ्—जिसने नई युक्तियों को निकाल कर फ़ैक्टरी में अपने काम को ६० गुना अधिक पूरा किया—के नामों को सुनकर सभा पागल हो मिनटों ताली बजा रही थी। वहाँ कोन्स्तन्तिन बोरेन् मौजूद था, जिसने खेत काटने-दाँवने की एक ऐसी कबाइन मशीन निकाली है जो ६५० आदमियों, १५० घोड़ों, ३७ भुस उड़ानेवाली मशीनों और २० घोड़े की दौरियों का काम अकेला करती है। वहाँ मौजूद थे ६ एकेडेमीशियन, ७ जगत्-प्रसिद्ध प्रोफेसर, जिनमें अकदमिक् बाच (फिजिक्स का वैज्ञानिक) प्रोफेसर बुर्देन्को (महान् चिकित्सक) मोस्विन् (महान् अभिनेता), अलेक्सेइ ताल्स्त्वा (महान् लेखक) सूत्रधार चित्रउरेली (नाट्य-कलाचार्य) थे।

अलेक्सेइ स्तखानोफ् (पृ० २१६, ३३८, ४८४)

संघ-सोवियत्[1] के ५६६ मेंबरों में ४६१ पार्टी के सदस्य हैं। उस

[1] संघ-सोवियत् के ५६६ सदस्य निम्न जातियों में चुने गये हैं; यही सोवियत् की जातियाँ हैं—

ने पदकों से अलंकृत किया है। उनमें कितने ही संसार-प्रसिद्ध वैज्ञानिक और अकदमिक् हैं। कितने ही कलाकार स्त्री-पुरुष हैं, जिनका नाम कला-जगत् में बड़े गौरव से लिया जाता है। उनमें कितने ही चित्रकार हैं, जिनकी तूलिका ने सोवियत् भूमि का यश दूर दूर तक फैलाया है। उनमें कितने ही संसार में अपनी कीर्ति से अमर होनेवाले लेखक हैं। कितने ही उद्भट वैमानिक, सोवियत्-संघ-वीर हैं जिनकी हवाई उड़ान को सोवियत् से उत्तरी ध्रुव के रास्ते अमेरिका तक पहुँचने के कर्तव को देख कर सारी दुनिया चकित हो गई। ये थे वह डिपुटी जो उस दिन मास्को होटल और नगर की सड़कों पर देखे जाते थे।

अन्द्रेयेफ् (सोवियत्-स्पीकर)

*** ***

संघ-सोवियत् के अधिवेशन में श्वेदर्वाकोफ़् ने जब कहा—हमारे भवन का एक सदस्य १६ वर्षीया सखारोवा संसार के पार्लियामेंटों की सब से अल्पवयस्क डिपुटी तथा फ़ैक्टरी की डाइरेक्टर है, तो लोगों ने बड़े जोश के साथ तालियाँ बजाई। लोगों के जोश का ठिकाना नहीं था, जब उसी वक्ता ने महान् स्तखानोवी स्वयं स्तखानोफ़् का नाम भवन के सदस्य के तौरपर लिया। क्रिवोनोस्, ओग्नेफ़् जैसे प्रसिद्ध कमकर (जो अपनी फ़ैक्टरी के

मैनेजर तथा औद्योगिक एकेडेमी के विद्यार्थी हैं) गुबोफ्—जिसने नई युक्तियों को निकाल कर फैक्टरी में अपने काम को ६० गुना अधिक पूरा किया—के नामों को सुनकर सभा पागल हो मिनटों ताली बजा रही थी। वहाँ कोन्स्तन्तिन बोरेन् मौजूद था, जिसने खेत काटने-दाँवने की एक ऐसी कम्बाइन मशीन निकाली है जो ६५० आदमियों, १५० घोड़ों, ३७ भुस उड़ाने-वाली मशीनों और २० घोड़े की दौरियों का काम अकेला करती है। वहाँ मौजूद थे ६ एकेडेमीशियन, ७ जगत्-प्रसिद्ध प्रोफेसर, जिनमें अकदमिक् बाख (फिजिक्स का वैज्ञानिक) प्रोफेसर बुर्देन्को (महान् चिकित्सक) मोस्क्विन् (महान् [illegible] सूत्रधार चिन्नउरेली ([illegible]

[illegible]

संघ-सोवियत्[1] के [illegible]

---

[1] संघ-सोवियत् के [illegible] सोवियत् की [illegible] है—

की ३७ स्त्री-सदस्यों में २८ ऊँचे से ऊँचे राष्ट्रीय पदक प्राप्त कर चुकी हैं। सदस्यों में भिन्न भिन्न भाषाभाषी ३५ जातियों के व्यक्ति हैं और उनका ऐक्य-मत परस्पर स्नेहपूर्ण वर्ताव बतला रहा था कि सोवियत् की जनता परस्पर प्रेम-सूत्र में बँध कर फ़ौलाद के समान एक ठोस राष्ट्र बन गई है।

*** ***

जातिक-सोवियत् के प्रथम दिन की कार्रवाई

१२ जनवरी को क्रेमलिन् में जातिक-सोवियत का प्रथम अधिवेशन

१—रूसी . . .	१४६	१७—उद्मुर्द .	७
२—उक्राइनी .	३४	१८—कोमी .	८
३—बेलोरूसी .	१५	१९—बुर्यत् .	८
४—आज़ुर्बाइजानी	३४	२०—मारीयेस् .	६
५—गुर्जी (जार्जियन्)	३३	२१—बश्किर .	६
६—अर्मनी .	३०	२२—याकूत् .	६
७—तुर्कमान् .	१७	२३—चेचन्स .	५
८—उज़्बेक् .	२६	२४—मर्दोव् .	५
९—ताजिक .	१६	२५—चेर्केदा .	५
१०—कज़ाक .	२४	२६—कर्बादिन् .	४
११—किर्गिज़ .	१२	२७—चुवाश् .	४
१२—तातार .	१५	२८—नेन्स .	४
१३—यहूदी .	१५	२९—मोल्दाविन् .	५
१४—जर्मन. .	९	३०—कराक़ल्पक् .	४
१५—कल्मुक् .	९	३१—अब्ख़ाज़ी .	५
१६—ओसेतिन् .	९	३२—करेली .	४

अपने विशाल भवन में हुआ। ८ बजे सवेरे कार्रवाई शुरू होनेवाली थी लेकिन बहुत से सदस्य पहले ही से अपनी जगह पर बैठ चुके थे। जातिक-सोवियत् के ५७४ मेंबरों में ११० अर्थात् १६ सैकडा स्त्रियाँ थी। लोग बड़े गौर से इंतज़ार कर रहे थे। भवन की घडी जब ८ बजाने लगी, उसी समय स्तालिन् मोलोतोफ़्, वोरोशिलोफ़्, कगानोविच्, कालिनिन् अन्द्रयेफ् मीकोयान्, चुबार, कोसियोर्, येज़ोफ्, यददानोफ् के साथ गवर्नमेंट की बेंचों पर मौजूद हुए। देखने के साथ ही सदस्य अपनी जगहों पर खड़े हो गये और जनता के मित्र तथा महान् नेता का जबर्दस्त करतल ध्वनि और नारों के साथ अभिनन्दन किया। 'हुरा! स्तालिन्!' "हुरा स्तालिन्!' 'सुखपूर्ण यशस्वी जीवन के लिए!' हाल के चारों ओर जोशीले नारे लग रहे थे। प्रत्येक डिपुटी ने अपनी अपनी भाषा मे

येज़ोफ् (गृह-सचिव) (पृ० २१६)

अपने अन्तस्तल मे हार्दिक भक्ति का प्रदर्शन किया।—'चिरजीव हमारा प्यारा स्तालिन्!' के शब्दों को एक कंठ से निकाल कर सारे राष्ट्र की ओर से उन्होंने इस महान् राष्ट्रनिर्माता के लिये श्रद्धांजलि अर्पण की।

प्रस्ताव १—डिपुटी ग० ई० पेत्रोव्स्की (उक्रइन्) ने भाषण-मंच पर खड़ा होकर प्रस्ताव किया कि जातिक-सोवियत् के वृद्धतम डिपुटी तथा कम्युनिस्ट-पार्टी के मेम्बर म० ग० श्खकया को अधिवेशन के उद्घाटन करने का काम सौंपा जाय। भवन ने करतल-ध्वनि से प्रस्ताव का अनु-

यज्दानोफ़् (लेनिन्ग्राद्-सोवियत्-प्रधान)

मोदन किया। श्खकया अध्यक्ष के आसन पर पहुँचे। उन्होंने एक छोटा सा भाषण दिया, जिसके कुछ वाक्य ये हैं—

"प्रिय साथियो, स०स०स०र० की महासोवियत् की जातिक-सोवियत् के सदस्यो, प्रथम अधिवेशन के उद्घाटन से पहले चुनाव के इतिहास पर एक सरसरी निगाह डालने के लिए आज्ञा दीजिए।......सोवियत् जनता का परस्पर भ्रातृभाव और एकता तथा लेनिन्-स्तालिन् की पार्टी के साथ उसकी घनिष्टता हमारी जन्मभूमि को दुर्जेय बनाती है। हम लोग ७

योजन लम्बे पगों के साथ सीधे वगैर जरा सा भी इधर उधर हुए पूर्ण साम्य-वाद की तरफ़ सारे स०स०स०र० में, सारे उसके ११ प्रजातन्त्रों तथा अन्त-र्भुक्त स्वायत्त-जातिक भागों में पूर्ण साम्यवाद की तरफ बढ़ते चले जा रहे हैं।

......हम लोग एक नये जीवन का निर्माण कर रहे हैं। साथियो, हम एक नई संस्कृति, एक नई सभ्यता—जो कि बाहर में जातीय और भीतर में साम्यवादी है—को रच रहे हैं। जारशाही के जमाने में जो जातियाँ अत्यन्त पिछड़ी हुई तथा अन्धकार पूर्ण अवस्था में थीं, अब वह स०स०स०र० की स्वतंत्र जनता के रूप में परिणत हो गई हैं। अपने पुराने चोले को जातिक बंधनों झगड़ों और परस्पर की लड़ाइयों—जो कि सदियों से उनके भीतर मौजूद थीं—को छोड़कर, अब साम्यवादी उद्योग, साम्यवादी कृषि को आपस के सहयोग के साथ बना रही हैं। सोवियत्-संघ में बसने वाले सभी लोग महान् लेनिन्-स्तालिन् पार्टी के अन्तर्राष्ट्रीय लाल झंडे के नीचे एकत्रित हुए हैं।

"उनकी सन्तान दोनों तरह से हमारे यशस्वी वीर लाल सेना के सैनिक के रूप में तथा हमारी जन्मभूमि की सीमाओं को प्रतिदिन रक्षा करते हुए सीमान्त-रक्षक सिपाही के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय फ़ासिस्ट दुश्मनों और उन के गुप्तचरों के रास्ते को रोके हुए हैं।.. ..

"हृदय से धन्यवाद है सारी रूसी जनता को। बहुत धन्यवाद है विजयी श्रमिक-क्रान्ति के गहवारे लेनिन् की नगरी के कमकरों को। हमारी लाल राजधानी मास्को के कमकरों को हृदय से धन्यवाद। इवानोवो के जुलाहे नर-नारियों को, दोन्बास्, बाकू, उराल, तिफ़्लिसी के कमकरों को धन्यवाद! और धन्यवाद है हमारे रेल के कमकरों को। नगर और गाँव की सभी श्रमिक जनता को—जो सार्वजनीन स्तख़ानोफ़्-आन्दोलन को बढ़ा रही हैं; और उसके जरिए ससार के एक छठे हिस्से पर साम्यवाद की विजय को दृढ़ कर रही है, धन्यवाद! .. . .

"इन थोड़े से शब्दों और इन अभिलाषाओं के साथ मैं स०स०स०र०

प्रस्ताव १—डिपुटी ग० ई० पेत्रोव्स्की (उक्रइन्) ने भाषण-मंच पर खड़ा होकर प्रस्ताव किया कि जातिक-सोवियत् के वृद्धतम डिपुटी तथा कम्युनिस्ट-पार्टी के मेम्बर म० ग० श्खकया को अधिवेशन के उद्घाटन करने का काम सौंपा जाय। भवन ने करतल-ध्वनि से प्रस्ताव का अनु-

यज्दानोफ़् (लेनिन्ग्राद्-सोवियत्-प्रधान)

मोदन किया। श्खकया अध्यक्ष के आसन पर पहुँचे। उन्होंने एक छोटा सा भाषण दिया, जिसके कुछ वाक्य ये हैं—

"प्रिय साथियो, स०स०स०र० की महासोवियत् की जातिक-सोवियत् के सदस्यो, प्रथम अधिवेशन के उद्घाटन से पहले चुनाव के इतिहास पर एक सरसरी निगाह डालने के लिए आज्ञा दीजिए। ......सोवियत् जनता का परस्पर भ्रातृभाव और एकता तथा लेनिन्-स्तालिन् की पार्टी के साथ उसकी घनिष्टता हमारी जन्मभूमि को दुर्जेय बनाती है। हम लोग ७

योजन लम्बे पगों के साथ सीधे बगैर जरा सा भी इधर उधर हुए पूर्ण साम्य-वाद की तरफ सारे स०स०म०र० में, सारे उसके ११ प्रजातंत्रों तथा अन्त-र्भुक्त स्वायत्त-जातिक भागों में पूर्ण साम्यवाद की तरफ बढ़ते चले जा रहे हैं।

...... हम लोग एक नये जीवन का निर्माण कर रहे हैं। साथियो, हम *एक नई संस्कृति, एक नई सभ्यता—जो कि बाहर से जातीय और भीतर से* साम्यवादी है—को रच रहे हैं। जारशाही के जमाने में जो जातियाँ अत्यन्त पिछड़ी हुई तथा अन्धकार पूर्ण अवस्था में थीं, अब वह स०स०स०र० की स्वतंत्र जनता के रूप में परिणत हो गई है। अपने पुराने चोले को जातिक बंधनों झगड़ों और परस्पर की लड़ाइयों—जो कि सदियों से उनके भीतर मौजूद थीं—को छोड़कर, अब साम्यवादी उद्योग, साम्यवादी कृषि को आपस के सहयोग के साथ बना रही हैं। सोवियत्-संघ में बसने वाले सभी लोग महान् लेनिन्-स्तालिन् पार्टी के अन्तर्राष्ट्रीय लाल झंडे के नीचे एकत्रित हुए हैं।

"उनकी सन्तान दोनों तरह से हमारे यशस्वी वीर लाल सेना के सैनिक के रूप में तथा हमारी जन्मभूमि की सीमाओं की प्रतिदिन रक्षा करते हुए *सीमान्त-रक्षक सिपाही के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय फ़ासिस्ट दुश्मनों और उन* के गुप्तचरों के रास्ते को रोके हुए हैं। .....

"हृदय से धन्यवाद है सारी रूसी जनता को। बहुत धन्यवाद है विजयी श्रमिक-क्रान्ति के गहवारे लेनिन् की नगरी के कमकरों को। हमारी लाल राजधानी मास्को के कमकरों को हृदय से धन्यवाद। इवानोवो के जुलाहे नर-नारियों को, दोन्बास्, बाकू, उराल, तबिलिसी के कमकरों को धन्यवाद! और धन्यवाद है हमारे रेल के कमकरों को। नगर और गाँव की सभी श्रमिक जनता को—जो सार्वजनीन स्तखानोफ़-आन्दोलन को बढ़ा रही हैं; और उसके जरिए संसार के एक छठे हिस्से पर साम्यवाद की विजय को दृढ़ कर रही है, धन्यवाद! .. . ..

"इन थोड़े से शब्दों और इन अभिलाषाओं के साथ मैं स०स०स०र०

की महासोवियत् के जातिक-संघ के प्रथम अधिवेशन के उद्‌घाटन को घोषित करता हूँ।" (तूफ़ानी हर्षध्वनि)

*** ***

प्रस्ताव २—न० म० श्वेर्निक् सर्व-सम्मति से जातिक-सोवियत् के अध्यक्ष चुने गये।

प्रस्ताव ३-४—च० अ० अस्लानोवा, और अ० म० लेवित्स्की उपाध्यक्ष चुने गये।

प्रस्ताव ५—जातिक-सोवियत् ने अधिवेशन के कार्य-संचालन के लिए निम्न नियम स्वीकृत किये—(देखो, संघ सोवियत् प्रस्ताव ५)

प्रस्ताव ६—डिप्टी न० अ० बुल्गानिन् ने रूसी-सोवियत्-संयुक्त सोशलिस्ट-रिपब्लिक, कज़ाकस्तान, और बेलो रूसिया के सदस्यों की ओर से निम्न कार्य-विवरण प्रस्तावित किया जो कि सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुआ .... (देखो संघ-सोवियत् प्रस्ताव ६)

प्रस्ताव ७—जातिक-सोवियत् ने निश्चित किया कि ६ठे प्रस्ताव के ३,४,५,६,७ विषयों को जातिक-सोवियत् और संघ-सोवियत् की सम्मिलित बैठक में तय किया जाय।

प्रस्ताव ८—जातिक-सोवियत् के डिपुटियों के निर्वाचन के औचित्यानौचित्य की परीक्षा करने के लिए ११ व्यक्तियों का एक प्रमाण-दायक-कमीशन चुना गया।

इसके बाद जातिक-सोवियत् ने अपने स्थायी कमीशनों की नियुक्ति पर विचार करना आरंभ किया—

प्रस्ताव ९—डिपुटी न० म० मर्चेक ने अन्य कितने ही डिपुटियों की तरफ़ से एक कानूनी कमीशन की नियुक्ति का प्रस्ताव किया और जातिक-सोवियत् ने उसे स्वीकृत करते हुए १० व्यक्तियों का कानूनी कमीशन नियुक्त किया।

प्रस्ताव १०—अ० ई० स्तेत्स्की के प्रस्तावानुसार जातिक-सोवियत् ने एक बजट-कमीशन नियत किया जिसके लिए १३ व्यक्ति चुने गये—

प्रस्ताव ११—डिपुटी ओ० ज० श्मित् ने मास्को, तातारिया और लेनिन्ग्राद् के प्रतिनिधियों की तरफ से परराष्ट्र-विभाग-कमीशन नियुक्त करने के लिए प्रस्ताव किया और उसे स्वीकृत करते हुए १० व्यक्तियों का परराष्ट्र-विभाग-कमीशन नियुक्त हुआ।

इसके बाद जातिक-सोवियत् की पहली बैठक समाप्त हुई।

*** ***

संघ-सोवियत् के प्रथम दिन के अधिवेशन की कार्रवाई

क्रेमलिन् के दोनों पद्मराग-जटित लाल तारे बिजली से चमक रहे थे। क्रेमलिन् सोवियत्-भूमि के मालिकों—म०म०म०द०—के महासोवियत् के सदस्यों—का स्वागत करने के लिए तैयार थीं। क्रेमलिन् प्रासाद का सफेद संगमर्मर से बना चमकता विशाल हाल संघ-सोवियत् के सदस्यों से जल्दी ही भर गया।

४ बजने में १५ मिनट थे, जब कि दूसरे देशों के राजदूत और दूसरे प्रतिनिधि अपनी सीटों पर आकर बैठ गये। सोवियत् और दूसरे देशों के पत्र-प्रतिनिधि अपनी अपनी जगहों पर पहले ही जम चुके थे।

४ बजे (शाम) को एकाएक तूफानी नारे लगने लगे। सब की नजर उन आसनों की तरफ लगी थी, जिनपर तवारिश् स्तालिन्, कालिनिन्, मोलोतोफ़्, वोरोशिलोफ़् कगानोविच्, अन्द्रेयेफ़्, मिकोयान्, चुवार्, कोसियोर्, यस्दानोफ़्, येजोफ़्, लितविनोफ़्, पेत्रोवस्की, श्वेर्निक, रुश्चेफ़् बुल्गानिन्, दिमित्रोफ़ और दूसरे नेता दिखलाई पड़े। सदस्यों ने खड़े होकर योसेफ़् विसारियोनोविच् स्तालिन् और उनके सहकारियों का बड़े जोश

के साथ स्वागत किया। अनेक भाषाओं में ऊँचे नारे लगने लगे। 'हुरा' 'वाशा', 'जिन्दावाद', 'चिरंजीव तवारिश् स्तालिन्' कितने ही मिनटों तक ये नारे जारी रहे।

प्रस्ताव १—डिपुटी ख़ुशचेफ़् ने प्रस्ताव किया कि भवन के वृद्धतम डिपुटी अकदमिक वाच् संघ-सोवियत् के प्रथम अधिवेशन का उद्घाटन करें। भवन ने संसार-प्रसिद्ध वैज्ञानिक के लिए किये गये प्रस्ताव को हर्ष-ध्वनि के साथ स्वीकृत किया।

डिपुटी वाच् अध्यक्ष की मेज़ पर गये। उन्होंने एक छोटा सा भाषण दिया, जिसके कुछ वाक्य इस प्रकार हैं—

"साथियो, हमारे देश के ६ करोड़ निर्वाचकों की इच्छा के अनुसार स०स०स०र० की महासोवियत् के प्रथम अधिवेशन के उदघाटन और संचालन का सन्माननीय और दायित्वपूर्ण कर्तव्य महान् स्तालिनीय विधान के अनुसार मेरे ऊपर पड़ा है। (ज़ोर की हर्षध्वनि)

"स्तालिनीय विधान मनुष्य-जाति के इतिहास में एक नये महान् युग—उपज के साधनों और औज़ारों के सामूहिक स्वामित्व और उपभोग के सिद्धान्त पर एक साम्यवादी समाज के युग—की सूचना देता है।.....

"साथियो, २० वर्ष वीत गये। जब से कि महान् अक्तूबरी साम्यवादी क्रान्ति ने हमें ले आकर उस जगह पहुँचा दिया; जहाँ कि हमने समाजवादी समाज की इमारत की मज़बूत आधारशिला ही नहीं रखी, वल्कि हमने करीव करीव सारी इमारत को वनाकर तैयार कर दिया है। यह वात परीक्षा पर ठीक उतरती है; यदि हम सभी सर्वमान्य राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कार्य-क्षेत्रों में प्राप्त अपनी सफलताओं को देखें। लेकिन अभी हमारे सामने वहुत दुरूह और कठिन काम है, इस इमारत को मुकम्मल और सुसज्जित करने का..........

"साथियो, हमारी सफलताएँ वड़ी हैं; लेकिन हमको अपने दुश्मनों—पूँजीवादी घिरावे—को नहीं भूलना चाहिए। दुश्मन हमारी सफलताओं

मे पूँजीवादी प्रथा—जिसकी कि वह हिफाजत करना चाहते है—के लिए सब से बड़ा खतरा समझते हैं। अगर पिछले चन्द सालों में हमारे ऊपर हमला नही हुआ, तो इसकी वजह थी; हमारी जबर्दस्त लाल सेना[1], जिस से कि वह डरते थे और समझते थे कि यदि हम चढ़ाई करेंगे, तो नाश की घड़ी को न्योता देंगे। (देर तक तूफानी हर्षध्वनि) और साथियों, अपनी यांत्रिक साधन - सम्पन्नता तथा सैनिक तैयारी मे, इसमे शक नहीं कि, हमारी लाल-सेना सर्वोत्तम है। साथ ही इसमें भी सन्देह नहीं कि जन्मभूमि के प्रेम के लिए वह अद्वितीय है।

ताजिकिस्तान के डिपुटी

पूँजीवादी देशो मे सेना के लिए रँगरूट चुने जाते है, उस कमकर जनता में से, जो कि पूँजीवादी वर्ग की शत्रु है। इसीलिए उन सेनाओं में कड़े डंडों के ज़रिये विनय (डिसिप्लिन) स्थापित की जाती है।

---

[1] १९३६ में सोवियत्-सरकार ने जितना खर्च सेना पर किया वह दो तीन साल पहले के खर्च से ६ गुना ज्यादा था। १९३७ का खर्च १९३६ से ३५ सैकड़ा ज्यादा था; और रुपयों में हिसाब करने पर १० अरब ३० करोड़ होता है।

के साथ स्वागत किया। अनेक भाषाओं में ऊँचे नारे लगने लगे। 'हुरा' 'वाशा', 'जिन्दाबाद', 'चिरंजीव तवारिश् स्तालिन्' कितने ही मिनटों तक ये नारे जारी रहे।

प्रस्ताव १—डिपुटी ख़ुशचेफ़् ने प्रस्ताव किया कि भवन के वृद्धतम डिपुटी अकदमिक वाच् संघ-सोवियत् के प्रथम अधिवेशन का उद्‌घाटन करें। भवन ने संसार-प्रसिद्ध वैज्ञानिक के लिए किये गये प्रस्ताव को हर्ष-ध्वनि के साथ स्वीकृत किया।

डिपुटी वाच् अध्यक्ष की मेज़ पर गये। उन्होंने एक छोटा सा भाषण दिया, जिसके कुछ वाक्य इस प्रकार हैं—

"साथियो, हमारे देश के ६ करोड़ निर्वाचकों की इच्छा के अनुसार स०स०स०र० की महासोवियत् के प्रथम अधिवेशन के उदघाटन और संचालन का सन्माननीय और दायित्वपूर्ण कर्तव्य महान् स्तालिनीय विधान के अनुसार मेरे ऊपर पड़ा है। (ज़ोर की हर्षध्वनि)

"स्तालिनीय विधान मनुष्य-जाति के इतिहास में एक नये महान् युग—उपज के साधनों और औज़ारों के सामूहिक स्वामित्व और उपभोग के सिद्धान्त पर एक साम्यवादी समाज के युग—की सूचना देता है।.....

"साथियो, २० वर्ष बीत गये। जब से कि महान् अक्तूबरी साम्यवादी क्रान्ति ने हमें ले आकर उस जगह पहुँचा दिया; जहाँ कि हमने समाजवादी समाज की इमारत की मज़बूत आधारशिला ही नहीं रखी, बल्कि हमने करीब करीब सारी इमारत को बनाकर तैयार कर दिया है। यह बात परीक्षा पर ठीक उतरती है; यदि हम सभी सर्वमान्य राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कार्य-क्षेत्रों में प्राप्त अपनी सफलताओं को देखें। लेकिन अभी हमारे सामने बहुत दुरूह और कठिन काम है, इस इमारत को मुकम्मल और सुसज्जित करने का...........

"साथियो, हमारी सफलताएँ बड़ी हैं; लेकिन हमको अपने दुश्मनों—पूँजीवादी घिरावे—को नहीं भूलना चाहिए। दुश्मन हमारी सफलताओं

में पूँजीवादी प्रथा—जिसकी कि वह हिफाजत करना चाहते हैं—के लिए सब से बड़ा खतरा समझते हैं। अगर पिछले चन्द सालों में हमारे ऊपर हमला नहीं हुआ, तो इसकी वजह थी; हमारी जबर्दस्त लाल सेना[1], जिस से कि वह डरते थे और समझते थे कि यदि हम चढ़ाई करेंगे, तो नाश की घड़ी को न्योता देंगे। (देर तक तूफानी हर्षध्वनि) और साथियो, अपनी यांत्रिक साधन - सम्पन्नता तथा सैनिक तैयारी में, इसमें शक नहीं कि, हमारी लाल-सेना सर्वोत्तम है। साथ ही इसमें भी सन्देह नहीं कि जन्मभूमि के प्रेम के लिए वह अद्वितीय है।

ताजिकिस्तान के डिपुटी

पूँजीवादी देशों में सेना के लिए रँगरूट चुने जाते हैं, उस कमकर जनता में से, जो कि पूँजीवादी वर्ग की शत्रु है। इसीलिए उन सेनाओं में कड़े डंडों के ज़रिये विनय (डिसिप्लिन) स्थापित की जाती है।

---

[1] १९३६ में सोवियत्-सरकार ने जितना खर्च सेना पर किया वह दो तीन साल पहले के खर्च से ६ गुना ज्यादा था। १९३७ का खर्च १९३६ से ३५ सैकड़ा ज्यादा था; और रुपयों में हिसाब करने पर १० अरब ३० करोड़ होता है।

हमारी लाल सेना—जो कि कमकर जनता का लोहू और खून है—तहेदिल से अपार भक्ति के साथ जनता के नये सुखमय जीवन के निर्माण के एक उद्देश्य में तत्पर है। हम लोग हर तरह से शान्ति के लिए प्रयत्न-शील हैं। सिर्फ इसीलिए नहीं कि पूर्णतया निरपराध जनता का काटना हमारे लिए बड़ा ही घृणित और नीच कर्म है; बल्कि इसलिए भी कि लड़ाई हमारे साम्यवादी निर्माण के काम के वेग को रोक देगी। हम शान्ति चाहते हैं; लेकिन अगर हमारे ऊपर हमला हुआ तो हम अपनी साम्यवादी जन्मभूमि की रक्षा के लिए एक आदमी की तरह उठ खड़े होंगे और फिर शत्रुओं के लिए सर्वनाश! (देर तक तूफ़ानी करतल-ध्वनि सब खड़े होकर 'चिरंजीव हमारी लाल सेना!' 'हुरा!')........

अकदमिक् बाच (डिपुटी)
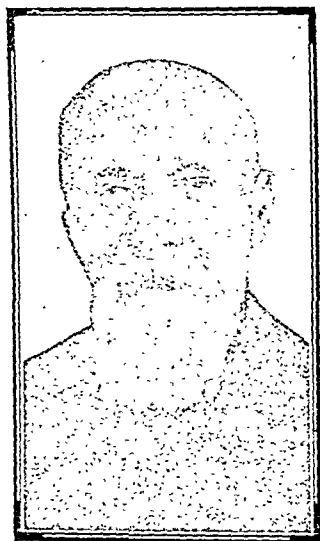
साथियो, मैं घोषित करता हूँ कि संघ-सोवियत् का प्रथम अधिवेशन उद्घाटित हुआ।

प्रस्ताव २—४ बज कर २५ मिनट पर डिपुटी बाच् ने अधिवेशन का उद्घाटन किया। फिर डिपुटी ई० ई० सिदोरोफ़् (मास्को सोवियत् के अध्यक्ष) ने मास्को, लेनिन्ग्राद् और कियेफ़् के डिपुटियों के समूह की ओर से प्रस्ताव किया कि लेनिन्-स्तालिन् पार्टी के ध्येय के लिए, हमारी साम्यवादी जन्मभूमि की श्रमिक जनता के लिए जबर्दस्त लड़नेवाले संघ-सोवियत् के डिपुटी पोलिटिकल ब्यूरो के मेम्बर, सोवियत्-संघ के साम्यवादी-दल

की केन्द्रीय-समिति के मत्री अन्द्रेइ अन्द्रयेविच् अन्द्रेयेफ् संघ-सोवियत् के अध्यक्ष (स्पीकर) बनाये जायें। भवन ने जबर्दस्त हर्षध्वनि के साथ प्रस्ताव का अनुमोदन किया। डिपुटी वाच् ने प्रस्ताव पर वोट लिया।

साथी अन्द्रेयेफ् सर्वसम्मति से सघ-सोवियत् के अध्यक्ष चुने गये। उन्होंने अध्यक्ष का आसन ग्रहण किया।

प्रस्ताव ३—डिपुटी मेतुशेन्को मंच पर खडे हुए। ओदेसा, कियेफ्, और मिन्स्क के सदस्यो की ओर से उन्होंने डिपुटी त्रोफिम् देनिसोविच् लिसेंको का नाम उपाध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित किया। उन्होने कहा—लिसेंको खरकोफ् प्रान्त के एक किसान के लडके है। पार्टी के मेम्बर नही है लेकिन अकदमिक है। इस वक्त वह ओदेसा के पशु-प्रसवन और निर्वाचन के वैज्ञानिक अन्वेषणालय के प्रधान है। कृषि-विज्ञान के विकास-सबधी अपने काम मे लिसेंको डार्विन, तिमिरियाजेफ् और मिचुरिन् के पक्के शिष्य है। उन्होंने बीजों के सस्कार (वेर्नलाइजेशन=फसल को समय से पहले पैदा करने की विधि), कपास के बीजो और आलू के वैज्ञानिक निर्वाचन की समस्याओं को बडी सफलता के साथ हल किया है। उनका नाम हमारे देश के पचायती खेतिहरों मे चारो ओर प्रसिद्ध है। लिसेंको के वैज्ञानिक कार्य ने साम्यवादी खेतो की उपज को बढाने में बहुत अधिक [illegible] सहायता की है। साम्यवादी जन्मभूमि की सेवाओ तथा अपनी उत्कृ[illegible] की वैज्ञानिक खोजो के लिए अकदमिक लिसेंको को लेनिन्-पदक [illegible] है।

अध्यक्ष ने वोट लिया और सर्वसम्मति से लिसेंको [illegible] गये।

प्रस्ताव ४—डिपुटी युसुपोफ् ने उज्बेक, [illegible] नगर, तथा मास्को प्रान्त के प्रतिनिधियों की [illegible] डिपुटी सुलतान् सेगिजबयेफ् (उज्बेक् सो[illegible] उपाध्यक्ष चुने जायें। उन्होने कहा—[illegible] स०स०र० के मन्त्रिमडल के अध्यक्ष है। [illegible]

के महान् शिक्षणालय को इन्होंने सफलतापूर्वक पास किया है। कज़ाक-स्तान और दूसरे प्रजातंत्र, उन्हें अच्छी तरह जानते हैं।

सर्वसम्मति से सेगिज़्बयेफ़् उपाध्यक्ष चुने गये।

प्रस्ताव ५—डिपुटी आलेमासोफ़् के प्रस्तावानुसार संघसोवियत् ने अधिवेशन के कार्य-संचालन के लिए निम्न नियम स्वीकृत किये—

१—संघ-सोवियत् की बैठक ११ बजे सबेरे से ३ बजे शाम तक हुआ करेगी।

२—संघ-सोवियत् के अधिवेशन के कार्य-विवरण प्रश्नों के रिपोर्टर वही होंगे जिन्हें संघसोवियत् के अध्यक्ष ने मंजूर किया है।

३—संघ-सोवियत् के कोई भी ५० डिपुटी मिलकर अपना सहायक रिपोर्टर भेज सकते हैं।

४—रिपोर्टरों को रिपोर्ट देने के लिए एक घंटा समय दिया जायगा। और अन्तिम आलोचना के लिए ३० मिनट। सहायक रिपोर्टरों को अपनी सहायक रिपोर्ट सुनाने के लिए ३० मिनट और अन्तिम आलोचना के लिए १५ मिनट दिये जायेंगे।

५—वक्ताओं को पहले बोलने के लिए २० मिनट और दूसरी बार बोलने के लिए ५ मिनट मिलेगा।

६—वैयक्तिक वक्तव्य और जिज्ञासा-सम्बन्धी प्रश्नों को लिखकर देना चाहिए। उसे संघ-सोवियत् के अध्यक्ष उसी वक्त पढ़ देंगे या बैठक के खतम होने के समय यह विषय पर निर्भर है।

७—दिन की सूची में जो प्रश्न नहीं आये हैं उन्हें लिखकर देना चाहिए। संघ-सोवियत् के अध्यक्ष तुरन्त उसे पढ़ देंगे।

८—सुझाव के लिए ५ मिनट बोलने का अधिकार होगा। वोट लेने के कारण पर बात करने के लिए ३ मिनट की आज्ञा होगी।

प्रस्ताव ६—डिपुटी अ० अ० ज़्दानोफ़् के लेनिन्ग्राद्, मास्को, कियेफ़्,

त्विलसी के प्रतिनिधियों की ओर से प्रस्ताव करने पर निम्न कार्य-विवरण स्वीकृत किया गया—

१—संघ-सोवियत् के प्रमाणदायक-कमीशन का निर्वाचन।

२—संघ-सोवियत् के लिए स्थायी-कमीशन नियुक्त करना।

३—स०स०स०र० की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति तथा जन-कमीसर-समिति के द्वारा स्वीकृत निश्चयों के संबंध में स०स०स०र० के विधान की कुछ धाराओं में संशोधन और सम्वर्द्धन ले आना।

४—स०स०स०र० की महासोवियत् के प्रेसीदिउम् (मंत्रि-मंडल) का चुनाव—

(क) स०स०स०र० के महासोवियत् के प्रेसीदिउम् के अध्यक्ष का चुनाव।

(ख) स०स०स०र० के महासोवियत् के प्रेसीदिउम् के उपाध्यक्ष का चुनाव।

(ग) स०स०स०र० के महासोवियत् के प्रेसीदिउम् के मंत्री का चुनाव।

(घ) स०स०स०र० के महासोवियत् के प्रेसीदिउम् के सदस्यों का चुनाव।

५—स०स०स०र० की गवर्नमेंट—स०स०स०र० के जन-कमीसर (मंत्री) की कौंसिल—का बनाना।

६—स०स०स०र० के महान्यायाधिकारी (प्रोक्यूरेटर) की नियुक्ति।

७—डिपुटियों के अपने कर्तव्य के पूरा करने के संबंध में किये गये वादों का देना।

प्रस्ताव ७—संघ-सोवियत् ने निश्चित किया कि छठें प्रस्ताव के ३,४,५,६,७ विषयों को संघ-सोवियत् और जातिक-सोवियत् की सम्मिलित बैठक में तय किया जाय।

प्रस्ताव ८—संघ-सोवियत् के डिपुटियों के निर्वाचन के औचित्यानौचित्य की परीक्षा करने के लिए निम्न व्यक्तियों का एक प्रमाणदायक कमीशन चुना गया।

(१) अध्यक्ष—अ० स० श्चदर्वाकोफ़्।

(२) सदस्य—अ० म० अलेमासोफ़्, फ० व० शगीमर्दानोफ़्, आइतब्राइ खुदाइबर्गेनोफ़्, क० ई० निकोलयेवा, अ० ए० कोर्नेइच्क्, म० द० छुकानोफ़्, न० हि० सुगोन्यका, कुलजन् उनेगलियेफ़्, ग० अ० अरुत्युन्नयान् और तैमूर इमाम कुली ओव्लीकुलीयेफ़्।

इसके बाद संघ-सोवियत् की पहली बैठक समाप्त हुई।

* * *   * * *

संघ-सोवियत् के सामने एक स्थायी बजट कमीशन का प्रस्ताव पेश करते हुए डिपुटी द० स० कोरोत्चेन्को ने कहा—

"हमारी साम्यवादी अर्थनीति में बजट अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण चीज़ है। बजट हमारे देश के सारे आर्थिक जीवन पर प्रकाश डालता है। बजट सोवियत्-सरकार की राष्ट्रीय आय निश्चित करता है; हमारी जनता के लाभ के लिए, साम्यवादी समाज के विकास के लाभ के लिए, कोल्खोज़् और सोव्खोज़् (सरकारी खेती) के विकास और दृढ़ करने के लिए। बजेट निश्चित करता है, व्यय को जो रहने के घरों, स्कूलों, अस्पतालों के निर्माण में ख़र्च होगा, जो म्युनिसिपलिटी पर खर्च होगा, जो हमारे संघ की विशाल कमकर जनता की आर्थिक भलाई तथा सांस्कृतिक उन्नति के बढ़ाने में खर्च होगा। बजेट निश्चित करता है, संघ-सरकार के उन खर्चों को, जो कि हमारी साम्यवादी जन्मभूमि की रक्षा और दृढ़ता के लिए आवश्यक सैनिक शक्ति पर ख़र्च होता है, जो हमारी बहादुर लाल-सेना की ताक़त को मज़बूत करने के लिए ख़र्च होता है। (हर्षध्वनि)

"हमारे साम्यवादी राज्य के हाथों में बजेट अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण काम है,

जो कि हमारे देश में साम्यवादी निर्माण की दृढ़ता के काम में, कमकर जनता की आर्थिक भलाई, और सांस्कृतिक उन्नति के काम मे अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण चीज़ है। आज वर्तमान समय में तो साम्यवादी (कम्युनिस्ट) समाज को कामयाबी के साथ निर्माण करने के काम मे और भी महत्त्व रखता है। सघ-राज्य के वजट के प्रश्नों पर स०स०स०र० की महासोवियत् को बड़े ध्यान से विचार करना चाहिए।

"वजेट के हर एक अश, आय-व्यय, दोनों बातो पर बड़ी बारीकी के साथ विचार करने, वजट के सभी अगो के कार्य-रूप में परणित करने के लिए बाक़ायदा अंकुश की व्यवस्था करने के लिए महासोवियत् के अधि-वेशन द्वारा स्वीकृति लेने के लिए जो वजेट पेश होगा, उसपर गौर करने के लिए में उक्रइन्, मास्को नगर, मास्को प्रान्त और कजाकस्तान के मेम्बरों की ओर से प्रस्ताव करता हूँ कि सघ-सोवियत् एक स्थायी वजट-कमीशन नियुक्त करे।

*** ***

डिप्टी ल० प० बेरिया ने परराष्ट्र-विभाग के स्थायी कमीशन की नियुक्ति के लिए प्रस्ताव करते हुए कहा—सोवियत् सघ की वैदेशिक नीति निर्भर करती है, साम्यवादी निर्माण के लाभ के ऊपर तथा पूँजीवादी राज्यों से घिरे हमारे देश की परिस्थिति के ऊपर। साथी स्तालिन् ने कहा है—'हमारी वैदेशिक नीति स्पष्ट है। हम शान्ति को कायम रखना चाहते है। ....हम शान्ति के लिए हैं। और हम शान्ति के ज़बर्दस्त हामी हैं। लेकिन हम धमकियों से डरनेवाले नही है। और तैयार हैं, लड़ाई के लिए छेड़खानी करनेवालो को थप्पड़ की जगह घूसा मारने के लिए।'

"साथी स्तालिन् के कहे हुए ये शब्द सारी सोवियत् जनता की इच्छा और विचारों को प्रकट करते है।........ .

"वर्तमान् समय मे जब कि हमारे देश में हर एक आदमी को शान्ति-

पूर्ण काम और सुख-सन्तोषमय जीवन पाना निश्चित है, उनकी सांस्कृतिक और आर्थिक उन्नति का विकास निश्चित है; पूँजीवादी देशों में फ़ासिस्ट राज्यों के मालिक, लोगों को एक दूसरे के ख़िलाफ़ भड़का रहे हैं—और मुट्ठी भर साम्राज्यवादियों की भलाई के लिए लोगों को युद्ध की भीषण अग्नि में झोंक रहे हैं।

"ऐसे समय में महान् कहे जानेवाले पूँजीवादी राष्ट्र छोटी जातियों को अपना दास बना रहे हैं—हमारे देश में, सोवियत्-भूमि में, सभी जातियों की अपनी जातीय आर्थिक और सांस्कृतिक समृद्धि सुनिश्चित है। संघ-सोवियत् की जातियाँ अखंड मित्रता के साथ एक महान् परिवार बन गई हैं।

"हमारी वैदेशिक नीति को दृढ़ करती है हमारी लाल सेना की दुर्धर्ष शक्ति (तूफ़ानी हर्षध्वनि। सब खड़े हो जाते हैं और नारे लगाने लगते हैं, 'हुरा, साथी वोरोशिलोफ़्')। हमारी लाल-सेना सोवियत्-जनता के साथ ख़ून के सम्बन्ध से बँधी हुई है, और उसके अपार प्रेम की भाजन है। . . . .

"हमारी वैदेशिक नीति, उस सोवियत् जनता की नैतिक और राजनैतिक एकता पर अवलंबित है, जो कि लेनिन्-स्तालिन् पार्टी को घेर कर एक बनी है। सोवियत्-भूमि के सभी लोग अपने प्रिय नेता महान् स्तालिन् के चारों ओर खड़े हो एक बने हैं (देर तक तूफ़ानी हर्षध्वनि)। (सभी खड़े होकर नारा लगाते हैं। 'चिरंजीव प्यारे साथी स्तालिन्', 'हुरा साथी स्तालिन्!' स्तालिन् के लिए नारा कई मिनट तक लगता रहा)।

"हमारा देश जो एक ज़बर्दस्त साम्यवादी शक्ति बन गया है, उसके लिए हम किसके कृतज्ञ हैं? संसार में सबसे बलिष्ठ हमारी किसान-मज़दूरों की लाल-सेना है, उसके लिए हम किस के ऋणी हैं? सोवियत्-संघ की जातियाँ जो आपस में घनिष्ट मित्रता के सूत्र से बद्ध हैं, उसके लिए हम किसके ऋणी हैं? इन सबके लिए सोवियत्-संघ के लोग ऋणी हैं

लेनिन्-स्तालिन् पार्टी की नीति के, ऋणी हैं महान् स्तालिन् के बुद्धिमत्ता-पूर्ण नेतृत्व के! (तवारिश् स्तालिन् के सम्मान में जबर्दस्त हर्ष-ध्वनि)

"हमारे देश में साम्यवाद की विजय, सोवियत्-राष्ट्र की दिन पर दिन बढ़ती शक्ति के कारण फासिस्ट लड़ाई सुलगानेवालों के हम अधिकाधिक घोर घृणा और क्रोध के पात्र बनते जा रहे हैं। हमें एक क्षण के लिए भी साथी स्तालिन् की बुद्धिमत्तापूर्ण सम्मति को भूलना नहीं चाहिए कि सोवियत्-संघ को घेरनेवाले पूँजीवादी राज्य हमारे ऊपर हमला करने के मौके की प्रतीक्षा में हैं। वह जैसे भी हो तैसे हमें चूर्ण करना चाहते हैं। हमारी शक्ति को निर्बल बनाना चाहते हैं।

"वैदेशिक नीति के प्रश्न के महत्त्व को देखते हुए............. मैं प्रस्ताव करता हूँ कि महा-सोवियत् अपना एक स्थायी परराष्ट्र-कमीशन नियुक्त करे।"

२३—औद्योगिक प्रगति

सोवियत्-भूमि में उसके उद्योग-धंधों की जो उन्नति हुई है, वह संसार के इतिहास में अभूतपूर्व है। देश के उद्योगीकरण को एक तरह से उन्होंने खाली हाथ शुरू किया था। मुल्क के पहले के स्थापित कारखाने प्रायः वन्द हो चुके थे। ३ वर्ष के खूनी गृह-युद्ध ने रेलों, जहाजों, स्टीमरों को प्रायः विलकुल ही नष्ट कर दिया था। यंत्र और मेकेनिकल इंजीनियरिंग की विद्या अभी रूसी लोगों को छू भर ही गई थी। नये कारखानों के खोलने और वाहर से मशीनों के मँगाने के लिए पैसे की जरूरत थी। देश में न पैसा था, न वाहर का कोई देश एक पैसा भी ऋण देने के लिए तैयार था। ज़ारशाही ने इतने रुपये इंगलैंड, अमेरिका आदि से उधार लिये थे, कि उनके सूद तक का भी देना नवजात सोवियत्-शासन के लिए असंभव था। तीन वर्ष के महायुद्ध को चलाने के लिए ज़ारशाही ने इन कर्ज़ों का अधिक भाग लिया था। कर्ज़ की ज़िम्मेवारी से इन्कार कर देने के सिवा सोवियत् सरकार को कोई चारा न था। तीन वर्ष तक इंगलैंड, फ़्रांस, जापान ने रूस के गृहयुद्ध में पैसा और गोला-बारूद तथा कभी कभी फ़ौजें भी देकर क्रान्तिविरोधियों की मदद कीं। उसमें तो वे विफल हुए, लेकिन अव भी सोवियत्-शासन को उन्होंने न स्वीकार किया था, न राजदूतों का परस्पर परिवर्तन किया था।

यह हालत थी जव कि सोवियत्-सरकार ने देश का उद्योगीकरण आरंभ किया।

उसके पास लकड़ी का अटूट खज़ाना था। उसके पास वाकू का तेल और पेट्रोल था। अपना पेट काटकर वह कुछ गेहूँ भी वचा सकते थे। ये ही तीन चीज़ें थीं, जिनकी मदद से सोवियत् के कर्णधारों ने देश में नये

नये कल-कारखानों को स्थापित करना शुरू किया। वह उन चीजों को जर्मनी, अमेरिका जैसे देशों के पास भेजते थे और बदल कर नई मशीनें खरीदते थे। जैसे गाँवो में किसान जौ-गेहूँ देकर साग-भाजी बेचनेवालो या छोटे दूकानदारों से चीजें बदलते हैं, ठीक इसी तरह यह काम जारी हुआ। न्यूयार्क में प्रासादों का एक बड़ा भारी मुहल्ला ज़ार की सम्पत्ति थी। अमेरिकावालों ने उसे अपने कर्ज में कुर्क कर लिया। बाजार में एक पैसे की भी साख न रहने से व्यापारी को जैसी दिक्कते पड़ती हैं, सोवियत्-सरकार को भी वैसी ही दिक्कतें उठानी पड़ती थीं।

उन्होंने बड़े उत्साह, बड़े त्याग और बड़ी होशियारी के साथ अपना काम किया। १९२० तक ज़ारशाही रूसी साम्राज्य का बहुत सा हिस्सा सोवियत्-शासन के हाथ में आ गया था। लेकिन काकेशस्-और दूसरे कुछ भागों में अब भी क्रान्ति-विरोधियों का कब्जा था। लेनिन् ने इस अवस्था में भी उद्योग-धंधा, कल-कारखाने और सोवियत् के उद्योग को अपने पाँव पर खड़ा करने की कोशिश की। व्यापार, व्यक्तियों के हाथ से राष्ट्र के हाथ में आ गया था। मकान आदि के स्वामित्व में भी कितनी ही दूर तक समाजवाद की स्थापना हो चुकी थी, लेकिन मुल्क का आर्थिक ढाँचा इतना खराब हो गया था, कि लेनिन् को अपनी समाजवादी नीति को कुछ ढीला करना पड़ा। और नवीन आर्थिक नीति (न-आ-नी) का निश्चय करना पड़ा, जिसमें कितने ही क्षेत्रों में जहाँ समाजवाद आगे बढ़ चुका था, वहाँ से उसे पीछे हटना पड़ा। लेनिन् ने कहा—न-आ-नी द्वारा पीछे हटना वस्तुतः पीछे जाने के लिए नहीं है; बल्कि सारी शक्ति लगाकर और आगे कूदने के लिए। न-आ-नी को देख कर पूँजीवादी घरों में घी के चिराग जलने लगे। उन्होंने समझा, रूस में समाजवाद का तजर्बा नाकामयाब साबित हुआ।

न-आ-नी को उद्घोषित किये दो वर्ष भी नहीं हुए थे, कि २२ जनवरी १९२४ को लेनिन् का देहान्त हो गया। देश का उद्योग-धंधा अभी उस अवस्था से भी बहुत पीछे था, जहाँ कि ज़ारशाही रूस १९१३ ई० में

था। पार्टी और देश का नेतृत्व जनता के सब से नज़दीक और सब से अधिक प्रिय स्तालिन् के सिर पर आया। उसने देखा, कि देश का कल्याण उद्योग-धंधों को आगे बढ़ाये बिना नहीं हो सकता। कल-कारखानों को बिना बढ़ाये और मज़बूत किये समाजवाद की नींव देश में दृढ़ नहीं हो सकती। न-आ-नी ने हमें थोड़ा सा साँस लेने का मौक़ा दिया है। अगर वह देर तक रह गई, तो समाजवाद को बहुत नुकसान होगा।

उस वक़्त सोवियत् में तीन दल थे। बुख़ारिन् के नेतृत्व में नरम दल कह रहा था—हमने बहुत जल्दी की है, इस तरह देश को शीघ्र बदलने में बहुत हानि होने की संभावना है। लोग हर रोज़ की कठिनाइयों को ज़्यादा दिनों तक बर्दाश्त नहीं करेंगे। अच्छा यही है कि रेलों, जहाज़ों, बड़े बड़े कारख़ानों आदि को समाज के हाथ में रख कर बाक़ी व्यक्तियों के हाथ में छोड़ देना चाहिए; और समझा बुझाकर लोगों को समाजवाद के लिए तैयार करना चाहिए।

स्तालिन्—जो पार्टी के बहुमत का अगुवा था—का कहना था। हमारी गति तीव्र होनी चाहिए। रूस में शीघ्र से शीघ्र हमें समाजवाद की नींव दृढ़ कर देनी चाहिए; और इसके लिए संसार भर में साम्यवादी क्रान्ति के लिए प्रयत्न और प्रतीक्षा की जगह यही अच्छा है कि हम अपने देश को उद्योग-प्रधान करके पक्का समाजवादी बना दें।

गर्मदलीय कहे जानेवाले त्रोत्स्की और उसके अनुयायी कहते थे—समाजवाद सिर्फ़ एक मुल्क में स्थापित नहीं हो सकता। उसके लिए सारे संसार में समाजवादी क्रान्ति होनी चाहिए। इसलिए हमारी शक्ति का सब से अधिक अंश संसार में जल्दी से जल्दी क्रान्ति कराने में ख़र्च होना चाहिए। देश में उद्योग-धंधे बढ़ें, लेकिन प्रधानता हमें संसार-व्यापी क्रान्ति को ही देनी चाहिए; और उसीके लिए अपने श्रम, समय और धन का अधिक व्यय करना चाहिए।

स्तालिन् परिस्थिति को बड़ी पैनी दृष्टि से देख रहा था। वह

पा कि पूंजीवादी देश चार वर्ष के महायुद्ध के कारण थक गये है।
र्थिक और सामरिक शक्ति को फिर से मजबूत करने के लिए उन्हें
य चाहिए। ससार-व्यापी क्रान्ति इतनी सरल नहीं है कि रूस अपनी
ते उसे सफल कर दे। क्रान्ति की सफलता हर एक देश मे अधिकतर
करती है वहाँ के लोगो के ऊपर। फिर उस क्रान्ति के ऊपर भरोसा
क अपनी गति को धीमी कर देना बुद्धिमत्ता का काम नहीं होगा।
रा कर्तव्य है अपने देश का उद्योगीकरण कर समाजवाद को मजबूत
ता।

दाहने और बाएँ दोनो ओर से विरोधो के रहते स्तालिन् ने १९२४
आरभ से देश के कल-कारखानो को बढाने का काम शुरू किया।
स की जनता और साम्यवादी दल उसके साथ था। पूंजी पास मे न थी,
उधार भी मिलने वाला न था, लेकिन ३२ करोड हाथ काम करने के लिए
तैयार थे। धरती के भीतर अपरिमित प्राकृतिक और खनिज सम्पत्ति
मौजूद थी। स्तालिन् ने कमकरो के दिल में नव-निर्माण के लिए उत्साह
फूंका और पेट्रोल, गेहूँ, और लकडी से बदल कर आई मशीनो के द्वारा पुराने
कारखानो को फिर से खडा करने, नष्ट और परित्यक्त रेल-लाइनो के
फिर से चलने का काम आरभ हुआ। तीन वर्ष बीतते बीतते १९२७
में सोवियत् का उद्योगधधा वहाँ पहुँच गया, जहाँ कि महायुद्ध से पहले
(१९१३) वह था।

जैसी बेसरो-सामानी से काम शुरू किया गया था, और दृढता, त्याग
और लगन के कारण जितनी सफलता इन तीनो वर्षों मे हुई, उससे स्तालिन्
और साम्यवादी दल का उत्साह और बढा। अब तक छिटफुट कारखानो
को खड़ा करने या सुधारने का काम हुआ था। स्तालिन् ने सोचा,
छिटफुट काम करने की जगह अच्छा होगा कि सारे देश की आवश्यकताओ
और संभावनाओ को देखकर उद्योगीकरण की देश-व्यापी योजना तैया
की जाय; और देश-व्यापी उत्साह के साथ उसे सफल बनाया जाय। उस

देखा, कि हमारा देश उन उद्योगों में बहुत पिछड़ा हुआ है जो कि सभी उद्योगों की जड़ है। उदाहरणार्थ—सोवियत्, हवाई जहाजों को खुद नहीं बना सकती थी। मोटरें, लारियाँ, रेलें, इंजन और कपड़े आदि तैयार करने वाली मशीनों के बनानेवाली मशीनें उसे बाहर से मँगानी पड़ती हैं। सोवियत् देश चारों ओर से पूँजीवादी देशों से घिरा हुआ है। ये देश जानते हैं कि अगर सोवियत् दूसरे देशों में क्रान्ति मचाने का खयाल छोड़ भी दे, तो भी यदि अपने देश में सफलता पूर्वक लोगों को सुख और सन्तोष का जीवन देने में सफल हुई, तो इसका फल उनके देश के श्रमजीवियों पर जो पड़ेगा, वह पूँजीवादी शासन के लिए सब से अधिक खतरनाक साबित होगा। निश्चय ही पूँजीवादी ज़्यादा दिन तक सोवियत्-शक्ति को उन्नति के पथ पर अग्रसर होते या देर तक तमाशा नहीं देख सकते। यदि आगे चलकर सोवियत् को अपने शत्रुओं से लड़ना पड़ा, और उस वक़्त पूँजीवादी देशों ने युद्ध की आवश्यक सामग्रियों—हवाई जहाज, टैंक, मोटर आदि—को देना बन्द कर दिया, तो सोवियत् का गला घुट जायगा।

इन विचारों और इन परिस्थितियों में प्रथम पंच-वार्षिक योजना का जन्म हुआ।

दो पंचवार्षिक योजनाएँ सफलता पूर्वक समाप्त हो चुकी हैं। तीसरी पंच-वार्षिक योजना १९३८ से आरंभ हुई है। इन योजनाओं के बारे में हमने अन्यत्र लिखा है। इसलिए उसे यहाँ दोहराने की जरूरत नहीं। इन पंचवार्षिक योजनाओं ने सोवियत् जनता के जीवन में उससे कम परिवर्तन नहीं किया है, जैसा कि क्रान्ति के कारण हुआ।

सोवियत् की आर्थिक नीति समाजवाद के आधार पर है। वहाँ मनुष्य का श्रम असल चीज़ है। चीज़ों की उपज में श्रम ही सब कुछ करता है। नफे का ख़याल आते ही उपज विष के रूप में परिणत हो जाती है। मशीनें थोड़े समय और थोड़े परिश्रम में मनुष्य-जीवन की उपयोगी चीज़ें बहुत परिमाण में दे सकती हैं। इससे तो मनुष्य का जीवन अधिक सुखमय होना

एक आदमी कारख़ाना खोलता है, उसको नफ़ा होता है। पड़ोसी को भी उसे देखकर कारख़ाना खोलने का लोभ होता है। दोनों माल तैयार करते हैं। गाहक उनके नपे-तुले हैं। इधर मशीनों में नये नये सुधार होते हैं जिससे माल की उपज और भी बढ़ जाती है। माल-गोदामों में माल के भर जाने पर कारख़ानेवाले क़ीमत घटाने में एक दूसरे से बाज़ी मारना चाहते हैं; तो भी ग्राहकों की आवश्यकता या सामर्थ्य से अधिक माल रखा हुआ है। अब माल की क़ीमत भयंकर तौर से गिर जाती है। संसार में मन्दी छा जाती है। हज़ारों करोड़पतियों के दिवाले निकलते हैं। पैसों की महँगी के कारण किसानों का खून-पसीने एक किया हुआ गेहूँ का भाव भी गिर जाता है। झोपड़ी से ले कर महल तक हाहाकार मच जाता है। अब कारख़ानेवाले छः दिन की जगह तीन दिन काम कराने लगते हैं। छः हज़ार मज़दूरों में से तीन हज़ार को जवाब दे देते हैं। दिवाले से कुछ बच जाते हैं। अब माल की उपज में बहुत कमी कर देने से गोदाम में भरा हुआ माल धीरे धीरे खपने लगा। उसके खतम होने पर बाज़ार में फिर माल की माँग बढ़ी। ३००० से फिर ५००० मजदूर किये गये। तीन दिन की जगह फिर हफ़्ते में छः दिन काम होने लगा। कुछ दिन तक तो माँग ने माल खींचा, लेकिन उपज की चाल तेज़ है। ८—९ वर्ष बीते। फिर गोदामों में माल भर गया, फिर. दर गिराने में कारख़ानेवाले एक दूसरे का गला काटने लगे। फिर मन्दी, फिर सत्यानाश !

समाजवादी अर्थ-नीति में मन्दी का डर नहीं। क्योंकि वहाँ चीज़े नफ़े के लिए नहीं पैदा की जातीं; और इसीलिए बाज़ारों की तलाश में दूसरों से लड़ने की भी आवश्यकता नहीं।

*** ***

१९२९ में पूँजीवादियों के प्रताप से भयंकर मन्दी आई। तीन चार साल तक उसकी भयंकरता बढ़ती गई। उसके बाद बाज़ार में चीज़ों की कुछ

वढी, दाम वढा और कारखानेवाले भविष्य को कुछ आशापूर्ण दृष्टि
दलने लगे। लेकिन १९३७ का अन्त भी नहीं होने पाया कि फिर मन्दी
काले बादल पूँजीवादी देशों पर दौडने लगे। युक्त राष्ट्र अमेरिका
सार का सब से बडा पूँजीपति देश है। १९३७ की अन्तिम तिमाही मे वहाँ
न्दी के पूर्व-लक्षण दिखलाई देने लगे। कारखानेवाले बहुत से मजदूरों को
जवाब देने लगे। कोयला, तेल, लोहा आदि सभी चीजों की उपज को
काम के दिनों और हाथों को घटा कर कम करने लगे। दिसम्बर (१९३७)
के आरम्भ में वहा के लोहे के कारखाने अपनी सामर्थ्य का २७.५ सैकडा
ही काम करने थे। एक साल पहले वे ही कारखाने ७४ सैकडा काम करते
थे। कपडे के कारखानेवालों ने २५ सैकडा उपज कम करने का पिछले
दिसंबर में ही निश्चय कर लिया। उसी समय नकली रेशम के कारखानों
ने अपनी उपज को ८५ सैकडा से ६५ सैकडा कर देना तय कर लिया।

सोवियत् के उद्योग-धंधे से मुकाबला करने पर मालूम होगा कि वहाँ
उपज के घटाने की कौन कहे, वह बढती ही जा रही है। पिछले साल
की अपेक्षा १९३६ मे कारखानों ने २८ सैकडा माल ज्यादा तैयार किया।
१९३७ मे यह और आगे बढा और १९३७ की अपेक्षा इस साल (१९३८)
१५.३ सैकडा बढाने की योजना है।

***

***

सोवियत् की औद्योगिक उन्नति के दिग्दर्शन के लिए उसके कु
कारखानों से हम पाठकों का परिचय कराते है—

मरीइन्स्क-सेलूलाइड—कागज कारखाना—

मरीइन्स्क मे सेल्लूलाइड और कागज की मिलों के साथ साथ बिज
का पावर-हाउस भी है। पावर हाउस मे [illegible] किलोवाट की ताकत
कागज की मिल २८,००० टन सालाना कागज देगी। ये कारखाने
जनवरी महीने मे तैयार हुए है।

लाल-तीतन-रवर-फैक्टरी मास्को—पचास साल पहले १८८७ में पहले पहल यह कारख़ाना बना था। तब से इन ५० वर्षों में कितना भारी परिवर्तन हो गया है?

१९३७ में इस फैक्टरी ने १४ करोड़ ७ लाख २ हज़ार रूबल (प्रायः साढ़े छै करोड़ रुपये) का माल तैयार किया। इस साल अपने हिस्से की योजना को १०५·७६ सैकड़ा पूरा किया। उसने ३ करोड़ १६ लाख जोड़े रबर के जूते और ५ लाख ४५ हज़ार दस्ताने बनाये। १९३६ से मुक़ाबला करने पर १९३७ में ३६ सैकड़ा माल अधिक तैयार हुआ।

१८८७ में जब यह कारख़ाना खोला गया था, तब वह छोटी सी दस्तकारी की दूकान थी; जिसमें ६० मज़दूर काम करते थे। आज इसमें काम करनेवाले लोगों की संख्या १२ हज़ार है। १८९१ में हर रोज़ ३० जोड़े रबर के जूते यहाँ बनते थे। उस समय कमकरों को साढ़े ग्यारह घंटा काम करना पड़ता था और तनख्वाह बहुत कम थी। आठ और दस वर्ष के लड़के इसमें पीसे जाते थे। आज कोई लड़का काम करनेवाला नहीं है। किसी कमकर को सात घंटा से अधिक काम नहीं करना पड़ता। हाथ से करने का काम भी बहुत कुछ मशीन से किया जाता है।

लाल-तीतन् ने १९३६ से नकली रबर का इस्तेमाल शुरू किया है; और मशीन से जूते का ढालना और फिर दबा कर उसमें सीवन आदि पैदा कर देना उसी साल से शुरू हुआ है। पहले इस कारख़ाने में असली रबर इस्तेमाल होता था। सोवियत् देश में कोई भी स्थान इतना गर्म नहीं है कि जहाँ रबर का वृक्ष लग सके, इसी लिए बाहर से माल मँगाने को कम करने तथा स्वावलंबी बनने के लिए वहाँ वैज्ञानिक नक़ली रबर का व्यवहार बहुत अधिक किया जाता है। लाल-तीतन् अब सिर्फ २० सैकड़ा ही विदेशी रबर खर्च करता है।

स्तख़ानोफ़् आन्दोलन ने यहाँ की जाँगर की उपज शक्ति बहुत बढ़ा दी है। कमकरों में ७० सैकड़ा तूफ़ानी कमकर और स्तख़ानोवी हैं।

था। इस भट्ठे की नई किस्म के चौदह भट्ठे स०स०स०र० में तैयार किये गये हैं। इन भट्ठों के जरिये से स०स०स०र० ने संसार में लोहा पैदा करने के परिमाण के नये रेकार्ड कायम किये हैं। इनके सफलतापूर्वक काम करने ने जर्मनी और अमेरिका के धातु-शास्त्रियों की इस बात को झूठा साबित कर दिया, कि भट्ठों के आकार को बहुत अधिक बढ़ाना ख़तरनाक और हानिकारक है। अकदमिक (एकेडेमीशियन) म० अ० पाव्लोफ़् ने मग्नीतोगोर्स्क के धौंकू भट्ठों पर अन्वेषण किये हैं। उसने उक्त सम्मति को झूठा साबित कर दिया है। असल में भट्ठों के आकार को बहुत बढ़ाना पूँजीवादी देशों के लिए दूसरे कारण से ठीक नहीं है। वहाँ के वनियों के पास सोवियत् के जितनी मोटी थैली नहीं है।

पावलोफ़् की वैज्ञानिक खोजें बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उसीकी खोज के आधार पर सोवियत् इंजीनियरों ने इतना साहस किया और ऐसा धौंकू भट्ठा तैयार किया, जो आज तक के बड़े से बड़े भट्ठे से ड्योढ़ा है।
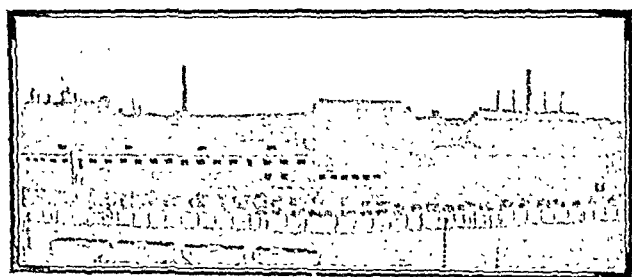
जाकोरोज्ये का लोहे का कारख़ाना

जनवरी से जाकोरोजस्ताल (यही इस कारखाने का नाम है) भट्ठे ने काम शुरू किया है। इसके मशीन और उपज के और तरीके में नये से नये आविष्कारों को वर्ता गया है। इसमें यह यूरोप के भट्ठों में ही श्रेष्ठ नहीं है, बल्कि अमेरिका के अच्छे से अच्छे भट्ठे भी इसका मुकावला नहीं

कर सकते। इस अद्वितीय भट्ठे में छोटे से छोटा काम भी मशीन से लिया जाता है। इसे हर मिनट ४१०० घन मीटर हवा २·५ हवाई दवाव के साथ चाहिए। इतनी हवा भट्ठे में डालने के लिए १२००० अश्वशक्ति एक टर्बाइन की है।

सभी मशीन और बिजली की कारीगरी संबंधी सामग्री, सभी धातुओं की बनावट तथा नापने, नियमन करने आदि के पुर्जे, सभी अग्नि से न जलने वाले पदार्थ सोवियत्-भूमि मे सोवियत् के कारखानों मे, और सोवियत् के कच्चे माल से बने हैं। इस भट्ठे का उद्घाटन सोवियत्कारीगरी की एक बड़ी विजय है।

जाकोरोज्स्ताल् के फौलादी चद्दर बनाने के कारखाने मे भी बड़े जोर से काम हो रहा है। परीक्षा हो रही है। परीक्षा के समाप्त होने के बाद संसार का सब से बड़ा लोह-चादर बनानेवाला कारखाना काम शुरू करेगा। इस कारखाने की चिपटी करने की शक्तिशाली मशीन (जो कि युरोप मे सिर्फ एक और अमेरिका में वैसी दो है) प्रति वर्ष २० लाख टन फौलाद की ईंटों को चिपटी किया करेगी। बड़े कारखाने की जो दूसरी शाखा बन रही हैं, वह है एक दबानेवाली मशीन। जिसमें मध्यम आकार का फौलाद तैयार किया जायगा। फौलाद की पतली चद्दर बनानेवाली मशीन तथा ठंडे फ़ौलाद को दवानेवाली मिल आदि भी करीब करीब तैयार है। चद्दर बनाने वाली शाखा प्रतिवर्ष तेरह लाख टन फौलादी चद्दर बनाया करेगी, इनमें नौ लाख टन बहुत ऊँचे दर्जे के फौलाद की होंगी। यह शाखा कारखाना एक मील से ज्यादा लम्बा है। इसकी बिजली की मोटर पचास हज़ार अश्वशक्ति से ज्यादा ताकत की है। यह प्रति मिनट ३ टन फौलाद तैयार करेगी। फौलाद की इतनी अधिकता से उत्पत्ति मोटर और हवाई जहाज के उद्योग को और आगे बढ़ावेगी।

पतली चद्दर बनानेवाली मिल अपने सहायक यंत्रों के साथ इसी साल काम करने लगेगी। यह भट्ठे के चलने का इन्तजार कर रही है।

में वेकार हो कर पड़े हुए थे। खुले भट्ठे और दवाने की मिल नष्ट हो चुकी थीं। केन्द्रीय गर्म करने का प्रवन्ध काम नहीं कर रहा था। उसके वदले वर्कशाप में छोटे छोटे चूल्हे थे। कारखाने में लाई रेलवे लाइन टूट-टाट गई थी। १२००० के करीब कमकर वेकार हो गये थे।

राष्ट्रीकरण के वाद पुतिलोफ़् के श्रमिक वड़ी तत्परता के साथ नष्ट-प्राय कारखाने को पुन: संगठित करने में लग गये। उन्होंने इसके लिए ईंधन और धातु जमा किया। वे शान्ति पूर्वक काम आरंभ करना चाहते थे। उसी समय गृह-युद्ध आरंभ हो गया। अधिकांश कमकर युद्ध के मैदान की ओर चले गये। कारखाने के लिए ईंधन और धातु एवं कमकरों के लिए रोटी के अभाव से फ़ैक्टरी में कोई कार्य हो नहीं सकता था। जो कमकर पीछे वच गये थे, विशेष कर पुतिलोफ़् की औरतें भूखी रहने पर भी छुट्टी के दिन में वड़े स्वार्थ-त्याग के साथ इंजनों और सशस्त्र ट्रेनों की मरम्मत किया करती थीं। जिस वक़्त युदेनिच् पेत्रोग्राद् की ओर वढ़ता आ रहा था, उस वक़्त वे भूत की तरह काम करती थीं। जुलाई १९२२ तक कारखाना एक तरह सूना हो गया था। वहाँ सिर्फ़ १५=८ कमकर और ४२० आफ़िस में काम करनेवाले रह गये थे।

१९२० में गृह-युद्ध खतम हुआ, लेकिन पुतिलोफ़् को दो साल और इन्तज़ार करना पड़ा। १९२२ के अन्त में खुले मुंह का भट्ठा पहले पहल चलाया गया। १९२३ में पहले पहिल इंजन और गाड़ियाँ वनकर निकलीं।

वोल्खोफ़् के पहले स्टेशन के लिए इस कारखाने ने २७० टन फौलाद का ढाँचा दिया। सोवियत् पुतिलोफ़्-वर्क्स के वने पहले चार ट्रैक्टर १ मई १९२४ को लेनिन्ग्राद् के ऊरित्स्की चौक में प्रदर्शित किये गये थे। आज पुतिलोफ़् ट्रैक्टर-फ़ैक्टरी के एक लाख ट्रैक्टर सोवियत्-संघ के कोल्खोज़ों में काम कर रहे हैं। इनमें आधे सुधरे हुए ट्रैक्टर हैं। नये ढंग के सुधरे ट्रैक्टर १९३४ से यहाँ वनने लगे।

पहली पंच-वार्षिक योजना में इस फ़ैक्टरी की उपज चौगुनी हो गई।

५॥ करोड़ रूबल कारखाने के पुनः निर्माण में खर्च किये गये। ३००० किलोवाट की ताकत की पहली टर्बाइन (जिसके चक्के के पखो पर पानी गिरने से तेजी से घूम कर बिजली पैदा करता है) सर्व प्रथम १ मई सन् १६३१ को बनी। १६३४ के करीब पुतिलोफ् का नाम बदलकर किरोफ् हो गया। १६३७ मे किरोफ् कारखाने मे बनी टर्बाइनें सोवियत्-सघ के ११० विद्युत् स्टेशनो मे बिजली तैयार कर रही थीं।

द्वितीय पच-वार्षिक योजना के समय कारखाने का और विस्तार हुआ। सारी प्रथम पच-वार्षिक योजना मे जितना माल हमने तैयार किया था, उतना १६३७ के सिर्फ एक साल मे तैयार किया।

१६२४-२५ की अपेक्षा इस कारखाने ने १६३७ मे १६ गुना अधिक माल तैयार किया।

कारखाने के २७ हज़ार कमकरो का जीवन एकदम दूसरा हो गया है। पहले कारखाने के आसपास ५६ शराबखाने, १२ गिर्जे और बहुत सी सरायें थीं। अब उनकी जगह पर किरोफ् के कमकरो के लिए ऊँचे प्रासाद जैसे एपार्टमेंट घर बन गये हैं। बीस स्कूल है। लेनिन्ग्राद् का सब से बड़ा विक्रय-भडार (डिपार्टमेंट स्टोर) यहीं है। गोर्की सास्कृतिक-भवन की विशाल इमारत भी यहीं पर है। सिनेमा, थियेटर, बगीचे कितने ही हैं। पहले की धूल उड़ती कच्ची सड़क की जगह पर एक विस्तृत पक्की सड़क बनी है।

१६३७ में सरकार के खर्च से १६५२ आदमी सैनीटोरियम में भेजे गये, और हज़ारों अपनी छुट्टी मे काला सागर के तटवर्ती स्वास्थ्यप्रद प्रदेशों में स्वास्थ्य सुधारने गये।

१६३७ में कमकरो के ५०० लडके बालचर-कैम्प मे दूर भेजे गये। दूसरे लडको ने गर्मियों को विश्राम-गृहो और सैनीटोरियम मे बिताया। कारख़ाने मे बहुत से बच्चेखाने और किंडरगार्टन है। ४५० विद्यार्थियों के लिए एक कला-विद्यालय है।

सिर्फ़ कारख़ाने के ट्रेड यूनियन् (मजदूर-संघ) ने ही १९३७ में २५ लाख रूबल क्लब, शिक्षा, खेल और मनोविनोद पर ख़र्च किये।

कमकरों में से काफ़ी संख्या स्वाध्याय में लगी है। ४०६५ कमकर और आफ़िस कार्यकर्ता कालेजों, टेकनिकल स्कूलों, कमकर-तैयारी-स्कूलों में पढ़ रहे हैं। ६५०० व्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी और तरुण कम्युनिस्ट-संघ के स्कूलों और अध्ययन-केन्द्रों में राजनैतिक शिक्षा पा रहे हैं। १५०० कमकर सयानों के स्कूल में पढ़ते हैं। ६०० मजदूर-संघ के आन्दोलन का अध्ययन करते हैं।

इस साल (१९३८) में कारख़ाने के राष्ट्रीय होने का वीसवाँ वार्षिकोत्सव था। इसने कमकरों में स्तख़ानोव-आन्दोलन की बड़ी लहर पैदा कर दी। प्रति दिन उपज के परिमाण को ऊँचा ऊँचा बढ़ते देखा जा रहा है। कई सौ कमकर स्तख़ानोवी हैं; और उन्होंने अपने हिस्से का काम अधिक परिमाण में पूरा किया। इस प्रकार पुतिलोफ़् की क्रान्तिकारी परंपरा अब भी सजीव रूप में है।

* * *   * * *

दियासलाई के कारख़ाने—महायुद्ध से पहले रूस में ११५ दियासलाई बनाने की छोटी छोटी फ़ैक्टरियाँ थीं। क्रान्ति के बाद दियासलाई का उद्योग फिर से संगठित किया गया। सभी काम मशीन से होने लगा तथा फ़ैक्टरियों की संख्या अधिक न रख कर थोड़ी किन्तु बड़ी फ़ैक्टरियाँ कायम की गईं। उदाहरणार्थ—

वर्ष	चलने वाली फ़ैक्टरी	स्वसंचालितमशीन फ़ैक्टरी	उपज (डिबिया)
१९१४	१५५	२	४ अरब ५० करोड़
१९३५	२३	९३	१० अरब ८४ करोड़ २० लाख

१९३५ मे दियासलाई बनाने में सोवियत्-संघ का नवर अव्वल रहा, जैसा कि निम्न उल्लेख से मालूम होगा—

स०स०स०र०	११	अरव (डिबिया)
यु० रा० अमेरिका	८	,, ,,
चीन	६	,, ,,
जापान	४	,, ,,
स्वीडेन	२	,, ,,

विदेश में दियासलाई भेजने मे स०स०स०र० का नबर दूसरा है। अव्वल नबर है स्वीडेन का।

स०स०स०र० के दियासलाई के कारखाने देश मे चारो ओर फैले हुए है। वह वडी अच्छी तरह सगठित है, और नई से नई मशीनो से सुसज्जित है। तीली के लिए सबसे अच्छी लकडी इस्तेमाल की जाती है। बेलोरूसिया, लेनिन्ग्राद् और पश्चिमी रूस मे वडे वडे कारखाने है।

*** ***

सोवियत् चाय—चाय का उद्योग सोवियत् में एक नई चीज है। यद्यपि चाय की खेती काकेशस् मे ४० वर्ष पहले आरभ की गई थी। लेकिन १९३० के क़रीव तक २९४५ एकड तक ही वह पहुँची थी। वार्षिक उपज ५॥ सौ टन होती थी। तीन छोटी छोटी फैक्टरियाँ थीं, जिनमे हर एक सौ-सवा सौ टन प्रतिवर्ष चाय तैयार करती थीं।

१९२५ के अत मे 'चाइ गुर्जिया' (जाजिया की चाय) के नाम से संस्था संगठित की गई। तब से चाय का उद्योग वडी तेजी से आगे वढा। १९३६ में जार्जिया की चाय ९४,२५० एकड मे थी। इनमें ६९,५६० एकड कोल्खोज ने तैयार किये। ७० हजार से ज्यादा किसान-घर चाय की खेती मे लगे हुए है। 'चाइ गुर्जिया' सोव्खोज (सरकारी खेती) अकेला १८,४७५ एकड़ वगीचों का मालिक है। उसके पास नई से नई मशीनोवाली ३२

फैक्टरियाँ हैं। १९३६ में इन फैक्टरियों ने १९२।। करोड़ किलो (सेर से कुछ अधिक) हरी पत्तियाँ और ४७।। लाख किलो तैयार की हुई पत्तियाँ वाज़ार में रखीं।

इस प्रकार १० वर्षो के भीतर चाय के वग़ीचे ३० गुना वढ़ गये हैं और उपज ४० गुना। चाय के वारे में जो वैज्ञानिक खोज सोवियत् विज्ञान-वेत्ताओं ने की है, उसके कारण १९३६ में उपज १९३२ की अपेक्षा ढाई-गुना अधिक वढ़ गई है। किसी किसी जगह पर एक एकड़ में ६० मन तक पत्ती निकली है।

यहाँ यह ध्यान देने की वात है, कि जिन वर्षो में पूँजीवादी देशों ने वाज़ार की मन्दी से डर कर अपने अपने यहाँ चाय की उपज को वहुत कम किया है; उसी समय सोवियत् ने अपने यहाँ उपज को कई गुना वढ़ाया है।

परिमाण में ही सोवियत् चाय नहीं वढ़ी, वल्कि गुण में भी उसने ख़ास स्थान प्राप्त किया है। लन्दन के चाय के विशेपज्ञों ने इसे विदेश की चुनी हुई चायों के मुक़ावले में रखा है। डाक्टर हेरल्डमान प्रसिद्ध चाय के विशेषज्ञ कितनी ही वार जार्जिया आये हैं। और उनकी राय में जार्जिया की चाय संसार की सव से अच्छी चाय है। वह दार्जिलिंग से मुक़ावला कर सकती है। रासायनिक पदार्थ किस चाय में किस परिमाण में है, वह यहाँ दिया जाता है—

स्थान		निचोड़	टैनिन्	काफेइन्	नेत्रजन्
दार्जिलिंग	..	४५·७८	१३·७६	३·५९	४·०२
गुर्जी (उच्च)	..	४४·०५	१४·५३	३·००	५·११
चीनी (उच्च)	..	३८·८१	१२·७४	२·९९	४·२[illegible]
गुर्जी (मध्यम)	..	३३·७०	१२·१३	२·८३	४·७[illegible]
चीनी (मध्यम)	..	३२·७४	११·९७	३·०२	४·[illegible]

१९३७ में ३६ फ़ैक्टरियाँ हो गईं और उनसे २ करोड़ ६३ ला[illegible]

फैक्टरियाँ हैं। १९३६ में इन फैक्टरियों ने १९२॥ करोड़ किलो (सेर से कुछ अधिक) हरी पत्तियाँ और ४७॥ लाख किलो तैयार की हुई पत्तियाँ बाज़ार में रखीं।

इस प्रकार १० वर्षों के भीतर चाय के बग़ीचे ३० गुना बढ़ गये हैं और उपज ४० गुना। चाय के बारे में जो वैज्ञानिक खोज सोवियत् विज्ञान-वेत्ताओं ने की हैं, उसके कारण १९३६ में उपज १९३२ की अपेक्षा ढाई-गुना अधिक बढ़ गई है। किसी किसी जगह पर एक एकड़ में ६० मन तक पत्ती निकली है।

यहाँ यह ध्यान देने की बात है, कि जिन वर्षों में पूँजीवादी देशों ने बाज़ार की मन्दी से डर कर अपने अपने यहाँ चाय की उपज को बहुत कम किया है; उसी समय सोवियत् ने अपने यहाँ उपज को कई गुना बढ़ाया है।

परिमाण में ही सोवियत् चाय नहीं बढ़ी, बल्कि गुण में भी उसने ख़ास स्थान प्राप्त किया है। लन्दन के चाय के विशेषज्ञों ने इसे विदेश की चुनी हुई चायों के मुक़ाबले में रखा है। डाक्टर हेरल्डमान प्रसिद्ध चाय के विशेषज्ञ कितनी ही बार जार्जिया आये हैं। और उनकी राय में जार्जिया की चाय संसार की सब से अच्छी चाय है। वह दार्जिलिंग से मुक़ाबला कर सकती है। रासायनिक पदार्थ किस चाय में किस परिमाण में है, वह यहाँ दिया जाता है—

स्थान		निचोड़	टैनिन्	काफेइन्	नेत्रजन्
दार्जिलिंग	..	४५·७८	१३·७६	३·५९	४·०२
गुर्जी (उच्च)	..	४४·०५	१४·५३	३·००	५·११
चीनी (उच्च)	..	३८·८१	१२·७४	२·९९	४·२६
गुर्जी (मध्यम)	..	३३·७०	१२·१३	२·८३	४·७४
चीनी (मध्यम)	..	३२·७४	११·९७	३·०२	४·२९

१९३७ में ३६ फ़ैक्टरियाँ हो गईं और उनसे २ करोड़ ६३ लाख ७१

हजार किलो हरी चाय निकली। जिसमें ६३ लाख किलो उच्च प्रकार की चाय है।

** **

सिनेमा-फिल्म—सिनेमा उद्योग सोवियत् में बड़े जोर से बढ़ा है। यहाँ के फिल्म ही ससार में बहुत ऊँचा दर्जा ही नहीं रखते हैं वल्कि उनके तैयार करने के लिए देश के भिन्न भिन्न भागों में बहुत से स्टुडियो तैयार हुए हैं, जिनमे, कला, शिक्षा, टेक्निक्, सार्वजनिक विज्ञान, समाचार सबधी फ़िल्म तैयार होते हे।

१—समाचार सबंधी फिल्म मास्को, लेनिन्ग्राद्, रोस्तोफ्, कियेफ् तथा सोवियत् की और और जगहों पर अवस्थित शाखाओ में तैयार किये जाते हैं।

२—सोवियत् फिल्म को विदेश में भेजने के लिए एक अलग संस्था (सोयूजिन्तोर्गकिनो, मास्को) बनी हुई है। कुछ फिल्म स्टुडियो के नाम इस प्रकार है—

३—मास्को कला-फ़िल्म (मोस्-फ़िल्म)

४—लेनिन्ग्राद् कला-फिल्म (लेन्-फिल्म)

५—मास्को शिक्षा-फिल्म (मोयुज-देत्-फिल्म)

६—मास्को सजीव कार्टून (सोयेज्-मुल्त्-फिल्म)

७—यल्ता-कला फिल्म

८—मास्को-दोहरौनी-फैक्टरी

९—लेनिन्ग्राद्-दोहरौनी-फैक्टरी

१०—मास्को वैज्ञानिक शिक्षा-देशरक्षा और टेक्निक् सबधी फ़िल्म (मोस्तेच् फ़िल्म)

११—लेनिन्ग्राद् (लेन्-तिज्-फिल्म)

१२—नोवो सिबिर्स्क (लेन्-तिज्-फिल्म)

१३—मास्को लैन्टर्न्स-स्लाइड फ़ैक्टरी

१४—श्वोस्त्का-फ़िल्म-फ़ैक्टरी

१५—येरेस्लाव्ल्-फ़िल्म फ़ैक्टरी

१६—लेनिन्ग्राद् रोयन्तगेन् फ़िल्म फ़ैक्टरी

१७—कज़ान् फ़ोटो रसायन फ़ैक्टरी

१८—लेनिन्ग्राद् फ़िल्म-यंत्र फ़ैक्टरी (लेन्-फ़िन्-आर)

१९—ओदेसा फ़िल्म यंत्र फ़ैक्टरी (किन्-अस्)

२०—कुईविशेफ़् यंत्र फ़ैक्टरी (किन्-अस्)

२१—मास्को किन्-अस्० परीक्षण फ़ैक्टरी

२२—मास्को फ़िल्म फ़ैक्टरी यंत्र-उत्पादक वर्कशाप

२३—अखिल संघ-फ़िल्म-वितरण एजेंसी

२४—अखिल संघ फ़िल्म उद्योग-योजना-एजेंसी

२५—औद्योगिक गृह-निर्माण ट्रस्ट

२६—कज़ान कम्पनी गृह-निर्माण ट्रस्ट

२७—सोयूज्-किनो-तियात्र एजेंसी (लेनिन्ग्राद् और मास्को के वहुत से सिनेमा-घरों की संचालिका संस्था)।

२८—अखिल संघ सिनेमा इंस्टीट्यूट (वगइक)

२९—लेनिन्ग्राद् सिनेमा इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट (लइकइ)

३०—सिनेमा फ़ोटोग्राफी रिसर्च इंस्टीट्यूट् (नइकफइ)

३१—मास्को-सिनेमा-गृह

३२—लेनिन्ग्राद् सिनेमा-गृह

सोवियत् की भिन्न भिन्न जातियों के लिए अपनी भापा में फ़िल्म वनाने के लिए अलग स्टुडियो हैं। यथा—

१—उक्रइन् फ़िल्म स्तुदियो (कियेफ़्)

२—वेलोरूसी फ़िल्म स्तुदियो (मिन्स्क)

३—गुर्जी फ़िल्म स्तुदियो (त्विलिसि)

४—अर्मनी फिल्म स्तुदियो (येरवान्)

५—आजुर्बाइजान् फ़िल्म स्तुदियो (बाकू)
६—उज़बेकस्तान फ़िल्म स्तुदियो (ताशकन्द)
७—तुर्कमानस्तान फ़िल्म स्तुदियो (अश्काबाद)
८—ताजिकिस्तान फ़िल्म स्तुदियो (स्तालिनाबाद)

*** ***

सोवियत्-मशीन निर्यात्—सोवियत् में जब पहले पहल नये कारखाने स्थापित हुए तो पश्चिमी विशेषज्ञ समझते थे, कि रूसी लोग टिकाऊ और बारीक मशीनें नही बना सकते। लेकिन क्रान्ति के बाद और खासकर पिछले १० वर्षो में उन्होंने बड़ी सफलता के साथ बारीक से बारीक मशीनें बनाई हैं। तो भी जिन लोगों को सोवियत् मशीनो को देखने का सौभाग्य नही हुआ, वह सन्देह ही में थे। लेकिन अब जब सोवियत् मशीनें बाहर के बाज़ारों में आने लगीं, तो लोगों की पिछली धारणा दूर हो गई।

२७ देश आजकल सोवियत् मशीनें खरीद रहे हैं। और १२० प्रकार की मशीनें सोवियत् से बनकर बाहर जाती है।

कृषि-संबंधी मशीनों का विशेष रूप से निर्यात होता है। १९२४ ही में सोवियत् की बनी जोतने, सिराने, दाँवने की मशीनें ईरान में पहुँची। उसके बाद तुर्की में भी। १९३१ से नाना प्रकार की कृषि-संबधी मशीनें लिथुआनियाँ आदि बाल्तिक देशों और पीछे हालैंड, डेनमार्क, बेल्जियम, यूनान, फिलिस्तीन में भी पहुँची। १९३७ में सोवियत् की कृषि-संबधी मशीनें रूमानियाँ आदि देशों ने भी लेना शुरू किया। नार्वे, मिस्र और साइप्रस, द्वीप मे भी नमूने पहुँच चुके है। मगोल-जन-प्रजातंत्र, तुआ-जन-प्रजातंत्र और पश्चिमी चीन भी कई वर्षों से खेती की मशीने खरीद रहे हैं। १९३७ ई० में २० हजार कृषि-संबधी मशीनें बाहर भेजी गईं। ट्रैक्टर तथा दूसरी मशीनें लत्विया, फिनलैंड, हालैंड, ईरान, तुर्की और यूनान के खेतो में चल रही है। १९३७ में तुर्की और इस्तोनिया में होनेवाली प्रदर्शिनियों में सोवियत् मशीनों

ने बड़ी प्रशंसा पाई है। खेती की मशीनों के अतिरिक्त बहुत से बारीक यंत्र भी पूर्व और पश्चिम के देशों में, जिनमें इंगलैंड और हालैंड भी शामिल हैं, भेजे जा रहे हैं। सोवियत् की बनी हुई सिलाई की मशीन बहुत से देशों में सर्वप्रिय हुई है। ये मशीनें पूर्व ही में नहीं बल्कि पश्चिम के इंगलैंड, फ़्रांस जैसे देशों में भी जा रही हैं। प्रेस की मशीनें भी अब सोवियत् से बाहर जानी शुरू हुई हैं।

बिजली की छोटी बड़ी मशीनें, बल्ब आदि भी निर्यात की चीज़ों में हैं। कुइबिशोफ़् का कारख़ाना बाहर भेजने के लिए १५ से १००० वाट तक के बल्ब तैयार कर रहा है। रेडियो स्टेशनों के बल्ब, नाप के औज़ार भी बाहर जा रहे हैं।

ट्रैक्टर, खुली लारी, स०स०स०र० के निर्यात के विशेष भाग हैं। यह दिलचस्प बात है कि पहला ट्रैक्टर रूस में विदेश से आया था। सोवियत् शासन में भी १९३१ तक बाहर से ट्रैक्टर मँगाये जाते रहे। १९३२ से सोवियत् फ़ैक्टरियों ने बड़े अधिक परिमाण में ट्रैक्टर बनाने शुरू किये। १९३५ के अन्त तक कई विदेशी व्यापारी सोवियत् ट्रैक्टर में दिलचस्पी लेने लगे। पहला ट्रैक्टर हालैंड में बिका था। यह ख़र्कोफ़ की ट्रैक्टर फ़ैक्टरी में बना था। अब सोवियत् के बने ट्रैक्टर एस्थोनिया, लत्विया, रूमानिया, तुर्की, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान और मंगोलिया में बड़े जोर से जा रहे हैं। नार्वे, इंगलैंड, डेनमार्क और ज़ेकोस्लावाकिया से भी नमूनों की माँग आई है। १९३६ की अपेक्षा १९३७ में चौगुने ट्रैक्टर बाहर भेजे गये। सोवियत् लारी की विदेशों में बड़ी माँग है। वह पास के बाल्तिक देशों ही में नहीं जा रही हैं, बल्कि तुर्की, मंगोलिया, चीन, ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, इराक, सिरिया, रूमानिया, हालैंड और नार्वे तक की सड़कों में दौड़ रही हैं। ३ टन वाली लारियों के बाहर भेजने में संसार में सोवियत् का नंबर दूसरा है। अव्वल स्थान युक्तराष्ट्र अमेरिका का है। १९३७ के पहले ९ महीनों में १९३६ के सारे साल की अपेक्षा १५४ सैकड़ा मोटर और लारियाँ

बाहर गई। मगोलिया, चीन, और तुआ-जन-प्रजातत्र सोवियत् से लारियाँ और फायर-इजन खरीद रहा है। १९३७ में पहली बार मास्को के स्तालिन्-मोटर-कारखाने में बनी ज़इस् १०१ मोटरकार मगोलिया भेजी गई। इनके बारे में आस्ट्रिया, जेकोस्लावाकिया, बल्गारिया और भारत से भी पूछ ताछ हुई हैं।

***   ***

बीमा—बीमा करना सोवियत्-सघ में सरकार के अधीन है। इसके लिए गोसुस्त्राख या राज्य-बीमा-विभाग १९२१ में स्थापित हुआ। यह, जीवन ही नहीं, बल्कि कोल्खोज़् तथा सरकारी विभागों की सम्पत्ति, मकान माल, फसल, पशु आदि सब का बीमा करता है। सारे सोवियत्-संघ में जगह जगह इसकी शाखायें हैं। ३१ दिसबर १९३५ को इसके पास २८५ करोड की सम्पत्ति थी, और साल में प्रीमियम् की आमदनी १ अरब २८ करोड़ ७७ लाख ३० हज़ार रूबल हुई।

स०स०स०र० से बाहर या भीतर जानेवाला सभी माल गोसुस्त्राख के पास बीमा किया जाता है। इगलैंड, जर्मनी और दूसरे देशों में इसके एजेंट रहते हैं। ३१ दिसबर १९३५ का लेखा इस प्रकार है—

पावना	रूबल
नकद बैंक मे	७५,४६,७२,५४८ ४७
माल और लगानी	१,७६,६३,३३,०४४'९७
शेयर	१५,४०,६६१'५०
स्थावर जगम सम्पत्ति	५८,३४,८९० ०८
कर्ज़	१२,६८,२५९'६९
कर्ज़दार	८,२९,१६,११४'६७
अगवड खर्च	१८,४६,४७,७३७'५२
शाखाओं में	९,१५,६२,३६० ६८
	२८८,८७,७५,६१७ ८८

२४—साम्यवादी होड़

समाजवाद के सिद्धान्तो का समझना उन लोगो के लिए भी आसान नही है; जिन लोगों को कि उससे सब से ज्यादा फायदा होनेवाला है। अगर कमकर लोग इसको समझते तो इगलैंड—जहाँ हर एक बालिग स्त्री-पुरुष को वोट देने का अख्तियार है—कभी का समाजवादी हो गया होता और एक एक बार ३०—३० लाख आदमी भूखें न मरते फिरते। सहस्राब्दियो से मनुष्य ने, कृत्रिम ही सही, ऐसा वातावरण अपने चारो ओर बना रखा है, कि न वह अपनी भलाई को दूर तक समझ सकता है, न साफ देख सकता है। खानदान, शादी-ब्याह, जातपाँत लगातार बदलते जा रहे हैं। एक आदमी के ५० वर्ष के जीवन में भी इतना परिवर्तन देखा जाता है, कि यदि वह उसपर विचार करे तो उसे बड़ा आश्चर्य होगा। तो भी उन्हीं क्षणभंगुर सामाजिक नियमो को प्रलय तक अमर रखने के यत्न में मनुष्य अपने वास्तविक हित को भूल जाता है। अपने और अपनी सैकड़ो पीढ़ियों को नरक का जीवन भले ही बिताना पड़े, लेकिन सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने का उसमें साहस नही। इसीलिए समाजवाद के सिद्धान्तो को मानने मे उसे डर लगता है।

सोवियत्-भूमि मे समाजवाद के सिद्धान्त की विजय ७ नवम्बर १९१७ को ही हो गई थी। लेकिन १५ करोड़ जनता उसके जीवन, उसकी सामाजिक रूढ़ियाँ ७ नवबर की आधी रात तक समाजवाद के साँचे मे नहीं ढाली जा सकती थी। इसके लिए उन्हे बड़ी जद्दो-जहद करनी पड़ी। उनका रास्ता नाक के सामने सीधा नहीं, बल्कि नदी के मार्ग की तरह टेढ़ा मेढ़ा था। नदी को एक बार पूर्व की तरफ जाते देख आदमी सन्तुष्ट हो—'हाँ, यह समुद्र को जायगी', फिर वह उसे उत्तर की ओर घूमता देखे और

घवड़ा जाय 'यह तो उलटे जा रही है'। नदी की तात्कालिक गति को देख-कर कम-समझ आदमी भले ही चिन्ता में पड़ जाय लेकिन समझदार जानता है कि पानी हमेशा नीचे की ओर जाता है। निम्नतम स्थान में वह ज़रूर जाकर रहेगा। बीच के टेढ़े मेढ़े रास्ते से घवड़ाने की ज़रूरत नहीं। रूस में समाजवादी क्रान्ति के लिए भी ठीक ऐसी ही बात है। उसे जीवित मनुष्य-समाज से काम पड़ा था; जिसका मानस-तल धरातल से भी ज़्यादा सम-विषम है। धार्मिक भावनाएँ, सामाजिक रूढ़ियाँ, सिद्धान्त को ठीक से न समझना भविष्य को शंकित निगाह से देखना आदि कारणों से क्रान्ति का रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा ज़रूर रहा है। लेकिन उसका रुख़ हमेशा समाजवाद की ओर—सम्पत्ति व्यक्ति की नहीं, समाज की, उपज के साधनों का मालिक समाज, व्यक्ति नहीं, हर एक व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए बराबर का अवसर—रहा है। पहले शासन को मुट्ठी भर आदमियों के हाथ से निकाल कर किसानों और कमकरों के हाथ में किया गया, फिर कल-कारख़ानों को समाज की सम्पत्ति बनाया गया। फिर खेती का समाजीकरण हुआ।

सम्पत्ति का तो इस प्रकार समाजीकरण हुआ, लेकिन सम्पत्ति और श्रम दोनों मिलकर मनुष्य के जीवन को सुखदायक बनाते हैं। सिर्फ़ जीने भर के लिए साधारण श्रम भी काफ़ी है। लेकिन समृद्ध जीवन के लिए जीवन-सामग्रियाँ अधिक आवश्यक होती हैं; और उनके पैदा करने के लिए अधिक श्रम की आवश्यकता होती है। समाजवाद की स्थापना से पहले काम करने, न करने में आदमी बेपरवाई बरत सकता है, क्योंकि वहाँ नफ़ा-नुक-सान सिर्फ़ एक व्यक्ति का है; लेकिन समाजवाद में श्रम में ढीलाढालापन छूत की बीमारी है; और उसका बुरा असर सारे समाज पर पड़ता है। इसीलिए श्रम को दिल लगाकर करना समाजवादी समाज के लिए अत्यन्त आवश्यक है। ऐसी आदत पैदा करने के लिए सोवियत् शासन को बहुत प्रयत्न करना पड़ा है। बहुत से नये तजर्बे करने पड़े हैं। पूर्ण समृद्ध जीवन

अब वहाँ श्रम पर निर्भर करता है। कमकरों और बुद्धिजीवियों के वेतन में जो भेद देखा जाता है, उसका हटाना अब श्रम को उन्नत करने पर निर्भर है। समाजवाद (जिस में हर एक से उसकी योग्यता के मुताबिक काम लेना और हर एक को उसके काम के मुताबिक वेतन देना) से साम्यवाद (हर एक से उसकी योग्यता के मुताबिक काम लेना और हर एक को उसकी आवश्यकता के मुताबिक जीवन-सामग्री देना) तक तभी पहुँचा जा सकता है जब कि श्रम अच्छी तरह सगठित यंत्र-परिचालित और बुद्धि-पूर्वक चलकर उपज को बहुत ऊँचा बढ़ा दे।

जाँगर (श्रम) जितना ही अधिक उपजाऊ होगा उतना ही समाज साम्यवाद के पास पहुँचेगा। सामूहिक श्रम में आलस्य और वैयक्तिक स्वार्थ के कारण ढिलाई ज्यादा आ सकती है, इसलिए सोवियत् नेताओं को श्रम का महत्त्व लोगों के सामने रखना पड़ा। जो व्यक्ति अपने जाँगर को जितनी ही लगन और मिहनत से चलाता है, उसका सम्मान वैसे ही बढ़ाया जाता है। पहले इस तरह से लगन लगाकर काम करने वालों को तूफ़ानी कमकर या उदार्निक कहते थे। ढाई साल पहले स्तखा-नोफ़् ने शारीरिक मिहनत के साथ साथ दिमागी ताकत लगाकर उपज को कई गुना बढ़ाया, उस समय से श्रम की उपज को बढ़ानेवाले प्रयत्न को स्तखानोफ़्-आन्दोलन कहा जाता है, और उसमें सम्मिलित होनेवाले कमकरों को 'स्तखानोवी'।

साम्यवाद की दृष्टि से देखने पर स्तालिन् का काम मार्क्स और लेनिन् से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। वास्तविक समाजवादी समाज निर्माण करने में स्तालिन् ने अपने में अप्रतिम प्रतिभा का परिचय दिया। जिस वक्त उसे स्तखानोफ़् की सफलता मालूम हुई, खबर मिलते ही उसने स्तखानोफ़् का बड़े जोश के साथ स्वागत किया, और उसे जनता के सामने सोवियत् के एक महान् वीर के तौर पर उपस्थित किया। आज स्तखानोवी कमकर सोवियत्-जनता के सब से प्रिय, सब से अधिक सम्माननीय व्यक्ति हैं। यदि

सोवियत् के ११४३ डिपुटियों की ओर देखें तो उनमें सैकड़ों स्तख़ानोवी नर-नारी मिलेंगे। यदि सोवियत् के कारख़ानों को देखें, तो उसमें हज़ारों स्तख़ानोवी डाइरेक्टर, मैनेजर, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष मिलेंगे। यदि सोवियत् के पंचायती और सरकारी खेतों को देखें, तो वहाँ भी बड़े बड़े पदों पर स्तख़ानोवी नर-नारियों ही को पायेंगे।

हम इस आन्दोलन को अच्छी तरह हृदयंगत करने के लिए यहाँ कुछ उदाहरण देते हैं—

(१) १२ दिसंबर १९३७ को नये विधान के अनुसार सोवियत् पार्लियामेंट के साधारण निर्वाचन के उपलक्ष्य में १० दिन स्तख़ानोवी होड़ सारे प्रजातंत्र में चली थीं। इस होड़ में सारे देश के कारख़ानों और कमकरों ने भाग लिया था। गोर्की-मोटर-कारख़ाने को योजना के अनुसार प्रतिदिन ५१४ मोटरकार और लारियाँ तैयार करके निकालनी थीं, लेकिन उसने ५७० तैयार कीं। मास्को का मोटर-कारख़ाना अपने हिस्से को १०० सैकड़े पूरा करता रहा।

उराल के कुबिशेफ़् कारख़ाने के खुले भट्ठे ने १४ दिसम्बर को १३० टन फ़ौलाद तैयार किया। योजना के मुताबिक उसे ६५ टन देना था।

लेनिन्ग्राद् की शोरोखोद्-जूता-फ़ैक्टरी ने १९३७ की योजना को १९ दिन पहले (१२ दिसंबर) को पूरा कर दिया। उसने इस साल १८२४ लाख रूबल का माल तैयार किया। साल के अन्त तक २०५ लाख जोड़े जूते वह दे रही है।

मास्को के स्तालिन्-ज़िले के स्तख़ानोवियों ने १० दिन की होड़ में बड़ी लगन के साथ हिस्सा लिया। जहाँ दिसम्बर से पहले इस ज़िले के कारख़ाने अपनी वार्षिक योजना का १८·३ प्रतिमास पूरा कर के १७७ लाख रूबल का माल तैयार करते थे, वहाँ होड़ के १० दिनों में अपनी वार्षिक योजना का ३६·१ काम पूरा किया; और ३ करोड़ ७३ लाख १६ हज़ार रूबल का माल तैयार किया। कुइबिशेफ़् के बिजली के कारख़ाने ने इन १० दिनों में

साल की योजना का ३६·८ सैंकड़ा पूरा किया। लेंन्मे-कारखाने ने अपने साल के प्रोग्राम को ३० नवबर तक ही पूरा कर दिया था। इस १० दिन की होड़ में साल के प्रोग्राम का ६६·२ सैकडा और पूरा किया। इस कारखाने के १८० कमकरों ने १२ दिसंबर को अपने दिन के काम को ३॥ गुना से पौने १२ गुना तक किया।

कशिरा उद्योग-संघ ने अपनी पूरी योजना इन १० दिनों में ही पूरी की। इसके ४ स्नखानोवी कमकरों ने १० गुना काम किया। किरोव कपड़े का कारखाना(इवानोवो)—जो कुछ दिनों से अपनी योजना पूरा करने में पिछड रहा था—होड में उसने अपना काम पूरा किया, और १० दिनों में १५ लाख गज कपडा तैयार किया। १२ दिसम्बर को खास तौर से जबर्दस्त होड़ रही। उस दिन कितने ही ब्रिगेडो (२०० कमकरों का दल) ने सवा गुना काम किया। बाकू की स्तालिन्-तैल-शोधनी—जो कि स०स०स०र० का सबसे बडा मिट्टी के तेल सफा करने का कारखाना है—ने होड़ में बहुत जोर के साथ भाग लिया। उसने साल की योजना ढाई हफ्ता पहले पूरी कर दी; और ८० हजार टन गेसोलिन-केरासिन, लिगोरिन्, तथा ४५॥ हजार टन लुब्रिकेटिंग तेल योजना से ऊपर दिया।

(२) १२ दिसंबर को दोन्बास् के कोयले की खानवालों ने—जो कि इधर कुछ दिनों से अपनी योजना पूरी करने में पिछड़े हुए थे—उसे पूरा किया और उस दिन २॥ लाख टन कोयला निकाला। उपज में यह वृद्धि एकदम नहीं हुई है बल्कि धीरे धीरे। इसलिए इसे स्थायी समझना चाहिए—

१० दिसम्बर . .	२,२६,३००	. टन कोयला
११ ,, ...	२,३२,१६५	. ,, ,,
१२ ,, ...	२,४६,७०३	. . ,, ,,

१२ दिसबर को अपनी योजना से ७·६ सैकड़ा अधिक कोयला निकाला गया। दोन्बास् की २६० खानों में २१४ ने १२ दिसंबर की योजना से

अधिक कोयला दिया। अर्तेम् खान के २००० खनकों ने १२ दिसंबर को अपने हिस्से से तिगुना और चौगुना कोयला खोद कर दिया। शोलोगुव् कमकर ने चार सहायकों के साथ ४० गुना कोयला तैयार किया। उसी खान में कोव्लेफ ने एक सहायक के साथ २२ गुना काम किया।

(३) ओर्जोनीकिद्जे-मशीन-निर्माणालय (मास्को) के प्रसिद्ध स्तखानोवी कमकर इवान् गुदोफ़् ने अपने ७ घंटे के काम में ११५२ पुर्जों को तैयार किया; और इस प्रकार ४५८२ सैकड़ा अपना काम पूरा किया। उस ७ घंटे में उसने १०८८ रूबल और ८८ कोपेक कमाये। उसका शिष्य नेस्तेरोफ़् भी गुरु से पीछे नहीं रहा। उसने २ दिसम्बर को अपने काम का २५२८ सैकड़ा पूरा किया। दूसरे शिष्य अलाविन ने २०७० सैकड़ा काम किया। ३ दिसंबर को उस कारखाने के २ और स्तखानोवियों ने दस गुना काम किया।

निज्नेद्नियेप्रोव्स्क् (उक्रइन्) के एक मशीन के कारखाने में—जिसके लिए कि एक अंगरेज़ी कंपनी ने २३१ चक्का प्रतिदिन (७ घंटा) की गारन्टी की थी—४ दिसंबर को स्तखानोवी जरुविन और उसके ब्रिगेड ने ४५७ पहिया, और ६ दिसंबर को ४६० तथा ७ दिसंबर को ४८० पहिये बनाये; और इस प्रकार संसार के रेकार्ड को तोड़ा।

दिसंबर के पहले ५ दिनों में करागन्दा की कोयले की खानों ने ६२,८६७ टन की जगह ६४,६३८ टन पैदा किया। वोरोशिलोफ़्-ग्राद् (उक्रइन्) के इंजन के कारखाने ने दिसंबर के पहले ५ दिनों में ५ से ६ इंजन तक तैयार किये; और ६ से १० दिसंबर के ५ दिनों में १५ रेलवे इंजन बनाये।

(४) दिसंबर में स्वर्मोवो-कारखाना गोर्की के कमकर वोल्दीरेफ़ ने जिसने कि पिछले महीने १२॥ गुना काम किया था, ३॥ दिनों के २६ घंटों में ३३८ घंटों का काम किया। इन २६ घंटों के काम से उसने ८०० रूबल कमाये।

शाख्ती के फ़्रुंजे कोयले की खान के एक खनक उशाकोफ़् ने २१

दिसबर को १३० वर्ग मीतर कोयला काटकर १६ गुना काम किया; और एक दिन में २७६ रूबल कमाये।

(५) क्रमातोर्स्क के मशीन बनाने के कारखाने के एक कमकर कोलेस्निकोफ़ ने २८ दिसबर को ५ घंटे में सवा सात गुना काम किया वहीं के दूसरे कमकर कोवालेफ़् ने ६०७ सैकड़ा काम उतने ही समय मे किया। एक दूसरे कमकर ज़ुकोफ़् ने ६ गुना किया। उस दिन पहली शिफ़्ट में कारखाने के ५६ कमकरो ने नया रेकार्ड स्थापित किया, और २१३ स्ताख़ानोवियों ने दूना काम किया।

मग्नीतोगोर्स्क के लोह-फ़ौलाद-कारखाने के खुले चूल्हे वाले वर्कशाप न० २ के कमकरों ने २७ दिसबर को साल का काम पूरा कर दिया। इस साल उन्होंने ७ लाख टन फौलाद बनाया। २७ दिसबर को वहाँ के तार बनानेवाले वर्कशाप ने अपने प्रोग्राम से १२५ टन अधिक तार बनाया। सोकोल्नोफ़् के ब्रिगेड ने ६८७ टन की जगह ८२४ टन लोहे का तार बनाया। २७ दिसंबर को मोलोतोफ़्-मोटरकार-कारखाने के कमकर गहमेतुदिनोफ़ ने २६०० की जगह पर ६००० पुर्जो को तैयार किया। दूसरे कमकर वसीकोफ़् ने २८ दिसबर को ५६ स्टीयरिंग पहिये मोटर मे लगाये। योजना २८ पहियें की थी। देश के चीनी के कारखानो ने—जो कि १६३७ में ३ महीने काम करते रहे—२५ दिसबर तक १६ लाख ११ हज़ार २५० टन चीनी तैयार कर दी थी। पिछले साल इतने समय मे १५ लाख ४० हज़ार ३ सौ टन चीनी तैयार हुई थी।

(६) दोनबास् के स्तालिन् चंदवक—जहाँ कि स्ताख़ानोफ़् आन्दोलन का जन्म हुआ—के कमकरों ने दिसबर में १५४७ टन कोयला निकाला। यह योजना से १८·४ सैकडा अधिक है।

मारीउपोल के इलिच् लोहे के कारखाने के १० कमकरो ने भट्ठी की ताकत से अधिक फ़ौलाद तैयार किया। लाज़िन ने १३·५ टन प्रतिवर्ग-मीतर उष्णतल और नेदेल्को तथा त्युल्याकोफ़् में से हर एक ने ११ टन से

अधिक पैदा किया। ओर्जोनीकिद्ज़ेग्राद् नगर के लाल प्रोफिन्टर्न कारख़ाने के ६२६० कमकर बराबर अपने काम को योजना से १॥ गुना से ३ गुना तक करते रहे। ३० दिसंबर को बढ़ई ब्रिगेड ने ४ गुना काम किया, ब्वायलर-ब्रिगेड ने ३ गुना और मशीनी-हथौड़ा ब्रिगेड ने ६॥ गुना से ज़्यादा काम किया।

लाल-पताका-कारख़ाना (लेनिन्ग्राद्) के स्तख़ानोवी मिस्त्री पश्श-कोफ़् ने ३१ दिसंबर को ५ घंटा ३५ मिनट में अपनी योजना का १६८ गुना काम पूरा किया। उस दिन उसने ११८२ रूबल कमाया और फ़ैक्टरी में उसके सम्मान में एक बड़ी सभा करके उसे बधाई दी गई।

ख़र्कोफ़् जूता कारख़ाना नं० ५ के ११५ कमकर—जो पहले अपने प्रोग्राम को पूरा नहीं किया करते थे—अब उससे अधिक कर रहे हैं।

उसी शहर के हँसुआ-हथौड़ा-कारख़ाने में १ जनवरी १९३८ को स्तख़ानोवी कमकरों की संख्या २३०० थी, जिनमें से ८१९ दुगुना काम करते हैं। एक साल पहले १ जनवरी १९३७ को वहाँ १५४९ ही स्तख़ानोवी थे।

स्वेर्दलोव्स्क प्रान्त की सेरेदोविना सोने की खान के कमकरों ने साल में ६५·५ सैकड़ा अधिक काम किया।

ख़र्कोफ़् प्रान्त के कारख़ानों के कमकरों ने १९३७ में जो सुधार सुझाये थे, उनके काम में लाने से कारख़ानों को २ करोड़ रूबल की बचत हुई। १९३७ के पहले ६ महीनों में ७०५६ सुधार संबंधी सुझाव पेश किये गये थे। कोतेल्निकोफ़् कमकर ने बिजली के कारख़ानों के संबंध में ३० सुझाव पेश किये थे। पिश्मा (स्वेर्दलोफ़् प्रान्त के) के ताँबा-बिजली-कारख़ाने में १७० सुझाव पेश हुए थे; जिनके कारण एक साल में १,६१,००० रूबल की बचत हुई।

स्तख़ानोव आन्दोलन चीज़ों की उपज में ही काम नहीं कर रहा है, बल्कि वितरण में भी कमकर वैसा ही जोश दिखा रहे हैं। मास्को के भंडारों ने नव वर्ष के उपलक्ष्य में ३१ दिसंबर को ५२१ लाख रूबल का माल बेचा।

अधिक पैदा किया। ओर्जोनीकिद्ज़ेग्राद् नगर के लाल प्रोफिन्टर्न कारख़ाने के ६२६० कमकर बराबर अपने काम को योजना से १॥ गुना से ३ गुना तक करते रहे। ३० दिसंबर को बढ़ई ब्रिगेड ने ४ गुना काम किया, ब्वायलर-ब्रिगेड ने ३ गुना और मशीनी-हथौड़ा ब्रिगेड ने ६॥ गुना से ज़्यादा काम किया।

लाल-पताका-कारख़ाना (लेनिन्ग्राद्) के स्तख़ानोवी मिस्त्री पश्श-कोफ़् ने ३१ दिसंबर को ५ घंटा ३५ मिनट में अपनी योजना का १६८ गुना काम पूरा किया। उस दिन उसने ११८२ रूबल कमाया और फ़ैक्टरी में उसके सम्मान में एक बड़ी सभा करके उसे बधाई दी गई।

ख़र्कोफ़् जूता कारख़ाना नं० ५ के ११५ कमकर—जो पहले अपने प्रोग्राम को पूरा नहीं किया करते थे—अब उससे अधिक कर रहे हैं।

उसी शहर के हँसुआ-हथौड़ा-कारख़ाने में १ जनवरी १६३८ को स्तख़ानोवी कमकरों की संख्या २३०० थी, जिनमें से ८१६ दुगुना काम करते हैं। एक साल पहले १ जनवरी १६३७ को वहाँ १५४६ ही स्तख़ानोवी थे।

स्वेर्दलोव्स्क प्रान्त की सेरेदोविना सोने की खान के कमकरों ने साल में ६५·५ सैकड़ा अधिक काम किया।

ख़र्कोफ़् प्रान्त के कारख़ानों के कमकरों ने १६३७ में जो सुधार सुझाये थे, उनके काम में लाने से कारख़ानों को २ करोड़ रूबल की बचत हुई। १६३७ के पहले ६ महीनों में ७०५६ सुधार संबंधी सुझाव पेश किये गये थे। कोतेल्निकोफ़् कमकर ने बिजली के कारख़ानों के संबंध में ३० सुझाव पेश किये थे। पिश्मा (स्वेर्दलोफ़् प्रान्त के) के ताँबा-बिजली-कारख़ाने में १७० सुझाव पेश हुए थे; जिनके कारण एक साल में १,६१,००० रूबल की बचत हुई।

स्तख़ानोव आन्दोलन चीज़ों की उपज में ही काम नहीं कर रहा है, बल्कि वितरण में भी कमकर वैसा ही जोश दिखा रहे हैं। मास्को के भंडारों ने नव वर्ष के उपलक्ष्य में ३१ दिसंबर को ५२१ लाख रूबल का माल बेचा।

अधिक काम किया। यज़्दानोफ़् मिल की वहुत सी स्तख़ानोवी स्त्री जुलाहों ने २५ सैकड़ा अधिक और एक ने ३३ सैकड़ा अधिक काम किया।

ओर्जोनीकिद्ज़े की लाल प्रोफ़िन्तर्न कोयले की खान में दो तरुण साम्यवादी रैंको और मिशानोफ़् आपस में होड़ लगाये हुए थे, उन्होंने सारे जनवरी महीने का काम ५ तारीख को ही खतम कर दिया। यह स्तखानोवी खनक अव अपना ढंग अपने साथियों को सिखा रहे हैं।

*** ***

(१) चेल्याविन्स्क के ट्रैक्टर-कारखाने के वढ़ई सुरकोफ़् ने साधारण निर्वाचन की खुशी में की गई सभा में प्रस्ताव किया कि १९३८ के सारे साल को स्तखानोवी होड़ का साल वना दिया जाय। उसने प्रतिज्ञा की, कि मैं वरावर दूना काम करता रहूँगा।

(२) अक्तूवर कोल्खोज़् (कालिनिन् प्रान्त) की स्त्रियों के व्रिगेड के नायक गुवानोवा ने प्रतिज्ञा की—"पिछले दो साल तक लगातार मेरे व्रिगेड ने प्रति एकड़ ४०० किलोग्राम (प्रायः १० मन) सन पैदा किया। अगले साल हम मोल्याकोफ़् के तजर्वे को इस्तेमाल करेंगी और सन की उपज को और वढ़ायेंगे।......हमारी कारेली जाति ज़ारशाही के ज़माने में दलित और परतंत्र समझी जाती थी। आज स०स०स०र० की जनता के परिवार में हमें समानता का अधिकार है। हम इस वात को खूव समझते हैं............।"

(३) इलिच्-कोल्खोज़् (स्मोलन्स्क प्रान्त) ने प्रतिज्ञा-पत्र लिखा—"हमारा जीवन अव आनन्दमय है। हम जानते हैं कि हमारा कल आज से भी वेहतर होगा। युद्ध के सर्वनाश से स्वतंत्र हुए हमें १९ वर्ष हो गये। इन वर्षों में हमने शान्ति के वातावरण में अपने जीवन का नव-निर्माण किया।"
....

(४) स्तख़ानोफ़्-आन्दोलन की जड़ पकड़ने के साथ साथ उपज

बढ़ती जा रही है। दोन्‌बास् स०स०स०र० की एक बहुत महत्त्वपूर्ण कोयले की खान है। सितंबर १९३७ में इसके कोयले का प्रतिदिन का औसत १६७ हज़ार टन था। दिसंबर मे वह २३० हज़ार टन हो गया। एक दिन तो २४० हज़ार टन तक पहुँचा था।

दो महीना पहले दोन्‌बास् के १५००० खनक दूना काम करते थे, लेकिन जनवरी के आरंभ में इस श्रेणी के मजदूरों की संख्या ३०००० हो गई। हज़ारों स्तखानोवी मैनेजर आदि के दायित्वपूर्ण पद पर पहुँच गये हैं। कितने ही साधारण स्तखानोवी कमकर पढ़कर इंजीनियर के पद पर पहुँचे हैं। इस प्रकार किताबी और क्रियात्मक दोनों ज्ञानों के मिल जाने से यहाँ की खानों में नये जीवन का संचार हुआ है।

कोयले की उपज मे यह वृद्धि बहुत महत्त्वपूर्ण है। पिछले ४ सालों से पार्टी और गवर्नमेंट की कोशिश थी कि दोन्‌बास् के खानों के कोयले की उपज को १,३०,००० टन रोज से ऊपर बढ़ाया जाय। इसी के लिए खान का हर एक काम मशीन से करने का प्रबंध किया गया। कोयले की देश को बहुत जरूरत है। हज़ारों नई फैक्टरियाँ, पावरहाउस, नये औद्योगिक नगर और सैंकड़ों मील की नई रेलवे ये सब कोयला माँगती है। १९३६ तक दोन्‌बास् की खानें पिछड़ी हुई थीं। २० ट्रस्टों में सिर्फ १ योजना के करीब रहने की कोशिश कर रहा था। मैनेजर अधिकतर ऐसे आदमी थे, जो खुद सुस्त थे और काम को आगे बढ़ने देना नहीं चाहते थे।

जब से ल० म० कगानोविच् भारी-उद्योग का मंत्री बना, तब से अवस्था बदल गई। उसने मौके पर पहुँच कर बारीकी से उन कारणों की जाँच की, जिनसे खानें पीछे पड़ी हुई थी। उन कारणों में थे—खानों का कुप्रबन्ध, यातायात के इन्तजाम में ढीलापन, दुर्घटनाएँ। उसने इन दोषों को हटाने के लिए बड़ी तत्परता दिखलाई। उसने इंजीनियर और यंत्रशिल्पी, फ़ोरमैन् और कमकर सबसे पूछताछ की। उसके इस काम मे

पार्टी की बैठक (फ़रवरी-मार्च १६३७) में स्तालिन् के इस वाक्य ने पथ-प्रदर्शन किया—

"नेतृत्व का असली मतलब है—

१—अव्वल समस्या का उचित हल ढूँढ़ना। लेकिन समस्या का उचित हल ढूँढ़ना तब तक असंभव है, जबतक जनता—जो कि हमारे नेतृत्व के फल को अपने सिर पर अनुभव करती है—के तजर्बो को ध्यान में न लाया जाय।

२—दूसरे ठीक हल के उपयोग को संगठित करना, जो कि जनता की सीधी मदद के बिना नहीं किया जा सकता।

३—तीसरे इस हल की सफलता को कसौटी पर कसने का संगठन करना और यह भी जनता की साक्षात् सहायता के बिना नहीं हो सकता।"

(५) मास्को के प्रसिद्ध स्तख़ानोवी कमकर गुदोफ़ के ढंग को गोर्की के कमकर गनोखिन् ने इस्तेमाल किया और वह ३½ घंटा में १५२६ सैकड़ा काम करने में समर्थ हुआ। पहले वह २५० से २७० सैकड़ा तक अपने काम को पूरा कर सकता था। खर्कोफ़ के हँसुआ-हथौड़ा इंजीनियरी कारखाने के मिस्त्री लित्विश्को ने १ जनवरी को १०–१२ सैकड़ा पूरा किया। पिछले साल वह नियम से पँचगुना काम करता था; और कितनी ही बार अठगुना नवगुना करने में भी सफल हुआ।

जेर्जिन्स्की-लोह-फ़ौलाद-कारख़ाना (द्नीये प्रोपेत्रोव्स्क) में ३५७ स्तख़ानोवी मामूली मजदूर सहायक फ़ोरमैन तथा और ऊँचे पदों पर नियुक्त किये गये हैं। ग० ई० इवानोव्स्की—जो सोवियत् पार्लियामेंट का डिपुटी है, और पहले एक धौंकू भट्ठे का मुखिया था—अब क्रिवोइरोग् लोह-फ़ौलाद कारख़ाने का डाइरेक्टर बनाया गया है। लेविन जो पहले एक धौंकू भट्ठा-विभाग का सहायक मुखिया था, अब उसी कारखाने का प्रधान इंजीनियर बनाया गया है।

(६) मोलोतोफ़् मोटर-कारख़ाना—गोर्की का रँगाई विभाग ५

महीने से अपने ऊँचे काम के कारण लाल-पताका (सरकारी इनाम) को रखनेवाला है। वह बराबर अपने काम को योजना से अधिक पूरा करता जा रहा है। १६३७ की योजना को उसने समय से बहुत पहले पूरा किया। यह सब सफलता स्तखानोव-आन्दोलन के कारण है। श्रेष्ठ स्तखानोवियों में से कितने ही मैनेजर आदि के पद पर नियुक्त हुए हैं। इस विभाग के ३६० स्तखानोवी बराबर दूना और तिगुना काम कर रहे हैं। कई ग्रायोद्लेस्नी और कोरोलेफ् जैसे दस गुना और उससे अधिक काम करनेवाले कमकर भी हैं।

दोनेत्स्क कारखाने के स्तखानोवी और तूफानी-कमकर छुट्टी के समय में पढ़कर अपनी योग्यता बढ़ा रहे थे। उनमें से कितने ही इंजीनियर और मैनेजर बनाये गये हैं। १६३७ में दोनेत्स्क औद्योगिक इंस्टीट्यूट से ३५४ इंजीनियर की डिग्री पाकर निकले हैं। जनवरी १६३८ में १०६ कमकर शाम को उक्त इंस्टीट्यूट में पढ़ते थे।

(७) ताशकंद में रेलवे इंजन का इंजीनियर वामिलीयम्चो एक प्रसिद्ध स्तखानोवी है। चुनाव में वह जातिक-सोवियत् का डिपुटी चुना गया है। वह उज्बेकिस्तान म०स०र० की केंद्रीय प्रबंध-समिति का उपाध्यक्ष भी है।

२५—कोल्ख़ोज़

(पंचायती खेती)

समाजवाद सम्पत्ति का स्वामित्व समाज के हाथ में देता है। वह सम्पत्ति चाहे औद्योगिक हो, चाहे कृषि-संबंधी हो। इस प्रकार समाजवादियों को यह पहले ही मालूम है कि खेती का भी समाजीकरण होना ज़रूरी है। क्रान्ति का वेग यद्यपि बहुत तीव्र होता है। वह उस तूफ़ान की तरह है, जिसके सामने बड़े बड़े वृक्ष फूँक से तिनके की तरह उड़ते हैं। तो भी मनुष्य के समाज का संगठन इतना पेचीदा है कि एक दिन में उसे ठीक नहीं किया जा सकता। इसीलिए क्रान्ति के विजयी होने के बाद भी ११ साल तक इन्तज़ार करना पड़ा, तब जोरशोर के साथ खेती को पंचायती बनाने का भारी प्रोग्राम कार्य रूप में परिणत किया जाने लगा।

महान् साम्यवादी क्रान्ति ने प्रथम वर्ष ही में खेती पर ज़मींदारों का प्रभुत्व ख़तम कर दिया, जिसके कारण किसान सिर ऊपर उठाकर चलने में समर्थ हुए, लेकिन सोवियत् के कर्णधारों के सामने तो पहले ३ साल का भयंकर गृह-युद्ध था। उसके बाद उद्योग-धंधे को फिर से निर्माण करने का सवाल था। १९२७ तक उनका सारा ध्यान इसी ओर रहा।

हाँ, एक बात ज़रूर हुई थी। क्रान्ति के समय ज़मींदारों की बड़ी बड़ी ज़मींदारियाँ जो ज़ब्त की गई थीं, उनमें बड़े बड़े फ़ार्म (खेत) थे। नई सरकार ने बहुत से खेतों को किसानों को दे दिया। लेकिन कुछ खेतों को सरकारी खेत के रूप में परिणत कर दिया। इन्हें आजकल सोफ़्-ख़ोज (सोवियत् के खेत) कहते हैं। सोफ़ख़ोज़ के बारे में हम अलग लिखेंगे। यहाँ संक्षेप में इतना ही समझना चाहिए कि सोफ़्ख़ोज़ एक प्रकार से अनाज

की फैक्टरी है। जिसका हरएक कार्यकर्त्ता वैसा ही कमकर है, जैसा सरकार के किसी और कारखाने का कमकर।

सोफ़खोजों के अतिरिक्त कितनी ही जगहो पर कुछ आदर्शवादी साम्यवादियों ने साम्यवादी खेती (कम्यून) भी स्थापित की, और सोवियत् सरकार की हर तरह से मदद होने के कारण सफलता पूर्वक उन्हे चलाया। लेकिन जब तक (१९२७ ई० में) देश का उद्योग-धंधा युद्ध के पहले की हालत में नहीं पहुँच गया, तब तक गाँवों के जीवन को समाजवादी बनाने की ओर ध्यान नहीं गया।

व्यक्तिगत खेती के रहते उद्योगधंधे का समाजीकरण करके आगे बढ़ना बहुत जोखिम का काम था। क्योंकि कारखानो के मजदूरों को रोटी देनेवाले तो आखिर ये ही किसान थे। उन्हें अकेले जीवन से प्रेम होने से अकेले भूखे मरने से भी उतनी चिन्ता नहीं थी। उनके धार्मिक तथा दूसरे मूढविश्वास हैजा, चेचक, महामारी के समय की तरह दुष्काल के समय में ढाढस बँधा सकते थे। लेकिन शहर के कारखानो के समाजवादी कमकर उनसे अधिक जानने और समझने वाले थे। वे हर बात को भाग्य पर नहीं छोड सकते थे। अब असल समस्या थी—जिस प्रकार कारखानो के मजदूरो, मशीनों, कच्चे माल आदि का इन्तजाम करके हम उपज का एक परिमाण निश्चित कर सकते है, क्या अनाज के बारे मे भी हम वैसी ही निश्चिन्तता प्राप्त कर सकते है? ऐसी निश्चिन्तता प्राप्त करने के लिए हमें खेती मे भी विज्ञान की सहायता लेनी पडेगी। जहाँ पानी नही है, वहाँ दैव का भरोसा छोड़कर सिचाई का प्रबन्ध करना होगा, नहरें और कल के कुएँ बनाने होंगे। खेतो की स्वाभाविक शक्ति तथा सेर-दो सेर गोबर आदि की खाद से काम नही चलेगा। वहाँ वैज्ञानिक खाद निट्रेट और फोस्फेट का उपयोग करना पडेगा। चार अंगुल जमीन [illegible] पूले हल्लों से बेड़ा पार नही होगा। इसके लिए हमें ट्रैक्टर की ज[illegible] जो हाथ हाथ गहरी जमीन खोद कर सभी तरह की अवांछन

खोदकर निकाल दे और नरम भूमि में पौधे की जड़ एक एक फ़ुट, डेढ़ डेढ़ फ़ुट भीतर घुस सके। इस प्रकार छोटे मोटे सूखे—जिसका प्रभाव पाँच-सात इंच धर्ती सुखाने तक ही पड़ सकता है—से भी पौदों को सूखने से बचाया जा सके। किसान बाबाआदम के ज़माने से चले आते हैं। कृषिविज्ञान ही पर अवलंबित न रहें। बल्कि कृषि की हर प्रकार की बीमारियों, हर प्रकार की आपदाओं का संगठित रूप से मुकाबला करें। जिस प्रकार जन-गणना से काम करनेवालों की संख्या निश्चित मालूम है, और यह भी मालूम है, कि उतने मुँहों को कितने गेहूँ, कितने मांस, कितने मक्खन की जरूरत होगी। सोवख़ोज़ों का प्रबंध सरकार के हाथ में था। और उनके बारे में वह निश्चित थी लेकिन सोफख़ोज इतने काफ़ी नहीं थे कि उनकी उपज से सारी मजदूर जनता की भूख की आवश्यकता पूरी हो सके। वैयक्तिक किसानों की आमदनी का कोई निश्चय नहीं था। कभी सूखा पड़ जाता था, कभी बाढ़ आ जाती थी, कभी टिड्डियाँ खेत चर जाती थीं। कभी खुद ही आलस के मारे या स्वार्थियों की बात में आकर किसान बहुत से खेत को पर्ती छोड़ देता था, यह निश्चिन्तता की अवस्था वांछनीय न थी।

आर्थिक प्रश्न के साथ साथ एक और भी ख़याल था, जिसने खेती को पंचायती करने के लिए जननायकों को प्रेरित किया। जब तक किसान अपने घर द्वारा, अपने हल बैल, और अपने दस अंगुल के खेत को अलग संसार बनाये हुए हैं, तब तक उनकी सांस्कृतिक उन्नति नहीं हो सकती; नगर और गाँव का नागरिक और ग्रामीण का भेद नहीं मिट सकता। दोनों के दृष्टिकोण में बराबर अन्तर रहेगा। बाहर के विस्तृत जगत् का पूरा ज्ञान न होने के कारण किसान बराबर कूप-मंडूक रहेगा। क्रान्ति के महान् उद्देश्य को वह समझ नहीं सकेगा। समाजवाद के विश्वहित के महान् आदर्श को बूझ नहीं सकेगा। ज़रा सी बात के लिए उसकी अज्ञानता का फ़ायदा उठाकर स्वार्थी क्रान्तिविरोधी लोग उसे जाति के नाम पर,

धर्म के नाम पर, मस्कृति के नाम पर, आचार-विचार के नाम पर उत्तेजित कर सकेंगे।

किसानों का अज्ञान, व्यक्तिगत स्वार्थ से चिपटे रहना, आदि बातें राष्ट्र के भीतरी खतरे ही का कारण नही बन सकती है, बल्कि जिन पूंजीवादी शत्रुओं से सोवियत् भूमि घिरी है, उन्हे भी सोवियत् के किसान प्रहार करने के लिए मर्मस्थल से रहेंगे।

गाँवो मे एक और भी सोवियत-शक्ति के लिए खतरे की चीज़ मौजूद थी, अधिकाश किसान अपनी अयोग्यता और आलस्य से अनाज कम पैदा करके शहरवालो को भूखा रख सकते थे। लेकिन गाँवो मे ऐसी श्रेणी मौजूद थी, जिसने विनष्ट ज़मीदारो का स्थान ग्रहण किया था। जहाँ तक गाँव के आर्थिक जीवन का सबध था, जमीदारो के रहते समय इस धनिक किसान या कुलक श्रेणी का अत्याचार षड्यत्र और दूसरो के चूसने की नीति उतनी स्पष्ट न थी। जमीदारो के अत्याचार के कारण कुलक भी कितनी ही बार गरीब किसानो का साथ देते थे। लेकिन अब ज़मीदारो के हट जाने पर कुलको का स्वार्थ स्पष्ट दिखाई देने लगा। देश के आर्थिक जीवन के सब कोनों में समाजवाद को पहुँचते देख कर उनको घबराहट हुई और वह चाहते थे कि उनके रास्ते मे समाजवाद रोडा न अटकाने पाये। गाँवों में ६० फीसदी गरीब किसान थे, जिनके पास बहुत कम ज़मीन थी। जोतने-बोने का साधन भी बहुत थोडा था। कुलक लोगों के पास ज्यादा ज़मीन थी। वह गॉव के गरीब किसानो को मज़दूरी पर रख सकते थे। उनकी आय अधिक थी इसलिए किसी को कर्ज़ देकर, किसी को मज़दूरी पर रखकर, किसी को खिला-पिलाकर, किसी पर और छोटा मोटा अहसान करके उन पर अपना प्रभाव डाल सकते थे, और सोवियत् सरकार की समाजवादी नीति में बाधा डाल सकते थे।

यह अवस्था थी जब कि सोवियत् के नेता स्तालिन का ध्यान गाँवों की ओर गया। १९२८ मे कोल्खोज़् की योजना पर गर्मागर्म बहस हुई।

लोगों ने पक्ष-विपक्ष में कहा। अन्त में पार्टी और सरकार ने कोल्ख़ोज़् की नीति को स्वीकार किया।

नियम यह रखा गया था कि समझा बुझाकर पंचायती खेती और वैज्ञानिक सहायता के लाभों को दिखला कर लोगों को कोल्ख़ोज़् में आने के लिए आर्कपित किया जाय। पहले साल (१९२९) के लिए जितनी खेती को पंचायती करना था, उसका परिमाण कम रखा गया था। उसके साथ यही ख़याल काम कर रहा था कि जो थोड़े से लोग पहली वार आयेंगे, उन्हें यंत्रों की मदद मिलेगी। वैज्ञानिक खाद का इस्तेमाल होगा और संगठित सामूहिक श्रम को जोश और लगन के साथ इस्तेमाल करने का मौक़ा मिलेगा। इस प्रकार कोल्ख़ोज़् में आये हुए लोग प्रत्यक्ष नफ़े को देख कर सन्तुष्ट होंगे। उनके जीवन को वेहतर देख कर पड़ोस के लोग अधिक आर्कापित होंगे और वह धीरे धीरे कोल्ख़ोज़् में सम्मिलित होंगे। धीरे धीरे कोल्ख़ोज़ में आने से एक और फ़ायदा रहेगा कि सोवियत् सरकार ट्रैक्टर तथा दूसरे कृपि-संबंधी यंत्रों के वनानेवाले कारख़ानों को स्थापित कर सकेगी। जितनी ही मशीनें अधिक उत्पन्न होंगी, उसी के अनुसार यदि कोल्ख़ोज़् के आदमियों की संख्या वढ़ेगी, तो उन्हें कोल्ख़ोज़् से फ़ायदा ही फ़ायदा दिखलाई पड़ेगा।

कोल्ख़ोज़् के संगठन का काम १९२८ में ही शुरू हुआ था, उस वक़्त एक तरफ़ कोल्ख़ोज़् के पक्षपाती पक्ष में प्रचार कर रहे थे। दूसरी ओर कुलक और पुरोहित उसके विरोध में लगे हुए थे। कोल्ख़ोज़् की सफलता पर कुलकों को गरीवों का ख़ून चूस कर मोटे होने का मौक़ा नहीं मिलेगा। और कोल्ख़ोज़ी जीवन से किसानों को ज़्यादा प्रकाश मिलेगा। फिर सूखा पड़ने पर पुरोहितों से वह पूजा करवाना नहीं पसन्द करेंगे। हर शादी-ग़मी पर पुरोहितों द्वारा भाग्य के लिए सिफ़ारिश नहीं करवायेंगे। कोल्ख़ोज़् की स्थापना के विरोध में पुरोहित वर्ग कितना तैयार था, वह एक ईश्वर की तरफ़ से भेजे पत्र—जिसे उक्रइन् के ईसाई पुरोहितों ने १९३०

में लोगों में प्रचारित किया था—के इस वाक्य से मालूम होगा—

"मैं तुम्हारा स्वामी ईश्वर तुमसे कहता हूँ। यह समय ऐसा आ गया है, जब कि शैतान तुम्हें अपने जाल में फँसाना चाहता है। जो इस कोल्खोज् के प्रलोभन में नहीं पड़ेगा, वह बच जायगा। मैं कोल्खोज़ी किसानों को चन्द दिनों में बरबाद कर दूँगा, और उन्हें भी बर्बाद कर दूँगा जो अपनी छाती पर क्रास नहीं पहनते।"

क्रास पहनना हर एक रूसी ईसाई के लिए उतना ही ज़रूरी था जैसा कि एक हिन्दुस्तानी ब्राह्मण के लिये जनेऊ।

१६२८ में तो कोल्खोज् का प्रचार धीरे धीरे होता रहा, लेकिन उसकी सफलता को देख कर कार्यकर्ताओं को और उत्साह हुआ। उन्होंने जल्दी से काम लेना शुरू किया और चाहा कि शीघ्र से शीघ्र सभी किसानों को कोल्खोज् में भर्ती कर लिया जाय इसके कारण कोल्खोज़ियों की तादाद तो बढ़ गई, लेकिन उनके श्रम का सगठन नहीं हो सका। यद्यपि नियम मे कहा गया था कि खेती को पचायती बनाना चाहिए, साम्यवादी बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। लेकिन लोगों ने जोश के मारे गाय भेड़ ही नहीं, मुर्गी आदि को भी पचायती बना डाला। यदि कोल्खोज् में आते के साथ वह जीवन किसानों को प्राप्त होता जो आज आठ-नौ वर्ष बाद है, तो कोई हर्ज नहीं था। लेकिन वहाँ तो हर चीज़ का आरंभ था। कोल्खोज़ी जीवन के पूरा संगठित होने में अभी वर्षों की देरी थी, लेकिन उत्साही कार्यकर्त्ता उसी दिन किसानों के छोटे मोटे खाने पीने के अवलंब को भी उनके पास रखने देना नहीं चाहते थे।

हर गाँव में कुलक मौजूद थे। उनका स्वार्थ उन्हें मजबूर करता था कि कोल्खोज् मे शामिल न हों, और जहाँ तक हो सके, उसकी सफलता में बाधा डालें। उधर किसानों में जल्दी के कारण जो तकलीफ हुई उससे कुछ असन्तोष हो चला था। कुलकों ने उसपर आग में घी छोड़ने का काम किया। कोल्खोज् वाले आखिर तुम्हारी गाय को छीन ले जायेंगे। बैल

तुम्हारे खूँटे से खुल जायेंगे। सुअर तुम्हारे नहीं रहेंगे। अच्छा है, तुम लोग अक़्ल से काम लो, जोई राम सोई राम। मारो, जो बिक सके, उस का पैसा बनाओ, नहीं तो अपनी कमाई अपने पेट में तो जायेगी! कुलकों ने खुद अपना उदाहरण रखा। कुलकों के पास खेत ज़्यादा थे। सरकार ज़्यादा खेतवालों पर ज़्यादा टैक्स लगाती थी। उनसे ज़्यादा अनाज वसूल करती थी। खर्च के लिए ज़्यादा मांस तलब करती थी। कुलकों ने आधे, ⅔ खेत अपने पर्ती छोड़ दिये। 'न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी'। न ज़्यादा खेत बोयेंगे, न ज़्यादा अनाज सरकार को देना पड़ेगा। बैल गाय भी ज़्यादा रखकर सरकार से क्यों लुटवाया जाय!

मंत्र चल गया। चाहे खरीदार हो या न हो। चाहे सब खर्च हो सके, या थोड़ा; लेकिन लगे लोग अंधा-धुंध जानवरों को मार मार कर घरों में माँस का ढेर लगाने। पीतर को देखकर पावल ने वैसा ही किया और पावल से वान्या ने सीखा। बहुत जल्द जंगल की आग की तरह से यह बीमारी सारी सोवियत् भूमि में फैल गई। आधे से अधिक बैल, गाय, सुअर, भेड़, बकरी कुछ ही महीनों में खतम कर दिये गये। उसके बाद दूध, मक्खन और मांस का अकाल पड़ा। हाँ, उधर जब अधिकारी इस भयंकर कांड को रोक नहीं सकते थे, तो उनकी असमर्थता को देखकर कोल्ख़ोज़् में आये किसानों में बग़ावत सी फैल गई। लोग ठेकों में रखे अनाज को खुद तौल कर और कभी कभी अपने हिस्से से अधिक भी घर ले गये। कोल्-ख़ोज़् की गोशाला और घुड़सारों में दाख़िल गाय बैलों और घोड़ों को भी निकाल ले गये। एक बार मालूम होने लगा कि कोल्ख़ोज़् प्रथा का अब हमेशा के लिए ख़ातमा हो गया।

इस अव्यवस्था की खबर सरकार, कम्युनिस्ट पार्टी और उसके सूक्ष्म-दर्शी नेता स्तालिन् को मालूम होते देर न लगी। कहाँ भूल हुई, इसे भी वे तुरन्त समझ गये। २ मार्च १९३० को जल्दीबाज़ों को फटकारते हुए स्तालिन् ने अपना मशहूर लेख "कामयाबी की चकाचौंध में" लिखा।

इसका असर भी ऐसा ही हुआ। स्तालिन् ने कहा—जल्दी करना बुरा था। और अब उसका उपाय यही है कि जो कोल्खोज़ में नहीं रहना चाहे उन्हें लौट जाने देना चाहिए। यद्यपि इस लेख के फल-स्वरूप आधी कोल्-खोज़ी चिड़ियाँ फुर हो गईं, लेकिन जो बचे रहे, उनको अधिक संगठित कर के काम करने का मौका मिला।

कुलकों की दुष्टता का प्याला लबरेज़ हो गया था। उन्होंने लोगों को बहका कर और खुद भी जो इतना पशु-संहार किया—जिसकी कि पूर्ति करने में वर्षों लगेंगे—और इतनी अव्यवस्था फैलाई, उसके लिए कुछ करना जरूरी था। सरकार ने कुलकों के खिलाफ़ वैसा ही कानून बना दिया, जैसा कि क्रान्ति के आरंभ के समय ज़मींदारों के खिलाफ़ बना था। गाँव की सोवियत् को अधिकार था कि कुलकों का पता लगाकर नाम घोषित करे और उनकी संपत्ति को ज़ब्त कर उन्हें दूर भेजने के लिए पुलिस के हवाले करे।

गाँव की सोवियत् बैठी, सभी बालिग नर-नारी जमा हुए। एक धनी किसान का नाम लिया गया। पेत्रोफ़् कुलक है। वह दूसरों के जाँगर से खेती कराता है। वह अधिक भूमि जोतता है। वह कर्ज़े पर रुपया देता है। वह सोवियत् शासन को दिल से नहीं चाहता। दूसरे ने अनुमोदन किया। सर्व सम्मति से घोषित हुआ, पेत्रोफ़् कुलक है। कभी कभी किसी कुलक के लिए कुछ खींचातानी भी होनी शुरू हुई। कुलक ने गाँव के कुछ आदमियों का उपकार किया था, या उनसे विवाह-शादी का संबंध था, या उसके कुछ हित मित्र परिवार के परिवार को दूर देश भेजने में मोह का अनुभव करते थे। ऐसे लोगों ने चाहा कि उक्त गृह कुलक न घोषित किया जाय, छोटा वैयक्तिक किसान मान लिया जाय। लेकिन दो चार आदमी सभा के मुँह को बन्द कैसे कर सकते थे! दूसरे ने उठकर कहा—इसको पावल ने एक फटा कोट दे दिया था। इसीलिए यह झूठ बोल रहा है। दूसरे ने कहा—कभी कभी वह इसे बोतल में शामिल कर लेता है, इसलिए

प्याले के दोस्त का पक्ष ले रहा है। आखिर कुलक छिपा थोड़े ही रह सकता है। ग्राम-सोवियत् ने गाँव के ५–१० जितने कुलक हुए, उनको घोपित कर दिया। ज़िले या इलाक़े के सोवियत् के पास मलिशिया (हथियार वंद पुलीस) भेजने के लिए खवर भेज दी। ५–५, ६–६ आदमियों की कमेटी वना कर एक एक कुलक के माल असवाव, ढोर-डंगर का चार्ज लेने के लिए भेज दिया।

एक टोली कुलक पेत्रोफ् के घर चली। गाँव के वूढ़े वच्चे तमाशवीन भी कुछ साथ हो लिये। शायद पेत्रोफ़् को पहले से भी कुछ खवर लग गई थी। घर के भीतर चीज़ें वड़ी सावधानी के साथ चुनी जा रही थीं। पेत्रोफ़् की स्त्री ने अपने धराऊँ वस्त्रों का वक्स खोला था। एक के ऊपर एक चार-चार, पाँच-पाँच घाघरे और चार-चार, पाँच-पाँच कोट पहने जा रहे थे। टोली पहुँच गई। "तवारिश पेत्रोफ्! ग्राम सोवियत् ने हमें आपकी चीज़ों को सँभालने के लिए भेजा है। आप अपने वदन के कपड़े तथा एक दो और, नक़द हो सो नक़द और रास्ते में ले जाने लायक थोड़ा सा विस्तरा वर्तन लेकर वाकी सव चीज़ों को हमारे हवाले कर दीजिए। मलीशिया के सिपाही आ रहे हैं। वे आपको हमारे गाँव से दूर ऐसी जगह ले जायेंगे, जहाँ से फिर आप हम पर शनि-दृष्टि नहीं डाल सकेंगे और वहाँ आपको जीने खाने के लिए काम भी मिलेगा।"

पेत्रोफ़् को हफ़्तों पहले से इन वातों की कुछ कुछ खवर थी, इसलिए धक्का कुछ सह्य हुआ।

कमेटी वैठ गई। एक आदमी कलम दवात लेकर तैयार हो गया। एक आदमी वोलने लगा।

मर्दों की कमीज़ (पुरानी) ५
मर्दों का कोट (पुराना) ३
,, ,, (नया) २
औरतों की कमीज़ (पुरानी) ४

औरतों की कमीज (नई) ३
रंगीन रूमाल (रेशमी) ३
,, ,, (सूती) ३
. . . .
लोहे के ट्रंक . . ४
लकड़ी के बक्स (बड़े) . . २
,, ,, (छोटे) २
. . . .
बैल . . ५
घोड़े . . . ८
गायें ६
सुअर १०
भेड़ें २५
. . . .
मकान (दस कमरे दोतल्ला) . . . १
गोशाला १
घुड़शाल १
सुअर की खुभार १
. . . .

पेत्रोफ् की सब चीजों को कमेटी ने सँभाल लिया। बूढ़ा मिश्का बोल उठा—"अरे, पेत्रोव्स्का (पेत्रोफ् की स्त्री) ने तो ५ लहँगे और ८ कमीजे एक के ऊपर एक पहन ली है! और इतना बर्तन बिस्तरा बाँध रखा है कि दो गाड़ियाँ तो इन्हें ही लादने को चाहिए।"

पचों का ख़याल इधर नहीं गया था। उन्होंने देखा, सचमुच कुलक का लालच अभी भी उतना ही तेज है। निकितिना पंच स्त्री से कहा गया कि देखो, "किसी स्त्री के बदन पर दो से अधिक कपड़े नहीं होने चाहिए

और आदमी पीछे मन भर से अधिक बोझा नहीं होना चाहिए"। बेचारे पेत्रोफ् के परिवार को यदि पहले यह मालूम होता, तो समय काफ़ी मिलता, यह सोचने के लिए कि किस चीज़ को ले चलें और किस चीज़ को छोड़ें। मलीशिया पहुँच गई थी। पंचों का हुक्म हुआ—"घर से बाहर निकलो। ताला बन्द करेंगे।" पंच अन्द्रेई ने बाहर निकलते हुए कहा—"कोल्खोज् के कार्यालय के लिए यह मकान अच्छा होगा।"

पेत्रोफ़् उनकी अधेड़ औरत, दो जवान लड़के, एक जवान लड़की, दो छोटे छोटे बच्चे, एक बहू आठों व्यक्ति घर से बाहर निकले। साथ जाने वाला सामान और कुछ बर्तन भांड़े निकाल कर द्वार पर रखे थे। न जाने कितनी पीढ़ियाँ पेत्रोफ् की इस गाँव में बीती थीं। उनके पूर्वजों के न जाने कितने शव यहाँ के क़ब्रिस्तान में सोये पड़े थे। इस गाँव में जन्म से ही कितने उनके मित्र थे। सब को छोड़ कर एक अनजाने देश में उन्हें जाना था। जहाँ उन्हें कोई परिचित नहीं मिलेगा। जहाँ उन्हें जंगल की लकड़ियाँ काटनी पड़ेंगी, या पथरीली ज़मीन में नहरें खोदनी पड़ेंगी। ये सब ख़याल कर के पेत्रोफ् का दिल भर आया। घर के लोगों में से कितने सिसकियाँ भर रहे थे। पेत्रोफ् ने अपने को रोकने की कोशिश की, लेकिन गाँव के परिचितों से विदा होते वक़्त उनका गला भर आया।

गाँव वालों को कुछ अफ़सोस तो हो रहा था। पंच भी इस करुणापूर्ण दृश्य से कम प्रभावित न थे। लेकिन वह यह भी जानते थे कि पेत्रोफ़् ने ही गोशाला के प्रबंधक वान्या को माघ पूस के जाड़ों के दिनों में सिखलाया था—"गोशाल में बालू बिछा दो। बैलों को रात में गर्म रहेगा।" रात को बालू ठंडा हो गया। माघ पूस का जाड़ा हड्डी तक को बर्फ़ बना देनेवाला। सवेरे वान्या ने देखा, एक भी बैल खड़ा नहीं हो सकता। ५० में से ५ बैल जीते बचे। उनको यह भी मालूम था कि पेत्रोफ़् ही ने गाँव के कितने किसानों को भड़का दिया था, और जब वह ठेक से जबर्दस्ती अपना अनाज उठा लेने के लिए पहुँचे, तो कम्युनिस्ट दावीदोफ़् उन्हें समझाने आया।

उसने कहा "मत समझो, सोवियत् शक्ति खतम हो गई है। पीछे तुम्हें पछताना पड़ेगा। थोडा ठहरो। एक वर्ष में कोल्‌खोजी जीवन का लाभ तुम्हें मालूम होगा। कुलकों की बात में न आओ।" क्रोध में पागल हुए आदमियों ने अपने हित की बात न समझी। दावीदोफ़् को अपनी समझ में उन्होंने मार ही डाला था। एक पर एक न जाने कितनी ऐसी घटनाएँ पेत्रोफ़् और गाँव के दूसरे कुलकों के भड़काने से हुई थी। जिन्हे याद करते ही लोगों की करुणा दूर हो जाती थी। पचों ने हाथ मिला बिदाई देते हुए कहा—"साथी पेत्रोफ़, आशा है, तुम वहाँ अच्छी तरह काम करोगे। और दो तीन वर्ष बाद अपने हृदय-परिवर्तन को दिखलाओगे। फिर बहुत संभव है, सरकार तुम्हे अपने गाँव में आने की इजाजत दे देगी।"

पेत्रोफ़् और उनके जैसे कितने ही कुलक परिवार गाँव से निकले। उन के साथ १० हथियार बन्द मलीशिया के जवान थे। कुछ घोड़े-गाड़ियों पर सामान लदा हुआ था। छोटे बच्चे भी उनपर बैठे हुए थे। कुछ ही देर में यह काफिला गाँव वालों की आँख से ओझल हो गया।

पेत्रोफ़ों के कपडे-लत्ते गाँव के गरीबों में बाँट दिये गये।

अब गाँव में रह गये थे, कोल्‌खोजी किसान, और थोड़े से डेढ चावल की अलग खिचडी पकानेवाले छोटे छोटे किसान।

*** ***

कोल्‌खोज़् का संगठन—कोल्‌खोज़् क्या है? सहयोग-समिति या पंचायत द्वारा खेती। आस पास के किसान इसी में फायदा समझ कर स्वेच्छा-पूर्वक एकत्रित होते हैं। वह एक समिति कायम करते हैं। जिसके नियम बने हुए हैं। फिर पदाधिकारियों का चुनाव करते हैं। एक अध्यक्ष होता है, एक खेतों का प्रबंधक होता है, एक बहीखाता रखनेवाला होता है। सौ सौ डेढ़ डेढ़ सौ काम करनेवाले स्त्री-पुरुषों की सम्मिलित या अलग अलग टोली पर एक एक ब्रिगेडियर चुना जाता है। अपने अपने ब्रिगेड या टोली

की देखभाल करना इसका काम है। फिर रसोइया, लड़कों की देख भाल के लिए दाई चुनी जाती हैं। लोहार, बढ़ई, धोबी, गाय, सुअर, घोड़े, मुर्गियों के अलग अलग रखवाले चुने जाते हैं। ब्रिगेड को भी आठ आठ, दस दस की छोटी छोटी टुकड़ियों या लिंक या गोल में बाँटा जाता है। गोल के भी सरदार या सरदारिनें होती हैं। हाँ, ब्रिगेडियर और गोल के सरदार में इतना फ़र्क है कि जहाँ निरीक्षण के काम की अधिकता के कारण ब्रिगेडियर खुद काम नहीं कर सकता, वहाँ गोल का सरदार खुद भी कुदाल लेकर साथियों के साथ खेत में जुटा हुआ है, और काम के मुताबिक उसे तनख्वाह मिलती है। कोल्खोज् के अधिकारियों में निश्चित तनख्वाह पाने वाले हैं—अध्यक्ष, प्रबंधक, बही-खाता-रखनेवाला और ब्रिगेडियर। उसके एक दिन के वास्ते डेढ़ दिन की मजदूरी मिलती है।

कोल्खोजों के संचालन के पहले नियम २ मार्च १९३० में बने थे। ५ साल के तजर्बे के बाद फिर सारी सोवियत् के कोल्खोजों के प्रतिनिधियों की मास्को में बैठक हुई और १७ मार्च १९३५ को नया विधान बना। कोल्खोज् जीवन और उसके काम का कुछ परिचय हमें उस आदेश-पत्र से मालूम होगा, जिसे कि स्तारोसेल्ये कोल्खोज् के किसानों ने अपने प्रतिनिधि मारिया देम्येन्को को मास्को जाते वक़्त दिया था—

"हमने तुम्हें—अपने सर्वोत्तम उदार्निक् (तूफ़ानी कमकर) को द्वितीय कोल्खोज् उदार्निक् कांग्रेस के लिए प्रतिनिधि चुना है। तुमने इस के लिए जान लड़ाकर काम किया, इसलिए तुम हमारे विश्वास के पात्र हुए। कोल्खोज् के ८०० से अधिक मेंबरों ने तुम्हें वोट दिया और ९ उम्मेदवारों में से तुम निर्वाचित हुई।

"१—मास्को में जा कर हमारे कोल्खोज की तरफ़ से यह फूलों का गुच्छा लेनिन् की समाधि पर रखना।

"२—साथी स्तालिन् को हमारा प्रेम और सन्मान कहना। और हमारी सफलताओं के बारे में भी कहना—पिछले वर्ष १३·६ सेन्तनेर

(१ सेन्तनेर=२२० पौंड=२ मन २६ सेर २ छटांक) प्रति हेक्तर (१ हेक्तर=२·४७११ एकड़ यानी १ एकड़ में कोई १५ मन से अधिक गेहूँ) गेहूँ, पतला गेहूँ ८·८ सेन्तनेर, जौ ११·८, ओट ११·१, पैदा किया। और मारिया, तुम्हारे विभाग में प्रति हेक्तर, ४६० सेन्तनेर चुकन्दर। हमने ८०० सेन्तनेर अनाज सरकार को बेचा। और इसके अलावा अपने हिस्से का जो अनाज देना था, उसे भी सरकार को दिया। हमने अपने कोल्खोज़ियों को प्रतिदिन के काम के बदले में ३ किलोग्राम (१ किलोग्राम =२·२०४६ पौंड=१ सेर) अनाज और पैसा भी दिया। राज को जितने बछड़े देने थे, उनमें सवाया दिया। जितने बछड़े तैयार करने थे, उनमें ड्योढ़े तैयार किये। चुकन्दर की खेती के लिए हमने ३०० हेक्तर की गहरी जुताई की। हमने बीजों के जमने की परीक्षा की और देखा कि हमारे जौ ९२ सैकड़ा और ओट ९७ सैकड़ा जमते हैं। हमारे ढोर अच्छी अवस्था में हैं और उनकी निगहबानी के लिए हमने अपने सब से अच्छे आदमी नियुक्त कर रखे हैं। हमारी सब मशीनरी मरम्मत कर के ठीक तौर से रखी है। हमने अपने खेतों में २००० टन साधारण खाद डाली है। १८० सेन्तनेर सुपर फोस्फेट और २४० सेन्तनेर राख डाली है। हमारे यहाँ कृषियंत्र का एक स्वाध्याय-केन्द्र है और २ राजनीति अध्ययन के, जिनमें कोल्खोज़ के उत्साही कार्यकर्ता अपना ज्ञान बढ़ाते हैं। औरतों के लिए भी २ राजनैतिक स्वाध्याय-केन्द्र हैं।

"३—जनता के युद्ध-मंत्री (वोरोशिलोफ़्) से कहो कि हम अपनी महान् जन्मभूमि की रक्षा के लिए तब तक तैयार हैं, जब तक कि हमारे शरीर में एक बूँद खून रहेगा।

"४—कांग्रेस में आये हुए दूसरे प्रतिनिधियों का हमारे नाम से अभिनंदन करना और उनसे कहना कि हमारे लिए यह आसान काम नहीं था, जो कि कोल्खोज़ों में अव्वल नंबर होने का हमें सौभाग्य मिला; क्योंकि समाजवादी कृषि की होड़ में अकेला हमारा ही कोल्खोज़ नहीं था।

"५—उनसे यह भी कहो कि हम तबतक दम नहीं लेंगे, जबतक कि हमारे ज़िले में एक भी पिछड़ा हुआ कोल्खोज़् है। हमें तभी सन्तोष होगा, जब हम देखेंगे कि सम्पूर्ण सोवियत्-संघ पर समृद्ध कोल्खोज़् फैले हुए हैं। हम प्रतिज्ञा कर रहे हैं कि चेल्युस्किन् कोल्खोज़् को अपने बराबर पर लाने के लिए उसकी मदद करेंगे।

"६—मास्को की फ़ैक्टरियों में जाना और कमकरों को हमारा अभिनंदन देना। उनसे कहना कि हम श्रमजीवियों से घनिष्ट संबंध स्थापित करना चाहते हैं। मास्को के श्रमजीवियों और बुद्धिजीवियों से कहना कि वह हमारे इस प्रयत्न में और भी मदद दें; जिसमें कि गाँव संस्कृत हो जायँ और इस विषय में गाँव और नगर का भेद दूर हो जाय। उनसे कहना कि हम अपनी प्रयोगशाला में बीजों के जमने की परीक्षा १५ फ़रवरी तक ख़तम कर देंगे और यह भी कि किसान और मज़दूर संवाददाताओं और पार्लियामेंट के सभासदों की मदद से हम अपने ब्रिगेडों का लेखा लेंगे कि वह वसन्त की जुताई के लिए कितने तैयार हैं। हमने निश्चय किया है, कि ८ काम के दिनों में वसन्त की जुताई खतम कर देंगे और ३ दिन में चुकन्दर की जुताई। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि मशीन को और ठीक से इस्तेमाल करेंगे। सुपर फोस्फेट तैयार करेंगे। तेज़ ज़हर तैयार कर कीड़ों और फ़स्ल के दूसरे दुश्मनों को मारेंगे। अपनी प्रयोगशाला के ज़रिये हर एक कोल्खोज़ी किसान को कृषि के गुर बतलायेंगे और सभी ब्रिगेडियर और गोल-सरदार से प्रार्थना करेंगे कि वह प्रयोगशाला के काम में क्रियात्मक रूप से भाग लें। हम ब्रिगेडियरों और गोल-सरदारों के टेकनिकल ज्ञान की परीक्षा करवायेंगे। चुकन्दर को २—३ दिन में जोतना, ४ से ५ दिन में घने की छँटाई करना खतम करेंगे। सब मिला कर ४ बार हम चुकन्दर को जोतेंगे। हम चुकन्दर की छँटाई ऐसी करेंगे कि हर एक हेक्तर में १ लाख १० हज़ार कन्द हों। प्रतिज्ञा करते हैं कि हम उस साम्यवादी होड़ में पूरा भाग लेंगे जो कि कृषि-सचिव के पताका और उक्रइन् की

केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति की पताका को जीतने के लिए होगी। दूसरे कोलखोजों को भी जोर देगे कि वे भी ऐसा करें। हम पेत्रोव्स्की-कोल्खोज् (कार्मेन्स्की जिला) और बुद्योन्नि-कोल्खोज् को साम्यवादी होड के लिए ललकारते हैं, और साम्यवादीपत्र-कोल्खोज् (ओल्शंको जिला) की ललकार को स्वीकार करते हैं; और इसके लिए 'प्रोलेतर्स्की प्राव्दा' समाचार-पत्र तथा जिले के समाचार-पत्र को इस होड का निर्णायक मानते हैं।

"७—हमारे कोल्खोज् के नाम से चुकन्दर पैदा करनेवाले जिलो के कोल्खोजों के प्रतिनिधियो को न्योता देना कि यदि हम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करें, तो ७ नवम्बर (लाल क्रान्ति का दिन) के उत्सव में वह हमारे यहाँ आयें।

"८—नये नियमों के बारे में होने वाली बहस में क्रियात्मक रूप से भाग लेना।

"९—दूसरे आगे बढे हुए कोल्खोजो के तजर्बे को नोट कर के ले आना, जिसमें कि हम उनके तजर्बो से फायदा उठा सकें।"

मरिया देम्चेंको इस आदेश-पत्र को लेकर फ़रवरी १९३५ को मास्को गई। कोल्खोज् वाले इतने ही से सन्तुष्ट नही थे। वे कांग्रेस की कार्यवाही को अपने रेडियो पर बडे ध्यान से सुनते थे। वह रेडियो द्वारा ब्राडकास्ट होती थी। इसके अतिरिक्त वह अपने सब से तेज घोड़ों को प्रतिदिन पेत्रोव्स्की इसलिए भेजते थे, कि छपने के साथ ताजे अखबार गाँव मे लाये जायँ।

मरिया देम्चेंको ने चुकन्दर पैदा करने मे बडी सफलता प्राप्त की थी। उस साल उसने प्रति हेक्तर ४६६ सेन्तनेर पैदा किया था। स्तालिन् ने उससे कहा—"यदि पिछले साल तुमने प्रति हेक्तर ४६६ सेन्तनेर पैदा किया, तो वचन दो कि इस साल ५०० सेन्तनेर पैदा करोगी।"

मरिया थोड़ी देर तक सोचने लगी और फिर बोल उठी—"बहुत अच्छा, ५०० सेन्तनेर, मैं वचन देती हूँ।"

जब मरिया देम्चेंको लौटकर आई तो एक तरफ कांग्रेस की सफ-

लता की खबर सुनकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई, लेकिन दूसरी ओर सारे गाँव को यह भी चिन्ता हुई कि हमें इस साल प्रति हेक्तर (४ बीघे) ५०० सेन्तनेर (प्रायः १३०० मन) चुकन्दर पैदा करना पड़ेगा।

मरिया ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

हर एक कोल्खोज़ में एक प्रयोगशाला या लेबोरेटरी होती है; जिसका काम है, कोल्खोज् की उपज बढ़ाने में भाग लेना, तथा मिट्टी और हानि-कारक कीड़ों आदि की समस्या को हल करना। कृषि और पशुपालन के ज्ञान को व्याख्यानों, स्वाध्याय-केन्द्रों, प्रदर्शनों और जलूसों द्वारा बढ़ाना। ट्रैक्टर-ड्राइवर, यंत्रशिल्पी (मिस्त्री) और आविष्कारकों के विशेष अध्ययन का प्रबंध करना। अकाल, पौदों की बीमारी और हानिकारक घासों के दूर करने का उपाय सोचना, खेती-संबंधी होड़ का संचालन करना, बूढ़े चतुर किसानों के अनुभवों को एकत्रित और नियमबद्ध करना। बीज, मिट्टी, खाद और कृषि की उपज की परीक्षा करना, मौसम और फ़सल का लेखा रखना, फ़सल और पशुओं की हर एक अवस्था का हिसाब रखना, मौसम की ख़राबी या टिड्डी आदि के खतरे से लोगों को सजग करना। काम या बीज में खराबी पाने पर प्रबंध-समिति को इसकी सूचना देना, सब से अच्छे काम करने वाले ब्रिगेडों के तजर्बों को रेखा-चित्र तथा दूसरे प्रकार से दूसरों के ज्ञानगोचर करना। कोल्खोज् के किसानों की छोटी छोटी मंडलियों को आस पास के श्रेष्ठ कोल्खोज़ों को देखने के लिए प्रबंध करना। कोल्खोज़ की भूमि की मिट्टी को उसकी रासायनिक बनावट और आकार को लेख और नकशे के रूप में अंकित करना तथा किस खेत के लिए कौन फ़सल या खाद उप-युक्त है, इसका निश्चय करना। घास-भूसे की विशेष तौर से रासायनिक परीक्षा करके उनको अधिक पुष्टिकारक बनाना तथा उनकी कमी बेशी का इन्तज़ाम सोचना। ढोरों के खिलाने के ढंग और नस्ल अच्छी बनाने के तरीक़े पर ग़ौर करना। ढोरों की बीमारी को देखते रहना, प्रत्येक गाय के दूध और मक्खन के गुण और परिमाण का नाप रखना।

मशीनों के टूट-फूट की परीक्षा करना जिसमे कि आगे गलतियाँ कम हों। नई मशीनो के इस्तेमाल का ढंग सीखना।

प्रयोगशाला के लिए हर एक कोल्खोज़ मे दो-तीन या अधिक कमरे होते है। एक खास प्रबन्धक रहता है। सब लोग उसके काम में सहायता करते हैं। प्रबन्धक अपने विषय का काफी ज्ञान रखता है।

ढोरों की ताकत या दूध पर खुराक का क्या असर होता है, तथा उन की रक्षा ठीक से होती हैं या नहीं, इस काम मे गाँव के छोटे लडके भी मदद देते है। एक एक लडके को एक एक गाय पर निगाह रखने का काम दे दिया जाता है। वह रोज खेलने की तरह शाम-सवेरे अपनी अपनी गाय को भी देखने जाता है। मोटी, दुबली देखकर गायों के ऊपर नियुक्त आदमी से पूछ ताछ करता है—"आज कल हमारी गाय दुबली होती जा रही है। दूध नहीं देती" आदि की खबर वह प्रयोगशाला में पहुँचाता है। और बडी चिन्ता के साथ कोई उपाय जानना चाहता है। किसी लडके की गाय ने दूध में या स्वास्थ्य मे बड़ी तरक्की की तो लड़के को इनाम मिलता है।

चूहे तथा खेती को नुकसान करने वाले और जानवरों के मारने पर सरकार की तरफ से इनाम मुकर्रर है। प्रति चूहा २ या ३ पैसा पडता है। यह काम भी लडकों के ही हाथ में है। वह पानी ढो ढो कर बिलो में डालते है या धुआँ सुलगाते है। जब चूहा भागता है तो डंडे से वहीं खतम कर देते है। उनके लिए खेल का खेल और पैसे का पैसा। पौदों को खा जानेवाले पतिंगो को मारने पर भी इनाम मिलता है। यह इनाम तौल कर तोले के हिसाब से मिलता है। एक एक गाँव में मन मन भर मरे भुनगे और पतिंगे इस प्रकार जमा हो जाते है।

*** ***

ग्राम-सोवियत्—सोवियत् का अर्थ है पचायत या शासन करनेवाली पचायत। सोवियत्-सघ का सारा शासन सोवियत् या पंचायत द्वारा शासित

होना है। हर एक गाँव के १८ वर्ष के ऊपर के नर-नारी अपने गाँव के शासन को चलाने के लिए पंच चुनते हैं। पंचों की संख्या गाँव के छोटे बड़े होने पर निर्भर है। पंच आपस में एक को अध्यक्ष चुनते हैं, दूसरे को मंत्री, तीसरे को हिसाब रखनेवाला। इसी तरह कार्यकारिणी के दूसरे पदाधिकारी चुने जाते हैं।

उदाहरणार्थ कोमिन्तर्न-कोल्खोज् की सोवियत् के ५७ मेंवर हैं। इन के अतिरिक्त १२ उम्मेदवार भी इसलिए चुने गये हैं, कि कोई जगह खाली होने पर उनमें से लिये जायँगे। इन ६९ व्यक्तियों में २८ औरतें हैं। इन मेंवरों को कई विभागों में वाँटा गया है।

विभाग	पंच	स्वयंसेवक
कृषि और खेत	९	११
पशुपालन	९	१४
व्यापार	७	१०
शिक्षा और संस्कृति ..	७	१३
रोशनी, सफ़ाई	७	१२
अर्थ	७	१३
यातायात	७	१३
सड़क	७	१०
ग्राम-रक्षा	९	१४
क्रान्तिकारी कानून (न्याय) ..	६	१२
स्वास्थ्य	७	१०

स्वयं-सेवक पंचायत के सदस्य नहीं हैं। इसको देखने से मालूम होगा कि ग्राम-सोवियत् सूक्ष्म रूप में सारे देश की सोवियत् का प्रतिरूप है।

याद रखना चाहिए कि हर कोल्खोज्-गाँव में ग्राम-सोवियत् और कोल्खोज्-प्रबंधक-समिति दो अलग अलग चीजें हैं। सोवियत् का मुख्य काम शासन करना है; और समिति का काम है खेती का संचालन करना। सोवि-

यत् का सारा खर्चा ऊपर की सरकार से आता है; और समिति का अपने गाँव से, अपने पैदा किए हुए धन से।

जैसे एक गाँव की सोवियत् है, वैसे ही उसके ऊपर इलाके की सोवियत् होती है। फिर ज़िले की सोवियत् फिर प्रजातन्त्र या प्रान्त की सोवियत् होती है; और फिर सारे सोवियत्-संघ की महा सोवियत्, जिसके जातिक-सोवियत् और संघ-सोवियत् दो भवन हैं।

ग्राम-सोवियत् के आय-व्यय के लिए हम यहाँ स्तारोसेल्ये का १९३५ का बजट देते हैं।

आय

ज़िला-सोवियत् से		२७,३४० रू०
ग्राम-कर से		२५,८०० ,,
स्वतन्त्र किसान	२,०००	
कोल्खोज़ ,,	२३,८००	
कोल्खोज़ से साधारण दान		४,३०७ ,,
कोल्खोज़-किसानो से		१८,००० ,,
बाज़ार से ..		८०० ,,
सिनेमा आदि से		२,५०० ,,
वोट के अधिकार से वंचित		७५० ,,
गृहनिर्माण और उद्योग से		१,५०० ,,
सांस्कृतिक कर		४,५०० ,,
कर्ज़ से सूद		२५,००० ,,
	योग	९०४९७ रू०

व्यय

स्कूल पर		७८,८७०रूबल
अध्यापकों का वेतन	६३,६१३ रू०	
किन्डरगार्टन अध्यापक (सहायता)	२,१२० रू०	
		८,०६५ रू०
शासन-खर्च		३,५६२ रू०
	योग	९०,४९७ रू०

खुद भी स्कूल, अस्पताल के ऊपर खर्च करते है। १६२६ मे उन्होने १० करोड रूबल खर्च किये थे और पिछले साल (१६३७ में) २ अरब १२ करोड ३१ लाख। सोवियत् गांवो के बारे में स्तालिन् ने कहा—"*हमारे गांवो की शकल और भी बदल गई है। पुराना गांव—जिसमे केन्द्रीय*

वहुत से कोल्ख़ोज़ी गाँव इतने स्वच्छ और समुन्नत हैं, कि उनका मुक़ा-वला ज़ारशाही के कितने ही शहर भी नहीं कर सकते। उदाहरणार्थ किर्सा-नोफ़् जिले (वोरोनेज़् प्रान्त) के लेनिन्-कोल्ख़ोज़् को ले लीजिए। यह कोल्ख़ोज़ अपने काम में वहुत आगे वढ़ा हुआ है। इसके स्तख़ानोवी सदस्यों में ४ को सरकारी पदक प्राप्त हैं। यहाँ विजली पैदा करने के लिए अपना पावर-स्टेशन है। मोटरख़ाना और उसकी मरम्मत के लिए वर्कशाप है। अश्वपालन और शूकरपालन का अच्छे पैमाने पर इंतिज़ाम है। लकड़ी चीरने का कारख़ाना. और चटनी-अँचार की फ़ैक्टरी है। मोची और दर्ज़ी के काम की दूकानें हैं। ग्राम पंचायत के दोतल्ले सुन्दर घर हैं। एक क्लव है, जिसमें एक सिनेमा-हाल है। एक हाई स्कूल है। एक वयस्कों के लिए स्कूल है। कई वच्चाख़ाने हैं। एक पुस्तकालय और वाचनालय है। एक रेडियो का स्टेशन है जिससे ख़वर भेजी भी जा सकती है। एक हजा-मतख़ाना है। भोजनागार और अतिथि आश्रम भी है। एक प्रसूतागृह, एक सांस्कृतिक उद्यान और एक वड़ा सा क्रीड़ा-क्षेत्र है।

*** ***

यहाँ हम कुछ कोल्ख़ोज़ी गाँवों का विशेष विवरण देते हैं, जिससे पाठकों को मालूम होगा कि सोवियत् गाँवों में क्या हो रहा है।

(१) कालिनिन्-कोल्ख़ोज़् (मास्को प्रान्त,)—इसके १६५ सदस्य हैं। १६३७ में आमदनी २० लाख रूवल हुई थी; जिसमें से २लाख रूवल को गाँव ने घर वनाने के लिए अलग रख दिया। वे एक वड़ा प्रासाद वनाना चाहते हैं, जिसमें ग्राम-सोवियत्, कोल्ख़ोज़्-प्रवंध-समिति, क्लव और पुस्त-कालय के अलग अलग मकान होंगे। एक वहुत भारी हाल होगा, और इसके अतिरिक्त जाड़े में साग-भाजी वोने के लिए काँच का एक गर्म घर भी होगा।

हाल में पाँती से वने कुटीरों को देख कर यह समझना मुशकिल है, कि २० साल पहले इस गाँव की क्या हालत थी। अगर आप किसी बूढ़े से पूछें,

तो मालूम होगा, उस वक्त ६० घर थे। ४१२ एकड़ जमीन थी, जिसमें १४७ एकड़ तो ३ कुलकों के हाथ में थी। गाँव की सराय और लकड़ीखाना भी कुलको के हाथ में थे। ५० परिवारो के पास कोई खेत न था। उनके अधिकांश व्यक्ति नौकरी की तलाश मे शहर में घूमते थे। आधे से अधिक व्यक्ति निरक्षर थे, और बाकी लोगों का भी ज्ञान क ख से अधिक नही था।

आज गाँव में एक भी निरक्षर ही नहीं है, बल्कि गाँव के पुस्तकालय में आप गोर्की, पुश्किन्, नेक्रासोफ्, रोम्याँ रोलाँ, फ्रौएट वांगेर, विक्टर ह्यूगो, जैक् लण्डन, थ्योडोर, ड्राइसेर आदि लेखकों के ग्रन्थ पायेंगे। गाँव में एक नाटक-मंडली और संगीत-मंडली है।

कोल्खोज् मुख्यतया तरकारी की खेती करता है, और कृषि-विज्ञान के तरीकों और नई मशीनों की मदद से ४०० एकड में ८ लाख रुपये (प्रति एकड़ २०००) प्रति वर्ष पैदा करने मे सफल हुआ है। जाडे के दिनों में गर्म घरो में तरकारी की फसल होती है। अधिकांश भूमि ४ महीने के लिए सफेद वर्फ के नीचे दब जाती है। इसके लिए कोल्खोज् ने ऊन साफ करने का कारखाना बना रखा है। जाडे के दिनो में किसान उसमें काम करते हैं। १९३६ मे शूकर-पालन का काम भी शुरू किया गया, और १९३७ के अन्त में वहाँ ५५ सुअर हो गये।

पिछले साल कोल्खोज् के किसानो को प्रति कार्य-दिन के लिए २० रूबल और ६५ कोपेक (६ रुपये से ऊपर) नकद और २५ किलोग्राम् (प्रायः २५ सेर) तरकारी मिली। इतने अधिक परिमाण में उत्पन्न तरकारी को क्या किया जाय, यह भी प्रश्न उनके सामने आया। बुखानोफ्-परिवार—जिसमें पति-पत्नी ने मिल कर पिछले साल ४८३ कार्य-दिन काम किया—को कोल्खोज् से १० हजार रूबल (४,५०० रु० से अधिक) नकद और १२००० किलोग्राम (३०० मन) तरकारी आलू मिले। इसके अतिरिक्त उनके पास है वैयक्तिक पिछवाडे के खेत, एक गाय, सुअर और मुर्गी

की भी आमदनी हुई। दो साल पहले तक बुखानोफ़् की टुटही मड़ैआ चली आती थी, अब उसकी जगह नया पक्का बड़ा सा मकान है, जिसमें कई कमरे हैं। नई नई कुर्सियाँ और मेजें रक्खी हुई हैं।

(२) चपायेफ़्का-कोल्ख़ोज़् (उक्रइन्, पोल्तावा प्रान्त)—क्रान्ति के पहले इस गाँव का नाम था, 'वोगुस्लावोद्का और यह एक पोलिश बड़े ज़मीदार वोगुज़ा की सम्पत्ति थी। उस वक्त यहाँ के किसानों की जो दय-नीय अवस्था थी, उसे अब भी सीमा पार कर चन्द ही मीलों पर पोलैंड के गाँवों में देखा जा सकता है। लोगों ने पुराने अत्याचारों को स्मरण कर जमींदार का नाम गाँव के साथ रखना नहीं चाहा, इसलिए लाल-क्रान्ति के बहादुर सेनानायक चपायेफ़् का नाम अपने गाँव के लिये दिया।

पिछले साल १९३६ की अपेक्षा कोल्ख़ोज़ की आमदनी में बहुत बढ़ती हुई। प्रति कार्य-दिन के वेतन में मिलनेवाला अनाज दूना हो गया। नक़द रुपया भी अधिक मिला। और इसके सिवा अपनी गाय, सुअर, मुर्गी की आमदनी तथा पिछवाड़े के खेत की आमदनी। चपायेफ़्का के किसानों की आमदनी का अन्दाज़ उनकी ख़रीदों से आप लगा सकते हैं—५ व्यक्ति (बच्चों को लेकर) का प्रिस्तूपा एक साधारण किसान-परिवार है। उसने १९३७ में १३१२ कार्य-दिन कमाये। हज़ारों रूबल उन्होंने कपड़े पर ख़र्च किये। लड़की और दो पुत्रों के सिर्फ़ जूते और मोज़े पर १६२० रूबल ख़र्च हुए। याद रखना चाहिए कि क्रान्ति से पहले यहाँ के किसान छाल या रस्सी के घर के बने चप्पल पहना करते थे।

उसी गाँव के दूसरे कोल्ख़ोज़ी लोहार जब्रकुजेल्नी को ले लीजिए। उसके घर में भी ५ व्यक्ति हैं। पिछले जाड़े में उन्होंने ५ जोड़े बूट, २ ओवरकोट और ३ सूट (पहनने का सारा कपड़ा) ख़रीदे। इसके अति-रिक्त एक नया पलंग, कुछ कुर्सियाँ, एक आलमारी, तथा कुछ घर के काम की चीज़ें ख़रीदीं।

लोगों के भोजन में गेहूँ का आटा, माँस, मक्खन, अंडा, मलाई, दूध,

शहद, फल और तरकारियाँ हैं। साथ ही शहर की मिठाइयाँ, मिश्री, हल्वा, टिन की मछली भी गाँव के भंडार में खूब बिक रही हैं। इन की बिक्री कितनी तेजी से बढ़ी है, इसे आप वहाँ के भंडार की निम्न चीजों की बिक्री से समझ सकेंगे—

	१९३५	१९३६	१९३७
चीनी और मिश्री - - -	७१,०४० रू०	८३,५६१ रू०	१,२६,२६२ रू०
बिस्कुट कहवा आदि - -	२५,४८४ ,,	३६,५७० ,,	६३,५६० ,,
मकरौनी सेंवई आदि - -	३,६६८ ,,	३१,०३० ,,	३२,०६४ ,,
सूखी और टिन की मछली	१०,३६३ ,,	१५,८६४ ,,	१७,३३४ ,,

भंडार में शराब भी बिकती है। १९३७ मे उसकी बिक्री १९३६ की अपेक्षा १८ सैकड़ा १९३५ की अपेक्षा ६८ सैकड़ा अधिक हुई। साथ ही हल्के दर्जे की कड़ी शराब वोद्का की बिक्री कम हुई। ऊँची किस्म के तम्बाकू और सिगरेट की बिक्री १९३५ में १७,७२८ रूबल थी। १९३७ में वह ३६,१०५ हो गई। पिछले साल पहले की अपेक्षा गाँव वालों ने धोने का साबुन ड्योढ़ा और खुशबू तथा खुशबूदार साबुन दुगुना खरीदा।

कोल्खोज़ की नाट्यशाला में १००० आदमियों के बैठने की जगह है। पिछले साल दिसम्बर में ६ बार फिल्म दिखलाये गये हैं। गाँव की नाटक-मंडली ने पिछले दिसम्बर में ४ नाटक खेले और कितनी ही बार गाँव के संगीत-समाज ने संगीत-बैठक की।

चपायेफ्का के पास एक अच्छा क्रीड़ा-क्षेत्र है, जिसमें ४००० आदमियों के बैठने का इंतजाम है। फुटबाल, वोलीबाल, टेनिस आदि की टोलियाँ हैं। जाड़ों के दिनों में जब क्रीड़ाक्षेत्र बर्फ से ढँक जाता है, तो लोग स्केटिंग करते हैं। यहाँ के सभी १०६० घरों में रेडियो और बिजली की रोशनी है।

क्रान्ति के पहले चपायेफ्का के १०६० घरों में ४७४ के पास जमीन नहीं थी। ३०२ के पास जोतने के लिए घोड़े नहीं थे।

(३) बड़े-चलो-कोल्खोज़—(दिमित्रोफ् ज़िला, मास्को प्रान्त)

की भी आमदनी हुई। दो साल पहले तक वुख़ानोफ़् की टुटही मड़ैआ चली आती थी, अब उसकी जगह नया पक्का बड़ा सा मकान है, जिसमें कई कमरे हैं। नई नई कुर्सियाँ और मेजें रक्खी हुई हैं।

(२) **चपायेफ़्का-कोल्ख़ोज़् (उक्रइन्, पोल्तावा प्रान्त)**—क्रान्ति के पहले इस गाँव का नाम था, 'बोगुसास्लोवोद्का' और यह एक पोलिश बड़े ज़मींदार बोग़ुजा की सम्पत्ति थी। उस वक्त यहाँ के किसानों की जो दयनीय अवस्था थी, उसे अब भी सीमा पार कर चन्द ही मीलों पर पोलैंड के गाँवों में देखा जा सकता है। लोगों ने पुराने अत्याचारों को स्मरण कर जमींदार का नाम गाँव के साथ रखना नहीं चाहा, इसलिए लाल-क्रान्ति के बहादुर सेनानायक चपायेफ़् का नाम अपने गाँव के लिये दिया।

पिछले साल १९३६ की अपेक्षा कोल्खोज़ की आमदनी में बहुत बढ़ती हुई। प्रति कार्य-दिन के वेतन में मिलनेवाला अनाज दूना हो गया। नक़द रुपया भी अधिक मिला। और इसके सिवा अपनी गाय, सुअर, मुर्ग़ी की आमदनी तथा पिछवाड़े के खेत की आमदनी। चपायेफ़्का के किसानों की आमदनी का अन्दाज़ उनकी ख़रीदों से आप लगा सकते हैं—५ व्यक्ति (बच्चों को लेकर) का प्रिस्तूया एक साधारण किसान-परिवार है। उसने १९३७ में १३१२ कार्य-दिन कमाये। हजारों रूबल उन्होंने कपड़े पर ख़र्च किये। लड़की और दो पुत्रों के सिर्फ़ जूते और मोज़े पर १६२० रूबल ख़र्च हुए। याद रखना चाहिए कि क्रान्ति से पहले यहाँ के किसान छाल या रस्सी के घर के बने चप्पल पहना करते थे।

उसी गाँव के दूसरे कोल्ख़ोज़ी लोहार ज़खरकुजेल्नी को ले लीजिए उसके घर में भी ५ व्यक्ति हैं। पिछले जाड़े में उन्होंने ५ जोड़े बूट, ओवरकोट और ३ सूट (पहनने का सारा कपड़ा) ख़रीदे। इसके अतिरिक्त एक नया पलंग, कुछ कुर्सियाँ, एक आलमारी, तथा कुछ घर के काम की चीज़ें ख़रीदीं।

लोगों के भोजन में गेहूँ का आटा, माँस, मक्खन, अंडा, मलाई, दू

शहद, फल और तरकारियाँ है। साथ ही शहर की मिठाइयाँ, मिश्री, हल्वा, टिन की मछली भी गाँव के भंडार में खूब बिक रही है। इन की बिक्री कितनी तेज़ी से वढ़ी है, इसे आप वहाँ के भडार की निम्न चीज़ो की बिक्री से समझ सकेंगे—

	१९३५	१९३६	१९३७
चीनी और मिश्री - - -	२१,०४० रू०	८३,५९१ रू०	१,२६,३९२ रू०
बिस्कुट कहवा आदि - -	२५,४८४ ,,	३६,५७० ,,	६३,५६० ,,
मकरौनी मेवई आदि - -	३,६९८ ,,	३१,०७० ,,	३२,०६४ ,,
मूखी और टिन की मछली	१०,३९३ ,,	१५,८६४ ,,	१७,७७५ ,,

भडार में शराव भी बिकती है। १९३७ मे उसकी बिक्री १९३६ की अपेक्षा १८ सैकड़ा १९३५ की अपेक्षा ६८ सैकडा अधिक हुई। साथ ही हल्के दर्जे की कडी शराव वोद्का की बिक्री कम हुई। ऊँची किस्म के तम्वाकू और सिगरेट की बिक्री १९३५ में १७,७२८ रूबल थी। १९३७ में वह ३६,१०५ हो गई। पिछले साल पहले की अपेक्षा गाँव वालो ने धोने का साबुन ड्योढ़ा और खुशबू तथा खुशबूदार साबुन दुगुना खरीदा।

कोल्खोज़ की नाट्यशाला में १००० आदमियो के बैठने की जगह है। पिछले साल दिसम्बर में ६ वार फिल्म दिखलाये गये है। गाँव की नाटक-मंडली ने पिछले दिसम्बर मे ४ नाटक खेले और कितनी ही वार गाँव के सगीत-समाज ने संगीत-वैठक की।

चपायेफ्का के पास एक अच्छा क्रीडा-क्षेत्र है, जिसमे ५००० आदमियों के बैठने का इतज़ाम है। फुटवाल, वोलीवाल, टेनिस आदि की टोलियाँ है। जाड़ो के दिनो में जब क्रीडाक्षेत्र वर्फ से ढँक जाता है, तो लोग स्केटिंग करते है। यहाँ के सभी १०६० घरो में रेडियो और विजली की रोशनी है।

क्रान्ति के पहले चपायेफ्का के १०६० घरो मे ४५४ के पास ज़मीन नहीं थी। ३०२ के पास जोतने के लिए घोड़े नहीं थे।

(३) बढ़े-चलो-कोल्खोज़—(दिमित्रोफ् जिला, मास्को प्रान्त)

इस कोल्ख़ोज् की प्रयोगशाला के प्रबंधक सिदोरोफ़् ने अपने कोल्ख़ोज़ के बारे में कहा—"हम को इसका अभिमान है, कि मास्को प्रान्त में हमने जाड़े के गेहूँ को प्रति एकड़ ६० वुशल (१८ मन) पैदा किया।"

इस कोल्ख़ोज् के किसानों को प्रति कार्य-दिन के लिए ३१ किलोग्राम (३१ सेर) अनाज, तरकारी आदि तथा ३ रूबल (१।) मिला। गाँव के १३० आदमियों ने ३४००० कार्य-दिन काम किये। कुछ सदस्यों के काम तो ५०० से ६०० कार्य-दिन के हुए। ६० वर्ष के वूढ़े द्रोस्दोफ़् ने ५०० कार्य-दिन और उस की स्त्री ने २०० कार्य-दिन काम किये। इनको इतना अनाज मिला, कि उसको ले जाने के लिए ४० घोड़ा गाड़ियों की ज़रूरत पड़ी। इसके अतिरिक्त २१०० रूबल नक़द और तिस पर घर के वगीचे की आमदनी और गाय, मुर्ग़ी, सुअर ऊपर से।

१९३८ के लिए गाँववालों की योजना है, १२ सैकड़ा उपज वढ़ाने की। जाड़े से ही लोगों ने खाद जमा करना शुरू कर दिया है। गोवर के अतिरिक्त रसायनिक खाद खरीदी गई है। मास्को की कृषि-एकेडेमी के एक वैज्ञानिक ने जाड़ों में एक कृषि-कक्षा खोली, जिसमें ३० सदस्य पढ़ रहे थे। ४० सदस्य राजनैतिक और दूसरी कक्षाओं में शामिल हैं। गाँव से दो मील पर मास्को को जानेवाले विजली के खंभे हैं। सिदोरोफ़् ने कहा —"हम उस तार से अपने गाँव को मिलाने जा रहे हैं। फिर हर एक रहने के घर तथा पशुशाला और दूसरे मकानों में भी बिजली की रोशनी होगी। दाँवने की मशीन भी हम विजली से चलायेंगे।"

गाँव की योजनाओं में अव की साल एक सुअरख़ाना वनवाना है। एक अनाज सुखाने का मकान और एक अनाज रखने की ठेक। सिदोरोफ़् ने कहा—"वे दिन गये जव किसान तमाम जाड़े चूल्हे के गिर्द वैठे रहते थे। जाड़े में भी अव हमें काम करना है।"

सिदोरोफ़् अव की वार सोवियत् पार्लियामेंट का सदस्य चुना गया है।

* * * * * *

सोवियत् की खेती मे जहाँ किसान, इंजीनियर, मशीन तथा वैज्ञानिक मदद दे रहे हैं, वहाँ अखबारों का हिस्सा भी इसके विषय में कम नहीं है। जहाँ 'प्राव्दा' और 'इजवेस्तिया' जैसे सोवियत् की राजधानी से निकलनेवाले अखबार है, और २०-२० लाख की तादाद में छपकर सारे देश में जाते हैं। बहुत से संघ-प्रजातंत्र की राजधानी तथा प्रान्त और ज़िले के केन्द्र से निकलनेवाले अखबार भी है। किसानो का सब से बडा अखबार "क्रेस्त्यंस्काया गजेता" है, जिसकी ग्राहक-संख्या ३० लाख से भी ऊपर है और सोवियत् के दैनिक समाचार-पत्रो मे इससे अधिक ग्राहक-संख्या किसी की नही है। शायद दुनिया मे अमेरिका का ही कोई अखबार मुकाबला करे तो करे। बड़े बडे कोल्खोज़ खुद अपना अखबार निकालते हैं। जो खबरें रेडियो से आती हैं, उन्हें दीवार पर लिख दिया जाता है। ऐसे दीवार समाचार-पत्रों का वहाँ बहुत अधिक प्रचार है। कोई गाँव नहीं, जहाँ दीवार समाचार-पत्र न हो। इन दीवार समाचार-पत्रो में गाँव की आर्थिक, खेती संबधी तथा दूसरी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ होती हैं। किस ब्रिगेड ने सबसे अधिक निराई की है, किस कोल्खोजी ने ज़मीन खोदने में आज कमाल किया है—यह भी उसमे लिख दिया जाता है। यहाँ तक कि खेत पर काम करते वक़्त भी दीवार समाचार-पत्र पढने को मिलता है। (यहाँ चाय आदि गर्म करने के लिए छोटी कोठरी की दीवार या साथ आई लारी के किनारे का पटरा कागज का काम देता है।)बुनाई का मौसम आरंभ होने से कुछ समय पहले (हमारे यहाँ के क्वार की तरह का महीना)अखबारवाले किस तरह से कृषको की सहायता करते है, और सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी किस तरह भाग लेती है, इसे जानने के लिए मास्को के एक दैनिक पत्र से हम एक उद्धरण देते हैं—

स०स०स०र० के मन्त्रिमडल और स०स० कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति अगले मौसम में बोने की तैयारी की रिपोर्टों को देखकर समझती है, कि काम बिलकुल असन्तोषजनक है। ट्रैक्टर की मरम्मत,

पेट्रोल का संग्रह, बीज के संचय करने का प्रबंध, बीज की सफ़ाई, और साधारण बीज से चुने हुए बीजों का परिवर्तन जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और जल्दी किये जानेवाले काम में वक़्त पर न पूरा होने का भारी ख़तरा हो गया है।

स्थानीय अधिकारियों की बेपरवाई और सुस्ती के कारण दक्षिणी प्रदेशों (रोस्तोफ़् प्रान्त, क्रास्नोदोर इलाक़ा, स्तालिन्ग्राद् प्रान्त, क्रिमिया स्वायत्त-प्रजातंत्र और दूसरे) में वसन्त के बोने की तैयारी अत्यन्त धीमी गति से हो रही है। और दक्षिण में बुआई का समय सिर पर आ पहुँचा है।

२० दिसंबर १९३७ तक ट्रैक्टर की मरम्मत का काम सारे स०स०-स०र० में सिर्फ़ १३ सैकड़ा हो पाया है। चेचन-इंगुश स्वायत्त-प्रजातंत्र (३ सैकड़ा) गुर्जी संघ-प्रजातंत्र (६ सैकड़ा), रोस्तोफ़्-प्रान्त (११ सैकड़ा), ताजिक संघ-प्रजातंत्र (७ सैकड़ा), में ख़ास तौर से अक्षम्य सुस्ती देखी जा रही है। ट्रैक्टरों की मरम्मत जो हुई है, वह भी अच्छी तरह नहीं की गई है।

सारे स०स०स०र० में १५ दिसंबर १९३७ तक बीज जमा करने का काम सिर्फ़ ७६ सैकड़ा हुआ है। और बीज साफ़ करने का काम तो और भी कम, १८ सैकड़ा हुआ है। इनमें अधिक पीछे रहनेवालों में ये जगहे हैं—ओर्जोनीकिद्जे इलाक़ा, (बीज-संग्रह ६८ सैकड़ा और बीज-शोधन १० सैकड़ा) स्तालिन्ग्राद् प्रान्त (बीज-संग्रह ८७ सैकड़ा, बीज-शोधन १८ सैकड़ा)। बहुत जगह बीज-संग्रह करते वक़्त लोगों ने अलाय-बलाय बीज डाल दिया है।

कोल्खोजों के बीज का साधारण अनाज के बदले चुने हुए बीज चुने बीज-संग्रहालय और राजकीय 'अनाज-नेता ट्रस्ट' से बदलने का काम अभी आरंभ तक नहीं हुआ है।

मंत्रिमंडल और पार्टी की केन्द्रीय समिति इस बात को अक्षम्य अपराध समझती है। बोने का समय हमारे सिर पर आ पहुँचा है। ऐसे समय में भी

कितने ही मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन, मशीन-ट्रैक्टर-वर्कशाप और स्थानीय भूम्य-धिकारी अग्रणी कार्य-प्रबंधकों के बिना काम कर रहे हैं।

स्थानीय समाचार-पत्रों ने वसन्त की बुआई की तैयारी का ज़िक्र बड़े असन्तोषजनक तरीके से किया है। समाचार-पत्र उन असली अपराधियों का भंडाफोड़ नहीं कर रहे है, जिनके कारण कि ट्रैक्टर की मरम्मत, बीज-संग्रह और बीज-शोधन के काम में ढिलाई हो रही है। और कोल्खोज़ों तथा सोव्-खोज़ी किसानों में वसन्त की बुनाई के संबंध में साम्यवादी होड़ को संगठित करने में दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं।

मत्रिमंडल और पार्टी केन्द्रीय समिति ने सघ और स्वायत्त प्रजातंत्रों के मंत्रिमंडलों को, इलाकों, प्रान्तों और ज़िलों की कार्यकारिणी समितियों तथा उनकी जातीय पार्टियों, और इलाका, ज़िले और प्रान्त की पार्टी समितियों को हिदायत की है, कि ऊपर के दोषों को तुरंत दूर करें, और निम्न-लिखित बातों का अनुसरण करें—

१—दक्षिणी ज़िलों में ३ दिन के भीतर और उत्तरी ज़िलों में ५ से ७ दिन के भीतर वहाँ की प्रान्तीय पार्टी कमेटी के ब्यूरो और प्रान्तीय कार्य-कारिणी के मंत्रिमंडल, की सम्मिलित बैठक कर के वसन्त की बुआई की तैयारी पर विचार करें, और ज़िला की पार्टी कमेटियों के मंत्रियों, ज़िला के सोवियत् कार्यकारिणी के अध्यक्षों, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशनों के डाइरेक्टरों की मीटिंग करें और उसमें बहुत पिछड़े ज़िलों की कार्यकारिणी के मुख्य कार्यकर्त्ताओं की रिपोर्ट सुने, कि क्यों बुआई की तैयारी में देर हो रही है। उन्हें बीज-संग्रह तथा बीज-शोधन और ट्रैक्टर मरम्मत आदि को जल्दी करने के लिए रास्ता बतलायें। . . .

२—ट्रैक्टर मरम्मत और बीज को बोने के लिए तैयार करने के काम की मात्रा और योग्यता का दैनिक प्रोग्राम बनायें। और ज़रूरत हो तो खराब तरह से मरम्मत करनेवाले या खराब तरह से बीज को बोने के लिए तैयार करनेवाले अपराधी व्यक्तियों को सज़ा देने से बाज़ न आयें।

पेट्रोल का संग्रह, वीज के संचय करने का प्रवंध, वीज की सफ़ाई, और साधारण वीज से चुने हुए वीजों का परिवर्तन जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और जल्दी किये जानेवाले काम में वक़्त पर न पूरा होने का भारी ख़तरा हो गया है।

स्थानीय अधिकारियों की वेपरवाई और सुस्ती के कारण दक्षिणी प्रदेशों (रोस्तोफ़् प्रान्त, क्रास्नोदोर इलाक़ा, स्तालिन्ग्राद् प्रान्त, क्रिमिया स्वायत्त-प्रजातंत्र और दूसरे) में वसन्त के वोने की तैयारी अत्यन्त धीमी गति से हो रही है। और दक्षिण में वुआई का समय सिर पर आ पहुँचा है।

२० दिसंवर १९३७ तक ट्रैक्टर की मरम्मत का काम सारे स०स०स०र० में सिर्फ़ १३ सैकड़ा हो पाया है। **चेचन-इंगुश स्वायत्त-प्रजातंत्र** (३ सैकड़ा) **गुर्जी संघ-प्रजातंत्र** (६ सैकड़ा), **रोस्तोफ़्-प्रान्त** (११ सैकड़ा), **ताजिक संघ-प्रजातंत्र** (७ सैकड़ा), में ख़ास तौर से अक्षम्य सुस्ती देखी जा रही है। ट्रैक्टरों की मरम्मत जो हुई है, वह भी अच्छी तरह नहीं की गई है।

सारे स०स०स०र० में १५ दिसंवर १९३७ तक वीज जमा करने का काम सिर्फ़ ७६ सैकड़ा हुआ है। और वीज साफ़ करने का काम तो और भी कम, १८ सैकड़ा हुआ है। इनमें अधिक पीछे रहनेवालों में **ओर्जोनीकिद्ज़े** इलाक़ा, (वीज-संग्रह ६८ सैकड़ा और सैकड़ा) स्तालिन्ग्राद् प्रान्त (वीज-संग्रह ८७ सैकड़ा सैकड़ा)। वहुत जगह वीज-संग्रह करते वक़्त लोगों ने डाल दिया है।

कोल्ख़ोज़ों के वीज का साधारण वीज-संग्रहालय और राजकीय 'अ आरंभ तक नहीं हुआ है।

मंत्रिमंडल और पार्टी की केन्द्रीय समिति समझती है। वोने का समय हमारे सिर पर आ

निस्ट पार्टी वैसे भी नगर और उद्योग धन्धे सभी के नवनिर्माण की प्राण हैं। गाँवों में उसने क्या किया, इसका भी जिक्र कर देना जरूरी है।

कम्युनिस्ट पार्टी के मेंबर होने के लिए, कितनी कसौटियों से गुजरना पड़ता है, इसे हम अन्यत्र कह चुके हैं। शारीरिक और मानसिक तौर से उसे अधिक योग्य बनना पड़ता है। दूसरी तरफ जोखिम और खतरे के काम में निर्भीक होकर कूदना पड़ता है; और उसपर वेतन भी अपेक्षाकृत कम लेना पड़ता है। कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर होना है, एक खतरा, कष्ट और तपस्या का जीवन बिताना। और इसपर जरा सी गलती हो जाय तो पार्टी से निकालकर उसकी सारी तपस्या बेकार कर दी जाती है। निश्चय ही इन परीक्षाओं में पास होकर जो आयेगा, उसमें काम की क्षमता अधिक होगी, वह जनता का अधिक विश्वास-पात्र होगा। जिस तरह शासन के लिए गाँव से लेकर सारी सोवियत्-भूमि तक की सोवियत् स्थापित हैं। जिस तरह खेती के लिए गाँवों में सोव्खोज् और कोल्खोज् तथा शहरों में मजदूर-संघ, लेखक-संघ आदि स्थापित हैं, उसी तरह गाँवों और शहरों में सभी जगह कम्युनिस्ट पार्टी या उनके मेम्बर पाये जाते हैं। कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बरों की संख्या १६–१७ लाख से ज्यादा नहीं है। गाँवों में तो पार्टी मेम्बरों की संख्या और भी कम है। उदाहरणार्थ स्तारोसेल्ये-कोल्खोज् के १२०० परिवारों में सिर्फ १ पार्टी मेम्बर हैं। बुद्योन्नि कोल्खोज् (ओदेसा जिला) के ५५ परिवारों में १ और इलिच-कुल्खोज् (उक्रइन्) के १०४ परिवारों में ३ पार्टी मेम्बर हैं। लेकिन स्तारोसेल्ये के १२०० परिवारों में सब से अधिक प्रभावशाली व्यक्ति कम्युनिस्ट देरिवस् है। वहाँ कोई भी महत्त्वपूर्ण काम नहीं है, जिसमें देरिवस् से न पूछा जाता हो। महत्त्व-पूर्ण क्या, साधारण कामों में भी देरिवस् की पूछ होती है। अच्छे काम के लिए इनाम देते हैं, किसको कितना इनाम देना चाहिए, किसका काम सबसे अच्छा है और किसका उससे कम तो देरिवस् उसमें जरूर बुलाये जायेंगे। देरिवस् प्रबंध-कारिणी का सदस्य नहीं है, वह सिर्फ सांस्कृतिक विभाग का

३—५ से १३ जनवरी (१९३८) के बीच में सभी कोलखोज़ों के बीज-संग्रह के अच्छे बुरेपन की पूर्णतया जाँच कर लेनी चाहिए।

४—जहाँ आवश्यक हो, वहाँ के लिए इंजीनियरों और मिस्त्रियों की अध्यक्षता में शहर के कारखानों के योग्य कमकरों के ब्रिगेड् को बुलाया जाय और उन्हें उन मशीन-ट्रैक्टर-वर्कशापों में भेजा जाय, जिनमें ट्रैक्टर मरम्मत के काम की पूर्ति समय पर होने की संभावना नहीं है।

५—दक्षिणी जिलों में १५ जनवरी तक और उत्तरी जिलों में २० जनवरी तक मशीन ट्रैक्टर स्टेशनों और उनकी वर्कशापों तथा ज़िला के भूमि-विभागों में जो जगहें खाली हैं, उन्हें अनुभवी कार्यकर्त्ताओं से पूरा करना चाहिए; और इसकी सूचना २० जनवरी तक मंत्रिमंडल और पार्टी केन्द्रीय समिति के पास आ जानी चाहिए।

६—वसन्त की बुआई की खूब तैयारी करने के लिए सोव्खोज़ों और कोल्खोज़ों में ज़बर्दस्त होड़ कराना तथा रोज़-ब-रोज़ उसे विस्तृत क्षेत्र में संचालित करना चाहिए।

७—वसन्त की बुआई की तैयारी और होड़ की प्रगतियों के बारे में रोज़-ब-रोज़ और अच्छे ढंग से रिपोर्ट छापना समाचार-पत्रों का कर्तव्य है। . . . ."

*** ***

कम्युनिस्ट-पार्टी—कोल्खोज़ों का संबंध गाँवों से है। गाँव के जीवन को कोल्खोज़ों ने कितना परिवर्तित कर दिया है, यह ऊपर के वर्णन से मालूम होगा। लेकिन सभी देशों के किसानों की तरह सोवियत् के किसान भी बहुत पुराणवादी थे। नई चीज के लिए साहस करने की अपेक्षा बाप-दादों के रास्ते पर भूखे रह कर तिलतिल करके मरने में उन्हें ज़्यादा सन्तोष था। सोवियत् के ग्रामीण समाज के मन और शरीर में जिसने इतना भारी परिवर्तन कराया, वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे। कम्यु-

उसे पूरा कर अपने कोल्खोज़ को बोल्शेविक कोल्खोज़ और कोल्खोज़ी किसानों को समृद्ध बनाना।

(२) भूमि

२—सहयोग के सदस्यो के खेतो को अलग करनेवाली जो पहले मेड़ें थीं, वह तोड़ दी जायेंगी और सभी खेत एक महान् क्षेत्र के रूप में परिणत कर दिया जायगा, और सहयोग उसे सामूहिक रूप से काम में लायेगा।

सहयोग के अधिकार की भूमि सारी जनता की राजकीय सम्पत्ति है। किसान-मजदूर सरकार के कानून के अनुसार वह हमेशा के लिए सहयोग को दे दी जाती है लेकिन सहयोग न तो उसे खरीद बेच सकता है, न लगान पर दे सकता है। हर एक सहयोग को जिला की सोवियत् कार्यकारिणी समितियाँ गवर्नमेंट की ओर से दायमी बन्दोबस्त का प्रमाणपत्र देंगी; जिसमें सहयोग की भूमि का परिमाण और निश्चित सीमा दर्ज रहेगी। एक बार सहयोग के भीतर जितनी भूमि आ गई, उसे कम नहीं किया जा सकता। हाँ, पर्ती ज़मीन या स्वतंत्र किसानो की अधिक ज़मीन से उसे बढाया जरूर जा सकता है; और वह इस तरह से बढाया जायगा, उसके बढाने में यह खयाल रखा जायगा कि बीच में किसी दूसरे की ज़मीन न आ जाय।

समाजवादी भूमि में से एक छोटा सा टुकड़ा—जो कि घर से लगा होगा—हर एक कोल्खोज़ी घर को वैयक्तिक रूप मे इस्तेमाल करने के लिए दिया जायगा।

हर घर के वैयक्तिक इस्तेमाल के लिए मिली यह भूमि ¼ हेक्तर या ½ हेक्तर और किन्हीं किन्हीं जिलो में १ हेक्तर तक (जितनी भूमि में घर है, उसे छोड़ कर) होगी। इस परिमाण को उस इलाके या जिले की अवस्था को देखकर स०स०स०र० के कृषि-विभाग के आदेशानुसार संघ-प्रजातंत्र का कृषि-विभाग निश्चित करेगा।

३—लगातार चली गई, सहयोग की भूमि को कभी भी कम नहीं

२६—कोल्खोज़्-क़ानून

(कृषि-सम्बन्धी सहयोग के आदर्श नियम)

१७ फ़रवरी १९३५ को द्वितीय अखिल-संघ-कोल्खोज़्-उदनिक-कांग्रेस ने यह नियम बनाये; जिनको सोवियत् सरकार और कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने भी स्वीकार किया।

(१) उद्देश्य और कार्य

१—......ज़िला.......गाँव के जाँगर चलानेवाले किसान स्वेच्छा से कृषि संबंधी सहयोग में सम्मिलित होते हैं जिसमें कि वे उपज के साधनों तथा सबके संगठित श्रम के द्वारा कोल्खोज़्—समाजवादीय अर्थनीति को कुलकों तथा जाँगर चलानेवालों के लुटेरों और शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए कोल्खोज़् का निर्माण करना, तथा दरिद्रता और अज्ञान पर पूर्ण विजय प्राप्त करना, छोटी और वैयक्तिक खेती के पिछड़ेपन को हटाना, श्रम की उपज को बहुत ऊँचा बढ़ाकर कोल्खोज़् के किसानों के लिए बेहतर जीवन प्रदान करना सीखें।

कोल्खोज़् का मार्ग समाजवाद का मार्ग है; और सिर्फ़ वही जाँगर चलानेवाले किसानों के लिए अकेला ठीक मार्ग है। सहयोग (अर्तेल) के सदस्य निम्न बातों की ज़िम्मेवारी लेते हैं—अपने अर्तेल को मज़बूत करना, सच्चाई से काम करना, किये काम के अनुसार कोल्खोज़् की आमदनी को बाँटना, सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करना, कोल्खोज़् की सम्पत्ति की रक्षा करना, ट्रैक्टर और मशीन को ठीक से सँभालना, घोड़ों की ठीक से निगहबानी करना, किसान-मज़दूर सरकार ने जो काम उन्हें सौंपा है,

जानवरों में से अनेक घोड़े किराये पर दे सकती है।

सहयोग मिश्रित (कई जातियों के)-पशुपालन (फार्म) का प्रबंध करेगा; और जहाँ पर बहुत अधिक संख्या में पशु हैं, वहाँ अनेक विशेष जाति की पशुशालाओं का प्रबंध करेगा।

५—अनाज, कपास, चुकन्दर, सन, पटसन, आलू और तरकारी एवं चाय और तंबाकू पैदा करनेवाले ज़िलों के कोल्खोज़ों के हर एक घर को अधिकार है कि एक गाय, एक या दो बछड़ा, अपने छौनों के साथ एक सुअर या यदि कोल्खोज़-प्रबंधकारिणी अधिकार दे, तो अपने छौनों के साथ दो सुअर, १० तक भेड़ और बकरी, जितना चाहे उतनी मुर्गी, खरगोश और शहद की मक्खियों की २० मक्खीदानी रक्खे।

कृषि-प्रधान ज़िलों में जहाँ पशुपालन भी उन्नत है—हर एक कोल्-खोज़ी घर को अधिकार है, कि वह बछड़ों के अतिरिक्त २ या ३ गायें, अपने छौनों के साथ २ या ३ सुअर, २० से २५ तक भेड़ बकरी, जितना चाहे उतनी मुर्गी और खरगोश, और २० तक शहद की मक्खियों की मक्खी-दानियाँ रक्खे। ऐसे ज़िलों में निम्न स्थान शामिल हैं—खानाबदोश ज़िलों से दूरवाले कज़ाकस्तान के कृषि प्रधान ज़िले, बेलोरुसिया के पोलेसीमे ज़िले, उक्रइन् के चेर्नीगोफ़ और कियेफ़् ज़िले, पश्चिमी सिबेरिया प्रान्त के बरबिस्की की पथरीली भूमि तथा सिस्-अल्ताई ज़िले, ओम्स्क प्रान्त के इशिम् और तोबोल्स्क समुदायवाले ज़िले, बशकिरिया की ऊँची भूमि, पूर्वी सिबेरिया का पूरबवाला भाग, सुदूरपूर्व-प्रदेश के कृषि-प्रधान ज़िले, उत्तर-प्रदेश के बोलोग्दा और खोल्मोगोरि समूहवाले ज़िले।

उन ज़िलों में, जहाँ कि स्थायी तौर से या आधी खानाबदोशी की हालत में पशुपालन का रवाज है, जहाँ पर कि खेती कम महत्त्व रखती है, और पशुपालन लोगों का मुख्य व्यवसाय है—वहाँ कोल्खोज़ के हर एक घर को अधिकार है कि बछड़ों के अतिरिक्त ४ या ५ गायें, ३० से ४० तक भेड़-बकरियाँ, अपने छौनों के साथ २ या ३ सुअर, जितना चाहें उतनी मुर्गियाँ

किया जा सकता। सहयोग के छोड़नेवाले सदस्यों को सहयोग के अधिकार की भूमि में से कुछ भी देना मना है। जो लोग सहयोग से अलग होंगे, उन्हें राज्य की ग़ैर-आवाद ज़मीन से भूमि मिल सकती है। सहयोग की भूमि को फ़सल की वारी के अनुसार अनेक खेतों में वाँटा जायगा। फ़सल के वारी वाले खेतों में से एक भाग एक ब्रिगेड के लिए सदा के वास्ते दिया जायगा और वह फ़सल की वारी के सम्पूर्ण काल में उसे इस्तेमाल करेगा।

वहुत ज़्यादा ढोर पालनेवाले कोल्खोज़ों में अगर वहाँ काफ़ी ज़मीन है और उसकी आवश्यकता है, तो एक निश्चित भूभाग फ़ार्म (पशुशाला) के साथ जोड़ दिया जायगा और उस फ़ार्म के ढोरों के चारे के लिए वह खेत के तौर पर इस्तेमाल होगा।

(३) उपज के साधन

४—जुताई के काम करनेवाले पशु, खेती के औज़ार (हल, वोने, काटने, दाँवने, आदि की मशीन), वीज-भंडार, समाजीकृत पशुओं के लिए आवश्यक परिमाण में चारा, सहयोग के काम तथा कृषि-संवंधी उपज के पैदा करने के लिए जितने कामकाजों की ज़रूरत है, उनके लिए आवश्यक घर—ये सब समाज की सम्पत्ति होंगी, व्यक्ति की नहीं।

कोल्ख़ोज़् परिवार के रहने का घर उसके व्यक्तिगत पशु और मुर्ग़ियाँ, एवं इन व्यक्तिगत पशुओं के रखने के लिए जिन घरों की आवश्यकता होगी, उनका समाजीकरण नहीं होगा। वे कोल्ख़ोज़् परिवार के व्यक्तिगत अधिकार में रहेंगे।

कृषि-संवंधी औज़ारों के समाजीकरण के साथ साथ परिवार के अपने खेत में काम करने के लिए आवश्यक छोटे छोटे औज़ारों का समाजीकरण नहीं होगा।

आवश्यकता होने पर सहयोग-प्रवंधक-समिति कोल्ख़ोज़् के सदस्यों के वैयक्तिक तौर से इस्तेमाल करने के लिए समाजीकृत खेत जोतनेवाले

(क) उचित फ़सल की बारी का अनुसरण कर, गहरी जुताई और हानिकारक घासों को निकाल कर परती और जुतहड़ ज़मीन को ठीक तरह से इस्तेमाल करने तथा बढ़ाने के ज़रिए, एवं अधिक दामवाली फस्लों के समय पर सावधानी के साथ खेती करना, कपास के समय पर देख-माल, पंचायती और व्यक्तिगत दोनों तरह के पशुओं की खाद से तथा धातुज खाद से खेत को ज़रखेज़ बनाना; हानिकारक कीड़ों को नाश करना; बिना नुकसान किये सावधानी के साथ फ़सल काटना; सिंचाई की नहर-नालियों की रक्षा और सफाई; जंगल की हिफाज़त करना; रक्षित जंगलों का लगाना, स्थानीय कृषि-विभाग द्वारा निश्चित किये तथा कृषि-शास्त्रीय नियमों का सख्ती के साथ पालन करना;

(ख) बोने के लिए उत्तम बीज का चुनना, उनको सावधानी के साथ साफ करना, चोरी और खराब होने से उनकी हिफाज़त करना, उन्हें शुद्ध और हवा-रोशनीवाले घरों में रखना, चुने हुए बीज द्वारा बोये जानेवाले खेतों के क्षेत्र को बढ़ाना;

(ग) वैज्ञानिक ढंग से भूमि को कोल्खोज् के खेतों में लाकर, उपेक्षित और ग़ैर-आबाद ज़मीन को सुधार और जोत कर सहयोग के अधिकार में आई सभी भूमि को इस्तेमाल कर जुतहड़ को और बढ़ाना;

(घ) सहयोग के अधिकारवाले सभी जुताई के पशु, सभी सम्पत्ति, कृषि-संबंधी हथियार, बीज और दूसरे उपज के साधनों को सहयोग के काम के लिए पूरी तौर से इस्तेमाल करना और जिन ट्रैक्टर, मोटर, दँवाई की मशीन, काटने की कंबाइन और दूसरी मशीनें जिन्हें कि मज़दूर-किसान-सरकार ने मशीन

और खरगोश, शहद की मक्खियों की २० मक्खीदानी रखें। इस प्रकार के ज़िले ये हैं—ख़ानावदोशी के पास के ज़िले कज़ाकस्तानवाले पशुपालन-प्रधान ज़िले, तुर्कमानिस्तान, ताजिकिस्तान कराकल्पका, किर्गिज़िस्तान ओइरोतिया, खकसिया, पश्चिमी-बुर्यत् मंगोलिया, कल्मुक-स्वायत्त-ज़िला, दागिस्तान स्वायत्त-प्रजातंत्र की ऊँची भूमि, चेचेनो-इंगुशिया, कर्बादिनो-बल्गारिया, उत्तरी काकेशस् के ओसेती और कराचयेफ़् स्वायत्त-ज़िले और आज़ुर्बाइजान्, अर्मनी, गुर्जी संघ-प्रजातंत्रों की ऊँची भूमियाँ।

जिन ज़िलों में ख़ानावदोशी पशुपालन-प्रधान व्यवसाय है; खेती जहाँ बिलकुल नाम मात्र है; और सर्वत्र पशुपालन ही गृहस्थी का काम है, उन ज़िलों में कोल्ख़ोज़ी प्रत्येक घर को अधिकार है, कि वह बछड़ों के साथ ८ से १० तक गायें, १०० से १५० तक भेड़ बकरियाँ, जितनी चाहें उतनी मुर्ग़ियाँ, १० तक घोड़े, ५ से ८ तक ऊँट रक्खें। ऐसे ज़िले हैं—कज़ाकस्तान के ख़ाना-बदोशी ज़िले, बुर्यत्-मंगोलिया के ख़ानावदोशी ज़िले और नागाइस्क ज़िला।

(४) सहयोग का कामकाज और उसका प्रबन्ध

६—सहयोग को उन योजनाओं के मुताबिक़ अपने कोल्ख़ोज़् का प्रबन्ध करना होगा, जिन्हें कि किसान-मज़दूर-राज्य की संस्थाओं ने कृषि की उपज के बारे में निश्चित किया है; और राज्य की ओर से सहयोग के लिए जो जवाबदेहियाँ हैं।

सहयोग को निम्न बातों को पूर्णतया पालन करने की ज़िम्मेवारी लेनी पड़ेगी। कोल्ख़ोज़् की विशेष अवस्था और स्थानीय वातावरण को नज़र में रख कर तैयार की गई बुनाई, गर्मी की जुताई, पाँतियों के भीतर खेती करने, खेत काटने, दाँवने, पलिहर जोतने की योजना और पशुपालन के विकास के संबंध में राजकीय योजना को पूरा करना।

सहयोग की प्रबंधकारिणी और उसके सभी सभासदों का कर्तव्य होगा—

(क) उचित फसल की बारी का अनुसरण कर, गहरी जुताई और हानिकारक घासों को निकाल कर परती और जुतहड़ जमीन को ठीक तरह से इस्तेमाल करने तथा बढाने के ज़रिए, एवं अधिक दामवाली फ़स्लों के समय पर सावधानी के साथ खेती करना, कपास के समय पर देख-भाल, पचायती और व्यक्तिगत दोनों तरह के पशुओं की खाद से तथा धातुज खाद से खेत को ज़रखेज़ बनाना; हानिकारक कीड़ों को नाश करना; बिना नुकसान किये सावधानी के साथ फ़सल काटना; सिंचाई की नहर-नालियों की रक्षा और सफ़ाई; जंगल की हिफ़ाज़त करना; रक्षित जंगलों का लगाना, स्थानीय कृषि-विभाग द्वारा निश्चित किये तथा कृषि-शास्त्रीय नियमों का सख्ती के साथ पालन करना;

(ख) बोने के लिए उत्तम बीज का चुनना, उनको सावधानी के साथ साफ करना, चोरी और खराब होने से उनकी हिफ़ाज़त करना, उन्हे शुद्ध और हवा-रोशनीवाले घरों में रखना, चुने हुए बीज द्वारा बोये जानेवाले खेतों के क्षेत्र को बढ़ाना;

(ग) वैज्ञानिक ढग से भूमि को कोलखोज़ के खेतों में लाकर, उपेक्षित और गैर-आबाद ज़मीन को सुधार और जोत कर सहयोग के अधिकार में आई सभी भूमि को इस्तेमाल कर जुतहड़ को और बढाना;

(घ) सहयोग के अधिकारवाले सभी जुताई के पशु, सभी सम्पत्ति, कृषि-संबंधी हथियार, बीज और दूसरे उपज के साधनों को सहयोग के काम के लिए पूरी तौर से इस्तेमाल करना और जिन ट्रैक्टर, मोटर, दँवाई की मशीन, काटने की कंबाइन और दूसरी मशीनें जिन्हें कि मज़दूर-किसान-सरकार ने मशीन-

ट्रैक्टर-स्टेशनों की मार्फ़त कोल्खोज़् की सहायता के लिए दिया है, उनका पूर्णतया इस्तेमाल करना। कोल्खोज़् के पशुओं और औज़ारों को अच्छी अवस्था में रखने के ख़याल से समाजीकृत पशुओं और औज़ारों को ठीक प्रकार से देख रेख करने का इन्तज़ाम करना;

(ङ) पशुपालन—और जहाँ संभव है वहाँ अश्वपालन—को संगठित करना, पशुपालन की जगहों में पशुओं की संख्या और उनकी नसल और उपज को वढ़ाना; एक गाय या छोटा पशु पाल कर ईमानदारी के साथ काम करनेवाले सहयोग के सदस्यों को सहायता करना, कोल्ख़ोज़् की पशुशाला के पशुओं के लिए ही नहीं; वल्कि व्यक्तियों के अधीन भी जो पशु हैं, उनकी भी नसल सुधारने के लिए अच्छी जाति के साँड़ों का इस्ते-माल करना; पशु-शास्त्र और पशु-चिकित्सा संवंधी निश्चित नियमों का पालन करना;

(च) चारे की उपज को वढ़ाना, गोचर-भूमि और तृण-भूमि को उन्नत करना, सहयोग के जो सदस्य ईमानदारी के साथ समाज-वादी कारवार में काम कर रहे हैं, उनकी सहायता करना, और कार्य-दिन के वदले में जहाँ संभव है, वहाँ कोल्ख़ोज़् की गोचर-भूमि को उन्हें चराने देना और जहाँ संभव है, वहाँ वैयक्तिक पशुओं के लिए उन्हें चारा देना;

(छ) स्थानीय प्राकृतिक अवस्था के अनुसार कृषि की उपज से सम्वन्ध रखनेवाले दूसरे व्यवसायों को विकसित करना, भिन्न भिन्न ज़िलों में मौजूद दस्तकारी को तरक़्क़ी देना, पुराने पोखरों को साफ़ करना और हिफ़ाज़त से रखना, तथा नये पोखरों को वनाना और मछली-पालन की उन्नति करना;

(ज) पंचायती तौर पर पशुशालाओं और सार्वजनिक गृहों के निर्माण के लिए इंतजाम करना;

(झ) सहयोग के सभासदों का व्यावसायिक ज्ञान बढ़ाना और कोल्खोज़ी किसानों को सहायता देकर उन्हें ब्रिगेडियर, ट्रैक्टर-ड्राइवर कंबाइन-कमकर, मोटर-ड्राइवर, पशुचिकित्सासहायक, अश्वपाल, शूकरपाल, पशुपाल, भेड़पाल, चरवाहा और प्रयोग-शालाकमकर बनने के लिए शिक्षित करना,

(ञ) सहयोग के सदस्यों के सांस्कृतिक धरातल को ऊँचा करना, उन्हें समाचार-पत्रों, पुस्तकों, रेडियो और सिनेमा से परिचित कराना, क्लबों, पुस्तकालयों और वाचनालयों की स्थापना करना, स्नानागारों और हज्जाम-दूकानों को स्थापित करना, खेत के कैम्प को शुद्ध और रोशनी से युक्त बनाना, गाँव की सड़कों को अच्छी हालत में रखना तथा उनके किनारे नाना प्रकार के वृक्षों—विशेषतया फलदार वृक्षों—को लगाना और कोल्खोज़ी किसानों को उनके घरों को सुधारने तथा सुंदर बनाने में सहायता करना;

(ट) स्त्रियों को कोल्खोज़ के उत्पादन के काम तथा सामाजिक जीवन की ओर आकर्षित करने के लिए योग्य और अनुभवी कोल्खोज़ी स्त्रियों को नेतृत्व के पद पर पहुँचाना, और जहाँ तक संभव है, वहाँ तक बच्चाखाना, किन्डरगार्टन तथा दूसरे उपायों द्वारा उन्हें घरेलू काम से मुक्त करना।

(५) सदस्यता

७—सहयोग में नये मेम्बर वे ही चुने जायेंगे, जिनको प्रबंध-कारिणी ने सहयोग की साधारण सभा में पेश कर मंजूरी ले ली है।

सभी जाँगर चलानेवाले नर-नारी—जो १६ वर्ष की अवस्था को पहुँ

गये हैं—सहयोग के सदस्य बन सकते हैं।

कुलक तथा जो लोग निर्वाचकता के अधिकार से वंचित हैं, वे सहयोग में शामिल नहीं किये जा सकते। इस नियम को निम्न प्रकार के व्यक्तियों के बारे में अपवाद समझा जा सकता है—

(क) निर्वाचकता के अधिकार से वंचित पुरुषों की ऐसी सन्तान, जो कि कितने ही साल से समाज के लिए उपयोगी काम में लगी हुई हैं, और समझकर काम करनेवाली हैं;

(ख) पहले के कुलक तथा सोवियत् और कोल्ख़ोज़् के विरुद्ध काम करने के लिए निर्वासित कर दिये गये परिवारों के आदमी, जिन्होंने अपने नये निवास-स्थान में ३ वर्ष से अधिक तक ईमानदारी से काम करके और सोवियत् सरकार की योजनाओं का समर्थन करके अपने को सुधारा है।

वे स्वतंत्र किसान जिन्होंने कि सहयोग में सम्मिलित होने से पूर्व दो साल के भीतर अपना घोड़ा बेच दिया है, और जिनके पास बीज नहीं है, वह तभी सहयोग में सम्मिलित किये जा सकते हैं, जब कि वे स्वीकार करें कि अपने अगले ६ वर्ष की कमाई में से घोड़े और बीज का दाम चुका देंगे।

८—सहयोग से कोई सदस्य तभी निकाला जा सकता है, जब कि ऐसा प्रस्ताव सहयोग के कम से कम $\frac{2}{3}$ सदस्योंवाली साधारण सभा में स्वीकृत हुआ हो। सहयोग के सदस्यों की साधारण सभा की कार्यवाही लिखते समय यह स्पष्ट लिखना होगा, कि कोल्ख़ोज़् के कितने सदस्य वहाँ उपस्थित थे, और कितनों ने निकाल बाहर करने के प्रस्ताव का समर्थन किया। सहयोग के सभासद् द्वारा ज़िला-सोवियत्-कार्यकारिणी-समिति के पास उक्त फ़ैसले की अपील करने पर उसका अंतिम फ़ैसला ज़िला-सोवियत्-कार्यकारिणी-समिति के विभागाध्यक्ष, सहयोग-प्रबंधकारिणी के अध्यक्ष की उपस्थिति में करेंगे।

(६) सहयोग का कोष

९—जो कोई सहयोग में शामिल होना चाहता है, उसे अपनी जोत के अनुसार प्रतिघर (परिवार) २० से ४० रूबल तक प्रवेश-शुल्क देना होगा। यह प्रवेश-शुल्क सहयोग के न बँटनेवाले कोष में जमा होगा।

१०—कोल्खोज् के सदस्यों की समाजीकृत (पचायती) सम्पत्ति (जुताई के पशु, खेती के औज़ार, खेती के मकान आदि) के मूल्य का १/४ से १/२ तक सहयोग के न बँटनेवाले कोष में जमा होगा। अधिक जोत वालो से अधिक सैकड़ा मूल्य लेकर न बँटनेवाली पूँजी में शामिल किया जायगा। सपत्ति का बाकी बचा हिस्सा सदस्य के नाम सहयोग के शेयर (हिस्सेदारी) के रूप में शामिल किया जायेगा।

प्रबंध-समिति सहयोग छोड़नेवाले सदस्य का अन्तिम हिसाब तैयार करेगी, और उनके शेयर के नकद दाम को लौटा देगी। छोड़नेवालो को अपने पहले के खेतो के बदले में सहयोग की भूमि की सीमा के बाहर जगह मिलेगी। आमतौर से हिसाब-किताब सरकारी वर्ष के अन्त मे किया जायगा।

११—फसल की आमदनी और पशुशाला की उपज से जो कुछ मिलेगा, उसका उपयोग सहयोग निम्न प्रकार से करेगा—

(क) राज्य को दिये जानेवाले अनाज तथा बीज के कर्ज को अदा करना, मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन को उसके काम के लिए कानून के अनुसार लिखे हुए इकरारनामे के मुताबिक पैसा देना, उधार खरीदे हुए माल की शर्तों को पूरा करना;

(ख) बोने के लिए बीज और पशुओ के लिए चारे का भाग साल भर पहले से अलग कर देना, और वार्षिक आवश्यकता के १० से १५ सैकडे तक अधिक बीज और चारा आगे बुरी फसल या अपर्याप्त चारा होने के वक्त काम में लाने के लिए साल साल नया सुरक्षित रखना।

(ग) साधारण सभा के निश्चयानुसार एक फ़ंड क़ायम करना, जो कि अंग-भंग हो गये सदस्यों, बूढ़ों, चन्द दिनों के लिए शरीर से अयोग्य, लाल सेना के आदमियों के कष्ट में पड़े हुए परिवारों की सहायता और बच्चा-ख़ाना, तथा किंडरगार्टन के चलाने में ख़र्च होगा। इस फ़ंड में सारे कोल्ख़ोज़् की आमदनी का दो सैकड़ा से ज़्यादा नहीं दिया जा सकता।

(घ) सहयोग के सदस्यों की साधारण सभा के निश्चयानुसार उपज का एक हिस्सा सरकार के हाथ या खुले बाज़ार में बेचने के लिए अलग रख देना।

(ङ) सहयोग की फ़सल तथा पशुशाला की उपज का बचा हिस्सा कार्य-दिन की संख्या के अनुसार सहयोग के सदस्यों में बाँट दिया जायगा।

१२—सहयोग को जो नक़द आमदनी होगी, उसे वह निम्न प्रकार से खर्च करेगा—

(क) क़ानून के अनुसार निश्चित पैसा राज्य को टैक्स के रूप में देना और बीमे की फ़ीस अदा करना;

(ख) उत्पादन के लिए चलते हुए काम की आवश्यकता—कृषि संबंधी औजारों की तात्कालिक मरम्मत, पशु-चिकित्सा संबंधी सेवा, हानिकारक घासों और कीड़ों को नष्ट करना आदि पर ज़रूरी ख़र्च करना;

(ग) सहयोग के प्रबंध और कार्य संबंधी ख़र्चों को चलाने के लिए सारी नक़द आमदनी के दो सैकड़े तक को अलग कर देना;

(घ) ब्रिगेडियर तथा दूसरे कार्यकर्त्ताओं की शिक्षा, बच्चाख़ाने का प्रबंध, रेडियो लगाने आदि सांस्कृतिक कामों के लिए फ़ंड का अलग कर देना;

(ङ) कृषि-संबंधी औजारों तथा पशुओं के ख़रीदने के लिए, मकान

बनाने के सामान, मकान बनाने के काम में बाहर से बुला कर लगाये गये कमकरो की तनख्वाह देने और कृषि-बैंक को लबी मुद्दत के कर्ज के तात्कालिक देने को अदा करने के लिए सहयोग के न बँटनेवाले फ़ड में पैसा रक्खेगा। यह पैसा सहयोग की नकद आमदनी का १० सैकड़े से कम नहीं और २० सैकड़े से अधिक नही होगा।

(च) सहयोग की बाकी बची हुई सारी नकद आमदनी सदस्यों में उनके कार्य-दिन के अनुसार बाँट दी जायगी।

आमदनी को पाने के दिन ही सहयोग की वही में लिख देना होगा।

सहयोग-प्रवधक-समिति अपनी आमदनी और खर्च का एक वार्षिक तखमीना तैयार करेगी; लेकिन उसके अनुसार तभी काम होगा, जब कि सहयोग के सदस्यों की एक साधारण सभा ने उसे स्वीकार कर लिया हो।

प्रवधक-समिति तखमीने में दी हुई मदो पर ही खर्च कर सकती है। प्रवधक-समिति को अधिकार नही है कि वार्षिक तखमीने की एक मद के पैसे को दूसरी मद में खर्च करे। एक मद से दूसरी मद में खर्च करने के लिए प्रबंधक-समिति को साधारण सभा से आज्ञा लेनी होगी।

सहयोग अपने नक़द रुपये को किसी बैंक या सेविंग बैंक के चलते-खाते में रक्खेगा। चलते-खाते से पैसा तभी निकाला जा सकता है, जब कि सहयोग की प्रवधक समिति ने आज्ञा दी हो। आज्ञा उचित समझी जायगी यदि सह-योग के अध्यक्ष या कोषाध्यक्ष ने हस्ताक्षर कर दिया हो।

(७) संगठन, वेतन और श्रम के संबंध में

१३—सहयोग का सभी काम साधारण सभा में स्वीकृत अन्दरूनी नियम और कायदे के मुताबिक उसके मेम्बरो के निजी जाँगर से किया जायगा। बाहर से खेती का मजदूर वही व्यक्ति रखा जायगा, जो विशेष ज्ञान और शिक्षा रखता है—जैसे कि कृषि विशेषज्ञ, इंजीनियर, मिस्त्री आदि।

खास अवस्था में कुछ दिनों के लिए मजदूरी पर किसी को तभी रखा जा सकता है, जब कि कोई ऐसा ज़रूरी काम हो, जिसे निश्चित समय के भीतर अपनी सारी शक्ति लगा कर भी सहयोग के सदस्यों की शक्ति नहीं कर सकती; या कोई मकान आदि निर्माण का काम हो।

१४—प्रबंध-समिति सहयोग के सदस्यों में से उत्पादन के काम के लिए अलग अलग ब्रिगेड नियुक्त करेगी।

खेत-ब्रिगेड, फ़सल की एक बारी से कम के लिए नहीं नियुक्त किया जायगा।

खेत-ब्रिगेड को फ़सल की बारी के समय के लिए फ़सल की बारी वाले खेत में से एक ख़ास हिस्सा मिलेगा।

कोल्ख़ोज् की प्रबंध-कारिणी ख़ास परवाने के ज़रिए हर एक खेत-ब्रिगेड को सभी आवश्यक औज़ार, जुताई के जानवर और रहने के लिए मकान देगी।

पशुपालन-ब्रिगेड की नियुक्ति तीन साल से कम के लिए न होगी।

सहयोग की प्रबंध-कारिणी प्रत्येक पशुपालन-ब्रिगेड को पोसे-बढ़ाये जानेवाले जानवर, औज़ार, जुताई के जानवर और काम के लिए आवश्यक मशीनरी, तथा पशुओं के लिए ज़रूरी मकान देगी।

ब्रिगेडियर सहयोग के सदस्यों को काम बाँटेगा इसमें वह इस बात का ख़याल रखेगा कि हर एक सदस्य को उसकी सब से अधिक उपयोगिता के साथ इस्तेमाल किया जाय। वह किसी प्रकार का पक्षपात या भाईचारे का ख़याल न रखेगा। काम देने में वह हर एक कमकर के शारीरिक बल, अनुभव और दक्षता का पूरा ख़याल रखेगा। गर्भिणी या दूध-पिलानेवाली स्त्रियों को हल्का काम देगा। गर्भिणी स्त्रियों को बच्चा पैदा होने से १ मास पहले और पैदा होने के १ मास बाद काम से छुट्टी देगा; और इन दोनों महीनों के लिए आधे कार्य दिन के हिसाब से वेतन देगा।

१५—सहयोग में कृषि-संबंधी काम छोटे छोटे टुकड़ों में बाँट करके

किया जायगा।

सहयोग की प्रबंध-कारिणी कृषि-सम्बधी काम के परिमाण का एक नाप तथा प्रति कार्यदिन के वेतन की दर तैयार करेगी; और कोल्खोज् की साधारण सभा उसे स्वीकार करेगी।

काम के परिमाण का नाप निश्चय करते वक्त हर एक प्रकार के कामों को देखना होगा कि एक जवाबदेही रखनेवाला कमकर उतने समय में कितना काम करता है। इसमें जुताई के जानवर, मशीन और खेत की मिट्टी का भी ख़याल करना होगा। प्रत्येक किस्म का काम जैसे एक हेक्तर जोतना, एक हेक्तर बोना, एक हेक्तर कपास का रोपना, एक टन अनाज दाँवना, एक सेन्तनेर चुकन्दर खोदना, एक हेक्तर सन निकालना, एक हेक्तर सन सींचना, एक लितर (लिटर=१·७५६८ पिंट=प्राय: १ सेर) दूध का दुहना आदि का मूल्य प्रति कार्यदिन में जोड़ते वक्त यह ख़याल रखना होगा, कि उस काम के करने में कार्यकर्ता की चतुरता की कितनी आवश्यक्ता है; उसमें कितनी कठिनाई और दुस्हता है, और सहयोग के काम के लिए उसका महत्त्व कितना है। ब्रिगेडियर सहयोग के प्रत्येक मेम्बर को प्राय: (एक सप्ताह से कम पर नहीं) उसके सारे किये काम का परिमाण जोड़ेगा और निश्चित दर के अनुसार उक्त कोल्खोज़ी के किये हुए कार्य-दिनों की संख्या को श्रम-बही में दर्ज करेगा।

प्रति-मास प्रबंध-कारिणी सहयोग के सदस्यों की नाम-सूची उनके पिछले मास के किये हुए, कार्य-दिनो की संख्या के साथ टाँग देगी। प्रत्येक कोल्खोज़ी के वार्षिक काम और आमदनी के जोड़ को ब्रिगेडियर, सहयोग के अध्यक्ष तथा कोषाध्यक्ष को जाँचना होगा। सहयोग के प्रत्येक सदस्य ने जितने कार्य-दिन काम किये, उसकी सूची सर्व साधारण की जानकारी के लिए टाँग दी जायगी; और सहयोग की आय के बँटवारे के हिसाब को स्वीकार करने के लिए जिस दिन साधारण-सभा होगी, उस दिन से कम से कम दो सप्ताह पहले उक्त सूची टँग जानी चाहिए।

अगर एक खेत-ब्रिगेड अपने अच्छे काम के कारण अपने हिस्से के खेत में से कोल्खोज़ की औसत फ़सल से अच्छी फ़सल पैदा करे, या अपने अच्छे काम के कारण पशुपालन-ब्रिगेड गौवों से अधिक दूध पैदा करे; पशुओं को ज़्यादा मोटा करे, और वछड़ों को न गँवावे; तो सहयोग की प्रवंध-कारिणी ब्रिगेड के सदस्यों को पारितोपिक देगी, जो कि उस ब्रिगेड के किये हुए तमाम कार्य-दिनों की संख्या का १० सैकड़ा तक होगा और ब्रिगेड के श्रेष्ठ उदर्निकों (तूफ़ानी कमकरों) को १५ सैकड़ा तक एवं ब्रिगेडियर तथा पशुशाला के प्रवंधक को २० सैकड़ा तक पारितोपिक मिलेगा।

यदि काम की ख़रावी के कारण खेत-ब्रिगेड अपने हिस्से के खेत से कोल्खोज़् की औसत फ़सल से कम फ़सल पैदा करे, या अपने बुरे काम के कारण पशुपालन-ब्रिगेड गौवों से औसत से कम दूध पैदा करे, पशुओं की मुटाई को औसत से कम करे, और वछड़ों को औसत संख्या से अधिक गँवाए; तो सहयोग की प्रवंध-कारिणी उक्त ब्रिगेड के सव सदस्यों की आय में से १० सैकड़ा काट लेगी।

सहयोग की आमदनी को सदस्यों में वाँटते वक़्त हर एक सदस्य के किए हुए कार्यदिन की संख्या मात्र का ख़याल रखा जायगा।

१६—साल के भीतर किसी सदस्य को अगवड़ नक़द दिया जा सकता है; लेकिन वह रक़म उसके अपने काम से मिलनेवाली रक़म से आधी से अधिक नहीं होनी चाहिए।

अनाज-दँवाई के आरंभ के समय से सदस्यों को अगवड़ दी जा सकती है; लेकिन वह कोल्खोज़् की भीतरी आवश्यकता के लिए दाँ कर अलग रखे हुए अनाज का १० से १५ सैकड़ा होना चाहिए। जिन सहयोगों में औद्योगिक फ़सल (कपास आदि) वोई जाती है, उनके सदस्यों को राज्य के लिए दी जानेवाली कपास, सन, पटसन, चुक़ंदर, चाय, तंवाकू इत्यादि को अदा किये विना भी नक़द आमदनी वाँटी जा सकती है; लेकिन इस वाँटने में यह ध्यान रखना होगा कि वह जिस परिमाण में माल अदा किया

गया है, उसके अनुसार हो; प्रति सप्ताह एक बार से अधिक नहीं तथा अदा किये हुए माल के रूप में मिले पैसे के ६० सैकड़े तक ही हों।

१७—सहयोग के सभी सदस्य इस बात के लिए परस्पर प्रतिज्ञा-बद्ध होंगे कि वह कोल्खोज़ की सम्पत्ति और कोल्खोज़ की भूमि पर काम करने वाली सरकारी मशीन को बहुत सावधानी से रखेंगे, ईमानदारी से काम करेंगे, कोल्खोजी कानून, साधारण-सभा के प्रस्ताव और प्रबंध-कारिणी के आदेशों के अनुसार चलेंगे; सहयोग के आंतरिक नियमों और उपनियमों का पालन करेंगे; प्रबंध-कारिणी और ब्रिगेडियर ने जो काम उनके जिम्मे लगाया है, उसको अक्षर अक्षर पूरा करेंगे; अपने सामाजिक कर्तव्य का पालन करेंगे; और श्रम-संबधी विनय का ख्याल रखेंगे।

यदि कोई व्यक्ति सार्वजनिक सम्पत्ति की बेपरवाही या असावधानी से इस्तेमाल करेगा, बिना उचित कारण के काम से गैरहाजिर होगा, थोड़ा काम करेगा, या श्रम-संबधी विनयों और नियमों की अवहेलना करेगा, तो प्रबध-कारिणी ऐसे व्यक्ति को आन्तरिक नियम-उपनियमों के अनुसार दंड देगी; जो इस प्रकार होगा—जिस काम को बुरी तौर से किया, उसे बिना वेतन पाये फिर से करना होगा; साधारण सभा में उन्हें निंदित, लज्जित या भर्त्सित किया जायगा, उनका नाम काले बोर्ड पर लिख कर टाँगा जायगा; ५ कार्यदिन तक की आमदनी तक का जुर्माना किया जायगा; काम के पद से नीचे उतार दिया जायगा, कुछ समय के लिए काम से अलग कर दिया जायगा।

अगर सभी शिक्षा देने की तदबीर और [illegible] हुए, और सहयोग का सदस्य अपने को न सुधारनेवाला साबित कर [illegible] प्रबंध-कारिणी समिति उक्त सदस्य को सहयोग से बाहर करने [illegible] प्रस्ताव पास करायेगी। यह बहिर्निष्कासन [illegible] नियम धारा ८ के अनुसार होगा।

१८—सार्वजनिक कोल्खोजी या राजकीय [illegible]

सहयोग की सम्पत्ति और पशुओं को तथा मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन की मशीनों को जानबूझ कर नुक़सान पहुँचाना—इन्हें कोल्ख़ोज़् के सामूहिक हित के प्रति द्रोह और जनता के शत्रुओं का पक्ष लेना समझा जायगा।

जो व्यक्ति कोल्ख़ोज़्-प्रथा की जड़ को इस प्रकार बुरी नीयत से खोदने के अपराध के अपराधी पाये जायँगे, सहयोग उन व्यक्तियों को मजदूर-किसान-राज्य के क़ानून के अनुसार पूर्णतया कठोर दंड देने के लिए न्यायालय में भेजेगा।

(८) सहयोग का साधारण प्रबन्ध

१९—सहयोग के साधारण प्रबन्ध का काम सहयोग के सदस्यों की साधारण-सभा में होगा। बीच के समय में काम चलाने के लिए साधारण-सभा एक प्रबंध-कारिणी-समिति निर्वाचित करेगी।

२०—साधारण-सभा सहयोग के प्रबंध के लिए सर्वोपरि संस्था है। साधारण-सभा में निम्न काम होंगे—

(क) सहयोग के अध्यक्ष प्रबंध-कारिणी-समिति और आय-व्यय-निरीक्षक-समिति का निर्वाचन, आय-व्यय-निरीक्षक-समिति का विर्वाचन तबतक जायज़ नहीं समझा जायगा, जबतक कि ज़िला-सोवियत्-कार्य-कारिणी-समिति ने उसे मंज़ूर न कर लिया हो;

(ख) सहयोग में नये सदस्यों का लेना और पुराने सदस्यों को निकालना;

(ग) वार्षिक उपज की योजना, आय-व्यय का तखमीना, नई इमारत बनाने की योजना, हर एक कार्यदिन के काम का मान और वेतन की दर निश्चित करना;

(घ) मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन के साथ के इक़रारनामे को स्वीकार करना;

(ङ) प्रबंध-कारिणी की वार्षिक रिपोर्ट को स्वीकार करना। इस रिपोर्ट में निरीक्षक-समिति की राय तथा कृषि-सबंधी महत्त्व-पूर्ण कार्रवाइयो पर प्रबध-कारिणी का विवेचन भी शामिल रहना चाहिए;

(च) हर प्रकार के फंडों तथा नकद और अनाज के रूप मे प्रति कार्य-दिन के लिए दिये जानेवाले वेतन के परिमाणों को तय करना।

(छ) सहयोग के आन्तरिक नियमों-उपनियमों को स्वीकार करना।

ऊपर लिखी हुई उपधाराओ की जो बातें गिनाई गई है, उनके बारे में प्रबध-कारिणी का निश्चय तब तक जायज नही समझा जायगा, जब तक कि सहयोग की साधारण-सभा ने उसे मजूर नही कर लिया हो।

कुछ बातों के अपवाद के साथ सभी प्रश्नो के निर्णय के लिए सहयोग के आधे सभासदों की उपस्थिति साधारण सभा के लिए 'कोरम' है। अपवाद की बातें ये हैं—

सहयोग की प्रबंध-कारिणी और अध्यक्ष का चुनाव, सहयोग की सदस्यता से किसी को बाहर निकालना और भिन्न भिन्न प्रकार के फंडो के परिमाण का निश्चय करना, इन प्रश्नो के निर्णय के लिए 'कोरम' ⅔ है।

साधारण-सभा का निर्णय बहुमत से और खुले वोट द्वारा सपादित होगा।

२१—सहयोग के साधारण प्रबध के लिए सहयोग की साधारण सभा अपने परिमाण के अनुसार ५ से ९ व्यक्तियो की एक प्रबध-कारिणी समिति २ वर्ष के लिए चुनेगी।

सहयोग की प्रबध-कारिणी समिति सहयोग के काम और उसके राज्य के प्रति जिम्मेवारियो को पूरा करने के लिए सहयोग के मेम्बरो की साधारण सभा के सामने जवाबदेह है।

२२—सहयोग की साधारण-सभा सहयोग और उसके ब्रिगेडों के काम के प्रतिदिन के पथ-प्रदर्शन तथा प्रबध-कारिणी के निश्चयों के पूरा

करने के वास्ते दैनिक निरीक्षण का काम करने के लिए सहयोग की सहयोग के लिये एक अध्यक्ष चुनेगी। वही प्रबंध-कारिणी-समिति का भी अध्यक्ष होगा।

अध्यक्ष को लाज़िम है कि वह तात्कालिक बातों के विचार और आवश्यक निर्णय के लिए प्रतिमास कम से कम दो बार प्रबंध-कारिणी की बैठक बुलावे।

अध्यक्ष की सिफ़ारिश पर प्रबंध-कारिणी अपने सभासदों में से एक को उपाध्यक्ष चुनेगी।

उपाध्यक्ष को चेयरमैन की बात हर काम में माननी होगी।

२३—ब्रिगेडियरों और पशुशाला-प्रबंधकों को प्रबंध-कारिणी कम से कम २ साल के लिए नियुक्त करेगी।

२४—सम्पत्ति और आय-व्यय का हिसाब रखने के लिए प्रबंध-कारिणी सहयोग के मेम्बरों में से या बाहर से एक वैतनिक 'मुनीम' रखेगी। मुनीम को सर्वमान्य तरीक़े के अनुसार हिसाब-किताब रखना होगा; और उसे प्रबंध-कारिणी समिति तथा अध्यक्ष के पूर्णतया आधीन रहना होगा।

मुनीम को अधिकार नहीं है कि अपने नाम से सहयोग के फ़ंड को खर्च करे या अगवड़ दे या जिन्स के रूप में प्रदान करे। यह अधिकार सहयोग की प्रबंध-कारिणी और अध्यक्ष को ही है। सहयोग के पैसे के सभी खर्च के काग़ज़ों को मुनीम और अध्यक्ष या उपाध्यक्ष के हस्ताक्षर से जायज़ समझा जायगा।

२५—आय-व्यय-निरीक्षक-समिति का कर्तव्य है कि वह प्रबंध-कारिणी की आर्थिक और पैसे से संबंध रखनेवाली कार्रवाइयों का निरीक्षण करे और देखे कि नक़द या जिन्स अनाज के रूप में आई आमदनी ठीक तौर से काग़ज़ में दर्ज हुई है या नहीं। वह यह भी देखे कि फ़ंड के खर्च में नियमों का पालन हो रहा है या नहीं, और सहयोग की सम्पत्ति अच्छी हालत में रखी जाती है या नहीं। सहयोग की संपत्ति और नक़द फ़ंड में चोरी

या धोखा तो नहीं किया जा रहा है। सहयोग राज्य के प्रति अपने दायित्व को कैसे पूरा कर रहा है। अपने क़र्ज़ों को अदा करने तथा अपने कर्ज़दारों से कर्ज़ वसूल करने में वह कैसे काम कर रहा है।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त आय-व्यय-निरीक्षक-समिति का यह भी कर्तव्य है कि वह सावधानता-पूर्वक सहयोग के अपने सदस्यों के साथ वाले हिसाब को देखे। यदि कोई धोखाबाज़ी हो, कार्यदिनों की गिन्ती में गलती हो, कार्यदिनों के वेतन को समय पर न दिया गया हो, और इसी तरह के और भी सहयोग और उसके सदस्यों के हित के ख़िलाफ़ होनेवाले जो काम हों उनको प्रकट कर दे।

आय-व्यय-निरीक्षक-समिति प्रतिवर्ष चार बार निरीक्षण करेगी। जब प्रबंध-कारिणी अपनी वार्षिक रिपोर्ट साधारण-सभा के सामने पेश करेगी उसी समय आय-व्यय-निरीक्षण-समिति भी अपने निरीक्षण-परिणाम को रखेगी। इसे साधारण-सभा प्रबंध-कारिणी की रिपोर्ट के सुनने के बाद ही सुनेगी। साधारण सभा आय-व्यय-निरीक्षण की रिपोर्ट को स्वीकार करेगी।

अपने कार्य में आय-व्यय-निरीक्षण-समिति सहयोग के मेम्बरों की साधारण सभा के अधीन होगी।

२७—सोव्ख़ोज़

(सरकारी खेती)

सोवियत् की साम्यवादी खेती दो हिस्सों में विभक्त है। एक को सोव्ख़ोज् कहते हैं और दूसरे को कोल्ख़ोज्। कोल्ख़ोज् के बारे में हम अभी कह आये हैं, यहाँ सोव्ख़ोज् के वारे में भी कुछ कह देना ज़रूरी है।

क्रान्ति के पहले प्रायः सारा रूसी साम्राज्य छोटी-बड़ी ज़मींदारियों में बँटा था; और ज़मीन के साथ किसानों का भी ज़मींदार ही मालिक था। ज़मीन कितने मालिकों में बँटे थे, उसे इस तालिका से आप समझ सकते हैं—

ज़मींदार	रक़बा (हेक्तर)
ज़ार-वंश (सिर्फ़ यूरोपीय रूस में)	८० लाख
२८ हज़ार	६ करोड़ २० लाख

२८ हज़ार ज़मींदारों की जोत में उतनी जमीन थी, जितनी कि १ करोड़ किसान जोतते थे। किसानों की जमीन भी कम उपजाऊ और निकम्मी थी।

क्रान्ति के वाद ज़मींदारों की ज़मींदारी ज़ब्त कर ली गई और उसमें से कितनी ही तो किसानों को देदी गई; और कुछ में सरकार ख़ुद खेती कराने लगी। यही सरकारी खेती सोव्ख़ोज् कहलाती है। कोल्खोज् और सोव्ख़ोज् में फ़र्क़ यह है कि जहाँ कोल्खोज् के नफ़ा-नुक़सान का तअल्लुक़ उस गाँव के कोल्ख़ोज भर से है, वहाँ सोव्ख़ोज् के नफ़ा नुक़सान की जिम्मेवारी सोवियत् सरकार को है। कारख़ानों की तरह काम का घंटा और तनख़्वाह यहाँ बँधा हुआ है। एक तरह सोव्ख़ोज् को आप अनाज पैदा करने की फ़ैक्टरी कह सकते हैं।

बड़े बड़े ज़मींदारों की अपनी जोत के जो खेत थे, उन्हीं को सरकार ने पहले सोव्खोज् के रूप में परिणत किया। पीछे जंगल काट कर या नहर निकालकर और भी नये सोव्खोज् बनाये गये। इस प्रकार सोव्खोज् का आरंभ नवम्बर १९१७ में होता है। १९३७ के सोव्खोजों के बारे में एक सोवियत् समाचार-पत्र ने इस प्रकार लिखा है—

१९३७ में सोव्खोजों ने १९३६ से डेढ़ गुना अनाज पैदा किया। अर्थात् कुल ३३ करोड़ ७७ लाख पूड (१ पूड=३६ पौंड) अर्थात् १४ करोड़ ९४ लाख मन। गीगन्त सोव्खोज्—जो कि अपने क़िस्म का सब से बड़ा सोव्खोज् है—प्रति एकड ३४ बुशल् गेहूँ तैयार करने में सफल हुआ है। अकेले इस सोव्खोज् ने सरकार को ४१ हज़ार टन गेहूँ दिया। एलेक्स्रो-ज़ावोद्-सोव्खोज् (ओरेन्-बुर्ग प्रान्त) ने प्रति एकड़ २८·५ बुशल् वसन्त का गेहूँ पैदा किया। इस सोव्खोज् के हाथ में ५७,५०० एकड़ खेती है। अनुभवी-सोव्खोज् ने प्रति एकड ३६·९ बुशल अनाज पैदा किया। विसेरकोव्स्की सोव्खोज् ने प्रति एकड ३७·५ बुशल, क्रोपत्किन के कुछ खेतों ने प्रति एकड ९६ बुशल गेहूँ पैदा किया। सोव्खोजों की पशुशालाओं ने भी इसी प्रकार तरक्की दिखलाई।

१९३७ में सारे सोवियत् ने ७० हज़ार लाख पूड अनाज पैदा किया। इस साल ८० हज़ार लाख पूड पैदा करने के लिए होड़ लगी है। १९३७ में सोव्खोजों ने अपने कृषि और यंत्र-संबंधी तरीकों को और उन्नत किया है। तथा खेत की जुताई तथा फसल की दँवाई आदि में होनेवाले नुकसान को और भी घटा दिया है। पिछले साल सोव्खोजों में ४८ हज़ार ट्रैक्टर—जिनमें १० हज़ार ढोलाकार (कटर-पिलर)—तथा २१ हज़ार कटाई दँवाई करनेवाली कंबाइन मशीनें थीं।

मशीनों के चलाने में अब सोव्खोज़ी कमकर और दक्ष हो गये हैं। स्तखानोवी कमकरों ने खास तौर से मशीनों के काम की मात्रा को बढ़ाया है। १९३६ में प्रति कंबाइन पर सोव्खोजों में ६०२ एकड़ खेत पड़ा था।

पिछले साल काम की मात्रा और बढ़ी है; और कुछ सोव्ख़ोज़ों में तो प्रति-कंबाइन ८७५ से १००० एकड़ काम हुआ है। इसके कारण जहाँ एक तरफ़ जल्दी खलिहान का काम खतम हुआ, वहाँ दूसरी तरफ़ कमकरों के घंटे की कमी के कारण उपज पर खर्च भी कम हुआ है।

१९३३ में सिम्फेरोपोल-सोव्ख़ोज़् को अपने काम के लिए १०० कंबाइन ३६ दिन तक चलानी पड़ी; १९३७ में उससे भी अधिक फ़सल के लिए ४२ कंबाइनों को सिर्फ़ १९ दिन काम करना पड़ा।

इस सोव्ख़ोज़् में १९३३ में २२१ ट्रैक्टर काम करते थे; लेकिन १९३७ में उतनी जुताई सिर्फ़ ३१ ट्रैक्टर करने में समर्थ हुए। क्रिवोइ-सोव्ख़ोज़् ने १९३६ में २२ कंबाइनों को २९ दिन तक चलाया था। १९३७ में उसे १० कंबाइनें १७ दिनों तक चलानी पड़ीं।

मशीनों में इस दक्षता के कारण हर एक कमकर का श्रम अधिक अनाज पैदा करने में समर्थ हुआ है। उदाहरणार्थ—कूबन्-सोव्ख़ोज़् में प्रति कमकर १९३४ में ११·७ टन अनाज पैदा हुआ था; लेकिन १९३७ में वह ११९·७ टन हो गया। साल्स्क-सोव्ख़ोज़् में भी इसी तरह १९३४ से १९३७ में १३·३ टन से १३३ टन हो गया।

१९३७ की फ़सल जैसी उत्तम हुई, वैसी ही पशुशालाओं की उपज भी बढ़ी। १९३३ की अपेक्षा १९३७ में पशुशालाओं ने दूना अधिक मांस दिया। प्रति गाय ४९·१ किलोग्राम (प्रायः १ मन ९ सेर) आमदनी हुई। १९३३ में २४ किलोग्राम ही हुई थी। इसी समय सुअर के मांस में पाँच गुने की वृद्धि हुई।

१९३८ में सोव्ख़ोज़ों ने उपज का नया प्रोग्राम रखा है; जिसमें वह पिछले साल से भी अधिक पैदा करना चाहते हैं। सोव्ख़ोज़् के ३७० व्यक्तियों को अच्छे काम के लिए पदक मिले हैं। कंबाइन के २०० संचालकों और हज़ारों दूसरे कमकरों को भी सरकार ने सम्मानित किया है। हाल में सोव्ख़ोज़ों के ३६० कमकर प्रबंधक, सहायक-प्रबंधक, तथा दूसरे ऊँचे

पदों पर नियुक्त किये गये हैं; और वे अपने काम को बड़े उत्साह से कर रहे हैं।

** **

जिम्मेर्वाल्ड-सोवृखोज्---एक अमेरिकन यात्री ने---जो १९३५ में इस सोवृखोज् में गया था---इस प्रकार उसका वर्णन किया है---

जब मै सोवृखोज् मे घुस रहा था, तो मालूम होता था, मैं गाँव मे नही, किसी शहर मे जा रहा हूँ। सडक के दोनों ओर आध मील तक वृक्ष लगे हुए हैं, जो उस वक्त फूल रहे थे। एक वर्गमील का बगीचा, जिसमे चौडी रविश चारो ओर फैली हुई ज्यामिति की शक्लें, तारे, आदि बना रही थी। इनके किनारे छँटी हुई हरियाली की ८--९ फीट ऊँची टट्टी लगी हुई थी।

घास के हरे मैदानो पर कुछ खेलाड़ी फुटबाल का अभ्यास कर रहे थे; कुछ टेनिस और वोलीबाल का। कही खुली हवा मे कसरत का अखाडा था, कही खुली हवा में थियेटर। बैंड बजने की जगहे थी और सिनेमा-घर भी। इन क्रीड़ा-क्षेत्रो मे कही पर वयस्क स्त्री-पुरुष और कही पर बच्चे अनेकों प्रकार के खेल खेल रहे थे। तरुण जोडियाँ कही फुटपाथ पर चल रही थी, कही बेंचो पर बैठी थी। लडकियाँ अपने भडकीले कपड़े में और युवक फलालैन की कमीजो में थे। कही वे खुली जगह मे गाँव की मडली द्वारा खेले जानेवाले नाटक या संगीत के प्रदर्शन के लिए कुर्सियो पर बैठे थे। फौवारो के नीचे तैरते हंसो के सामने बच्चे रोटी का टुकड़ा फेंक रहे थे।

यह वर्णन किसी शहर का नहीं है, न किसी राजा के क्रीडा-प्रासाद का है। यह एक गडरियों का गाँव है। जितने लोग यहाँ हैं, सभी कमकर या उनके परिवार के आदमी हैं। हाँ, सच है, इस बगीचे को सोवियत् ने नही बनाया। इसे रूस के एक बड़े ज़मीदार-राजा ने बनाया था। राजा साहब स्विट्ज़रलैंड में हवा खाने गये थे। वहाँ एक सुन्दरी के प्रेम मे फँस गये। विवाह का प्रस्ताव आने पर सुन्दरी ने कहा कि मै तभी व्याह करने

के लिए तैयार हूँ; जब कि मुझे मेरे बाप के महल और बाग़ के जैसा महल और बाग़ मिले। राजा साहब रूस लौट आये और यहाँ अपने असामियों को—जो पहले ही से पिसे जा रहे थे—और कोड़े लगाकर उन्हें यह स्वर्ग बनाने के लिए मजबूर किया।

लेकिन इस स्वर्ग को जिसने गड़ेरियों को दिया, वह सोवियत्-शासन ही था।

इन गड़ेरियों की शकल और स्वास्थ्य देखने से ही मालूम होता है, कि ये भोजन-छाजन से आसूदा हैं। उनकी भोजनशाला में चले जाइए, वह गमलों में हरे हरे वृक्ष लगाकर सजाई हुई है। एक कोने में संगीत-वेदी है; जिस पर गायक और वादक खाने के वक़्त लोगों का मनोरंजन करते हैं।

कोई कोई कमकर अपने घर में खाते हैं। परिवार के छोटे बड़े होने के अनुसार हर एक को दो या तीन कमरे मिलते हैं। इसके अतिरिक्त हर एक कमकर को पिछवाड़े तरकारी का बग़ीचा मिला है; और गाय और सुअर रखने के लिए जगह भी। इसके लिए उन्हें मालगुज़ारी नहीं देनी पड़ती। सोव्खोज़् साल में दो बार इन तरकारी के बग़ीचों को जोत देता है; और बीज तथा चारा दे देता है।

केन्द्र पर जो लोग रहते हैं, उनकी यह हालत है। लेकिन भेड़ चराने वाले—जिनके ज़िम्मे भेड़ का गल्ला है—चरागाह के पास बने हुए घरों में रहते हैं। घरों में उनके फ़र्क़ इतना ही है कि केन्द्रीय जगहों में रहनेवालों के मकान दो-दो तल्ले के हैं, यहाँ एक तल्ले छोटे।

सोव्खोज़् में १३०० कमकरों के परिवार के सभी व्यक्तियों को मिलाने पर उनकी तादाद ४००० से ऊपर होगी। सोव्खोज़् में अपना डाकखाना और तारघर है। दवाई की दूकान, विक्रय-भंडार, मिठाई बिस्कुट आदि का भंडार, धोबीख़ाना और स्नानागार हैं। यहाँ पाताल-फोड़ (आर्टिज़न) कुएँ हैं; जिनसे स्वच्छ स्वास्थ्य-वर्द्धक पानी मिलता है। अपना

अस्पताल है; जिसमें अनेक डाक्टर और नरसें हैं। छोटे बच्चों के लिए बच्चाखाना है। बड़े बच्चों के लिए स्कूल, वाचनालय, स्वाध्याय-केन्द्र आदि के साथ एक क्लब है। सोवूखोज़ खुद अपना समाचार-पत्र छापता है। पत्र में सोवूखोज़ की खबरें तथा रेडियो और तार द्वारा आनेवाली देशी विदेशी खबरें छपती हैं। यह पत्र सोवूखोज़ के ही प्रेस में छपता है। डाक्टर की राय पर कमकरों के रहने के लिए अलग विश्राम-गृह बने हैं।

सोवूखोज़ के चौक पर रेडियो के लाउड-स्पीकर लगे हुए हैं। वहीं प्रबंध-समिति-भवन के सामने लेनिन् की एक बड़ी मूर्ति स्थापित है। उत्सव के दिनों पर यहाँ प्रदर्शन होते हैं।

ज़िम्मेरवाल्ड में ट्राम को छोड़कर शहर की सभी सुविधायें मौजूद हैं। इसकी ६०,००० एकड़ की चरागाहों पर ५०,००० भेड़े चरती हैं। पिछले साल १,२०,००० रूबल आमदनी का तख़मीना था, लेकिन आमदनी हुई ४,७६,००० रूबल।

*** ***

पशुपालन में विज्ञान

दक्षिण उक्रइन् में अस्कानिया-नोवा आज सोवियत् की एक प्रसिद्ध जगह है; और नाना प्रकार के पशुओं की जाति को उन्नत करने के लिए बड़े ऊँचे पैमाने पर दोगली नसल करने का काम हो रहा है। लाल-क्रान्ति के पहले यहाँ एक छोटे जमींदार की जमीन थी। सोवियत् ने यहाँ पर पशु-संकर-करण ऋतु-सह्य-करण-प्रतिष्ठान के नाम से एक संस्था स्थापित की है। आज इसके पास एक लाख एकड़ जमीन है। भिन्न भिन्न जातियों के २० हज़ार पशु हैं। बड़ी बड़ी प्रयोग-शालाएँ हैं। कई चोटी के वैज्ञानिक अन्य वैज्ञानिकों की एक बड़ी पलटन के साथ नये नये तजर्बे कर रहे हैं; और उनसे अपने देश को लाभान्वित कर रहे हैं। ठंडे मुल्कों के जानवरों को गर्म मुल्कों में जीना मुश्किल होता है, उसी तरह गर्म मुल्कों के

के लिए तैयार हूँ; जब कि मुझे मेरे बाप के महल और बाग़ के जैसा महल और बाग़ मिले। राजा साहब रूस लौट आये और यहाँ अपने असामियों को—जो पहले ही से पिसे जा रहे थे—और कोड़े लगाकर उन्हें यह स्वर्ग बनाने के लिए मजबूर किया।

लेकिन इस स्वर्ग को जिसने गड़ेरियों को दिया, वह सोवियत्-शासन ही था।

इन गड़ेरियों की शकल और स्वास्थ्य देखने से ही मालूम होता है, कि ये भोजन-छाजन से आसूदा हैं। उनकी भोजनशाला में चले जाइए, वह गमलों में हरे हरे वृक्ष लगाकर सजाई हुई है। एक कोने में संगीत-वेदी है; जिस पर गायक और वादक खाने के वक़्त लोगों का मनोरंजन करते हैं।

कोई कोई कमकर अपने घर में खाते हैं। परिवार के छोटे बड़े होने के अनुसार हर एक को दो या तीन कमरे मिलते हैं। इसके अतिरिक्त हर एक कमकर को पिछवाड़े तरकारी का बग़ीचा मिला है; और गाय और सुअर रखने के लिए जगह भी। इसके लिए उन्हें मालगुज़ारी नहीं देनी पड़ती। सोव्खोज़् साल में दो बार इन तरकारी के बग़ीचों को जोत देता है; और बीज तथा चारा दे देता है।

केन्द्र पर जो लोग रहते हैं, उनकी यह हालत है। लेकिन भेड़ चराने वाले—जिनके ज़िम्मे भेड़ का गल्ला है—चरागाह के पास बने हुए घरों में रहते हैं। घरों में उनके फ़र्क़ इतना ही है कि केन्द्रीय जगहों में रहनेवालों के मकान दो-दो तल्ले के हैं, यहाँ एक तल्ले छोटे।

सोव्खोज़् में १३०० कमकरों के परिवार के सभी व्यक्तियों को मिलाने पर उनकी तादाद ४००० से ऊपर होगी। सोव्खोज़् में अपना डाकखाना और तारघर है। दवाई की दूकान, विक्रय-भंडार, मिठाई बिस्कुट आदि का भंडार, धोबीख़ाना और स्नानागार हैं। यहाँ पाताल-फोड़ (आर्टिज़न) कुएँ हैं; जिनसे स्वच्छ स्वास्थ्य-वर्द्धक पानी मिलता है। अपना

अस्पताल हैं; जिसमें अनेक डाक्टर और नरसे हैं। छोटे बच्चों के लिए बच्चाख़ाना है। बडे बच्चों के लिए स्कूल, वाचनालय, स्वाध्याय-केन्द्र आदि के साथ एक क्लब है। सोव्खोज् खुद अपना समाचार-पत्र छापता है। पत्र में सोव्खोज् की ख़बरें तथा रेडियो और तार द्वारा आनेवाली देशी विदेशी ख़बरें छपती है। यह पत्र सोव्खोज् के ही प्रेस मे छपता है। डाक्टर की राय पर कमकरो के रहने के लिए अलग विश्राम-गृह बने हैं।

सोव्खोज् के चौक पर रेडियो के लाउड-स्पीकर लगे हुए हैं। वहीं प्रबंध-समिति-भवन के सामने लेनिन् की एक बडी मूर्ति स्थापित्त है। उत्सव के दिनों पर यहाँ प्रदर्शन होते हैं।

ज़िम्मेरवाल्ड में ट्राम को छोडकर शहर की सभी सुविधायें मौजूद हैं। इसकी ६०,००० एकड़ की चरागाहों पर ५०,००० भेडे चरती हैं। पिछले साल १,२०,००० रूबल आमदनी का तख़मीना था, लेकिन आमदनी हुई ४,७६,००० रूबल।

*** ***

पशुपालन में विज्ञान

दक्षिण उक्रइन् मे अस्कानिया-नोवा आज सोवियत् की एक प्रसिद्ध जगह है; और नाना प्रकार के पशुओ की जाति को उन्नत करने के लिए बड़े ऊँचे पैमाने पर दोगली नसल करने का काम हो रहा है। लाल-क्रान्ति के पहले यहाँ एक छोटे ज़मींदार की जमीन थी। सोवियत् ने यहाँ पर पशु-संकर-करण ऋतु-सह्य-करण-प्रतिष्ठान के नाम से एक सस्था स्थापित की है। आज इसके पास एक लाख एकड ज़मीन हैं। भिन्न भिन्न जातियो के २० हजार पशु हैं। बड़ी बडी प्रयोग-शालाएँ हैं। कई चोटी के वैज्ञानिक अन्य वैज्ञानिकों की एक बडी पलटन के साथ नये नये तजर्बे कर रहे हैं; और उनसे अपने देश को लाभान्वित कर रहे हैं। ठंडे मुल्को के जानवरों को गर्म मुल्कों में जीना मुश्किल होता है, उसी तरह गर्म मुल्को के

जानवरों का जीना ठंडे मुल्कों में मुश्किल होता है। वहुत से जानवर गर्म मुल्कों से ठंडी जगहों पर पहुँचे हैं। जैसे हिमालय में पाँच-पाँच हजार फ़ीट की ऊँचाई तक भैंसें पहुँची हुई हैं। लेकिन ऐसे ऋतु-सह्य-करण को शताब्दियों में पूरा किया गया है। विज्ञान नें जैसे और क्षेत्रों में प्रकृति की धीमी गति को तेज़ करने में सफलता पाई है, उसी तरह इस क्षेत्र में भी वह सफल हो रहा है। ऋतु-सह्य करण का काम जो वैज्ञानिक ढंग से यहाँ हो रहा है, उसका प्रयोग १०—२० जानवरों पर नहीं, वल्कि वड़े पैमाने पर हो रहा है। दुनिया के नाना देशों के नाना प्रकार के जन्तु अस्कानिया-नोवा में रहते हैं। अरवी ज़ेवू तथा ग्नू (जंगली भेड़ा), कनाड़ा का बिसेन तथा दूसरे वहुत से जानवर स०स०स०र० के इस दक्षिणी भाग के ऋतु को सहन करने लगे हैं। यहाँ पर पेर्ज़ेवाल्स्क घोड़ों और चाप्मान् जेब्रों का वड़ा झुंड है। प्राय: सभी जानवर खुली जगह में घूमते हैं। सिर्फ़ उनके रहने के मैदानों को कँटीले तारों की वाढ़ से अलग कर दिया गया है। जाड़ों में उनके लिए गर्म जगह वनी हुई है।

अस्कानिया-नोवा में वहुत वड़ी तादाद में चिड़ियाँ भी रखी गई हैं। अफ़्रीका के गर्म जगह का रहनेवाला शुतुरमुर्ग़ यहाँ ख़ूब स्वस्थ रहता है। शुतुरमुर्ग़ों के सन्तति-प्रसव में प्राकृतिक ढंग तथा यंत्र की मदद—दोनों तरह से अंडे को सेवाया जाता है। आजकल अस्कानिया-नोवा के प्रयोगों ने घरू पशुओं की अच्छी नसल पैदा कर सोवियत् पशु-पालन को वहुत मदद दी है।

सुअर—मृत अकदमिक म० फ० इवानोफ़ के संरक्षण में एक नई नसल सुअर की तैयार हुई है; जिसे उक्रइनी सफ़ेद पथरीली भू का सुअर कहते हैं। यह उक्रइन् के सफ़ेद मैदानी सुअर और वड़ी जाति के सफ़ेद अंग्रेज़ी सुअर के मेल से पैदा किया गया है। नई नसल में जहाँ उक्रइन् के सुअर की ऋतु-सहनशीलता आ गई है, वहाँ अंग्रेज़ी सुअर की भाँति वह अधिक वच्चे पैदा करता है। आजकल यहाँ हज़ारों उक्रइनी श्वेत पथरीली-भू-शूकर और लाखों उसके दुवारा संकर तैयार हुए हैं।

इस नई जाति के शूकर के तजर्बे ने बतलाया है कि जहाँ यह मांस और चर्बी के गुण तथा परिमाण में उक्त अंग्रेजी सुअर का मुकाबला करता है, वहाँ सर्द आबहवा और अपनी प्राकृतिक परिस्थिति को अच्छी तरह सहन कर सकता है। पहला परिणाम इस नई नसल और साधारण सुअर के संकर में निम्न प्रकार मिला है। औसतन् एक सुअरी से एक बार १० बच्चे मिले हैं; और दो महीने के बाद हर एक बच्चे १४ से १५ किलोग्राम (१४–१५ सेर) के हो गये। इसके मुकाबले में मामूली सुअरी के औसत ६–७ बच्चे हैं, और बच्चे बहुत छोटे होते हैं। बहुत बडे हो जाने पर भी उनका वजन १६ किलोग्राम से ज्यादा नहीं होता, जब कि इस नई नस्ल का सुअर २०० किलोग्राम और उससे भी भारी होता है।

अकदमिक इवानोफ़् ने अस्कानिया-नोवा में रामबूलियेर नाम की एक नई भेड की नस्ल पैदा की है। इसमें सकर-करण और ऋतु-सह्यकरण दोनों का प्रयोग हुआ है। इस नई नस्ल का ऊन बहुत मुलायम होता है; और इससे अच्छी किस्म के ऊनी कपडे बनते हैं। यह भेडो की नसल अच्छी ऊनवाली भेडों के सुधारने में बहुत काम करेगी। प्रतिष्ठान तथा दूसरे कोल्खोज़ों में लाखो तक इसकी संख्या पहुँच गई है। सन्तति पैदा करने की संख्या इस प्रकार है—१०० भेडो से १४० बच्चे मिले। १ भेड से १३ किलोग्राम (१३ सेर) ऊन साल में मिला। साधारण भेड़ से सिर्फ ३ किलोग्राम मिलता है। कोल्खोज़ो में इन भेड़ो की बड़ी मांग है और वैज्ञानिक तथा कोल्खोज़् दोनो इस जाति की भेडो की संख्या बढ़ाने में लगे हुये हैं।

पहाड़ी मेरिनो एक दूसरी भेड की नस्ल अस्कानिया-नोवा में पैदा की गई है जो पहाड़ी बन सकती है। यह नस्ल बड़े महत्व की है। मेरिनो भेड़ पहाड़ी चरागाह के अयोग्य होती है। मेरिनो का ऊन बडा नरम होता है; लेकिन सोवियत् के हजारो मील के पहाडी चरागाहो में वह रह नहीं सकती। जंगली मूफलोन भेडें और मेरिनो के सकर से यह नस्ल पैदा की गई है। इस

संकर नस्ल का तजर्वा करने से मालूम हुआ है कि स्थानीय भेड़ों से यह ज़्यादा लाभदायक हैं। एक भेड़ साल में ६ किलोग्राम ऊन देती है, जो कि साधारण भेड़ से दूना है; और वज़न ७० किलोग्राम (७० सेर) तक जाता है।

ईरानी भेड़ का ऊन वहुत अच्छा होता है, लेकिन उसका प्रसव कम होता है। अस्कानिया-नोवा में रोमन भेड़ी और ईरानी भेड़ों से संयोग करा, एक नई नस्ल पैदा की गई है। पहले तजर्वे से देखा गया कि १०० भेड़ों ने १९० वच्चे दिये। यह उपज वहुत ज़्यादा है। उतनी संख्या की भेड़ों से ऊन भी दूना मिलता है।

वड़े सींगवाले जानवरों की भी संकर नस्ल की जा रही है। जर्मन नस्ल की लाल-गायें हिन्दुस्तानी और अरवी गायों से वैसे ही ढंग से तैयार
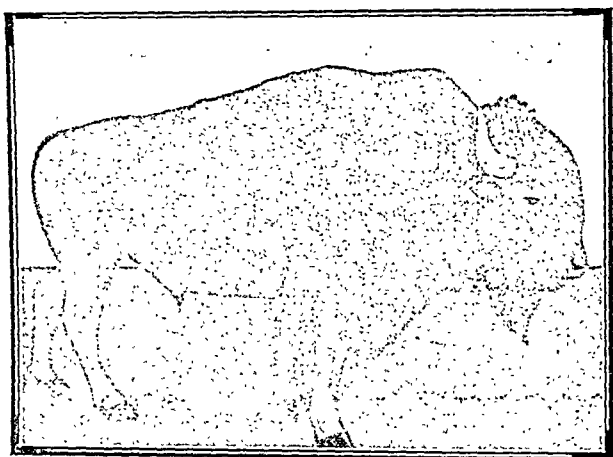
दोगला विसन (अस्कनिया-नोवा)

की गई हैं; जैसे कि दक्षिणी एशिया और अफ़्रीका के कुछ हिस्सों की। अरवी गाय (ज़ेव्रू) वहुत कम दूध देती है; लेकिन उस दूध में घी ज़्यादा

होता है। मामूली गाय के दूध से ड्योढ़ा घी होता है। नई नस्ल जहाँ जर्मन गाय के अधिक दूध देने का स्वभाव रखती है, वहाँ जेबू के घी अधिक होने के गुण को भी कायम रखती है। इसका फायदा गोपालन के कार्य में कितना है, इसके कहने की आवश्यकता नहीं।

उक्रइन् की पहाड़ी गाय को विसेन् से सकर किया गया है; और परिणाम यह हुआ है कि नई नस्ल का मांस परिमाण और स्वाद दोनों में अधिक है।

दूध देनेवाली गाय को तिब्बती याक (चमरी) से सकर कराया गया है। याक सोवियत् में मंगोलिया, किर्गिज़िया और दूसरे प्रदेशों में मिलती है। इसके दूध में घी बहुत ज्यादा होता है। जहाँ लाल जर्मन गाय के दूध में ३ से ४ सैकड़ा घी होता है; वहाँ इसमें ७ और ८ सैकड़ा। नई नस्ल जहाँ जर्मन गायों की तरह दूध अधिक देती है, वहाँ याक की तरह उसमें घी ज्यादा है।

२८—पुराना और नया गाँव

एक सोवियत् लेखक ने इसका बड़ा अच्छा चित्रण किया है—

जब पहाड़ों की आड़ में सूरज छिप जाता है, तो काकेशस के गाँव जयूकोद्दो के बूढ़े कोल्खोज़् के पंचायत-भवन के बाहर जमा हो जाते हैं। इस गोधूलि की शान्ति में पेड़ के नीचे की उस घास पर बैठकर भिन्न भिन्न विषयों पर गप करना—उनके लिए एक नियम सा बन गया है।

उनके वार्तालाप का अधिक भाग भूत—पुराने जीवन की शुष्कता और अंधकार—के विषय में होता है। लेकिन कुछ ही देर बाद नवयुग के नये मनुष्य की ओर उनका ध्यान खिंच जाता है। अपने बारे में उनकी राय होती है। कैसा वह नीरस और अँधियारा जीवन था, जिसमें सुख और सन्तोष की एक भी चिनगारी कहीं दीख नहीं पड़ती थी। यह वह जीवन था, जिसे हमने बिताया और आज इस पेड़ के नीचे मालूम होता है, जैसे बुद्धि ने खुद आकर अपनी कचहरी लगाई हो।

बूढ़े अपने बुढ़ापे के लिए उतना अफ़सोस नहीं करते, क्योंकि शरीर के लिए वह अवश्यंभावी है। हाँ, इसके लिए उन्हें दुःख ज़रूर होता है, कि उनके सारे वर्ष बेकार गये।

जिस वक़्त इस प्रकार वह बातचीत में मग्न रहते, उसी वक़्त गाँव की तरुण-तरुणियाँ आस-पास से गुज़रतीं। उनमें कोई कोई सुनने के लिए उनके पास आ बैठते। बूढ़े कह उठते—"पुराना जीवन हमें चुप रहने के लिए मजबूर करता है। हम अकेलेपन के कारण गूँगे बन गये थे। बुढ़ापे का ख़याल हमारे लिए ढाल था। लेकिन नये जीवन ने हमारी वाणी और श्रवण शक्ति को फिर लौटा दिया।"

ऐसे समय में कोई गाँव की गप आ पड़ती थी; और वार्तालाप आगे

बढ़ता। वे मानवता के गुण बखानने लगते। हमारे सोवियत्-संघ के इस स्वतंत्र और सुखमय जीवन का किसने निर्माण किया? स्वतंत्र साम्यवादी मनुष्य के हाथों ने।

फिर बहस छिड़ती है, साम्यवादी मनुष्य को कैसा होना चाहिए?

७७ वर्ष के बूढ़े अबाज़ोफ़् याकूब बोल उठे—"होना चाहिए स्तालिन् की तरह, किरोफ़् की तरह, ज़ेर्ज़िन्स्की की तरह, ओर्जोनिकिद्ज़े की तरह।"

स्तालिन् का महान् नाम उनके लिए बड़ी श्रद्धा का विषय है। ज़ेर्ज़िन्स्की और ओर्जोनिकिद्ज़े क्रान्ति के इन महान् वीरों की स्मृति उन्हें बहुत प्रिय है। अपने प्यारे सर्गेइ मिरोनोविच् किरोफ़् के हत्यारों को वह कभी क्षमा नहीं कर सकते। जिस दिन फ़ासिस्ट गोली ने किरोफ़् की छाती को छेदा, वह उनके लिए बड़े शोक का दिन था। एक सवार गाँव में आया और उसने एक घर से दूसरे घर इस दु:खद समाचार को सुनाया। घोड़े की दाहिनी ओर से वह दरवाज़ों पर उतरता था। यह स्थानीय संकेत था, कि इस घर का कोई मरा है। सारा गाँव उस पुरुष की मृत्यु के लिए आँसू बहा रहा था। किरोफ़् यहाँ आग्नेय वीर के नाम से मशहूर था। क्रान्ति के दिनों में जब काकेशस सफ़ेद जनरलों के घोड़ों की टापों के नीचे रौंदा जा रहा था, और वे लाल-क्रान्ति की देन उस स्वतंत्रता से इन पर्वतवासियों को वंचित रखना चाहते थे, उस वक़्त यही आग्नेय आदमी था, जिसने इन पहाड़ियों में रूह फूँकी और दासता से हमेशा के लिए स्वतंत्र कर दिया।

८३ वर्ष के बूढ़े सवर्नाख़ियेफ़् ज़करेई ने कहा—"जाँगर चलानेवालों से प्रेम करना चाहिए और उनके शत्रुओं से भयंकर घृणा।"

६५ वर्ष के ख़ेजोकेल्मत ने राय दी—"अगर तुम अच्छी तरह देखने की ताक़त रखते हो, सुनने की ताक़त रखते हो; छूने की ताक़त रखते हो, सूँघने की ताक़त रखते हो, चखने की ताक़त रखते हो; तो शत्रुओं के प्रति घृणा—यह भी तुम में होनी चाहिए। ऐसी अवस्था में घृणा छठी ज्ञानेन्द्रिय है।"

६७ साल के दादा प्युबोकर्तोफ़् एल्द्ज़ुको बोले—"घृणा का मार्ग भी

शीशे की तरह साफ़ रहना चाहिए।"

काकेशस की एक नई कहावत है—सावधानी और घृणा दोनों वहनें हैं। ६३ वर्ष के वूढ़े ज़ेजू का कहना है—जो तुम खुद करते या देखते हो, उसी भर को जानने की कोशिश मत करो। वल्कि उसे भी जानने की कोशिश करो, जो तुम्हारी आँख की ओट में हैं। स्तालिन् हमको सिखलाता है, कि हमें हर क़दम पर सावधान रहना चाहिए; और साम्यवादी समाज के शत्रुओं का भंडाफोड़ करना चाहिए। याद रखना चाहिए, कि हम चारों ओर पूँजीवादियों से घिरे हुए हैं।"

फिर वूढ़े लोग ४० हज़ार मील तक फैले सोवियत् सीमा के वहादुर चौकीदारों के वारे में वात करते हैं। "आदमी को इस तरह सावधान और निर्भीक होना चाहिए, जैसे हमारी मातृभूमि के ये लाल-सीमा-रक्षक।" ७२ वर्ष की सफ़ेद दाढ़ीवाले केल्चुको ने कहा—"मातृभूमि को प्यार करो, उसकी सेवा करो, यह मैं अपने वेटों और पोतों से कहता हूँ। अपनी मातृभूमि को उसी तरह प्यार करो, जैसे माँ अपने वच्चे को, सवार अपने घोड़े को, प्रेमी अपनी प्रिया को।"

तव ६६ साल के शोगेनोफ़् नूर वोल उठे—"देश-द्रोह के समान दुनिया में कोई पाप नहीं।"

जिनकी कोई मातृभूमि न थी, उन्होंने साम्यवादी राष्ट्र के रूप में मातृभूमि पाई। इस मातृभूमि के लिए वूढ़े और जवान हर एक को गहरा प्रेम है।

पिछले वसन्त में उन्होंने नगरों, खानों, कारखानों और दुर्जेय लाल-सेना में काम करनेवाले पुत्रों और पौत्रों को एक पत्र लिखा था, उसका कुछ भाग इस प्रकार है—

"हमारी धुपहली घाटी के सभी निवासियों को, सभी छोटे और वड़ों को, सभी वहादुर सन्तानों और महान् जाँगर चलानेवालों को, सभी शिक्षितों और शिक्षकों को, सभी धरातल तथा उसके अन्दर काम करनेवालों को,

सुनना चाहिए—उनकी आवाज़ जो कोडे मे पीटे और मारे गये थे, जो अल-भग और लंगड़े लूले बना दिये गये थे, जो राजा-बाबुओं के चरणों की धूलि मे चिपटनेवाले थे, जो घृणित असभ्य जीवन मे पडे थे। सुनो, ओह् स्तालिनी सूर्य की सन्तानो! तुमने कभी उस अन्धकारपूर्ण जीवन को नहीं देखा, तुमने कभी उस कडवे भाग्य को नहीं भोगा। होशियार रहो अपनी मातृभूमि के लिये, उस भूमि के लिये जिसने बचपन से तुम्हें सब कुछ दिया और खुद तुम्हें दिया, और हमे भी इस ढलती उमर में एक बडा जीवन, एक सुन्दर और सुखमय जीवन दिया। उस मातृभूमि की रक्षा करो, उसी तरह हिफ़ाज़त करो, जैसे तुम अपने जीवन, अपने घर, अपनी स्त्रियों, और बच्चों की हिफ़ाज़त करते हो।

"और अगर बदनीयत दुश्मन हमारी सरहद के भीतर अपनी छाया भी डाले, तो ऐसा मारो कि न दुश्मन का पता लगे, न उसकी छाया का। अगर बूढों के अनुभव का तुम्हें कुछ खयाल है, तो हमारी इस मांग को सुनो—अपनी घाटी की पताका जिसमें नीची न होने पावे, वैसा करना।"

इस चिट्ठी पर तेज़ोफ् केलेमेत्, सवान्चियेफ् इन्चेतो, अबाज़ोफ् शाकूब, शोगेनोफ् जेंजू, तेमिरोफ् माशा खशोफ्मचीची . .. के हस्ताक्षर थे।

६७ साल के बाबा रोज़ी, सोवियत् के बहादुरों के बारे में कह रहे थे—"आदमी का सकल्प चट्टान से भी ज्यादा मज़बूत, फ़ौलाद से भी ज्यादा दृढ होना चाहिए। आत्म-त्याग है जीवन का सुख।"

सोवियत्-संघ वीर च्कालोफ्, बइदुकोफ्, बेल्याकोफ्, ग्रोमोफ्, दुर्नालिन, और यूमाशेफ्—बहादुर उडाके जो उत्तरी ध्रुव के रास्ते उडकर मास्को से अमेरिका पहुँचे—; और श्मित्, वोदोप्यानोफ् और पपनिन्—उत्तरी ध्रुव के विजेता—के नाम छोटे-बडे सारे ही ग्राम-वासियों के होठ पर हैं।

६८ वर्ष के बूढे तेमिरकन् ने राय दी—"सोवियत् आदमी को, अपनी साम्यवादी सम्पत्ति की हिफाजत आँख की पुतली की तरह करनी चाहिए। सार्वजनिक सम्पत्ति के लिए वैसी ही सावधानी रखो, जैसी तुम

अपने कलेजे के लिए करते हो। यही तुम्हारा वर्तमान है। यही तुम्हारा भविष्य है।"

बूढ़े लोग इसके लिए कितने ही उदाहरण देते हैं। कैसे कोल्खोज़् का अमुक बहादुर, शत्रु और विनाशकों से सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करता है; कैसे वह दीमक, पानी, आँधी और बर्फ़ से उसे बचाता है। दर असल गाँवों में साम्यवादी सम्पत्ति की रक्षा लोगों का अनुल्लंघनीय पवित्र धर्म बन गया है।

"मनुष्य को बिना पीछे देखे आगे बढ़ना चाहिए। उसे नई वस्तुओं को लेना और पैदा करना चाहिए।"

७० वर्ष के बूढ़े अस्कद् ने कहा—"हमारा वीर वह है, जो निरन्तर नई चीज़ें प्राप्त करता है। निरन्तर और ऊँचे बढ़ने के लिए साहस करता है; और हमेशा आदर्श के पीछे दौड़ता है।"

उनकी बात को पुष्ट करते हुए पाँच वर्ष जेठे कन्वोत् बोल उठे—"बेह-तर जीवन की ओर बढ़ने के लिए बेकरारी, अधिक जानने के लिए उताव-लापन ये हैं, जो आज के मनुष्य को सुन्दर बनाते हैं।"

७६ साल के पिता ने कहा—"व्यक्तिगत स्वार्थ को समाज के स्वार्थ के अधीन रहना चाहिए। पंचायती खेती एक बड़ा वैद्य है। यह सभी बीमारियों को दूर करती है। पंचायती खेती मनुष्य में मनुष्यता पैदा करती है।"

र्नुचेरी ने अपने तीन कोड़ी और १० सालों के तजर्बे का निचोड़ इस प्रकार कहा—"पंचायती खेती मनुष्य को उसकी मानसिक संकीर्णता, उसके मिथ्याभिमान को दूर करती है। यह मनुष्य के स्वभाव में परिवर्तन करती है।"

७० वर्ष के माशा ने अपनी अन्तिम सम्मति देते हुए कहा—'मनुष्य को शीशे की तरह साफ़, चश्मे के पानी की तरह शुद्ध होना चाहिए।"

२६—उन्नति का खुला मार्ग

सोवियत् भूमि में बहुत आदमियो के श्रम पर कुछ आदमियों को मोटा नहीं होना है; और न वहां कल की फिक्र के लिए धन जोड़ने की लोगों को धुन है। हर एक आदमी जिस काम के योग्य है, वह काम उसके लिए रखा हुआ है। बेकारी को कई साल हुए, जब उस भूमि से विदाई मिल चुकी। विद्या की तरफ लोगों की अपार रुचि है। यदि यह कहा जाय, कि सोवियत् का हर एक नागरिक अपने विद्यार्थी जीवन में है, तो कोई अत्युक्ति नहीं। प्रत्येक व्यक्ति अपने को अधिक उपयोगी बनाने के लिए अपना ज्ञान बढा रहा है। अनेक रात्रि-पाठशालाएँ है, जिनमें हर विषय की पढाई होती है। इन पाठशालाओं मे जाकर अधेड और बूढे कमकर तक अपने विषय का ज्ञान आगे बढ़ा सकते हैं। वहाँ कोई आदमी अपनी वर्तमान स्थिति से सन्तुष्ट नहीं है। ड्राइवर चाहता है मेकेनिकल इंजीनियर होना, कपौण्डर चाहता है डाक्टर होना, गाँव का अध्यापक चाहता है प्रोफेसर होना और सब के लिए अपने अभीष्ट स्थान पर पहुँचने के लिए बाधाओ का अभाव ही नहीं है, बल्कि उन्हे हर तरह से आगे बढने के लिये उत्साह और प्रेरणा मिलती है।

बलाबदिया इलिन्स्काया—मास्को के मशीन बनाने के कारखाने में इलिन्स्काया एक टेक्नोलोजिस्ट (विशेषज्ञ) है। १६३८ के लिए उसका क्या प्रोग्राम है, इसके बारे में उसी के शब्दो में सुनिए—

पिछले वर्ष मैने कितने ही खुशी भरे हुए दिन देखे, लेकिन सब से बढ़कर मेरे लिए खुशी का दिन ८ दिसंबर था। उसी दिन हमारे कारखाने के डाइरेक्टर की आज्ञा से मेरी जैसी २४ वर्ष की आयुवाली टेक्नोलोजिस्ट को इंजीनियरों और टेकनीशियन के दल में शामिल किया गया। इस

दल को काम मिला है, कि इवान गुदोफ़्, प्रसिद्ध स्तख़ानोवी कमकर की देखरेख में उसके अद्भुत उपज बढ़ाने के तरीक़े को सारे कारख़ाने में प्रचारित किया जाय। हमारे कार्यकर्त्ताओं के लिए यह बड़े सन्मान का काम है, कि उनका कारख़ाना स्तख़ानोवी कारख़ानों का एक नमूना बन जाय। मैं इस काम में बड़े ज़ोर के साथ भाग ले रही हूँ। मैं अपने ऊपर एक भारी ज़िम्मेवारी समझ रही हूँ।

१६३७ में मैंने अपने काम में बहुत उन्नति की है। मैंने अपने काम के बारे में गोदोफ़् से बहुत सीखा है; जब कि मैं उसे नया रेकार्ड स्थापित करने के लिए सहायता कर रही थी। एक मित्रतापूर्ण सामूहिक रूप से काम करने में बड़ा आनन्द आता है। वहाँ सभी एक दूसरे की सहायता करते हैं; और बेहतर नतीजे के लिए होड़ लगाते हैं। हमारे वह नौजवान कितने आश्चर्य में डालते हैं, जो कि हमारी आँखों के सामने बढ़ते जा रहे हैं, और अपने काम में बड़ा उत्साह दिखलाते हैं। अभी कल तक वह साधारण कमकर थे, आज वह स्तख़ोनोवी बन गये और कल वह फ़ोरमैन, ब्रिगेड के नायक या विशेषज्ञ बन जायेंगे।

हमारे वर्कशाप में खोख़लोवा, क्रूग्लूसीना और तमातोवा जैसी अद्भुत कमकर लड़कियाँ हैं। वे स्तख़ानोवी कमकरों की अगुआ हैं। उनकी और वर्कशाप के सभी कमकरों की सहायता करना, उनके श्रम की उपज को बढ़ाना, उनके काम को संगठित करना, ये बड़े ही सन्माननीय कर्तव्य हैं जिन्हें मैं कर रही हूँ और उसके लिए मुझे बड़ा अभिमान है।

पिछले साल मैंने बड़ी मिहनत से काम किया, लेकिन मुझे अच्छा विश्राम भी मिला। अक्तूबर में अपनी छुट्टी को मैंने काकेशस की मनोहर पार्वत्य-भूमि में बिताया। कितनी ही बार मैं नाटक देखने गई। दावतों में शामिल हुई, बहुत सी किताबें पढ़ीं। आजकल मैं प्रतिमास ७०० से ८०० रूबल (३०० से ३५० रुपया) महीना कमा रही हूँ।

मुझे अपने परिवार की कुछ आनंददायक घटनाओं ने भी बहुत प्रसन्न

किया है। मेरा बड़ा भाई सीमान्त-रक्षक सैनिक है। हाल ही मे अपने काम को सुचारु रूप से करने के लिए उसे सरकार की ओर से पदक प्राप्त हुआ है।

इस वक्त मैं कुछ ऐसे पुर्जों का डिज़ाइन बनाने में लगी हूँ, जिनके पूरा हो जाने पर हमारे कारखाने के सभी कमकर अपने हिस्से के काम को दुगुना और उससे भी अधिक कर सकेंगे।

इस वर्ष मेरे सामने और भी कितनी ही योजनाएँ है। शीघ्र ही मेरे जीवन की एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटना घटनेवाली है। मैं कम्युनिस्ट-पार्टी की मेम्बर स्वीकृत होने जा रही हूँ। इसकी तैयारी के लिए मैंने कितने ही साल दिये। फिर मै अपने विवाह की तैयारी कर रही हूँ। लेकिन वह मेरी पढाई में बाधक नही होगा। मै औद्योगिक एकेडेमी मे दाखिल होकर विदेशी भाषाएँ पढना चाहती हूँ।

*** ***

नव वर्ष के आरभ मे एलेना कोनोनेन्को एक प्रसिद्ध सम्वाददात्री ने मास्को के जीवन का एक दिलचस्प चित्र खीचा है, जिसे हम यहाँ दे रहे हैं—

मास्को के मकानो मे अनन्त प्रकार के लोग रहते है। हर एक दीवार की आड में रहनेवाला जीवन अपना खास व्यक्तित्व रखता है। हर एक दरवाज़े की ओट में गृहस्थ के दुख-सुख है। एक परिवार मे पुत्र के पैदा होने की खुशी मनाई जा रही है, दूसरे मे दादी को दफनाने की तैयारी हो रही है। तीसरे मे सब से छोटी लड़की ने स्कूल जाना शुरू किया है। चौथे मे पुत्र ने विश्वविद्यालय में प्रवेश किया है। लेकिन इनके अतिरिक्त और भी सुख-दुख हैं, जो हर घर मे एक जैसे मालूम होते है। जो वलेरी स्कालोफ् के लिए वैसे ही है, जैसे केइज़िक् के लिए।

१—मैंने कई दरवाजो पर थपकी लगाई। एक जगह पूछा—"साथी,

कैसे हो ? पुराना वर्ष तो बीत चुका; मुझे साफ़ बतलाओ तो पिछले वर्ष ने तुम्हें क्या दिया ?"

दाविद् वोइस्त्राफ़् के घर के भीतर से वाइलिन् की मधुर ध्वनि आ रही थी। प्रसिद्ध गायक का ६ वर्ष का पुत्र गरिक बजा रहा था। दाविद् ने मेरे प्रश्न का स्वागत अपनी मुस्कराहट से किया। वह नहीं समझ सका कि उसे क्या जवाब देना चाहिए। अचानक उसे हमारे प्रश्न का मुक़ावला करना पड़ा। वह घर के भीतर पहनने का एक लंबा चोग़ा और स्लीपर पहने था। इस वक़्त वह उस गायक सा नहीं मालूम देता था, जिसे कि कंज़र्वेटरी (सर्वोच्च संगीत-शाला) के चमचमाते हाल में हम देखने के आदी हैं। प्यानो का मुख खुला था। संगीत लिपि उसपर पड़ी थी। वाइलिन् की चौकियों पर वहुत से वाइलिन् पड़े हुए थे। एक वाइलिन् प्यानो पर था। कई सोफ़ा के ऊपर थे। एक वाइलिन् किताव की आलमारी पर था। वोइस्त्राफ़् ने पिछले वर्ष की सव से आनन्द दायिनी घटना के वारे में कहा—"हाँ, सवसे वड़ी वात हुई अन्तर्राष्ट्रीय अखाड़े में सोवियत् वाइलिन्-वादकों की विजय। वह सोवियत् संगीत के लिए, जन्म-भूमि के लिए, अभिमान की वात थी।"

"........तुम पूछ रही हो, कि क्या मैं वेल्जियम की रानी—जो कि सोवियत् वादकों की निपुणता पर मुग्ध हुई थी—द्वारा दिये गये स्वागत में मौजूद था ? हाँ, मैं था। लेकिन ज़रा सुनो। कोल्खोज़ों के किसान मुझे क्या लिख रहे हैं। इवानोवो के पुतलीघरों के जुलाहे क्या लिख रहे हैं।........"

दाविद् वोइस्त्राफ़् ने एक वक्स खोला। वह विदेशी समाचार-पत्रों की कटिंग, नाना भाषाओं में लिखे वधाई के तारों से भरा था। "नहीं नहीं ये नहीं !"

वह वड़ा उत्तेजित था। वह इवानोवो की कमकर स्त्री सोवोलेव का पत्र ढूँढ़ रहा था। वह उसे मिल नहीं रहा था।

मैंने पूछा—"१९३८ के बारे में क्या चाहते हो ?"

"अधिक और बेहतर काम। जन्मभूमि के स्वतंत्र आकाश में रहना, साँस लेना बड़ा सुन्दर है। मुझे इस वर्ष बड़ा आनन्द आया जब कि मैंने पहले पहल ब्राम् के सरगम पर जैसे मैं चाहता था वैसे बजा पाया। इस पर मैं कई वर्षों से काम कर रहा था।" वह कहना शुरू करता अपने बारे में, लेकिन झट जन्म-भूमि पर पहुँच जाता। बोला—मैं और मेरी जन्मभूमि हम दो नहीं—एक है।

यह बात थी, जो सब घरों से मैंने एक सी सुनी।

२—हम पहले फौलाद के कारखाने मे काम करनेवाले मजदूरों के एपार्टमेंट (नये तरह के महल जो मजदूरों के रहने के लिए बने है) में दाखिल हुए। गब्रील स्विरिदोफ् अब औद्योगिक एकेडेमी का एक विद्यार्थी है। वह तरुण-साम्यवादी-संघ का भी मेम्बर है। गब्रील स्विरिदोफ् पहले अशिक्षित कमकर था। पीछे वह एक खुले भट्ठे का फोरमैन हो गया। अपने अच्छे काम के लिए उसे लेनिन्-पदक मिला। उसे और ज्ञान बढाने की इच्छा हुई और इसी के लिए अब वह औद्योगिक एकेडेमी में पढ़ रहा है। उसे ६५० रूबल (३०० रुपये) मासिक छात्रवृत्ति मिलती है।

स्विरिदोफ् इम्तहान की तैयारी कर रहा है। किताबों में डूबा है। कमरा खूब साफ़ और सजाने में अच्छी सुरुचि प्रकट कर रहा था। अप्राणिज रसायन (Inorganic Chemistry)-शास्त्र सम्बन्धी नोट बुकों और प्रयोगशाला की पुस्तकों से उसकी मेज भरी हुई थी।

पिछले वर्ष की सब से महत्वपूर्ण घटना यह थी कि उसकी तरक्की एकेडेमी के दूसरे वर्ष में हुई। यह आसान काम नहीं था। उसे साल भर बड़ी मिहनत के साथ पढ़ना पड़ा। देश ने उसे पढने के लिए भेजा था और उसे अपने अध्ययनकाल में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना है, जिससे कि वह आगे चलकर उस ऋण से उऋण हो सके।

स्विरिदोफ् शब्दों में और मुस्कराहट में भी बड़ा कंजूस है।

"पिछले साल का निर्वाचन भी मेरे जीवन के लिए एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। ज़रा सोचो तो, मुझे अपने इच्छानुसार वोट देने का अवसर मिला। ज़रूर यह अद्‌भुत है।"

स्विरिदोफ़् मुस्कुरा उठा। उसकी मुस्कुराहट उसके छोटे से पुत्र स्लवा (श्रवा) के चेहरे पर फैल गई। स्लवा के लिए सब से महत्त्वपूर्ण घटना थी, कि अबकी बार पहले पहल उसने वर्फ़ पर स्केटिंग करने का मौक़ा पाया।

३—चित्रकार इवान् एक श्वेतकेश पुरुष है; लेकिन अब भी देखने में उसका चेहरा जवान सा मालूम होता है। उसने अपने १९३७ के काम के बारे में बतलाया—

"मेरे तीन चित्र प्रदर्शिनी में रखे जानेवाले हैं। 'विमान से हवाई बम का लटकाना', 'पहली छलाँग', 'पहला उतरना'। वह इस वक़्त 'लेना की उड़ान' नामक एक बड़े चित्र पर काम कर रहा है। उसने माली नाट्य-शाला में खेले जानेवाले 'इंस्पेक्टर-जेनरल' के सीन तैयार करने में भी बहुत काम किया है।"

चित्रकार इवान् का एपार्टमेंट अच्छा लंबा चौड़ा और चमकीला है। दीवारों पर कितने ही चित्र और पेंसिल-अंकन टँगे हुए हैं।

"मुझे उन्निद्रता सताती है। पहले जहाँ मैं रहता था, वह बड़े हल्ले गुल्ले की जगह थी। लेकिन यह जगह बिलकुल अनुकूल है।"

मैंने इवान् के पोते से पूछा—"और वोलेग, तुम तो बतलाओ ज़रा, पिछला साल कैसे बीता?"

"मैं बालचर बन गया और प्राणिशास्त्रीय परिषद् का मेम्बर भी। हमारे बालचर-भवन की छोटी साही जाड़े की ऋतु में सोने चली गई। अब जाड़ा बीतने पर जगेगी। हमारे खरगोश ने बच्चे जने हैं, छोटे छोटे बड़े सुन्दर हैं।............"

३—गल्याजमीराईलोवा के जीवन की सब से बड़ी घटना हुई, जो कि

वह रात्रि हाई-स्कूल में प्रविष्ट हुई; और उसने पुश्किन् की कविताओं के स्वाद लेने का मौका पाया।

"पिछले साल मुझे बहुत बातें मिलीं। मै कितनी ही सभाओं में गई। लेफोर्तोवो में मै निर्वाचन-संबंधी एक बडी सभा में गई थी। मै मन लगाकर सूत्र पढ़ रही हूँ। मै सोच रही हूँ फैक्टरी में जाना। यहाँ कमरों की सफ़ाई और देखभाल करने मात्र से मै सन्तुष्ट नहीं हूँ।"

४—पीतर निकिफ़ोरोविच् प्रोखोरोफ् एक मजूर ने कहा—"मेरे लिए सब से आनन्ददायक घटना यह हुई, कि मेरी लडकी कमकरों के हाई स्कूल में दाखिल हुई। उसे छात्रवृत्ति मिल रही है। पीछे वह कालेज में जायगी। उसका रास्ता खुला हुआ है।"

५—हमने उस एपार्टमेंट का दरवाजा खोला, जिसमें लाल-क्रान्ति के बहादुर सेना-नायक चपायेफ् के लडके रहते हैं। एक भूरे बालोंवाला छोटा बच्चा हाल से निकल कर बाहर भागा। अपने जाडे के भारी भरकम कपड़ों में वह एक छोटे से भालू जैसा मालूम होता था। यह चपायेफ् का नाती आर्थर था।

चपायेफ़् की लडकी क्लाउदिया वासीलेव्ना ने हँसते हुए हमें कमरे के भीतर आने के लिए निमंत्रित किया। कमरा खूब साफ सुथरा था। एक दीवार पर कितनी ही सुन्दर चीजें टँगी हुई थीं। कमरे मे एक सुन्दर बनी हुई शतरज की मेज थी। एक दीवार पर उसके बाप को दिया गया एक अभिनन्दनपत्र टँगा हुआ था। दूसरे कमरे में चपायेफ़् का फोटो लगा था।

क्लाउदिया २४ साल की है। शरीर से पतली और आँखें उसकी काली हैं। रोटी के उद्योगों के कालेज के दूसरे वर्ष मे पढ़ रही है। चन्द ही दिनों में वह कम्युनिस्ट-पार्टी में दाखिल होने के लिए अर्जी देने जा रही है। यह उसके जीवन की सबसे बडी घटना हुई। सारे पिछले वर्ष वह काम में लगी रही। उसने बहुत सी पढाई की, निर्वाचन-कमीशन की मेंबर बन कर काम किया। कमकरो और विद्यार्थियों ने कितनी ही बार सभाओं में

"पिछले साल का निर्वाचन भी मेरे जीवन के लिए एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। ज़रा सोचो तो, मुझे अपने इच्छानुसार वोट देने का अवसर मिला। ज़रूर यह अद्भुत है।"

स्विरिदोफ़् मुस्कुरा उठा। उसकी मुस्कुराहट उसके छोटे से पुत्र स्लवा (श्रवा) के चेहरे पर फैल गई। स्लवा के लिए सब से महत्त्वपूर्ण घटना थी, कि अबकी बार पहले पहल उसने वर्फ़ पर स्केटिंग करने का मौक़ा पाया।

३—चित्रकार इवान् एक श्वेतकेश पुरुष है; लेकिन अब भी देखने में उसका चेहरा जवान सा मालूम होता है। उसने अपने १९३७ के काम के बारे में बतलाया—

"मेरे तीन चित्र प्रदर्शिनी में रखे जानेवाले हैं। 'विमान से हवाई बम का लटकाना', 'पहली छलाँग', 'पहला उतरना'। वह इस वक़्त 'लेना की उड़ान' नामक एक बड़े चित्र पर काम कर रहा है। उसने माली नाट्य-शाला में खेले जानेवाले 'इंस्पेक्टर-जेनरल' के सीन तैयार करने में भी बहुत काम किया है।"

चित्रकार इवान् का एपार्टमेंट अच्छा लंबा चौड़ा और चमकीला है। दीवारों पर कितने ही चित्र और पेंसिल-अंकन टँगे हुए हैं।

"मुझे उन्निद्रता सताती है। पहले जहाँ मैं रहता था, वह बड़े हल्ले गुल्ले की जगह थी। लेकिन यह जगह बिलकुल अनुकूल है।"

मैंने इवान् के पोते से पूछा—"और वोलेग, तुम तो बतलाओ ज़रा, पिछला साल कैसे बीता?"

"मैं बालचर बन गया और प्राणिशास्त्रीय परिषद् का मेम्बर भी। हमारे बालचर-भवन की छोटी साही जाड़े की ऋतु में सोने चली गई। अब जाड़ा बीतने पर जगेगी। हमारे खरगोश ने बच्चे जने हैं, छोटे छोटे बड़े सुन्दर हैं।............"

३—गल्याजमीराईल्लोवा के जीवन की सब से बड़ी घटना हुई, जो कि

वह रात्रि हाई-स्कूल मे प्रविष्ट हुई; और उसने पुश्किन् की कविताओ के स्वाद लेने का मौका पाया।

"पिछले साल मुझे बहुत बातें मिली। मै कितनी ही सभाओं में गई। लेफोर्तोवो में मैं निर्वाचन-सबधी एक बड़ी सभा में गई थी। मैं मन लगाकर खूब पढ़ रही हूँ। मै सोच रही हूँ फ़ैक्टरी मे जाना। यहाँ कमरों की सफाई और देखभाल करने मात्र से मे सन्तुष्ट नही हूँ।"

४—पीतर निकिफोरोविच् प्रोखोरोफ् एक मजदूर ने कहा—"मेरे लिए सब से आनन्ददायक घटना यह हुई, कि मेरी लडकी कमकरो के हाई स्कूल मे दाखिल हुई। उसे छात्रवृत्ति मिल रही है। पीछे वह कालेज में जायगी। उसका रास्ता खुला हुआ है।"

५—हमने उस एपार्टमेंट का दरवाजा खोला, जिसमे लाल-क्रान्ति के बहादुर सेना-नायक चपायेफ् के लडके रहते हैं। एक भूरे बालोंवाला छोटा बच्चा हाल से निकल कर बाहर भागा। अपने जाड़े के भारी भरकम कपडो में वह एक छोटे से भालू जैसा मालूम होता था। यह चपायेफ् का नाती आर्थर था।

चपायेफ् की लडकी क्लाउदिया वासीलेव्ना ने हँसते हुए हमें कमरे के भीतर आने के लिए निमन्त्रित किया। कमरा खूब साफ सुथरा था। एक दीवार पर कितनी ही सुन्दर चीजें टँगी हुई थी। कमरे मे एक सुन्दर बनी हुई शतरंज की मेज़ थी। एक दीवार पर उसके बाप को दिया गया एक अभिनन्दनपत्र टँगा हुआ था। दूसरे कमरे मे चपायेफ् का फोटो लगा था।

क्लाउदिया २४ साल की है। शरीर से पतली और आँख उसकी काली है। रोटी के उद्योगो के कालेज के दूसरे वर्ष मे पढ़ रही है। चन्द ही दिनों मे वह कम्युनिस्ट-पार्टी मे दाखिल होने के लिए अर्जी देने जा रही है। यह उसके जीवन की सबसे बडी घटना हुई। सारे पिछले वर्ष वह काम में लगी रही। उसने बहुत सी पढाई की, निर्वाचन-कमीशन की मेंबर बन कर काम किया। कमकरों और विद्यार्थियों ने कितनी ही बार सभाओं मे

बुलाकर अपने पिता के बारे में बोलने के लिए उसे कहा। बालचरों की मुलाक़ात ने उसके दिल को अधिक द्रवित किया। वह **चपायेफ़्** से बहुत प्रेम करते हैं; और पुत्री के नाते उस प्रेम को क्लांउदिया के लिए बदल देते हैं।

चपायेफ़् का पुत्र **अर्कादि वासील्येफ़्** भी आजकल यहीं रहता है। वह एक हवाई-जहाज़ के संचालकों का कमांडर है। यह वर्ष उसके लिए बहुत सफल रहा। गृह-युद्ध के समय के विमान-संचालकों की निर्भीकता और बहादुरी के संबंध में उसने एक **सिनारियो** लिखा।

"१९३८ में मैं सोच रहा हूँ कि मैं कैसे अच्छी तरह अपने को एके-डेमी के लिए तैयार कर सकता हूँ? मेरे लिए यह **स्तख़ानोवी** काम का वर्ष होगा। और फिर मेरे सामने एक दूसरा स्वप्न है—मैं चाहता हूँ, एक किताब—**चापायेफ़्** लिखना।"

९—दूसरे एपार्टमेंट में एक तरुण गणितज्ञ कोल्या **दिमित्रियेफ़्** रहता है। रात के दस बज गये थे, जब मैं उसके यहाँ पहुँची। कोल्या गर्म नीले कम्बल से अपने को ढाँके चारपाई पर लेटा था। समय पर सो जाना यह उसकी माँ ही नहीं चाहती, बल्कि सरकार का भी उसके लिए यही हुक्म है। कोल्या अभी १२ वर्ष का है; लेकिन उसके गणित का ज्ञान बहुत ऊँचा है। जब वह ८ ही वर्ष का था, तभी अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति और त्रिकोणमिति के बड़े बड़े प्रश्न हल करता था। सरकार ने सारे **दिमित्रियेफ़्**-परिवार को तोबोल्स्क से बुला मँगाया। कोल्या को ५०० रूबल (२२० रुपये) महीना वृत्ति मिलती है। प्रोफ़ेसर लोग उसके घर पर पहुँचते हैं; और वह उच्च गणित और विदेशी भाषाएँ उनसे पढ़ता है। अपने ज्ञान में अभी ही वह कालेज की शिक्षा से आगे चला गया है। उसका पिछला साल अच्छी तरह बीता। उसने अध्ययन किया, खेल खेले और बन्दूक़ का निशाना लगाना सीखा। एपार्टमेंट में बड़ी खुशी है। इस साल कोल्या विश्वविद्यालय की ऊपरी कक्षा में प्रवेश करने जा रहा है।

७—१२ वर्ष का वान्या एक साधारण लड़का है। लेकिन उसकी भी जिन्दगी वैसी ही आनन्द-पूर्ण है, जैसी कोल्या दिमित्रियेफ़ की। हम उसके पिता केइज़िक् के एपार्टमेंट में घुसे। वान्या अपने जूते बदल रहा था। वह स्केटिंग में जाने की तैयारी कर रहा था। वान्या ने अपने पिछले वर्ष के बारे में कहा—

"मैंने पुस्तकें पढ़ीं। कितनी ही बार थियेटर देखने गया। सिनेमा और सर्कस भी बहुत देखे। गर्मियों को मैंने बालचर-कैम्प में मोज़ाइस्क नगर के पास बिताया। लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण घटना हुई कि मैंने दौड़, कूद और गोला फेंकने की परीक्षा में सफलता प्राप्त की। और भी महत्त्वपूर्ण घटना यह है कि उसे एक फोटो-कैमरा पारितोषिक मिला।"

*** ***

इ० त० कुप्रियानोफ़्

सोवियत् शासन ने लोगों के जीवन में कितना उत्साह, कितना आनन्द भर दिया है, यह इस चौसठ बरस के जवान विक्रेता के लेख से मालूम होता है—

"अपने लिए मुझे एक बात बिलकुल निश्चित है। अगर सोवियत्-शासन स्थापित न हुआ होता तो कभी का मेरा अस्तित्व खतम हो गया होता।

बहुत से लोग विश्वास नहीं करते, कि मैं ६८ वर्ष का हूँ और सचमुच मैं खुद भी अपने को बूढ़ा नहीं अनुभव करता। अपने जीने की महती इच्छा और इस उम्र में भी सुन्दर स्वास्थ्य के लिए मैं सोवियत्-शासन का ऋणी हूँ। मैं ११ वर्ष का बच्चा था, तभी मैं मजबूर करके दूकान में काम करने के लिए लगाया गया। चूक हो या न हो, मालिक और उनके सहायक मुझे पीटना अपना कर्तव्य समझते थे। उसी मार में मेरे कितने दाँत टूट गये। उनकी जगह अब मैंने सोने के लगाये हैं। उस समय हर रोज १५ घंटे खटना पड़ता था और अब ८ घंटे; और इसी में दोपहर के खाने का वक्त भी शामिल

है। हर पाँच दिन के बाद एक दिन छुट्टी का है; और साधारण छुट्टियाँ इन के अतिरिक्त। साल में डेढ़ महीने की लम्बी छुट्टी जिसे मैं किसी स्वास्थ्य-प्रद प्रदेश में जा कर बिताता हूँ। इस पर भी अगर स्वास्थ्य अच्छा न हो तो क्या हो?

इसी **गस्त्रोनोम्** नं० १ के महाभंडार (बड़ी दूकान) में मैं उस वक़्त भी काम करता था, जब यह **येलिसेयेफ़्** बनिये की सम्पत्ति थी; और विदेशी शौक़ीनी चीज़ों के बेचने में मेरी बड़ी प्रसिद्धि थी। इन शौक़ की चीज़ों को ख़रीदने के लिए आते थे सेठ, साहूकार, राजा-बाबू—सभी कमकरों के जल्लाद। मैं इन्हीं के लिए बिना विश्राम के १५–१५ घंटा खटता था। कितनी ही बार नींद भी हराम थी। अपने बूते से बाहर के बोझ को ढकेलना पड़ता था। **सड़ाँद** आती हुई अँधेरी खोभार में मुझे शोना पड़ता था। मैं हमेशा काम को गाली देता था; और दूकानदार और ख़रीदार दोनों के लिए मेरे दिल में अपार घृणा थी। क्या उस समय इस तरह के जीवन को बिताते हुए मेरे पास समय और शक्ति बची रह सकती थी?—पैसे की बात छोड़ दीजिए—क्या मैं इस तरह किताबें पढ़ता, नाटक और सिनेमा देखने जाता, जैसा कि आज कल कर रहा हूँ? किसान-मज़दूर राज्य ने मुझे नया जीवन दिया। अब मैं मनुष्य के गौरव को समझता हूँ। अपने काम से प्रेम करता हूँ। अपने जीवन को पसन्द करता हूँ। मैं अपने प्रोग्राम को बराबर मात्रा से अधिक पूरा करता हूँ। मैं **स्तख़ानोवी** कमकर हूँ। मैं अपने भंडार के तरुण कमकरों को जहाँ किताबी ज्ञान पढ़ाता हूँ, वहाँ उन्हें यह भी सिखलाता हूँ, कि सौदा कैसे रखना-उठाना चाहिए। खाने की चीज़ों को कैसे काटना और कैसे चित्ताकर्षक तरीक़े से उन्हें काग़ज़ में लपेट कर देना चाहिए। काम मेरे लिए अब आनन्द का विषय है। मेरे बहुत से विद्यार्थी सफलता पूर्वक अपना काम कर रहे हैं। सारे भंडार के लोग मेरा सम्मान करते हैं; और मेरे काम का मूल्य समझते हैं। मैं ख़ुद भी अपने ज्ञान के बढ़ाने के लिए बाक़ायदा रात्रि-क्लासों में जाता हूँ।

हमारे देश में हर एक आदमी जवान है। यदि मेरी शक्ति क्षीण होगी, तो मै जानता हूँ कि मेरा सुखमय जीवन सुरक्षित है। सरकार को उसका खयाल है। लेकिन, अभी वह बहुत दूर की बात है। मेरे स्वास्थ्य की जो अवस्था है, उसको देखने से मुझे याद नहीं आता कि इस पृथ्वी पर रहते मेरे ३ कोडी से ज्यादा वर्ष बीत गये। जवानी की तकलीफें और चुभने वाली पीड़ाएँ वर्तमान जीवन के कारण भूल चुकी है।"

***   ***

यसायुतिम् मास्को के एक बडे कारखाने (कगानोविच् State Ball-bearing Plant) के डाइरेक्टर है। उन्होंने अपने कारखाने के विशेष आदमियो के बारे में लिखते हुए कहा—

"यह लोग एक दूसरे से फर्क रखते है। लेकिन एक बात सब मे समान पाई जाती है—वह एक ऐसे देश मे पैदा हुए, जहाँ २० साल पहले महान् साम्यवादी क्रान्ति ने पूंजीवाद को हराया।

१—इवान् ग्रीगोर्येविच् दिमित्रियेफ् पुर्जे बनानेवाली वर्कशाप में दवाई मशीन का सचालक है। १९२६ मे उसने एक फैक्टरी के उम्मेदवार-स्कूल से पढाई खतम की। पुर्जा बनाने मे वह कमाल करता है। वह साथी स्तालिन के उस कथन का उदाहरण है, जिसमे उन्होंने कहा—'कमकरों को अपना ज्ञान वहाँ तक बढाना चाहिए कि वह इजीनियर की जगह ले सकें।' उसमें क्रियात्मक तजर्बा जितने बडे परिमाण मे है, उतना ही उसका शास्त्रीय ज्ञान भी है। दिसबर के पहले सप्ताह मे जो होड लगी थी, उसमें उसने अपने काम का १० गुना किया था। उसे गाने का बडा शौक है। उसका स्वर बडा मधुर है। वह फैक्टरी के सगीत-समाज में अध्ययन कर रहा है।

२—एव्दोकिया बोगोमोलोवा ने बडा आश्चर्यजनक रास्ता पार किया। दो ही सप्ताह हुए, वह रोलर-वर्कशाप की सुपरिंटेडेट बनाई गई

है। वह मास्को-सोवियत् (मास्को नगर की म्युनिसिपलिटी) की सदस्या है। लेकिन उसका आरंभिक जीवन इतना आसान न था। बचपन की वह बात उसे याद है; जब कि उसको बड़ी चाह थी, एक जोड़ा चमड़े का जूता पाने की ! इस साल उसने अपने विभाग में उपज के कई नये रेकार्ड स्थापित किये हैं।

२—क्रान्ति के पहले साथी जावद्स्की के माँ-बाप किसी एक जगह नहीं रहते थे। उनका बाप लोहार था; और काम की तलाश में हमेशा घूमता रहता था। इसी लिए उसके सातों भाई रूस की भिन्न-भिन्न जगहों में पैदा हुए। सात वर्ष की अवस्था में जावद्स्की एक ज़मींदार का चरवाहा बना। इस तरह उसके जीवन का प्रारंभ हुआ। वह वहीं रह भी जाता। लेकिन महान् साम्यवादी क्रान्ति ने उसके लिए उन्नति का रास्ता खोल दिया। धीरे धीरे काम करता और पढ़ता आगे बढ़ा। १९२९ में उसने एक मशीन का आविष्कार किया, जिसके देखते ही सरकार ने उसे कमकर कालेज में भेज दिया। १९३२ से वह हमारी फ़ैक्टरी में काम कर रहा है। इस बीच में उसने अपने शास्त्रीय और प्रयोगात्मक ज्ञान को बहुत बढ़ाया है। हाल ही में उसने एक मशीन का आविष्कार किया है, जिससे पहले की मशीन से १३ गुना काम लिया जा सकता है।

* * *   * * *

पहले का आवारा अब पी-एच० डी० बनने जा रहा है। दिमित्रि बोनिका मास्को खनिज-कालेज का विद्यार्थी चन्द ही महीनों में डाक्टर बनने के लिए अपना निबंध पेश करने जा रहा है। उसने अपनी खोजों के आधार पर एक योजना तैयार की है, जिसको इस्तेमाल करने से कुज़्बास् की खान पूर्णरूपेण मशीन से चलनेवाली बन जायगी; और कामों को इस ढंग से संगठित किया जायगा कि खनक प्रतिदिन आज से तिगुना काम कर सकेंगे। हाँ, तिगुना। बोनिका की योजना शेखचिल्ली का महल नहीं है। उसने

हर चीज़ पर बारीकी से सोचकर और छोटी छोटी बातों की भी गणना करके अपनी योजना तैयार की है। उसे विज्ञान की कितनी ही गम्भीर और प्रयोगात्मक शाखाओं के ज्ञान का उपयोग करके तैयार किया है।

वोनिका ने सब से पहले १९३० के शरद् में खनिज-कालेज के दरवाज़े में प्रवेश किया। उसके साथ बैठनेवालों में कितने ही परिपक्व-बुद्धि मुछन्दर थे। गलियारों में लाल-झंडे के पदक को छाती पर लटकाये कितने ही विद्यार्थी टहल रहे थे। उस समय प्रथम पंच-वार्षिक योजना के आरंभ के दिन थे। सरकार ने हज़ारों विद्यार्थियों को विशेष अध्ययन के लिए कालेज में भेजा था, और उनके लिए पाठ्य भी इतने कम समय का रखा गया था कि वह सीख कर जल्दी से जल्दी पंच-वार्षिक योजना के काम में योग देने लगें। विद्यार्थी बहुत दिल लगाकर परिश्रम से पढ़ते थे। वे समझते थे कि उन्होंने बहुत देर से पढ़ाई की ओर मुंह किया है। लेकिन तो भी नव-निर्माण के काम के लिए अपने को योग्य बनाने की धुन उनके सिर पर बड़े ज़ोर से सवार थी। पहले का आवारा वोनिका अपनी कक्षा में खड़ा होकर सुन रहा था। सामने के विद्यार्थी इतने बड़े थे कि वह लड़का पीछे बैठे बैठे अध्यापक को देख नहीं सकता था। एक समय था जब वोनिका आवारे लड़कों की एक बड़ी मंडली का नेता था। मंडली में उसे 'लाल मित्का' कहते थे। गृह-युद्ध ख़तम हो गया था। लेकिन सोवियत्-भूमि के कलकारख़ाने ही नहीं खेती की व्यवस्था भी अस्त व्यस्त हो गई थी। लोगों को रोटी के लाले पड़ रहे थे; और कई लाख की तादाद में आवारे छोटे छोटे लड़के झुंड के झुंड बना कर बिना टिकट रेलों पर या पैदल ही सैकड़ों हज़ारों मील तक फिरते रहते थे। मित्का भी मालगाड़ियों और दूसरी ट्रेनों में सारे सोवियत् देश का चक्कर काट चुका था। कितनी ही बार वह और उसके साथी मालगाड़ी के धुरी में चिपक कर एक जगह से सैकड़ों मील दूर पहुँच जाते थे। उस आवारापन की जिन्दगी में मित्का आवारों का बड़ा सरदार था।

१९२४ में लाल मित्का लुप्त हो गया; जब कि देश बड़े जोश के साथ अपनी आर्थिक अवस्था को सुधारने में कटिबद्ध हुआ। मित्का अब दिमित्रि वोनिका के रूप में प्रकट हुआ। सोवियत्-शासन ने उसके लिए काम और अध्ययन का रास्ता खोल दिया। वोनिका ने उससे फ़ायदा उठाने की ठानी।

काम के साथ साथ उसने पढ़ना जारी रखा और १९३० में वह कालेज में दाख़िल हुआ। इंजीनियर के नीले काग़ज़ और पुस्तकें उसकी प्रिय वस्तुएँ बन गईं। साधारण गणित के बिना उच्च गणित के सिद्धान्तों को समझना बहुत मुश्किल था। यंत्र-विद्या और फ़िज़िक्स की बारीकियाँ और भौतिक पदार्थों की सहनशक्ति आदि विषय बहुत कठिन थे। लेकिन तरुण वोनिका—चलती हुई रेलवे ट्रेन की मालगाड़ी के धुरे से चिपकने की जिस तरह से हिम्मत रखता था—अब विज्ञान के सूक्ष्म विषयों में भी उसका वह साहस उसके साथ था। वह अपनी सारी शक्ति लगाकर किताबों के पीछे पड़ा था। घंटों वह शास्त्रीय सिद्धान्तों को अवगत करने में लगा रहता और घंटों प्रयोगशाला में प्रयोग करने में लगाता था। वोनिका ने अपना प्रयोगात्मक कार्य सब से पहले शाख़्त-अन्थ्रसाइट-ट्रस्ट की खान में किया। खान में काम करते हुए अपने साथियों की अपेक्षा वह अपने काम को अधिक गंभीरता और ज़्यादा विस्तार के साथ देखता था। उस वक़्त वह खान की मशीनों को ख़ास दिलचस्पी से अध्ययन कर रहा था। वहाँ मशीनें जब तब क्यों टूट जाती हैं, इसके कारण पर भी उसने ग़ौर किया। तरुण विद्यार्थी ने देखा, कि तजर्बा हलका होने पर भी वह ख़ान को कुछ मदद कर सकता है।

पहले साल के प्रयोग को समाप्त कर लेने के बाद दूसरे साल कालेज में उसने एक खान में काम आनेवाली मशीन (winch) का मौलिक डिज़ाइन पेश किया। उसे विशेषज्ञों ने बहुत उत्तम श्रेणी का स्वीकार किया। वोनिका की बनाई वह विंच आज भी उस खान में तथा मास्को

की भूगर्भी रेलों की खुदाई में दिखाई पड़ती हैं।

दूसरा काम वोनिका ने किया, वह था खान के भीतर से कोयला लदी छोटी गाड़ियों को चढ़क के ऊपर आने पर वेग और धक्के से जो नुकसान पहुँचता था, उसके लिए एक खास यंत्र का आविष्कार करना।

वोनिका अब भी रात-दिन अपने गंभीर अध्ययन को जारी रखे था और साथ ही नये आविष्कारों की ओर भी उसका ध्यान लगा था। १९३४ में मास्को की चीनी दीवार नगर को प्रशस्त करने के लिए गिराई जा रही थी। वोनिका उसके पास से गुजर रहा था। वोनिका ने सोचा, अगर ईंटों की छल्ली काटने के लिए वर्मा मशीन का इस्तेमाल हो, तो काम जल्दी हो सकता है। मास्को सोवियत् के अध्यक्ष बुल्गानिन् ने वोनिका के विचारों को स्वीकार किया; और ईंट के ढाँचे को गिराने के लिए वर्मा मशीन का सब से पहले सोवियत्-संघ में इस्तेमाल हुआ। वोनिका ने सोचा, कि कैसे नगरों की धूल और गैस को यांत्रिक तौर से हटाया जा सकता है? उसके लिए भी खास तरीके आविष्कृत किये। उसके आविष्कार-संबंधी विचार सदा साहस-पूर्ण और मौलिक थे। अपने अध्ययन के वर्षों में उसने अपने कई आविष्कारों को पेटेंट कराया।

वोनिका अब डिग्री के लिए अपना निबन्ध तैयार कर रहा है। [illegible] में १५०० दिनों के अध्ययन का अन्तिम परिणाम सामने [illegible] इसके बाद वोनिका शुरू करेगा अपने प्रयोगात्मक [illegible]

वोनिका सोच रहा है, भविष्य की उस [illegible] जिसमें हर एक काम मशीन से होगा और [illegible] होगी। बिजली के तारों का जाल और [illegible] रखने के लिए सूक्ष्म पुर्जे, घड़ियाँ और [illegible] यह भी विचार है, कि जमीन के [illegible] और श्रम को यंत्रों के उपयोग [illegible] कहा कि भविष्य की उस [illegible]

की अपेक्षा अच्छा होगा कि वर्तमान की खानों में वह अपने विचारों और आविष्कारों को कार्यान्वित करे। वोनिका ने इसे स्वीकार किया है। और कुज़्वास् की किरोफ़्रोव खान—जिससे कि वह पहले ही से परिचित है—के एक भाग को वह तैयार करने जा रहा है। उसकी योजना के सफल होने पर एक दिन में तीन दिन का काम हो सकेगा।

*** ***

अलेक्सेइ हुस्तारोत्सिन् मास्को के १७० नंबरवाले हाई-स्कूल में अध्यापक है। वह अपने पुराने स्वप्नों के पूरा होने की बात करते हुए लिखता है—

१९३८ का नया वर्ष मेरे—एक २४ वर्ष के नौजवान इतिहासाध्यापक के—लिए बड़े महत्त्वपूर्ण अध्याय को खोल रहा है। इस साल मैं ट्रेनिंग कालेज की सरकारी परीक्षा दूँगा और आशा है, प्रथम श्रेणी के साथ डिग्री प्राप्त करूँगा। इसके बाद मैं ग्रेजुएट के बाद की परीक्षा में उत्तीर्ण समझा जाऊँगा; और फिर इतिहास के डाक्टर की उपाधि के लिए मैं तैयारी करने जा रहा हूँ। कितने ही असंभव से जान पड़ते मेरे लड़कपन के स्वप्न बड़ी जल्दी वास्तविक हुए। जब मैं एक छोटा सा किसान का लड़का था, उस वक़्त मुझे इच्छा होती थी, कि पढ़ूँ और विद्वान् बनकर दूसरों को पढ़ाऊँ। गाँव के स्कूल की पढ़ाई खतम कर नगर के सतसाला स्कूल में पढ़ने के लिए मुझे हर रोज़ २० मील आना-जाना पड़ता था। मैंने सतसाला स्कूल और उसके बाद के ट्रेनिंग स्कूल की पढ़ाई समाप्त की। २० वर्ष की उम्र में मैं अध्यापक ही नहीं हो गया, बल्कि २५० विद्यार्थियों के एक स्कूल का हेडमास्टर भी बन गया।

लेकिन मैंने अपनी पढ़ाई बन्द नहीं की। तुरन्त ही शिक्षा-विभाग ने मुझे ट्रेनिंग कालेज में भेज दिया। वहाँ पढ़ते हुए स्कूल में मैं इतिहास पढ़ाया करता था। १९३७ में कई स्मरणीय घटनाएँ मेरे जीवन में घटीं। मैंने अपने सोवियत् स्कूलों को समुन्नत और सुदृढ़ होते देखा, और अपने आपको

भी मैंने बहुत विकसित किया। स्कूल के लिए हमें नया विशाल सुन्दर मकान मिला। "स०स०स०र० का इतिहास" पुस्तक लडको के पढ़ाने के लिए खास तौर से बनी, जिसने अध्यापकों और विद्यार्थियो के काम में बहुत आसानी पैदा कर दी। मैं अपने विद्यार्थियो की उन्नति देख, बड़ा प्रसन्न होता हूँ। मैं इतिहास पढ़ाते वक्त अपनी जन्मभूमि के प्रति शिष्यो मे बड़ा प्रेम पैदा करता हूँ। इतिहास पढने में वह बहुत आनन्द अनुभव करते हैं। विद्यार्थी मुझसे प्रेम करते है और हम एक दूसरे के जबर्दस्त दोस्त है। १९३७ मे इतिहास के कई पाठ्य-क्रमो को मैंने पास किया और परीक्षा में मुझे "उत्तम" मार्क मिला। यद्यपि अपने काम और पढाई मे मुझे बहुत समय देना पड़ता था, तो भी सारे साल मे १५ बार मैं नाटक ओपेरा और संगीत-अभिनयों में शामिल हुआ।

१९३७ मे मेरा वेतन २५० रूबल मासिक था और अब ८०० रूबल (प्राय: ३७५ रुपये) है। एक अविवाहित के लिए यह वेतन बुरा नहीं है। मैने अपने निजी इस्तेमाल के लिए ६० किताबे खरीदीं—शेक्सपियर, बैरन और दूसरे पुराने कवियों को मैं नियम-पूर्वक पढता हूँ। नये साहित्य के बारे में तो कहना ही क्या! पिछली गर्मियो की छुट्टी मैंने अपने माँ-बाप के साथ बिताई। उससे पहले की काकेशस् की सुन्दर पर्वतमाला मे बीती थी। इसके अलावा विशेषज्ञों के कितने ही इतिहास-संबंधी लेक्चर सुने।

अब भी मैं नौजवान हूँ। अब भी मेरा जीवन आनन्द-पूर्ण है। लेकिन मेरा भविष्य उससे भी अधिक आकर्षक है। परीक्षा के परिणाम के निकलते ही मैंने निश्चय किया है, विवाह कर डालने का।

की अपेक्षा अच्छा होगा कि वर्तमान की खानों में वह अपने विचारों और आविष्कारों को कार्यान्वित करे। वोनिका ने इसे स्वीकार किया है। और कुजवास् की किरोफ़्रोव खान—जिससे कि वह पहले ही से परिचित है—के एक भाग को वह तैयार करने जा रहा है। उसकी योजना के सफल होने पर एक दिन में तीन दिन का काम हो सकेगा।

*** ***

अलेखेइ हस्तारोत्सिन् मास्को के १७० नंबरवाले हाई-स्कूल में अध्यापक है। वह अपने पुराने स्वप्नों के पूरा होने की वात करते हुए लिखता है—

१९३८ का नया वर्ष मेरे—एक २४ वर्ष के नौजवान इतिहासाध्यापक के—लिए बड़े महत्त्वपूर्ण अध्याय को खोल रहा है। इस साल में ट्रेनिंग कालेज की सरकारी परीक्षा दूँगा और आशा है, प्रथम श्रेणी के साथ डिग्री प्राप्त करूँगा। इसके वाद मैं ग्रेजुएट के वाद की परीक्षा में उत्तीर्ण समझा जाऊँगा; और फिर इतिहास के डाक्टर की उपाधि के लिए मैं तैयारी करने जा रहा हूँ। कितने ही असंभव से जान पड़ते मेरे लड़कपन के स्वप्न वड़ी जल्दी वास्तविक हुए। जव मैं एक छोटा सा किसान का लड़का था, उस वक़्त मुझे इच्छा होती थी, कि पढ़ूँ और विद्वान् वनकर दूसरों को पढ़ाऊँ। गाँव के स्कूल की पढ़ाई खतम कर नगर के सतसाला स्कूल में पढ़ने के लिए मुझे हर रोज़ २० मील आना-जाना पड़ता था। मैंने सतसाला स्कूल और उसके वाद के ट्रेनिंग स्कूल की पढ़ाई समाप्त की। २० वर्ष की उम्र में मैं अध्यापक ही नहीं हो गया, वल्कि २५० विद्यार्थियों के एक स्कूल का हेडमास्टर भी वन गया।

लेकिन मैंने अपनी पढ़ाई वन्द नहीं की। तुरन्त ही शिक्षा-विभाग ने मुझे ट्रेनिंग कालेज में भेज दिया। वहाँ पढ़ते हुए स्कूल में मैं इतिहास पढ़ाया करता था। १९३७ में कई स्मरणीय घटनाएँ मेरे जीवन में घटीं। मैंने अपने सोवियत् स्कूलों को समुन्नत और सुदृढ़ होते देखा, और अपने आपको

भी मैंने बहुत विकसित किया। स्कूल के लिए हमें नया विशाल सुन्दर मकान मिला। "स०स०स०र० का इतिहास" पुस्तक लड़कों के पढ़ाने के लिए खास तौर से बनी, जिसने अध्यापकों और विद्यार्थियों के काम में बहुत आसानी पैदा कर दी। मैं अपने विद्यार्थियों की उन्नति देख, बड़ा प्रसन्न होता हूँ। मैं इतिहास पढाते वक्त अपनी जन्मभूमि के प्रति शिष्यों में बड़ा प्रेम पैदा करता हूँ। इतिहास पढ़ने में वह बहुत आनन्द अनुभव करते हैं। विद्यार्थी मुझसे प्रेम करते हैं और हम एक दूसरे के जबर्दस्त दोस्त हैं। १९३७ में इतिहास के कई पाठ्य-क्रमों को मैंने पास किया और परीक्षा में मुझे "उत्तम" मार्क मिला। यद्यपि अपने काम और पढ़ाई में मुझे बहुत समय देना पड़ता था, तो भी सारे साल में १५ बार मैं नाटक ओपेरा और संगीत-अभिनयों में शामिल हुआ।

१९३७ में मेरा वेतन २५० रूबल मासिक था और अब ८०० रूबल (प्रायः ३७५ रुपये) है। एक अविवाहित के लिए यह वेतन बुरा नहीं है। मैंने अपने निजी इस्तेमाल के लिए ६० किताबें खरीदीं—शेक्सपियर, वैरन और दूसरे पुराने कवियों को मैं नियम-पूर्वक पढ़ता हूँ। नये साहित्य के बारे में तो कहना ही क्या! पिछली गर्मियों की छुट्टी मैंने अपने माँ-बाप के साथ बिताई। उससे पहले की काकेशस् की सुन्दर पर्वतमाला में बीती थी। इसके अलावा विशेषज्ञों के कितने ही इतिहास-संबंधी लेक्चर सुने।

अब भी मैं नौजवान हूँ। अब भी मेरा जीवन आनन्द-पूर्ण है। लेकिन मेरा भविष्य उससे भी अधिक आकर्षक है। परीक्षा के परिणाम के निकलते ही मैंने निश्चय किया है, विवाह कर डालने का।

---

(३)

३०—लेनिन्ग्राद् से प्रस्थान

१३ जनवरी को सवेरे मालूम हुआ कि वीज़ा मिल गया और उसी दिन रात की गाड़ी से चलना निश्चय हुआ। कितने ही मित्रों को भी इसकी खबर न हो पाई थी। लेकिन मैं पहले ही उनसे विदाई ले चुका था। आचार्य श्चेर्बास्की का विदाई-भोज भी मैं खा चुका था। हिन्दी भाषा के महाविद्वान् तथा नव्य भारतीय भाषाओं के विभाग के अध्यक्ष आचार्य वरानिकोफ़् तथा उनके सहकारियों से भी प्रस्थान-मिलन कर चुका था। दत्त महाशय से मिल आया और भाभी साहबा (श्रीमती दत्ता) ने रास्ते के लिए चीजों के खरीदने में मदद की। इधर कई दिनों से रविनोविच् से मुलाक़ात न हो पाई थी। आज अकस्मात् वे रास्ते में मिल गये। थोड़ी देर में तवारिश् लोला कज़ारोव्स्का भी आ गई। सामान समेटा गया। असबाव हमने लगेज में दे दिया और रोज़ के काम की कुछ थोड़ी सी चीज़ें लेकर ११ बजे के बाद स्टेशन को चले। यद्यपि वृक्षों की तरह मनुष्य की जड़ ज़मीन में गड़ी नहीं होती; और वह बहुत कुछ स्वच्छन्द समझा जाता है; लेकिन वृक्षों की जड़ सिर्फ़ एक ही जगह होती है; और मनुष्य आकाश-बौंर की तरह जहाँ जाता है, वहीं उसके बन्धन के साधन तैयार हो जाते हैं। इस दो मास के प्रवास में यहाँ मेरे भी कितने बंधु और स्नेह-बंधन तैयार हो गये थे; जिनको कि तोड़ते वक़्त चित्त को असन्तोष हो रहा था। मित्रों से विदाई ली और बाण-डाक[1] से मास्को के लिए रवाना हुए। हमारा टिकट नरम

---

[1] लेनिन्ग्राद् से मास्को जानेवाली रेलवे लाइन लेनिन् की इच्छानुसार बाण की तरह सीधी बनाई गई है, और इसपर चलने वाली डाक को बाण-डाक कहते हैं।

तीसरे दर्जे (गद्दीदार तीसरे दर्जे) का था। कड़े तीसरे दर्जे का किराया लेनिन्ग्राद् से तेर्मीज़ तक १५० रूबल (=६६ रु०) पड़ता है। रात से वर्फ ज्यादा पड़ गई थी, इसलिए वाण-डाक भी वाण की तरह तेज़ नहीं चल सकती थी। सबेरे खिड़की से देखा, तो ताज़ा पड़ी सफेद वर्फ की मोटी तह उस विषम भूमि पर सर्वत्र दिखाई दे रही थी। आसमान अब भी सफेद बादलो से घिरा था। सड़क के किनारे खड़े देवदारो की हरी डालियो पर वर्फ के गाले बड़े ही सुन्दर मालूम होते थे। जहाँ तहाँ एक कोल्खोज़ (पंचायती-गाँव) से दूसरे कोल्खोज़् को घोड़ों के स्लेज् (बिना पहिए के वर्फ मे चलनेवाली गाड़ी) जा रहे थे। उनपर, नाक आँख छोड कर सारे बदन पोस्तीन से ढँके सवार चुपचाप बैठे थे। उस विस्तृत भूमि में [illegible] जीवन का चिह्न नहीं दिखाई देता था। गाँवो के छोटे छोटे [illegible] आधे वर्फ में डूबे हुए थे। छत भी वर्फ से सफेद थी। हाँ उनके [illegible] नियो से धुआँ निकल रहा था, जो बतला रहा था, कि उनमें [illegible] हैं। हमारी गाडी अपनी घहराहट से उस निस्तब्ध भूमि की [illegible] करती हुई आगे बढ रही थी। इस भूमि मे वैसे ही ६ बजे [illegible] और टाइमटेबुल् के मुताबिक गाड़ी १० बजे मास्को पहुँचने [illegible] ८ बजे भिनसारे ही हाथ मुँह धोकर तैयार हो गये थे। [illegible] और तीन साथी अब भी खर्राटे ले रहे थे। जब देखा [illegible] है, और मास्को का कोई पता नही, तो साथियों ने [illegible] कि गाड़ी ३ घंटा लेट है।

१॥ बजे हम मास्को स्टेशन पर पहुँचे। [illegible] दिलवा दिया था, लेकिन वहाँ कोई आदमी नहीं [illegible] को अपना अपना सामान उठाकर ले जाते देख हमने भी [illegible] और छोटी मोटी पोटलियाँ उठा कर चलना चाहा। [illegible] जैसे भी कहिए, मुसाफिरखाने के भीतर किसी तरह [illegible] लेकिन कलाई खूब दुखने लगी थी। आखिर एक दिन के [illegible]

बना जाता है। हमने सोचा था, ऐसा करने से हमें भाषा की अल्पज्ञता का परिचय देना नहीं पड़ेगा; लेकिन जब मुसाफ़िरख़ाने में भी इन्तुरिस्त के

मेत्रो (भूगर्भी रेलवे) स्टेशन

ज़्यादा दिक़्क़त मालूम होती थी, स्थिर स्थल से अपने शरीर को चल सीढ़ी पर, तथा चल सीढ़ी से स्थिर स्थल पर पहुँचाने के वक़्त। मालूम होता था, गिर जायेंगे। सैकड़ों आदमियों के बीच इस तरह गिरना कोई इज़्ज़तदार आदमी पसन्द नहीं कर सकता। एक बार जहाँ सीढ़ी पर पहुँच गये, तहाँ

मेत्रो स्टेशन की सीढ़ी

हम भी बाघ हो सकते थे, तथा चलती सीढ़ियों पर तेज़ी से क़दम बढ़ाते हम ख़ुद भी ऊपर चढ़ सकते थे, लेकिन आदि और अन्त के छोर पर हमारी नब्ज़ ढीली पड़ जाती थी।

भूगर्भी रेल-स्टेशन से निकल कर हम सड़क पर आये, और क्रेम्लि के बाहर लेनिन् की समाधि के सामनेवाले लाल-मैदान से होते मास्को न के पुल पर पहुँचे। मास्को नदी सब जगह जमी नहीं थी। इसीसे माल् होता है कि लेनिन्ग्राद् से मास्को गर्म है। सड़क पर कहीं कहीं बर्फ़ थी ज़्यादा बर्फ़ तो रहने भी नहीं पाती। हर वक़्त जोतनेवाली मोटर बर्फ़ चूरा करती जाती है और उठानेवाली मशीन उठाकर दूसरी मोटर

भरती जाती है। बर्फ ज्यादा दिन रह जाय, तो यही नहीं कि सड़क बहुत ऊँची हो जायेगी, बल्कि टायरो के दबाव में पहले तो वह नर्म होने की अवस्था में ऊँची नीची बन जायगी, और जब थोड़ी ही देर में सर्दी जमा कर उसे पत्थर बना देगी, तो उसपर से मोटरो का चलना सुगम नहीं होगा, इसीलिए बर्फ को रोज हटाया जाता है। इस काम में हजारों आदमी और सैकड़ो मोटरे व्यस्त रहती हैं। इस बदली के दिन में भी क्रेम्लिन् के दोनों शिखरों पर स्थापित विशुद्ध पद्मराग-मणि (लाल) के बने दोनों विशाल पँचकोने तारे चमचमा रहे थे। सोवियत् का यह लाल राष्ट्र-चिह्न दिन के प्रकाश में स्वयं चमकता रहता है, और रात को बड़ी तेज बिजली बत्ती उनके भीतर जला दी जाती है। तारे इतने ऊँचे पर लगे हैं कि मीलो से दिखलाई पड़ते हैं।

मास्को नदी पर यह नया पुल इसी साल बनकर तैयार हुआ है। अब भी एक तरफ के किनारे की दीवार पूरी नहीं हुई थी। जाड़े की भीषण सर्दी में भी रात दिन काम हो रहा था। इसके लिए सीमेंट और पत्थर सब को भाप के जरिए गर्म रखा जाता है। कारीगर भी हाथ में चमड़े के दस्ताने पहने काम कर रहे थे। पहला पुल जो इससे कुछ ऊपर [illegible] था, नीचा था। मास्को अब तीन समुद्रों का बन्दरगाह है। वोल्गा को एक बड़ी नहर द्वारा मास्को नदी से मिला दिया गया है। इसी तरह बाल्तिक समुद्र और उत्तर-समुद्र को भी नहर द्वारा मिलाया गया है। अब कास्पियन् सागर उत्तरसागर और बाल्तिक सागर के स्टीमर मास्को में पहुँच जाते हैं। वोल्गा नहर ने मास्को नदी के पानी को कई फुट ऊंचा उठा दिया है। पुराने पुल के नीचे से स्टीमर पार नहीं हो सकते थे, इसीलिए ऊँचे पुल बनवाये जा रहे हैं।

भरिया को नव-मास्को होटल मालूम नहीं था और हमें अपने ज्ञान पर बहुत अभिमान था। हमें स्मरण था, कि क्रेम्लिन् के पासवाले पुल को पार करते ही होटल की इमारत आ जाती है। यह ख्याल नहीं है। [illegible]

कि हम जिस पुल को समझ रहे थे, वह टूट-टाट कर न जाने कहाँ चला गया। सोच रहे होंगे, दो ही महीना पहले की तो बात है। लेकिन जानते हुए भी यह ख़याल नहीं आ रहा था; कि सोवियत् का दो महीना यूरोप का बीस बरस और हिन्दुस्तान का दो सौ बरस है। जब हम पुल पारकर इधर उधर देखते हुए कई गृह-पंक्तियाँ छोड़ गये, फिर भी होटल का पता नहीं लगा, तो अपनी अज्ञता स्वीकार कर हमने साथी को पता पूछने के लिए कहा। स्थान पाने में देर नहीं हुई। वह सिर्फ़ एक सड़क आगे था।
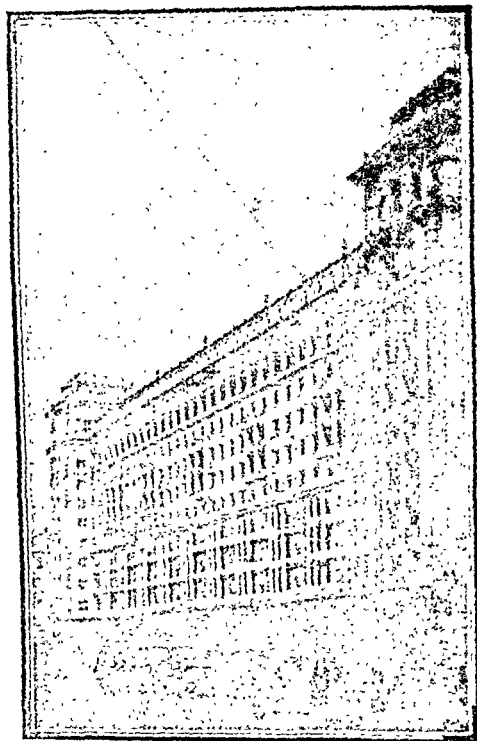
मास्को होटल

इन्तुरिस्त का आफ़िस भी होटल में है। लेनिन्ग्राद् से लाये काग़ज़ को हमने आफ़िस में दिया। रसीद से टिकट बना देना उन्होंने स्वीकार किया; लेकिन होटल में कोई कमरा ख़ाली

नहीं था। दो दिन पहले (१२ जनवरी) महासोवियत् (सोवियत्-पालिया-मेंट) का प्रथम अधिवेशन शुरू हुआ था, जिसके लिए ११४३ देपुतात् (सदस्य) ही नहीं, कोने कोने से बहुत से प्रतिष्ठित दर्शक मास्को पहुँचे हुए थे। और सभी होटल उनसे भर गये थे। कमरे का पाना एक बड़ी समस्या थी, और हम आज मास्को छोड़ नहीं सकते थे। क्योंकि पूछने पर बतलाया गया, कि अफगान कौंसल सिर्फ मास्को ही में है (यद्यपि यह कहना गलत था, हमें पीछे मालूम हुआ कि ताशकन्द में भी अफगान कौंसिल रहता है। अगर्चे उसके हटा लेने की बात हो रही है।) अफगान कौंसल से पूछने पर मालूम हुआ, कि अब कौंसल खाना बन्द हो चुका है, और वीजा के लिए कल आना चाहिए।

मास्को से रोज ताशकन्द के लिए डाकगाड़ी छूटती है, लेकिन उस
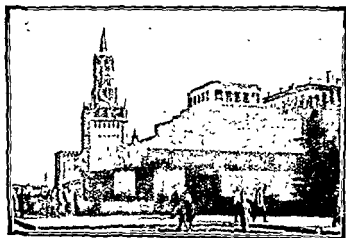
लेनिन् की समाधि

ट्रेन में ताशकन्द जाने पर हमें गाड़ी बदलनी पड़ती, इसलिए हम स्तालिना-बाद की डाक से जाना चाहते थे। उससे जाने पर तेर्मिज् तक एक ही गाड़ी

से जा सकते थे। स्तालिनाबाद की डाक हफ़्ते में सिर्फ़ दो दिन छूटती है। संयोग से वह अगले दिन शनिश्चर को जानेवाली थी। आज कोई काम न होता देख हम लाल-मैदान और उसके आगे टहलने के लिए निकल पड़े। चाहते थे लेनिन् का दर्शन करना। देखा लेनिन् की समाधि—जिसके भीतर शीशे की शवाधानी में लेनिन् का शरीर रखा हुआ है—के सामने दर्शकों की दोहरी लम्बी पंक्ति है। पंक्ति इतनी दूर तक वन चुकी है कि जाते तो हमारा नंवर हजारवाँ भी न होता। समाधि का दरवाजा थोड़े समय के लिए खुलता है; और उस लंबी क़तार में एक के वाद एक चलते हम जव तक दरवाज़े तक भी न पहुँचते तव तक दरवाज़ा वन्द करने का समय हो जाता। इसलिए हमें दर्शन का लोभ संवरण करना पड़ा।

दो घंटे घूम घाम कर लौटे। अँधेरा कभी का हो चुका था। हमने फिर आफ़िस में कमरे के वारे में पूछा। जवाव मिला—एक यात्री कमरा छोड़ने की वात कर रहा था, लेकिन अव तक वह गया नहीं। यदि चला गया तो आपको कमरा मिल जायगा। मैंने पूछा, यदि न चला गया तव? "तो हम कमरा कहाँ से देंगे?" घंटा भर और कुर्सी पर वैठे। देखा, एक एक करके आफ़िस की सभी कर्मचारिणियाँ चली जा रही हैं। अन्त में एक महिला रह गई। उसने कहा—हमारे हाथ में कोई कमरा नहीं। अव रात के १४ घंटे कुर्सी पर विताने की समस्या थी और कुर्सी भी आराम कुर्सी न थी। लाचार हो मैं खुद होटल के डिरेक्टर के पास गया। उन्होंने अपने सहायक को ताकीद की, और अन्त में जैसे तैसे करके साढ़े ८ वजे ७७० नंबर की कोठरी मिली। कोठरी छोटी थी, लेकिन खैर मिल गई, इसी को ग़नीमत समझा।

१५ जनवरी को ११ वजे इन्तुरिस्त के आदमी के साथ अफ़ग़ान-कौंसल के पास गये। थोड़ी देर वैठने के वाद सेक्रेटरी आये। उनसे मैंने तेर्मिज़् काबुल, खैवर के रास्ते अफ़ग़ानिस्तान पार होने का वीज़ा माँगा। उन्होंने कहा—'आज तो वीज़ा तैयार नहीं हो सकता और कल है इतवार की

वह किस क्लास की है। जाकर दरवाज़े के नज़दीकवाली कुर्सी पर वैठ गये। फ़िल्म अभी अभी शुरू हुआ था। पहले महासोवियत् के प्रथम अधिवेशन का दृश्य दिखलाया गया था, जो अभी ३ दिन पहले गुज़रा था। फ़िल्म भी मूक नहीं, टॉकी था। और वह भी दो-तीन मिनट का नहीं, काफ़ी देर का। महासोवियत् के दोनों भवनों—जातीय-भवन और संघ-भवन—के सदस्यों को वैठे दिखलाया गया। फिर सदस्य एक दरवाज़े की तरफ़ ध्यान से ताकने लगे। फिर वहाँ से एक घनी काली मूँछों से ढँके मुँहवाले वन्द गले का कोट पहने प्रसन्न-वदन तेजस्वी पुरुष को भीतर प्रवेश करते देखा। प्रवेश करते के साथ सारे स्त्री-पुरुष सदस्य खड़े हो गये। सव मस्त हो दोनों हाथों से तालियाँ पीट रहे थे। और मुँह से "हुरा स्तालिन्, हुरा स्तालिन् हमारा प्यारा स्तालिन् चिरंजीवी हो" के नारे लगा रहे थे। और यह नारे सिर्फ़ रूसी भाषा में नहीं लग रहे थे; फ़ारसी भाषा भाषी 'स्तालिन् ज़िन्दावाद' कह रहे थे। उज़वेक, तुर्कमान, मंगोल, जार्जियन, याकूत आदि सोवियत् के भीतर की सभी जातियों के प्रतिनिधि अपनी अपनी भाषाओं में नारे लगा रहे थे। कई मिनट तक इसी तरह करतल-ध्वनि और नारे लग रहे थे। सदस्यों की शकल-सूरत नाना प्रकार की थी। कोई मूँछ-दाढ़ी-विहीन गोल आँखों और तिर्छी उठी भौंहोंवाला था, कोई गौर वर्ण भूरी मूँछ-दाढ़ीवाला, कोई कोट पतलून पहने हुए था और कोई सिर पर चिपकी गोल टोपी और लम्वे चोग़े की कमर में रूमाल वाँधे। औरतें भी अपनी चित्र विचित्र पोशाक में थीं।

नारे के शान्त होने के वाद स्तालिन् और दूसरे नेता जव अपनी कुर्सी पर वैठ गये, तो संघ-भवन के वृद्धतम सदस्य **इच्खाया** ने एक छोटे से भाषण द्वारा अधिवेशन का उद्घाटन किया।

महासोवियत् फ़िल्म के वाद असली फ़िल्म का आरंभ हुआ। फ़िल्म एक क्रान्तिकारी के संवंध का था, जिसका वर्णन हम किसी और जगह करेंगे। लौटकर होटल आये तो अफ़ग़ान वीज़ा वन कर चला आया था।

टिकट लेते वक्त मालूम हुआ कि जिस स्तालिनाबाद ट्रेन से हमें जाना था, उसमें नरम तीसरा दर्जा नहीं है। उसी किराये में हम वेगनलिट् के डब्बे में दूसरे दर्जे में जा सकते है। लेकिन सोने आदि के लिए तीसरे दर्जे की अपेक्षा ६० रूबल अधिक लगेंगे। मैंने कडे तीसरे दर्जे से जाने की इच्छा प्रकट की। ज्यादातर इस खयाल से कि वेगनलिट् डब्बे में जाने पर मुझे साधारण सोवियत् यात्रियों के साथ का आनन्द नहीं मिलेगा; लेकिन जवाब मिला कि यह परिवर्तन लेनिनग्राद् में हो सकता था, मजबूरन् दूसरा ही दर्जा स्वीकार करना पडा।

*** ***

हमारी ट्रेन कजान् स्टेशन से खुलनेवाली थी। मास्को में कई स्टेशन है; जो भिन्न भिन्न दिशाओं के यात्रियों के लिए निश्चित किये गये है। स्टेशन पर पहुँचे तो वहाँ तिल रखने की जगह न थी। अपना विस्तरा-बक्स लिए लोग बैठे ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे थे। वोल्गा-उपत्यका और मध्य-एशिया में निवास करनेवाली सभी जातियों के मुख और वेपभूषा आप वहाँ देख सकते थे। थोडी थोडी देर पर शब्द-प्रसारक यन्त्र से ट्रेन के आने जाने की सूचना दी जा रही थी। इन्तुरिस्त के एजेंट ने भीड में हमारी बहुत मदद की। ट्रेन प्लेटफार्म पर खडी थी। वेगनलिट् के डब्बे की खास शकल होती है। यह ट्रेन यूरोप के सभी राष्ट्रों की रेलों पर गुजरती रहती है। हमारी सीट सातवे डब्बे के ६ नंबर की थी। ऊपर की दोनों सीटों के यात्री हम में भी आगे स्तालिनाबाद तक जानेवाले थे। १० बज कर ४५ मिनट पर गाडी छूटी। रात को सो गये।

सवेरे दिन होने पर देख रहे थे, कि हम ऊँची-नीची पहाडी जमीन से गुजर रहे हैं। चारों ओर वर्फ है। समय समय पर हरे देवदारों और नंगे भोजपत्रों का जंगल भी आ जाता है। मकानों की छतें अधिकतर फूस की हैं, जो वर्फ से ढकी हैं। दीवार का बहुत थोडा सा हिस्सा बाहर दिखाई

पड़ता है।

ट्रेन के बीच में भोजन-गाड़ी थी। भोजन-परोसिका पहले मध्याह्न भोजन करनेवालों से पूछ कर गिन्ती कर गई। फिर मध्याह्न-भोजन तैयार है, इसकी भी सूचना देती गई। नाश्ता तो हमने अपने पास की रोटी, मक्खन, मांस और डब्बे के प्रबंधक द्वारा प्राप्त मीठी चाय से कर लिया था। दोपहर बाद भोजन करने गये। दोनों कमरे की मेजों पर स्त्री-पुरुष बैठे थे। हमारे बैठते ही भोजन-सूची सामने ला कर रख दी गई। वहाँ गव्यादन्या, शूकर आदि के मांस, सूप तथा दूसरी चीज़ें मौजूद थीं। हमने अपने अनुकूल चीज़ें चुन कर लाने के लिए कहा। हमारे सामने की दोनों कुर्सियों पर दो तुर्कमान बैठे हुए थे। उन्होंने भी खाने के लिए फ़र्मायश की। खाने की तश्तरी के साथ काँटा-चम्मच भी आया। पहले उन्होंने चम्मच से खाने की कोशिश की, लेकिन भोजन तश्तरी से बाहर निकल जाता था। दो तीन बार प्रयत्न करने के बाद चम्मच फेंक उन्होंने हाथ ही से खाना शुरू कर दिया। एक दिन में काँटा-चम्मच से खाना थोड़े ही सीखा जा सकता है। उस वक़्त मुझे हँसी आ रही थी, बाहर नहीं, भीतर। और वह भी उनके लिए नहीं, अपने लिए। ११–१२ साल पहले की बात है, मैं मद्रास प्रान्त में रेल से जा रहा था, एक दिन भोजन-गाड़ी में खाने चला गया। बैरा ने तश्तरी में खाना और छुरी, काँटा-चम्मच ला रखा। काँटा-चम्मच कभी हाथ से पकड़ा तो था नहीं, जब बैरा ने देखा कि काम बन नहीं रहा है, तो उससे नहीं रहा गया। वह बोल उठा—छोड़ दीजिए, हाथ ही से खाइए। हम कोई साहबी पोशाक में नहीं थे, तो भी हमारे ऊपर घड़ों पानी पड़ गया। यहाँ इस गाड़ी में न कोई हँसनेवाला था, न ताना देनेवाला। छुरी काँटे से खानेवाले रूसी भी जानते हैं, कि उनके मध्य-एशिया के भाई हाथ से ही खाते हैं। और हाथ से खाने से कोई नीच नहीं हो जाता। ग़लती करते देख वह सिखला भी देते हैं। वहाँ हँसने और शरमिन्दा होने की कोई जरूरत नहीं। दोनों जवान महासोवियत् के अधिवेशन देखने

के लिए अपने कोल्खोज् से मास्को आये थे, और अब सोवियत् सदस्यों, स्तालिन् और क्रेमलिन् का दर्शन कर उनकी मनोहर और अभिमानपूर्ण स्मृति को लेकर अपने कोल्खोज् (पचायती गाँव) को लौट रहे थे। भोजन-गाड़ी में खाने का औसत १८ रूबल (८) पड़ता था।

*** ***

१७ जनवरी को सवेरे भी हम ऊँचे-नीचे पहाड़ी मैदान से चल रहे थे। इधर बर्फ थी तो सही, लेकिन तह उतनी मोटी न थी। गाँवों के मकान अधिकतर फूस की छत के थे। मकान छोटे छोटे किन्तु साफ और अच्छे ढग से बने और बसे थे, और सभी मकान गर्म किये हुए थे। उनकी चिमनियों से धुआँ निकल रहा था। दोहरी शीशे की खिड़कियाँ लगी हुई थीं। जगह जगह गेहूँ के डंठे और घास गँजी पड़ी थी। कुछ गजों पर हिफाजत के लिए छत बना दी गई थी। जाड़े के कारण नगे वृक्ष जहाँ तहाँ थे, लेकिन जंगल कम दिखाई पड़ते थे। नदी-नाले सभी जमे हुए थे। गाँवों के कुओं पर पानी खींचने के लिए गड़ारियाँ लगाई गई थीं। रास्ता अधिकतर पूरब की ओर था। ट्रेन मास्को के समय से सवा तीन बजे ओरेन्बुर्ग में पहुँची। गाड़ी कुछ देर खड़ी हुई। उतर कर हमने स्टेशन से बाहर देखा। ओरेन्बुर्ग कई लाख आबादी का एक बड़ा शहर है। लाल-क्रान्ति के समय यह एक बड़े ही महत्त्व का स्थान था और यहाँ सफेद और लाल सेनाओं की जमकर लड़ाई हुई थी। क्रान्ति के एक वीर सेना-नायक चपायेफ् की यह कीर्त्तिभूमि रहा है। तातार, मगोल, रूसी, सभी तरह के स्त्री-पुरुष दिखाई पड़ रहे थे। लोग स्वस्थ और सुदृढ़ शरीर के थे। कोई कोई अधेड़ तातारनियाँ अब भी पायजामा पहने हुई थीं। औरतों का पायजामा सचमुच ही बहुत बुरी पोशाक है। सोवियत् के उन देशों में जहाँ इस्लाम था, पायजामा स्त्रियों के लिए एक धार्मिक पोशाक सा बन गया था, और नये शासन में मजहब की तरह यह भी बहुत जल्द उड़ा है। शहर में कारखानों की अगणित चिमनियाँ दिखाई

पड़ती हैं। उराल् नदी पास से वहती है।

१८ को १० वजे वाद हम कज़ाक़-सोवियत्-साम्यवादी-रिपब्लिक से गुज़र रहे थे। अक्त्यार्विस्क नगर रात ही को गुज़र चुका था। ज़मीन समतल मैदान सी दीख पड़ती थी। जंगल और वृक्ष का कहीं नाम न था। ९ वजे सुवह गाड़ी पहाड़ पर से जा रही थी। कज़ाक़ मंगोल मुख-मुद्रा रखनेवाली जाति है। उनके धर्म के वारे में इतना ही कहा जा सकता है कि मध्य-एशिया की और जातियों की भाँति ये भी कट्टर मुसलमान थे। गाँवों के मकान पहले की अपेक्षा और भी छोटे छोटे थे, और इनकी छतें मिट्टी की थीं। अराल समुद्र के कई सौ मील पीछे अक्त्यार्विस्क से ही मिट्टी की छतवाले मकान शुरू होते हैं; और लखनऊ के वाद यह मिट्टी की छत खपरैल में वदलती है। मानों मकान की दृष्टि से अक्त्यार्विस्क, ताशकन्द, समरकन्द, वुख़ारा, वलख़, कावुल, पेशावर, रावलपिंडी, अम्वाला, सहारनपुर, मुरादावाद, लखनऊ एक ही महादेश के भाग हैं। यहाँ अव खेत वहुत दिखलाई नहीं पड़ते थे। मैदान में सर्दी के मारे पीली पड़ गई छोटी छोटी घासें दिखाई पड़ती थीं; जिनमें भेड़ें और दोकोहानी ऊँट चर रहे थे।

१२ वजे (मास्को समय) हम चेल्कर स्टेशन पर पहुँचे। यह एक वड़ा स्टेशन और ख़ासा शहर है। वहुत सी मिट्टी के तेल की टंकियाँ हैं। तेल की टंकियों का इतना ज़्यादा होना ज़रूरी है, क्योंकि मोटर, लारी के अतिरिक्त सरकारी और पंचायती खेतों के ट्रैक्टरों के लिए भी तो काफ़ी इसकी आवश्यकता है। शहर रेल की सड़क के दोनों ओर वसा है। सर्दी के लिए तो हम नहीं कह सकते क्योंकि हमारी गाड़ी गर्म की हुई थी; लेकिन आगे वर्फ़ पतली होती जा रही थी। रेल के दोनों तरफ़ कोई जानवर सड़क पर न आ जाय, इसके लिए लकड़ी के चाँचरों की वाढ़ लगी थी। मैदान आया लेकिन वह ऊँचा नीचा था। एक स्टेशन पर मालगाड़ी खड़ी थी, जिस पर २० खुली मोटर-लारियाँ और १ कटरपिलर (ढोलानुमा) ट्रैक्टर लदा हुआ था।

बड़े स्टेशनों पर रूसी भी काफी थे, लेकिन अब हम एशिया में चल रहे थे। इसलिए यहाँ कज़ाकों की संख्या ही अधिक थी। कज़ाक स्टेशन-मास्टर, और कज़ाक लाल-सैनिक ही ज्यादा दिखलाई पड़ते थे। एक जगह हमारे ऊपर से हवाई जहाज उड़ता जा रहा था। हवाई जहाजों के पथ-प्रदर्शन के लिए वहाँ कहीं सैकड़ों फीट ऊँचे लोहे के ढाँचे बने हुए हैं। ताशकन्द और मास्को के बीच नियमित रूप से हवाई डाक चलती हैं। पहले ताशकन्द और काबुल के बीच भी हवाई डाक का प्रबंध था। लेकिन बच्चा सक्का के बाद वह बन्द हो गई।

आज (१९ जनवरी) मास्को से चले पाँचवा दिन था। हम सिर-दरिया की वादी में पहुँच गये थे। अराल समुद्र रात ही छूट चुका था। कज़लबोर्द में कहीं कहीं बर्फ की चित्ती दिखाई पड़ती थी। अब मालूम होता था कि हम रूस की सर्दी पार कर चुके हैं। स्टेशन के बाहर ऊँटों और घोड़ों की गाड़ियाँ खड़ी थीं। घोड़ागाड़ियाँ ही अधिक थीं। कज़लबोर्द अच्छा क़स्बा है। मकान अधिकतर एक तल के तथा मिट्टी की छतों के हैं। मैं इस समय की बात कह रहा हूँ। यद्यपि इन मकानों ने अपने सामने शताब्दियों को झूठा किया है, लेकिन अब इनके दिन इने गिने रह गये हैं। कुछ ही वर्षों बाद जब कोई दूसरा भारतीय इधर से गुज़रेगा, तो इन मिट्टी की छतों के छोटे छोटे मकानों की जगह ईंट, सीमेंट और लोहे के बने महल देखेगा। अभी भी ऐसे मकान जहाँ तहाँ उठ रहे हैं। रूस के देवदारों की लकड़ियाँ मालगाड़ियाँ ढो कर ला रही हैं।

सिर-दरिया की वादी पर्वत-विहीन है। दो दो हाथ ऊँचे नर्कट और सरकंडे मीलों चले गये हैं। आजकल यह सूख कर पीले पड़ गये हैं, लेकिन गर्मी में इनकी हरियाली बहुत सुहावनी मालूम पड़ती होगी। नर्कट और सरकंडों के अतिरिक्त एक और लंबी घास खड़ी है, जिसकी चटाइयाँ जहाँ तहाँ दिखाई पड़ती थीं। नदी के दोनों तरफ मीलों विस्तृत भूमि आसानी से खेत के रूप में परिणत की जा सकती है। इनके लिए

सिर्फ़ नहरों की आवश्यकता है। सिर-दरिया का पानी वैसी कितनी हीं नहरों के वनाने की इजाज़त दे सकता है। सर्दी भी सख़्त नहीं है, क्योंकि नदी का पानी जमा नहीं दीख पड़ा। इस भूमि, इस आवोहवा, को देखकर तो मेरे मुँह में पानी भर आता था। आख़िर सोवियत्-प्रजातंत्र की १८ करोड़ जन-संख्या अभी वीसों वर्षों तक इस योग्य न हो सकेगी, कि इन हज़ारों मीलों लंवी खेती के योग्य भूमि को आवाद कर सके; और उधर भारत जन-संख्या के वोझ से दवा जा रहा है। क्या ही अच्छा होता कि भारतीयों को भी यहाँ अपना एक उपनिवेश वसाने का मौक़ा मिलता। सिर-दरिया से लेकर आमू (वक्षु) दरिया तक की भूमि में करोड़ों आदमियों के वसने लायक़ भूमि वीरान पड़ी हुई है। यहाँ का जलवायु और सर्दी गर्मी भारतीयों के अनुकूल भी है। पचास लाख भारतीय हिन्दुस्तान से वाहर निकल कर अफ़रीका, दक्षिणी-अमेरिका, फ़ीजी, मारिशस् आदि में जाकर वस गये हैं, लेकिन वहाँ उन्हें पद पद पर अपमानित किया जाता है। नागरिकता के समानाधिकार से वह वहाँ वंचित हैं। काश कि ये हमारे भाई अर्काटियों के फन्दे में फँसकर उन जगहों में न जा मध्य-एशिया के इन भागों में पहुँच गये होते; तो आज वहाँ पचास लाख की आवादी की एक विशाल इन्दुस्-सोवियत्-समाजवादी-रिपव्लिक तैयार होती। जाति और रंग के भेद-भाव के विना लाल-झंडे के नीचे वह सिर ऊँचा कर खड़े होते। साहित्य, कला, विज्ञान तथा सैनिक और नागरिक शिक्षा के सभी द्वार उनके लिए खुले होते। अव भी तो हिन्दुस्तान की आवादी हर दसवें साल ३ करोड़ वढ़ रही है जो हमारे लिए एक वड़ी चिन्ता का विषय है। क्यों न सोवियत् सरकार से हम अपने लिए भूमि माँगें। ब्रिटिश सरकार ज़रूर इसे पसन्द नहीं करेगी, लेकिन जव उसने अपने साम्राज्य के सभी विभागों में हमारा रास्ता वन्द कर रखा है; और जहाँ भारतीय हैं, वहाँ भी उन्हें अपमानित देखना पसन्द करती है; तो उसे क्या हक़ है, कि हमें कोई दूसरा स्थान ढूँढ़ने से मना करे।

घासों के कारण यह उपत्यका पशुओं के लिए एक अच्छी चरागाह हैं। जहाँ तहाँ गदहे और ऊँटों के झुंड चरते हुए दिखाई पड़ते थे। गाँवों में भी कजाक युवतियों के बाल कट गये हैं, और पायजामे की जगह स्कर्ट पहने वह इधर उधर फिर रही थीं। क्रान्ति के पहले अगर चेहरे पर से जरा सा बुर्का उठा लेतीं तो शौहर, भाई, बाप, जो भी कोई पास रहता, उनको वहीं दो टुकड़े कर देता। आज हाथ में घड़ी बाँधे अपने सम-वयस्क तरुण से हाथ मिलाए वह इस प्रकार स्वच्छन्द थोड़े ही घूम सकती थी। पुलीस-सेना, रेल तथा और सभी कर्मचारियों में रूसियों और एशियाटयों की एक ही पोशाक है। कहीं कहीं कुछ छतें फूस की भी दीख पड़ीं। कोल्खोजों में इन फूस की छतों पर मिट्टी पड़ी हुई थी। गाँवों के मकान यद्यपि ईंट और सीमेंट के नहीं बन पाये हैं, तो भी उनके आँगन तथा दीवारों की सफाई, और काँच लगे जंगले बतला रहे थे, कि उन्होंने कितनी आर्थिक उन्नति कर डाली है। यह स्मरण रखने की बात है, कि अब से २० वर्ष पहले इस मध्य-एशिया के भी गाँव दरिद्रता, मजहबी अन्ध-विश्वास, निरक्षरता और सामाजिक कट्टरपन में हमारे हिन्दुस्तानी गाँवों की तरह ही थे।

मास्को-समय से दो बज चुका था, जब हमें ताशकन्द नगर की बिजली-बत्तियाँ दिखलाई देने लगीं। ताशकन्द मध्य-एशिया में उद्योग-धन्धे का एक प्रधान केन्द्र है। यहाँ कपड़े तथा लोहे-मशीन के कई कारखाने हैं। पिछले १० सालों में इसकी आबादी और भी ज्यादा बढ़ी है। नगर के भीतर यद्यपि नये ढंग के बहुत से सीमेंट और लोहे के आलीशान मकान बन चुके हैं, लेकिन तेजी से बढ़ती हुई आबादी के लिए वह काफी नहीं हैं। अब भी अधिकतर मकान छोटे छोटे एक तल्ले हैं। सड़कें भी सभी मास्को और लेनिनग्राद की तरह स्फाल्ट और सीमेंट की नहीं हैं। अधिकतर सड़कें दरियाई गोल मोल पत्थरों से बनी हैं। स्टेशन से शहर जाने के लिए ट्राम, टैक्सी और घोड़ागाड़ियाँ हैं। शहर में वृक्ष पर्याप्त हैं। यद्यपि आजकल उनमें पत्ते नहीं हैं, लेकिन गर्मी में शहर बड़ा हरा भरा मालूम होता होगा। हवाई

जहाज़ के अड्डे पर दो विशाल लोहे के ढाँचे खड़े थे, जिनकी लाल रोशनी मीलों से दिखाई देती थी।

२० जनवरी को ६ बजे (मास्को समय) सवेरे हम छोटे छोटे पहाड़ों में चल रहे थे। सभी पहाड़ नंगे थे। शायद बरसात के दिनों में कुछ हरी घास उग आती हो। बाईं तरफ़ दूर ऊँचे पहाड़ थे, जिनपर सफ़ेद बर्फ़ पड़ी हुई थी। यही हमारे हिमालय का पश्चिमी छोर है। शायद समुद्र-तल से हम कुछ ऊँचे थे, इसी कारण जहाँ-तहाँ बर्फ़ दिखलाई पड़ती थी। १० बजे हम जीज़क स्टेशन पर पहुँचे। यहाँ हाते में पचासों ट्रैक्टर—जिनमें कितने ही कटरपिलर तर्ज के भी थे—खड़े थे। लोग मरम्मत में लगे हुए थे। जुताई का समय आ गया था। इस लिए ट्रैक्टर—जो जाड़े भर गुदाम में रखे पड़े थे—अब काम के लिए तैयार किये जा रहे थे। ट्रैक्टरों के अतिरिक्त वहाँ कितनी ही खुली मोटर लारियाँ भी थीं। शायद काटने, दाँवने की कम्बाइन मशीनें भी हों, लेकिन अभी फ़स्ल कटने के लिए कई महीने हैं; इस लिए उन्हें गुदाम के भीतर रखा गया है। जो पंचायती गांवों को भाड़े पर मशीन देते हैं, उन स्थानों को मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन कहा जाता है। यहाँ के मकान बहुत साफ़-सुथरे हैं। ऐसे गाँव में आकर ख़ामख़ाह नुकताचीनी करनेवाला यूरोपीय यात्री भी नाक-भौंह नहीं सिकोड़ सकता। सिर-दरिया से आमू दरिया तक फैले देश—जिनमें कज़ाक़, तुर्कमान, उज-बेक और ताजिक जातियाँ बसती हैं—को सोवियत् सरकार ने कपास की खेती के लिए रिज़र्व कर दिया है। यहाँ के लोगों के खाने के लिए गेहूँ बाहर से आता है। जिस प्रदेश में हम चल रहे थे, वहाँ उज़बेक जाति बसती है। हिन्दुस्तान में उज़बेक नाम ही सुन कर लोग हँस देते हैं। मुमकिन है, वे पहले हद से ज़्यादा सीधे सादे रहे हों। लाल क्रान्ति के समय तक वह मध्य एशिया की सब से अधिक अशिक्षित जातियों में थे, लेकिन अब उज़बेक उजबक नहीं हैं। अब ४० वर्ष से कम उम्र के स्त्री-पुरुषों में कोई अनपढ़ ढूँढ़े भी नहीं मिलेगा। हज़ारों उज़बेक रेल और सेना के अफ़सर हैं।

अपने प्रजातंत्र का प्रबन्ध वह स्वय बड़ी सफलता से कर रहे हैं। उनकी भाषा जो क्रान्ति के पहले कागज पर लिखी नहीं गई थी, अब उच्च शिक्षा तक की माध्यम है। कितने ही दैनिक और मासिक-पत्र रोमन-लिपि और उज़्बेक भाषा में निकल रहे हैं। हर साल हज़ारों ग्रंथ छप रहे हैं। रूसी और उज़्बेक के भाई भाई के सम्बन्ध को देखकर रश्क आता है। जौलाक् में रूस की तरह सर्दी न थी, इसलिए ताज्जुब नहीं कि जूता रहने पर भी कीचड़ के डर से लड़का नंगे पाँव आया हो। एक रूसी यात्री लड़के से कह रहा था—'अता (बाप) से कहो कि गलोस (जूता को ढाँपने वाला रबड़ का जूता) ले दे।' रूसी यात्री को उज़्बेक का सिर्फ 'अता' शब्द मालूम था और गलोस रूसी शब्द होने पर भी सब जगह सुपरिचित है। इसलिए लड़के ने कहनेवाले का अभिप्राय समझ ज़रूर ही लिया होगा।

अब हमारी सड़क के किनारेवाले गाँवों में सेव, नासपाती जैसे फल-दार वृक्ष भी मिल रहे थे। बीरी और सफ़ेदे अब भी थे। हाँ, पत्ते सभी के झड़ चुके थे। ११ बजे (स्थानीय समय २ बजे) हमारी रेल दक्षिण को जा रही थी। उस समय हम एक बड़े कोल्ख़ोज़् गाँव में खड़े थे। इस गाँव का नाम प्रसिद्ध वैज्ञानिक और क्रान्तिकारी प्रिंस क्रोपत्किन् के नाम पर क्रोपत्किकन् रखा गया है। मिट्टी के तेल का एक बड़ा गुदाम है। पचा-यत-घर के बरामदे में उज़्बेक पंच कुछ मंत्रणा कर रहे थे। शायद खेत की जुताई-बुआई की योजना तैयार हो रही थी। १ बजे (स्थानीय ४ बजे) हम समरकन्द पहुँचे। सारा इलाका पहाड़ी है, पहाड़ियाँ छोटी छोटी हैं। समरकन्द का सारा इलाका बागों का देश है। अंगूर, सेव, नास-पाती, ख़ूबानी सभी के लतावृक्ष सूखे से दिखाई पड़ रहे थे। जहाँ तहाँ धान की क्यारियाँ भी थीं, लेकिन अधिकतर खेत कपास के लिए तैयार किये गये थे। नहरें और छोटी छोटी नदियाँ भी जहाँ तहाँ थीं। उनका पानी जमा नहीं था। मकान अधिकतर मिट्टी के और छतें भी मिट्टी ही की हैं। दरवाज़ों में मेहराब की जगह सरल रेखा का ही व्यवहार है। बर्फ नाम मात्र

जहाँ तहाँ दिखाई पड़ी। स्टेशन से बाहर अनगढ़ पाषाणों की लाट पर लेनिन् का बस्ट (ऊर्ध्व-देह) था, जो शहर की ओर बड़ी गंभीरता से देख रहा था। शहर काफ़ी लम्बा चौड़ा है। मालूम होता है, बिजली यहाँ बहुत सस्ती है, क्योंकि उस वक़्त भी सड़कों पर बत्तियाँ जलती छोड़ दी गई थीं। काबुल जैसे मीठे सफ़ेद अंगूर यहीं हमें खाने को मिले। ख़ूबानी, सेब, नासपाती भी स्टेशन की दुकान पर बिक रही थीं।

शाम को हम एक गाँव के स्टेशन पर पहुँचे। ख़याल आया, पहले यह देश मुसलमानों का था; देखें, आदमियों में कितने देखने में भी मुसलमान से जान पड़ते हैं। स्टेशन पर मैंने ८० उज़बेक गिने, जिनमें सिर्फ ३ दाढ़ीवाले थे, और उन तीनों में से भी सिर्फ़ एक दाढ़ी को शरियतवाली दाढ़ी कहा जा सकता है। औरतों में एक भी पर्दावाली न थी। अब भी बहुतों की पोशाक पोस्तीन या रुई भरे चोग़ों की थी। लेकिन यह शायद जाड़े के कारण हों। गर्मियों में ज़रूर अधिकांश लोग कोट-पतलून का ही व्यवहार करते होंगे। मध्य-एशिया के सभी स्टेशनों पर कुछ न कुछ रूसी स्त्री-पुरुष दिखलाई पड़े।

*** ***

आज (२१ जनवरी) मास्को से चले सातवाँ दिन था। और हम लगातार एक ही गाड़ी में आ रहे हैं। यद्यपि हमें आज ही उतर जाना है, लेकिन गाड़ी कल आठवें दिन अपने अन्तिम स्थान स्तालिनाबाद पहुँचेगी। ६ बजे सवेरे वे ही नंगे पर्वत हमारे आसपास थे। हाँ, बर्फ़ का कहीं पता न था। रात को हम कगान स्टेशन पार कर चुके थे। यहाँ से बुख़ारा कुछ ही दूर पर पड़ता है। इस वक़्त हम तुर्कमानियाँ सोवियत्-सोशलिस्त-रिपब्लिक की भूमि पर चल रहे थे, और जल्द ही हम फिर उज़बेक रिपब्लिक में दाख़िल होनेवाले थे। पहाड़ों के बीच में ज़मीन मैदान सी ही जान पड़ती थी। पशुओं के चरने के लिए काफ़ी घास थी। तुर्कमान लोग चेहरे में

मगोल जैसे है। लेकिन कद मे ज्यादा लम्बे-चौड़े। इनकी स्त्रियां—जिनमें से बहुतों ने अपनी पुरानी वेशभूषा को नही छोड़ा है—दस दस इंच ऊँची पांच पांच सेर की पिटारी सी पगड़ी सिर पर बांधती है। शायद इस पोशाक से ही, इनमे बदसूरती बहुत ज्यादा है। जिस जगह से हम गुजर रहे थे, वहाँ खेत कम हैं। एक स्टेशन पर देखा, पास मे कुछ तुर्कमान-परिवार पहले से बनी मिट्टी की गोल दीवारो पर अपना काला तम्बू खड़ा कर रहे थे। उनके गदहे और भेड़े आस पास चर रही थी। मालूम होता है, अब भी इनमे कुछ खानाबदोश है। खानाबदोशो मे भी बहुत से पचायती पशुपालन करते हैं। कह नही सकता, ये परिवार पचायती थे, या वैयक्तिक।

हमारी दाहिनी ओर दूर से वक्षु गंगा (आमू दरिया) जा रही थी। आगे लाल-सेना की एक छोटी चौकी मिली। सैनिको के रहने का मकान दो-तल्ला और ईंट का बना हुआ है। सिपाहियो मे अधिक रूसी मालूम पड़ते थे। आगे एक लम्बी सुरग से हमारी रेल पार हुई। मालूम हुआ इसी सुरग की रक्षा के लिए यह फौजी चौकी थी। आखिर हम सोवियत् की सीमा पर भी तो थे। यही वक्षु नदी सोवियत् भूमि को अफगानिस्तान से अलग करती है। अफगानिस्तान से क्या डर हो सकता है, लेकिन उसके बाद ही ब्रिटिश-अधिकृत भारत जो आ जाता है, जिसके कि सीमान्त पर अंग्रेजो ने एक बड़ी फौज जमा कर रखी है।

छोटे छोटे कई स्टेशन आये। गांव के मगोल मुख-मुद्रा रखनेवाले लोगों में पुरानी पोशाक ज्यादा थी। लेकिन ताजिक जो मुख-मुद्रा और भाषा मे ईरानियों से ज्यादा मिलते है, बल्कि शक्ल-सूरत और स्त्रियो के सिर की टोपी मे काश्मीरियो जैसे जान पड़ते है अधिक शिक्षित और होशियार है।

९॥ बजे (स्थानीय १२॥ बजे) हम तेर्मिज् स्टेशन पर पहुँचे। गाड़ी में यद्यपि हम उतने ज्यादा परिचित नही बना पाये, जितने कि तीसरे दर्जे में सफ़र करने पर करते; लेकिन तो भी जो परिचित हुए, उन्हे

विदाई ली। भरिया ने सामान नीचे उतारा। पता लगाने पर एक फ़ारसी भाषा-भाषी ताजिक मिल गये। उनके साथ जाकर स्टेशन में लगेज के बारे में पूछा। पार्सलघर में भी ढूँढ़ा लेकिन मालूम हुआ, हमारे बक्स इस ट्रेन से नहीं आये। पूछापाछी करने पर बतलाया गया, शायद कल या परसों आ जायेंगे। ताजिक् सज्जन से हमने कोई रहने की जगह पूछी। उन्हों ने बतलाया, होटल शहर में हैं जो यहाँ से ५ किलोमीतर (प्राय: सवा तीन मील) है। उन्होंने कोल्खोज् नमूने के चायख़ाने में पहुँचाया। चाय माँगने पर एक तीन पाव की गोल चायदानी में हल्के हरे रंग का गर्म पानी और एक पाव भर दूध रखने लायक़ चीनी का प्याला सामने रख दिया गया। पानी को प्याले में डाल कर मुँह से लगाया, तो मालूम हुआ कि न उसमें नमक है, न चीनी। जैसे बुख़ार का काढ़ा दिया गया हो। समझने में मुझे देर न लगी, क्योंकि चीन और जापान में भी तो ऐसा ही काढ़ा मिलता है; लेकिन जापान में नन्हीं नन्हीं प्यालियाँ होती हैं। दो चार घूँट चाय पीनी पड़ती है। यहाँ एक वर्तन का वर्तन सामने रख दिया गया है। चायख़ाने में देखा, इसी तरह की चायदानियाँ पचासों की संख्या में कतार से सजाकर रखी हैं, और हर चायची को एक एक चायदानी भर कर प्याले के साथ नज़र की जा रही है। मैंने दो चार घूँट पीकर प्यास बुझाई। तन्दूर की एक रोटी चीनी के साथ खाकर क्षुधा शान्त की। सामान अब भी हमारे साथ था। हम फिर स्टेशन पर गये। पहला काम पासपोर्ट के झगड़े से निबटना था। पता लगाने पर मालूम हुआ कि पासपोर्ट आफ़िस भी शहर में है। स्टेशन ही से इन्दुस्को मुसाफ़िर के आने की ख़बर पासपोर्ट आफ़िस को दे दी गई। रसीद लेकर हमने अपना सामान लगेज-घर में रख दिया। स्टेशन से शहर को फ़िटेन और मोटर थोड़ी थोड़ी देर पर जाती रहती हैं। ख़ाली हाथ थे, जल्दी का कोई काम भी न था, इसलिए पैदल ही चल पड़े। सड़क गोल मोल पत्थरों की बनी है। बाईं तरफ़ कुछ पक्के घर भी बने और बन रहे हैं। कुछ बरसों में शहर स्टेशन तक

पहुँच जायगा; लेकिन अभी आसपास सभी खेत है, जिनकी एक बार जुताई हो चुकी है। तिर्मिज शहर में पंच-वार्षिक-योजनाओं ने उतनी काया पलट नहीं की है। अभी भी उसकी बहुत सी सड़कें कच्ची है। पानी बरस जाने पर उन पर बहुत कीचड़ उछलने लगता है। हाँ, सारे शहर (? कस्बे) में बिजली की रोशनी है। अभी पानी का नलका भी नहीं है। और पाखानों का प्रबन्ध भी असन्तोषजनक है। मकान अधिकतर एकतल्ले है। यद्यपि अपनी श्रेणी के दूसरे एशियाई कस्बों से तेर्मिज् की इमारतें कहीं बढ चढकर है। अफ़गानिस्तान मे जानेवाले सौदागरों के लिए तो यह स्वर्गपुर का एक खड मालूम होता है, लेकिन जिसने रूस के अन्य शहरों और कस्बों को देखा है, उसके लिए तिर्मिज की अवस्था उतनी प्रशंसनीय नहीं होगी। जारशाही के जमाने मे भी घुडसवार और दूसरी फौज यहाँ रहती थी। आजकल भी उस वक्त की फौजी छावनी के बहुत से घर मौजूद है। ऐसे एक घर पर लिखा था—१८९९ अर्थात् ३८ वर्ष पहले वह मकान बना था। इन पुराने मकानो मे जिस प्रकार के सिपाही रहते थे, उनमें और आज के सोवियत् सिपाहियो में ज़मीन आसमान का फर्क है। आज कल का हर एक सिपाही कम से कम सात-आठ साल स्कूल की शिक्षा पा चुका है। हर चार मे से तीन सिपाही कल-मशीन की वार्ता को अच्छी तरह जानते है। तिर्मिज के जारशाही जमाने के सिपाहियों में जहाँ रूसी ही सब कुछ थे, वहाँ आज एशियाई और रूसी कन्धे से कन्धा मिलाये, मातृभूमि की रक्षा के लिए तैयार है। गोरे-काले का भाव अब कहानी की बात हो गई है। शहर के पूरब तरफ हवाई जहाज़ों का अड्डा है। उधर नई बनी हुई इमारते ज्यादा अच्छी है। तिर्मिज का जो चित्र मैंने यहाँ खींचा है; बहुत सभव है, अगले दो तीन वर्षों मे ही वह सब लुप्त हो जाय और उसकी जगह लोहे और सीमेट के बने बडे बडे महल, स्फाल्ट बिछी चौड़ी सड़कें और सिवरेज्-नहरो द्वारा शहर की गन्दगी की सफाई का प्रबन्ध होकर तिर्मिज् नया रूप धारण कर ले।

पासपोर्ट-आफ़िस में कर्मचारी एक रूसी महिला थीं। वह सिर्फ़ रूसी और उज़बेक भाषा जानती थीं। मेरा रूसी का ज्ञान अत्यन्त अल्प है, और सवा महीने बाद जब यह पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं, तो वह ज्ञान भी बहुत सा विस्मृत होता जा रहा है; तो भी रूसी भाषा में काम चलाने में मुझे कोई दिक़्क़त न होती थी। महिला ने पासपोर्ट ले लिया। चूँकि, अभी मेरा सामान नहीं आया था; इसलिए सीमा पार करने का अभी कोई सवाल ही नहीं था। महिला का वर्ताव बहुत ही शिष्ट था। उन्होंने रहने के लिए सामनेवाला गस्तिनित्सा (होटल) बतला दिया। मैंने सोचा, ऐसी जगह रहूँ, जहाँ फ़ारसी जानने वाले भी मिलें, तो मुझे बोलने चालने का सुभीता रहेगा। पूछने पर उन्होंने अफगान्स्की सराय के लिए एक चिट लिख कर पता बतला दिया। अफ़्गान्स्की सराय शहर के एक कोने में अवस्थित हाटवाले बाड़े के अन्दर है। चौकीदार एक ताजिक वृद्ध है; जो क्रान्ति से पहले ही अफ़्गानिस्तान से आकर यहाँ बस गया था। अपनी उज़बेक औरत से उसके कुछ बच्चे भी हैं, जिनमें से एक लड़की स्कूल की अध्यापिका है। बूढ़ा अब भी वेषभूषा में कुछ पुराना जैसा मालूम होता है। लेकिन लड़की केशच्छिन्ना स्कर्ट-धारिणी यूरोपीय तरुणी के रूप में परिणत हो गई है। बूढ़े चौकीदार ने एक कोठरी में जगह दी। उसी कोठरी में पहले से ही एक पठान सौदागर आकर ठहरे थे। मुझे अब स्टेशन से सामान लाने की सूझी और एक फ़िटन कर वहाँ से सामान उठा लाया।

*** ***

पठान सहवासियों के लिए जो कुछ वह तिर्मिज़ में देख रहे थे वह आश्चर्य की बात थी। हम तो मास्को, लेनिन्ग्राद् तथा रूस के दूसरे क़स्बों और शहरों से तुलना कर के तिर्मिज़ को हेच समझ रहे थे, और वह इसकी तारीफ़ के पुल बाँध रहे थे। इन सौदागरों में कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने १५ साल पहले के तिर्मिज़ को देखा था। एक सज्जन कह रहे थे—पाँच छः साल

पूर्व यहाँ रोटी बड़ी महँगी थी। अब तो बड़ी सस्ती है और जितनी चाहिए उतनी मिल जाती है। गोश्त और मक्खन भी दुर्लभ थे और आज उनके लिए कुछ दाम ज्यादा जरूर देना पड़ता है, लेकिन वह बड़े सुलभ हैं। अफ्गान्स्की सराय का मकान पहले मजारशरीफ़ (अफ्गानिस्तान) के एक मुल्ला की सम्पत्ति थी, और हमारे पठान साथियों के खयाल में अब भी वहीं मुल्ला उसका मालिक है। मैंने पूछा भी—यदि मुल्ला मालिक है, तो सराय की मरम्मत क्यों नहीं की जा रही है ? क्यों दीवार और दरवाजे टूटते फूटते जा रहे हैं ? तिर्मिज की और इमारतों की मरम्मत की ओर से बहुत कुछ उपेक्षा देखकर मुझे तो शक हो रहा है कि शायद सरकार शहर को नये तौर से तामीर करना चाहती है; इसीलिए पुरानी इमारतों की मरम्मत पर बहुत धन और श्रम खर्च करना नहीं चाहती।

आज (२२ जनवरी) लेनिन् की मृत्यु-दिवस के उपलक्ष्य में छुट्टी थी। आफिसों और बड़े बड़े मकानों पर शोक-सूचक काले हाशिये के लाल झंडे लगे हुए थे। मैंने दोपहर बाद शहर के कुछ हिस्सों को विशेष तौर से देखना चाहा। जाते जाते एक स्कूल के पास से गुजरा। इमारत दो-तल्ले की थी और ईंट-चूने की बनी थी। नीचे और ऊपर दोनों फर्श चौकोर ईंटों जैसे लकड़ी के थे। वैसे इमारत मजबूत, साफ और हवादार थी, लेकिन लकड़ियों पर विशेष कर फर्श की लकड़ियों पर वारनिश की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया था। मुझे यह भी खटक रहा था। क्योंकि मैंने लेनिन्ग्राद् के स्कूलों को देखा था। दर्वाजा खोलकर भीतर गया। चौकीदार ने एक वृद्धा से मुलाकात करवाई। जब उन्हें मालूम हुआ कि मैं इन्दुस् हूँ और स्कूल देखना चाहता हूँ, तो उन्होंने सादर कमरों को दिखलाना शुरू किया। छुट्टी के कारण आज छात्र नहीं थे। सिर्फ एक कमरे में कुछ प्योनीर् और प्योनिर्का (बालचर और बालचरी) बेंचों पर बैठे बातचीत कर रहे थे। यह एक प्राइमरी स्कूल था और सो भी सोवियत् के भीतर एक बहुत ही मामूली स्थिति का। लेकिन इस

की इमारत हमारे यहाँ के वहुत से हाई स्कूलों की इमारतों से भी वढ़ चढ़ कर थी। वृद्धा नीचे के कमरों को दिखलाकर ऊपर के कमरों को दिखाने ले चलीं। वहाँ मुझे फ़ोटो के कमरे में जाने पर एक उज़बेक अध्यापक मिले जो कुछ फ़ारसी भी जानते थे। पूछने पर मालूम हुआ कि वह भूगोल पढ़ाते हैं। वहाँ दो तीन लड़के लड़कियाँ वैठी हुई थीं, जिनका फ़ोटो एक लड़का अपने अध्यापक के परामर्शानुसार ले रहा था। अर्थात् प्राइमरी के लड़कों को फ़ोटो खींचना सीखने का भी वहाँ प्रवन्ध था। अभी चन्द ही मिनट मैं वहाँ ठहरा था कि दो प्योनिर्काओं का एक डेपुटेशन फ़ोटो के कमरे में दाख़िल हुआ। पूछा—आप इन्दुस हैं? मैंने कहा—हाँ! कहा—कुछ प्योनीर् और **प्योनिर्का** नीचे कमरे में जमा हैं, क्या आप हमें हिन्दुस्तान के वारे में कुछ सुना सकते हैं? मैंने कहा—सुनाने में कोई उज्र नहीं है लेकिन मुझे उतनी रूसी भाषा नहीं आती। कहा—हमारा एक सहपाठी ताजिक है, वह फ़ारसी से रूसी कर के हमें समझा देगा। लड़कियों की अवस्था १० वर्ष के आस पास होगी। टाल-मटोल करने की इच्छा की तो वात ही क्या, मुझे खुद आकांक्षा थी कि इन वालक-वालिकाओं को नज़दीक से देखने की। भला ऐसे सुअवसर को मैं कैसे अपने हाथ से दे सकता था। कमरे में २० के करीव वालक-वालिकाएँ होंगी। सोवियत्-भूमि में पाठशाला, विश्वविद्यालय, क्लव, पंचायत, पार्लियामेंट, कहीं भी स्त्री-पुरुष के लिए अलग संस्थाएँ नहीं हैं; और न स्त्रियाँ ऐसी कमज़ोर हैं कि उनके स्वत्वों की रक्षा के लिए विशेष रक्षा का आयोजन किया जाय। प्योनीर् और **प्योनिर्का** का भी संगठन एक है। आज तवारिश् लेनिन् के मृत्यु-दिवस को अच्छे ढंग से मनाने के लिए यह मंडली जमा हुई थी। कमरे में दाख़िल होने पर सभी अपनी अपनी जगहों पर वैठे रहे। यद्यपि एक अजनवी के देखने से दिल में जो कूतूहल हो रहा था, उसकी छाप उनके मुँह पर भी थी। छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त दो-तीन अध्यापिकाएँ भी एक ओर की वेंच पर वैठी थीं। दर्शक-मंडली में रूसी, ताजिक और उजवेक तीनों थे। रूसी और

उजबेकों की सख्या बराबर थी, ताजिक छात्र कम थे। एक दस वर्ष का ताजिक बालक स्वयं आ कर हमारे बगल की कुर्सी पर बैठ गया। विद्यार्थियों की तरफ से प्रश्नों की बौछार शुरू हुई और वह ताजिक बालक अपनी भाषा में उसका अनुवाद मेरे लिए करने लगा। वैसे फारसी का ज्ञान भी मेरा बहुत गंभीर नहीं है, और फिर वह बोल रहा था ताजिकिस्तान की फारसी, जो ईरानियों के खयाल में एक गँवारू फारसी है—किताब को वह *कितोबे कहता था। पिसरान को पिसरोने*, इस प्रकार अनुवादक के कथन का आधा भाग हमारे पल्ले पड़ता था और हमारे कथन का आधा भाग उस के पल्ले। श्रोतृ-मंडली के पास तो यदि चौथाई भी पहुँच जाता हो तो गनीमत ही समझिए। पहले हमारी यात्रा किस रास्ते हुई, यह पूछा गया। एक बड़ा नकशा दीवार पर टाँग दिया गया और जब हम ने कहा—क्वेटा, तेहरान, बाकू, मास्को, लेनिन्ग्राद् ओरेन्बुर्ग, ताशकन्द, समरकन्द, तिर्मिज; तो भूगोल-अध्यापक ने लकड़ी से नकशे पर वह सारे स्थान दिखला दिये। आगे के रास्ते के बारे में हम ने बतलाया—आमू-दरिया, मजारशरीफ, काबुल, पेशावर। फिर पूछा—हिन्दुस्तान में प्योनीर् और प्योनिर्का कैसे होते हैं। हम ने कहा—उन्हें हम लोग स्काउट कहते हैं। हमारे यहाँ हर एक बालक-बालिका को स्काउट बनने का मौका नहीं मिलता।

"क्यों ?"

"क्यों कि बहुत से बच्चों के माँ बाप गरीब हैं। उन बच्चों को पढ़ने का मौका कहाँ ? उन्हें तो पेट के लिए काम करना पड़ता है।"

"काम ? कितने घंटे ?"

"घंटों की गिनती नहीं। सूर्योदय से ले कर सूर्यास्त तक और बाद भी।"

"ओह ! इतना काम ! और कितनी उम्र के बच्चों के लिए ?"

'तुम्हारी उम्र के। और तुम से छोटी उम्र के बच्चों के लिए।"

"ओह ! तो इन्दुस् बच्चे बहुत तकलीफ् में होंगे !"

एक लड़का बोल उठा—"आप के यहाँ कापितलिस्त (पूँजीपति)

या ?"

हमने कहा—"हमारे यहाँ के सभी कल-कारख़ाने, धन-धरती, कापि-
टलिस्तों के ही हाथ में है। क्या तुमने कापतलिस्त देखे हैं ?"

"नहीं।"

एक लड़की बोल उठी—"हाँ, देखा है, फ़िल्म में !"

एक लड़का पूछ बैठा—"युद्ध में तुम लाल-सेना के साथ हो या सफ़ेद
सेना के ?"

मैंने कहा—"हमारे यहाँ अभी लाल और सफ़ेद सेना का युद्ध नहीं हो
रहा है। वह हमारे देश से बहुत दूर चीन और स्पेन में हो रहा है।"

एक ९ वर्ष का रूसी लड़का ताबड़तोड़ सवाल कर रहा था। हमारी
बग़ल में एक बड़ी उम्र का उजबेक या तुर्कमान लड़का खड़ा था। उसने
एक बार हमारे वाक्य के अनुवाद करने की धृष्टता कर दी। ताजिक लड़का
लड़ पड़ा—"तुम ग़लत अनुवाद कर रहे हो'। मुझसे दोबारा वाक्य
दोहरवाया गया और सचमुच उस लड़के का अनुवाद ग़लत साबित हुआ।
इसके बाद लड़कों ने पूछा—आपके पास अपने देश के सिक्के हैं ?

मैंने कहा—'अपने देश के तो नहीं, हाँ कुछ अंगरेज़ी सिक्के हैं।' फिर
उन्होंने शिलिंग, पेंस के चाँदी ताँबे के सिक्के तथा १० शिलिंग वाले नोट
लेकर देखे। अन्त में इन्दुस् प्रोफ़ेशोर को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

***

***

१. कोल्खोज़्

कोल्ख़ोज़् देखने की हमारी बड़ी इच्छा थी। पूछने पर कुछ को
ख़ोज़ों के नाम मालूम हुए। सबसे नज़दीक तिर्मिज़ से बाहर स्टेशन
वाली सड़क की बाईं ओर ज़रा हटकर कोल्खोज़् बेनुल्मलल् था। हम
अकेले पैदल चल कर वहाँ पहुँच गये। यह डेढ़ सौ उज़बेक घरों का
है। पूछने पर कोल्ख़ोज़् के आफ़िस में पहुँचा दिया गया। आफ़िस

बाजे पर बिजली लगी हुई थी और बाहर रेडियो का शब्द-प्रसारक यंत्र। दो मुस्तैद जवानों ने उजबेक भाषा में कुछ पूछा। फिर हमारी अज्ञता देख कर एक ने रूसी में बात की। लेकिन हम दोनों ही रूसी में इतने कच्चे थे कि एक दूसरे को समझाना कठिन था। आफिस की मेज़, कुर्सियों और बाहर की मिट्टी की दीवार और मिट्टी की छत को देख कर हमने स्कूल का रास्ता पूछा। आज (२२ जनवरी) स्कूल बन्द था। मकान मिट्टी का ही था लेकिन उसमें काफी खिड़कियाँ और बेंचें थीं। दीवार में सफेदी भी हुई थी। बच्चाखाने के बारे में पूछने पर बतलाया—"उसकी ज़रूरत खेत जोतने बोने और फसल काटने के वक्त होती है। आजकल तो औरतों के लिये बाहर बहुत काम नहीं होता।" गाँव की एक तरफ देखा, *कुछ हट्टे कट्टे जवान नहर की मरम्मत में जुटे हुए हैं।* मकानों के पास और छतों पर कपास का सूखा डंठल ईंधन के लिए जमा किया हुआ था। गाँव के भीतर जाने पर अजनबी समझ कर दो आदमी मेरे पास आये। मेरी बात न समझ पाने पर वह मुझे एक अधेड़ पुरुष के पास ले गये। वह एक काम करनेवाली टोली का ब्रिगादीर (ब्रिगेडियर या नायक) था। भाषा की कठिनाई देखकर मैंने सिर्फ कोलखोज़् नमूना के बारे में पूछा, जिसका नाम मैं पहले सुन चुका था। मालूम हुआ, वह स्टेशन से ढाई तीन मील पर है। मैंने गाँव के पंचायती किसानों में एक बात खास देखी। उनमें संकोच, शर्मीलापन और अपने को छोटा समझने का भाव बिलकुल नहीं था। वे बहुत ही अकृत्रिम किन्तु भद्रता के साथ हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ते थे।

*** ***

२. कोलखोज्-नमूना

२३ तारीख को भी तातील थी। यद्यपि हमारे बक्स कल ही मिल गये थे; लेकिन छुट्टी के कारण पासपोर्ट का काम नहीं हो सकता था। हमने आज कोलखोज् नमूना देखना निश्चय किया। संयोग से स्टेशन पर उसी गाँव

का एक आदमी मिल गया। उसकी ज़बान फ़ारसी थी। स्टेशन के पास रेल पार कर हम कच्ची सड़क से आगे बढ़े। थोड़ी दूर पर हमें जुते हुए विशाल खेत मिलने लगे। यद्यपि ये खेत भी कोल्खोज़्-नमूने के थे, लेकिन बस्ती अभी बहुत दूर थी। बीच में हमने पानी की छोटी छोटी नहरें (कूल) पार कीं। साथी ने बतलाया—'दस बारह बरस पहले यह सारी ज़मीन ग़ैर-आबाद थी। वक्षु गंगा की नहर ने इस ज़मीन को आबाद किया। सारे गाँव में सिर्फ़ कपास की खेती होती है। बात करते करते हम गाँव में पहुँच गये। एक ऊँची जगह पर कुछ घर हैं, जिनमें एक स्कूल के लिए, दूसरा मालगोदाम के लिए, तीसरा चौथा गायों और घोड़ों के लिए है।

पहले हमारा परिचय गाँव के अध्यापक से कराया गया। अध्यापक उजबेक थे, लेकिन वह फ़ारसी जानते थे। विद्यार्थी भोजन की छुट्टी में थे। इसलिए अध्यापक महाशय चाय पिलाने का आग्रह कर स्कूल के मकान के पीछे की ओर अपने रहने के कमरे में ले गये। मकान की दीवार और छत तो वैसी ही थी, जैसी लखनऊ ज़िले के देहाती मकानों की। हाँ, उसकी लिपाई अच्छी, तथा दरवाजे खिड़कियाँ काँच की लगी थीं। भीतर कुर्सी मेज़ तथा आलमारी भी थीं। घर के भीतर दाखिल होते ही बग़ल की कोठरी से एक भूरे बालोंवाली तथा लाल-गोल-चेहरेवाली मोटी-ताज़ी तरुणी निकल आई। उजबेक युवक ने पत्नी कहकर उसका परिचय कराया। मेम एशियाई की औरत हो, यह सोवियत् मध्य-एशिया में कोई आश्चर्य की बात नहीं समझी जाती। हाँ, यह कहा जा सकता है कि दो सौ घरों के इस छोटे से गाँव और इस कच्चे मिट्टी के मकान में ऐसे दम्पती! लेकिन सोवियत् की औरतें तितली नहीं बनतीं। तितली बनने का उन्हें अवसर ही कहाँ है? पति की कमाई पर तो स्त्री गुज़र नहीं करती। हर एक औरत अपनी रोज़ी आप कमाती है। मेम रखने से ख़र्च और फ़र्माइश अधिक बढ़ जायगी—यह ख़याल होता; तो यह उजबेक अध्यापक इस रूसी तरुणी से शादी करने की हिम्मत थोड़े ही करता। मेरे सामने

रूसी मिठाइयों की एक तश्तरी रख दी गई और साथ में कुछ तन्दूरी रोटियाँ। तरुणी चाय पकाने के लिए कोठरी के भीतर चली गई और मैं, अध्यापक तथा पहले के साथी महम्मदोफ् मेज के किनारे बैठकर खाने और गप करने लगे। चायपानी और प्यालों के आ जाने पर आग्रह हुआ कुछ अंडों के आमलेट बनाने के लिए। मैं खाकर तो गया नहीं था और तीन चार मील चलने से भूख भी लग आई थी। ऊपर के मन से एकाध बार नहीं-नुहीं की, और फिर आग्रह को मान लिया। चाय-पान नहीं हुआ बल्कि यह तो भोजन ही हो गया। मालूम हुआ, स्कूल के यही दोनों पति-पत्नी अध्यापक हैं। चाय पीने के बाद हमें पहले क्लबघर की ओर ले गये। क्लबघर नया बन रहा है। ईंटों की दीवारें तैयार हो चुकी हैं। बढ़ई दरवाजे और खिड़कियाँ बना रहे हैं, और छत डालने की तैयारी हो रही है। गाँव के क्लब से यह मतलब न समझिए कि एक दो छोटी सी अन्धेरी धुन्धेरी कोठरियाँ होंगी। वहाँ बीच में ५००–६०० आदमियों के बैठने लायक एक हाल है। आमने सामने बराण्डा और अगल-बगल में ५ बड़े बड़े कमरे। हाल है प्रति सप्ताह आनेवाले चलते फिरते बोलते सिनेमा-फिल्मों तथा जब तब आनेवाली नाटक-मण्डलियों के प्रदर्शन के लिए। यही हाल राजनीतिक, सामाजिक सभाओं, नाच-गान की पार्टियों के लिए भी इस्तेमाल होगा। अगल-बगल के कमरे पुस्तकालय, वाचनालय आदि के लिए इस्तेमाल होंगे। सोवियत्-निवासियों के क्लबघर मनुष्यों की शिक्षा और मनोरंजन की इतनी सामग्री जुटा देते हैं कि मस्जिद-गिरजे लोगों के मन से भी धुल जाते हैं।

क्लबघर से हम ग्राम-सोवियत के कार्यालय में गये। दो तीन कमरे थे। एक कमरे में कुर्सी मेज और उज्बेक-भाषा के कुछ अखबार पड़े थे। एक आदमी कार्यालय में लिखा-पढ़ी का काम कर रहा था। एक जगह गाँव के कुछ बूढ़े रूई की ढेरी से बिनौले अलग कर रहे थे। मध्य एशिया में सब जगह मिस्री रूई बोई जाती है, और इस इलाके में आठ बार कपास चुनी जाती है। अन्तिम बार की चुनी गई रूई अच्छी नहीं होती। आज कल यही लगा हुआ

था, वह अन्तिम बार की रुई का था। फिर हम अस्तबल में गए। एक लंबा घर था जिसके एक तरफ़ दीवार के सहारे घास डालने की पतली चबूतरी बनी थी। पीछे की दीवार की खूँटियों पर घोड़ों का साज़ और चारजामा टँगा था। साज़ और चारजामे में लगे सभी पीतल चमचम चमक रहे थे। ६० घोड़ों की घुड़साल होने पर भी गंध नहीं थी। घुड़साल में ही दो चबूतरे देखभाल करनेवाले के सोने के लिए बने थे। वहाँ की व्यवस्था किसी रिसाले की घुड़साल से भी अच्छी थी। घोड़े इस वक्त बाहर गये हुए थे, इसलिए उन्हें हम देख नहीं सके। कोल्खोज़् की गोशाला में १०० गायें हैं। गोशाला साफ़ सुथरी थी। गायें वहाँ मौजूद न थीं।

नई ज़िन्दगी

कोल्खोज़् नमूना के पास ८०० एकड़ खेत है और २०० घर। पिछले साल इस कोल्खोज़् ने आठ लाख रूबल की कपास बेची और तवारिश महम्मदोफ़् कह रहे थे, कि हर एक घर को उससे ५ हज़ार रूबल तक की आमदनी हुई। पंचायती खेत, घोड़े और गाय के अतिरिक्त हर एक घर को आधा आधा, चौथाई चौथाई एकड़ ज़मीन अलग मिली है। इनकी जुताई ट्रैक्टर से हो जाती है, और घरवाले इनमें खरबूज़े, तरबूज़, शाक सब्ज़ी उगाते हैं। घर पीछे एकाध गाय, दो चार भेड़ें, दो एक सुअर और १०–१५ मुर्ग़े-मुर्ग़ियाँ, निजी सम्पत्ति के रूप में हैं। कोल्खोज़्-नमूना के स्त्री-पुरुषों और लड़के-लड़कियों के कपड़े और शरीर देखने से ही मालूम पड़ता था कि भूख और दरिद्रता को उन्होंने कोसों दूर भगा दिया है। इन्हीं उजबेक लोगों की जाति के लाखों आदमी वक्षु-गंगा के इस पार अफ़ग़ानिस्तान में बसते हैं। उनकी दरिद्रता हमारे भारत के गाँवों के किसानों से भी यदि बदतर नहीं तो बराबर ज़रूर है। कुछ साल पहले कोल्खोज़्-नमूना के निवासियों की भी यही हालत थी। लेकिन आज वहाँ दुबला पतला हड्डी-निकला अथवा फटे चीथड़ों और नंगे पैरवाला कोई आदमी

देखने में नहीं आता। यह जरूर है कि सभी के कपड़े उतने साफ नहीं हैं, और न शरीर को खूब साफ सुथरा रखने की ओर सबका ध्यान है। लेकिन यह बात तो उच्च शिक्षा और संस्कृति से संबंध रखती है। इसके लिए यहाँ के प्रौढ़ आदमियों को मौका नहीं मिला था। हाँ, नई सन्तान में ये बातें आ रही हैं। और जितने ही ज्यादा आदमी डाक्टर, इंजीनियर, अध्यापक आदि होते जा रहे हैं, उतनी ही उनमें नागरिकता की आदतें आ रही हैं।

हाथ ऊँचा चबूतरा दीवारों के तीन तरफ़ बना हुआ है। उन्हीं पर कालीन बिछी हुई है। चाय तो मैं पी चुका था। पर चायख़ाना देखने के लिए भीतर गया। देखा पाँच सात आदमी बैठे हैं। समावार में चाय का पानी खौल रहा है। कालीन पर दो तीन सितार पड़े हुए हैं। मुमकिन है, शाम की संगीत पार्टी की तैयारी हो रही हो। चायख़ाने की तरह सरतराशख़ाना भी पंचायती है। उसका नफ़ा नुक़सान सारे गाँव को है। सब देख कर जब हम लौटे, तो स्कूल में पढ़ाई शुरू हो चुकी थी। अध्यापक ने हमें स्कूल दिखाना चाहा। स्कूल का समय सबेरे ८ बजे से १२ बजे तक और दोपहर बाद २ बजे से ६ बजे तक है। इसी में कुछ खेल का समय भी रखा गया है। स्कूल की ही इमारत में रात को सयानों (स्त्री-पुरुषों) की पाठशाला लगती है। जिस वक्त मैं गया, उस वक्त गणित का पाठ चल रहा था। तीन चार बेंचों पर कक्षा के लड़के लड़कियाँ बैठी हुई थीं। अवस्था सात से दस साल की होगी। बेंचों के सामने लिखने के लिए डेस्क थे। लड़कियों को लड़कों से अलग नहीं बैठाया गया था। अध्यापक ने गुणा भाग के कई सवाल लड़कों से पूछे। विद्यार्थियों में कुछ ने बड़ी तेजी से हल किया। काले तख़्ते पर जाकर एक ने भद्दी ग़लती की, सारी छात्र-मंडली हँस पड़ी। यद्यपि इन छात्र-छात्राओं की पोशाक में नए पुराने फ़ैशन की खिचड़ी थी, लेकिन उनके तन्दुरुस्त लाल चेहरे को देखने से ही मालूम होता था, कि वे कैसा जीवन यापन कर रहे हैं। पाठशाला में कुल ८८ छात्र हैं, जिनमें ३५ लड़कियाँ हैं और ५३ लड़के।

चलते वक्त अध्यापक का पाँच वर्ष का लड़का कहीं बाहर से खेल कूद कर लौट कर आ रहा था। एशियाई बाप और यूरोपीय माँ के उस बच्चे का मुँह गुलाब की तरह लाल था। बाप ने मुझ से हाथ मिलाने के लिए कहा। लजाया तो जरूर, लेकिन उसने हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया। सोवियत्-सरकार ने एक साल तक अपने डाकख़ाने की मुहरों तथा दूसरे उपायों से बालकों के मुख चूमने के विरोध में प्रचार किया था; और सचमुच

स्वस्थ बच्चों की तन्दुरुस्ती के लिए अस्वस्थ व्यक्तियों के मुख से निकले लाखों कीटाणु जहर का काम देते हैं। तो भी मैं यह कहूँगा कि उस गुलाब से सुंदर शिशु के चूमने के लिए मेरा दिल ललचा रहा था।

गाँव के सभी मकान एक जगह नहीं हैं। कुछ मकान स्कूल के करीब हैं, और कुछ कितने ही फर्लांग हट कर। रोटी, वस्त्र और पठन-पाठन की समस्या हल हो चुकी है। सोवियत् सरकार को सब से पहले यही हल करना था। क्लब में ईंट और सीमेंट का काम शुरू हुआ है। अब आगे मकानों का नबर आयेगा। बिजली और नल के प्रबन्ध होते समय गाँव का नवनिर्माण जरूर होगा। तब यह छिटफुट मकान एक जगह हो जायेंगे।

जिस वक्त हम गाँव को छोड रहे थे, उसी वक्त तिर्मिज से सैर करने के लिए एक मडली आई हुई थी। वे मुझे इदुम् (हिन्दुस्तानी) जान कर कुछ पूछना चाहते थे, लेकिन देर होने के खयाल से उन्होंने आग्रह नहीं किया। मैं तवारिश मुहम्मदोफ् के साथ स्टेशन की ओर चला। पहले आये रास्ते के बजाय मैंने उस रास्ते से जाने की इच्छा प्रकट की, जहाँ से मैं सुल्ता-नुस्सादात की पुरानी ज़ियारत देख सकूँ।

सूने देवालय

यह जियारत कोल्खोज्-नमूना की सीमा के भीतर और रास्ते से कुछ हट कर है। १५–१६ साल पहले तक ज़ियारत में सैकडों मुल्ला और मुजावर रहते थे। हजारों यात्रियों के ठहरने के लिए घर और कोठरियाँ थीं। उसके बाद मजहब की तरफ से लोगों की उदासीनता हुई, पूजा और चढावे के अभाव से मुल्ले और मुजावर हटने लगे। कच्ची ईंटो और मिट्टी की दीवारों के मकान एक एक कर के गिरने लगे। कड़ी और किवाड की लकड़ियों को आस पास के लोग उठा ले गये। अब उन मकानों में से सभी धराशायी हो गये हैं। सिर्फ प्रधान ज़ियारत, जो कि पक्की ईंट की बनी है, अब भी खडी है। लेकिन कई साल बेमरम्मत रहने के कारण उसकी भी

दीवारें जहाँ तहाँ भसकने लगी हैं। गुम्बद की नीली ईंटों में से भी कितनी ही ईंटें ख़िसक कर नीचे गिर पड़ी हैं। वह समय नज़दीक था, जब कि गुम्बद भी धरती पर आ पड़ता; लेकिन यह कई सौ साल की पुरानी इमारत है। उजबेकिस्तान-प्रजातंत्र के पुरातत्व-विभाग का ख़याल इसकी ऐतिहासिकता की ओर गया, और अब सरकार की ओर से उसकी मरम्मत हो रही है। मुहम्मदोफ़् के साथ मैं ज़ियारत के अन्दर दाख़िल हुआ। आँगन और भिन्न भिन्न हुजरों के नीचे सैंकड़ों क़ब्रें हैं। उनके ऊपर का चूना उड़ गया है और बहुतों की ईंटें भी अस्त व्यस्त हो रही हैं। मैंने बहुतेरा जानना चाहा कि हज़रत सुल्तानुस्सादात का मक़बरा कौन है, लेकिन मुहम्मदोफ़् साहब जिस किसी भी ऊँचे मक़बरे की ओर अँगुली उठाने को तैयार थे, वहाँ कोई दूसरा आमदमी नहीं था। मैंने पूछा—"इतने मुल्ले मुजावर जो पहले यहाँ रहते थे, क्या करते थे?"

जवाब मिला—"बेवकूफ़ श्रद्धालुओं की श्रद्धा से फ़ायदा उठाते थे। उनसे पैसे ऐंठते थे और बदले में किसी को लड़का नहीं, उसको लड़के के लिए तावीज़ देते थे; किसी का बच्चा बीमार है उसके बच्चे के लिये तावीज़ देते थे; किसी का गधा बीमार है, तो उसके गधे के सिर पर बाँधने के लिए तावीज़ तैयार कर दी जाती थी।" गधे की तावीज की बात सुनकर मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा था। लेकिन मैंने मुहम्मदोफ़् से जिरह करना नहीं चाहा। मेरा भ्रम आप ही जाता रहा, जब मैंने मज़ारशरीफ़् में ख़ुद अपनी आँखों गधे पर तावीज़ बँधी देखी। गधे पर ही नहीं बल्कि जिस मोटर-लारी पर मैं मज़ारशरीफ़् से काबुल पहुँचा; उसके भी सामने शीशे के ऊपर वाली लकड़ी पर चमड़े में बँधी दो तावीजें लटक रही थीं। शायद हमारे ड्राइवर का पूरा विश्वास था कि हिन्दूकुश की ताज़ी बर्फ़ से बच कर जो हम निकल पाये, वह उन्हीं तावीज़ों की बरक्कत थी।

मैंने पूछा—"मुल्ले कहाँ गये?"

मुहम्मदोफ़् ने कहा—"हमने उन्हें यहाँ से रवाना कर दिया।"

"कहाँ" ?

"दोजख में, और कहाँ ! उनका बिहिस्त तो यहीं था, जहाँ हमारी मिहनत पर मौज उडा रहे थे। उनके लिए तो बिहिश्त यहीं था, और हमारे लिए मरने के बाद बतलाते थे।"

मैंने पूछा—"क्या आप लोगों को मजहब की जरूरत नहीं पडती ?"

"हमे मजहब की क्या जरूरत ? हम काम करना जानते हैं, हम पढ़ना जानते हैं, हम सुख से रहना जानते हैं, हमें और क्या चाहिए ? मुल्ला कहता था, सुअर हराम है। इतना स्वादिष्ट, इतना ताकतवर खाना हमारे लिए वह हराम कह रहा था। वह कहता था, नाचना हराम है। हम जानते हैं कि युवक और युवतियों में नाचने से कितनी फुर्ती आती है, और नाच मनोरंजन का कितना सुदर साधन है।"

मैंने पूछा—"आखिर कोल्खोज्-नमूना के ये सभी २०० घर कुछ साल पहले मुसलमान थे। क्या अब भी इन में कुछ लोग नमाज पढते या रोजा रखते हैं ?"

"हाँ चार साल पहले कुछ रोजादार थे। लेकिन अब एक भी नहीं। युवक और युवतियों की हँसी के मारे, चाहने पर भी बूढे बूढियों की हिम्मत नहीं पडती।"

३१—सोवियत्-सीमा पर

आज (२४ जनवरी) तिर्मिज़ में आये चौथा दिन था। पासपोर्ट आफ़िस खुला था। महिला ने कह रखा था, कि आज लिख पढ़कर पासपोर्ट लौटा दिया जायगा और हम १०–११ बजे तक शहर छोड़ सकेंगे। आफ़िस जाने पर मालूम हुआ कि हमारे निर्यात-वीज़ा में तिर्मिज़ लिखा है; लेकिन कहाँ जायेंगे, उस खाने में अफ़गानिस्तान लिखना भूल गये हैं। अतएव आगे जाने की इज़ाजत नहीं मिल सकती; जब तक कि तार द्वारा लेनिनग्राद से पूछ न लिया जाय। हमने सोचा, यह वीज़ा की गड़बड़ी तेहरान से ही शुरू हुई है। वहाँ सवा महीना ठहरना पड़ा। लेनिनग्राद में इसी के लिए १२ दिन रुक जाना पड़ा; और यहाँ भी अब कुछ होने जा रहा है। अफ़ग़ान्स्की सराय कुछ टूटी फूटी सी थी। पाखाना भी गन्दा था और रहने की कोठरी भी चूहे-खटमलों की लीलाभूमि। अब मालूम नहीं कितने दिन और ठहरने पड़ें, इसलिए हम अपना सब सामान उठाकर होटल में चले आये। पासपोर्ट-आफ़िस की महिला ने होटल की अधिकारिणी को हमारे लिए संदेश भेज दिया था। आफ़िस और होटल आमने-सामने थे। इसलिए यहाँ पूछताछ करने में भी सुविधा थी। जिस वक्त हम अपना सामान लेने अफ़गान्सकी सराय जा रहे थे, देखा—ताजिक और रूसी दो तरुणों की जोड़ी एक के कन्धे पर एक हाथ रखे ज़ोर से गाना गाती आ रही है। आस पास के पचीसों नर-नारी टकटकी लगाये उनकी ओर देख रहे थे। मालूम हुआ बाज़ार के शराब खाने में दोनों ने खूब वदका (उदक=शराब) पी है; और जब रंग आया, तब गलबहियाँ लगाये, तान छोड़ते बाहर निकल पड़े हैं। उनके पैर ही आगे पीछे नहीं पड़ रहे थ, बल्कि तान भी एक की पूरब जा रही थी, तो दूसरे की पश्चिम।

एक की आवाज़ धीमी थी तो दूसरे की कान फाड़ देनेवाली। लोगों के लिए यह बिना पैसे-कौड़ी का तमाशा था।

हाट का बाड़ा बहुत लम्बा-चौड़ा है। इसमें तीन-चार सरतराशख़ाने हैं। मुझे भी सर तरशवाना था इसलिए एक ताजिक सरतराश की कोठरी में गया। मशीन द्वारा उससे सारे बाल छोटे छोटे करवाये। और इसके लिए ३ रूबल (१।-)) सरतराशी देनी पड़ी। यह सरतराशख़ाना पंचायती नहीं है। इसकी आमदनी उस हज्जाम को होती है। सोवियत्-प्रजातंत्र में अब भी ऐसे कुछ काम हैं, जिनको कोई व्यक्ति स्वतंत्र कर सकता है। बूट पर पालिश करना भी ऐसे ही पेशों में है। हाँ, हर बूट पर पालिश करनेवाले, या हजामत बनानेवाले को सरकार से लैसेंस लेना पड़ेगा; जिसके लिए उसे विश्वास दिलाना पड़ेगा कि वह किसी दूसरे को नौकर रख कर उसकी मेहनत को अपने फ़ायदे का ज़रिया नहीं बनायेगा।

बाड़े के एक तरफ़ सवेरे ७–८ बजे से ही आलू, मूली, गोभी, चुकन्दर, अंडा, आदि को लेकर आस-पास के कोलख़ोज़ वाले स्त्री-पुरुष आते हैं; और उन्हें बेचकर पैसे से काम की चीज़ें ख़रीद कर लौट जाते हैं। सवेरे से दो-तीन बजे तक वह जगह एक हिन्दुस्तानी हाट सी मालूम होती है। रोटी, मक्खन, मास, मिठाई आदि की सभी दूकानें सरकारी या पंचायती हैं; और वह मकानों के भीतर लगती हैं। एक जगह सवेरे से दोपहर तक पुरानी चीज़ें भी लोग लाकर बेचते हैं।

गस्तिनित्सा (होटल) के हमारे कमरे में दो सीटें थीं। एक पर ताजिकिस्तान में काम करनेवाले एक नौजवान रूसी इंजीनियर ठहरे थे; और दूसरी चारपाई हमें मिली। कोठरी ख़ूब साफ़ थी। नीचे कालीन का फ़र्श था। लोहे की चारपाई पर साफ़-सुथरा ओढ़ना-बिछौना पड़ा हुआ था। एक मेज़ और कुछ कुर्सियाँ भी थीं। कमरा गर्म करने के लिए दो कमरों के बीच में एक-एक लोहे की बुख़ारी (मुँह-बंद अँगीठी) थी; जिसमें लकड़ी बाहर से डाली जाती है। मुँह हाथ धोने का भी अच्छा

वन्दोवस्त था। होटल में २८–३० के करीब कमरे होंगे। यद्यपि कमरे एक ही आदमी के लायक़ हैं, लेकिन सारे तिर्मिज में एक ही होटल है, और मुसाफ़िर अधिक आते रहते हैं, इसीलिए हर कमरे में दो दो आदमियों का इंतज़ाम किया गया है। दो तीन चारपाइयाँ गलियारे में भी पड़ी थीं। पाख़ाना उतना साफ़ नहीं है, और जवतक पाख़ाना वहाने वाले नलों का इंतज़ाम नहीं होता, तवतक अधिक कुछ किया भी नहीं जा सकता। होटल में रहने का किराया प्रतिदिन ५ रूवल (२≡)) था। खाने के लिए तिर्मिज़ में कोई अच्छा रेस्तोराँ (भोजन शाला) नहीं है। तिर्मिज़ का पार्क-कुल्तर (सांस्कृतिक-उद्यान) वहुत लंवा-चौड़ा है। लेकिन आजकल जाड़े के कारण (अथवा कोई मरम्मत का काम हो रहा था), फाटक वरावर वन्द रहता था। दौड़, कसरत और फ़ुटवाल आदि खेलों के लिए एक अलग लंवी चौड़ी व्यायामशाला है। उससे थोड़ी दूर पर एक सिनेमा-घर है। 'अक्तूवर में लेनिन' नामक फ़िल्म दिखाया जाता था। देखनेवालों की भीड़ यहाँ भी वहुत थी। इस फ़िल्म को लेनिन्ग्राद् में देख चुका था, इसलिए मुझे देखने की इच्छा भी न थी। ऋेची या वच्चाख़ाना देखने निकला। पता लगा, वह फ़ैक्टरी के पास है। यह एक लंवा-चौड़ा सफ़ेद मकान है। छत टीन की थी। वहाँ दो तीन रूसी औरतें थीं। देखने की इच्छा प्रकट करने पर मुझे भीतर जाने की इजाज़त मिल गई। चार पाँच कमरे थे। जिनमें कुछ में छोटी छोटी कई चारपाइयाँ पड़ी थीं। सफ़ेद चादर और साफ़ तकिया विछौना मौजूद था। लेकिन जिस वक़्त मैं गया, उस वक़्त कोई वच्चा नहीं था। लौटते वक़्त मैंने क्लवघर का साइन-वोर्ड देखा। भीतर यहाँ भी कई कमरे थे। एक वड़ा हाल था, जिसमें २०० के क़रीव कुर्सियाँ पड़ी हुई थीं। दो युवक और एक युवती कुछ लिख रहे थे। मालूम हुआ, आज 'पुगाचोफ़' फ़िल्म दिखाया जानेवाला है, उसी के लिए विज्ञापन लिखे जा रहे हैं।

***   ***

२५ की शाम को मालूम हुआ कि तार का जवाब आ गया। उसी दिन लिखकर हमारा पासपोर्ट लौटा दिया गया। अब अगले दिन जाने के लिए हम निश्चिन्त हो चुके थे। तिर्मिज में मैंने सरकारी बैंक से दो पौंड का चेक भुनाया था। हमारे पास १५–२० रूबल ही रह गये थे। २२ रूबल (६॥=) तो होटल से वक्षु-गंगा के तट तक के ही लग जाते। फोन से पूछने पर मालूम हुआ कि १४ रूबल मोटर-नौका के लगेंगे। इस प्रकार २० रूबल की हमें और जरूरत थी। हमारे पास २ पौंड से कम का चेक न था। उसे भुनाने पर ३६ रूबल फजूल जाते। सोवियत्-सरकार अपने सिक्के और नोटों को देश से बाहर नहीं जाने देती। रूबल बचने का मतलब था, वह भी नाव के भाड़े में शामिल कर लिया जाता। इसके अलावा एक दिक्कत और थी। बैंक १० बजे खुलता था, और हम ६ बजे ही निकल जाना चाहते थे; जिसमें कि कस्टम-आफिसर की देखभाल में इतनी देर न हो जाय कि उस दिन की नाव ही हमें न मिल सके। हमारी घड़ी १३–१४ रुपये की थी। हम जानते थे कि उसका दाम यहाँ ६०–१०० रूबल से कम नहीं है; तो भी हम चाहते थे सिर्फ २० रूबल। हमने अपने साथी इंजीनियर से इसके बारे में कहा। उनके पास घड़ी न थी और दो तीन दिन साथ रहते रहते हम लोगों का परिचय भी अधिक हो गया था। जब मैंने उन्हें सिर्फ २० रूबल देने को कहा, तो वह आश्चर्य से कह रहे थे—'यह बहुत कम है।' मैंने कहा—'ज्यादा के खर्च के लिए हमारे पास समय नहीं है।' तब भी वह समझ रहे थे, शायद भाषा अच्छी तरह न समझने के कारण मैं गलती कर रहा हूँ। उन्होंने १०–१० रूबल के २ नोट देते हुए फिर कहा—"क्या इतना ही?"

मैंने कहा—'हाँ!'

ऐसे भी हिसाब करने से मुझे मालूम था कि चेक भुनाने पर २ पौंड या २६॥) रुपये से हाथ धोना पड़ेगा और यहाँ १३-१४ की घड़ी जा रही है। अफ़ग़ानिस्तान में रेल-ओल है नहीं, कि घड़ी की जरूरत हो और हिन्दुस्तान

में फिर दूसरी घड़ी ले ली जायगी।

९ बजे फिटन पर सामान रखकर हम घाट की ओर चल पड़े। वक्षु-तट होटल से ४ मील से क्या कम होगा। कुछ दूर शहर में चले। बाईं तरफ़ बहुत दूर तक खाली जगह थी। नई बस्ती और हवाई जहाज़ के अड्डे के ऊँचे खंभे और ऊँचे मकान दिखलाई पड़ रहे थे। शहर ख़तम होने पर एक छोटा सा कोल्खोज् गाँव और जुते हुए खेत मिले। फिर मकान और रेल की लाइन। सिपाही ने फिटन को रोका और पास माँगा। पासपोर्ट देने पर कहा—'यह नहीं। पुलीस से लाया पास दिखलाओ।' मैंने कहा—'मेरे पास पुलीस का पास नहीं है। यही पासपोर्ट है। जिसपर अफ़ग़ानिस्तान जाने की इज़ाजत लिखी हुई है।' सिपाही ने कहा—'पुलीस का पास नहीं है, तो नहीं जा सकते।' एक बार तो मुझे मालूम होने लगा कि अब शायद फिर पीछे लौटना होगा। लेकिन मैं हताश नहीं हुआ। चेहरे पर ज़रा भी विकलता का चिह्न न प्रकट करके मैंने फिर समझाना शुरू किया—'पुलीस का पास यहाँ के बाशिन्दों के लिए ज़रूरी है। मैं यहाँ का बाशिन्दा नहीं हूँ। मेरे लिए यह पासपोर्ट है और उस पर तिर्मिज से अफ़ग़ानिस्तान जाना लिखा हुआ है।' सिपाही भी कुछ निश्चय करने में असमर्थ हो बोला—'अच्छा, तो मैं कन्त्रोलर के आफ़िस में चल रहा हूँ, वहाँ चलिए।' हमारी जान में जान आई। और गाड़ीवाला हमें कन्त्रोलर के आफ़िस में ले गया, जो कि रेल लाइन पारकर कुछ और आगे था। कन्त्रोलर साहब एक रूसी सैनिक आफ़िसर मालूम होते थे। पासपोर्ट लेकर उन्होंने देर तक कितने ही रजिस्टर उलटे। अकारादि क्रम से लिखे हुए नामों को मिलाया और मुसाफ़िरों के सैकड़ों हस्ताक्षर, जो उनकी एक बही में चिपके हुए थे, को भी देखा भाला। शायद वहाँ मेरा नाम न था। फिर उन्होंने टेलीफ़ोन द्वारा तिर्मिज के आफ़िस से पूछा। आधा घंटा बाद मुहर करके हमारा पासपोर्ट लौटा दिया, और नदी के किनारे जाने की आज्ञा मिली। घाट आध मील और आगे था। थोड़ी दूर तक रास्ता बहुत ख़राब था।

५-५, ७-७ टन की लारियाँ भला इस कच्चे रास्ते पर कैसे चलती है; यही आश्चर्य होता था। एक जगह देखा कि एक कटर-पिलर ट्रैक्टर ऊभड़-खाभड़ रास्ते को बराबर कर रहा है। घाट पर अफगानिस्तान से आई हजारों रुई की गाँठें पड़ी हुई थी। उनके फटे बोरो को १०-१२ स्त्रियाँ जिनमें अधिकाश रूसी थी—सी रही थीं। रुई, चमड़ा, अनाज, सूखे मेवे और ऊन अफगानिस्तान से आते है, और बदले मे सोवियत्-प्रजातत्र चीनी, लोहा, कपड़ा, पेट्रोल और कितनी ही प्रकार की मशीने भेजता है।

मोटर-बोट के खुलने मे अभी ३-४ घटे की देर थी। २ घटे बाद सामान की जाँच शुरु हुई। हमारे दो बक्सो में एक में—जिसका वज़न १ मन से अधिक था—सिर्फ किताबे थीं, और दूसरे में आधा कपडा और आधी किताबे। कस्टम् अफसर ने किताबे देखनी शुरू की। उनमे कुछ चिट्ठियाँ, फोटो—जिनमे कुछ रूस के संबध की थी और कुछ ईरान की—देखते ही वह निश्चय करने में असमर्थ हो गया कि किसको लेले और किसको जाने दे। आखिर फिर उसी कन्ट्रोलर को खबर दी गई और वह घाट पर आया। उसने प्राय डेढ घटे एक एक चीज़ को, कागज़ के छोटे छोटे टुकडे तक को बारीकी से देखा। जो किताबें संस्कृत में थीं, उनके लिए तो कुछ नहीं कहा। फिर कुछ सोवियत् के अगरेज़ी अखबारो की कटिंग को देख कर कहा—'इन्हे हम जाने नहीं देंगे।' मैने कहा—'मै लेखक हूँ और अपनी सोवियत्-यात्रा पर एक पुस्तक लिखूँगा उसी के लिए मै यह कटिंग जमा किये हूँ। आप जानते नहीं कि ये सब अखबार सोवियत् से बाहर हजारो की तादाद मे जाते है।' खैर उसको लौटाया गया। फिर मास्को के नक्शे को देख कर कहा—'इसे नहीं जाने देंगे।' मैने कहा—'आप की इन्तुरिस्त (सोवियत्-यात्रा कम्पनी) इसे छाप कर बाहर के देशो में बाँटती फिर रही है। यह ऐसी कोई गुप्त चीज नहीं।' फिर उसे भी लौटाया गया। तब मास्को और लेनिन्ग्राद् की इमारतो के चित्रों पर अड़ गये। वहाँ भी समझा-बुझाकर सफलता हुई। फिर कुछ में सोवियत् के राजनीतिक नेताओ के चित्रो का मामला आया। मैने कहा—

'ये चित्र दुनिया में कहाँ नहीं मिलते? आप इन चित्रों को रोक कर मेरी पुस्तक की सुंदरता को कम भर कर सकेंगे।' वह भी लौटाये गये। फिर गृह-सचिव येजोफ़ के चित्र को उन्होंने दृढ़ता के साथ रोक लिया। मैंने कहा—'यह फ़ोटो नहीं है। 'मास्को न्यूज़' अंग्रेज़ी साप्ताहिक में छपा है; और यह साप्ताहिक दुनिया के कोने कोने में जाता है।' हार मान कर उन्होंने उसे भी लौटाया। अन्त में इन्तुरिस्त के टिकट की रसीदें, होटलों और दुकानों के रूसी में लिखे कुछ बिल, आदि रह गये थे। जिनके लिए उनका आग्रह देखकर मैं चुप रह गया। आख़िर भलेमानुस को हर जगह अपनी बात के लिए ज़िद्द भी तो करनी नहीं चाहिए। हाँ, एक और मज़े की बात हुई थी। मैं लेनिन्ग्राद् में संस्कृत की एक पुस्तक की प्रेस-कापी लिख रहा था। इसके लिए रूसी कापी (Exercise-book) इस्तेमाल की गई थी। महाकवि पुश्किन् की शताब्दी के उपलक्ष्य में उनके टाइटिल-पृष्ठों पर पुश्किन् की कविता या चित्र अथवा उसकी कविताओं के पात्रों के चित्र अंकित थे। दो कापियों के टाइटिल पर पुश्किन् की किसी कविता के कुछ पात्र—जो देखने में भारतीय या ईरानी राजा से मालूम होते थे—ज़ंजीर और बेड़ी में बंधे चित्रित किये गये थे। कन्त्रोलर ने देखते के साथ ही इन दोनों कापियों के आवरण-पत्रों को फाड़ कर रख लिया। उन्होंने शायद समझा होगा, इन चित्रों को दिखाकर मैं हिन्दुस्तान में प्रचार करता फिरूँगा कि देखो—'बोल्शेविकों की काली करतूतें। वह इस प्रकार लोगों की साँसत करते हैं।'

जाँच ख़तम होने पर अफ़सर ने हँसते हुए हाथ मिलाया और नाव के छूटते वक़्त भी टोपी उतार कर विदाई दी।

३ बजे बाद मोटर रवाना हुई। वक्षु-गंगा—हाँ, दर असल कभी यह गंगा की ही तरह हिन्दुओं के लिए पवित्र नदी थी—काफ़ी चौड़ी नदी है। आजकल जाड़े के कारण ऊपरी पामीर के पहाड़ों की बर्फ़ कम पिघलती है, इसलिए धार उतनी गहरी और चौड़ी नहीं है, जितनी मई जून में होगी।

तो भी कम से कम चौड़ाई उतनी जरूर है, जितनी बनारस में गंगा की जाड़ों में हो जाती है। यहाँ वक्षु पूरब-पच्छिम-वाहिनी है। दूर पहाड़ों की काली श्रेणी दिखलाई पड़ती है, जिनके पिछले भाग में श्वेत हिम-मंडित वही पर्वतमाला है, जो काश्मीर, गढ़वाल, नेपाल होती आसाम तक पहुँच गई है। नदी के परले पार अफगानिस्तान की भूमि है। वहाँ भी पहाड़ नदी से बहुत दूर हट कर है। वक्षु का पानी मटमैला, पीले रंग का है। धार में २–३ टापू आ गये हैं, इसीलिए मोटर-नौका को कुछ नीचे जाकर फिर अगली धार में ऊपर आना पड़ता है। जहाँ तहाँ अपनी जैसी ११–१२ और मोटर-नौकाएँ देखीं। हर एक नौका में ५००-६०० मन माल लादा जा सकता है। अपनी नाव में मैं अकेला मुसाफिर था। बाकी १२ हम्माल थे; जिन्होंने चीनी की टिकिया के बक्सों को नाव पर लादा था, और उन्हींको उतारने के लिए वह नदीपार जा रहे थे। इन हम्मालों में सिर्फ दो एशियाई थे, बाकी १० रूसी थे। अफगानिस्तान की सीमा में पहुँचने पर इसके लिए पठान लोग बड़ी टीका टिप्पणी कर रहे थे। एक साहब—जो व्यापार के सिलसिले में कई बार कलकत्ता बंबई देख गये थे—कह रहे थे—'अरे यह सब रज़ील है। साहब थोड़े ही है। हिन्दुस्तान में भला कोई साहब दो मन पक्के का बक्स पीठ पर लाद कर इस तरह कुली का काम करेगा! और इस तरह नाव के पटरे पर चाय-रोटी गोश्त हाथ में दबाये, काले आदमी के साथ मज़ाक करते और धौंपी लगाते, खायेगा?' उनको क्या मालूम कि रूस ने किस आदर्श के पीछे पड़कर इस समानता को स्थापित किया है। वक्षु पार होते समय हमें मालूम होता था कि हम हिन्दुस्तान की सीमा में प्रविष्ट हो रहे हैं। इतिहास में पढ़ा था, कभी वक्षु गङ्गा हिंदुस्थान की राजनीतिक सीमा में थी, और सांस्कृतिक सीमा के भीतर तो बहुत सहस्राब्दियों तक रही। और वह कुछ अंश में अब भी है। एक घंटे में हमारी नाव दूसरे पार पहुँच गई।
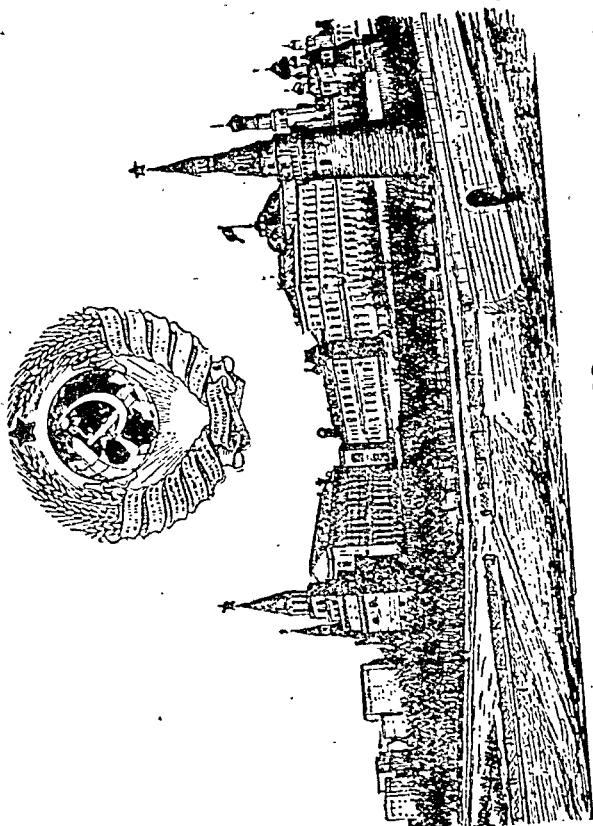
मास्को—क्रेम्लिन्

द्वितीय खंड

(अफ़ग़ानिस्तान में)

१—मज़ार-शरीफ़ को

हमारी मोटर-नौका वक्षु के बायें किनारे की तरफ़ आ रही थी। इस तरफ दूर तक सरकंडे का जंगल उगा हुआ था। दो तीन अफ़ग़ान सिपाही बन्दूक लिए किनारे पर टहल रहे थे। उनकी वर्दी खाकी थी और सिर पर छज्जेदार टोपी। सर्दी का कनटक्कन टोपी के ऊपर बँधा हुआ था। उनके पटे रखे हुए बाल बतला रहे थे, कि अभी ये बीसवीं शताब्दी में नहीं पहुँचे हैं। वैसे दाढ़ी किसी सिपाही को न थी। नाव के किनारे पहुँचने पर एक बन्दूक-धारी सिपाही पटरा रखने की जगह पर खड़ा हो गया। नाव के बारहों हम्मालों ने पेटी उठा उठाकर किनारे पर रखना शुरू किया। हमारे लिए आज्ञा हुई—अफसर का हुक्म है कि अभी आप नाव ही पर रहें। हमारा पासपोर्ट अफसर के पास पहुँचा दिया गया था। एक घंटे तक नाव पर बैठे बैठे हम इन्तिज़ार करते रहे, और अफ़सर साहब का कोई पता न था। पल्टन के जवानों और अफ़सर के रहने के लिए किनारे पर सरकंडों की कुछ झोपड़ियाँ डाली हुई थीं। सरकंडा काट कर खाली की हुई लम्बी चौड़ी जगह में पचासों ऊँट बैठे थे। यह अफ़ग़ानिस्तान का माल लेकर किनारे पर आये थे; और तिर्मिज़ से आये माल की प्रतीक्षा कर रहे थे। अफ़सर साहब अपनी झोपड़ी से बाहर निकल आये, फिर सिपाही ने हमें बुलाया। एक मेज़ रख दी गई और तीन चार कुर्सियाँ पड़ गईं। घंटे भर नाव पर रहने के लिए मजबूर किया, इसके लिए चाहे हमें बुरा भले ही लगा हो, लेकिन उनका आगे का बर्ताव बहुत अच्छा था। सलामी देकर उन्होंने हाथ मिलाया और कुर्सी पर बैठने के लिए कहा। ख़ैर-ब-आफ़ियत पूछी गई। इतने में हमारा सामान भी आ गया। बक्सों को हमने खोल दिया और मामूली तौर पर उन्होंने

हमारे दो चार सामान देखे। उनको विश्वास हो गया कि हमारे पास महसूल की कोई चीज नहीं है। तकलीफ़ देने के लिए क्षमा माँगते हुए बक्सों को बन्द कर देने के लिए कहा। इसी बीच हाकिम के हुक्म के मुताबिक नौकर मीठी चाय ले आया। हम चाय पीते हुए आगे के प्रोग्राम पर बात करने लगे। अफ़सर ने पूछा—क्या आप इसी वक्त जाना चाहते हैं?

यद्यपि दिन आध-पौन घंटा ही रह गया था, लेकिन मैं वहाँ बैठने की जगह आगे चलना ही पसन्द करता था। मैंने कहा—बड़ी मिहरबानी होगी यदि इसी वक्त आप जाने का प्रबन्ध कर दें।

वहाँ आये हुए आदमियों में से एक के पास दो घोड़े थे। पचास अफ़ग़ानी (साढ़े १२ रुपये) में यहाँ से अस्करख़ाना तक के लिए दो घोड़े किराये पर किये गये। अस्करख़ाना २४–२५ मील से ज्यादा नहीं है; और उतनी दूर के लिए यह किराया कुछ जरूर ज्यादा था। लेकिन जितनी आसानी से अच्छा इन्तज़ाम हो गया, मुझे वहाँ शिकायत की गुंजायश न थी। मेरा सामान एक घोड़े पर लाद दिया गया, दूसरा घोड़ा सवारी के लिए था। अफ़सर ने एक सिपाही को हमारे साथ यह कह कर कर दिया, कि अगली फ़ौजी चौकी से दो सशस्त्र सवार हमारे साथ कर दिये जायँ। इसी वक्त उन्होंने मज़ारशरीफ़ टेलीफ़ोन कर दिया था कि एक ताँगा अस्करख़ाना भेज दिया जाय। रास्ते की फ़ौजी चौकियों में भी आने के साथ दो सवार साथ कर देने की आज्ञा दे दी गई थी।

'ख़ुदा हाफ़िज़' और हाथ मिलाने के बाद मैं अपने घोड़े पर सवार हुआ। रास्ता सरकंडे के घने जंगल में से था। आने जानेवाले ऊँटों और घोड़ों ने बीच से रास्ता बना लिया था। मज़ारशरीफ़ से वक्षु के किनारे तक मोटर भी आ सकती है, लेकिन अस्करख़ाने से इधर सड़क नहीं है, सिर्फ़ लीक पर आना पड़ता है। डेढ़ मील पहुँचते पहुँचते सूर्य डूब गया। फ़ौजी चौकी कोई ३ मील पर रही होगी। वहाँ जाते जाते अंधेरा हो गया। चौकी का कोई स्थायी मकान नहीं है। वही सरकंडे की झोपड़ी। ७–८ सिपाही और एक

हवलदार रहता है। साथ आनेवाले सिपाही ने अफसर का सन्देश दिया। हवलदार ने बड़े आग्रह से झोपड़ी के अन्दर बुलाकर चाय-रोटी का बन्दोबस्त किया। मेरे अनिच्छा प्रकट करने पर कहा—आगे रोटी नहीं मिलेगी। खैर बिना दूध के मीठी चाय के कई प्याले पिये। तब तक मेरे साथ चलनेवाले दोनों सवार भी तैयार हो गये। चलते वक्त खूब अधेरा हो गया था। आज कृष्ण पक्ष की १०मी होने से आकाश में चन्द्रमा की भी आशा न थी। इन्तजाम हुआ था कि रात ही रात मजारशरीफ् चले चलें। सारा रास्ता जनशून्य बयाबां का है। पचास मील की दूरी में सिर्फ दो तीन जगह ही आदमियों के निवास हैं। इसलिए चोर-डाकू का डर बहुत है। यही बात थी, जिसके लिए हमें दो सवार मिले थे। दोनों सवार हाथ में बन्दूक लिए हमारे साथ चल रहे थे। कई मील तक हमारा रास्ता वक्षु (आमू दरिया) के कछार में नीचे की ओर था। नदीपार तिमिज में मीलों तक चली गई खंभों की पाँती पर विद्युत्-प्रदीप चमक रहे थे। हवाई जहाज के अड्डे के दीप-स्तंभ और भी प्रदीप्त हो रहे थे। दिल में खयाल आता था, वह है उस पार स्वर्ग की भूमि जहाँ प्रदीप और प्रकाश ही चारों तरफ दिखाई देते हैं, जहाँ से दरिद्रता और अज्ञानता का अन्धकार हमेशा के लिए मिट चुका है, जहाँ के लोगों को कल की चिन्ता नहीं जलाती। वक्षु के इस पार खड़े हुए इन अफगानों के लिए भी—जिन्हें कभी उस पार जाने का मौका नहीं मिला—रात के अंधेरे में जलते मीलों लंबे चले गये ये प्रदीप-स्तंभ कम कुतूहल-जनक नहीं है।

अब हमारा रास्ता कछार से बाईं ओर हटने लगा। जमीन ऊँची-नीची थी। लेकिन पहाड़ नहीं थे। ऊँची-नीची जमीन की खोहों और नालों में अकसर रोमाञ्च हो जाता, यदि हमारे साथ वे दोनों बन्दूक धारी सवार न होते। पठानों का मुल्क यों ही हिन्दुस्तान में बदनाम है, और हम तो यहाँ कृष्णपक्ष की अंधियारी में इस बयाबां में चल रहे थे। वस्तुतः क्या अफगानिस्तान खतरे से भरा मुल्क है ? नहीं। यह गलत है। अगर ऐसा

होता, तो अफ़ग़ानिस्तान के पहाड़ों और सुनसान घाटियों में तमाम रात मोटरें कैसे चलती रहतीं ? लूट पाट की बात भारत की सरहद पर की स्वतंत्र जातियों के लिए ही ठीक है।

स्थान सुनसान था। कहीं गीदड़ या किसी दूसरे जानवर की भी आवाज़ नहीं सुनाई देती थी। जब तब घोड़ों के मुँह फड़फड़ाने की आवाज़ जरूर आती। हमारे साथी कभी कभी कुछ बात कर लेते थे। यद्यपि दोनों सवार पठान थे और उनकी मातृ-भाषा थी पश्तो (पख़्तो) ; लेकिन वह बात करते थे फ़ारसी में। घोड़ेवाला आदमी उज़बेक था। कभी कभी दूर से ऊँट के काफ़िलों की घंटी सुनाई देती थी; और फिर पचीसों ऊँट ऊन, चमड़ा, कपास लादे हमारी बग़ल से गुज़रते थे। चले तो होंगे तीन चार घंटे ही लेकिन जब अस्करख़ाना पहुँचे, तो मालूम होता था, जैसे युग बीत गये। अस्करख़ाना अफ़ग़ानिस्तान में फ़ौजी छावनी को कहते हैं। एक ऊँची मिट्टी की दीवार का छोटा सा क़िला है। इसी में कुछ अफ़ग़ान फ़ौज रहती है। हमारे साथ के सवारों ने आवाज़ देकर दरवाज़ा खुलवाया। टेलीफ़ोन से ख़बर पहले ही आ चुकी थी, इसलिए जमादार साहब के बाहर आने में देर न हुई। अभी रात के ठहरने की बातचीत हो रही थी, उसी वक़्त मालूम हुआ, कि हमारे लिए ताँगा पहुँचा हुआ है। झट सामान ताँगे पर रखा गया और जमादार साहब ने दो नये सवार हमारे साथ कर दिये। १० बजने के क़रीब था, जब हम रवाना हुए। अंधेरी रात थी और ताँगे में कोई लालटेन भी न थी। सड़क कोई बाक़ायदा न थी। आस पास जगह जगह ऊँची नीची ज़मीन थी। कई जगह डर लगता था कि घोड़े कहीं बहक न जायँ। एक सवार हमारे आगे आगे घोड़ा दौड़ाए चल रहा था। हमारा ख़याल कभी वक्षु गंगा की ओर जाता था, और सोचते थे, यही चरागाह हैं, जिनकी खोज में हमारे पूर्वज चार साढ़े चार हज़ार वर्ष पूर्व अपने भेड़ों और गायों को लेकर इस पार आये थे। उनके भी वैसे ही काले बालों के तम्बू रहे होंगे, जैसे कि आजकल के कितने ही तुर्कमानों के।

इन्ही की तरह ५-५ सेर की पिटारी जैसी पगड़ी वह आदिम आर्य रमणियाँ अपने पीले बालों के ऊपर बाँधती रही होंगी—यह संभव नहीं मालूम होता। क्योंकि आर्य कपास को जानते ही नहीं थे। बहुत कुछ संभव है, भेड़ की पोस्तीन ही उनकी पोशाक थी। इसी चौरस चरागाह में—जिससे हम आज इस अँधेरी रात में गुजर रहे हैं—वह भी महीनों टिकते और भेड़-बकरियाँ चराते इधर से उधर आते जाते रहे होंगे। उस वक़्त के भेड़ियों और दूसरे हिंसक जंगली जानवरों से त्राण पाने के लिए उनके पास डंडे-पत्थर के सिवा और कोई साधन नहीं था। तलवार का होना भी बहुत कम ही संभव है; और धनुष वाण तो निश्चय ही उन्हें मालूम न था। हाँ, उनका पुष्ट गौर शरीर, दृढ़ मांसल भुजाएँ, लम्बा-चौड़ा कद, पौरुष के पुंज थे। उस वक़्त अभी आर्यों का मुकाबला असुरों से नहीं हुआ था; और तुर्क, उजबेक, हजारा—वर्तमान मंगोल जातियाँ जो इस प्रदेश में बसती हैं—निश्चय ही आर्यों के इस भूमि में आने से दो ढाई हजार वर्ष बाद पहुँचीं। इस प्रकार वाह्लीक की यह भूमि मानुषिक संघर्ष और युद्ध की भूमि न रही होगी। यदि रही भी होगी, तो आर्यों के अपने ही भिन्न भिन्न कबीलों के बीच। प्रकृति और वन्य पशु उस वक़्त भी उनकी गायों भेड़ों और परिवार वालों के दुश्मन रहे होंगे। बल्ख (वाह्लीक) से हिरात तक फैले हुए आर्यों में से ही एक कबीला था जो हिन्दूकुश के दुर्गम तथा सदा बर्फ से आच्छादित दर्रों के दूसरे पार कपिशा, कुभा और स्वात की उपत्यकाओं में आया। इस वक़्त हमारे लिए ये रास्ते—ये दर्रे कठिन नहीं मालूम होते। इनके पार करने के लिए हमें पैदल और घोड़ों पर चलने की जरूरत नहीं, मोटरें बराबर चलती रहती हैं, लेकिन उन सीधे सादे आर्यों के लिए हमेशा हिम से आच्छादित रहनेवाली हिन्दूकुश पर्वत-माला सदियों तक पृथ्वी का अन्त या उदयाचल साबित होती रही होगी। उनके खयाल में हिन्दूकुश से पूर्व-दक्षिण मनुष्यों की बस्ती नहीं थी। बहुत कुछ संभव है, काबुल (कुभा) की उपत्यका तक उस वक़्त मानव-बस्ती ही न रही हो। इसमें भी

सन्देह है कि हिन्दूकुश के दर्रे ने उन्हें कावुल की वादी में आने का रास्ता वतलाया। मुमकिन है, वह हिरात से कन्धार होते हुए कावुल पहुँचे हों। इसी रास्ते हिरात से कावुल वाली मोटरें आती-जाती हैं। हिन्दूकुश से वलख पहुँचा जा सकता है—यह ज्ञान कावुल में वस जाने के हज़ार वर्ष वाद हुआ होगा। जिस रास्ते का पता हमारे पूर्वजों को हजार हज़ार वर्षों के वाद लगा था, और उस पर भी जो काफ़िला पार करने की हिम्मत करता था, वह अच्छी तरह समझ लेता था, कि उनमें से अगर आधे भी पार हो जायँ, तो ग़नीमत है; उसी भयंकर रास्ते को हम चन्द दिनों में और काफ़ी आराम के साथ पार कर लेते हैं। हम अपने पूर्वजों की अज्ञता पर हँसेंगे, लेकिन क्या हमारे ज्ञान-भंडार की प्रथम नींव उन्हीं सीधे-सादे चरवाहों ने नहीं डाली थी? और यह तो निश्चय ही है कि काल के सामने खम ठोंक कर खड़े होने में जितनी वे हिम्मत रखते थे, उतनी हम में नहीं है।

हमारा ताँगा तीन घंटे और चला होगा और दो वजे के करीव वह एक उजाड़ वस्ती के भीतर घुसने लगा। ताँगेवाले ने कहा कि यहाँ की फ़ौजी चौकी पर हमें सवार वदलने हैं। यह चौकी भी मिट्टी के छोटे क़िले जैसी थी। दरवाज़ा खटखटाने पर वह देर से खोला गया। पूछने पर जमादार ने वतलाया कि उन्हें टेलीफ़ोन नहीं मिला और इस प्रकार वह आगे के लिए सवार नहीं दे सकते। सवार के विना अकेले ताँगे पर जाना सोचने की भी वात न थी। आखिर पास की सराय में ठहर जाने की वात पक्की हुई। आध घंटा आवाज़ देते और दरवाज़ा खटखटाते रहे, लेकिन वहाँ से कोई नहीं निकला। आख़िर दो वजे रात का समय भी तो इसके लिए नहीं है। फ़ौज के जमादार साहव वुलाये गये और उन्होंने भी चिल्लाना शुरू किया; तव एक धीमी सी आवाज़ आई कि सरायवान गाँव में अपने घर चला गया है। एक मुसाफिर ने आकर दरवाज़ा खोला और भीतर कच्ची ईंटों की मेहराव की छतवाली एक कोठरी में हमें जगह

मिली। बिस्तर बिछा कर वहीं सो गये। तांगेवाले ने अपने दोनों घोड़ों के लिए घास-चारे का कहीं न कहीं से इंतज़ाम कर लिया।

सवेरे उठते वक्त बाहर सूरज उग आया था। सभी घर कच्ची मिट्टी की छतों के थे; वैसे ही जैसे अराल-समुद्र से यहाँ तक हम देखते आ रहे थे। और जैसे कि हम यहाँ से लखनऊ तक देखेंगे। बहुत से घर गिर पड़ गये थे, जो बतला रहे थे कि गाँव बराबर अवनति की ओर जा रहा है। दो-चार ग्राम रोटी के खाये। एक-दो प्याला बिना दूध के मीठी चाय पी और हम ने शागिर्द गाँव से प्रस्थान किया। अब दिन का वक्त था, इसलिए सवारों की कोई जरूरत न थी। रास्ता अब भी जन-वनस्पति-शून्य बयाबां से था। छोटी छोटी घासें मौजूद थीं जिनसे भेड़, बकरियों के चराने का सुभीता था। जमीन पथरीली या बालुकामयी नहीं है। कुआँ खोदने से पानी भी हर जगह निकल सकता है। अर्थात् ट्यूबवेल की सिंचाई और मनुष्यों का श्रम प्राप्त हो जाय, तो यह सारी ऊजड़ और चटियल जमीन हरे हरे खेतों और स्वादिष्ट मेवों के बड़े बड़े बागों के रूप में परिणत हो सकती है। शागिर्द से मज़ारशरीफ पहुँचने में ढाई घंटे के करीब लगे होंगे। तांगे के घोड़े काफी मजबूत थे। लेकिन हाल में पानी के बरस जाने से सड़क कुछ गीली हो गई थी, और कितनी जगह कीचड़ से बचकर निकलना होता था। सामने नीली पर्वत-श्रेणियाँ देखने में नजदीक मालूम होती थीं, लेकिन जितने ही हम नजदीक पहुँचते जाते थे, उतनी ही वे दूर हटती जाती थीं। मज़ारशरीफ़ की लम्बी-चौड़ी, बस्ती सामने दिखलाई पड़ने लगी। जान पड़ता था, वह पर्वत की जड़ में बसी हुई है। लेकिन ६ बजे जब हम वहाँ पहुँचे, तो पर्वत अब भी बहुत दूर था। बस्ती से बाहर सड़क के किनारे एक दिन की छत का मकान मिला। उसके आसपास दूर तक भूमि सम-तल बनाई गई थी। यह जानने में हमें दिक्कत नहीं हुई कि यह हवाई जहाज के उतरने का अड्डा है। मकान की बरसों से मरम्मत नहीं हुई। दीवारों को वर्षा के पानी से नुकसान हुआ है। मैदान भी बेमरम्मत है। पूछने पर मालूम हुआ कि अमानुल्ला के शासन काल तक ताशकन्द और
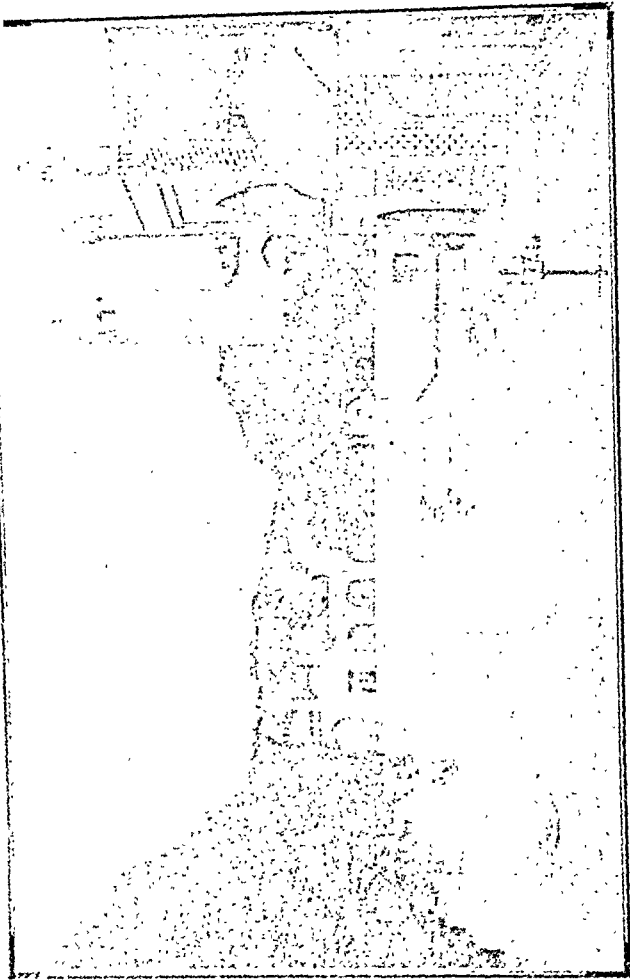
मज़ारशरीफ़ (अफ़गानिस्तान)

काबुल के बीच नियमित हवाई जहाजों का आना जाना होता था और उस वक्त मजारशरीफ़ हवाई स्टेशन था। उसके बाद से हवाई-यातायात बन्द हो गया। आगे एक और मिट्टी का क़िला जैसा मिला उसके बाहर जानवरों का बाजार लगा हुआ था। ऊँट, घोड़े, भेड़ें सभी का सौदा हो रहा था। हमें शहर में घुसने से पहले नये अस्पताल की इमारत मिली। इमारत क़रीब क़रीब बनकर तैयार हो गई थी, लेकिन काम अभी शहर वाले मकान में ही हो रहा था। शहर की सड़कों को सीधा करने और सुधारने की कोशिश की गई है; खास कर बल्दिया (म्युनिसिपल्टिी) के सामने वाली सड़क पर। मजारशरीफ़ जिस मजार या ज़ियारत के लिए मशहूर है, उस के नीले नीले ऊँचे गुम्बद बहुत दूर से ही दिखाई देते हैं। अपनी प्रतिष्ठा और चमत्कार के लिए यह ज़ियारत सारे अफ़गानिस्तान में, और शान्ति से पहले मध्य-एसिया में भी मशहूर थी। मनुष्य की ऐसी कोई कामना नहीं है, जिस की पूर्ति मजारशरीफ़ की ज़ियारत न करती हो। सरकार की ओर से विदेशी मुसाफिरों के रहने के लिए बल्दिया के पास एक अच्छा मेहमान-खाना (होटल) बना हुआ है। होटल की इमारत नई है, और बादशाह नादिरशाह के शासन में बनी है। कमरों की दो क़तारें हैं, जिनके बीच में से गलियारा चला गया है। कोठरियाँ साफ़ और हवादार हैं। जाड़ों में भीतर से गर्म करने के लिए अँगीठी का भी इन्तज़ाम है। बहुत से कमरों के साथ गुसलखाना भी लगा हुआ है। लेकिन पाखाना एक तरफ है और उतना साफ नहीं है।

शहर में दाखिल होने के बाद सबसे पहले हमें गुमरुग् में जाना पड़ा। वहीं होटल का आदमी मिल गया। उसने कहा—दोनों बक्स यहाँ छोड़ चलें, पीछे फुरसत के वक्त आकर दिखला दिया जायगा।

हम लोग मेहमानखाने गये। नाश्ते के बाद बाजार घूमने निकले। एक लम्बी सड़क है जो होटल के सामने से होकर सारे शहर को पार कर गई है। प्रधान बाजार और बड़ी बड़ी दुकानें इसी सड़क पर हैं। पुराना

बाजार भी कम आबाद नहीं है; और वह मिट्टी की मेहरावदार छतों के नीचे बहुत दूर तक बसा हुआ है। देखने में वह ईरान की पुरानी बाज़ारों सा मालूम होता है। ऐसी मेहराबी छतों के नीचे के बाजार सिन्धु की किनारे जामपुर (जिला डेरागाज़ीखां) आदि में भी देखने में आते हैं। यहाँ कोई गली मेवों की थी तो कोई गल्ले की। कोई जूतों की तो कोई कपड़ों की। किसी गली में पुरानी चीजें बिक रही थीं। माल ढोने वाले गधे, खच्चर- और ऊँट तहाँ जहाँ दिखाई देते थे। मेवे और क़ालीन यहाँ सस्ते मिलते हैं। सूखे तूत खाने में कन्द-जैसे जान पड़ते हैं। बादाम, पिश्ता, चिलगोज़ा और किशमिश को तो भुने चनों की तरह खाया जाता है। मांस अधिकतर दुम्बे का होता है। होटल में लौटकर हमने दोपहर का खाना खाया। प्रति-दिन कमरे का किराया ७ अफ़ग़ानी और दो वक़्त के भोजन और एक वक्त की चाय के लिए १० अफ़ग़ानी देना होता है अर्थात् सब मिला कर सवा चार रुपये रोज़। रूस और यूरोप के मुक़ाबिले में यह इन्तज़ाम बहुत सस्ता है, इसके कहने की आवश्यकता नहीं।

जिस वक़्त बाज़ार घूम कर हम होटल के सामने ताँगे से उतर रहे थे, उसी वक़्त अच्छी खासी समतल सड़क पर हमारा पैर ग़लत पड़ गया और दाहिने पैर में मोच आ गई। दर्द इतना होने लगा कि मालम होता था—हड्डी जोड़ पर से उतर गई है। ऊँची नीची भूमि, चलती भूगर्भी रेलों, मोटरों और रेलगाड़ियों से उतरने में कहीं कुछ नहीं हुआ, और यहाँ बिल-कुल समतल भूमि में पैर की यह हालत। जान पड़ता था, अस्पताल जाना पड़ेगा। दर्द बड़े ज़ोर का था। खाना खाने के बाद थोड़ी देर हम लेट रहे। पैर में अब भी दर्द था। लेकिन सोचा, मज़ारशरीफ़ में रह कर करेंगे क्या, बल्ख देखकर चल देना ही अच्छा है।

बल्ख १२-१३ मील पर है और रास्ता ताँगे और मोटर का है; इस लिए सोचा, ताँगे पर बैठे बैठे आज ही बल्ख देख आना चाहिए। ताँगा किराया कर होटल के दोनों नौजवान ख़ानसामों के साथ एक बजे हम बल्ख

के लिए रवाना हुए। सड़क कच्ची है, लेकिन बहुत खराब नहीं है। सड़क के दोनों तरफ खेत है। आमतौर से जनवरी और फरवरी के महीनों में यहाँ वर्फ पड़ जाया करती थी; लेकिन इस साल वर्फ अभी नहीं पड़ी। सर्दी भी कोई ज्यादा नही। कुछ मील चले जाने पर तख्ता-पुल का भारी किला मिला। दीवारें मिट्टी की हैं और यद्यपि कई सालों से पलटन यहाँ नही रहती; लेकिन अब भी छत और दीवारें सुरक्षित खड़ी हैं, जो बतला रही थीं कि बाह्लीक की भूमि में वर्षा कहीं नहीं होती। दूर दूर पर हमें एक दो वस्तियाँ मिलीं। फिर हम प्राचीन बलख नगर के मीलों तक फैले ध्वसावशेष में प्रविष्ट हुए। कहीं पर मिट्टी का ऊँचा स्तूप-सा मिलता था। और कहीं पर ऊँची गढ़ी-सी। बहुत जगह खेत हैं, जिनमें ठीकरे, ईंटों के टुकड़े, तथा कभी कभी पुराने सिक्के भी मिलते हैं। शहर के भीतर से अब भी पानी की एक नहर जाती है; लेकिन अब उससे सिर्फ खेतों की सिंचाई का काम लिया जाता है। सड़क के किनारे हज़रत अस्मा की कब्र है और सड़क से थोड़ा हटकर दाहिनी ओर हज़रत रोज़ादार का रोज़ा है। हज़रत रोज़ादार की कब्र के बारे में कितने ही चमत्कार बतलाये जाते हैं। हमारे साथ का ताजिक नौजवान कह रहा था—हज़रत रोज़ादार की छाया में जिस की क़ब्र बन गई, उसको दोज़ख की आग नहीं जलाती। कितनी ही दूर और जाने के बाद एक छोटा सा बाजार मिला, जिसके कुछ मकान हाल ही में आग से जल गये थे। मकानो की दीवारें अधिक तर ईंटों की हैं और ये ईंटें पुरानी इमारतों से खोदकर निकाली गई हैं। बाजार के बीच से बाईं ओर होकर हम बड़ी मसजिद के पास पहुँचे। यह मसजिद भी बहुत कुछ नष्ट हो चुकी है, किन्तु इसके दो एक विशाल गुम्बद अब भी क़ायम हैं। अफ़ग़ान सरकार ने इसकी थोड़ी सी मरम्मत भी कर दी है। मसजिद को एक बड़ी गोल चक्करदार सड़क से घेर दिया गया है; और बीच में बाग़ लगाया गया है। इस चक्कर से एक सड़क पश्चिम तरफ निकलती है। इसी सड़क पर नया बलख बसाया जा रहा है। बलख शहर का आबाद

होना कहाँ सम्भव है ? हाँ, सड़क की दोनों ओर दो-ढाई दर्जन दुकानें बना दी गई हैं। दुकानें नये ढंग की तथा ईंटा-चूने से बनी हैं। दुकानदार अधिकतर यहूदी हैं और मज़ारशरीफ़ से लाकर यहाँ बसाये गये हैं। यहूदी बड़ी व्यापार-कुशल जाति है; इसीलिए शायद सरकार ने समझा है कि अच्छी अच्छी दुकानों के मज़ारशरीफ़ से बलख में आ जाने पर सम्भव है, यह मज़ारशरीफ़ का स्थान ले ले।

हमें यह मालूम था कि फ्रेंच-पुरातत्त्वज्ञों ने अफ़ग़ानिस्तान के कुछ स्थानों की खुदाई की है। खुदाई के बारे में पूछने पर एक आदमी ने एक जगह बताई। भटकते भटकते हम ताँगे पर वहाँ पहुँचे। देखा, नीचे खोदते वक़्त मज़दूरों को मकान की एक नींव मिल गई। दीवार पौने दो गज़ मोटी थी, और ईंटें १ फ़ुट लंबी, १ फ़ुट चौड़ी और पौने २ इंच मोटी थीं। बलख को मादरेशहर (शहरों की माँ) कहते हैं, और इसमें शक नहीं कि यह संसार के बहुत पुराने शहरों में है। ईसा से ५००–६०० वर्ष पूर्व जब ईरान के अखामनशी सम्राटों का राज्य एशिया, यूरोप और अफ्रीका—तीनों महाद्वीपों में फैला हुआ था, उस वक़्त यह एक महानगर था। किसी न किसी बड़े रूप में ईसा पूर्व १००० वर्ष में भी यह ज़रूर रहा होगा। सिकन्दर के बाद तो यह यूनानी राजाओं के मुख्य केन्द्रों में था। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में मिनान्दर (मिलिन्द) की यह राजधानियों में था। यूनानी शासन की समाप्ति के बाद फिर यह पार्थिव (ईरानी) सम्राटों के हाथों में चला गया। और तब से सासानियों के अन्तिम समय (६५२ ई०) तक यह ईरान के गवर्नर या सामन्त की राजधानी रहा। सातवीं सदी से यह अरबों के शासन में आया। उस वक़्त यहाँ कितने ही विशाल बौद्ध-मन्दिर और पारसी अग्नि-देवालय थे। जन-संख्या ही में बड़ा नहीं था, बल्कि यहाँ की सम्पत्ति भी असंख्य थी। चीन, हिन्दुस्तान, ईरान और यूरोप के वाणिज्य का केन्द्र होने से इसकी समृद्धि अद्वितीय थी। अरब आये। उन्होंने सिर्फ़ राजनीतिक ही युद्ध नहीं किया, बल्कि धर्म के नाम पर तत्का-

लीन कला और संस्कृति के खिलाफ़ जहाद बोल दिया। न जाने कितने सौ बौद्ध-विहार और अग्नि-शालाएँ नष्ट की गईं। न जाने कितनी लाख पुस्तकें आग की भेंट की गईं। न जाने कितने लाख स्वदेशी धर्म और संस्कृति के माननेवाले स्त्री-पुरुष, बूढ़े-बच्चे, तलवार के घाट उतारे गये। न जाने कितने हजार घरों में हफ़्तों तक आग सुलगती रही। उस वक्त यहाँ के रहनेवाले अधिक तर ताजिक थे। उनकी भाषा फारसी है। आज भी उनकी कुछ संख्या इस प्रान्त में मिलती है, यद्यपि उनसे कहीं अधिक संख्या उजबेक लोगों की है। मध्य-एशिया में जिस जाति ने अरबों को सब से ज्यादा परेशान किया, दो शताब्दियों तक अरबों के साथ जिसने लोहा लिया। एक एक करके कट गए, लेकिन सभ्य ताजिक ने अपने सिर को बर्बर अरबों की तलवार के सामने झुकने नहीं दिया; चाहे उनके गाँव जला दिये गये, शहर उजाड़ दिये गये, और अरबों के साथ मिलकर उनके धर्म में नव-दीक्षित तुर्कमान और उजबेकों ने भी कोई अत्याचार करना उठा नहीं रक्खा। एक एक अंगुल को भी आसानी से न छोड़ते, उन्हें पामीर और हिन्दूकुश के दुर्गम पहाड़ों में जान बचाने के लिए घुसना पड़ा। ऐसा भी समय आया, जब लाख लाख ताजिक अरबों के सामने मत्था झुकाने की अपेक्षा अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए स्वदेश छोड़ चीनी-तुर्किस्तान में चले गये। जिन अरबों का इन्होंने नाक में दम कर दिया था, उन्हीं के लेखों से ताजिकों की निर्भीकता और वीरता की दाद मिलती है। आज भी सोवियत् और अफ़-गान पामीर में यही जाति निवास करती है। सोवियत् ने तो इस जाति की भूमि को ताजिकिस्तान प्रजातंत्र के नाम से एक स्वतंत्र प्रजातंत्र उद्घोषित कर दिया है। यह सोवियत्-संघ के उन ११ प्रजातंत्रों में है, जिन्हें अधिकार है कि जब चाहें तब सोवियत्-संघ से अलग हो जायँ। ताजिकिस्तान में १३-१४ लाख की आबादी है। वहाँ पर शिक्षा और सरकारी दफ्तर सभी जगह उनकी मातृभाषा, फ़ारसी भाषा अनिवार्य है। लाल-क्रान्ति के बाद पिछले २० वर्षों में साम्यवादी ताजिकों ने हर क्षेत्र में बहुत उन्नति की है।

क्रान्ति से पहले ताजिकिस्तानी फ़ारसी एक गँवारू ज़बान समझी जाती थी, और अब उसमें कितने ही दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र निकलते हैं। हर साल हज़ारों स्कूली और दूसरी किताबें छपती हैं। सैकड़ों बोलते फ़िल्म तैयार हुए हैं। कितने ही मौलिक नाटक लिखे और खेले गये हैं। ताजिक संगीत और चित्रकला बहुत आगे बढ़ी है। स्तालिनाबाद (ताजिकिस्तान) से हर रोज़ ताजिक भाषा में संगीत, समाचार और व्याख्यानों का रेडियो पर ब्राडकास्ट होता है। ताजिक जाति ने हज़ारों लाल-सैनिक, लाल-अफ़सर, वैमानिक और इंजीनियर पैदा किये हैं। एक बार फिर ताजिकों को खुलकर संसार के रंग-मंच पर अपना जौहर दिखाने का मौका मिला है। यद्यपि जो बात सोवियत् ताजिकों के बारे में कही जा सकती है, वही बात अफ़ग़ानिस्तानी ताजिकों के बारे में नहीं कही जा सकती। अफ़ग़ानिस्तान में भी उनकी संख्या १२–१३ लाख से कम न होगी। शिक्षा और संस्कृति में भी वह अफ़ग़ानिस्तान की सभी जातियों से आगे बढ़े हुए हैं। वीरता में वह किसी से कम नहीं हैं। समय पहचानने में तो वे कमाल करते हैं। अमानुल्ला के खिलाफ़ अफ़ग़ानिस्तान में जब बग़ावत हुई, उस वक़्त मौक़े से फ़ायदा उठाकर बच्चा-सक्का बादशाह बन गया। बच्चासक्का खुद ताजिक था।

बलख के अरबों द्वारा ध्वस्त किये जाने के प्रकरण में प्रसंगवश ताजिकों के बारे में हमें कुछ कहना पड़ा। आजकल बलख के प्रदेश में अधिकतर उजबेक लोग रहते हैं, और उससे पश्चिम हिरात और ईरान की सीमा तक तुर्कमान। भविष्य में अफ़ग़ानिस्तान के लिए ताजिक, उजबेक और तुर्कमान जातियाँ एक भारी समस्या हो जायेंगी; क्योंकि इन जातियों के सगे भाई-बन्धु कई लाख की तादाद में ताजिकिस्तान, उज़बेकिस्तान और तुर्कमानियाँ के स्वतंत्र प्रजातंत्रों के रूप में अफ़ग़ानिस्तान की सीमा पर संगठित हैं। वह आर्थिक, सामाजिक और वैज्ञानिक अवस्थाओं में बड़ी तेज़ी के साथ आगे बढ़ते जा रहे हैं। इसमें शक नहीं, अब

भी अफ़गानिस्तान में उन्हें बतलाया जाता है—सोवियत् के भीतर रोटी का अकाल पड़ा हुआ है, हज़ारों आदमी भूखों मर रहे हैं, जरा जरा कसूर पर हज़ारों आदमियों को गोली से उड़ाया जा रहा है; सोवियत् अधिकारी क़ाफ़िर हैं, इसलाम और खुदा के सख्त दुश्मन हैं। इस तरह का भुलावा अभी कुछ काम भी करता जा रहा है; लेकिन सोवियत् के भीतर के ताजिक, उजबेक और तुर्कमानों की आर्थिक उन्नति ऐसी हल्की नहीं है कि जिसको बीसों बरसों तक लोगो से छिपाया जा सके। जिस वक्त इन लोगों को मालूम हो जायगा कि उनके भाई-बन्द इतने सुख और आनन्द, इतने ज्ञान और कला की जिन्दगी बिता रहे हैं; तो इसका असर उन पर हुए बिना नहीं रहेगा। अभी तो सोवियत्-सरकार भी अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों के कारण अपनी सीमा को बन्द सी किये हुए है; लेकिन जिस वक्त बाहरी खतरे का खयाल उठ जायगा, तो वह सीमा के पार बसनेवाले हज़ारों आदमियों को भीतर आने का मौका देगी; जिसमें कि वह खुद आकर देख लें कि सोवियत्-शासन की कृपा से उनके भाई-बन्द कहाँ से कहाँ पहुँच गये हैं। और तब सोवियत्-शासन के प्रति जहाँ एक तरफ उनके मन में सद्भाव पैदा होगा, वहाँ काबुल के शासकों के प्रति उनके दिल में दुर्भाव भी पैदा हुए बिना नहीं रहेगा। काबुल इन जातियों को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक उन्नति में पूरा सहयोग देकर ही इनके भीतर आने वाली असन्तोष की लहर को रोक सकेगा।

अरबों ने एक बार बलख को नष्ट और बर्बाद किया सही, लेकिन अपने शासन के स्थापित हो जाने तथा अधिकांश जनता के मुसलमानी धर्म में दीक्षित हो जाने पर फिर उन्होंने बलख को वैसा ही सम्पन्न और समृद्धि-शाली बनाया। अरबों के शासन में भी बलख वाणिज्य-व्यवसाय तथा शिक्षा-सभ्यता का केन्द्र रहा। इसलाम के इतने बड़े बड़े पंडित और धर्मोपदेशक यहाँ पैदा हुए कि जिनकी वजह से इसे बलख-शरीफ कहा जाने लगा। अभी ५०० वर्ष भी इस सुख और शान्ति को भोगने का अवसर नहीं मिला

था, कि एक वार फिर एक प्रचंड आग पूर्व-उत्तर से इसकी सीमा में दाखिल हुई। चंगेज़ की सेना वक्षु से पार उतरने लगी। पहले ही से वलख वालों ने चंगेज़ की तलवार की कहानी ज़रूर सुन रखी होगी, और शायद इसके रोकने के लिए मसजिदों और ज़ियारतों में महीनों दुआएँ पढ़ी जाती रही होंगी। शहर के दुर्ग को मज़बूत किया जाता रहा होगा। अरव, तुर्क, ताजिक और तुर्कमान सभी पवित्र इसलाम धर्म के माननेवाले इस ईमान् के दुश्मन से मुक़ाविला करने की तैयारी करते रहे होंगे। लेकिन चंगेज़ वह तूफ़ान था, जिसके सामने न चीन ठहर सका, न रूस, न खलीफ़ा ठहर सके, न ईसाई धर्म-गुरु! वलखवालों में वूता ही क्या था, तो भी उन्होंने लड़ाई में वीरता ज़रूर दिखलाई होगी, तभी तो चंगेज़ को वलख जीत लेने मात्र से ही सन्तोष नहीं हुआ। उसने वलख की ईंट से ईंट वजवा दी। शहर में कतले-आम हुआ। महलों और मकानों को जलाकर राख कर दिया गया। मसजिदों और ज़ियारतों की उसने वही गति की, जैसी ५०० वर्ष पहले अरवों ने वौद्ध-विहारों और अग्निशालाओं की की थी। जिस तरह वह विहार और अग्निशालाएँ फिर वलख की भूमि पर खड़ी न हो सकीं, उसी प्रकार इन ज़ियारतों और मसज़िदों को भी फिर सिर उठाने का मौक़ा नहीं मिला। सात सदियों पहले वलख के दुर्ग और प्राकार महल और हवेलियाँ, मीनार और गुम्वद ईंटों और मिट्टी के ढेर वने; और वह आज भी उसी ढेर के रूप में हैं। शायद चंगेज़ ने अरवों को उनकी पहली क्रूरता का वदला दिया था। मंगोल वौद्धों में तो अब भी कहावत है कि धर्म-रक्षक महान् देवता महाकाल खुद ही चिङ्-हिर्-हान् (चंगेज़ खां) के रूप में संसार में आया था। अरवों ने जो हज़ारों मठ और विहार ध्वस्त किये थे, लाखों निर्दोष भिक्षुओं की हत्या की थी, हज़ारों ग्रन्थागारों की ताल और भोजपत्र की पोथियों से जो हम्माम गर्म किये थे; उसी पाप का दंड देने के लिए महाकाल चंगेज़ ने मध्य-एशिया के अरवों और इसलाम-धर्मियों पर यह जुल्म किया था। यह वही समय था, जव कि दिल्ली के हिन्दू सिंहासन को

रिक्त हुए एक पीढ़ी भी नहीं बीती थी।

बल्ख़ के खंडहरों की थोड़ी और ख़ाक छानकर जिस वक़्त हम लौटने लगे और अभी खंडहर से बाहर भी नहीं हुए थे; कि एक छोटी सी नहर—जिसपर आड़ी लकड़ियों का पुल बना था—के पुल में घोड़े का एक पैर फँस गया और चर्र की आवाज़ के साथ घोड़ा वहीं गिर गया। उस आतंक से हमें अपने पैर की चोट भूल गई और न जाने किस वक़्त कूद कर हम ज़मीन पर पहुँच गये। बड़ी मुश्किल से घोड़े का पैर लकड़ी की दरार में से निकाला गया। हड्डी को टो कर कुछ राहगीरों ने फ़तवा दिया कि वह टूट गई है। अफ़ग़ानिस्तान में ताँगे के घोड़े की बग़ल में एक और सहायक घोड़ा बँधा चलता है, जो थक जाने पर खींचनेवाले घोड़े की जगह पर जोत दिया जाता है। उस घोड़े को जोता गया और घायल घोड़े को पीछे से पकड़ कर धीरे धीरे चलाया जाने लगा। कुछ दूर बाद ताँगे वाला घोड़े को दौड़ाने लगा। यद्यपि शाम सिर पर आ गई थी, और हमें ९–१० मील जाना था; तो भी मैंने बारबार ताँगेवाले से कहा कि घायल घोड़े को इस तरह दौड़ाना अच्छा नहीं है। उसका कहना था—दौड़ने से गर्मी आयेगी और घोड़े का पैर ठीक हो जायगा। ख़ैर कुछ दूर चलने के बाद यह तो निश्चय हो गया कि घोड़े की हड्डी नहीं टूटी है। अंधेरा होते वक़्त एक मोटर लॉरी पीछे से आती दीख पड़ी और ताँगे को छोड़ हम वहीं उसपर सवार हो गये। अंधेरा होते होते बल्ख पहुँच गये। दूसरे दिन जुमा (शुक्र) था, इसलिए दफ़्तरों में तातील थी, और हम काबुल के लिए रवाना न हो सके। पैर में अब भी हल्का दर्द था। पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ कि डाक्टर हिन्दू हैं। जाने पर कप्तान सी० ड० प्रभाकर बड़े प्रेम से मिले। मैं तो समझता था, हिन्दुस्तान से इतनी दूर अफ़गान-सोवियत सीमा के क़रीब आने की हिम्मत सिवा पंजाबी के किसी दूसरे की नहीं होगी, लेकिन यहाँ देखा कि एक कर्नाटकी रिटायर्ड आई० एम० एस० सुदूर दक्षिण कर्नाटक (बम्बई प्रान्त) से आकर इतनी दूर पर बैठा हुआ है। कप्तान प्रभाकर को यहाँ आये २० साल हो गये। मुझे

गर्मी तो किसी तरह बर्दाश्त कर लेते हैं, यद्यपि उनके जैसे बूढ़े के लिए वह भी बड़ी हिम्मत की बात है; लेकिन यहाँ उन्हें कोई उस तरह का संस्कृत-समाज नहीं मिलता। बोली-भाषा की भी उन्हें बहुत दिक़्क़त है। श्रीमती प्रभाकर को लेकर उनका लड़का जॉन एल० प्रभाकर कुछ मास पहले आया था; और अब वह लौटना चाहता था। लेकिन श्रीमती का मन इतना उकता गया है कि वह वहाँ से भागने के लिए तैयार हैं। जॉन मेरे साथ आना चाहते थे, लेकिन माँ के आग्रह के कारण नहीं आ सके। कप्तान प्रभाकर ने चाय पिलाई और मेरे पैर को देखकर दवा बतलाई। स्वदेश से इतनी दूर और इतने दिनों बाद एक भारतीय भाई को देखकर प्रसन्नता होनी ज़रूर ही थी।

मजारशरीफ़् से ३ कोर (=३ कोश, ६ मील) पर दीदादी है। यहाँ अफ़ग़ानी फ़ौजी छावनी है। इस जगह ४-५ हज़ार पलटन है। मजारशरीफ़् में बेतार का तार भी लगा हुआ है। हर एक अफ़ग़ानी प्रजा को २ साल की सैनिक शिक्षा अनिवार्य है; और इसमें अफ़ग़ानिस्तान में बसने वाली सभी जातियाँ—तुर्कमान, उजबेक, ताजिक, नूरस्तानी (लाल क़ाफ़िर), पठान और बिलोच शामिल हैं। बच्चा-सक्का की लड़ाई के बाद नई हुकूमत ने इधर के लोगों के हथियार ले लिये हैं, तो भी जानकारों का कहना है कि लोग बेहथियार नहीं हो गये हैं।

दो-ढाई साल से अफ़ग़ान-सरकार ने बहुत सा व्यापार अपने हाथ में ले लिया है। सूखे मेवे वह खुद ख़रीदती है और देश से बाहर खुद ही भेजती है। इसकी वजह से जो अफ़ग़ानी सौदागर ख़रीद फ़रोख़्त का काम करते थे, नाराज़ हो गये; और जब अफ़ग़ानी सरकार की एजेंसी पेशावर, कानपुर, कलकत्ता या और किसी हिंदुस्तानी शहर में खुदरा बेचनेवाले सौदागरों को भी सीधा माल बेचने लगी, तो हिन्दुस्तानी व्यापारी भी बिगड़ उठे। आज (११ मार्च) तीन ही चार दिन हुए कि कानपुर के मेवा-फ़रोशों की इसी प्रकार की एक हड़ताल का समाचार पत्रों में छपा है। मशीन, पेट्रोल, मिट्टी का तेल, चीनी, कपड़ा आदि सभी बाहर से आनेवाली

चीजें सरकार से नियुक्त अर्द्धसरकारी कम्पनियाँ मुल्क के भीतर मँगाती हैं; और वही खुदरा फरोशों को देती हैं। इन कम्पनियों में दूसरे सौदागर भी शामिल हो सकते हैं, लेकिन उन्हें अफ़गानी प्रजा होना चाहिए। आयात और निर्यात के व्यापार को सरकार अपने हाथ में लेकर चाहती है कि उस आमदनी से उद्योग-धंधे और कला-कौशल को बढ़ाया जाय। शाह नादिर का सब से पहले ध्यान सड़कों और बन्दों की तरफ गया था। उन्होंने पचीसों बड़े बड़े बन्द बँधवा कर नदी के पानी को जमा करा, उसे सिंचाई के उपयुक्त बनाया। कई मोटर की नई सड़कें निकालीं। काबुल के बाहर कस्बों और शहरों को भी दर्शनीय बनाने की कोशिश नादिरशाह और उनके पुत्र वर्तमान अफ़गान-नरेश जाहिरशाह कर रहे हैं। हाल में कुछ ऊनी और सूती कपड़ों की मिलें भी खुली हैं। अफ़गान सरकार को सामाजिक तथा शिक्षा संबंधी सुधार में बहुत फूँक फूँक कर पैर रखना पड़ रहा है।

वक्षु-तट से मज़ारशरीफ़ तक हमें सौ अफ़गानी रुपये (२५ रुपये) देने पड़े थे; और यहाँ से काबुल तक ६० अफ़गानी (१५ रुपये); और काबुल से पेशावर तक ५) पाँच रुपये; अर्थात् सोवियत् सीमा से पेशावर तक पहुँचने में ४६ रुपया भाड़ा देना पड़ा।

हमारे पास अफ़गानी रुपये नहीं थे, इसलिए २६ जनवरी को पहले बैंक मिल्ली (राष्ट्रीय बैंक) से १० पौंड का चेक तुड़ाना था। उस वक्त हमें नहीं मालूम था, कि ईरान की तरह यहाँ भी बाहर दर कुछ और भीतर दर कुछ और है। हमें साढ़े तीन अफ़गानी फी रुपये के हिसाब से मिला, यद्यपि बाज़ार में दर चार अफ़गानी फी रुपये है। हर रुपये पीछे दो आने का घाटा। इस प्रकार १६।।-) की चपत लगी। अफ़गानिस्तान में कानूनी तौर पर अभी सिक्कों के बदलने में उतनी कड़ाई नहीं है, इसलिये यदि मालूम होता, तो मैं कहीं किसी और जगह से रुपये ले लेता। वहाँ से गुमरुग गये। अफ़सर ने मामूली तौर से बक्सों को देख लिया और उनपर राँगे की मुहर लगा दी। तार से काबुल के गुमरुग में सूचना देने की बात भी कही।

मोटर-लॉरी के बारे में पूछने पर मालूम हुआ कि आज कोई जानेवाली नहीं है। होटल की बग़ल में म्युनिसिपलिटी के तीन कमरों में मजारशरीफ़ का म्युजियम है। म्युजियम का कार्य अभी हाल ही में शुरू हुआ है; तो भी कुछ अच्छी चीजें जमा हो गई हैं। हजार से ऊपर यूनानी और कुषाण राजाओं के चाँदी, सोने, ताँबे के सिक्के हैं। इन सिक्कों में से अधिकांश यहाँ से ३ कोस दक्षिण शाहरवान से मिले हैं। चूने के बने दो बोधिसत्व-शिर गान्धार-शिल्प के सुन्दर नमूने हैं। एक कमरे में अरबी-फ़ारसी की कुछ पुरानी हस्तलिखित पुस्तकें भी जमा की गई हैं; जिनमें सबसे पुराना हस्तलेख दूसरी सदी हिज्री (ईसा की आठवीं सदी) का है।

दोपहर का भोजन समाप्त कर लेने पर मालूम हुआ कि एक लॉरी जा रही है; और ६० अफ़ग़ानी पर ड्राइवर की बग़ल में जगह मिल रही है। हमारा काम सब हो चुका था, इसलिए हम जाने को तैयार हो गये।

२—काबुल को

दोपहर बाद २ बजे हमारी लॉरी रवाना हुई। शहर से बाहर पेट्रोल के लिए हमें थोड़ी देर ठहरना पड़ा। इधर खर्च होनेवाला सभी मिट्टी का तेल और पेट्रोल सोवियत् से आता है। मजारशरीफ् के बाहर अगल-बगल में कितने ही मेवों के बाग हैं; किन्तु आजकल सभी के पत्ते झड़ गये हैं और दरख्त सूखे से मालूम होते हैं। कितने ही चिनार के दरख्त—जो गर्मी के दिनों में अपने हरे पत्तों और घनी छाया के कारण शोभाराशि से मालूम होते होंगे—इस वक्त नंगे डरावने से मालूम होते हैं। मजारशरीफ अपने खरबूजों (सर्दे) के लिए बहुत मशहूर है, किन्तु हम ऐसे वक्त में पहुँचे थे, जब कि सेब और अंगूर के सिवा सभी फल सिर्फ सूखे ही मिल सकते थे।

शहर से हम बाहर निकल आये। जमीन मैदानी थी, लेकिन खेत कम थे। सड़क की मरम्मत में कितने ही लोग लगे हुए थे। ईरान की सड़कों से तो मुकाबला नहीं किया जा सकता, लेकिन हिन्दूकुश से मजार शरीफ् तक की सड़क काफी अच्छी है। सूर्यास्त तक हम अभी खुली जगह में ही जा रहे थे। यहाँ का दृश्य बहुत कुछ तिब्बत से मिल रहा है। वैसे ही नंगे सूखे पहाड़, वैसा ही दूर तक फैला नंगा मैदान, और वैसे ही भेड़ों और बकरियों के चरने लायक छोटी छोटी घासें यहाँ भी थीं। सूर्यास्त बाद हम पहाड़ के भीतर घुसे और चलते ही चले गये। आगे रास्ता दर्रे का मिला। मजारशरीफ से चलते वक्त से ही आसमान पर बादल मँडराने लगे थे। पहाड़ के भीतर घुसने पर कुछ कुछ बूँदें भी पड़ने लगीं। रात काली अँधेरी थी और उसमें रास्ता चक्कर काट कर जा रहा था। चढ़ाई हल्की थी। दो तीन घंटा रात बीत जाने के बाद हम कोतल-ऐबक (ऐबक के डाँडे) को पार हुए। आगे ऐबक गाँव है। यहाँ नये ढंग की कुछ सरकारी इमारतें हैं।

सड़क के किनारे दोनों तरफ़ दर्शनीय दुकानों की पाँती है। यह सब अभी दो ही-तीन वर्ष के भीतर हुआ है। बाजार की एक गराज (मोटर-सराय) में घुसे। सराय तो इतनी नई है कि सारी आँगन की भूमि बराबर नहीं हो सकी। कोठरियाँ नई हैं, जिनमें सफ़ेदे की लकड़ी की खिड़कियाँ और दरवाज़े हैं। खिड़कियों में शीशे लगे हुए हैं। भीतर चटाई पड़ी थी। बाहर आँगन में कीचड़ उतना ज़्यादा न था; लेकिन मिट्टी इतनी चिपकने-वाली थी कि हमारे जूते ५—५ सेर के हो गये। सर्दी भी थी। एक कोठरी के भीतर घुसकर हम एक चटाई पर बैठ गये। हमारी लॉरी का ड्राइवर ज़रीफ़ ख़ान बड़ा ही अच्छा आदमी निकला। हमारी लॉरी वैसे तो माल की थी, लेकिन माल की अपेक्षा इसमें आदमी ज़्यादा भरे हुए थे। बाक़ी आदमी दूसरी कोठरियों में चले गये; लेकिन ज़रीफ़ ख़ान, उसका क्लीनर, एक भागीदार, एक दोस्त और हम ५ आदमी एक कोठरी में थे। कोठरी वैसे साफ़ थी। सबसे पहले आग जलाने के लिए कँटीली झाड़ी तथा दूसरी तरह की सूखी लकड़ी आई। आग जला दी गई और लोग चारों तरफ़ बैठ गये। फिर सरायवान् ने हर एक आदमी के लिए अलग अलग गोल चायदानी में चाय और एक एक चीनी मिट्टी का कटोरा भेजा। तीन तीन चीनी की चौकोर टिकियाँ भी साथ में आईं। कटोरे के बीच में तीनों टिकियों को ऊपर नीचे सजा दिया गया, और चायदानी से—जो कि थोड़ी देर तक सामने आग पर रखकर इतनी खौला दी गई थी कि टोंटी से भाफ़ निकलने लगी थी—चीनी पर चाय की धार छोड़ी गई। चीनी गल कर नीचे गिर गई और चायपान शुरू हुआ। चाय में दूध की ज़रूरत नहीं। इसके बाद घी और प्याज के साथ बना चावल और साथ में मुर्ग़ का उबला मांस था। चावल के भीतर कुछ दुम्बे का गोश्त भी ढँका हुआ था। अफ़ग़ानिस्तान के मांस में हिन्दुस्तान के इतना मसाला नहीं पड़ता, तो भी ईरान और रूस की अपेक्षा यहाँ का पका मांस हिन्दुस्तान से ज़्यादा मिलता है। प्याज़ की छौंक लगाकर, यहाँ भी घी में मांस को खूब भूनते हैं और

कुछ लाल काली मिर्च भी डाल देते हैं। पाँचों आदमियों के लिए एक ही बड़ी थाली में चावल आया था। हाथी के कान की जैसी तन्दूरी मोटी रोटियों का थोंक भी सामने रखा गया। पहले रोटी और शोरबे से भोजन आरंभ हुआ, फिर मास; पीछे चावल और उसमे छिपे मांस की वारी आई। यह कहने की कोई जरूरत नही कि पाँचो आदमी एक ही थाली में से नेवाला भर भर कर खा रहे थे। ईजानिब भी किसी से पीछे न थे। फर्क इतना ही था कि चावल में अपनी ओर की एक खास सीमा मन में निर्धारित कर ली गई थी; और हाथ उतने में ही डूबता था। ठंडे पानी की इच्छा नहीं है—कह कर छोड़ दिया और इस प्रकार एक ही ग्लास से पानी पीने की नौबत नही आई। खाने के बाद चाय पीनी ही थी, इसलिए प्यासे रहने का डर न था।

खाना खा लेने के बाद साथी लोग हुक्का पीने लगे। इसके लिए मिट्टी का गड़गड़ा और चिलम ही साथ नहीं चल रही थी, बल्कि दो सेर पक्की तम्बाकू की चूर की हुई सूखी पत्तियों की झोली भी साथ में थी। मुट्ठी भर तम्बाकू हथेली पर रखखा गया, नैचे से गुड़गुड़ी का पानी तम्बाकू में दो बूंद डाला गया; फिर मसलकर उसे मिट्टी की चिलम पर रखा गया। चिलम पर दहकते हुए दो तीन कोयले रक्खे और फिर गुड़गुड़ी खींची जाने लगी। काबुली गुड़गुड़ी में निगाली और डंडा दोनो जुड़े हुए तथा समानान्तर होते है। इसीलिए पीने वालो को उकड़ूँ या निहुर कर पीना पड़ता है। हमें तम्बाकू से सरोकार नही, इसलिए हम तो चुपचाप अपने चुकुटू (तिब्बती गलीचानुमा ओढना) के झोले के भीतर घुस कर सो गये। लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने कह दिया, इस एक ही लिबास में ओढने-बिछौने दोनो का काम निकल आता है, इसीलिए मैंने इसे साथ रक्खा है। रात को नींद खूब आई। दूसरे दिन (३० जनवरी) कुछ दिन चढे उठे। बाहर देखने से मालूम हुआ कि रात भर बूँदा बूँदी हुई है। आँगन मे कीचड ज्यादा हो गया था। सराय में पेशाव-पाखाने का कोई इन्तजाम न था। कोने की एक कोठरी, जिस पर छत नही पड़ी थी, इन दोनो का काम दे

रही थी। सर्द जगह और सर्दी का मौसम था, यही ख़ैरियत थी नहीं तो न जाने कितनी दुर्गन्ध आती। मैं तो किसी जाति के सभ्य होने की कसौटी पेशाबख़ाने और पाख़ाने को समझता हूँ। जिस जाति या व्यक्ति का पेशाबख़ाना या पाख़ाना जितना ही अधिक स्वच्छ है, वह उतनी ही अधिक सभ्य है; और जिसका जितना अधिक गन्दा, वह उतनी ही असभ्य है। मज़ारशरीफ़ से कुछ मुसाफ़िर यहीं तक आये थे। इसलिए आधी मोटर ख़ाली हो गई। यहीं हमने देखा कि जहाँ आदमी के कुर्ते पर कन्धे के ऊपर चमड़े में मढ़ी तावीज़ सिली हुई है, वहाँ एक गधे के सिर पर भी तावीज पड़ी है। उस वक़्त मुझे कोल्ख़ोज़्-नमूना के तवारिश महम्मदोफ़् की बात याद आई। आगे उसी दिन शाम को यह देखकर हमें और आश्चर्य हुआ, कि हमारे दोस्त जरीफ़ ख़ान ने ख़तरे से बचाने के लिए अपनी मोटर के सामने दो तावीज़ें लगा रखी हैं। आख़िर ख़तरा जैसे जानदार को हो सकता है, वैसे ही बेजान को भी। बल्कि मोटर के हाथ में तो पन्द्रह आदमियों की जान थी।

मैंने चाहा था, रात को खाने का दाम—जो पाँच अफ़ग़ानी (१।) से अधिक न था—दे दूँ; लेकिन ज़रीफ़ ख़ाँ ने बड़ा ज़ोर देकर कहा—आप हमारे मेहमान हैं। १० बजे हम रवाना हुए। कुछ दूर तक चढ़ाई साधारण थी, फिर कोतल-रोवा (रोवा तक के डाँड) तक के जितने ही नज़दीक चलते जाते थे, ऊँचाई भी उतनी ही बढ़ती जाती थी। डांड़े के ऊपर कुछ सफ़ेद बर्फ़ मिली। यह कल ही रात को पड़ी थी। कोतल पार होने पर पहाड़ों पर जहाँतहाँ कुछ झाड़ियाँ दिखाई पड़ीं। हमने समझा, शायद तिब्बत से हिमालय के डाँड़ों को पार कर इस पार आने पर जैसे वृक्ष-वनस्पति दिखाई देने लगते हैं, उसी तरह शायद अब हरे भरे पहाड़ आनेवाले हैं। लेकिन आगे चलकर यह बात ग़लत साबित हुई। हिन्दूकुश और काबुल ही तक नहीं, बल्कि जलालाबाद और आगे तक के पहाड़ नंगे और सूखे हैं। बहुत सी उतराई उतर जाने पर एक क़िलानुमा फौजी चौकी मिली। लोगों ने

चाय पी और फिर हम आगे बढे। आगे एक लम्बी चौडी उपत्यका मिली; जिसमे जहाँ तहाँ कितने ही गाँव है। खेत अधिकतर चावल के है और गोरी (यही इस प्रदेश का नाम है) के बारीक चावल अपने स्वाद के लिए बहुत मशहूर है। सड़क के किनारे कुछ दुकाने मिली। यही गाडी ठहर गई। दुकानदार को हुक्म हुआ, मांस-चावल (मांसोदन), और रोगनदार (मुर्गी के मांस) तैयार करने का। धान को यहाँ शाली कहते है। यही शब्द हिन्दूकुश, दर्रा खैबर और पीर पजाल को पार करता, कुल्लू और काँगड़े तक आया है।

सूर्यास्त के समय गोरी उपत्यका के एक छोटे से टोले से हम गुज़[illegible] रहे थे। एक आदमी आकर मोटर के सामने खडा हो गया। उसने जरीफ खान से कहा कि कुछ शाली की बोरियाँ पडी हुई है, जो कि मेरे मालि[illegible] किसी अफ़सर की है, उन्हे गाडी पर रख लो। मोटर मे कुछ जगह [illegible] जरीफ़ ने सोचा, कुछ माल ले ले और इस प्रकार कुछ भाडा निकल[illegible] लॉरी के भीतर आधी जगह मे फर्श मे छत तक बोरियाँ भर दी [illegible] बाकी जगह में भी दो दो तह बोरे रखे गये। आदमी अब भी [illegible] बोरियाँ लाये चला जा रहा था। मुसाफिर अधीर हो [illegible] भी अपनी मोटर तोडना नहीं चाहता था। दोनो ने [illegible] इन्कार कर दिया। इसपर १० मिनट तक वाग्-युद्ध [illegible] मुसाफिर बोल उठा—अरे मुसलमान! तुझे [illegible] इतने मुसाफिरों के लिए भी इसमे जगह होनी [illegible] चार बोरे बाकी हैं, उन्हे कहाँ ले जाऊँ? छोड [illegible] इसपर मुसाफिर ने कुछ और जवाब दिया। [illegible] बदमाश तक गई। फिर दोनो गुत्थमगुत्था [illegible] आदमी मे मुसाफिरो की संख्या अधिक थी [illegible] तने जा रहे थे। लेकिन पास में गाँव था [illegible] आदमी बीच मे पडे और दोनो को [illegible] और लेकर मोटर की छत पर रखी [illegible]
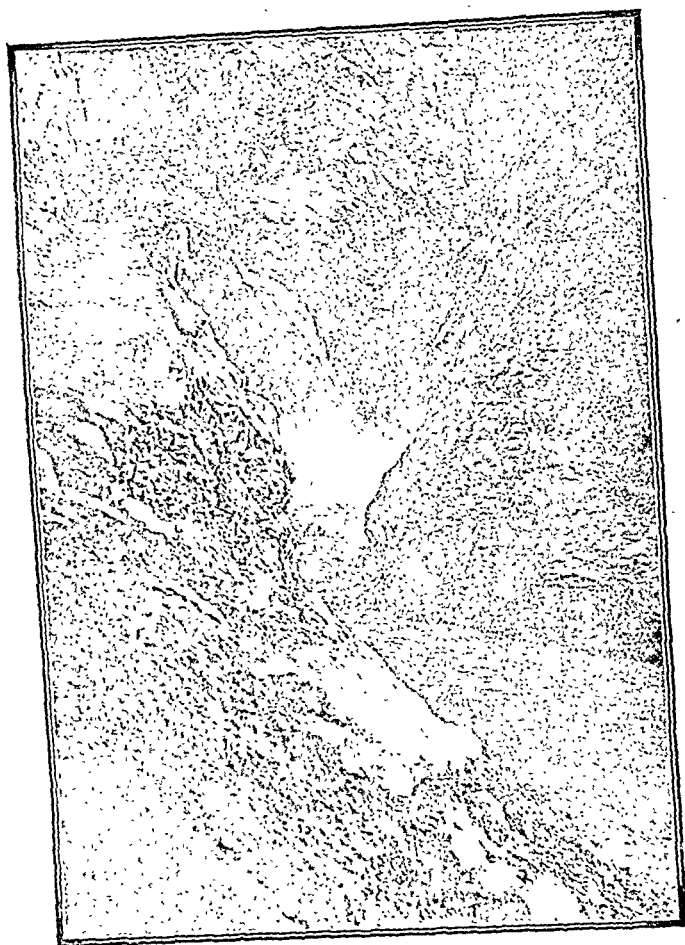
तंग-ग़ार (काबुल)

भेजता ही जा रहा था और कह रहा था, बस दो और है। लोगों ने जाकर देखा तो वहाँ १०–१२ बोरियाँ और पडी हुई थीं। आखिर और कोई बोरी ऊपर चढने नहीं पाई और हम लोग खुदा खुदा करके रवाना हुए। विस्तृत उपत्यका को छोड़ फिर तंग वादी में चलना पड़ा। रात के १० बज गये थे जब हम दोशी पहुँचे। यहाँ भी कई दुकाने है। सामने एक सुन्दर पानी की नहर और नीचे एक कलकल-नादिनी नदी वह रही है। यहाँ लारी के रखने के लिए सराय नहीं है। सडक पर गाडी छोड दी गई। हम पाँचो आदमियो के लिए एक कोठरी मिली, जिसके आधे भाग मे ईंधन भरा हुआ था, तो भी सोने की तकलीफ नहीं हुई।

दूसरे दिन (३१ जनवरी) चाय पी कर हम ८ बजे रवाना हुए। अब सारा रास्ता एक तंग पहाड़ी वादी से होकर था। इस प्रदेश मे बसनेवाले लोगों को 'हज़ारा' कहते है। शकल-सूरत में ये उजबेक और तुर्कमान से मिलते जुलते है। वैसा ही मूँछ-दाढ़ी-रहित मुख और वैसी ही गोल गोल आँखें। लेकिन इनकी भाषा फारसी है। लोग कहते है कि ये चंगेज के अनुयायी मगोलो की सन्तान है। यह अपनी भाषा भूल गये है लेकिन तब भी इनकी फारसी में कुछ मगोल भाषा के शब्द बचे रह गये है। विशेष कर सम्बन्धियों के नाम। अफगानिस्तान के मजहब के बारे में पूछने पर एक पठान ने कहा—हमारे यहाँ सभी लोग मुसलमान धर्म को माननेवाले है, सिर्फ एक थोड़ी सी जगह में शिया है, जिनकी जाति को हज़ारा कहते हैं। मानो वक्ता के खयाल में शिया इसलाम मे दाखिल नही है। हिन्दूकुश के पास की इस घाटी मे यह मगोल क्यो आकर बस गये? और क्यों उन्होने सुन्नी धर्म छोड़, शिया धर्म को अपनाया और कैसे वे अपनी भाषा भुलवा देने मे समर्थ हुए? हजारा लोग बडे हट्टे कट्टे होते है, और कितनों के चेहरे मंगोलो जैसे लाल होते है। दुआब, मेखजरीन मे चावल की ही खेती ज्यादा होती है। आगे चढाई शुरू हुई। सर्दी बढती जा रही थी। खेत और बाग अभी और बहुत आगे तक मिले। जितने ही हम ऊपर चढ

रहे थे, उतने ही बाग़ कम होते जा रहे थे। इस वक़्त पहाड़ नंगे थे, कहीं बर्फ़ दिखाई नहीं पड़ती थी। आगे एक विचित्र लाल रंग का पहाड़ मिला जिस तरफ़ से हमारा रास्ता जा रहा था, उधर से वह गोलाकार मालूम होता था। उसपर कहीं कहीं आलीशान लाल रंग के खंभे-से काट कर बनाये मालूम होते थे। मालूम होता था, किसी ने पहाड़ों को गढ़कर लाल रंग का एक विचित्र स्तूप बना दिया है। इसी पहाड़ के पीछे की ओर कहा जाता है, बामियान के पहाड़ में कटे विशाल स्तूप हैं। अंधेरा होने से पहले ही हम बलबला पहुँच गये थे। यहाँ सर्दी बहुत ज्यादा थी, और वह बतला रही थी कि हम काफ़ी ऊँचे उठ आये हैं। आस पास की बहुत सी ज़मीन बर्फ़ से ढँकी हुई थी। हवा काफ़ी तेज़ चल रही थी। दीवारों में मिट्टी की कच्ची ईंटों को इस तरह जुड़वाया गया था कि उनके छिद्रों से सनसन करके हवा भीतर आ रही थी। मेरे पास ओढ़ने का सामान काफ़ी था, इसलिए मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हुई।

दूसरे दिन सवेरे ही रवाना हुए; क्योंकि आज (१ फ़रवरी) हमें हिन्दूकुश के बड़े ख़तरनाक़ दर्रे को पार कर जाना था। आगे एक फ़ौजी क़िला मिला, जहाँ कुछ सिपाही भी रहते हैं। इसके क़रीब से ही बामियाँ जाने का रास्ता अलग हुआ है। आने-जाने वाली मोटरों से पूछा, लेकिन कोई बामियाँ जानेवाली मोटर न मिली। लाचार बामियाँ जाने का ख़याल छोड़ देना पड़ा। क़िले के तीन अफ़सर हमारी ही मोटर से आगे जाना चाहते थे; और मोटर के भीतर नये मुसाफ़िरों के लिए जगह न थी। ड्राइवर ने बहुतेरा कहा कि पीछे ख़ाली मोटर आ रही है लेकिन कौन सुनता है लाचार समय बचाने के ख्याल से मोटर में उन्हें जगह देनी पड़ी। क़िले से थोड़ा आगे बढ़ने पर सभी मुसाफ़िरों को मोटर से उतार दिया गया। आगे सचमुच ज़मीन बर्फ़ के कारण बहुत फिसलाऊ थी। उस चढ़ाई में इञ्जन काम नहीं कर सकता था। मुसाफ़िरों को कई जगह मोटर को ठेलना पड़ा। तिकोने लकड़ी के ओंट बरा-

शिकार कहते हैं। बहुत देर की उतराई के बाद सड़क के किनारे के चाय-खाने में पहुँचे। अब भी चारों तरफ़ बर्फ़ ही बर्फ़ थी, जिसमें से सिर बाहर निकाल कर कोई कोई चट्टानें झांक रही थीं। पानी की धार भी बर्फ़ में अन्तर्हित थी। चायखाना के अगल-बगल और पीछे की जगह पायखानों का ढेर बन गया था। अभी लारी आने में देर थी, इसलिए हम चायखानें में बैठ गये। मोटर के साथियों में से भी कुछ आ गये थे। उन्होंने सूखा तूत और चिलगोज़ा सामने रखा। चायखानेवाले ने तीन टिकियाँ चीनी के साथ एक चायदानी चाय की दी, और साथियों के साथ गप करते हम चाय पीने लगे। पता लगा हिरात से बलख तक तुर्कमान लोग बसते हैं। बलख से दोशी तक उज़बेक। दोशी से शिबिर तक हज़ारा। और अब हम हिन्दू-कुश (शिकार और शिबिर के कोतल) पार कर ताजिकों की आबादी में घुस रहे थे। यहाँ से कोह दामन (कपिशा) तक बराबर ताजिकों की ही बस्तियाँ हैं। मोटर के आने पर हम फिर रवाना हुए। बर्फ़ बराबर चली गई थी। हाँ, हम जितना नीचे जा रहे थे, उतनी ही सड़क पिघलती बर्फ़ से खाली होती गई; और बग़ल में बहने वाली गुर्बन नदी की धार भी सफ़ेद चादर फाड़ कर बाहर निकलती आती थी। शाम को ४ बजे हम 'चारदि-गुर्बन' में पहुचे।

चार-दि-गुर्बन एक बड़ा गाँव है। सड़क के किनारे पचीसों दुकानें हैं। हमें एक होटल में जगह मिली। एक लम्बा चौड़ा कमरा था; जिसमें मकान गर्म करने के लिए मुँह-बन्द अंगीठी जल रही थी। अंगीठी के ऊपरी भाग में रक्खा पानी चाय के लिए खौल रहा था। हमारे पहुँचते ही किटसन-लैम्प जला दिया गया। क़ालीन बिछा दिया गया। ज़रीफ़ खान ने पूछा—अंगूर खायेंगे? मेरे हाँ कहने पर एक मिट्टी की गोल छोटी डेहरी (कोठिली) सामने लाकर रक्खी गई। कोठिली के मुंह का पिहान मिट्टी से ही चिपकाया हुआ था। मिट्टी तोड़ कर पिहान को अलग कर दिया गया; और भीतर दो सेर पक्के सफ़ेद मीठे अंगूर रक्खे हुए थे। ज़रीफ़ खान ने एक गुच्छा ऊपर

उठा हमारी ओर बढ़ाते हुए कहा—अंगूर अच्छे हैं, मड़े और सूखे नहीं हैं। पूछने से मालूम हुआ कि अंगूरों को वैसे तो रखने पर सूख जाते हैं, रुई डाल कर पिटारी मे रखने पर खर्च ज्यादा पड़ जाता है, इसलिए यहाँ के लोगो ने इन सूखी मिट्टी की कोठिलियों में रखने का ढग निकाला है। कोठिलियों के अलावा जब आधा सेर ही अंगूर रखना होता है, तो गोल मिट्टी के पनवट्टो मे रखते है। पिहान और पनवट्टो को बन्द करने की तारीफ है। उनको इस तरह बन्द किया जाता है कि बाहर से हवा बिल्कुल ही भीतर न जा सके। कभी कभी जब हवा अन्दर चली जाती है, अथवा भीतर रखे अंगूरों में कोई दाना खराब होता है, तो पिटारी खराब हो जाती है या अंगूर सूख जाते हैं, बदजायका हो जाते हैं। सारी कोठिली के लिए डेढ़ अफगानी (।=)) देना पड़ा। आज सहभोज का अन्तिम दिन था। अंगूर के अतिरिक्त पुलाव, दो तीन तरह का सुन्दर मास भी बना था। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, जब मेरे दाम चुका देने पर जरीफ खान ने आग्रह नही किया। पठानो की मेहमाननेवाजी (अतिथि-सत्कार) को मैंने अब तक सुना ही था, लेकिन इस यात्रा में मुझे उसका सुन्दर अनुभव हुआ। भारत मे जानेवाले कुछ सूदखोर पठानो को देखकर हम समझ लेते है, कि वे बहुत उजड्ड और रूखे होते हैं; लेकिन मेरा तजर्बा उससे बिल्कुल उलटा रहा। यह तजर्बा सिर्फ जरीफ खान और उनके साथियो तक ही परिमित नही था, बल्कि वस्तुतः, मजारशरीफ, रास्ता और काबुल सभी जगह यही मीठा तजर्बा दोहराया गया।

होटल का मालिक लाल गोरे रग का एक अधेड पुरुष था। आँखे उसकी मगोल जैसी मालूम हो रही थीं; और मैं समझ रहा था कि वह जरूर हजारा होगा, लेकिन पूछने पर मालूम हुआ कि वह ताजिक है। माँ उसकी हजारा थी। इसलाम के अनुसार ऐसी मिश्रित शादियो मे यद्यपि कोई रुकावट नहीं है, तो भी आकार-प्रकार, वेशभूषा, बोली-बानी ऐसी शादियों के रास्ते में बाधक होती हैं। यही वजह है, जो इसलाम का एक-

छत्र राज्य होने पर भी मंगोल (तुर्कमान, उजबेक, हजारा) और आर्य (ताजिक, पठान) मुख-मुद्राएँ अलग अलग दीख पड़ती हैं। होटल के मालिक के दो छोटे लड़के बहुत ही सुन्दर और देखने में रूसियों जैसे मालूम होते थे। उनकी लम्बी नुकीली नाक और भूरे बाल रूसियों जैसे ही थे। रात को बात चलते वक़्त ज़रीफ़ ख़ान ने तारीफ़ करते हुए कहा—दो साल पहले हिरात से हमारी लारी पर एक अंग्रेज आया था। वह हमसे अलग खाना खाता था। आप तो हमारे साथ खाना खाते हैं। मैंने कहा—पठान और हम हिन्दुस्तानी तो एक जाति के हैं। हमारा, गाना, हमारा नाच, हमारा भोजन, खाने के पहले और पीछे हाथ मुँह धोना, तथा हाथ से खाना आदि सभी एक हैं; इसलिए मैं अलग कैसे रहता।

२ तारीख को हमारी गाड़ी सवेरे ही रवाना हुई। तमाम रात बर्फ़ पड़ती रही। ख़ैरियत यही हुई कि हम कोतल-शिकार और कोतल-शिविर को पार कर आये थे। अगर यह हिम-वर्षा हमारे उस पार रहते हुए होती, तो आना मुश्किल हो जाता। अब भी बर्फ़ पड़ ही रही थी। सारे पहाड़ों और नदी के तट पर ताजी पड़ी सफ़ेद बर्फ़ की चादर बिछी हुई थी। सूरज का कहीं पता न था। नदी की धार उन्मुक्त बह रही थी। जिससे पता लग रहा था, कि सर्दी उतनी अधिक नहीं है। रास्ते में आते-जाते गधे और ऊँट मिलते थे। एक जगह एक गधेवाला लारी और उतराई के बिलकुल पास में खड़ा था। ड्राइवर ने 'हटो हटो' कहा। गधेवाला, लारी के पहिए से छूता हुआ, खड़ा होकर कह रहा था—'बरो, ख़ुदा ख़ैर कुनी'! (जाओ, ख़ुदा भला करेगा।) उसके ख़याल में गधे को लेकर लारी के पहिए के नीचे खड़ा होना उसका काम था और ख़ैर करना ख़ुदा का काम था। एक जगह एक लारी सड़क से हटकर नर्म बर्फ़ में फँस गई थी। रास्ता काफ़ी छूटा हुआ था; लेकिन लारीवाले ने बोरों और माल को उतार कर सड़क पर रख दिया था। समझता होगा, अगर हम आगे नहीं जा सकते तो दूसरी लारी आगे क्यों कर जाये! उसका यह भी ख़याल होगा कि यदि रास्ता

रखा रहेगा, तो दूसरे लारी वाले भी उसकी लारी को बाहर करने में मदद करेंगे। हमारे ड्राइवर और उसके साथियों ने कुछ देर तक लारी निकालने की कोशिश की, लेकिन वह बुरी तरह से फँसी हुई थी। फिर उन्होंने सामान उठाकर सड़क के किनारे एक तरफ़ रखा; और हम आगे बढ़े। आगे शागिर्द की बड़ी आबादी मिली। यहाँ भी एक क़िला और कुछ फ़ौज रहती है। छोटी-बड़ी क़िला-बन्दी तो सारे अफ़ग़ानिस्तान में देखने में आती है, जो बतला रही है कि अफ़ग़ानी सरकार को भिन्न भिन्न कबीलों से कितना खतरा रहता है। गुर्बन नदी अब एक चौड़े पहाड़ी मैदान में प्रवेश करने जा रही थी। उसी वक्त हमें नदी के बाम तट से दाहने तट पर आकर पूर्व की ओर रुख बदलना पड़ा। सामने मतक का कस्बा है। अटक (सिंधु तट पर) से मतक तक पठानों (पख्तों या पश्तों) का देश है। जिस वादी में अब हम प्रविष्ट हुए थे, इसे आजकल कोहदामन कहते हैं। पाणिनि के समय (ईसा पूर्व चौथी शताब्दी) इसे ही कपिशा कहा जाता था। कपिशा अपने अंगूरों और अंगूरी शराबों के लिए उस वक़्त सारे भारतीय जगत् में मशहूर थी। जिस तरह आज काबुली अंगूर तारीफ की चीज़ समझी जाती है, उसी तरह उस समय कापिशायनी द्राक्षा (कपिशा के अंगूर) का नाम बिकता था। मतक कपिशा उपत्यका के छोर पर है। यहाँ भी लाल पगड़ी बाँधे दो-एक हिन्दुओं को देखा। पूछने पर मालूम हुआ कि सरकार की ओर से हिन्दुओं को अलग रंग की पगड़ी रखने का कोई निर्बन्ध नहीं है। ये बूढ़े अब भी पुरानी लकीर को ढो रहे हैं। कपिशा की उपत्यका बहुत विशाल है। काबुल की उपत्यका को इससे एक छोटी पहाड़ी अलग करती है। लेकिन काबुल की उपत्यका इतनी गुजान और रमणीय नहीं है। यहाँ तो जिधर भी नज़र दौड़ाइए, बाग ही बाग और गाँव ही गाँव दिखाई पड़ते हैं। इस वक़्त सारी ही भूमि दो दो तीन तीन फीट मोटी बर्फ से ढकी हुई थी; और जाड़े के आरंभ से ही सभी वृक्ष और लताएँ अपने पत्ते छोड़ चुकी थीं। लेकिन हर जगह मिलनेवाली बागों की पाँती, तराशे अंगूरों की

खुत्थियाँ और जहाँ तहाँ सफ़ेदे और चिनार के लंबे लंबे वृक्ष वतला रहे थे; कि वसन्त और ग्रीष्म में यह हरी-भरी उपत्यका कितनी सुन्दर मालूम होती होगी; जब कि सभी वृक्षों में हरे पत्ते होंगे; गुच्छों के वोझ से अंगूरी टह-नियाँ झुक जाती होंगी; पत्तों से भी अधिक लाल सेब-फल डालों से लटकते होंगे, और हर गली कूचे, हर वाग़ वगीची और हर खेत-क्यारी में निर्मल शीतल जल लेकर छोटी मोटी नहरें दौड़ती होंगी, जब धरती का एक अंगुल भाग भी हरी चादर से वंचित न होगा।

गाँवों के मकानों में हर जगह छत से ऊपर उठी एक ऊँची दीवार में सैकड़ों छेद बने हुए थे। पहले मैंने समझा कि दुश्मन से मुक़ावला करने के लिए वन्दूक की नली के ये दराज़ हैं; लेकिन जब उनको हमेशा एक खास दिशा में देखा, और छेदों को भी बहुत नज़दीक़ नज़दीक़ सैकड़ों की तादाद में, तो सन्देह होने लगा। साथियों से पूछने पर मालूम हुआ कि इन पर अंगूरों के गुच्छे सुखाये जाते हैं। ये ही सूखे हुए फल किशमिश और मुनक्का वनते हैं। आगे चहारेकार का वड़ा क़स्वा मिला। यहाँ सड़कों को सुन्दर और सीधी बनाने का बहुत प्रयत्न किया गया है। चौरस्ते पर रास्ता दिखलाने के लिए पुलीस का सिपाही भी खड़ा रहता है। गुम्रग्वाले माल की देख-भाल करते हैं। पुलीसवाले देखते हैं कि कोई मोटर खराब तो नहीं है कि आगे जाकर मुसाफ़िरों को जंगल में ही छोड़ दे। लेकिन इस सारी जाँच-पड़ताल से जनता और सरकार को तो कोई फ़ायदा नहीं होता। हाँ, जाँच करनेवालों को कुछ पूजा-भेंट मिल जाती है। हमारे पास खड़ी हुई एक मोटर लारी पर पुलीसवाले ने ब्रेक का दोष लगाया; और वदले में उसे कुछ पैसे और रोग़नदार गोश्त के साथ पुलाव की जियाफ़्त मिली। नए वाज़ार में पचासों दुकानें सोनारों की थीं; और गहनों का यह शौक़ वतला रहा था कि हम हिन्दुस्तान की पवित्र भूमि में पहुँच गये। आखिर हिन्दुस्तान हिन्दुकुश से शुरू भी तो होता था। आज भी भाषा और संस्कृति की दृष्टि से हिन्दूकुश ही उसकी सीमा है; और भविष्य में भी भारतीय

साम्यवादी प्रजातंत्र-संघ की वही सीमा होगा।

हमारी बाईं ओर एक गांव मिला। सड़क से कुछ हट कर एक जला हुआ मकान दिखलाई पड़ा। साथियों ने बतलाया—यही किलाकन गांव है; और यही जला हुआ मकान बच्चा-सक्का का घर है। मकान की दीवारें अब भी खड़ी हैं; लेकिन उनमें रहनेवाला कोई आदमी नहीं है जो कि मकान को फिर से मरम्मत करने की कोशिश कर सके।

२ बजे हम कपिशा (कोह्-दामन) के अन्तिम छोर पर पहुँचे। एक छोटा सा कोतल (डांडा) था। डांडे पर पहुँच कर हमने दूसरी ओर काबुल (कुभा) की उपत्यका देखी। कपिशा की भाँति ही यह भी बर्फ से ढकी हुई थी। दूर काबुल शहर दिखाई पड रहा था। चढाई की तरह कोतल की उतराई भी बहुत थोड़ी थी। बीच में एक जगह पुलीस के दो सिपाहियों ने लारी को देखा और आगे बढ़ने की इजाजत दी। हम बस्ती में दाखिल हुए। फिर दाहनी तरफ कुछ ऊँची पहाड़ी पर बालाबाग मिला। यह शाही बाग है। आजकल जाड़ो में तो कोई सौंदर्य नहीं, लेकिन गर्मियों में जरूर सुन्दर मालूम होता होगा। बाग के भीतर शाही महल है। आगे हम काबुल शहर में घुसे। सड़कों की मरम्मत की ओर ध्यान दिया गया है; और सरकार की ओर से कितनी ही नई इमारतें बन रही हैं। ४ बजे हम होटल-काबुल के दरवाजे पर पहुँच गये और होटल-प्रबन्धक ने ९ नंबर का कमरा हमें रहने के लिए दिया।

३—काबुल में एक सप्ताह

होटल-काबुल नगर की एक प्रमुख सड़क पर अवस्थित है। सिनेमा-काबुल, बैंक-मिल्ली, अफ़ग़ान्-एकेडेमी और कितने ही सरकारी विभाग इसके नज़दीक हैं। मकान दोतल्ला है। टीन की छत है। हर कमरे के भीतर गर्म करने के लिए अँगीठी रखी है। हाँ, मालूम होता है, मकान बनाने के वक़्त अँगीठी की ओर ध्यान नहीं गया था, इसीलिए मकान की दीवारों में धुएँ की चिमनी का प्रबन्ध नहीं है; और खिड़कियों में से चिमनी बाहर निकाली जाती है। बाज़ वक़्त चिमनी के जोड़ में सूराख़ रह जाने से धुआँ घर में भर जाता है; और भीतर रहना मुश्किल होता है। दो-दो कमरों के बीच में एक-एक बाथ रूम है। पाख़ाना साफ़ है। बड़े और छोटे दो तरह के कमरे हैं। छोटे कमरों में भी दो चारपाइयाँ, दो मेज़ें और एक आलमारी है। रोशनी बिजली की लगी है। छोटे कमरों का किराया प्रतिदिन १५ अफ़ग़ानी (५॥=) है। १० बजे हम बक्सों को लेकर गुम्रुग में गये। २ घंटे की बड़ी परेशानी के बाद बक्सों को दिखा-दुखू कर छुट्टी मिली।

अब अफ़ग़ानिस्तान के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त करने का ख़याल हुआ। गुम्रुग जाते वक़्त हमने एकादमी-अफ़ग़ान का साइनबोर्ड देख लिया था। इसलिए सोच लिया था कि इससे बढ़कर अधिक सहायक हमारे लिए कोई नहीं हो सकता। एकेडेमी में गये। वहाँ एकेडेमी के कुछ मेम्बरों से मुलाक़ात हुई। जिनमें श्री याक़ूब हसन ख़ाँ से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उनसे अफ़ग़ान की संस्कृति, इतिहास और भाषातत्त्व पर कुछ सरसरी तौर पर बातचीत हुई; जिससे पता लग गया कि काबुल भी घर सा बननेवाला है। जब एकेडेमी के डाइरेक्टर शाहज़ादा अहमद अली ख़ां दुर्रानी को पता लगा, तो उन्होंने बड़े आग्रह के साथ बुलाया। घंटों बात होती रही; और

उस वक़्त तक हमें यह नहीं मालूम हो सका कि जिस व्यक्ति से हम बात कर रहे हैं, वह राजवंश से ताल्लुक रखता है। शाहज़ादा अहमद अली को अपने देश और जाति का बहुत अभिमान है। वह चाहते हैं कि मजहब के कारण अफगानी संस्कृति, उसके इतिहास, उसकी भाषा को जो पीछे ढकेल दिया गया था, उसका प्रतीकार किया जाय; और हर एक पठान के दिल में बामियान, हड्डा, वेगराम से प्राप्त अपने पूर्वजों की उत्कृष्ट कला का अभिमान हो। उसको मालूम होना चाहिए कि आर्यों की सबसे पुरानी पुस्तक ऋग्वेद का बहुत सा प्राचीन और महत्त्वपूर्ण भाग पठानों की भूमि में पठान-दिमाग द्वारा बनाया गया है। पठान कौम ने ही पाणिनि जैसे सर्वोच्च व्याकरणकार को पैदा किया। पठान-माताओं ने असंग और वसुबन्धु जैसे महान् दार्शनिक पैदा किये, जिनके गंभीर विचारों की छाप भारत के ही सभी दर्शनों में ही नहीं मिलती और जिनका अनुयायी बनने के लिए चीन और जापान के विचारक ही प्रतियोगिता नहीं करते; बल्कि असंग के योगाचार दर्शन से उत्प्राणित होकर इसलाम का सूफी मत और ब्राह्मणों का वेदान्त बना। अफगान एकादमी का डाइरेक्टर होने के लिए जैसे दिल और दिमाग की जरूरत है, शाहजादा अहमद अली उसके योग्य हैं। उसके बाद भी मुझे उनसे दो तीन बार मिलने का मौका मिला; और सांस्कृतिक जिज्ञासा तथा तत्सम्बन्धी खोज के विषय में उनके प्रश्नोत्तर का खात्मा ही न होता था। एकदमी के दूसरे मेम्बर सैयद कासिम रस्तिया, जनाब अहमद अली कुह-जाद आदि भी वैसे ही उत्साही स्कालर हैं। एकेडेमी पश्तो-साहित्य के निर्माण और प्रचार की कोशिश कर रही है। पश्तो भाषा की पाठावली बन रही हैं; और पश्तो व्याकरण को पूरा करने के लिए जबर्दस्त कोशिश हो रही है। इसी सबंध में एकेडेमी 'ज़ेरी' नामक एक पर्चा अपनी ओर से निकालती है। एकेडेमी की कोशिश है कि जहाँ तक हो सके, फारसी-अरबी शब्दों की जगह पर पश्तो शब्दों को ही इस्तेमाल किया जाय। हमको यह मालूम है कि पश्तो जाति और भाषा का संस्कृत से मादरी

ताल्लुक़ है। यद्यपि एकेडेमी में संस्कृत जाननेवाला कोई विद्वान् नहीं है, इसलिए वहाँ के पंडितों को अंगरेजी और फ्रांसीसी किताबों से ही मदद ले कर कुछ करना पड़ता है; लेकिन उनकी बड़ी इच्छा है कि उनके कार्य-कर्ताओं में कोई संस्कृतज्ञ भी हो। मैंने कहा कि आप किसी होनहार नौजवान को संस्कृत पढ़ने के लिए बनारस भेजें।

श्री याक़ूब हसन खाँ अफ़ग़ानिस्तान की हिन्दू-आर्य-भाषाओं की खोज के संबंध में बड़ा काम कर रहे हैं। उन्होंने काबुल से निकलनेवाले 'साल नामा काबुल' (१९३४–३५) में 'तारीख़ ज़बानहा दर अफ़ग़ानिस्तान' (पृष्ठ ११९ से १५२ तक) नाम से एक विद्वत्तापूर्ण लेख लिखा है। महायुद्ध के समय लाहौर के कालेजों के कुछ लड़के छिपकर हिन्दुस्तान से भाग निकले थे। उस वक़्त अख़बारों में उनकी बहुत चर्चा हुई थी। याक़ूब हसन उन्हीं नौजवान विद्यार्थियों में से एक थे। काबुल में रहते उनको २२ साल हो गये। वह अफ़ग़ान प्रजा हैं; लेकिन अपने देश के साथ उनका अत्यन्त प्रेम है। भाषा-सम्बन्धी खोजों से उनको पता लगा कि अफ़ग़ानिस्तान की भाषाओं और जातियों का इतिहास भारत के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रखता है। तबसे उनका उत्साह और भी बढ़ गया है। वैज्ञानिक खोजों में भी उनमें मातृभूमि की सेवा का भाव आ जाने से अपने काम में बड़ी सरसता मालूम होती है। वह मुसलमान हैं; और अपने धर्म को मानते हैं; लेकिन साथ ही वह यह भी अच्छी तरह समझ गये हैं कि जातीयता, संस्कृति, भाषा इनपर मजहब को दख़ल देने का क़ोई अख़्तियार न होना चाहिए। मजहब बदलने से जाति नहीं बदल सकती। उन्होंने अफ़ग़ानिस्तान की पश्तो, नूरिस्तानी (लाल काफ़िरी,) पशई, शग़नी, उरमुड़ी, प्राची, बिलोची आदि भाषाओं की बहुत खोज की है; और उनकी खोज अबतक जारी है। वैसे मैं दो तीन दिन बाद ही काबुल से चला आता, लेकिन याक़ूब हसन खाँ के आग्रह और दिलचस्पी को देखकर मुझे कुछ दिन और वहाँ ठहर जाना पड़ा। मैंने उन्हें अफ़ग़ानिस्तान की हिन्दू-आर्य भाषाओं,

विशेष कर पश्तो, नूरिस्तानी, पशई और प्राची के प्रधान और स्थानीय बोलियों पर उच्चारण और सुप्-तिङ् प्रत्यय के अनुसार नक्शों के साथ सुविस्तृत खोज करने का परामर्श दिया; और साथ ही हिंदु-आर्यों के विस्तार के बारे में एक नक्शा* बना दिया, जिससे मालूम हो, कि किस काल में किस स्थान पर वह रहते थे और क्या व्यवसाय करते थे।

शुक्र (५ फ़रवरी) को तातील थी, इसलिए काबुल म्यूजियम् देख नहीं सकते थे। एकेडेमी के इतिहास-विभाग के स्कालर अहमद अली खाँ ने कहा—फ़्रेंच दूतावास के मोशिए मोनिए को लेकर म्यूजियम् देखना अच्छा होगा। वह कई जगह की खुदाइयों में रहे हैं। मोशिए मोनिए बड़ी ख़ुशी से

---

*	काल (ई० पूर्व)	वासस्थान	व्यवसाय
हिन्दू-यूरोपीय			
कँटम्, शतम्	३०००	बाल्तिक-वोल्गा	पशुपालन
लियुअन-स्लाव, हिन्दू-ईरानी	२५००	कालासागर-उराल	पशुपालन
ईरानी, हिन्दू आर्य	२०००	हिरात्-पामीर	कृषि
,,	१५००	वक्षु-स्वात	कृषि
,,	१३००	हिंदूकुश-ऊपरी सिन्धु,	कृषि
,,	११००	हिंदूकुश-ऊपरी गंगा,	उद्यान
,,	९००	हिंदूकुश-नर्मदा-गंडक	
,,	७००	हिंदूकुश-कोकण-गंगाद्वार	
,,	५००	हिंदूकुश लंका-आसाम	
,,	३००	हिंदूकुश बर्मा सुमात्रा	
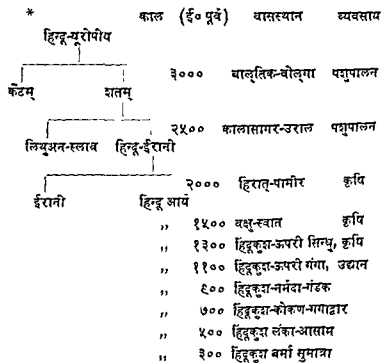
हमारे साथ चलने के लिए तैयार हो गये; और उन्हींकी मोटरकार पर हम लोग दोपहर को 'मूज़ी कावुल' पहुँचे। म्यूजियम् शहर से वाहर दारुल्-अमान में है। शाह अमानुल्ला यहाँ पर एक नया नगर वसाना चाहते थे। म्यूज़ियम् के सामने उनका वनवाया महल अव भी मौजूद है, लेकिन खाली पड़ा है। कितनी ही और इमारतें उस वक़्त वनवाई गई थीं, जिनको दफ़्तर तथा दूसरे कामों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। विश्वविद्यालय भी इधर ही क़ायम होने जा रहा है। नई सरकार ने अमानुल्ला के इस नये नगर की योजना को छोड़ नहीं दिया है, वस्तुतः शाह नादिर और उनके पुत्र शाह जाहिर की हुकूमतों ने अमानुल्ला के किसी भी राजनीतिक, सामाजिक योजना को अग्राह्य नहीं बनाया। फ़र्क़ इतना ही है कि जिन वातों से पठानों के धार्मिक विश्वासों पर सीधी ठोकर लगती थी, उनको स्थगित या धीरे से करना शुरू किया है। अफ़ग़ानी फ़ौज और सेनापतियों की पोशाक विलकुल यूरोपीय ढंग की है। दूसरे अफ़सर भी प्रायः सारे ही टाई, कोट, पतलून पहनते हैं। और पगड़ी की जगह अफ़ग़ानी टोपी लगाते हैं। ऊँची दीवार की वाल निकली यह टोपी तो रूस में भी वहुत अधिक पहनी जाती है। हाँ, हैट लगाने में कुछ हिचकिचाहट आ गई है, लेकिन स्कूल के लड़कों की पोशाक में छज्जेदार टोपी अनिवार्य है। दूसरे लोग भी शाम के वक़्त अकसर फ़्रेंच ढंग की गोल टोपी पहनते हैं। वज़ीर और सेनापति तक कभी कभी हैट पहनकर निकलते हैं। स्त्रियाँ आमतौर से सड़कों पर नहीं दिखाई पड़तीं; और जो दिखाई पड़ती भी हैं, वह वुरक़े में; लेकिन मुझे मालूम हुआ कि औरतें घरों के भीतर अपरिचित से भी परदा नहीं करतीं। अपनी ईरानी वहनों की तरह इन्होंने भी यूरोपी पोशाक धारण कर ली है; और वहुतों ने वाल भी कटा लिये हैं। लोग वतला रहे थे कि शाह अमानुल्ला के शासन के अन्तिम वरसों मे पर्दा कावुल में विलकुल टूट गया था; औरतें खुलेआम सड़कों पर पश्चिमी पोशाक पहने वेनक़ाव घूमती थीं।

म्यूज़ियम् (जादू घर) एक दो तल्ला खूवसूरत इमारत में है जो दो

ही साल पहले बनकर तैयार हुई है। अमानुल्ला के समय में फ्रेंच मिशन ने हड्डा में खुदाई की थी, और वहाँ बहुत सुन्दर सुन्दर चूने आदि की बनी मूर्तियाँ मिली थीं। मैंने उन मूर्तियों के कुछ हिस्सों को पेरिस के मूज़ी-ग्यूमे में देखा था। उनके काफी भाग काबुल में उस समय की म्यूजियम् की इमारत में रखे हुए थे। जब काबुल पर बच्चा-सक्का का अधिकार हो गया, तो मजहब के दीवानों ने कला के उन उत्कृष्ट नमूनों पर भी हाथ साफ किया। हम लोग पहले उस कमरे में गये, जिसमें हड्डा की मूर्तियाँ हैं। सैकड़ों चेहरे मौजूद हैं। इन चेहरों के बनानेवालों ने भावचित्रण और जातीय विशेषता के साथ रेखांकन में कमाल कर दिया है। कोई दो चेहरा एक तरह का नहीं है। मैंने अपने दोस्त से इन चेहरों की तारीफ की, और यह भी कहा कि यह इतनी बड़ी संख्या में मौजूद हैं। अहमद अली साहब ने कहा—हड्डा के चित्रों की तो एक बड़ी भारी राशि थी। अगर आप सबको देख पाते तो और भी आश्चर्य करते। अधिक संख्या को तो कला के दुश्मनों और राष्ट्र के शत्रुओं ने नष्ट कर दिया है। मैंने पूछा—ये कैसे बच गये? जवाब मिला—इतना भारी संग्रह था, कि एक एक को तोड़ने में वे असमर्थ थे। बीसवीं सदी की इस बर्बरता को सुनकर रोंगटे खड़े हो गए। हड्डा के संग्रह में एक पत्थर पर बीच में मैत्रेय और आसपास कुछ और मूर्तियाँ उत्कीर्ण थीं। मैंने देखा, मैत्रेय के दाहने-बायें जो स्त्री-पुरुषों के आकार बने हैं, उनमें फर्क है। गौर से देखने पर मालूम हुआ कि एक ओर शक स्त्री-पुरुष टोपी, जामा और पाजामे में हैं, दूसरी ओर के स्त्री-पुरुष और बच्चे की वेशभूषा उनसे बिलकुल भिन्न है। सीधे सादे पाजामे की जगह गोल फूला-सा सुन्दर सलवार उन्होंने पहन रक्खा है। वही सलवार जिसे पठान स्त्री-पुरुष आज भी पहनते हैं। उनके कानों और कंठ में भारतीय ढंग के आभूषण हैं। मैंने अपने साथियों का ध्यान उस ओर आकर्षित करते हुए कहा—यह देखिए १७०० वर्ष पूर्व के पठान दम्पती खड़े हैं। अहमद अली साहब बड़े प्रसन्न हुए और उन्हें आश्चर्य हो

रहा था कि इतने दिनों से ये मूर्तियाँ यहाँ थीं, और उन्होंने उन्हें नहीं पह-चाना। ईसा की दूसरी तीसरी शताब्दी में भी पठान स्त्री-पुरुष सलवार
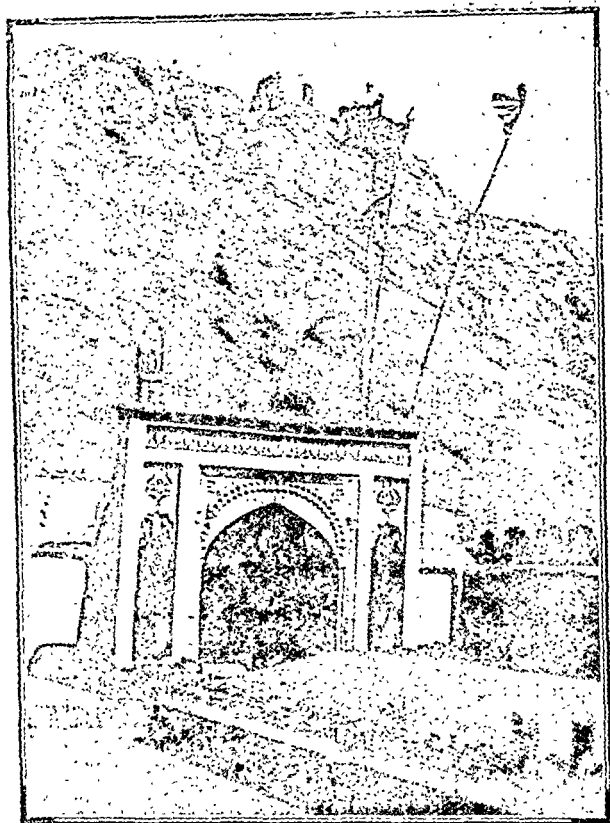
कन्दहार की जियारत

पहनते थे। यह इस गान्धार प्रस्तर-शिल्प के नमूने ने सिद्ध कर दिया।

दूसरी जगह बामियाँ की दीवारों पर उत्कीर्ण चित्रों की कुछ नकलें देखीं। बामियाँ के पर्वत-गात्र में उत्कीर्ण सैकड़ों फीट ऊँची बुद्ध-मूर्तियाँ अपनी विशालता के लिए संसार में प्रसिद्ध हैं। दूर दूर से लोग बामियाँ को देखने आते हैं और निर्माताओं के श्रम, कला-नैपुण्य और हिम्मत की दाद देते हैं। आज के अफगान भी अपने पूर्वजों की इस कृति पर अभिमान करते हैं। बामियाँ की मूर्तियों के गवाक्षों और भीतों में सुन्दर रंगीन चित्र थे; वैसे ही जैसे कि अजन्ता में पाये जाते हैं। लेकिन इनका अधिकांश भाग नष्ट हो चुका है। कहीं कहीं ऊँचे गोखों में कुछ चित्र बच गये हैं, और उनकी नकल करवाई गई है। काबुल आर्ट्स-स्कूल के विद्यार्थियों को यह चित्र वैसे ही इंसपीरेशन (मानसिक प्रेरणा) देते हैं, जैसे भारतीय कला के विद्यार्थियों को अजन्ता के चित्र। मैंने देखा, कितने ही खंडित चित्रों का विद्यार्थी प्रतिचित्रण कर रहे थे, और कितनों के खंडित अंश को अपने मन से पूरा कर दिखलाने की कोशिश कर रहे थे। बामियाँ के विशाल बुद्ध-रूपों का निर्माण ईसा की पहली शताब्दी में सम्राट् कनिष्क और उनके उत्तराधिकारियों ने कराया था। कपिशा-उपत्यका के स्याह-गिर्द (शाह गिर्द) स्थान से मिली कुछ मिट्टी की रंगीन मूर्तियाँ रखी थीं। रेखांकन, आभूषण आदि में यह मध्यकालीन भारतीय मूर्तियों जैसी हैं। एक जगह पचासों स्त्री-मूर्तियों के सिर रखे थे। इनमें पचासों प्रकार से केशों को सजाया गया था; और कुछ सजाने के ढंग तो इतने आकर्षक और बारीक थे कि मोशिए मोनिए कह रहे थे—इनके चरण में बैठ कर पेरिस की सुंदरियाँ भी बाल का फ़ैशन सीखने के लिए बड़े उल्लास से तैयार होंगी। उस वक़्त यंत्र से बालों में लहर डालने का ढंग मालूम नहीं था, फिर न मालूम कैसे उस वक़्त की स्त्रियाँ ऐसी विचित्र और बारीक लहरें बनाने में समर्थ होती थीं।

एक कमरे में बेग्राम-बुलन्द शहर की खुदाई से प्राप्त चीजें रखी हुई थीं। बेग्राम कपिशा (कोह-दामन) उपत्यका के प्राचीन नगर का खँडहर है। पुरातत्त्वज्ञों का अनुमान है कि यहीं पर कनिष्क की दूसरी राजधानी

थी। खँडहर मीलों तक चला गया है। खुदाई अभी थोड़ी सी जगह में पहली ही बार शुरू हुई है; और उसमें प्राप्त चीजों को देखकर दंग रह जाना पड़ता है। खुदाई अफगान सरकार की आज्ञा से फ्रेंच-मिशन करवा रहा है; और जो चीजें प्राप्त होती हैं उनको दोनों बाँट लेते हैं। इस प्रकार जितनी चीजें हमने म्युजियम् में देखीं, वह अफगान सरकार के भाग की हैं, फ्रेंच-मिशन ने अपने हिस्से को मूजी-ग्यूमे (पेरिस) में रक्खा है। शीशे के अन्दर हाथीदाँत पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ देख कर मैं तो चकित हो गया। ये मूर्तियाँ ठीक वैसी ही हैं, जैसी साँची की। वही मौर्य-शुंग कालीन चेहरे मोहरे, वही वस्त्राभूषण और वही शरीर के अंकन का ढंग इसमें पाया जाता है। हाथी के दाँत की चीजों का आधा भाग ही हमारे सामने था। पेरिस में गये दूसरे भाग को हमने नहीं देखा, लेकिन हम निस्संकोच कह सकते हैं कि यह साँची, भरहुत या इसी तरह के किसी दूसरे मौर्य-कालीन स्तूप और उसके प्रस्तरशिल्प की नकल है। बहुत सम्भव है कि साँची, भरहुत और बुद्ध गया के दृश्यों से यदि बारीकी के साथ मिलान किया जाय, तो मूल का पता लग जाय। यह भी सम्भव है कि उस तरह का कोई स्तूप अफगानिस्तान ही में रहा हो, क्योंकि अफगानिस्तान भी तो मौर्य-साम्राज्य के अन्तर्गत था। हाँ, वैसे वस्त्र गर्म जगहों में पहने जा सकते हैं। अफगानिस्तान जैसी सर्द जगह में इतने कम वस्त्रों से काम नहीं चल सकता। हाथी दाँत पर क्यों किसी पुराने स्तूप की नकल की गई? पवित्र देवालयों और स्तूपों की नकल करने की प्रथा हम तिब्बत में प्राप्त कुछ नमूनों से जानते हैं। वहाँ नर्थङ् मठ में मैंने खुद बुद्ध-गया के मन्दिर को, उसके प्राकार, तीनों फाटक और भीतर के बहुत से स्तूपों और अशोक-कालीन कठघरे के साथ पत्थर और लकड़ी के दो नमूनों के रूप में पाया। यह नमूना बारहवीं सदी में बना था। बेग्राम में प्राप्त नमूना चौथी सदी के पीछे का तो हो नहीं सकता। बहुत मुमकिन है कि वह उससे दो-तीन सदी और पहले बना हो। ये चीजें बेग्राम के जिस खँडहर में मिलीं, वह किसी सम्पन्न बौद्ध गृहस्थ का घर

था। हाथी के दांत के चित्र तीन बक्सों में मिले थे। इनमें हथेली से कुछ कम बड़े हाथी के दाँत के फलक पर दो स्त्री-चित्र अंकित हैं। ये उत्कीर्ण नहीं हैं। इनमें सिर्फ़ बारीक रेखाएँ ही खोदी गई हैं। संभव है, शुरू में इन पर रंग भी रहा हो; और १५ सदियों तक ज़मीन के अन्दर दफ़न रहने के कारण वह उड़ गया हो। इन चित्रों में अजन्ता के उत्कृष्ट स्त्री चित्रों का पूर्वाभास मिलता है। मैंने कहा—ऐसी अनमोल निधि का परिचय तो बाहर के विद्वत्समाज को तुरन्त मिलना चाहिए था। यह तो अद्‌भुत चीज़ अफ़ग़ानिस्तान में मिली है। ऐसी चीज़ है जिसकी श्रेणी की वस्तुएँ हिन्दुस्तान में भी बहुत कम मिली हैं और हाथीदाँत की इतनी सुंदर कला तो कहीं अब तक नहीं मिली थी। मुझे याद आया कि साँची के एक तोरण-द्वार पर दाताओं का नाम 'विदिशा के दन्तकार' लिखा गया है। उस लेख से मालूम होता है कि हाथी के दाँत पर काम करनेवाले उस समय काफ़ी संख्या में रहते थे; और उनका पेशा इतना चला हुआ था कि वह काफ़ी धन-सम्पन्न थे। तभी तो वे साँची के उस पाषाण-तोरण जैसी एक इमारत बनाने में समर्थ हुए। मुमकिन है, आगे या पीछे इन दन्तकारों ने साँची के नयनाभिराम स्तूप को हाथीदाँत पर उतारा हो।

बेग्राम की खुदाई में १॥ हाथ लम्बी लकड़ी की गंगा-जमुना की मूर्तियाँ मिली हैं। इनकी बनावट गुप्त-कालीन या कुछ पीछे की सी मालूम होती हैं। लकड़ी यद्यपि बहुत जगह सड़ गल गई है, लेकिन तो भी स्त्री-आकार और मगर (गंगा-वाहन) और कछुए (यमुना वाहन) का ढाँचा साफ दिखलाई पड़ता है। बेग्राम के उसी धनिक के घर से बहुत से काँच के मद्यपात्र और पानचषक मिले हैं। इन काँच के बर्तनों में से कितने ही रूम और यूनान तक से आये होंगे। उनकी सुन्दर बनावट ही चित्ताकर्षक नहीं है, बल्कि उनके देखने से यह भी मालूम होता है कि कापिशायनी सुरा अपने स्वाद और रंग ही के लिए प्रसिद्ध नहीं थी, बल्कि उसके रखने और पीने के पात्र भी बड़े नफ़ीस होते थे। कपिशा को पाणिनि ने एक नगर के नाम के तौर पर लिखा

ही नहीं। पेशावर के बाबा राघवदास के अधीन ही आशामाई का मंदिर भी है। आज वसन्त-पंचमी का दिन था, हल्वे और पूरियों की कड़ाहियाँ चढ़ी हुई थी; और चारों ओर आटे और घी की सोंधी सोंधी सुगन्ध फैल रही थी। एक कमरे में कुछ आदमी बैठे धर्मचर्चा कर रहे थे। हम सीधे मन्दिर की तरफ़ गये। जूता उतारकर मन्दिर की दलीची में पहुँचे। पुजारी और दूसरे लोगों ने आ कर झट नया क़ालीन बिछा दिया। सलाम और नमस्कार के बाद हमें बैठाया गया। कुछ मेवे और मिठाइयाँ लाकर सामने रखी गईं। चाय का बहुत आग्रह हुआ; लेकिन हम लोग अभी चाय पी कर आये थे
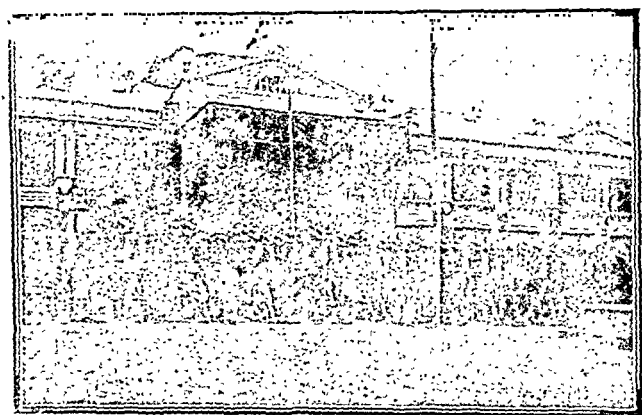
सैनिक प्रदर्शन (काबुल)

इसलिए उसे स्वीकार न कर सके। फिर हमने मन्दिर, महन्त, देवता और दूसरी बातों के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर करने शुरू किये। लोगों का बहुत आग्रह हुआ कि आज वसंत-पंचमी है, प्रसाद यहीं ग्रहण किया जाय।

चन्द मिनटों में हारमोनियम, सितार और तबला भी आ गया और भक्तों ने तुलसीदास के पद गाने शुरू किये। पूछने पर उन्होंने बतलाया कि काबुल में ढाई सौ घर (एक दूसरे सज्जन के कहने के मुताबिक़ ४०० घर)

हिन्दू है। जिनमें कहा गया, कि 'चारो वर्ण है'। वर्णों के बारे में पूछने पर मालूम हुआ कि सारस्वत और मोहियाल ब्राह्मण है, खत्री और अरोड़ा क्षत्रिय, उत्तरार्द्धी और दक्खिनी बनियाँ वैश्यों में और सुनार आदि शूद्रों में गिने जाते हैं। हिंदुओं का सत्यानाश जिस वर्ण-व्यवस्था के कारण हुआ उसे यह काबुली हिन्दू अब तक उसी तरह पकड़े हुए हैं। खाने पीने में जाति-पाँति का खयाल नहीं। लेकिन शादी-ब्याह में उसका बहुत जोर है। अफ़गानिस्तान में काबुल के अतिरिक्त चारिकार, बेग्राम-[illegible], सराय-ख्वोजा, (ये तीन कपिशा उपत्यका में हैं); कन्दहार, गजनी और जलालाबाद में हिन्दू बसते हैं। अधिकतर हिन्दू दुकानदार हैं और कुछ सरकारी नौकरियों में पाये जाते हैं। अफगानी हिन्दुओं के [illegible] सरकार कोई भेदभाव का वर्ताव नहीं करती। बल्कि एक व्यापारी हिन्दू के कथनानुसार तो हिन्दू मुसलमानों की अपेक्षा भी अधिक सरकार के [illegible] हैं। लाल-पगड़ी और पीले बुरके का जो कानून हिन्दू [illegible] के लिए पहले था, वह अब उठा दिया गया है। पुराने [illegible] के बूढ़े [illegible] अब भी लाल पीले रंग का व्यवहार करते हैं, लेकिन सरकार की ओर से कोई निर्बन्ध नहीं है। हिन्दू अपने को मुल्तान और [illegible] से आया कहते हैं। घरों में वह पंजाबी भाषा बोलते हैं। [illegible] उन्हें अपने अनेक हमलों मे हिन्दुस्तान से लाया था। [illegible] के [illegible] भी काबुल और कपिशा की उपत्यका पूर्णतया हिन्दू [illegible]। [illegible] के प्रचार का सूत्रपात दसवीं शताब्दी के अन्त में हुआ। [illegible] में [illegible]-शासन के साथ हिन्दुओं का धर्म भी काबुल से [illegible]।

मैंने पूछा—अफगानिस्तान में [illegible] कौन कौन हैं? जवाब मिला—मानसरोवर (दर्रा [illegible] (गर्गा [illegible] के पास कलाय-गगर में), [illegible], [illegible] का [illegible] (तासकुर्गान और ऐबक के [illegible] 'चश्मा-आब' [illegible] है।) और बाबानानक [illegible] के [illegible] मुल्तानपुर में)।

इन नामों से ही पता लगता है कि आजकल के हिन्दू अफ़ग़ानिस्तान के पुराने हिन्दुओं के वंशज नहीं हैं। अगर ऐसा होता, तो अपने पूर्वजों की कहानियों और तीर्थ-संबंधी परंपरा को ज़रूर याद रखते। ऐतिहासिक खँडहरों में हिन्दू-तीर्थ न मान कर कुछ साधारण चश्मों और तालावों तक—जिनके पास भी वैसे पुराने बड़े ध्वंसावशेष नहीं हैं—अपने तीर्थों को परिमित मानना उपर्युक्त परिणाम को दृढ़ करता है। यह भी संभव है कि महमूद-गज़नवी के समय में न आकर यह और भी पीछे मुग़लों के शासन-काल में आये हों।

आशामाई के मन्दिर में शालिग्राम ठाकुर जी की स्थापना है। पुजारी और प्रबन्धक काबुल के ही एक गृहस्थ हैं।

६ फ़रवरी को हम अपने लिए सरहद से पार होने का वीज़ा बनवा लाये। इसी वीजा पर हम १० तारीख़ तक रह सकते थे, लेकिन हम जाने के लिए उत्सुक थे। इधर बर्फ़ ज़ोर की पड़ गई थी। सारे शहर की सड़कों पर एक एक फ़ुट मोटी उसकी तह जमी हुई थी। जलालाबाद जानेवाली डाक की लारी भी दो दिन के लिए बन्द हो गई। इसलिए यही मना रहे थे कि बर्फ़ बरसना बन्द हो; सूर्य ख़ूब प्रचण्ड हो कर उगें, जिसमें रास्ते की बर्फ़ पिघल जाय। हमारी प्रार्थना को मानकर सूर्य प्रचण्ड होकर उगे, लेकिन जब हम सड़क पर निकले, तो देखा चारों ओर पानी और कीचड़ पिच पिच कर रही है। अब मन कह रहा था, क्या ही अच्छा होता कि जब तक हम काबुल में हैं, तब तक बर्फ़ पिघलती ही नहीं; और पत्थर जैसे सख्त कर्पूर श्वेत हिमाच्छादित राज-पथों पर हम निर्द्वन्द्वता से घूमते। यदि कहीं इस प्रार्थना को सूर्य देवता स्वीकार कर लेते, तो काबुल शहर ही में नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान के रास्तेवाले पहाड़ों पर भी बर्फ़ जम जाती; और हमें काबुल में बैठ कर माला फेरनी पड़ती।

हिन्दुस्तानी सौदागर अफ़ग़ान-सरकार की व्यापारिक नीति की बड़ी निन्दा करते थे। जब किसी के स्वार्थ पर हमला किया जाय, तो निन्दा छोड़ तारीफ़ कैसे करेगा। हिन्दुस्तानी (हिन्दू और मुसलमान दोनों)

अफगानिस्तान के बड़े बड़े शहरों के बड़े बड़े सौदागर थे। आयात और निर्यात का अधिकांश व्यापार उनके हाथ में था। सरकार ने यह काम अब अर्द्ध-सरकारी कम्पनियों को दे दिया है; जिन कम्पनियों के हिस्से को अफगान प्रजा ही खरीद सकती है। कुछ व्यापारों के लिए हिन्दुस्तानी सौदागरों को भी स्वतंत्रता दी गई है। लेकिन इस शर्त के साथ कि वह अपने रोज़गार में अफगानों को भी साझीदार बनायें। इस नीति से अफगानी प्रजा (जिनमें वह अफगानी हिन्दू भी शामिल हैं, जिनका गुजर-बसर सिर्फ व्यापार पर है) को बहुत फायदा हुआ और कितने हिन्दुस्तानी व्यापारियों को अपना कारबार बन्द कर हिन्दुस्तान लौट आना पड़ा है। एक पंजाबी मुसलमान व्यापारी सरकार को बड़ी कड़वी-मीठी सुना रहे थे। कह रहे थे, हमारी दुकानें काबुल के अतिरिक्त ३-४ और बड़े शहरों में भी। सरकार की व्यापारी पालिसी के कारण और जगह के कारबार को हमें अर्द्ध-सरकारी कम्पनियों के हाथों बेच देना पड़ा। काबुल में हमें ५ साल के लिए काम करने की इजाजत मिली है, जिसमें दो साल बीत चुके हैं। कहा जा रहा है कि तुम अफगान सौदागर को भी अपना साझीदार बनाओ, तो तीन वर्ष के बाद भी तुम्हें कारबार करने की इजाजत मिल जायगी। मैंने कहा—आपके साथ तो सरकार बड़ी रियायत कर रही है। जवाब मिला—रियायत क्या खाक है, हमारा जिस चीज का व्यापार है, उसकी खपत मुल्क में बहुत कम है, और चीज़ें भिन्न भिन्न मुल्कों से मँगानी पड़ती हैं। जिसके लिए विशेष जानकारी की आवश्यकता है। नफा कम और दिक्कत ज्यादा। इसीलिए यह रियायत दी गई है। उन्होंने कहा—उनकी ही तरह और बहुत से हिन्दुस्तानी व्यापारी हैं, जिनको व्यापार में लगी हुई पूँजी कलदार (हिन्दुस्तानी रुपये) के रूप में मिल जाय, तो खुशी खुशी अपने घर लौट जाने के लिए तैयार हैं।

** **

जैनल-इमारत (काबुल)

चहल-सुतून (काबुल)

वृक्ष को हरा कर दिया, जिससे काबुल के अमीर उनका लोहा मान गये। वह सूखे से हरा हुआ वृक्ष आज भी सूख कर आँगन में पड़ा हुआ है। हमने सोचा, शायद, नाथपंथ की कोई पोथी या बानी यहाँ देखने को मिलेगी, लेकिन यहाँ वैसा कुछ न था। मठ की कोठरियाँ अच्छी हैं। बिजली की रोशनी है। आने-जानेवाले मुसाफ़िरों के लिए ठहरने का यह अच्छा स्थान है। इस मठ के बड़े महन्त दवेंडाकी पत्तीवाले महन्त मनमोहन स्वामी पेशावर में रहते हैं।

* *

श्री याकूब हसन खाँ ने यद्यपि नियम से भाषा-तत्व का अध्ययन नहीं किया है, और उन्होंने संस्कृत भी नहीं पढ़ी है, लेकिन उनमें प्रतिभा है। पंजाबी, हिन्दुस्तानी, पश्तो और फ़ारसी का अच्छा ज्ञान होने से भाषाओं की समानता और असमानता पर उनका काफ़ी ध्यान आकर्षित हुआ है। इसी से वह भाषा-तत्व सम्बन्धी खोज में लगे। मेरे वहाँ रहने के समय का उन्होंने अच्छा उपयोग किया। उन्होंने हज़ारों पश्तो शब्दों के संस्कृत प्रतिशब्द मुझसे पूछे। पश्तो को कुछ लोग खींच तान कर फ़ारसी से मिलाना चाहते थे; लेकिन याकूब हसन खाँ ने पंजाबी, हिन्दुस्तानी तथा कुछ यूरोपीय विद्वानों के संगृहीत शब्दों का सादृश्य दिखला कर पश्तो का संस्कृत से संबंध साबित किया। हम दोनों ने जो इधर संस्कृत से पश्तो को मिलाना शुरू किया, तो यह स्पष्ट हो गया कि पश्तो संस्कृत-वंश की भाषा है। उसके उच्चारण में और कुछ शब्द-कोष में भी फ़ारसी की छाप पड़ी है, लेकिन संस्कृत की अपेक्षा वह नगण्य है। आप् का फ़ारसी में आब् हो जाता है; और पश्तो में उसी का ओबा, लेकिन पश्तो में ऐसे शब्दों की अधिकता पाई जाती है, जिनका सादृश्य फ़ारसी में न मिलकर संस्कृत में ही मिलता है। जैसे संस्कृत में पानी के लिए आने वाला शब्द 'वारि' पश्तो में 'वाल' है और संस्कृत 'तोय' तो 'तोय' ही रह जाता है। कितने ही वैदिक शब्दों का

प्रयोग भी पश्तो में मिलता है। जैसे 'गिरिश' का 'ग़रसै' (गिरि में रहने वाला) 'अप्‌शा' का 'ओसैं' (पानी में रहने वाला)। एक दिन याक़ूब हसन साहब ने काबुल के पास की एक पहाड़ी 'जम्-ग़र्' के नाम के बारे में कहा—यह शब्द अरबी-फ़ारसी का नहीं है। गिरि का ग़र् हो जाता है और जम् का भी कोई संस्कृत प्रतिशब्द होना चाहिए। मैंने जोतिसियों और सयानों की भाषा में कहना शुरू किया—'यह पहाड़ काबुल शहर के दक्खिन ओर है?' जवाब मिला—'हाँ'।

"उसके पास क़ब्रिस्तान है?'

"हाँ!"

हमारे दोस्त को आश्चर्य होने लगा कि मुझे यहाँ तक कैसे मालुम हो गया। मैंने कहा—आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है। जोतिस और भूत-प्रेत में हमारा विश्वास नहीं है। हम देखना चाहते थे, कि क्या हम जम् शब्द को संस्कृत 'यम' से बदल सकते हैं? यम मृत्यु का देवता है। उसकी दिशा दक्षिण है; और हिन्दुओं के शहरों और गाँवों में मरने के बाद मुर्दों को जिस मरघट में जलाया जाता है, वह शहर से दक्षिण ओर ही रहता है। यह देखा गया है, कि जातियों ने अपना धर्म छोड़कर ऐसे धर्म को अपनाया, जो उनके इतिहास, संस्कृति—सभी चीज़ों से उल्टा है; लेकिन तब भी दो बातों को वे नहीं छोड़ सकीं। एक तो अपने पुनीत स्थान (देवालय, मठादि के स्थान) की पवित्रता और सन्मान। मन्दिरमठ अपने पूर्व रूप में नहीं रहे; लेकिन वही स्थान मसजिद, रौज़ा या ज़ियारत के रूप में पूजा जाने लगा। दूसरी बात जो वह नहीं छोड़ सकीं, वह यही मरघट है। उन्हीं पुराने मरघटों को इसलाम स्वीकार करने पर क़ब्रिस्तान के रूप में बदल दिया गया। इस प्रकार आपका जम्ग़र् यमगिरि है।

पठानों के एक क़बीले को 'सड़वन' कहते हैं। प्रश्न था, इसका क्या अर्थ हो सकता है? पूछने पर मालूम हुआ, सड़ शर या सरकंडे को कहते हैं और 'वन'=वाला को। मैंने कहा—यह शरवत् हो सकता है। अम्बाला

ज़िले में बहने वाली घग्घर नदी पुराने समय में शरावती कही जाती थी; और यही प्राची (पूर्व के मुल्क युक्तप्रान्त और विहार) और उदीची (पंजाब) को अलग करती थी। इसी का दूसरा नाम सरस्वती भी मिलता है। गोत्रों की सूची ढूंढ़ने से शरद्वत और सारस्वत दो नाम हमें इसी अर्थ के द्योतक मिलते हैं। इस प्रकार जान पड़ता है कि सड़वन् गर्गस्त (गिरिशत) पठान वंश की भ्रातृ-शाखा सारस्वत या शरद्वत हो सकती है। सुलेमान-पर्वत पर बसने के कारण शायद एक शाखा को 'गर्गस्त' कहा गया। भाषा-तत्त्व, वैदिक-इतिहास और मानवतत्त्व की गवेषणा के लिए अफगानिस्तान एक बड़ी खान है, और यह एक बड़े सन्तोष की बात है कि आज शिक्षित पठान-समाज इस तरह की खोजों में बड़ी दिलचस्पी ले रहा है, और मजहब तथा संस्कृति को एक दूसरे के क्षेत्र में नाजायज़ दखल देने को गवारा नहीं करता।

***　　　　***

काबुल में एक सिनेमा भी है। उसे पहले कोई व्यापारी चला रहा था, लेकिन बच्चा-सक्का के समय में मकान जला दिया गया। नई हुकूमत ने मकान की मरम्मत कर फिर से काम शुरू किया है, और सिनेमा का प्रबन्ध शिक्षा-विभाग करता है। मैंने वहाँ दो बोलते फिल्म देखे। दोनों अमेरिकन फिल्म थे। उनमें स्त्री-पुरुषों के स्वच्छन्द प्रेम, [illegible] फैशन, तरुण-तरुणियों की जीवन-संबंधी सुव्यवस्था और [illegible] लाया गया था। मैंने देखा कि सिनेमा में दर्शकों की संख्या [illegible] मेरे एक दोस्त ने कहा कि जब जब यहाँ हिन्दुस्तानी फिल्म आते हैं [illegible] हफ़्तों सारा हाल दर्शकों से भरा रहता है। अफ़गानी और [illegible] में इतना सादृश्य है; इसी लिये पठान उसे बहुत [illegible] अभिनयों को भी वह अच्छी तरह समझ लेते हैं। [illegible] संगीत उनके लिए विचित्र से मालूम होते हैं।

कारी लोग यूरोपीय फ़िल्मों को ही अधिक पसन्द करते हैं। हिन्दुस्तानी फ़िल्म कभी ही कभी आने पाते हैं। मैंने कहा—हिन्दुस्तानी फ़िल्म रुचिकर हो सकते हैं; लेकिन अफ़ग़ानिस्तान के भाग्य-विधाता यदि अप्रत्यक्ष रूप से अपने मुल्क में सामाजिक क्रान्ति करना चाहते हैं; तो उसके लिए यूरोपीय फ़िल्म ही अधिक उपयोगी हैं। उनसे उन्हें पर्दा के विरुद्ध शिक्षा मिलेगी। स्त्रियों को स्वतंत्रता का पाठ प्राप्त होगा और उनका धार्मिक कट्टरपन दूर होगा। लोगों को मालूम होगा कि वहिश्त मरने के वाद ही की चीज नहीं है, वह इस जीवन में भी मिल सकता है।

ग्यारह संघ-प्रजातंत्रों के लांछन

इन्तज़ाम था। भोजन में पुलाव, रोटी, दो तरह के मांस और तरकारियाँ थीं।

आगे उपत्यका कुछ अधिक चौड़ी मालूम हो रही थी। ड्राइवर काफ़ी तेज़ी के साथ मोटर चला रहा था। रात अँधेरी थी। आसमान में बादल भी छाया हुआ था। हम आसपास की चीज़ों को सिर्फ़ उतना ही देख सकते थे, जितना कि मोटर की रोशनी में पड़ रहा था। जहाँ बाकू छोड़ने के बाद ही से हम वृक्षों पर हरी पत्तियों को देखने के लिए तरस रहे थे, वहाँ अब सड़क के किनारे के वृक्षों पर हरी पत्तियाँ थीं। जान पड़ता था, हम पंजाब में पहुँच गये। जलालाबाद के २० मील पहले ही से सड़क बहुत अच्छी बनी है। सड़क बनने का काम लगा हुआ है, लेकिन अभी सड़क का अधिक हिस्सा पक्का नहीं हुआ है। ११ बजे रात को हम जलालाबाद (२९४२ फ़ीट) पहुँचे। ड्राइवर का कागज़ देखा गया और वह फिर चला। सोच रहे थे, आज रात को यहीं ठहरना पड़ेगा, लेकिन वह सीधे दक्का पहुँचा।

जलालाबाद काबुल से १०० मील पर एक अच्छा खासा शहर है। आबादी ५००० है। बस्ती के चारों तरफ़ शहर-पनाह (प्राकार) बनी हुई है। कितनी ही सरकारी इमारतें और शाही महल तथा बाग़ यहाँ की दर्शनीय चीज़ों में हैं। दक्का जलालाबाद से ४२ मील पर है। २ बजे रात को वहाँ पहुँचे। एक चायखाने में चारपाई मिल गई और हम सो गये।

*** ***

९ फ़रवरी को सवेरे देखा, तो वहाँ १०-१२ लॉरियों की भीड़ लगी है। ड्राइवर ने लॉरी को ले जाकर एक हाते में खड़ा कर दिया और हमारा पासपोर्ट सरकारी दफ़्तर में ले गया। धीरे धीरे हर एक लॉरी का मुआयना होने लगा और जिसमें रोकने लायक़ कोई चीज़ नहीं पाई गई, उसे जाने की इजाज़त मिली। हमारी लॉरी को इन्तज़ार करते करते यहीं ९ बज गया।

फिर पासपोर्ट लेने के लिए हमें खुद अफसर के सामने जाना पड़ा। अफसर का दफ्तर और मकान अच्छा पक्का और साफ सुथरा है। सिपाही अधिकतर छोलदारियों में रहते हैं। दक्का बहुत छोटा सा गाँव है; जिसमे ३-४ चायखाने और कुछ छोटी छोटी दुकानें है। अफगान-अफसर ने यह जान कर कि मैं ईरान और रूस से आ रहा हूँ; विशेष तौर से मेरे काम के बारे में पूछा। जब उन्हें मालूम हुआ कि मैं इतिहास और भाषा-तत्त्व का प्रेमी एक यात्री हूँ; तो उन्होंने अफगानिस्तान के सम्बन्ध में कई बातें पूछीं। अफसर काफी संस्कृत थे। हमारे उत्तर के साथ उनकी जिज्ञासा बढ़ती ही जाती थी; और इधर ड्राइवर चलने के लिए उकता कर इशारा कर रहा था। हमें भी किसी तरह छुट्टी लेनी पड़ी।

रात को तो हमने आस पास की भूमि को अच्छी तरह देख नहीं पाया था, अब हम देख रहे थे कि हमारा रास्ता एक सूखी चौड़ी वादी मे से हो कर ऊपर की ओर जा रहा है। पहाड़ सभी नंगे हैं। बर्फ या पानी कहीं दिखलाई नहीं पड़ रहा है। रास्ते में एक-दो छोटे किले मिले, जिनमें कुछ फ़ौजी सिपाही मौजूद थे। अन्त में ६ मील के करीब चलकर हम तोरखम पहुँचे। यहीं अफगान-अफसर ने अन्तिम बार पासपोर्ट देखा और उसे अपने रजिस्टर में दर्ज किया। पासपोर्ट पर मुहर और दस्तखत हुई। तोरखम दर्रा-खैबर के मुँह पर है। पासपोर्ट से छुट्टी पाकर हमारी मोटर चली। कुछ ही फीट पर एक फाटक मिला। लॉरी के जाते ही खोल दिया गया और अब हम अनगढ़ स्वनिर्मित रास्ते की जगह पर पक्की तारकोल बिछी हुई चिकनी सड़क पर थे। कुछ कदम और बढ़ कर लारी एक फाटक के सामने रुक गई। यही अंग्रेजी तोरखम है। एक बंगले के बराण्डे में पासपोर्ट दर्ज किया जा रहा था। कुछ ही मिनट पहले हम ऐसे पासपोर्टखाने में थे जहाँ पचीसों आदमी मुंशी को घेरे "हमारे पासपोर्ट को जल्दी कर दीजिए, हमारे पासपोर्ट को जल्दी कर दीजिए" कहकर हल्ला मचा रहे थे; और दर्ज करने में कोई खयाल न रखा जाता था कि कौन पहले आया और

कौन पीछे, वहाँ अब पूरी व्यवस्था थी। बैठने के लिए कुर्सियाँ और बेंचें पड़ी हुई थीं। क्रम के अनुसार पासपोर्ट लेकर दर्ज किया जाता था। हमारा भी पासपोर्ट दर्ज किया गया। फिर पासपोर्ट अफ़सर के पास पहुँचाया गया। श्री सादुल्ला खाँ एक नौजवान पठान अफ़सर हैं। उन्होंने बड़े आदर के साथ बैठाया। पहले मेरी यात्रा के बारे में पूछा और जब उन्हें मालूम हुआ कि बौद्ध संस्कृति और उसका इतिहास मेरे अध्ययन का ख़ास विषय है, तो वह और भी विशेष जानने के लिए उत्सुक हुए। उन्होंने कहा—मैं मर्दा का रहनेवाला हूँ और वहाँ पर बौद्ध-कला की बहुत सी चीज़ें (मूर्तियाँ आदि) मिली हैं। आख़िर ये सब चीज़ें हमारे पूर्वजों की कृतियाँ हैं। और बतलाती हैं कि किसी समय पठानों का तमद्दुन (संस्कृति) भी बहुत उन्नत अवस्था को प्राप्त था। उन्होंने ख़ास तौर से मर्दा आने के लिए निमंत्रण दिया। स्थल-मार्ग पर भारतीय सरकार का कस्टम् विभाग नहीं है, इसलिए बक्स खोलने आदि की ज़हमत से हम बच गये।

डेढ़ घंटे के बाद हम तोरख़म से रवाना हुए। दक्का से पेशावर ४६ मील है। आगे प्रायः २५ मील का रास्ता ख़ैबर के दोनों पहाड़ों के बीच में है। तोरख़म से हलकी चढ़ाई शुरू होती है। चार मील बाद लन्डीख़ाना आता है। यहीं से रेल शुरू होती है। लेकिन हमें तो मोटर से ही पेशावर जाना था। रेल से क्या मतलब। कुछ और चढ़ाई चढ़ने के बाद हम लंडी-कोतल (लंडी के डाँड़े) पहुँचे। सड़क के दोनों तरफ़ कितनी ही जगह पहाड़ दीवार की तरह सीधे खड़े हैं; जगह जगह रास्ते की हिफ़ाज़त के लिए मोर्चाबन्द फ़ौजी छावनियाँ हैं। सड़क बहुत अच्छी है। ख़ैबर के दर्रे में कितने ही छोटे छोटे गाँव हैं; जिनके आस पास कुछ हरे खेत भी दिखाई पड़े; लेकिन फ़सल उतनी ज़ोरदार नहीं है। पानी के लिए दूर से नल लगाये गये हैं; और गाँव वालों के उपयोग के लिए ईट-चूने की टंकियाँ बना दी गई हैं। यह रास्ता स्वतंत्र पठानों के मुल्क में है। रास्ता और मोर्चाबन्दी की ज़मीन पर अंग्रेज़ सरकार का अधिकार है; और बाक़ी पठानों की

अपनी चीज है। बन्दूक और कारतूस को सोटे-डंडे की तरह हर एक पठान इस्तेमाल करता है। वहाँ हथियारों का कोई कानून नहीं। पठानों के लिए यह आजादी जमरूद से भी आगे तक है। लंडीकोतल से उतराई शुरू होती है, और जमरूद से ४ मील पहले खतम हो जाती है।

जमरूद में ड्राइवर का कागज देखा गया; और आधा घंटा बाद हम पेशावर पहुँच गये।

भावी वैज्ञानिक
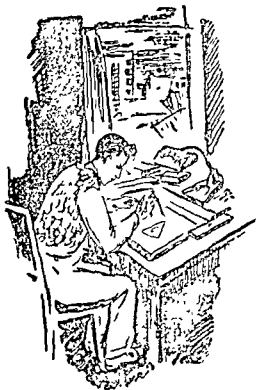
परिशिष्ट

पहिली बार सोवियत्-भूमि में

अपनी भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक साधन, नाना जाति के जन-समूह और नाना प्रकार की संस्कृतियों के कारण सोवियत्-साम्यवादी-प्रजातंत्र राजनीति में अपना एक प्रमुख, प्रमुख ही नहीं, अतुलनीय स्थान रखता है। सोवियत्-सरकार संसार के छठवें हिस्से पर फैली हुई है। सिर्फ़ मध्य-एशिया के कुछ स्थानों को छोड़कर उसकी सभी ज़मीन उपजाऊ है। वह जितने आदमियों को भोजन दे रही है, उससे कहीं अधिक को दे सकती है। उस ज़मीन के भीतर प्राकृतिक उपज भी प्रचुर परिमाण में प्राप्त हैं, जैसे ताजिकिस्तान और उत्तर-पूर्वीय काकेशस् में कास्पियन सागर के किनारे की वृक्ष-रहित पहाड़ी भूमि पैट्रोल के बड़े से बड़े भंडारों में से है। सिवेरिया की अत्यधिक सर्दी की वात पढ़ कर हम सोचते हैं; कि वह मनुष्य के निवास के योग्य नहीं होगा; लेकिन वात ऐसी नहीं है। समूचा सिवेरिया हमेशा हरे रहने वाले सुन्दर तथा उपयोगी देवदार-जातीय वृक्षों का वाग़ है। सिवेरिया में सोने तथा कोयले की वड़ी वड़ी खानें हैं।

सोवियत् दुनियाँ में खनिज सम्पत्ति में प्रथम स्थान रखता है। जहाँ तक उपज का सम्वन्ध है, रूस योरप का अन्न-भण्डार समझा जाता था और अभी तक वह अपने उस गौरवपूर्ण स्थान को कायम रखे हुए है। किन्तु, निकट भविष्य में जब सोवियत् में उद्योग-धन्धों का पूर्ण विकास हो जायगा और वह अपनी जरूरत से ज़्यादा माल वनाने लगेगा; तो तैयार माल उसके कच्चे माल के निर्यात पर प्रधानता प्राप्त कर लेगा। संसार के व्यापार की

प्रगति को जापान के सस्ते माल ने चौपट कर दिया है—यद्यपि उसे रोकने के लिए तरह तरह की चुंगी की ऊँची दीवारें, गृह-उद्योग को बचाने के नाम पर, खड़ी की गई है। लेकिन जापान की यह प्रतियोगिता फीकी पड़ जायगी, जब कि बाजारों में कुछ साल के बाद रूस का माल आने लगेगा। जापान के सभी माल तैयार करनेवाले पूँजीवादी हैं; और उन्हें माल की कीमत रखने के समय अपने नफे, कर्मचारियों के वेतन, बाहर से खरीदे गये कच्चे माल की कीमत आदि पर खयाल रखना पड़ता है। किन्तु, भविष्य में सोवियत् के कारखाने—जिनकी संख्या दिन दिन बढ़ती जा रही है—रूस के १८ करोड़ निवासियों की आवश्यकताओं को ही पूरा नहीं करेंगे, बल्कि अपने माल को प्रचुर परिमाण में बाहर भी भेज सकेंगे। और वह जापानी माल से कहीं अधिक सस्ता होगा।

सोवियत्-भूमि में एशिया और यूरोप का बहुत बड़ा भाग शामिल है; और उसकी सीमा जापान के एशियाई राज्य, अफगानिस्तान, फारस, तुर्की और पूर्वी तथा उत्तरी यूरोप के छोटे छोटे राज्यों को छूती है। जिस प्रकार वह अपने यहाँ के निवासियों की जरूरतों की पूर्ति के लिए तेजी से अपना उद्योग-धंधा बढ़ा रहा है; उसी प्रकार अपने पड़ोसी जर्मनी, ब्रिटेन, जापान आदि शक्तियों के डर से अपनी सैन्य-शक्ति को भी तेजी से बढ़ा रहा है। हवाई शक्ति में वह संसार में पहला दर्जा रखता है। उसे अपने राज्य के अन्दर बहुत बड़े पैमाने में हवाई उन्नति करने के लायक आदर्श भूमि प्राप्त है। उसके कारखानों में हवाई जहाज भी बहुत बड़े पैमाने पर तैयार हो रहे हैं, क्योंकि वहाँ तो नफे का कोई सवाल है ही नहीं। प्राकृतिक साधन और मनुष्य-शक्ति भी असीमित है, साथ ही हर एक विषयों के विशेषज्ञ लोग निकलते आ रहे हैं। पूर्वी सिबेरिया में विलेवान्दियों का तांता लगा हुआ है; और वहाँ सब से बड़ा हवाई अड्डा है, जो ब्लादिवोस्तोक् के नजदीक है।

सोवियत् अपनी १८ करोड़ जन-संख्या के कारण स्वाधीन देशों में जन-

संख्या के खयाल से भी प्रथम स्थान रखता है। यद्यपि हिन्दुस्तान और चीन की जन-संख्या अधिक है, पर ये तो उपनिवेश या अर्द्ध-उपनिवेश देश हैं। रूस की सैन्य-शक्ति के डर के कारण ही गिलगित को अंग्रेज़ी सरकार ने काश्मीर राज्य से ले लिया है; और वह उत्तर-पश्चिम भारत का सिंगापुर बनने जा रहा है,—निस्सन्देह एक नये ढंग का। संक्षेप में—रूस का संसार की राजनीति में ऐसा स्थान है कि हर विचारवान् पुरुप को उसके कार्यक्रम और उसकी सफलता में दिलचस्पी रखनी ही पड़ेगी।

एक बात और है। जिन देशों से इस साम्यवादी प्रजातंत्र-संघ का गठन हुआ है; उनमें कितने ही एशियाई देश हैं, जिनका एशिया के कितने ही अन्य भागों की सभ्यता से घनिष्ट सम्बन्ध है। इसलिए उन देशों के लिए किये गये किसी भी उत्थान-कार्य का प्रभाव एशिया की दूसरी जातियों पर पड़ेगा ही, चाहे रूसी प्रभाव को अपनी अपनी सीमा के अन्दर नहीं आने देने के लिए सभी सीमान्त राज्यों ने बहुत ही कड़ा प्रबन्ध कर रखा है। उदाहरण-स्वरूप वहाँ ताजकिस्तान के प्रजातंत्र में १२ लाख फ़ारसी बोलनेवाले लोग रहते हैं, जिनका ईरान से भाषा, जाति और संस्कृति का बहुत ही घनिष्ट सम्बन्ध है। जहाँ ईरान में बोलते फ़िल्म नहीं बनते हैं, उसका आधुनिक साहित्य भी अभी बचपन में ही है, वहाँ ताजकिस्तान का रंगमंच, साहित्य तथा बोलता फ़िल्म बहुत उन्नत है, तो भी वह ईरान में नहीं आने पाते।

मेरे सफ़र की मंशा वहाँ की अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति अथवा उनका दूसरे देशों से क्या सम्बन्ध है, यह जानने की नहीं थी। वहाँ की आर्थिक योजना के काम तथा उसका जनता पर क्या प्रभाव है, इसे देखने की मेरी इच्छा थी; और मैं वहाँ के कुछ महान् भारत-तत्त्व-विशारदों से भेंट करना चाहता था। मैंने सोवियत्-रूस में मंचूरिया की तरफ़ से प्रवेश किया। मंचूकुओ की ओर का सीमान्त-स्टेशन मंचुली है, जहाँ से रूस जाने के लिये गाड़ी बदलनी पड़ती है। मैं वहाँ २८ अगस्त (१९३५) को पहुँचा। उस समय भी वहाँ काफ़ी जाड़ा पड़ रहा था। स्थान पहाड़ी है।

ये पहाड़ बहुत ज्यादा ऊँचे नहीं हैं और वे घास तथा मिट्टी से ढँके हुए हैं। पेड़ तो नहीं देख पड़ते, लेकिन सारी जमीन हरी घासों से ढँकी थी। मुझ से कहा गया था कि सोवियत् में खाने की चीजों की कमी रहती है, इसलिये मैंने मास्को तक के सफर के लिए खाने का पूरा सामान खरीद लिया था। पीछे वह बात गलत निकली। सोवियत् के अन्दर कहीं भी खाने की चीजों की कमी नहीं है—सिर्फ आपको इसके लिए अमेरिका के भाव से दाम देना पड़ेगा। मैं तीसरे दर्जे का मुसाफिर था। वहाँ तीसरे दर्जे के दो भेद हैं—"कड़ा" तीसरा दर्जा और "मुलायम" तीसरा दर्जा। मुलायम तीसरे दर्जे में गद्दीदार बेंच होती है। यद्यपि कड़े तीसरे दर्जे में मैंने आर्थिक कारणों से सफर करना पसंद किया था, तथापि वही दर्जा सफर करने के लिए सब से अच्छा भी है। रूस के साधारण लोग उसी दर्जे में सफर करते हैं, जिससे उनके सम्बन्ध में अध्ययन करने के लिए, काफी मौका मिलता है। जो पहले या दूसरे दर्जे में सफर करते हैं, रूस की साधारण-जनता से उनका सम्बन्ध बिलकुल ही नहीं हो पाता।

सोवियत्-सीमा मचुली से बहुत दूर नहीं है; और मचूकुओ तथा सोवियत् के बीच कोई प्राकृतिक सीमा-चिह्न भी नहीं है। सोवियत् में पहला स्टेशन मात्चेव्स्काया है। पहला परिवर्तन जो मैंने देखा वह यह था कि रेलवे कर्मचारियों के मकान सीमा के उस पार के मकानों से कहीं अच्छे थे। मात्चेव्स्काया रूस के और स्टेशनों के जैसा ही है, किन्तु मचुली स्टेशन से एकदम भिन्न दीखता है। दीवार पर प्लेटफार्म की ओर लेनिन्, स्तालिन् आदि नेताओं के चित्र थे। स्टेशन के कमरे रेलवे आफिसों की बनिस्बत होटलों से ज्यादा मिलते थे। रेलवे कर्मचारियों में कितनी स्त्रियाँ भी थीं। मैंने रूसी स्त्रियों को हार्बिन् में भी देखा था। वे स्त्रियाँ सोवियत्-विरोधी दल की थीं, जिन्हें "सफेद रूसी" के नाम से पुकारा जाता है। वे अपने होठों को रँगती और मुँह पर खूब पाउडर लगाती हैं। लेकिन सोवियत् रूस में आप शायद ही किसी स्त्री को ऊँची एडी का जूता पहने देखिएगा,

होंठ रंगने की बात भी बहुत कम।

मेरी गाड़ी मात्चेप्स्काया में क़रीब ३ बजे दिन को पहुँची। यहाँ हर-एक मुसाफ़िर के सामान की जाँच होती है। मेरे पास बहुत कम सामान था, इस लिए जाँच में कोई ज़्यादा दिक़्क़त नहीं हुई। फिर उन्होंने मेरा पासपोर्ट देखा, फिर, पासपोर्ट अफ़सर ने कहा—आप आगे नहीं जा सकते, क्योंकि आप सीमा के भीतर ७ रोज़ देर से पहुँचे हैं। मैंने रूस के लोगों को सदा ही सहृदय तथा विचारवान् पाया। जब मैंने अपनी दिक़्क़तों को उनसे कहा तो उन्होंने मुझे आगे बढ़ने की आज्ञा दे दी।

मैंने सिर्फ़ १६ दिन सोवियत्-राष्ट्र में बिताये। ट्रान्स-साइबेरियन रेलवे पर मंचुली से मास्को जाने में ७ दिन लगे। मास्को में मैं २४ घंटे ही ठहरा और फिर रेल से मास्को से बाकू पहुँचा और तीन रोज़ रहा। एक दिन कैस्पियन सागर में भी बिताया। मैंने अपनी सारी यात्रा सोवियत् की साधारण जनता के साथ की। सोवियत्-निवासियों की दो बातों ने मुझे सबसे अधिक आकृष्ट किया। पहली यह कि रूसी लोग बड़े साफ़दिल और मिलनसार होते हैं। अगर कोई स्वयं मुहर्रमी सूरतवाला न हो तो उन से दोस्ती करने में दो तीन मिनट से अधिक नहीं लगता। वे बहुत ही अतिथि-सेवी होते हैं; और अपरिचित लोगों की सहायता करने में सदा तत्पर रहते हैं। इस बात में वे जापान के लोगों से एकदम मिलते जुलते हैं। वे अपने और मित्रमंडली के लिए खर्च करने में बहुत उदार होते हैं। अतिथि-सत्कार के विषय में मुझे पता चला कि यह रूस-निवासियों की पहले से भी ख़ास सिफ़त है। किंतु दूसरा गुण रूस की नवीन पद्धति के निर्माण के बाद विकसित हुआ है; क्योंकि अब उन्हें बेकारी का कुछ भी भय नहीं रहा। जब तक वे काम करने योग्य हैं, उन्हें काम तथा निश्चित वेतन अवश्य मिलेगा, जब बीमार या किसी कारण-वश काम करने के लायक़ नहीं रह जायेंगे, तो राष्ट्र उनके निर्वाह का प्रबन्ध करेगा। उन्हें अपनी सन्तान की शिक्षा तथा शादी के लिए चिन्ता नहीं करनी है। ऐसी स्थिति में उनके लिए

कजूसी से दूर रहना एकदम स्वाभाविक है।

पूर्वी सिवेरिया की आबादी में मंगोल तथा रूसी दोनो जातियाँ सम्मिलित हैं। क्रान्ति के पहले मंगोल रूसियों से नीच समझे जाते थे। रंग-भेद का बाजार खूब गर्म था। मंगोलों को गुलामो सा माना जाता था; जैसा कि अभी भी यूरोप के अधीनस्थ पूर्वी देशो में देखा जाता है। लेकिन अब वह अतीत की बात हो गई। रंग-भेद की गंध तक नहीं रही। समान कार्य के लिए वेतन में भिन्नता नहीं। नौकरियों में किसी के लिए खास रियायत नहीं। वास्तव में नई संतति तो उन पुरानी बातो के सम्बन्ध में कुछ जानती भी नहीं। स्टेशनों पर रूसी और मंगोल पुरुष या स्त्री, हाथ में हाथ मिलाये घूमते हुए दीख पड़ते है। मिश्रित विवाह रूस में इस प्रकार फैल रहा है कि मालूम होता है इस शताब्दी के अन्त तक विशुद्ध जातीय रूप-रंग वहाँ देखने को नहीं मिलेगा। बात यो है कि जब एशियाई तथा रूसी नागरिक आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक सतह पर है, तो इस तरह के मिश्रित शादी-विवाह में रुकावट क्या?

सोवियत्-रूस में मैं इतने कम दिनों तक रहा कि रूसी जीवन के हर पहलू को देख न सका। लेकिन कोई भी आदमी वहाँ के आर्थिक पुनर्निर्माण-की तीव्र प्रगति की एक झलक देख कर भी प्रभावित हुए विना नहीं रह सकता। मैंने मचुली से मास्को तक प्राय ४००० मील और मास्को से बाकू तक प्राय: २००० मील की यात्रा की, और हर एक स्टेशन तथा रेलवे लाइन के निकटवर्ती गाँव में नये मकानो तथा कारखानो का निर्माण होते पाया। समूचा राष्ट्र इमारतें बनाने की धुन में पागल सा जान पड़ता है। इससे यह भी जान पडता है कि पंचवर्षीय योजना का प्रभाव समूचे प्रजातंत्र-संघ पर पड़ रहा है। वह सिर्फ मास्को और लेनिनग्राद् तक ही सीमित नहीं है। अपनी गाड़ी की खिड़कियों से मैंने गेहूँ के बहुत बडे बडे खेतों को देखा। वहाँ यंत्र से अन्न अलग किया जा रहा था; और फिर लारियों में भर कर गाँवों में पहुँचाया जाता था। इर्कुत्स्क के निकट एक दिन बडे तडके मैंने एक रूसी

स्त्री को अपने कंधे पर बहंगी लिये जाते हुए देखा, जिसमें पानी के दो घड़े लटक रहे थे। आकृति और पोशाक से वह बहुत सुन्दर और संस्कृत मालूम पड़ती थी। उसे देख मुझे 'रानी भरें पानी' वाली कहावत याद आ गई।

सिवेरिया में मैंने ट्रैक्टर (कल के हल) चलते नहीं देखे; क्योंकि वह जुताई का मौसम नहीं था। हाँ, बहुत से ट्रैक्टर रखे हुए जरूर देखे। लेकिन मास्को से बाकू आते समय मैंने चालीस पचास ट्रैक्टरों को एक पंक्ति में खेत की जुताई करते हुए देखा। यह भाग सिवेरिया से गर्म है, उसकी फ़सल कुछ दिन पहले ही तैयार हो गई थी और इस समय जुताई शुरू थी।

रूस में वैज्ञानिक तरीक़ों से खेती बहुत बड़े पैमाने में शुरू की गई है। सभी सामूहिक तथा सरकारी खेती मशीन से होती है। खेत जोतने तथा खलियान के लिए कलों का ही व्यवहार किया जाता है। बहुत जगहों में हवाई जहाज़ से खेत बोने का काम लिया जाता है। अब पंचमांश या चौथाई से भी कम ही खेती पुराने ढंग से की जाती है। ये छोटे छोटे किसान भी अपनी ज़मीन को सामूहिक बनाने को तैयार हैं, लेकिन जैसे ही उनके खेत सामूहिक बना लिये जायेंगे वैसे ही खेत-खलियान में मशीनों की माँग होने लगेगी, जिसको पूरा करने के लिए अभी काफ़ी कारखाने नहीं हैं। किन्तु सोवियत् सरकार प्रत्येक साल अपने कारखानों की वृद्धि कर रही है; और अब उसे समूचे देश के खेतों को सामूहिक करने के लिए मशीनें देने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

रहन-सहन में दिन-दिन तरक़्क़ी हो रही है। अब भी वेतनों में फ़र्क़ है, कोई २०० रूबल पाते हैं तो कोई ५०० रूबल, लेकिन यह वर्तमान परिस्थिति में अनिवार्य है। पहली बात तो यह है कि दक्ष कार्यकर्ताओं को अधिक वेतन देना पड़ता है, जिसमें वे दूसरे पूँजीवादी देशों की तुलना में अपने वेतन को इतना कम नहीं समझें, कि देश छोड़ने को ललचायें। आखिर सभी कार्यकर्त्ता तो पूरे साम्यवादी हैं नहीं। दूसरी बात यह है कि वेतन में जितनी वृद्धि होगी, उतना ही लोग अधिक माल खरीदना चाहेंगे, जिसे पूरे

परिमाण में तैयार करने में अभी कुछ समय लगेगा। वर्तमान राज्य-व्यवस्था के पहले रूस के निवासी बड़े निर्धन थे, और बहुत सी चीजें, जो इस समय जरूरी समझी जा रही है, उस समय विलास की सामग्री में गिनी जाती थी। उदाहरणार्थ उन दिनों एशियाई-सोवियत् में साबुन की भी जरूरत महसूस नही की जाती थी, फिर दाँत साफ करने के लिए ब्रुश और पेस्ट की कौन सी बात? लेकिन अब वह उजबक् और तुर्क लोगों के लिए भी नित्य के व्यवहार की चीजें हो रही हैं। अपर्याप्त उपज के कारण इन सब चीजों की बिक्री पर नियंत्रण रखने के लिए दाम बढ़ाना पड़ा है।

द्वितीय पचवर्षीय योजना मे यह निश्चित किया गया है, कि समूचे देश मे अधिकाधिक संख्या में कारखाने कायम किये जायँ; जिसमें इन चीजों की कमी दूर की जाय। किन्तु मालूम होता है कि तीसरी पचवर्षीय योजना में ही इन सब माँगों को पूरा किया जा सकेगा। उस समय रूस के निवासियों की रहन-सहन का मान संयुक्त-राज्य अमेरिका के काम में लगे मजदूरों से भी कहीं ऊँचा हो जायगा।

जब मैं ट्रान्स-सिबेरियन रेलवे मे सफर कर रहा था तो एक गाँव में एक बहुत ही साफ-सुथरा गिरजाघर देखा। मैंने अपने एक रूसी दोस्त से पूछा—इस गाँव का गिरजाघर इतना अधिक साफ-सुथरा क्यों है? जवाब मिला—इस गाँव में अभी भी कुछ आदमी है, जो ईश्वर में विश्वास रखते है। बात-चीत से यह स्पष्ट पता चला कि यद्यपि साम्यवादी दल का मेम्बर होने के लिये नास्तिक होना जरूरी है, तथापि जन साधारण पर इसके लिये दबाव नही दिया जाता; क्योंकि वहाँ के साम्यवादी इसकी प्रतिक्रिया से भलीभाँति वाकिफ हैं। उन्हें कोई जल्दी भी नहीं है। उनका तो विश्वास है, कि अगली पीढ़ी मे ईश्वर का नाम-निशान भी नही रहेगा, क्योंकि जो बच्चे पलने से ही नये वायुमण्डल में शिक्षा पा रहे हैं; वे भला इन बातों में क्यों फँसने लगे?

बाकू शहर

मास्को से तीन दिन की रेल-यात्रा के बाद दो बजे रात को हमारी गाड़ी बाकू पहुँची। सारे शहर में लाखों विद्युत्प्रदीपों की दीपावली-सी मनाई जा रही थी। वह समय शहर में घुसने का था ही नहीं, 'इंतूरिस्त' (सोवियत् सरकार की यात्रा-प्रबन्धक-समिति) का कोई आदमी भी स्टेशन पर नहीं मिला। रूसी सोवियत् नागरिकों का सौजन्य अद्वितीय है। मास्को के सहयात्री हमारे अज्ञातनामा मित्र, जो अमेरिका में रहने के कारण अँगरेज़ी जानते थे, हमारा सूट-केस उठाकर अनुकूल स्थान ढूँढने चले। दो-एक जगह पूछने के बाद स्टेशन के क्लब के कमरे में पहुँचे। प्रबन्धकर्त्री चालीस वर्ष की एक अधेड़ महिला थीं। बाल कटे, पोशाक रूसी श्रमिक स्त्रियों-जैसी, बूट की एड़ ज़रा-सी उठी हुई; किन्तु चेहरे का रंग और काले बाल बतला रहे थे कि वह एशियाई हैं। मेरे साथी ने मेरे बारे में कुछ बतलाया और यह भी कह दिया कि मैं रूसी भाषा नहीं जानता। महिला ने कहा—'यहाँ इस कोने की कुर्सी पर बैठ जायँ, सबेरे मैं टेलीफ़ोन करके इंतूरिस्त के पास इन्हें भिजवा दूँगी।' साथी से कृतज्ञता प्रदर्शन-पूर्वक विदाई ली।

रात को स्टेशन के कुछ भागों को देखा। बग़ल में भोजनशाला थी, जिसमें पचीसों मेज़ें खाने के लिये सजी हुई थीं। नीचे के मुसाफ़िर-खाने को देखकर आप उसे मुसाफ़िरखाना कहने की हिम्मत ही न करेंगे। अच्छी स्वच्छशाला में कितनी ही कुर्सियाँ हैं, जिनपर कितने ही स्त्री-पुरुष बैठे हैं। बग़ल में हजामतखाना है। यूरोप की भाँति सारे सोवियत् में भी स्त्रियाँ बाल कटाने लगी हैं, इसलिये हज्जामों की बन आई है। हाँ, सोवियत् देश में और कामों की भाँति यह पेशा भी अब प्रायः समाज के

स्वामित्व में होता है। पुरुषों की भाँति कितनी ही स्त्रियाँ भी हज्जाम का काम करती हैं। दो-चार और स्थानों को देखा—कहीं किसी बैंक की शाखा है; कहीं अखबारों और किताबों की दूकान है; कहीं बिस्कुट और मिठाई सजी है। घूम कर फिर कुर्सी पर आ बैठा। देखा, टिकट बाबू लोगों में से भी, जो कि सभी स्त्रियाँ थीं, कोई-कोई आकर कुर्सी पर ऊँघ रही हैं।

पाँच बजने के बाद (९ सितम्बर) उजाला हुआ। महिला ने हजामत-खाने में ले जाकर मुँह-हाथ धोने का इशारा किया। मुँह-हाथ धो कर फिर उसी कमरे में आया। ६ बजे कितने ही स्त्री-पुरुष आने लगे। कमरे में मेजों पर जहाँ कितने ही दैनिक, मासिक, साप्ताहिक पत्र पड़े थे, वहाँ एक कोने में एक बड़ा सा पियानो भी था। दीवारों पर लेनिन्, स्तालिन्, मोलोतोफ् आदि के बड़े बड़े चित्र टँगे थे। एक काली ओढ़नी ओढ़े महिला को आती देख मेरा ध्यान उधर आकर्षित हुआ। उसके पीछे एक मूँछ-दाढ़ी सफा-चट तरुण छज्जेवाली टोपी लगाये आया, और फिर एक केशच्छिन्ना सुंदरी यूरोपीय वेष में एक चार वर्ष के बालक के साथ पधारी। बैठ जाने पर बिना पूछे ही यह जानने में कोई दिक्कत नहीं हुई; कि ओढ़नीवाली महिला के ही बाकी पुत्र, पुत्रवधू और पौत्र हैं। चेहरे के रंग और काले केशों से उन के एशियाई होने में कोई सन्देह ही न था। यह भी मालूम हुआ कि यह 'मुसलमान' परिवार है। 'है' नहीं 'था' कहना चाहिए। मजहब तो यहाँ विशेष कर तरुणों में 'था' की वस्तु हो रहा है। वह दृश्य देखकर मेरे दिल में तरह-तरह के विचार पैदा हो रहे थे, पर बाद में बाकू के तीन दिन के निवास से उसे साधारण बला देखकर कम-से-कम उतना अचम्भा नहीं रह गया। वहाँ तो बाल कटाये, नंगी बाँहोंवाला अंगरखा पहने, बूट-धारिणी मुसलमान तरुणियों की संख्या गिनी ही नहीं जा सकती। उक्त वेश के अतिरिक्त एक लम्बा-चौड़ा तौलिया-जैसा कपड़ा भी किसी-किसी के कंधे पर पड़ा देखा। ओढ़नी तो सिर्फ बुढ़ियों के लिए है। यदि भूल-

भटका पाजामा-कुर्ता देखने को मिला भी, तो वह साठ वर्ष से ऊपर वालियों के वदन पर।

नौ वजे महिला ने एक आदमी साथ कर दिया और इंतूरिस्त कार्यालय की ओर रवाना हुए। वाकू में रूसियों की तादाद वहुत अधिक है—यदि आधी नहीं, तो तिहाई ज़रूर होगी। साम्यवादी शासन में पुराना रंग-भेद तो है नहीं, सभी लोग सभी तरह के काम करते हैं। अव वोझा ढोने का काम सिर्फ़ एशियाइयों के लिए नहीं रहा। मालूम होता है, अभी स्वतंत्र काम करनेवाले श्रमिक भी यहाँ मौजूद हैं। वह आदमी कई वार कहने पर भी इंतूरिस्त कार्यालय न जा कर जहाज़ के घाट पर पहुँचा। मैंने दो-चार रूसी शब्दों को जोड़ कर कहा—'विलेत् नेत् इंतूरिस्त' (टिकट नहीं है, इंतूरिस्त), और चलने का इशारा किया। आदमी को खयाल था कि विदेशी है, चलो जहाज़ पर वैठाकर मनमाना दाम वसूल करें; इंतूरिस्त के पास जाने पर तो नपा-तुला ही मिलेगा।

आखिर इंतूरिस्त पहुँचे। सतमहला विशाल नये ढंग का मकान है। उसीमें होटल भी है। कार्यालय में दो-तीन स्त्रियाँ ही थीं, फ़रासीसी और जर्मन जाननेवाली वहाँ मौजूद थीं; किन्तु अपने राम को इन भाषाओं का ज्ञान—विशेष कर वोलने का अभ्यास—तो नहीं सा ही था। पीछे अंगरेज़ी जाननेवाली महिला के आने पर मैंने कहा—"मैं पहलवी (ईरान) जा रहा हूँ, और अभी मुझे ईरान-कौन्सल से 'वीज़ा' लेना है।" उन्होंने वतलाया—"जहाज़ आप को परसों चार वजे शाम को मिलेगा, तवतक आप यहीं विश्राम करें।" मैंने सव से सस्ते दो डालर (५॥) रुपये) रोज़-वाले कमरे में अपना सामान रखा। डेढ़ रुपये प्रतिवार वाले स्नान-गृह में जाकर स्नान किया; और फिर तीन रुपये का जलपान। मैंने हिसाव अमेरिकन डालर में चुकाया था, उसे ही रुपये के हिसाव में यहाँ दे रहा हूँ। तीन-तीन रुपये का जलपान सुन कर पाठक यह न समझ लें कि मैं कुम्भकर्ण वन गया था, अथवा भोजन वाजिदअली शाह के ख़ास वावर्ची-

खाने का था। भोजन वही था, जो हिन्दुस्तान के किसी शहर में आठ-दस आने में मिल सकता है; किन्तु सोवियत्-अधिकारियों के दिमाग में दाम रखते समय ख्याल तो अमेरिकन यात्रियों का रहता है। भोजनोपरान्त १० बजे नगर-दर्शन के लिए निकले। मोटर पर रूसी दुभाषिया तवारिश (कामरेड) अना और एक दूसरी अंगरेज यात्री महिला थी।

बाकू संसार की तेल की खानों में सर्वप्रथम है। शहर की आबादी छै लाख से ऊपर है, जिसमें तुर्क अधिक हैं। कुछ वर्ष पूर्व यह तुर्क पक्के मुसल्मान थे; किन्तु अब मत पूछिए। मैंने अपनी आँखों एक दर्गाह या मस्जिद को गिराये जाते देखा, और गिरानेवाले श्रमिकों के चेहरे देखने से अधिकांश उनमें तुर्क जान पड़े। कम्यूनिज्म का बोलबाला है, और उसके सामने किसी की सुनवाई नहीं। यदि बेचारी कोई दर्गाह या मस्जिद फरियाद लेकर पहुँचती है, तो पूछा जाता है—'किस बिना पर तुम्हें कायम रखा जाय? क्या तुममें कोई अद्भुत कला है? क्या तुम्हारा सम्बन्ध अतिप्राचीन काल या ऐतिहासिक व्यक्ति से रहा है? यदि नहीं, तो काम लायक नई बड़ी इमारत, बाग या सड़क के लिये जगह खाली करो।' यदि बहुत रियायत की गई, तो कहा गया—'अच्छा, अब से तुम्हें क्लब-घर, नाच-घर या किताब-घर बनना होगा।' मस्जिद ही नहीं, यही बात गिरजा और यहूदियों के सेनागॉग् पर भी लागू है। बाकू का एक विशाल पत्थर का सेनागॉग् अब एक आफिस के रूप में परिणत हो गया है। समुद्र-तट के मकानों को गिरा कर एक लम्बा उद्यान बनाया गया है, जिसमें वृक्षों के नीचे जगह-जगह विश्रामार्थ कुर्सियाँ पड़ी हुई हैं। कहीं-कहीं क्लब-घर भी हैं, और सोडावाटर लेमनेड की दूकानें तो हर बीस कदम पर सन्दूक जैसी कोठरियों में देख पड़ती हैं। नगर की अधिकांश सड़कें कोलतार की हुई हैं, बाकी में नदी के गोल गोल पत्थर बिछे हुए हैं। मोटर, लारी और ट्राम की आँधी सी चल रही है, फिर भी अभी घोड़ागाड़ी एकदम विदा नहीं हुई हैं, बल्कि शहर के छोरों पर आपको लदे हुए गधे और ऊँट

भी दिखाई पड़ेंगे। और मकान? चौमहले से कम नहीं, और कोई-कोई आठ-आठ नौ-नौ तल्लों के। इनमें अधिकांश नये शासन के बाद बने हैं। नगर के प्रधान भाग से पुराने मकान विदा हो चुके हैं। और बाक़ी जगहों में भी बीसियों प्रासाद खड़े होते तथा पचासों पुराने घर गिराये जाते देख पड़ते हैं।

अब हम शहर से बाहर निकल रहे थे। बाईं तरफ़ पुराने एकतल्ले मकानों की पाँति अपने अन्तिम दिन गिन रही थी। दाहनी ओर अलग-अलग कितने ही दोतल्ले घर थे, जिन पर १६२४ लिखा हुआ था, अर्थात् वे ग्यारह वर्ष पूर्व बने थे। आजकल इस ढंग को भी पसन्द नहीं किया जाता। नये मकान अमेरिकन ढंग के पँचमहले, छमहले, सतमहले ही बनाये जा रहे हैं। इन मकानों में सौ डेढ़-सौ परिवार रह सकते हैं। हर एक परिवार की आवश्यकता के अनुसार तीन या चार कमरे दिये जाते हैं। साथिन अँगरेज़ महिला ने पूछा—'और किराया?' तवारिश अना ने उत्तर दिया—'तन्ख्वाह का दस प्रतिशत। पाँच सौ रूबल तनख्वाह पानेवाले से ५० रूबल, और २०० रूबल वाले से २० रूबल'। अँगरेज़ महिला के ख़याल में नहीं आ रहा था कि उसी चीज के लिए दो व्यक्तियों से दो तरह का किराया क्यों?

अब हम सड़क से काफ़ी दूर चले आये थे। हमारे दाएँ-बाएँ बहुत से तेल के कुएँ थे। कुओं का मतलब पानी का कुआँ मत समझिए। पहले किसी समय वे पानी के कुएँ जैसे ही रहे होंगे; किन्तु अब ट्यूबवेल की भाँति नल को धरती के भीतर धँसाया जाता है। हर एक स्तर पर तेल है कि नहीं, कैसा तेल है, आदि की परीक्षा की जाती है; और फिर अन्तिम स्थान पर पहुँच कर रोक दिया जाता है। इस नल-कूप पर बीस से पचास फ़ीट ऊँचा एक लोहे का ढाँचा खड़ा किया जाता है, जिसके सहारे पंप की मशीन लगा दी जाती है। यह मशीन बिजली के ज़ोर से रात दिन चला करती है; तेल पम्प द्वारा मीलों दूर रिफ़ाइनरी (सफ़ाई करने के कारख़ाने) में

पहुँचाया जाता है। मशीन फिट कर देने पर काम आदमी के बिना स्वयं होता रहता है। हाँ, कुआँ खोदने में एक और बात है। तेल तक पहुँचने के लिए कितनी ही चट्टानें पार करनी पड़ती हैं, और कहीं-कहीं तो तीन-तीन हजार फीट तक उसे नीचे ले जाना पड़ता है, इसलिए सभी काम बिजली द्वारा संचालित यंत्रों से होता है। तेल-कूपों के पास भी कितने ही श्रमिक-प्रासाद बने हैं। बाकू की सारी भूमि जल-शून्य है, और ये तेल-क्षेत्र तो और भी रूखे हैं। पीने का पानी दूर से नलों द्वारा लाया जाता है, और उसके सहारे वहाँ उद्यान-नगर बनाये जाने की कोशिश हो रही है। बाकू से तेल-क्षेत्रों तक कितनी ही बिजली की रेलवे लाइनें हैं। हम एक ऐसी ही लाइन के छोर पर पहुँचे। यहाँ किसी समय एक अच्छा खासा गाँव बसता था। अब उसके बहुत से मकान गिर चुके हैं। एक आध में कुछ बूढ़े तुर्क स्त्री-पुरुष रहते हैं; किन्तु हम इस उजड़े गाँव को देखने नहीं आये थे। हमें तो देखना था—'अग्नि-पूजकों का मन्दिर'।

मन्दिर का द्वार बन्द था। तवारिश् अना चाबीवाली बुढ़िया को बुलाने गईं, और हम दोनों मन्दिर के द्वार पर पहुँचे। फाटक दोतल्ला है, जिसके निचले और उपरले दोनों तल्लों पर एक-एक शिलालेख है। लेख साफ नागरी अक्षरों में है। वैसे होता तो इतनी दूर नागरी अक्षर वाले शिलालेख और हिंदू-मंदिर को देखकर बड़ा आश्चर्य होता, किन्तु मुझे इस मन्दिर की खबर पहले-पहल अप्रैल, १९२० में मिली थी। उस समय पंजाब से रमता हुआ मैं बीरगंज (नेपाल) पहुँचा था। इरादा काठमांडो जाने का था; पर राहदारी मिल न रही थी। वहीं रक्सौल वाली नदी के पुल के पास नदी-तट पर एक साधु की कुटिया में आसन जमा था। एक नौजवान साधु भी कुछ दिन पहले से आकर वहीं पड़ा था। पूछा-पेखी होने पर उसने बतलाया—"मैं बड़ी ज्वालामाई से आ रहा हूँ"।

"बड़ी ज्वालामाई! काँगड़े वाली तो नहीं?"—मैंने पूछा।

"नहीं, वह बहुत दूर है। हिन्दुस्तान से वहाँ पहुँचने में महीनों लगते

हैं, वह रूस के मुल्क में है।"

दिल तो उत्तेजित हो रहा था कि कह दूं—'क्यों बक रहे हो;' पर बैठे-ठाले झगड़ा कौन मोल ले! मैंने पूछा—"वहां जाने का रास्ता कहां-से है?"

"काश्मीर के पहाड़ों को पार कर चीन का मुल्क है और फिर वहाँ से महीनों चलने पर ज्वालामाई हैं। कराची से जहाज़ पर भी जाने का रास्ता है।"

मुझे इस सरासर झूठ पर सख्त गुस्सा आ रहा था। मैंने फिर कहा—"क्या हिंगलाज भवानी के पास।"

"नहीं-नहीं, वह बहुत दूर, रूस के मुल्क में है। वहाँ आपरूपी ज्वाला-माई विराजती हैं। धरती से एक ज्योति निकलती है। नैवेद्य तैयार कर सामने रखा जाता है, और माई स्वयं उसे अपनी जिह्वा से ग्रहण करती हैं। मैं वहाँ छै सात वर्ष रहा हूँ। उधर कोई और साथी न होने से मन नहीं लगा और चला आया। मैं काश्मीर के पहाड़ी रास्ते से लौटा हूँ।"

साधु अनपढ़-सा था। भूगोल का उसे ज्ञान न था। यदि वह कास्पियन समुद्र और बाकू का नाम ले देता, और साथ ही मिट्टी के तेल के कुओं का ज़िक्र कर देता, तो मैं उसकी बात में कुछ अधिक दिलचस्पी लेता; मगर मैं अपने भूगोल ज्ञान के अभिमान से उसकी सच्ची बात बड़े तिरस्कार के साथ सुन रहा था।

सात वर्ष बाद एक बार मैं ग्रेट-ब्रिटेन की 'रायल-एशियाटिक-सोसा-इटी' के जर्नल (पत्र) की पुरानी फ़ाइलों का पारायण कर रहा था। सन् १९०० से पूर्व के एक अंक में एक अंगरेज़ लेखक का लेख 'बाकू में हिन्दू मन्दिर' देखा। लेखक ने मन्दिर और उसमें खुदे लेखों का ज़िक्र किया था। यह भी लिखा था कि वहाँ एक भारतीय साधु रहता है। यद्यपि बाकू के सिंधी हिन्दू व्यापारी उसकी सहायता करते हैं; किन्तु उसका मन नहीं लग रहा है। उसने उक्त लेखक से भारत भिजवाने का कोई

प्रबन्ध करने का आग्रह भी किया था। यह पढ़कर उस तरुण साधु के प्रति किये अपने मानसिक अत्याचार पर मुझे अफसोस हुआ। मैं पछताने लगा कि उस समय यदि मैं कुछ अधिक विश्वास से काम लेता, तो बाकू की ज्वालामाई के बारे में कितनी ही और बातें मालूम कर सकता था।

और अब आठ वर्ष और बीतने पर मैं उसी ज्वालामाई के मन्दिर के द्वार पर हूँ! मन्दिर के फाटक पर नीचे का लेख (पाँच पंक्तियों) में इस प्रकार है—

"॥६०॥ श्रीं श्रीगणेशाय नम. ॥श्लो[1]
क ॥ स्वस्ति श्री नरपति विक्रमादित रा[2]
ज साके ॥ श्री ज्वालाजी निमत दरवा[3]
जा बणाया: अतीकेचन गिर सन्यासी[4]
रामदहा वासी कोटेश्वर महादेव का॥...
आसोज वदि ८। संवत् १८६६॥"[5]

चान्द्र तिथि, 'निमत' और 'बणाया' पर ख्याल करने से मालूम होता है, अतीकेचन गिर हरियाना या कुरुक्षेत्र के समीप के रहनेवाले थे। संस्कृत न जानने पर भी वे साक्षर थे, क्योंकि संयुक्त अक्षरों में उन्होंने गलती नहीं की है। दरवाजा खोलते वक़्त तवारिश अना ने कहा—"यह न-जाने कब के और कहाँ के अक्षर हैं। बड़े बड़े प्रोफ़ेसर देखने आये; किन्तु कोई नहीं पढ़ सका।"

मैंने कहा—"यह उत्तरी भारत में सर्वत्र प्रचलित हिन्दी-भाषा तथा नागरी लिपि का लेख है। सन् १८०९ में—सवा सौ वर्ष पूर्व—दरवाज़ा बनवाने वाले साधु ने इसे लगवाया है।"

अना ने बहुत आश्चर्य प्रकट किया मेरे अगाध लिपि-ज्ञान पर।

"आश्चर्य की कोई बात नहीं। यह अक्षर भारत में उतने ही सुपरिचित हैं, जितने रूसी अक्षर रूस में! आपके साथ आनेवाले प्रोफ़ेसर लोगों का विषय भारतीय लिपि न रहा होगा।"

बुढ़िया ने दरवाज़ा खोला। भीतर बड़ा आँगन है, जिसके बीच में एक चौकोर पक्का मंडप है। भारत के सभी मठों की भाँति आँगन चारों ओर से साधुओं के रहने की कोठरियों से घिरा है। शायद लकड़ी की महँगाई से अथवा मज़बूती के खयाल से सभी कोठरियों की छतें चूने-पत्थर के पटाव या लदाव की मेहराबदार बनी हैं। कितनी ही कोठरियों पर बनवानेवाले दाताओं के नाम के शिलालेख लगे हैं। इनकी संख्या दस-ग्यारह होगी, जिनमें दो गुरुमुखी के भी हैं। इनके लेखक पंजाब के उदासी साधु थे। समय इतना नहीं था कि मैं और लेखों को पढ़ता और नक़ल करता। मंडप में जाकर खड़ा हुआ। वहाँ चौकोर हवनकुण्ड सा अब भी मौजूद है; पर अब ज्वालामाई नहीं हैं। तवारिश् अना ने बतलाया—"दस वर्ष पूर्व तक यहाँ अग्निज्वाला निकलती थी।"

मैंने पूछा—"ज्वाला बन्द कैसे हुई?"

"स्वाभाविक गैस यहाँ से धरती फोड़ कर निकलती रही होगी, जैसा कि अकसर तेल-क्षेत्रों में देखा जाता है। धरती के नीचे रगड़ खाकर या बाहर से किसी के आग लगाने से गैस जल उठी होगी। एक बार जल जाने पर ऐसी गैस का रोकना है तो जलती बारूद के ढाकने-जैसा ही खतरनाक़; पर अब कुछ उपाय मालूम हो गये हैं, जिनसे इस ज्वाला को शान्त किया गया होगा।"

मुझे ज्वालामाई के अन्त पर बड़ा अफ़सोस हुआ—विशेष कर यह ख्याल करके कि बड़ी ज्वालामाई यही थीं, काँगड़ेवाली तो छोटी ज्वालामाई हैं।

कितनी ही कोठरियों को भीतर से जाकर देखा। किन्हीं किन्हीं की दीवारों पर अब भी प्लास्तर है; जिस पर कुछ भद्दी मूर्तियाँ अंकित हैं। किन्हीं किन्हीं में साधुओं के आसन लगाने के चबूतरे भी हैं। कहीं कहीं धूनी की आग की राख भी मौजूद है। यहीं जलती धूनी के किनारे विशाल जटाधारी साधु दिग्-दिगन्त से घूमते आकर बैठते होंगे। यहीं सुल्फ़े और

गाँजे की चिलम पर चिलम चढ़ती होंगी, और सन्तजन पल्थी मारे अपनी अपनी यात्रा के अतिरंजित वर्णन सुनाते रहे होंगे। इसमें तो शक ही नहीं कि अहिन्दू देशों में से होकर भारत से बाकू आना, उस समय बड़ी हिम्मत का काम था।

हमने ज्वालामाई के मंदिर से विदाई ली। मन्दिर तेल-क्षेत्र के मध्य में है, इसलिए चारों ओर तेलों के कूप ही कूप है। कुआँ कैसे खोदा जाता है, इसे देखने गये। खुदाई बिजली और मशीन से होती थी। एक कुआँ १४०० मीटर ($\frac{1}{8}$ मीटर=३९ $\frac{1}{8}$ इंच) खुद गया है; किन्तु अभी इसे २० सौ मीटर तक ले जाना है। खुदाई मिट्टी में नहीं, चट्टान में हो रही है। पास मे एक दूसरा कुआँ था, जिससे जल-मिश्रित तेल की एक मोटी धार निकल रही थी। ऐसे तेल-कूप को 'गशर' कहते हैं। ऐसे कुओं में आग लगने का डर रहता है। इसका मुँह बन्द करना तो असम्भव-सा है ही।

तीन चार मील चलने पर सडक की दाहनी ओर जिस गाँव आया। पुराने तुर्क गाँव का नमूना दिखाने के लिए हमें वहाँ ले जाया गया। यद्यपि इस गाँव को पुराने गाँवों के नमूने के तौर पर रख छोडा गया है, तो भी जब निवासी पुराने ढग के हो, तब तो वह वैसा रहेगा। गाँव के स्त्री-पुरुष तो तेल-क्षेत्र में काम करते है, और दो सौ रुबल मासिक तनख्वाह लेते है। फिर यह लोग क्यों पुराने ढंग से रहने के लिए तैयार होने लगे? फलतः मकान अधिक साफ़-सुथरे है। दरवाजों और खिडकियो में काँच खूब इस्तेमाल किया गया है। बिजली की रोशनी और पानी का नल भी घर-घर में है। यही वजह है कि इस गाँव को पुराने रूप में रखने में बहुत कोशिश करने पर भी, सफलता नहीं मिली।

हमारी मोटर कुछ और आगे बढी। बाईं तरफ से पहाड के नीचे की ओर जाती एक सडक दिखलाई पड़ी। मालूम हुआ कि यहाँ समुद्र-तट पर स्नान-घाट बना है। बोल्शेविकों के स्नान-घाट में भी कोई नई बात जरूर होगी, यह देखने के लिए हम उधर चल पडे। जगह बहुत दूर नहीं

थी। घाट के कुछ पहले ही से हमें छोटे छोटे वृक्ष दिखाई पड़े। वृक्ष ही नहीं, बल्कि सड़क के दोनों तरफ़ बाग तैयार करने की कोशिश हो रही है। इस जलशून्य सूखी पहाड़ी भूमि में बाग लगाना कोई हँसी खेल नहीं। यद्यपि समुद्र नज़दीक है; लेकिन खारे पानी से यह वृक्ष जी नहीं सकते, इसीलिए दूर से मीठे पानी का नल लाया गया है।

कुछ दूर चल कर हमारी मोटर एक गोल घुमाव पर आकर खड़ी हो गई। एक फाटक से दाख़िल होकर देखा, एक ओर गोल मेहराब के नीचे रंगमंच है। वाकू के क्या सोवियत् के सभी सिनेमा थियेटरों में दर्शक खुली जगह में बैठते हैं। सिर्फ़ रंगमंच के ऊपर छत होती है।

इस नहाने की जगह पर भला थियेटर या सिनेमा-घर की क्या ज़रूरत, जब कि वाकू शहर में उनकी संख्या काफ़ी है, और लोग वाकू से यहाँ सिर्फ़ स्नान या जल-क्रीड़ा के लिए आते हैं?

लेकिन बोलशेविकों की दुनिया ही न्यारी है। उनका ख्याल है कि मनुष्य को किसी जगह भी मनोरंजन करने की इच्छा हो सकती है। फिर उसका प्रबन्ध क्यों न किया जाय? अगर पूँजीवादी देशों की भाँति जगह खरीदने, कुर्सियाँ और फ़र्नीचर तैयार करने एवं फ़िल्म या ऐक्टरों पर रुपये खर्च करने की बात होती, तो शायद इतनी दरियादिली न दीख पड़ती। हम लोग दोपहर के क़रीब पहुँचे थे। उस वक़्त कोई फ़िल्म या नाटक नहीं हो रहा था। दोपहर होने तथा छुट्टी का दिन न होने से बहुत कम स्त्री-पुरुष आये थे। बगल में हज़ारों खंभों वाला हाल या छत के नीचे खुली जगह थी, जिसमें बहुत सी कुर्सियाँ और खाने की गोल गोल छोटी छोटी मेजें पड़ी थीं। शाम को और छुट्टी के दिनों में यहाँ बैठने की जगह न मिलती होगी; लेकिन इस वक़्त सभी कुछ खाली पड़ा था। हाँ, रेस्तोराँ (भोजनशाला) के परिचारक दर्जनों स्त्री-पुरुष वहाँ ज़रूर दिखलाई पड़ते थे। यद्यपि यह जगह वाकू से कई मील पर है, तो भी मोटर-बसें बराबर दौड़ा करती हैं। किराया नाम मात्र का है, इस लिए लोगों को आने-

जाने में कोई कठिनाई नहीं होती। रेस्तोराँ के आगे दरख्तों का एक छाया-दार बाग है। यहाँ दरख्त कुछ घने हैं। शायद यह वृक्ष कुछ पहले लगाये गये थे, इसलिए कुछ बड़े बड़े हैं। अभी तो ये बाग उतने अच्छे नहीं मालूम होते; लेकिन कुछ वर्षों के बाद ये सारे वृक्ष बड़े ही सुन्दर और छायादार हो जायेंगे, और तब मरुभूमि में यह बाग स्वर्गोद्यान-सा प्रतीत होने लगेगा; और वृक्षों के नीचे पचीसों हजार आदमी अच्छी तरह विहार कर सकेंगे।

बाग के आगे कुछ रेत है, और फिर समुद्र आ जाता है। बाईं ओर कुछ हटकर लकड़ी के तख्तों का पुल-जैसा समुद्र के भीतर तक चला गया है, जहाँ उस वक्त भी कुछ युवक और युवतियाँ नहाने का काला लिबास पहने पानी में छलाँग मार रही थीं। सोवियत-राष्ट्र में, चाहे वह एसियाई भाग हो या यूरोपीय, कई बातें बाहर के देखनेवालों को बहुत ही आश्चर्य-जनक मालूम होंगी—खास कर हमारे भारतीय दर्शकों में से कितनों के मुँह से 'राम-राम' निकले बिना न रहेगा। आप बीस-बीस पचीस-पचीस वर्ष के युवकों और युवतियों को वहाँ थोड़ा सा कपड़ा पहने साथ-साथ बालू में लेटे या पानी में तैरते देखकर कह उठेंगे कि भ्रष्टाचार की हद हो गई। इन लोगों में अधिकांश तुर्क हैं, जो कुछ ही वर्ष पहले कट्टर मुसलमान थे। उस समय छै वर्ष की लड़की भी बिना बुर्का पहने घर से बाहर नहीं हो सकती थी। आजकल की इस बेशर्मी पर बहिश्त के फरिश्ते कितनी लानत भेजते होंगे!

अब हम शहर की ओर चले। रास्ते के एक ओर समुद्र-तट था और दूसरी ओर पहाड़ी। कहीं कहीं पुराने गाँवों की दीवारें खड़ी थीं। कुछ ही वर्ष पूर्व यहाँ लोग रहा करते थे; लेकिन अब तो अच्छे अच्छे पक्के मकान बन गये हैं, जिनमें बिजली, पानी, नये ढंग के पाखाने आदि का इन्तजाम है, इसीलिए गाँव उजड़ गये हैं। बाकू में वर्षा कम होती है, इसीलिए दीवारें अभी बहुत दिनों तक खड़ी रहेंगी।

हमारी गाड़ी चारों ओर शीशे से बन्द थी, इसलिए हवा भीतर नहीं

आती थी, अन्यथा सितम्बर के दिनों में भी वहाँ सर्दी काफ़ी पड़ रही थी। होटल में लौटते वक़्त शहर से बाहर हमें बहुत से बड़े बड़े कारख़ाने मिले। इन्हीं कारख़ानों में मिट्टी का कच्चा तेल साफ़ किया जाता है, और उससे पेट्रोल, किरासिन, मोमबत्ती, वैस्लिन आदि चीज़ें तैयार की जाती हैं। भोजन के बाद मैंने सोचा, शहर में यदि कोई पुराना मुहल्ला बचा हो, तो उसे भी देखना चाहिए। पूछने पर मालूम हुआ कि पुराने क़िले की तरफ़, पहाड़ी के ऊपर की ओर भीतर घुसने पर, पुराना मुहल्ला है। मैंने अपने होटल के स्थान को समुद्र तट से ख़ूब ठीक से देख लिया और फिर उधर का रास्ता पकड़ा। किसी समय बाकू का यह समुद्र-तट छोटे घरों, मसज़िदों और क़ब्रों से भरा होगा। मालूम होना चाहिए कि बाकू ही नहीं, सारा काकेशस पहले ईरान के आधीन था, और रूस ने इसे ५० वर्ष से कुछ ही पहले लिया था। आबादी के लिहाज़ से भी यह पूर्वीय भाग तो बिलकुल मुसल-मान-था।

आज़ुर्वाइजान प्रजातंत्र, बाकू जिसकी राजधानी है, तुर्कों का मुल्क है, और यहाँ की राष्ट्र-भाषा तुर्की है। हर एक मुसलमानी शहर की तरह यहाँ भी मस्जिदों और क़ब्रों की भरमार ज़रूर ही होनी थी; लेकिन आज समुद्र-तट को पत्थर से बाँध दिया गया है, और उसके ऊपर की जगह को साफ़ कर के बग़ीचा लगाया गया है। यह बग़ीचा मीलों लम्बा चला गया है, और बाकू निवासियों के मनोरंजन की जगह है। बग़ीचे की बग़ल से ट्राम की लाइन है। कितनी ही दूर आगे जाने पर क़िले का मीनार दिखलाई पड़ा, और मैं उधर की ओर चलने लगा। थोड़ी दूर पर पतली गलियाँ और पुराने ढंग के मकान आ गये। गलियों को देखकर बनारस याद आ रहा था। हाँ, फ़र्क़ इतना ज़रूर था कि तंग होने पर भी यहाँ सफ़ाई ज़्यादा थी। मकानों के भीतर कैसा था, यह तो नहीं कह सकता; किन्तु रहने-वालों में कितनों को साफ़-सुथरा नहीं पाया। देखने में भी वे ग़रीब से जान पड़ते थे। इन गलियों और वहाँ के निवासियों को देखकर कोई भी

विदेशी, जिसे सोवियत् और उसकी शासन-प्रणाली से सहानुभूति नहीं है, सोवियत्-निवासियों की दीनता और दरिद्रता के बारे में पन्ने के पन्ने काले कर सकता है। लेकिन याद रखना चाहिए कि सोवियत् में अभी भी बीस फ़ी सदी के करीब खेती स्वतन्त्र किसान करते है, और कितने ही मज़दूरी-पेशा लोग भी स्वतन्त्र मेहनत-मज़दूरी करते है। सोवियत् की अठारह करोड निवासियो के काम करने के लिए दस-पाँच वर्षों में फ़ैक्टरियाँ और मशीनें तैयार नहीं हो सकती, इसलिए कितने ही लोग अब भी स्वतन्त्र मेहनत, मज़दूरी या खेती करते है। लेकिन जिस तेज़ी और दृढ़ता के साथ सोवियत् के कल-कारखाने बढ रहे हैं, उसे देखते हुए यह हालत चन्द सालों के बाद न रहेगी। इन गलियों के घरों और उनके निवासियो जैसे आपको लदन के ईस्ट-एण्ड तथा दूसरे यूरोपीय शहरों में भी मिल सकते हैं। दरअसल रूस के बारे में दरिद्रता की झूठी-झूठी खबरें तो उस वक़्त भी जारी रहेंगी, जब आज से दस-पन्द्रह वर्ष बाद सोवियत्-राष्ट्र दुनिया का सबसे अधिक धनी देश हो जायगा, और उसके निवासियों की आमदनी दुनिया के सभी देशों के मनुष्यों की औसत आमदनी से बहुत अधिक होगी। बात यह है कि बाहर के सभी लोग अपनी आँखो से सोवियत् की भीतरी अवस्था देख न सकेंगे, और जो वहाँ जायेंगे, वे या तो पक्ष में सम्मति रखने वाले होंगे या विपक्ष में। सोवियत् शासन-प्रणाली और उसके आर्थिक सिद्धान्त ऐसे हैं, जिनकी वजह से दुनिया का कोई आदमी उसके बारे मे निष्पक्ष हो ही नहीं सकता। अनजान या नावाकिफ भले ही हो सकता है। फिर आप किसी भी यात्री के लेख में उसका मनोभाव बिना व्यक्त हुए न पायेंगे। पहले से सोवियत्-राष्ट्र कितना उन्नत और समृद्ध हो गया है, उस की शक्ति कितनी बढ गई है, यह तो अन्धे को भी मालूम हो सकता है, जब वह देखता है कि फ़्रास और इंग्लैंड बड़े आदर के साथ उसे राष्ट्रसघ मे आने के लिए निमन्त्रण देते है; और उसके प्रतिनिधि को वहाँ एक स्थायी जगह अर्पण की जाती है। अमेरिका, जो बोलशेविको के नाम से भी नाक-

भौं सिकोड़ता था, आज उससे मैत्री करता है; और उसकी पंचवार्षिक योजना की नक़ल करने की कोशिश कितने ही देशों में की जा रही है।

पुराने मुहल्ले में हमें एक अच्छे कटे पत्थरों की मस्जिद भी दिखाई दी। वह अपने नाम को रो रही थी। मालूम होता है, वर्षों से उसपर सफ़ेदी या मरम्मत नहीं हुई। आख़िर जब लोगों को मजहब से कोई अनुराग ही न रहा, तो मरम्मत कैसे हो? मुहल्ले में दस-बीस बूढ़े बूढ़ियाँ अब भी इस्लाम को माननेवाले हैं; मगर उनमें बहुतेरे नई उम्रवालों के मजाक़ के डर से चुपचाप घर के कोने में ही नमाज पढ़ लिया करते हैं। अगर इच्छा भी हो, तो मरम्मत करने में सबसे बड़ा सवाल तो है पैसे का। अब धनी तो कोई है नहीं कि उसके पास काफ़ी स्थावर-जंगम सम्पत्ति हो। इसी मुहल्ले में मुझे दो चार पाजामा पहनने वाली बुढ़ियाँ भी दिखलाई पड़ीं। कुछ ही साल पहले पाजामा इन तुर्क स्त्रियों की जातीय पोशाक थी।

लौटते समय मैं और भी कितने ही मुहल्लों में गया। बाकू में एक और बात दीख पड़ती है, जिससे बोल्शेविकों की मनोवृत्ति का पता लगता है। बाकू शहर में एक तिहाई आबादी रूसी लोगों की है। रूसी लोग यूरोपियन हैं। यद्यपि तुर्क लोग काले नहीं होते, तो भी अधिकांश रूसियों की नीली आंखों और भूरे बालों में उनके छिपने की कहाँ गुंजाइश? रूसी क्रान्ति के पहले यहाँ आनेवाला हर एक रूसी 'साहब' था, और हर एक एशियाई कुली और ग़ुलाम। रूसियों के अलग मुहल्ले थे। रूसी मुहल्ले में तुर्कों का रहना सम्भव न था; लेकिन आज? आज उस भेद-भाव का कहीं नामो-निशान नहीं। सभी मुहल्लों और सभी घरों में रूसी और तुर्क साथ साथ रहते हैं। एक ही तरह का जाँघिया और कोट पहने गलियों में खेलते हुए तुर्क और रूसी लड़के यह ख़याल भी नहीं कर सकते कि उनमें कोई सामाजिक या जातीय भेद है। दो-एक नहीं, हजारों तुर्क ऐसे मिलेंगे, जिन्होंने रूसी औरतों से शादी की है, और वही बात रूसी मर्दों के बारे में भी है।

बात यह है कि सभी श्रमिकों का वेतन, चाहे वह रूसी हो या तुर्क, एक सा है। रूसी और तुर्क बच्चे छै वर्ष तक एक ही शिशुशालाओं में साथ साथ पलते हैं, और स्कूल में दोनों जाति की लड़के लड़कियाँ साथ ही पढ़ती लिखती और रहती हैं, इसीलिए उस भाव की गुंजाइश नहीं है।

सिबेरिया और बाकू में जिस प्रकार यह सह-विवाह और रक्त-संमिश्रण हो रहा है, उससे तो मुझे ख्याल होता है; कि पचास वर्ष बाद शकल-सूरत में भी सोवियत् के एशियाई और यूरोपीय वासियों में कोई भेद न रह जायगा। अगर भेद रहेगा भी तो इतना कि यूरोपीय सोवियत् के पश्चिम वाले लोग शायद कुछ ज्यादा गोरे रहेंगे, क्योंकि एशियाइयों में यूरोपीय सोवियत् नागरिकों की संख्या तिगुनी के करीब है।

शाम के वक्त हम एक फ़िल्म देखने गये। रूसी फ़िल्मों की बड़ी तारीफ सुन चुका था, इसलिए उसे भी देख लेना जरूरी था। इन्तूरिस्त में पूछने पर मालूम हुआ कि एक आर्मेनियन टाकी-फ़िल्म में जगह खाली है। सोवियत् नाट्यशालाओं और सिनेमा घरों में जगह पाना आसान नहीं है। लोग पहले ही से टिकट ले रखते हैं। लेकिन इन्तूरिस्त-एजेन्सी सब जगह फोन कर के तुरन्त बता सकती है, कि कहाँ जगह खाली है। कितनी ही जगहों का तो वह आपको टिकट भी दे सकती है। तवारिश् अना की मदद की ज़रूरत थी, क्योंकि मुझे न रूसी भाषा मालूम थी, न आर्मेनियन। बाकू में एक दूसरा सोवियत् फ़िल्म भी देखा। सोवियत् फ़िल्मों में मुझे कई विशेषताएँ मालूम हुई। सबसे पहली बात यह देखी कि स्वाभाविक दृश्य और बाज़ार, सेना, कारवाँ, आदि के दिखलाने में बिलकुल असल की नक्ल की जाती है। यदि ऊँटों के कारवाँ को दिखलाना है, तो सौ-पचास ऊँटों पर ही बस नहीं कर दिया जाता, बल्कि हजारों होते हैं। बाज़ार और सेना आदि के दृश्य में भी वही बात है। जब सरकार अपने धन-जन-बल के साथ फ़िल्म तैयार करवाने पर कटिबद्ध है, तो फिर वहाँ खर्च और तरद्दुद का प्रश्न ही नहीं उठ सकता। दूसरी बात यह है कि अमेरिकन, यूरोपीय

या भारतीय—सभी फ़िल्मों में फ़िल्म तैयार करनेवाले अधिक दर्शकों को आकर्पित करने के लिए स्त्री-पुरुपों के प्रेम की, चाहे वह उचित हो या अनुचित, अत्यधिक मात्रा रखते हैं। इस विलासिता के नशे का जोरदार प्रचार मानो उनका प्रधान उद्देश्य है। रूसी फ़िल्मों में यह बात नहीं कि उनमें स्त्री-पुरुपों-सम्बन्धी प्रेम आता ही न हो; हाँ, उसकी मात्रा स्वाभाविक और उचित सीमा के अन्दर ही होती है।

फोटो-चित्रण और आवाज़ में भी बहुत पूर्णता देखी जाती है। ऐक्टर तो ख़ास तौर से चुने और तैयार किये जाते हैं। उक्त फ़िल्म में कथानक ज़ार के शासन की आर्मेनिया से लिया गया था। दो तरुण-तरुणियों में प्रेम हो जाता है। तरुण एक मछुए का लड़का है। नदी में मछली का जाल फेंकते हुए उस तरुण ने मछुओं के गीत गाने में तो कमाल किया था। पीछे लड़की पर शहर के एक धनी सेठ के लड़के की नज़र पड़ती है। उस वक़्त की आर्मेनियन रीति के मुताबिक़ लड़की का बाप बिना रुपया पाये उसे दे नहीं सकता। मछुए तरुण ने किसी तरह कुछ रुपये जमा कर उस धनी सेठ के पास धरोहर रखे। सेठ रुपया माँगने पर इन्कार कर देता है। अदालत में मुक़दमा जाने पर अपने काग़ज़ पर किये दस्तख़त से भी वह इन्कार कर देता है। बड़े बड़े वकील उसकी तरफ़ से बहस करते हैं, उधर न्यायाधीश भी सेठ के दोस्तों में है। सेठ के दस्तख़त से इन्कार करने पर नौजवान कुछ बक उठता है, और उसे कई सालों की सज़ा हो जाती है। उसका दावा भी झूठा बता कर ख़ारिज कर दिया जाता है। ज़ार के जन्म-दिन पर सेठ को ख़िताब मिलता है, और प्रदेश के शासक एक बड़े दरबार में उसे तमग़ा पहनाते हैं। सेठ के लड़के की शादी में, जो लड़की की इच्छा के बिना की जाती है, बड़े बड़े रूसी अफ़सर शामिल होते हैं; और मुबारकबादी देते हैं। संक्षेप में फ़िल्म द्वारा रुपये के बल पर न्याय का अन्याय दिखलाया गया था। फ़िल्म खुली जगह में एक दीवार पर दिखलाया जाता था, और लोग एक चहारदीवारी से घिरे मैदान में कुर्सियों पर बैठे थे।

१० सितम्बर को हवा तेज हो गई थी, और सर्दी मुँह पर काँटो-जैसी चुभती थी। इस वक्त जब यह हालत थी, तो जाड़े में हवा चलने पर कितनी सर्दी होती होगी? ११ बजे के करीब हम स्तालिन्-श्रमिक-संस्कृति-प्रासाद (Stalin Palace of Culture) देखने गये। यह मजदूरो का क्लब-घर है। ऐसे क्लब बाकू में अनेक हैं। पाँच तल्ले का विशाल भवन है। भीतर अनेक तरह के मनोरंजन का इन्तजाम किया गया है। एक बड़ा हाल है। जिसमें एक हजार कुर्सियाँ हैं। दूसरे हाल में ४०० कुर्सियाँ हैं। कुर्सियो को बिना गद्दों के देखकर पूछने पर मालूम हुआ कि स्वास्थ्य के ख्याल से उन्हें नंगा रखा गया है। गद्दा होने पर उन्हें स्वच्छ और कीटाणुरहित (Disinfect) नहीं किया जा सकता। इन हालो में श्रमिकों के नाटक होते हैं; शिक्षा-सम्बन्धी सिनेमा दिखलाये जाते हैं। व्याख्याताओं के व्याख्यान होते हैं, तथा वोट और चुनाव के लिए भी इनका इस्तेमाल होता है। यहीं एक छोटा सा मिट्टी के तेल का म्यूजियम है। कमरे के बाहर दीवार पर ससार का नक्शा है, जिसमें दुनिया के सभी तेल-क्षेत्रों को दिखलाया गया है। कहाँ कितना अधिक तेल है, इसे छोटे-बड़े विद्युत् प्रकाश से चमकते लाल वृत्तों द्वारा दिखलाया गया है। देखने से ही मालूम हो जाता है कि बाकू दुनिया का सबसे बड़ा तेल-क्षेत्र है। दूसरे नम्बर वाला तेल-क्षेत्र भी रूस ही में है। सयुक्त-राष्ट्र अमेरिका का तेल-क्षेत्र तीसरे नम्बर पर आता है। सोवियत् राष्ट्र में बाकू के अतिरिक्त मध्य-एशिया और सखालिन आदि जगहों में भी तेल निकल आया है। तेल के धन में सोवियत् का संसार में प्रथम स्थान है।

कमरे के भीतर दीवारों पर चार्ट द्वारा दिखलाया गया है कि ट्यूब को कैसे धसाना चाहिए। टेढ़ा-मेढ़ा हो जाने पर क्या दोष आ जाता है और उसको कैसे सुधारना चाहिए आदि। एक जगह कच्चे तेल के कई नमूने रखे हुए हैं, और यह भी दिखाया गया है कि उससे क्या क्या चीजें निकलती हैं। विशेषज्ञ लोग समय-समय पर आ कर यहाँ श्रमिकों को तेल-सम्बन्धी

बातें बतलाते हैं। इतना ही नहीं, एक जगह यह भी दिखलाया गया है कि श्रमिक तेल पैदा कर के उससे किन-किन अन्य उद्योग-धंधों को मदद पहुँचाता है, और उसके बदले में, खाना, कपड़ा, घर, नाटक, हवाई जहाज़ में उड़ना आदि कितनी चीज़ें उसे मिलती हैं।

कुछ कमरों में पाँच हज़ार पुस्तकें रखी हैं तथा वाचनालय है। एक कमरे में हवाई जहाज़ की ठठरी रखी है। वहाँ सभी पुरज़े खुले हुए हैं, और हवाई-जहाज़ के यन्त्र-सम्बन्धी ज्ञान के शौकीनों को उसका गठन सिखलाया जाता है। सोवियत् नागरिकों को हवाई जहाज़ का बड़ा शौक है। उनके हज़ारों उड़ने के क्लब हैं, जिनमें कितने ही हवाई जहाज़ रखे हैं, और सदस्यों को हवाई जहाज़ चलाना सिखलाया जाता है। गांव-गाँव तक में लकड़ी के ऊँचे-ऊँचे मीनार हैं, जिन पर से युवक-युवतियाँ पैराशूट (छतरी, जिसके खुल जाने से आदमी धीरे से धरती पर आ पहुँचता है) लेकर धरती पर कूदती हैं। मैंने एक फ़ोटो देखा था, जिसमें एक ही साथ हवाई-जहाज़ों से सात सौ लड़कियों के कूदने का दृश्य था!

वहाँ से हम फ़ैक्टरी के भोजनालय में गये। यह भी पाँच तल्ले का विशाल महल है। भीतर घुसते ही हमें अपने कपड़ों को ढँकने के लिए सफ़ेद लम्बा कोट दिया गया। हमने एक ओर से देखना शुरू किया। पहले रसायनशाला आई। इसमें डाक्टर लोग खाने के कच्चे सामान की परीक्षा करते हैं—किस आलू में कितना और कौन-सा विटामिन है? कितना प्रोटीन है? कितने और पदार्थ हैं? हर एक चीज़ की परीक्षा होने के बाद फिर वह धोने और काटने की जगह पहुँचता है। धुलाई-कटाई सभी कुछ मैशीन से होती है। पकाने के स्थान में भाप का प्रयोग होता है। वहाँ तापमान के लिए थर्मामीटर लगे हैं, और घड़ी देखकर चीज़ों को चढ़ाया और निकाला जाता है। जूठी तश्तरियों और प्यालों को भी मशीन ही गरम भाप और पानी से धोती है। इस भोजनालय की विशालता इसीसे समझ

एक कमरे में दो रूसी श्रमिक आधी बाँह की कमीज़ और जाँघिया पहने पैरों द्वारा कपड़े से फ़र्श को रगड़ रहे थे। जिस स्कूल में काले लड़के पढ़ें, वहाँ भला गोरे इस तरह काम करें! हमें वह कमरा भी दिखलाया गया, जहाँ डाक्टर विद्यार्थियों की परीक्षा करते हैं और स्वास्थ्य का लेखा रखते हैं। उस साधारण स्कूल की इमारत का मुक़ाबला हमारे यहाँ की यूनिवर्सिटियों की इमारतें भी नहीं कर सकतीं।

हमारे पथ-प्रदर्शक अध्यापक तातार जाति के थे। उनके मंगोल चेहरे को देखकर तथा उनका जन्म-स्थान अस्तराखान सुनकर मुझे सन्देह हुआ कि वह कल्मुक् मंगोल तो नहीं हैं; लेकिन पूछने पर मालूम हुआ कि वे तातार हैं, जिनका जातीय धर्म पहिले इस्लाम था। उनके सिर और दाढ़ी के वाल मुड़े हुए थे। वदन पर हमारे यहाँ की पुलिस की तरह का वटनदार कोटनुमा कुरता था, नीचे ढीली-सी पतलून और कमर में चमड़े का तस्मा कोट के ऊपर पेटी की तरह वँधा था। नेकटाई और कालर का नाम नहीं था। देखने से यही मालूम होता था कि किसी कारख़ाने के मज़दूर हैं; लेकिन थे वे विद्वान् अध्यापक। सब देख सुनकर हमारे साथ की अंगरेज़ महिला ने पूछा—"आप लड़कों को धार्मिक शिक्षा तो देते न होंगे, क्योंकि सोवियत् सरकार धर्म के विरुद्ध है; किन्तु क्या धर्म के ख़िलाफ़ पाठ्य-पुस्तकों में विशेष पाठ रखे गये हैं, या ज़वानी ही वैसी शिक्षा दी जाती है?" अध्यापक ने कहा—"पहले से खंडन करने का मतलव होगा लड़कों में प्रति-क्रिया द्वारा धर्म का भाव लाना। हम लोग ऐसा नहीं करते। कितने ही लड़कों के माता-पिता अब भी धर्म को मानते हैं, और उनका प्रभाव उनके लड़कों पर भी पड़ता है। जो प्रभाव वालक के दिल पर पड़ा है, उसके वारे में युक्ति से हम उसी के द्वारा प्रश्न करवाते हैं और फिर उसका समाधान कर देते हैं।" सारांश यह कि वालकों के दिल में धर्म के ऊपर श्रद्धा न होने पावे, इसके लिए सूक्ष्म मार्ग का अनुसरण किया जाता है, सीधे लट्ठ नहीं मारा जाता।

हमें शिशुशाला (बच्चाखाना) भी देखनी थी। बाकू में शिशुशालाएँ बहुत सी हैं। हम नागिरोवा-शिशुशाला में गये। यहाँ चार-पाँच-छै वर्ष की उम्र के १५० लड़के रहते हैं। मकान सुन्दर स्वच्छ है। पीछे की ओर आँगन में एक छोटा-सा बाग है। सेवा का काम बहुत सी सुशिक्षित स्त्रियाँ करती हैं, जो तुर्क, रूसी आदि सभी जातियों की हैं, और लड़के भी सभी जातियों के हैं। पहले हमने दरवाजे के पास डाक्टर का कमरा देखा। फिर बरामदे में छोटी छोटी कितनी ही अलमारियाँ देखीं। उन अलमारियों पर कुत्ता, बिल्ली, घोड़ा, बन्दर आदि कितने ही जानवरों की तसवीरें थीं। पूछने पर मालूम हुआ, कि यह उन लड़कों की अलमारियाँ हैं, जिनको अभी अक्षर-ज्ञान नहीं है। दूसरी तरफ की अलमारियों पर नाम के साथ लड़कों के फोटो थे। शिशुशाला की प्रबन्धकर्त्री ने मुँह धोने, खाने, खेलने, सोने आदि के बहुत से कमरे दिखलाये। यहाँ इस बात पर बहुत ध्यान दिया जाता है कि हर एक बालक अपना काम अपने हाथ से करे। धोने के कमरे में पानी के नलके और तौलिया टाँगने की खूँटी इतनी नीचे रखी गई है कि छोटे लड़के आसानी से उन्हें पा सकें। खाने के कमरे में कुर्सी, मेज, चम्मच, प्याला सभी चीजें खिलौने जैसी छोटी छोटी हैं। लड़के अपने ही हाथ से खाते हैं। वे ही अपनी जमात का नेता चुनते हैं, जो उनसे सफाई आदि का काम कराता है। एक बड़े घर में सैकड़ों तरह के खिलौने रखे हुए थे। उनमें कुत्ता बिल्ली से लेकर रेल, मोटर, हवाई जहाज तक सभी थे। प्रबन्धकर्त्री ने हमें बंडल-के-बंडल कागजों की फाइलें दिखलाईं। उनमें रंग या पेंसिल से लड़कों के खींचे चित्र और रेखाएँ थीं। किसी-किसी लड़के के चित्र में स्वाभाविकता अधिक देख पड़ती थी। इस खिलवाड़ के कराने से यह जानना अभिप्रेत है कि किस बालक का झुकाव चित्रकला की ओर है। सोवियत् शिक्षा-प्रणाली में गाँवों से लेकर शहरों तक और शिशु-शालाओं से लेकर स्कूलों तक में प्रतिभाशाली लड़कों के चुनने की ओर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है। यह प्रबन्ध सर्वत्र इतना पक्का है कि कोई

ी प्रतिभा अंधेरे में पड़ी नहीं रह सकती। मुझे बतलाया गया कि इसी शिशुशाला में दो वर्ष पहले एक पाँच छै वर्ष का बालक था, जिसने गाने-बजाने में बड़ा कौशल प्रकट किया था। आजकल वह मास्को की संगीतशाला (Music Conservatory) में है।

जिस वक़्त हम लोग वहाँ पहुँचे थे, उस वक़्त लड़कों के सोने का समय था। छोटी-छोटी चारपाइयों पर सफ़ेद चादर ओढ़े सब लेटे हुए थे। हम लोगों से दबे पाँव चलने को कहा गया। अधिकांश लड़के नींद नहीं ले रहे थे। कोई-कोई हमारी तरफ़ देख रहे थे, और कोई कोई आपस में धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। लड़के कई कमरों में सो रहे थे; किन्तु इस विभाजन में सिर्फ़ अवस्था का ख़याल किया गया था, रंग और जाति का नहीं। शिशुशाला में लड़के ८ बजे लाये जाते हैं, और ४ बजे तक यहीं रखे जाते हैं। इस बीच में दो बार उन्हें खाना मिलता है। बाकू में ऐसी शिशुशालाएँ सैकड़ों हैं।

११ सितम्बर को जहाज़ ४ बजे के क़रीब छूटनेवाला था। १२ बजे तक मैंने फिर पैदल घूमकर बाकू देखा। एक जगह बहुत भीड़ थी। मालूम हुआ कि भीतर प्रदर्शनी करके बहुत सी चीजें बेची जा रही हैं। वहाँ खिलौने, कपड़े, सुगन्धित द्रव्य आदि हजारों तरह की चीजें थीं। सभी सोवियत् की बनी हुई थीं। मैंने स्मृति के तौर पर कोई चीज लेनी चाही। मेरे पास नौ रूबल (चार रुपये) बचे हुए थे। उनका भी उपयोग कर डालना था। सब देखकर एक मनीबैग लेना पसंद किया। मनीबैग दिखलाने पर वहाँ खड़े आदमी ने उसको उठाकर अलग रख दिया और एक काग़ज़ पर दाम अपने हस्ताक्षर के साथ लिख दिया। दूसरी जगह कुछ खजानची लोग बैठे हुए थे। उन्हें रुपये के साथ पुर्जी दे दी और पुर्जी पर मुहर करके लौटा दी गई। पुर्जी को फिर वहाँ ले जाने पर मनीबैग मिल गया। बेचने का यही तरीक़ा मास्को में भी देखा था। सोवियत् के किसी भी शहर में स्टेशन के पास वैसे ही भाड़ेवाली टैक्सी और घोड़ागाड़ी

मिलेगी, जैसे हिन्दुस्तान या यूरोप के किसी शहर म, फरक इतना ही होगा कि वहां मोल-भाव का नाम नहीं। लेकिन यदि आप पूछें नहीं, तो आप यह नहीं समझ सकेंगे कि ये टैक्सियां या गाड़ियां किसकी हैं। पूछने पर मालूम होगा कि टैक्सी-गाड़ी तो क्या, छोटी छोटी सोडावाटर और अखबारों की दूकानें तक सरकार या किसी श्रमिक-संघ की हैं। यहां बैठने वाले दूकानदार सभी वेतन भोगी नौकर हैं।

होटल में हिसाब करने पर मालूम हुआ कि दो दिन मोटर पर सैर करने का चौदह डालर देना होगा और तीन दिन के खाने और रहने के लिए नौ डालर। बाकू से पहलवी तक जहाज का सेकण्ड क्लास का भाड़ा उन्नीस डालर है। आजकल अमेरिकन डालर पौने तीन रुपये के करीब है। देखने से यह यात्रा मँहगी जरूर मालूम होगी; लेकिन जैसा हम पहले कह चुके हैं, दाम रखते वक्त यहां के अधिकारियों को अमेरिकन यात्रियों का ख्याल रहता है, हिन्दुस्तानी या एशियाई जातियों का नहीं। पहली और दूसरी श्रेणी में चलनेवाले तो धनी लोग हैं। उनके लिए चाहे जितना ही दाम रखा जाय, कोई हर्ज नहीं; किन्तु तीसरी श्रेणी के यात्रियों के साथ खास रियायत होनी चाहिए। इस श्रेणी के यात्री अधिकतर गरीब होते हैं और वे रूस के साम्यवादी निर्माण के देखने की लालसा से प्रेरित हो कर आते हैं।

१।। बजे मैं बन्दरगाह पर पहुँचा। कस्टम आफिसर तुर्क थे, और वे फार्सी भी बोलते थे। उन्होंने बड़ी शिष्टता के साथ बक्स खोलकर चीजें देखीं। मेरे पास के रुपये भी गिन लिये और छुट्टी मिली। हमारा जहाज छोटा-सा था। नाम था फोमिन्। कास्पियन समुद्र में चलनेवाले सभी जहाज सोवियन् के ही हैं। केबिन खूब साफ था। मेरी कोठरी में तीन सीटें थीं; किन्तु यात्री मैं अकेला ही था। ४ बजे के करीब जहाज चला। बाकू समुद्र के किनारे धनुषाकार बसा हुआ है। उसके एक छोर पर तेल साफ करने के कारखाने हैं और दूसरी तरफ तेल के कुओं का जंगल। हवा तेज होने से जहाज हिल रहा था, इसलिए हम अपने बिस्तरे

पर जाकर लेट रहे। रात के वक़्त रेडियो पर तुर्की गाना सुना। सवेरे ८ बजे दूर ईरान की तटभूमि दिखलाई पड़ी, और १० बजे हम ईरान में दाखिल हो गये।

उपचारशाला में [illegible]